मानवाधिकार, कर्तव्य और जैन धर्म

Human Rights, Duties and Jainism

लेखक

वैज्ञानिक संत

आचार्य श्री निर्भयसागर

Author

Scientist Saint

Acharya Shri Nirbhaysagar

प्रकाशन

निर्भय वाणी प्रकाशन

जैन ब्रदर्स 16/873 ईस्टपार्क रोड, करोल बाग,नई दिल्ली

Publication

Nirbhay Vani Publications

Jain Brothers 16/873 Eastpark Road, Karol Bagh, New Delhi

कृति	:	**मानवाधिकार, कर्तव्य और जैन धर्म** (आचार्यश्री द्वारा उपाध्याय अवस्था में सन् २०१४ में नौगामा, बाँसवाड़ा, राजस्थान में दिये गये प्रवचनांश, आलेख एवं चिन्तन से संपादित कृति)
लेखक	:	**वैज्ञानिक संत आचार्य निर्भयसागर**
संस्करण	:	प्रथम संस्करण, फरवरी 2017
मूल्य	:	**200/– रुपये मात्र**
प्रकाशक	:	**निर्भय वाणी प्रकाशन** जैन ब्रदर्स, 16/873 ईस्टपार्क रोड, करोलबाग, नई दिल्ली
प्राप्तिस्थान	:	निर्भय सागर तपोवन धार्मिक ट्रस्ट NH-26 बहेरिया हाईवे सिद्धगुंवा, सागर (म0प्र0) पिन कोड 470021 मो. 9425452366
	:	डॉ. मिथलेश जैन तुलसी नगर, नागपुर (महा.) 9271278878, 8989045590
	:	अवनि बुक हाऊस L.B 12 मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज, भोपाल 9893903835
	:	प्रिंस सिंघई, प्रिंस कॉर्नर रचना मेडिकल के बाजू में नेहानगर, मकरोनिया, सागर 7687101976
मुद्रण	:	जैन ब्रदर्स 16/873 ईस्ट पार्क रोड करोल बाग, नई दिल्ली

Work : **Human Rights, Duty and Jainism**
(A work edited from excerpts, articles and thoughts given by Acharyashree in Naugama, Banswara, Rajasthan in 2014 during his tenure as Upadhyay)

Author : **Scientist Saint Acharya Nirbhaysagar**

Edition : First Edition, February 2017

Price : **Rs 200/- only**

Publisher : **Nirbhay Vani Prakashan**
Jain Brothers, 16/873 Eastpark Road, Karol Bagh, New Delhi Nirbhay Sagar Tapovan Religious Trust
NH-26 Baheria Highway Sidhgunwa, Sagar (M.P.) Pin code 470021 mo. 9425452366
: Dr. Mithlesh Jain Tulsi Nagar, Nagpur (Mah.) 9271278878, 8989045590
: Avni Book House L. B 12 Mansarovar Complex, Habibganj, Bhopal 9893903835
: Prince Singhai, Prince Corner Beside Rachna Medical Nehanagar, Makronia, Sagar 7687101976

Printing : Jain Brothers 16/873 East Park Road Karol Bagh, New Delhi

आत्मकथ्य

मानवीय अधिकारों को संरक्षित करने के लिए कानून बनाये जाते हैं। जीवन को मूल्यवान सुख–शांति और समृद्धशाली बनाने के लिए अधिकार व कर्त्तव्य तय किये गये हैं। अधिकार देने और कानून बनने की प्रक्रिया अनादिकाल से चली आ रही है और आगे भी चलती रहेगी। वर्तमान युग के आदि में अर्थात् चर्तुथकाल में जैन धर्म के प्रवृर्तक आदि ब्रह्मा ऋषभ देव तीर्थंकर महाराज ने मानवों को अपना भरण–पोषण करने, जीवन यापन करने, परिवार और अपने निजी जीवन का संरक्षण करने का अधिकार दिया। उन्होंने इसके लिए षट्कर्म (असि, मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य एवं विद्या) का उपदेश दिया और भाग्य भरोसे ना बैठकर पुरूषार्थ करने का उपदेश दिया। क्षेत्रों का विभाजन करके अलग–अलग राज्य बनाकर योग्यता के आधार पर अलग–अलग मंत्री मण्डल सहित राजाओं की स्थापना की, उनमें कर्तव्य बोध जगाया और अधिकार दिये। तभी से समय–समय पर इन अधिकारों, कर्तव्यों और राज्यों में सुधार के साथ–साथ विकास के लिए परिवर्तन भी होते रहे। इन परिवर्तनों के साथ धार्मिक परिवर्तन भी होते रहें। दुनिया को सुरक्षित रखने और चलाने के लिए प्रकृति, पर्यावरण और जीव–जन्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए अधिकार एवं कर्त्तव्य दिये गये।

राज्यशासनिक प्रणाली समाप्त होने और लोकतांत्रिक प्रणाली आने पर अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार का गठन किया गया है। इस गठन के समय अनेक नियमावली और कानून बनाये गये इसे सुचारू रूप से चलाने के लिए अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग पदाधिकारी नियुक्त किये गये। द्रव्य, क्षेत्र, काल के अनुसार अलग–अलग मानवाधिकार संहिता लागू की गई, इसके उल्लंघन करने वालों की दंड संहिता भी बनाई गई। जेलों और न्यायालयों की स्थापना की गई। मेग्नाकार्टा ने ब्रिटेन से सन् 1215 में मूल अधिकार की बात प्रारम्भ की थी और कुछ नियम कानून बनाये थे। यद्यपि वे नियम कानून जैन सिद्धांतो से मिलते–जुलते हैं। 'जीवन जीने का अधिकार' 'स्वतंत्रता का अधिकार' 'भरण–पोषण का अधिकार' इत्यादि 'जियो और जीने दो', 'अहिंसा परमो धर्मः, परस्परोपग्रहो जीवानाम्'

Autobiography

Laws are made to protect human rights. Rights and duties have been fixed to make life valuable, happy, peaceful and prosperous. The process of granting rights and making laws has been going on since time immemorial and will continue in future also. At the beginning of the present era, i.e. in the fourth period, the originator of Jainism, Adi Brahma Rishabh Dev Tirthakar Maharaj, gave humans the right to support themselves, earn a living, protect their families and their personal lives. For this, he preached Shatkarma (Asi, Masi, Agriculture, Crafts, Commerce and Education) and advised to make efforts instead of relying on fate. By dividing the areas and creating separate states, they established kings along with different ministries based on their merit, instilled a sense of duty in them and gave them rights. Since then, from time to time, these rights, duties and states have been undergoing changes for improvement as well as development. Along with these changes, religious changes also continued to occur. To keep the world safe and run, rights and duties were given to protect nature, environment and animals.

International human rights were formed when the state system ended and the democratic system came into existence. At the time of this formation, many rules and laws were made and to run it smoothly, different officers were appointed in different states. Different human rights codes were implemented according to substance, area and time, penal codes were also made for those who violate them. Jails and courts were established. Magna Carta started talking about fundamental rights in Britain in 1215 and made some rules and laws. Although those rules and regulations are similar to Jain principles. 'Right to life', 'Right to freedom', 'Right to maintenance' etc. 'Live and let live', 'Ahimsa paramo dharamah, saparopagraho jeevanaam'

इत्यादि सिद्धांत सूत्र, भगवान आदिनाथ ने मूल अधिकार एवं कर्तव्य के रूप में प्रतिपादित किये थे। जिन्हें आचार्यों ने लिपिबद्ध किया है। पर्सनल लॉ और राजकीय लॉ दोनों लागू करने पर राजकीय व्यवस्थायें और प्रजातांत्रिक संतुलन बिगड़ जाता है। संतुलन बिगड़ने से नफरत, अराजकता, भ्रष्टाचार और आतंकवाद फैलता है। पर्सनल लॉ के माध्यम से उस जाति विशेष के लोग डबल फायदा उठाते हैं और अपराध करने पर भी बच जाते हैं। जब किसी लोकतांत्रिक देश में समानता की बात की जाती है तब पर्सनल लॉ क्यों ?

हमारे देश में नागरिकता अधिनियम सन् 1955 में जन्म के आधार पर बनाया गया था। उसका अनेकों बार संशोधन किया गया। जैसे यदि माता–पिता भारत के हों और उनके परिजन किसी भी देश में रहते हों तो उन्हें भारत की नागरिकता दी जा सकती है। यदि माँ भारत की है और पुरूष दूसरे देश का है तो उनके इन वैलिड होने पर भी नागरिकता दी जा सकती है। वंश के आधार पर भी भारतीय नागरिकता दी जा सकती है। इसी सुधार के अंतर्गत यह भी सुधार हुआ कि जो पंजीकरण कराके कम से कम सात वर्ष भारत देश में शादी करके या अकेला रहा हो तो उसे भी नागरिकता दी जा सकती है। यदि कोई नागरिकता समाप्त करना चाहे तो समर्पण पत्र देकर वर्खास्त करके अथवा फर्जी होने के कारण वंचित करके की जा सकती है। इन सभी बातों का यहाँ इस कृति में समायोजन किया गया। इसी के साथ किसको क्या, कब, क्यों, कैसे अधिकार दिये जाए। अधिकार पाने के बाद या पूर्व में क्या–क्या कर्तव्य करना चाहिए? परिवार कैसा होना चाहिए? परिवार के सदस्यों के कर्तव्य और अधिकार क्या होने चाहिए? जैन धर्म का कानून क्या है? इन सबका वर्णन मानवाधिकार और कर्तव्य नामक कृति के रूप में किन्तु अब इस कृति के **''मानवाधिकार कर्तव्य और जैन धर्म''** नाम देकर प्रकाशित किया गया है भगवान आदिनाथ से लेकर आज तक जैन धर्म, दर्शन और न्याय के क्या सिद्धांत रहे हैं, इन सबका वर्णन इस कृति में किया है। समाधान के रूप में अहिंसा, अनेकांत, स्याद्वाद और अध्यात्म के सिद्धांत सूत्र दिये गये हैं। अतः यह कृति पठनीय, माननीय, देश और समाज सुधारक है, आप इसका अवलोकन अवश्य करें।

वैज्ञानिक संत आचार्य निर्भयसागर

Lord Adinath propounded the principles and sutras as fundamental rights and duties. Which have been written down by the Acharyas. By implementing both personal law and state law, political systems and democratic balance gets disturbed. Disruption of balance leads to spread of hatred, anarchy, corruption and terrorism. Through personal law, people of that particular caste get double benefit and are saved even if they commit crimes. When equality is talked about in a democratic country then why personal law?

In our country, the Citizenship Act was made in 1955 on the basis of birth. It was amended many times. For example, if parents are from India and their relatives live in any country, then they can be given Indian citizenship. If the mother is from India and the man is from another country, then citizenship can be given even if their passports are valid. Indian citizenship can also be given on the basis of descent. Under this reform, it was also improved that the person who has registered and has been married or single in India for at least seven years can also be given citizenship. If someone wants to terminate the citizenship, it can be done by giving a surrender letter, by dismissing it or by depriving it because it is fake. All these things were adjusted here in this work. Along with this, who should be given what rights, when, why and how. What duties should be performed before or after getting rights? What should a family be like? What should be the duties and rights of family members? What is the law of Jainism? All these have been described in the form of a work called Human Rights and Duties, but now this work has been published with the name "Human Rights, Duties and Jainism". What have been the principles of Jainism, philosophy and justice from Lord Adinath till today, all these have been described. This has been done in this work. The principles of Ahimsa, Anekant, Syadvad and spirituality have been given as solutions. Therefore, this work is readable, respectable, country and social reformer, you must read it.

Scientist Saint Acharya Nirbhaysagar

प्रकाशकीय

देश धर्म, समाज, परिवार एवं जीवन का संचालन एवं सुव्यवस्था में पुरूषार्थ, कर्त्तव्य और अधिकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उस व्यवस्था के आदिकालीन इतिहास पर विहंगम दृष्टि डाली जाए तो प्रथम तीर्थंकर सर्वदर्शी भगवान ऋषभ देव एवं प्रथम चक्रवर्ती भरत स्वामी पर जाती है। उन्होंने वैज्ञानिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, आर्थिक एवं भौतिक दृष्टिकोण के साथ अनेक अनुसंधानों से सभी प्रकार का ज्ञान, दर्शन और साधन उपलब्ध कराए। उनके द्वारा दिए गये सिद्धांतों व वर्तमान के दार्शनिकों के द्वारा दिए गये विचारों पर वैज्ञानिक संत आचार्यश्री निर्भयसागर जी महाराज का गहन चिंतन–मनन, लेखन और प्रवचन चलता रहा। उसके बाद प्रस्तुत कृति **''मानवाधिकार कर्त्तव्य और जैन धर्म''** नाम की प्रस्तुत कृति संम्पादित होकर हमारे सामने आई है। इस कृति की भाषा सरल, सटीक है और यह विद्वत्तापूर्ण, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और दार्शिनिक दृष्टिकोण को लिये हुए है।

मानव के कर्त्तव्य और अधिकारों पर अब तक बहुत लिखा जा चुका है। जब तक इस धरती पर मानव जाति रहेगी तब तक लिखा जाता रहेगा। प्रत्येक भव्य जीव को जब तक मुक्ति नहीं मिल जाती तब तक कर्तव्य और अधिकारों की गंगा–यमुना बहती रहेगी है। प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ से लेकर अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी तक, त्रिपृष्ठ से कृष्ण तक और उसके बाद महात्मा गाँधी, अम्बेडकर आदि के जीवन में कर्त्तव्य और अधिकार की बात आई है। उन्होंने भी इस पर जोर दिया एवं अपने विचार दुनिया के सामने रखे। उसी श्रृंखला में इस कृति के लेखक आचार्य श्री निर्भयसागर जी महाराज ने संयम, ज्ञान, चारित्र, त्याग, तपस्या और अनेक प्रकार के साहित्य का अध्ययन करके समाज के सामने जो नवनीत निकाल कर दिया है, वह आज के युग में अति प्रासंगिक है। आचार्य श्री बचपन से ही तार्किक बुद्धि, खोजी प्रवृत्ति, परोपकारी, सरल स्वभावी, श्रद्धावान, पुरूषार्थशील, न्यायप्रिय, सेवाभावी रहे हैं।

Optical

Effort, duty and rights have played an important role in the governance and orderliness of the country's religion, society, family and life. If we take a bird's eye view of the ancient history of that system, the first Tirthankara goes to the all-seeing Lord Rishabh Dev and the first Chakravarti Bharat Swami. He made available all types of knowledge, philosophy and resources through various researches with scientific, social, spiritual, economic and material viewpoint. Scientist saint Acharyashri Nirbhaysagar Ji Maharaj continued to think deeply, write and preach on the principles given by him and the ideas given by the present day philosophers. After that, the presented work named "Human Rights, Duties and Jainism" has been edited and has come before us. The language of this work is simple, precise and it has a scholarly, scientific, spiritual and philosophical approach. Duties and Rights of Man but a lot has been written by now

Is. As long as the human race exists on this earth, it will continue to be written. The Ganga-Yamuna of duties and rights will continue to flow until every great living being attains liberation. From the first Tirthankar Lord Adinath to the last Tirthankar Mahavir Swami, from Tripashta to Krishna and then in the lives of Mahatma Gandhi, Ambedkar etc., the matter of duty and rights has come up. He also emphasized on this and presented his views to the world. In the same series, the author of this work, Acharya Shri Nirbhaysagar Ji Maharaj, has presented the new policy to the society by studying restraint, knowledge, character, sacrifice, penance and various types of literature, which is very relevant in today's era. Since childhood, Acharya Shri has been having logical mind, investigative nature, charitable, simple natured, devout, hard-working, fair-loving and service-oriented.

यही कारण रहा कि दीक्षा लेने के बाद निस्पृह, योगी, ज्ञान, दर्शन, चारित्र के धनी, लोक प्रिय और कालजय व्यक्तित्व के धनी है। इन्हीं योग्यताओं के आधार पर ही उनके गुरू आचार्य अभिनन्दन सागरजी महाराज ने दिगम्बरी मुनि दीक्षा के साथ ही उपाध्याय पद पर भी आसीन किया। उसके उपरांत उसके एक वर्ष बाद आचार्य श्री विपुल सागर जी महाराज ने आचार्य पद पर आसीन किया। प्रस्तुत कृति के अध्ययन से आपको इसका सहज ज्ञान हो जाएगा इसे प्रमाणित करने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाएगी।

गन्थ प्रकाशन के पूर्व मूल प्रतिलिपि जस्टिस रिटायर डा. एन के जैन (चेयरमैनए ए सी एम ई आई) ने अवलोकन किया और अनेक जगह उन्होने संशोधन हेतु मार्गदर्शन दिया इसके हम बहुत–बहुत आभारी है।

आचार्यश्री इतने महान पद पर आसीन रहते हुए जन कल्याण एवं आत्म कल्याण में निरंतर लगे रहते हैं। जन कल्याण हेतु आचार्य श्री ने अनेक ग्रंथों की रचना की है और अनेक भव्य जीवों को दीक्षा देकर मोक्ष मार्ग में लगा रहे हैं। इस कृति के प्रकाशन का सौभाग्य गुरुवर के आशीर्वाद से मुझे प्राप्त हुआ है। इसे मैं अपना सौभाग्य ही नहीं परम सौभाग्य मानता हूँ। आप सभी पाठ्कगणों से यही अपेक्षा रखता हूँ कि आप इसका अवलोकन करें तो पुण्यार्जक, प्रकाशक और हमारे गुरुवर के द्वारा की गई रचना का श्रम सार्थक होगा।

सुनील जैन,
जैन ब्रदर्स दिल्ली

This is the reason after taking initiation, he is selfless, yogi, rich in knowledge, philosophy, character, loved by the people and has a timeless personality. On the basis of these qualifications, his Guru Acharya Abhinandan Sagarji Maharaj gave him the post of Upadhyay along with Diksha of Digambari Muni. After that, after a year, Acharya Shri Vipul Sagar Ji Maharaj assumed the post of Acharya. By studying the presented work, you will understand it intuitively and there will be no need to prove it.

Before publishing the book, the original copy was reviewed by Justice Retired Dr. NK Jain (Chairman, ACMEI) and we are very grateful to him for the guidance he provided at many places for amendments.

While occupying such a great position, Acharyashree remains continuously engaged in public welfare and self-welfare. Acharya Shri has composed many books for the welfare of the people and is initiating many great souls on the path of salvation. I have received the good fortune of publishing this work with the blessings of Guruvar. I consider this not only my good fortune but the ultimate good fortune. I expect from all of you readers that if you read it then the hard work done by the benefactor, the publisher and our Guru will be worthwhile.

Sunil Jain,
Jain Brothers Delhi

अनुक्रमणिका

क.	विषय	पृष्ठ कमाकं

खण्ड-1

मानवाधिकारों का इतिहास, महत्व और विकास

1. मानवीय अधिकारों का इतिहास ———— 1
2. मानवीय अधिकारों का महत्व ———— 3
3. मानव अधिकारों की अवधारणा ———— 10
4. मानव अधिकार का अर्थ ———— 16
5. मानवाधिकारों की सार्वजनिक घोषणा ———— 20
6. मानवाधिकारों का उद्‌भव और विकास ———— 24
7. कर्म भूमि की स्थापना ———— 30
8. दिगम्बर दीक्षा का अधिकार ———— 36
9. धर्म–कर्म करने का अधिकार ———— 40
10. सल्लेखना मरण अधिकार ———— 44
11. राजा के अधिकार, कर्तव्य और गुण ———— 104
12. प्रजा और राजा के मध्य अधिकार ———— 110
13. कन्या विवाह अधिकार ———— 112
14. नैतिक अधिकार ———— 128
15. मानवाधिकारों का वर्गीकरण ———— 132
16. मानव का अर्थ ———— 142
17. महिला मानव अधिकार ———— 150
18. अंतर्राष्ट्रीय महिलाधिकारों का उदय एवं विकास ———— 153
19. बाल अधिकार ———— 164
20. जैन धर्म में बाल अधिकार ———— 172

Contents

Sr.	Subject	Page Number

Section-1

'History, Importance and Development of Human Rights'

1.	History of Human Rights.	3
2.	Importance of Human Rights	7
3.	Concept of Human Rights	11
4.	Meaning of Human Rights	17
5.	Universal Declaration of Human Rights	21
6.	Origin and Development of Human Rights	25
7.	Establishment of Karma Bhoomi	31
8.	Right to Digambara Diksha	37
9.	Right to Perform Religious	41
10.	Rituals, Right to Death	45
11.	Rights, Duties and Qualities of the King	105
12.	Rights between the People and the King	111
13.	Girls Marriage Rights	113
14.	Moral Rights	129
15.	Classification of Human Rights	133
16.	Meaning of Human	143
17.	Women Human Rights	150
18.	Rise & Development of International Women's Rights—	153
19.	Child Rights	165
20.	Child Rights in Jainism	173

21. संयुक्त राष्ट्र और बाल कोष ———————————— 178
22. पिछड़े वर्गों के अधिकार ———————————— 184
23. अनुसूचित जनजातियों के अधिकार ———————————— 188
24. अधिकार देने के नियम, कानून ———————————— 201
25. जैन धर्म में नीच गोत्र बनाम दलित ———————————— 208
26. विकलांगों के अधिकार ———————————— 210
27. संयुक्त राष्ट्र द्वारा अधिकारों की घोषणा ———————————— 212
28. बंदियो के अधिकार ———————————— 214
29. शरणार्थियों के अधिकार ———————————— 222
30. विस्थापितों के अधिकार और समस्या ———————————— 228
31. मानवाधिकारों का भविष्य ———————————— 230

खण्ड-2

कर्तव्य, कानून और संविधान

32. कर्तव्य का अर्थ———————————— 234
33. भारतीय संविधान में मूल कर्तव्य———————————— 240
34. मानवीय कर्तव्यों का वर्गीकरण ———————————— 244
35. अधिकार एवं कर्तव्य ———————————— 248
36. कानून और कर्तव्य———————————— 254
37. संविधान का अर्थ और उद्देश्य ———————————— 266
38. भारतीय संविधान का इतिहास और क्रमिक विकास ——— 268
39. वर्तमान भारतीय संविधान ———————————— 286
40. भारतीय संविधान का संक्षिप्त परिचय———————————— 296
41. आचार संहिता और नागरिकता ———————————— 306
42. नागरिक का अर्थ ———————————— 312

21. United Nations and Children's Fund _____ 179
22. Rights of Backward Classes _____ 185
23. Rights of Scheduled Tribes _____ 189
24. Rules for Granting Rights, Law _____ 202
25. Low Gotra vs Dalit in Jainism _____ 209
26. Rights of Disabled _____ 211
27. Declaration of Rights by the United Nations _____ 213
28. Rights of Prisoners _____ 215
29. Rights of Refugees _____ 223
30 Rights and Problems of Displaced People _____ 229
31. The Future of Human Rights _____ 231

Section-2

Duties, Law and Constitution

32. Meaning of Duty _____ 235
33. Fundamental Duties in the Indian Constitution ____ 241
34, Classification of Human Duties _____ 245
35. Rights and Duties _____ 249
36. Laws and Duties. _____ 255
37. Meaning and Purpose of the Constitution _____ 267
38. History and Gradual Development of the Indian Constitution _____ 269
39. Current Indian Constitution _____ 287
40. Brief Introduction to the Indian Constitution _____ 297
41. Code of Conduct and Citizenship _____ 307
42. Meaning of Citizen _____ 313

खण्ड-3

जैन संविधान, अधिकार और अध्यात्म

43. जैन संविधान की ऐतिहासिक भूमिका ———— 322
44. पिता, पुत्र विभागाधिकार ———— 330
45. विवाह संबंध अधिकार ———— 342
46. संपत्ति विभागाधिकार ———— 352
47. माता के संपत्तियाधिकार ———— 372
48. बहिन के संपत्तियाधिकार ———— 374
49. अध्यात्म और अधिकार ———— 382
50. अध्यात्म का अर्थ ———— 388
51. अध्यात्म विरोधी तत्व ———— 398
52. समाज व्यवस्थ के सूत्र ———— 406
53. सत् साहित्य और अध्यात्म ———— 408
54. नारी और अध्यात्म ———— 412
55. मनुष्य का उचित आहार ———— 416
56. मनुष्य का प्रकृति ———— 420

खण्ड—4

पुरुष, अर्थ और पुरुषार्थ का स्वरुप

57. जैन धर्म के मूल सिद्धांत ———— 456
58. भाग्य से बड़ा पुरुषार्थ ———— 464
59. धर्म पुरुषार्थ कब और कैसे? ———— 472
60. अर्थ पुरुषार्थ कब और कैसे? ———— 476
61. अर्थोपार्जन के साधन ———— 482
62. अर्थशास्त्र और सप्तशील व्रत ———— 492
63. गरीबी बेरोजगारी और आर्थिक विकास ———— 496
64. मन का स्वरुप और कार्य ———— 420

Section-3

Jain Constitution, Rights and Spirituality

43. Historical role of Jain Constitution _____ 323
44. Father, Son Departmental Authority _____ 331
45. Marriage Rights _____ 343
46. Property Department Authority _____ 353
47. Mother's Property Rights _____ 373
48. Sister's Property Rights _____ 375
49. Spirituality and Rights _____ 383
50. Meaning of Spirituality _____ 389
51. Anti-spiritual Elements _____ 399
52. Principles of Social Order _____ 407
53. True Literature and Spirituality _____ 409
54. Women and Spirituality, _____ 413
55. Proper Human Food _____ 417
56. Nature of Man _____ 421

Section-4

Nature of Man, Meaning and Effort

57. Basic Principles of Jainism _____ 457
58. Effort (work) is Greater than Luck _____ 465
59. When and how is Effort? _____ 473
60. When and how to Make Economic Efforts? _____ 477
61. Means of Earning Money _____ 483
62. Economics and Saptasheel Vrat _____ 493
63. Poverty, Unemployment and Economic Development- 497
64. Nature and Function of Mind _____ 521

खण्ड–5

धर्म, संस्कृति, संस्कार और शान्ति

65. संस्कृति और संस्कार ———————————— 538
66. परिवर्तन और नयापन ———————————— 542
65. गरीबी या अमीरी वरदान कौन ? ———————————— 548
66. संसार में विद्यमान शक्तियाँ ———————————— 554
67. दुःख और अशान्ति श्रोत ———————————— 558
68. शान्ति में सन्तों का योगदान ———————————— 562
69. स्वतंत्रता और निराकुलता ———————————— 566
70. धर्म, विज्ञान और शान्ति ———————————— 578
71. अशान्ति, हिंसा और मानवाधिकार ———————————— 584
72. धर्म, जाति और पंथ निरपेक्षता ———————————— 592
73. सुख और विकास ———————————— 594
74. व्यक्ति और समाज ———————————— 612
75. विचार शान्ति और भावना ———————————— 618
76 अनुप्रेक्षा और शान्ति ———————————— 624
77. अनेकान्त और अहिंसा ———————————— 630
78. हिंसादि पाप हत्या व परिणाम ———————————— 636
79. युवा शक्ति अधिकार और कर्तव्य ———————————— 644
80. परिवार की उपादेयता ———————————— 648
81. परिवारिक दृष्टिकोण ———————————— 660
82. पारिवारिक हिंसा और अशान्ति के कारण ———————————— 674
83. जैन धर्म में पर्यावरण संरक्षण ———————————— 686
84. सप्त व्यसन त्याग का सिद्धांत ———————————— 706
85. सफलता प्राप्ति के उपाय ———————————— 708
86. मानवाधिकार, कर्तव्य और जैन धर्म ———————————— 714

Section-5

Religion, Culture, Values and Peace

65. Culture and Values _____ 539
66. Change and Newness _____ 543
65. Which is a Blessing, Poverty or Wealth? _____ 549
66. Powers Existing in the World _____ 555
67. Sources of Suffering and Unrest _____ 559
68. Contribution of Saints to Peace _____ 563
69. Freedom and Serenity _____ 567
70. Religion, Science and Peace _____ 579
71. Unrest, Violence and Human Rights _____ 585
72. Religion, Caste and Creed Secularism _____ 593
73. Happiness and Growth _____ 585
74. Individual and Society _____ 613
75. Thought Peace and Spirit _____ 619
76 Perspective and Peace _____ 625
77. Anekant and Non-violence _____ 631
78. Sins like Murder and Consequences _____ 637
79. Youth Power Rights and Duties _____ 645
80. Utility of Family _____ 649
81. Family Perspective _____ 661
82 Reason of Domestic Violence and Unrest _____ 675
83. Environmental Protection in Jainism _____ 687
84. Principle of Giving up Seven Addictions _____ 707
85. Ways to Achieve Success _____ 709
86 Human Rights, Duties and Jainism _____ 715

खण्ड–1

मानवाधिकारों का इतिहास, महत्व और विकास

SECTION-1

History, Importance and Development of Human Rights

मानवीय अधिकारों का इतिहास

प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ भगवान के पूर्व भोग भूमि थी। जहाँ भोग भूमि होती है वहाँ सभी मानव समान होते हैं। उनके सुख वैभव एवं भोग्य पदार्थ सब समान होते हैं और जीवनयापन करने के लिये कोई कर्म नहीं करना पड़ता। उन्हें सहज ही प्रकृति से जीवनोपयोगी वस्तुएं प्राप्त हो जाती हैं। इसीलिए भोगभूमियाँ जीवों में अधिकारों की कोई लड़ाई नहीं होती हैं, लेकिन जहाँ कर्म भूमि में धर्म और कर्म करके जीवनयापन करना होता है वहाँ कर्तव्य और अधिकारों का प्रसंग उपस्थित हो जाता है। आदिनाथ के समय भोग भूमि जन्य सुख सुविधाएँ समाप्त हो गई थी। कर्म भूमिज व्यवस्था प्रारंभ हो गई थी इसलिए प्रथम तीर्थंकर आदि ब्रह्मा श्री आदिनाथ स्वामी ने विवाह करने का और परिवार के लालन पालन एवं खेती वाड़ी आदि षट् कर्म करने का अधिकार दिया था। इससे यह सिद्ध होता है कि जैन दर्शन में मानव अधिकार की अवधारणा अनादिकालीन है। जो जन्म जात अधिकार होते हैं उन्हें नैसर्गिक, आधारभूत अथवा मूल अधिकार कहते हैं। जीवनयापन के इन मूल अधिकारों को आदिनाथ स्वामी ने दिया। उसके बाद सभी तीर्थंकरों ने दिये जो अभी तक चले आ रहे हैं और आगे भी चलते रहेंगे।

इस प्रकार जब हम मानवीय अधिकारों की ऐतिहासिक प्राचीन पृष्ठ भूमि की ओर दृष्टिपात करते हैं तो ज्ञात होता है कि जैन धर्म में अनादिकाल से मानवों को अधिकार दिये गये हैं। मानव ही क्या संसार के सभी चेतन अचेतन द्रव्यों को भी अनेक अधिकार दिये गये हैं। जैन धर्म के आदि पुराण में वर्णित कथन के अनुसार 24 कुलकर होते हैं। कुलकर भोगभूमि में तृतीय काल के अन्त समय में होते हैं। अंतिम कुलकर श्री नाभिराय हुए थे। जिन्हें वेदों में मनु कहा गया है, मनु की सन्तान होने से हम सभी मनुष्य या मानव कहलाते हैं। अंतिम कुलकर नाभिराय के पुत्र प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव आदिब्रह्मा आदिनाथ हुए। उन्होंने इंसान को जीवनयापन करने हेतु असि–मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य, विद्या इन षट् कर्मों का उपदेश देकर कर्तव्य बोध कराया और जीवन यापन के लिए षट् कर्म करने का अधिकार दिया।

जीवनयापन करने वाले अधिकारों को मूल अधिकार, आधारभूत अधिकार, नैसर्गिक अधिकार अथवा जन्मजात अधिकार कहते हैं। जैसे–जैसे सभ्यता का विकास होता गया वैसे–वैसे अधिकारों एवं कर्तव्यों में परिवर्तन होता गया। द्रव्य, क्षेत्र और काल के परिवर्तनानुसार संस्कृति में परिवर्तन और सभ्यता का विकास हुआ है। सभ्यता के विकास के अनुसार हमेशा अधिकारों का निर्धारण भी होता रहा।

History of Human Rights

This was the former offering land of the first Tirthankara Lord Rishabhnath. Where there is a land of enjoyment, all human beings are equal. Their happiness, splendor and enjoyment are all the same and they do not have to do any work to earn their living. They easily get things useful for life from nature. That is why there is no fight for rights among the living beings in the land of enjoyment, but where one has to live by doing religion and work in the land of karma, the issue of duty and rights is present. During the time of Adinath, the comforts and luxuries of enjoyment of land had ended. The Karma Bhoomij system had started, hence the first Tirthankar Adi Brahma Shri Adinath Swami had given the right to marry and perform the six duties of raising a family and farming etc. This proves that the concept of human rights in Jain philosophy is ancient. Which are birth rights. They are called natural, basic or fundamental rights. Adinath Swami gave these basic rights of living. After that all the pilgrims

Was. This proves that the concept of human rights in Jain philosophy is ancient. The rights which are born by birth are called natural, basic or fundamental rights. Adinath Swami gave these basic rights of living. After that all the Tirthankaras gave gifts which are continuing till now and will continue in future also.

Thus, when we look at the historical and ancient background of human rights, we come to know that in Jainism, rights have been given to humans since time immemorial. Not only human beings, all the animate and inanimate objects of the world have also been given many rights. According to the statement mentioned in Adi Purana of Jainism, there are 24 clans. Kulkar occurs in Bhogbhoomi at the end of the third period. The last Kulkar was Shri Nabhirai. Who has been called Manu in the Vedas, being the descendants of Manu, we all are called human beings or humans. The first Tirthankara, son of the last Kulkar Nabhiraya, was Lord Rishabhdev Adibrahma Adinath. He gave man a sense of duty by preaching the six deeds of Asi-Masi, agriculture, craft, commerce and knowledge for living and gave the right to do the six deeds for living.

The rights to live are called fundamental rights, basic rights, natural rights or birthrights. As civilization developed, the rights and duties changed. Culture has changed and civilization has developed according to changes in matter, region and time. Rights are decided according to the development of civilization.

वह निर्धारण जन्म जात अधिकार में नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, नागरिक, राजनैतिक, आर्थिक और राज्यकीय सैद्धान्तिक अधिकारों में परिवर्तन होता रहा है। इन अधिकारों के अनुसार ही विधि शास्त्र एवं दण्ड संहिता बनती रही है और समय–समय पर परिस्थिति के अनुसार इनमें परिवर्तन भी होता रहा है।

अनादिकाल से प्रत्येक मानव को अधिकार प्राप्त होते रहे हैं और वर्तमान में भी हैं भले ही वे शब्दों में व्याख्यापित नहीं किये गये हो। उनके नियम कायदे कानून भले ही संवैधानिक तौर पर न बने हों, फिर भी किसी न किसी रूप में मानव उन्हें अपने आचरण में लाता रहा है, और क्रिया के रूप में पालन करता रहा है।

मानव जीवन में समाज के अन्दर व्यापक चेतना जाग्रत करने, कर्तव्यों का पालन कराने तथा कायदे–कानून के अनुसार चलाने का काम करके एक सभ्य समाज का होना जरुरी है। जिस–जिस मानव ने ऐसा कार्य किया है वे महापुरुष के रूप में समय–समय पर प्रसिद्ध हुए हैं। इतिहास के पन्नों में तीर्थंकर श्री आदिनाथ से लेकर भगवान महावीर स्वामी तक एवं भरत चक्रवर्ती से लेकर प्रति नारायण, बलदेव आदि अनेक महापुरुषों के नाम मिलते हैं। इसके अलावा तुलसीदास, श्री राजाराम मोहनराय, रवीन्द्र नाथ टैगोर, मोहनदास करम चन्द्र गाँधी एवं भीमराव अम्बेडकर आदि अनेक व्यक्ति महापुरुष के रूप में उभरकर सामने आये हैं।

अधिकारों की भूख सभी प्राणियों में है क्योंकि प्रत्येक प्राणी के अन्दर आहार, भय, मैथुन और परिग्रह रूपी चार संज्ञाएँ (इच्छाएँ) अनादि काल से हैं। इन इच्छाओं की पूर्ति के लिये और जीवन निर्वाह के लिये प्रत्येक प्राणी आहार आदि करके जीवित रहने का अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझता है। इन्हीं अधिकारों को मूल भूत अधिकार, मौलिक अधिकार आदि नाम से कहा है। चींटी, मक्खी, कुत्ता, बिल्ली, शेर और बंदर आदि में अधिकारों की लड़ाई देखी जाती है। रानी चींटी एवं रानी मधुमक्खी अन्य चींटियों एवं मधुमक्खियों को अपने अनुसार अधिकार पूर्वक चलाती हुई देखी जाती हैं। इसी प्रकार लंगूर एवं शेर आदि अपने साथियों को अधिकार पूर्वक चलाते हुए देखे जाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि अधिकारों की भूख और लड़ाई सभी प्राणियों में देखी जाती है।

जैनाचार्यों ने, जैन सन्तों ने एवं तीर्थंकर आदि भगवंतों ने राजनैतिक अधिकारों की लड़ाई नहीं लड़ी और अधिकारों को पाने के लिये किसी से मांग भी नहीं रखी, परंन्तु अधिकारों का महत्व, अवधारणा, अर्थ, उपयोगिता इत्यादि की बात जरूर कही, और उस पर अपनी लेखनी भी चलाई हैं।

The determination also continued. That determination is not in the birth and caste rights but in the ideological rights of social, cultural, civil, political, economic and state. Jurisprudence and penal code have been made according to these rights and they have been changing from time to time as per the circumstances.

Every human being has had rights since time immemorial and even today, even if they are not expressed in words. Even if their rules and regulations are not constitutionally made, yet in some form or the other, human beings have been adopting them in their conduct and have been following them as an action.

In human life, it is necessary to have a civilized society by awakening widespread consciousness within the society, making it perform its duties and running it according to rules and regulations. Every human being has done such a thing. He has become famous as a great man from time to time. In the pages of history, names of many great men are found from Tirthankar Shri Adinath to Lord Mahavir Swami and from Bharat Chakravarti to Prati Narayan, Baldev etc. Apart from this, many people like Tulsidas, Shri Rajaram Mohan Roy, Rabindra Nath Tagore, Mohandas Karam Chandra Gandhi and Bhimrao Ambedkar have emerged as great men.

The hunger for rights is present in all living beings because the four desires (desires) of every living being - food, fear, sex and attachment - are from the beginning. To fulfill these desires and to sustain life, every person considers it as his birthright to survive by taking food etc. These rights are known as fundamental rights, *fundamental rights* etc. The example of rights is seen even in ant, fly, dog, cat, lion and monkey etc. The queen ant and the queen bee are seen controlling other ants and bees as per their authority. Similarly, monkeys and lions etc. have been seen controlling their companions with authority. This proves that hunger and fight for rights is seen by all living beings.

Jainacharyas, Jain saints and Tirthankar etc. did not fight for political rights and did not make any demand to get the rights, but they definitely talked about the importance, concept, meaning, utility etc. of rights, and wrote their writings on it.

मानवीय अधिकारों का महत्त्व

अधिकार प्राप्त होने पर मानवीय मूल्य बढ़ जाता है। अधिकार मिलने पर विचारों में क्रांति आने लगती है और पुरुषार्थ जाग्रत हो जाता है। मानवीय अधिकारों को जैन धर्म में जन्म सिद्ध अधिकार माना है। जो सामाजिक जीवन जीने में, व्यक्तिगत जीवन जीने में, देश के नियम कानून के अनुसार चलने में प्रत्येक मानव को अधिकार प्राप्त है वे मानवीय अधिकार कहलाते हैं। इन अधिकारों का व्यक्ति को भले ही ज्ञान न हो फिर भी वे अधिकारों को चाहते हैं और उन्हें प्राप्त भी करते है। मानवीय अधिकारों से सन्त, साहित्य, सत्ता, और समाज अछूता नहीं रह सकता, इनके द्वारा अधिकारों को जाना जा सकता है। सन्त साहित्य, सत्ता और समाज के माध्यम से हमें अधिकारों का ज्ञान होता है। अधिकार दिये बिना अराजकता मिट नहीं सकती। लेकिन कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो अधिकार पाकर तानाशाह बन जाते हैं। इसीलिए सत्तागत अधिकार योग्य व्यक्ति को ही देना चाहिये। जो जन्म जात अधिकार प्राप्त हैं, वे ईश्वर कृत माने जा सकते हैं। उन्हें हम मूल अधिकार भी कह सकते है। इन अधिकारों के अलावा शेष अधिकार समाज, सत्ता और सन्तों के द्वारा दिये जाते है, इन अधिकारों में द्रव्य, क्षेत्र, काल के अनुसार परिवर्तन भी सम्भव है। मानव अधिकार और कर्तव्य जैन धर्म के अनुसार छोड़ पाना आसान नहीं है, इसीलिए जैन धर्मानुयायी आध्यात्मिक संतों ने भी इन पर अपनी लेखनी चलाई है। वाणी से उसकी गाथा गाई है।

मानववादी, भौतिकवादी और अध्यात्मवादी ये सभी स्वतंत्र अधिकारों की बात करते और कराते हैं। संसारी आत्मा को धर्म करने, अर्थ–संग्रह करने, काम–भोग की तृप्ति करने और मोक्ष पुरुषार्थ करके मुक्ति पाने का अधिकार सभी भव्य आत्माओं को है, अभव्य को नहीं। अधिकार प्राप्त मनुष्य से श्रेष्ठ दुनिया में कोई नहीं है, जो मनुष्य कर सकता है, वह देवता भी नहीं कर सकते इसीलिए मनुष्यों को अनेक अधिकार प्रदान किये गये हैं। जो धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष रूप पुरुषार्थ करने का अधिकारी है वही सच्चा इन्सान बनता है।

कर्तव्य परायणता और अधिकारों से मनोवांछित गुणों का विकास होता है। मृत्यु लोक को स्वर्ग लोक से भी बढ़कर कहा है क्योंकि इस मनुष्य लोक में जितने अधिकार मनुष्य को प्राप्त हैं और कर्तव्य निभाने की छूट दी गई है उतनी स्वर्ग लोक के देवों को भी नहीं दी गई है।

Importance of Human Rights

Human value increases when rights are obtained. After getting rights, revolution starts taking place in thoughts and efforts are awakened. Human rights are considered birth rights in Jainism. The rights that every human being has in living social life, in personal life and in living according to the rules and laws of the country are called human rights. Even if a person does not know about these rights, he still wants them and gets them. Saints, literature, power and society cannot remain untouched by human rights, rights can be known through them. We come to know about our rights through saint, literature, power and society. Anarchy cannot be eradicated without giving rights. But there are some people who become dictators after gaining authority. That is why ruling power should be given only to a capable person. Those who are blessed with birth rights can be considered as God's creation. We can also call them fundamental rights. Apart from these rights, the remaining rights are given by the society, power and saints, it is also possible for these rights to change according to matter, area and time. According to Jainism, it is not easy to give up human rights and duties, that is why spiritual saints following Jainism have also written on these. His story has been sung with voice.

Humanists, materialists and spiritualists all talk and promote independent rights. The worldly soul has the right to do religion, to accumulate wealth, to satisfy sexual pleasures and to attain salvation by making efforts for salvation. All the noble souls have the right, not the unworthy ones. There is no one in the world better than a man with rights, what a man can do, even the deities cannot do, that is why many rights have been granted to humans. Only the one who has the right to make efforts in the form of religion, wealth, work and salvation becomes a true human being.

Desired qualities are developed through devotion to duty and rights. The world of death has been said to be greater than heaven because in this human world, the number of rights that humans have and the freedom to perform their duties is not equal to that given to the gods of heaven.

अधिकार प्राप्त होने पर मानव ही, मानववादी बन जाता है। मानवीयता का अर्थ समझ में आने लगता है। मानववादी नीतियाँ मानव को नैतिक बनाती है, अधिकारों को दिलाती है, पुरुषार्थ जगाती है और लक्ष्य को पाने हेतु संचार पैदा करती है। मानवाधिकार दिलाने में, समाज के उत्थान में और नैतिक मूल्यों को बढ़ाने में सन्तों का योगदान वाचनिक और वैचारिक रूप से हमेशा रहा है और आगे भी रहेगा। मानव अधिकारों की सजग विवेचना में जैन सन्तों का भी बहुमूल्य योगदान रहा है। मानव जीवन को मूल्यवान बनाने के लिये कुछ आध्यात्मिक मानवीय अधिकार संतो ने इस प्रकार भी बतलाये हैं।

1. सभी जीवों को जीने का अधिकार।
2. स्व पर के उपकार करने का अधिकार।
3. मैत्री भावना का अधिकार।
4. गुणी जनों के प्रति प्रमोद भावना का अधिकार।
5. समस्त प्राणियों पर अनुकम्पा करने का अधिकार।
6. दुख दर्द से पीडित प्राणियों पर करुणा करने का अधिकार।
7. माध्यस्थ भावना का अधिकार।
8. क्षमा, मार्दव आदि दस धर्मों के पालन करने का अधिकार।
9. दान, पूजा का अधिकार।
10. प्रेम, वात्सल्य का अधिकार।
11. सेवा का अधिकार (वैय्यावृत्ति)।
12. विनय भावना का अधिकार।
13. सप्त शील एवं पांच व्रतों के पालने का अधिकार।
14. ज्ञानाभ्यास करने का अधिकार।
15. शक्ति अनुसार तप, त्याग, संयम पालन करने का अधिकार।
16. धर्म प्रभावना करने का अधिकार।
17. दिगम्बरी दीक्षा लेने का अधिकार।
18. समाधि मरण करने का अधिकार।
19. मोक्ष प्राप्ति का अधिकार।
20. पंचतत्वों में विलीन होने (दाह संस्कार) का अधिकार।

इसके अलावा मानवीय गुणों को विकसित करने के लिये स्वतंत्र विचारों की अभिव्यक्ति, पाण्डित्य, व्रत, उपवास, रूप त्याग, तपस्या एवं स्वर्ग–मोक्ष प्राप्त करने का अधिकार इत्यादि अनेक अधिकार हैं।

When a human being gets rights, he becomes a humanist. The meaning of humanity begins to be understood. Humanistic policies make humans moral, provide them with rights, awaken manliness and create communication to achieve the goal. The contribution of saints, verbally and ideologically, in providing human rights, in upliftment of society and in enhancing moral values has always been there and will continue to be so in future also. Jain saints have also made valuable contribution in the conscious discussion of human rights. To make human life valuable, saints have also explained some spiritual human rights in this way.

1. Right to life of all living beings.
2. Right to do good to oneself.
3. Right to friendly feelings.
4. The right to feel joy towards virtuous people.
5. The right to have compassion on all living beings.
6. The right to have compassion on creatures suffering from pain and suffering.
7. Right to mediate emotion.
8. Right to follow ten religions like Kshama, Mardava etc.
9. Right to charity and worship.
10. Right to love and affection.
11. Right to service (Vaiyavritti).
12. Right to modesty.
13. Right to observe the seven precepts and five fasts.
14. Right to practice knowledge.
15. The right to practice penance, renunciation and restraint as per one's capacity.
16. Right to practice religion.
17. Right to take Digambari initiation.
18. Right to die in Samadhi.
19. Right to attain salvation.
20. Right to merge into the five elements (cremation).

Apart from this, there are many rights for developing human qualities like expression of independent thoughts, erudition, fasting, renunciation of form, penance and right to attain heaven and salvation etc.

मानव अधिकारों की अवधारणा

इस वसुंधरा पर सब जीवों में मानव ही इस प्रकृति की सबसे सुन्दर उपयोगी और सर्वोत्तम कृति है। स्वयं मानव द्वारा मानव समाज के अस्तित्व बनाए रखे एवं उत्थान के लिये सिद्धान्त बनाये जाते हैं। जब सिद्धान्तों की बात आती है तो अधिकारों की बात स्वतः आ जाती है। लेकिन जो अधिकार जन्मजात नैसर्गिक रूप में होते हैं, उनके लिये सिद्धान्त बनाये नहीं जाते बल्कि जीवन में धारण किये जाते हैं। वे अधिकार हर प्राणी को प्रकृति प्रदत्त हैं। देश, समाज, परिवार और जीवन को सुचारू रूप से अनुशासित चलाने के लिये कुछ अधिकार परिवार, समाज और राजा द्वारा दिये जाते हैं। उन अधिकारों का पालन अधिकार पूर्वक मानव से कराया जाता है। जिन अधिकारों का अधिकार पूर्वक पालन कराया जाता है, उन्हें नियम कानून या संविधान कहते हैं। उनका उल्लंघन करने पर दण्डित किया जाता है। दण्डित किये जाने के नियम कानून को दण्ड संहिता या धारा कहते हैं।

कभी–कभी जीवन जीने के मौलिक अधिकारों को राजा, समाज और आतंकी द्वारा छीन लिया जाता है और उन्हें भूखा प्यासा ही जेल में डाल दिया जाता है ऐसे अधिकार परिवर्तनीय भी होते हैं। समाज अपने सामाजिक तौर पर कुछ अधिकार देता है और उल्लंघन करने पर दण्डित भी करता है, जिसे पर्सनल लॉ कहते हैं। जो नागरिक अधिकारों का सही उपभोग करता है और कर्तव्यों का सही ढंग से पालन करता है वह अपने देश, समाज एवं परिवार को स्वयं विकसित कर लेता है। इसीलिए दिये गये अधिकारों से प्रत्येक मानव सुख, शांति प्राप्त करता है और आसानी से अपना जीवनयापन कर लेता है। लेकिन अज्ञान, मोह, अहंकार, नफरत, आदि से भरे अनेक अधिकारित राजा, मंत्री एवं पुरोहित आदि ने अधिकारों का दुरुपयोग भी किया है और अन्याय एवं अनीति का सहारा भी लिया है इसी कारण भरत–बाहुबली युद्ध, राम–रावण युद्ध, कौरव–पाण्डव युद्ध प्राचीनकाल में हुए। अर्वाचीन काल में प्रथम, द्वितीय विश्व युद्ध हुआ और भी अनेक आतंकवादियों के द्वारा युद्ध हो रहे हैं, जिससे मानवता बर्बरता में बदली। उस बर्बरता को बचाने, न्याय दिलाने और शांति स्थापित करने हेतु 'संयुक्त राष्ट्र महासंघ' की स्थापना की गई।

Concept of Human Rights

On this Vasundhara (Earth), among all the living beings, human being is the most beautiful, useful and best creation of this nature. Principles are made by humans themselves for the maintenance and upliftment of human society. When it comes to principles, the issue of rights automatically comes to mind. But the rights which are innate in natural form, principles are not made for them but they are imbibed in life. Those rights are given to every living being by nature. To smoothly run the country, society, family and life in a disciplined manner, some rights are given by the family, society and the king. Those rights are enforced by the human beings. The rights which are enforced legally are called rules, laws or constitution. Violating them is punished. The rules for punishment are called penal code or section.

Sometimes the fundamental rights to live are snatched away by the king, society and terrorists and they are thrown into jail hungry and thirsty. Such rights are also changeable. The society gives some social rights and also punishes for violating them, which is called personal law. One who enjoys civil rights properly and performs his duties properly, develops his country, society and family. That is why, with the given rights, every human being attains happiness, peace and earns his living easily. But many powerful kings, ministers and priests, filled with ignorance, attachment, ego, hatred, etc., have misused their rights and also resorted to injustice and immorality. For this reason, Bharat-Bahubali war, Ram-Ravana war, Kaurava-Pandava war took place in ancient times. In the modern era, the first and second world wars took place and many more wars are being waged by terrorists, due to which humanity is being subjected to barbarism. Changed in. To save that barbarity, to provide justice and to establish peace, 'United Nations Organization (U.N.O.)' was established.

जैसा व्यवहार हम दूसरों से हम अपने लिये चाहते है वैसा ही व्यवहार हमे दूसरों के साथ करना चाहिए। संक्षेप में यही मानवाधिकार एवं कानून (Law) है। अतः सभी को मानव अधिकारों का संरक्षण करना चाहिये। यह किसी का अधिकार है तो किसी का कर्तव्य। दोनों को पालना समान रूप से आवश्यक है। इसी से हम अपने देश की एकता एवं अखण्डता को अक्षुण्य बनाये रख सकेगें। 10 दिसम्बर 1948 को संयुक्त राष्ट्र घोषणा के क्रम में एक से तीस तक के सभी अनुच्छेद 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान में भी समाविष्ट कर लिये गये। इसी को मध्य नजर रख 1977 में संविधान के 42 वे संशोधन द्वारा व्यक्ति के मूल कर्तव्यों को अनुच्छेद 51A के माध्यम से जोड़ा गया है।

अनुच्छेद (आर्टिकल) 51A में हमे संविधान का आदर करने एवं कर्तव्यों के प्रति समर्पित रहने हेतु कहा गया है। राष्ट्र ध्वज देश की आन–बान–शान का प्रतीक है इसके तीन रंग केसरिया, सफेद व हरा क्रमशः बलिदान शांति व प्रगति के प्रतीक है और मध्य वाले रंग का अशोक चक्र धर्म की राह पर चलने का संदेश देता हैं।

जैसे द्वितीय विश्व युद्ध के समय त्रासदी की समस्या थी वैसी ही समस्या अंतिम कुलकर नाभिराय मनु के सामने आई थी। उसका समाधान नाभिराय ने अपने युवराज ऋषभदेव स्वामी से कराया था। उस समय ऋषभ देव स्वामी ने मानवों को कुछ अधिकार दिये क्योंकि उसके पूर्व भोग भूमि थी कर्म भूमि नहीं। भोग भूमि में सभी मानव को समान रूप से सुख सुविधा और जीवन निर्वाह की भोग सामग्री कल्प वृक्षों से मिल जाती थी। मानव के समान पशु–पक्षियों को भी भोग सामग्री समान रूप से कल्प वृक्षों से मिल जाती थी अतः वे मानव की भांति सभ्य होते थे। उस समय सभ्य होने का मुख्य कारण था कि एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावनाएं थी? पूर्ण अनुशासन था, व्यसन, अहंकार नहीं था, प्रतिस्पर्धा और वर्चस्व की लड़ाई नहीं थी लेकिन कल्प वृक्षों के समाप्त हो जाने पर भूख, प्यास और संतान के पालन की त्रासदी फैल गई थी सूर्य, चांद, तारे दिखने लगे थे। रात एवं दिन का भेद हो गया था। रात्रि में घनघोर अंधेरा छाने लगा था। एक प्राणी दूसरे प्राणी की क्रूरता पूर्वक हिंसा करने लगा था अथवा दुर्व्यवहार करने लगा था।

We should treat others the way we want others to treat us. In short this is following human rights and law. Therefore everyone should protect human rights. It is someone's right and someone's duty. It is equally necessary to maintain both. Through this we will be able to keep the unity and integrity of our country intact. Following the United Nations Declaration on 10 December 1948, all articles one to thirty were included in the Indian Constitution on January 26, 1950. Keeping this in mind, by the 42nd amendment of the Constitution in 1977, the fundamental duties of the individual were added through Article 51A.

In Article 51A we have been asked to respect the Constitution and remain dedicated to our duties. The national flag is a symbol of the pride and glory of the country, its three colors saffron, white and green respectively symbolize sacrifice, peace and progress and the Ashok Chakra of the middle color gives the message of following the path of religion.

Just as there was the problem of tragedy during the Second World War, the same problem faced the last Kulkar Nabhiraya Manu. Nabhiraya had got its solution through his crown prince Rishabhdev Swami. At that time Rishabh Dev Swami gave some rights to humans because before him it was the land of enjoyment and not the land of karma. In Bhog Bhoomi, all human beings were equally provided with the luxuries and material for subsistence from the Kalpa trees. Like humans, animals and birds also got food items from the Kalpa trees, hence they were civilized like humans. The main reason for being civilized at that time was feelings of respect for each other? There was complete discipline, no addiction, no ego, no competition and dominance. There was no war, but after the Kalpa trees were destroyed, the tragedy of hunger, thirst and child rearing had spread and the sun, moon and stars had become visible. There was a difference between night and day. Dense darkness had started setting in at night. One animal had started brutally violence or misbehavior with another animal.

उस समस्या के समाधान हेतु ऋषभ देव स्वामी ने मानव को कुछ अधिकार दिये थे, समस्या को देखते हुए क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन तीन वर्णों का विभाजन किया था। उस समय दिये गये अधिकार और वर्ण भेद की व्यवस्था परिस्थिति और योग्यताओं को देखते हुए की गई थी। आदिनाथ स्वामी के बाद उनके पुत्र महाराजा भरत चक्रवर्ती ने संशोधित करके कुछ और नियम कानून बनाये, वर्ण व्यवस्था में सुधार करके ब्राह्मण वर्ण की भी स्थापना की। भरत चक्रवर्ती ने छह खण्डों में विभाजित इस भरत क्षेत्र में दिग्विजय यात्रा निकालकर एक–दूसरे से जोड़ने का कार्य किया था। समाज को अत्याचार और उत्पीड़न से बचाने के लिये उन्होंने नये सिद्धान्तों की स्थापना की एवं मानव अधिकारों का अर्थ समझाया।

To solve that problem, Rishabh Dev Swami had given some rights to human beings, in view of the problem he had divided humans in three varnas into Kshatriya, Vaishya and Shudra. The rights given at that time and the system of caste discrimination were made keeping in mind the circumstances and qualifications. After Adinath Swami, his son Maharaja Bharat Chakravarti modified some more rules and regulations, reformed the caste system and also established the Brahmin caste. Bharat Chakravarti had done the work of connecting Bharat Kshetra divided into six sections by carrying out Digvijay Yatra. To save the society from tyranny and oppression, he established new principles and explained the meaning of human rights.

मानव अधिकार का अर्थ

मानव अधिकार वे अधिकार हैं जो जीवन रक्षा और व्यक्तित्व के विकास के लिये होते हैं। मानव अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवनयापन के लिये, आत्मगुणों के विकास के लिये, देश–समाज, और परिवार में प्रतिष्ठा बढ़ाने और प्राणों की रक्षा के लिये दिये जाते हैं। मानवीय अधिकारों से राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाता है। लिंग, वर्ग, जाति और व्यवसाय में मतभेद को मिटाया जाता है। मानव अधिकार से अभिप्राय यह भी है कि व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता, समानता और गरिमा को प्रत्याभूत करना। मानवीय अधिकारों से अपने स्वाभिमान को बचाना। मानवीय अधिकारों से मानव निर्भीक, सम्मान जनक जीवनयापन करता है, यही मानवीय अधिकार का अर्थ है। मानवीय मूल अधिकार किसी रीति–रिवाज, परम्परा, कानून, और शासक की देन नहीं है बल्कि वे नैसर्गिक हैं, थे और रहेंगे।

मानवीय अधिकार देने का लक्ष्य एक सुन्दर व्यवस्थित विकसित समाज की रचना करने का होता है। प्राचीनकाल से मानव समाज को कई परिस्थितियों से गुजरना पड़ा है। उन परिस्थतियों से धर्म, जाति, दर्शन, रंग, रूप, लिंग व्यवसाय और भौतिक क्षमताओं के आधार पर विभाजन होता रहा है। इसी आधार पर अपने जीवनयापन के लिये, आत्म गुणों के विकास के लिये, परिवार–देश और समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये, उज्ज्वल भविष्य तथा प्राणों की रक्षा के लिये मानव को अधिकार दिये जाते रहे हैं। इसी आधार पर अनेक कायदे, कानून, अनुच्छेद, धारायें, व्रत, नियम, बनाये जाते रहे हैं और समय–समय पर परिवर्तित होते रहे हैं। इन समस्त अधिकारों, नियम–कानूनों के बनाये जाने में मात्र मानव समाज का ही नहीं बल्कि समस्त प्राणियों के हित को केन्द्र में रखा जाता है।

जैन दर्शन के अनुसार उत्पाद–व्यय और ध्रौव्य जिसमें पाया जाता है उसे द्रव्य कहते हैं। यही द्रव्य की व्यवस्था है, उत्पाद का अर्थ नई पर्याय का उत्पन्न होना। व्यय का अर्थ वर्तमान में जो उस द्रव्य का स्वरूप पर्याय है उसका परिवर्तन होना। उस द्रव्य के स्वरूप में परिवर्तन होनेपर भी द्रव्य का ज्यों का त्यों बना रहना ध्रौव्य कहलाता है। इसका अर्थ यही है कि प्रत्येक द्रव्य, क्षेत्र, काल, नियम कानून परिवर्तित होते रहे हैं। परिवर्तन के साथ पदार्थ का ज्यों का त्यों बना रहना अनेकान्त के सिद्धान्त से घटित होता है इसका कथन स्याद्वाद शैली से संभव है। इसी आधार पर जाति, धर्म, लिंग, व्यवसाय, अध्यात्मवाद, साम्यवाद और भौतिकवाद आदि में परिवर्तन हुआ है।

Meaning of Human Rights

Human rights are those rights which are for survival and development of personality. Human rights are given to every person for his livelihood, for the development of self-qualities, for increasing prestige in the country, society and family and for the protection of life. National unity and security are taken full care of human rights. Differences in gender, class, caste and occupation are erased. Human rights also mean guaranteeing a person's life, liberty, equality and dignity. To protect our self-respect from human rights. Through human rights, humans live a fearless and respectable life, this is the meaning of human rights. Human fundamental rights are not the gift of any custom, tradition, law or ruler, rather they are natural, were and will be.

The aim of giving human rights is to create a beautiful, organized and developed society. Since ancient times, human society has had to go through many situations. Due to those circumstances, there has been division on the basis of religion, caste, philosophy, color, appearance, gender, occupation and physical abilities. On this basis, human beings have been given rights for their livelihood, for the development of self-qualities, for increasing the prestige in the family, country and society, for a bright future and for the protection of life. On this basis, many rules, laws, articles, sections, fasts, rules have been made and changed from time to time. While making all these rights and rules and regulations, the interest of not only human society but also of all living beings is kept at the centre.

According to Jain philosophy, the product-expenditure and the substance in which it is found is called substance. This is the arrangement of matter, product means the creation of a new substance. Expenditure means the present form of that matter. It has to change. The persistence of a substance as it is even after a change in its form is called dhravya (matter). This means that every substance, area, time, rules and laws have been changing. The matter remaining the same with change occurs due to the principle of Anekanta. It is possible to say this in the Syadvada style. On this basis, changes have taken place in caste, religion, gender, occupation, spirituality, communism and materialism etc.

मानव अधिकारों की अवधारणा मनुष्य के संम्पूर्ण विकास से जुड़ी हुई है। जिसमें गुरु–शिष्य, राजा–प्रजा, नारी–पुरुष, राज्य और देश के सभी नागरिकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। जहाँ जैसी मान्यता, चारित्र, खानपान, रहन–सहन आदि सभ्यता रही है उसी के अनुसार अधिकार बनते और परिवर्तित होते रहे हैं। जो नया होता है वह भी एक दिन पुराना हो जाता है, यह प्रकृति का नियम है। अधिकारों की चाहत करना मानव की प्रकृति है। वासना, अर्थ लोलुपता, धार्मिक श्रद्धा, उन्माद, संवेग और वैराग्य की भावना को पाने की चाहत हमेशा रही है। संवेग और वैराग्य से युक्त मानव स्वर्ग और मोक्ष के अधिकारों को प्राप्त करता रहा है। अर्थ लोलुपी धन को प्राप्त करने के अधिकारों को लड़ता रहा है, धार्मिक श्रद्धा और उन्माद समाज में हमेशा विभाजन करता रहा है। वासना की चाहत करने वाला मनुष्य काम पुरुषार्थ के अधिकारों को प्राप्त करने का प्रयास करता रहा है। इसी कारण स्वतंत्रता, समानता, सामाजिकता, न्याय व्यवस्था खंडित होती रही है तथा पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, प्रादेशिक, एवं विश्व युद्ध होते रहे हैं। यह सभी युद्ध अधिकारों के लिये ही हुए हैं। इससे निपटने के लिये अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग का उदय हुआ, अनेक योजनायें तैयार की गई एवं संविधान बनाये गये।

The concept of human rights is linked to the overall development of human beings. In which Guru-disciple, king-subject, man-woman, state and all the citizens of the country have played an important role. Rights have been formed and changed according to the beliefs, character, food habits, way of life etc. of the civilization. Whatever is new also becomes old one day, this is the law of nature. It is human nature to want rights. There has always been a desire to achieve the feelings of lust, greed for money, religious devotion, frenzy, passion and detachment. A human being with passion and renunciation has been attaining the rights of heaven and salvation. The greedy for money has been fighting for the rights to acquire wealth, religious devotion and fanaticism have always created divisions in the society. The lustful man has been trying to attain the rights of sexual manhood. For this reason, freedom, equality, sociality, justice system have been fragmented and family, social, political, regional and world wars have been taking place. All these wars have taken place only for rights. To deal with this, the International Human Rights Commission emerged, many plans were prepared and constitutions were made to solve the problem.

मानवाधिकारों की सार्वजनिक घोषणा

मानवाधिकारों की सार्वजनिक घोषणा युग के आदि में अंतिम कुलकर महाराज नाभिराय के पुत्र भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) ने जियो और जीने दो, किसी को कष्ट मत दो, अहिंसा का पालन करो, किसी का दिल मत दुखाओ और पेट भर भोजन मिल जाए तो मानवाधिकारों का कोई भी हनन नहीं करता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से 10 दिसम्बर 1948 को वैश्विक मानवाधिकार घोषणा पत्र जारी किया गया। इस घोषणा के अंतर्गत कुल 30 अनुच्छेद रखे गये। **भारत में 27 दिसम्बर 1993** को एक अध्यादेश जारी किया गया तथा संसद द्वारा संरक्षण अधिनियम पारित करके राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राज्य मानवाधिकार आयोग एवं मानवाधिकार न्यायालय की स्थापना की गई।

आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक अधिकारों की अंतर्राष्ट्रीय प्रसंविदा दिसम्बर 1966 में स्वीकृत की गई एवं 3 जनवरी 1976 को लागू की गई। इसमें कुल 31 अनुच्छेद बनाये गये। जो मुख्य रूप से विश्व मानवाधिकार घोषणा के अनुरुप है। मुख्य रूप से काम करने का अधिकार, सामाजिक सुरक्षा का अधिकार, श्रम संघ बनाने का अधिकार, सांस्कृतिक जीवन में भाग लेने का अधिकार, जीवन में पर्याप्त संसाधनों का अधिकार एवं शिक्षा का अधिकार दिया गया।

नागरिक एवं राजनैतिक अधिकारों की अंतर्राष्ट्रीय प्रसंविदा 23 मार्च 1976 को लागू की गई इसमें कुल 53 अनुच्छेद रखे गये। मुख्य रूप से जीने का अधिकार, अपमान जनक व्यवहार से स्वतंत्रता का अधिकार, सुरक्षा का अधिकार, निवास के चयन का अधिकार, विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार, सार्वजनिक मामलों में भाग लेने का अधिकार दिया गया।

मानव अधिकारों का कालक्रम

मानवाधिकार का काल चक्र अनादि कालीन है, परंतु जैन धर्म के अनुसार काल चक्र अनादि अनंत है इसलिए अधिकार और कर्तव्य अनादि, अनंत हैं। लेकिन काल चक्र और राजाओं के आधार पर इन अधिकारों का प्रारंभ और अंत माना गया है।

Public Declaration of Human Rights

At the beginning of the era of Public Declaration of Human Rights, Lord Adinath (Rishabhdev), son of the last Kulkar Maharaj Nabhirai, said, Live and let live, do not hurt anyone, follow non-violence, do not hurt anyone and if you get enough food then there is no question of human rights. Also do not violate.

The Universal Declaration of Human Rights was issued by the United Nations on 10 December 1948. A total of 30 articles were included in this declaration. In India, an ordinance was issued on 27 December 1993 and by passing the Protection Act by the Parliament, National Human Rights Commission, State Human Rights Commission and Human Rights Court were established.

The International Covenant on Economic Social Cultural Rights was approved in December 1966 and came into force on 3 January 1976. A total of 31 articles were made in it. Which are mainly in accordance with the Universal Declaration of Human Rights. Mainly the right to work, right to social security, right to form labor unions, right to participate in cultural life, right to adequate resources in life and right to education were given.

The International Covenant on Civil and Political Rights was implemented on 23 March 1976. A total of 53 articles were kept in it. Mainly the right to life, right to freedom from humiliating behavior, right to security, right to choose residence, right to freedom of thought and expression, right to participate in public affairs were given.

Timeline of Human Rights

The cycle of human rights is eternal, but according to Jainism, the cycle is eternal and therefore rights and duties are eternal. But these rights are considered to have a beginning and end on the basis of time cycle and kings.

प्रथम एच्छिक प्रोटोकाल –: नागरिक एवं राजनैतिक अधिकारों की प्रसंविदा का प्रथम एच्छिक प्रोटोकाल संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा दिसम्बर 1966 में स्वीकृत किया गया। जो 23 मार्च 1976 में लागू किया गया। इसे 14 अनुच्छेदों में विभाजित किया गया।

द्वितीय एच्छिक प्रोटोकाल –: 15 दिसम्बर 1989 को स्वीकृत किया गया एवं 11 जुलाई 1991 को लागू किया गया।

मानव अधिकार समिति का गठन –: अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार समिति का गठन 20 नवम्बर 1986 को किया गया जिसमें 18 सदस्यों की समिति बनाई गई।

विश्व मानवाधिकार सम्मेलन –: संयुक्त राष्ट्र सभा द्वारा विश्व मानवाधिकार सम्मेलन 25 जून 1993 को आस्ट्रिया की राजधानी विएना में आयोजित किया गया, इसलिये इस सम्मेलन का नाम विएना सम्मेलन घोषित किया गया एवं मानवाधिकार दिवस मनाने की घोषणा भी की गई।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त की घोषणा –: संयुक्त राष्ट्र महासंघ ने मानवाधिकारों की रक्षा हेतु 20 दिसम्बर 1993 को मानवाधिकार उच्चायुक्त पद का गठन किया गया जिसका कार्यकाल 4 वर्ष रखा गया।

मानवाधिकार परिषद् –: संयुक्त राष्ट्र (मानवाधिकार) संघ के स्थान पर 16 जून 2006 को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद का गठन किया गया जिसमें कुल 47 सदस्य नियुक्त किये गये। यह परिषद् संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधीनस्थ बनाई गई। जिनके सदस्यों का कार्यकाल 3 वर्ष रखा गया।

First Optional Protocol -: Civil and Political Rights. The first optional protocol of the Covenant was approved by the United Nations General Assembly in December 1966. Which was implemented on 23 March 1976. It was divided into 14 articles.

Second Optional Protocol -: Approved on 15 December 1989. It was passed and implemented on 11 July 1991.

Formation of Human Rights Committee -: International Human Rights Committee was formed on 20 November 1986 in which a committee of 18 members was formed.

World Human Rights Conference: By the United Nations Assembly. The World Human Rights Conference was held on 25 June 1993 in Vienna, the capital of Austria, hence the name of this conference was declared as *Vienna Conference* and it was also announced to celebrate Human Rights Day.

Declaration of the United Nations High Commissioner for Human Rights: To protect human rights, the United Nations Organization created the post of High Commissioner for Human Rights on 20 December 1993, whose tenure was kept for 4 years.

Human Rights Council -: The United Nations Human Rights Council was formed on 16 June 2006 in place of the United Nations (Human Rights) Organization, in which a total of 47 members were appointed. This council was made subordinate to the United Nations General Assembly. The tenure of whose members was kept for 3 years.

मानवाधिकारों का उद्‌भव और विकास

जैन धर्म के अनुसार भरत एवं ऐरावत क्षेत्र में षट्‌काल परिवर्तन का वर्णन मिलता है। काल के नाम हैं– प्रथम सुखमा सुखमा काल, द्वितीय सुखमा काल, तृतीय सुखमा दुखमा काल, चतुर्थ दुखमा–सुखमा काल, पाँचवा दुखमा काल और छटवाँ दुखमा दुखमा काल। यह परिवर्तन अनादिकाल से निरंतर चल रहा है और आगे भी अनंत काल तक चलता रहेगा।

प्रथम तीन काल में भोग भूमि की व्यवस्था रहती है। भोग भूमि के समय मनुष्यों को जीवनयापन करने के लिये किसी भी प्रकार का कर्म नहीं करना पड़ता था। सभी व्यवस्थायें कल्पवृक्षों के नीचे बैठकर कामना और याचना करने से सहज उपलब्ध हो जाती थी। चतुर्थ काल से षष्ठम् काल तक कर्म भूमि रहती है। कर्म भूमि के समय में मनुष्य को कर्म करके ही अपना जीवनयापन करना पड़ता है।

जब तृतीय काल समाप्त होता है, तब 14 कुलकर होते हैं, अंतिम कुलकर के समय कल्पवृक्षों का अभाव हो जाता है और जीवनयापन के लिये कल्पवृक्षों से सहज उपलब्ध होने वाली भोग सामग्री मिलना समाप्त हो जाती हैं, इसी कारण भोजन, पानी, वस्तु, मकान एवं संतान के भरण–पोषण आदि की समस्या उत्पन्न हो जाती हैं। रात दिन का भेद पड़ जाता है। तिर्यंच (पशु–पक्षी) हिंसक प्रवृत्ति वाले हो जाते हैं अतः वे मनुष्यों पर भी आक्रमण करने लग जाते हैं। ऐसी अनेक जटिल समस्याओं का समाधान प्राप्त करने के लिये अंतिम कुलकर मनु के पास मानव समूह रूप में पहुँचता है, उसका समाधान मनु के पुत्र प्रथम तीर्थंकर करते हैं।

त्रिलोकसार एवं महापुराण ग्रंथ में किये गये वर्णन के अनुसार प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ने मानव समाज की जटिल समस्याओं का समाधान करने के लिये मानव को अनेक अधिकार दिये एवं कर्तव्य करने की प्रेरणा दी। उन्होंने हिंसक प्राणियों से रक्षा के लिये अस्त्र–शस्त्र रखने का अधिकार एवं शिक्षा दी। भूख मिटाने के लिये पेड़–पौधे उगाने, खेती करने का अधिकार दिया।

Origin and Development of Human Rights

According to Jainism, description of Shatkal change is found in Bharat and Airavat region. The names of the periods are - First Sukhma Sukhma Kaal, Second Sukhma Kaal, Third Sukhma Dukhama Kaal, Fourth Dukhama - Sukhma Kaal, Fifth Dukhama Kaal and Sixth Dukhama Dukhama Kaal. This change has been going on continuously since time immemorial and will continue till eternity.

In the first three periods, there is a system of Bhog land. At the time of Bhog Bhoomi, people did not have to do any kind of work to earn their living. All the arrangements were easily available by sitting under Kalpavriksha and making wishes and requests. Karma Bhoomi remains from the fourth period to the sixth period. In the time of Karma Bhoomi, man has to earn his living only by doing work.

When the third period ends, there are 14 Kulkars, at the time of the last Kulkar, there is a shortage of Kalpavrikshas and the easily available food and other items from the Kalpavrikshas for living cease to be available, due to which food, water, goods, houses etc. and problems arise regarding the maintenance of children etc. There is difference between day and night. Tiryancha (animals and birds) become violent and hence they start attacking humans also. To get the solution of many such complex problems group of humans reaches last Kulkar Manu in the form of a, which is solved by Manu's son, the first Tirthankar Adinath.

According to the description given in Triloksar and Mahapuran texts, the first Tirthankar Adinath gave many rights to humans and inspired them to perform duties to solve the complex problems of human society. He taught the right to keep weapons for protection from violent creatures. To eradicate hunger, to grow trees and plants, to do farming gave the right to.

अपने इतिहास काल व संस्कृति को सुरक्षित रखने, ज्ञान की वृद्धि करने एवं साक्षर बनने के लिये **मसि विद्या** प्रदान की। अपनी बेटी ब्राह्मी को अक्षर विद्या एवं सुन्दरी को अंक विद्या की शिक्षा दी और अपने पुत्र भरत–बाहुबली को असि, कृषि आदि की विद्या देकर नारी और पुरुष दोनों को समान रूप से शिक्षा देने का अधिकार प्रदान किया। परिवार का परिपालन करने के लिये शिल्प कला एवं वाणिज्य कला की शिक्षा दी जिसमें व्यापार करने का तथा मकान बनाकर रहने का अधिकार प्रदान किया। उन्होंने स्वयं नन्दा एवं सुनन्दा नाम की कन्या से विवाह किया उनकी कोख से भरत बाहुबली आदि 101 पुत्र एवं ब्राह्मी, सुन्दरी नाम की दो कन्याओं ने जन्म लिया। इस प्रकार आदिनाथ स्वामी ने विवाह करने एवं संतान के परिपालन करने का अधिकार दिया।

यह सब उन्होंने वैराग्य पथ पर बढ़ने के पूर्व अपने राज्य काल में किया। जब वैराग्य पथ पर बढ़ने लगे तब उन्होंने अपनी धन सम्पत्ति का बँटवारा अपने पुत्रों के बीच किया। यहाँ तक कि अपनी पत्नि के भाई नमि और विनमि को विद्याधर का पद प्रदान किया। भरत को चक्रवर्ती पद एवं बाहुबली को कामदेव का पद प्रदान किया। इस प्रकार आदिनाथ स्वामी ने पैत्रिक सम्पत्ति को सन्तान के लिये समान रूप से प्राप्त करने का अधिकार दिया। वंश परम्परा चलाने का अधिकार भी आदिनाथ स्वामी ने दिया। इक्षु (गन्ना) की खेती करने एवं साधु अवस्था में इक्षु के रस का आहार लेने से इच्छवाकु वंश की स्थापना की। भरत चक्रवर्ती के पुत्र अर्क कीर्ति ने सूर्यवंश की स्थापना की, क्योंकि अर्क का अर्थ सूर्य होता है, इसीलिए सूर्यवंश नाम दिया। बाहुबली स्वामी के पुत्र सौम यश ने चन्द्रवंश की स्थापना की क्योंकि सोम का अर्थ चन्द्र होता है, इसीलिए चन्द्रवंश का नाम दिया गया। आदिनाथ स्वामी ने चार महामण्डलेश्वर राजा बनाकर अपने भरत क्षेत्र को छह खण्ड के राज्यों में विभाजित करके अलग–अलग राजा बनाये और उन्हें उन राज्यों को संभालने का अधिकार प्रदान किया। सोम प्रभ राजा को कुरूराज्य दिया इसीलिए उनके नाम से कुरूवंश चला। हरि राजा को हरिकान्त राज्य दिया इसीलिए उनसे हरिवंश चला। अकम्पन राजा को श्रीनाथ क्षेत्र दिया जिससे नाथ वंश प्रारम्भ हुआ। कश्यप राजा को मधवा अर्थात् उग्र क्षेत्र दिया इसीलिए उनसे उग्रवंश चला। इस प्रकार वंश परम्परा को चलाने का अधिकार आदिनाथ स्वामी ने प्रदान किया।

To preserve our history and culture, to increase knowledge and to become literate, Masi Vidya was provided. He taught alphabets to his daughter Brahmi and numeracy to Sundari and gave his son Bharat - Bahubali the right to give education to both men and women equally by giving them the knowledge of Asi, Agriculture etc. To support the family, he has given education in craftsmanship and commerce, in which he has given the right to do business and build a house to live. He himself married a girl named Nanda and Sunanda, from her womb 101 sons like Bharat Bahubali and two daughters named Brahmi and Sundari were born. In this way Adinath Swami decided to get married.

He also given the right to raise children. He did all this during his reign before embarking on the path of renunciation. When he started moving on the path of renunciation, he distributed his wealth among his sons. He even gave the post of Vidyadhar to his wife's brothers Nami and Vinami. Bharat was given the post of Chakravarti and Bahubali was given the post of Kamadeva. In this way, Adinath Swami gave the right to inherit the ancestral property equally to the children. Adinath Swami also gave the right to carry on the lineage. Established the Ichchhavaku dynasty by cultivating Ikshu (sugarcane) and consuming the juice of Ikshu in his sadhu state. Bharat Chakraborty's son Ark Kirti founded the Suryavansh, because Ark means sun, hence the name Suryavansh. Bahubali Swami's son Soum Yash founded Chandravansh because Som means moon, hence the name Chandravansh was given. Adinath Swami created four Mahamandaleshwar kings and divided his Bharat region into six divided states and made them separate kings and gave them the right to handle those states. He gave Kuru kingdom to King Som Prabha, that is why Kuru dynasty started in his name. Harikanta kingdom was given to Hari king, that is why Hari dynasty started from him. Akampan gave Shrinath area to the king from which Nath dynasty started. Madhwa *i.e*. Ugra region was given to King Kashyap, that is why Ugra dynasty started from him. In this way, Adinath Swami gave him the right to carry on the lineage.

प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव यानि राजा आदि नाथ ने जब दीक्षा ले ली और तपस्या में लीन हो गये तब नमि और विनमि नाम के साले आकर आदिनाथ स्वामी से अपने राज्य की मांग करने लगे तब इन्द्र ने कहा हे नमि और विनमि विद्याधरो आदिनाथ स्वामी मौन होकर तपस्या में लीन है। दीक्षा के पूर्व वे हमसे बतला गये है कि विद्याधरों को, विद्याधर की श्रेणी वर्वत मालाओं को प्रदान कर देना उन पर आप राज्य करो वह तुम्हे दे गये हैं।

लोक में जीवों के निवास स्थान को भूमि कहते हैं, नारकी जहाँ रहते हैं उसे नरक भूमि कहते हैं। वैमानिक देव जहाँ रहते हैं उसे स्वर्ग भूमि कहते हैं। सिद्ध जहाँ रहते हैं उसे प्राग्भार भूमि सिद्ध शिला कहते हैं। जहाँ षट् कर्म करने वाले मनुष्य रहते है उसे कर्म भूमि कहते हैं। जहाँ दस प्रकार के कल्प वृक्षों से भोग–उपभोग की जीवनयापन के लिये वस्तु मिल जाती है उसे भोग भूमि कहते हैं। जहॉ विद्याधर रहते है उसे विद्याधर भूमि कहते हैं।

भोग भूमि में मनुष्यों को अधिकारों के लिये लड़ना नहीं पड़ता है और न ही उन्हें अधिकारों की चाहत होती है, क्योंकि उनको वहाँ समानता का दर्जा रहता है। भोग भूमि में बालक और बालिका युगल रूप में एक ही माँ से जन्म लेते है और दाम्पत्य जीवन जीते हैं। संतान का जन्म होते ही माता–पिता का अवसान हो जाता है। संतान कुछ ही क्षणों में तरुणावस्था को प्राप्त कर लेती है। कल्पवृक्षों से प्राप्त भोजन सामग्री का सेवन करने एवं अनुशासित जीवन जीने से सदा निरोगी रहते हैं। आपस में मधुर व्यवहार रखते हैं। कभी लड़ते झगड़ते नहीं हैं। वे स्वभाव से ही मृदु परिणामी और सादा जीवन उच्च विचार वाले होते हैं। इसलिये मरणोपरांत स्वर्ग ही जाते हैं। इसीलिए न वहाँ अहम् टकराता है और न वहाँ मानव अधिकारों की बात होती है।

When the first Tirthankar Rishabh Dev *i.e.* King Aadi Nath took initiation and got absorbed in penance, then brothers-in-law named Nami and Vinami came and started demanding their kingdom from Adinath Swami. Then Indra said, O Nami and Vinami Vidyadharo Adinath Swami, remain silent and do penance. Is absorbed in. Before initiation, they have told us to give the Varvat Malas to the Vidyadhars, the category of Vidyadhar, you rule over them, they have given it to you.

The place where living beings live in this world is called land, the place where they live in hell is called hellish land. The place where the aeronautical gods live is called heaven. The place where Siddhas live is called Pragbhar Bhoomi Siddha Shila. The place where people who perform six acts live is called Karma Bhoomi. The place where one can get the things for living from ten types of Kalpa trees is called Bhog Bhoomi. The place where Vidyadhar lives is called Vidyadhar Bhoomi.

In Bhog Bhoomi, humans do not have to fight for rights nor do they desire rights, because they have equal status there. In Bhog Bhoomi, boys and girls are born as a couple from the same mother and live a married life. The parents die as soon as the child is born. The child attains puberty within a few moments. By consuming food items obtained from Kalpavrikshas and living a disciplined life, one always remains healthy. They behave sweetly with each other. Never fight or quarrel. By nature they are soft, productive and simple living with high thoughts. That's why they go to heaven after death. That is why there is neither a clash of egos nor there is any talk of human rights.

कर्म भूमि की स्थापना

सत् का कभी नाश नहीं होता असत् की कभी उत्पत्ति नहीं होती प्रत्येक द्रव्य सत् रूप है क्योंकि जैनाचार्य उमास्वामी ने तत्वार्थ सूत्र के पाँचवे अध्याय में लिखा की 'सत् द्रव्य लक्षणम्' अर्थात् सत् द्रव्य का लक्षण है सारा ब्रह्माण्ड छः द्रव्यों से भरा है अतः इसका कभी नाश नहीं होगा मात्र इसका परिवर्तन होगा। जो अनादिकाल से चला आ रहा है और अनंतकाल तक चलेगा। परिवर्तन पर्याय के कारण होता है। पर्याय उत्पन्न होती है और उसका नाश होता है। लेकिन द्रव्य ज्यों का त्यो बना रहता है इस बात को अविनाशता के सिद्धांत के रूप में विज्ञान ने भी स्वीकार किया है। वैज्ञानिक का कहना है नथिंग **केन बी ए क्रिएटेट** नथिंग केन बी डिस्ट्रॉय **बट फ्रॉम केन बी चेंजड।** अर्थात् न तो हम किसी पदार्थ को बना सकते न बिगाड़ सकते है सिर्फ हम उसमें परिवर्तन कर सकते है। इसी परिवर्तन के क्रम में काल का भी परिवर्तन होता है। सुखमा–सुखमा, सुखमा, सुखमा–दुखमा, दुखमा–सुखमा, दुखमा और दुखमा–दुखमा ऐसे कुल काल के छः परिवर्तन होते है। छटवें काल के बाद प्रलय होता है। प्रलय के 49 दिन बाद पुनः सृष्टि की रचना होती है। उस रचना के काल में चौदह कुलकर होते है जिन्हें मनु कहते है। इस भूमि पर **प्रतिश्रुति, सन्मति, क्षेमंधर, क्षेमंकर, सीमकंर, विमलवाहन, चक्षुष्मान, यषस्वान्, अभिचन्द्र, चन्द्राभ, मरूद्देव, प्रसेनजित, नाभिराय ये** कुलकर हुए। इनके काल में भोगभूमि थी। भोगभूमि के समय भरण पोषण एवं जीवन–यापन की सामग्री कल्पवृक्षों से प्राप्त होती है। अतः वहाँ कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता है। इसलिए उसे भोगभूमि कहते है।

कल्पवृक्ष 10 प्रकार के होते है। जब कल्पवृक्षों का अभाव हो जाता है तब मनुष्यों के लिए भरण–पोषण और जीवन–यापन के लिए असि, मसि, कृषि आदि षट्कर्म करने पड़ते हैं। इसीलिए इसे कर्मभूमि कहने लगते है। कर्म भूमि के प्रारंभ में अयोध्या नरेश अंतिम कुलकर श्री नाभिराय राजा एवं महारानी मरूदेवी से पुण्य प्रतापी, जन्म से मति, श्रुत, अवधि इन तीन ज्ञान के धारी एवं तीर्थंकर पद के धारी श्री ऋषभदेव का जन्म अयोध्या में हुआ। उन्होंने कर्म भूमि की स्थापना की।

Establishment of Karma Bhoomi

Sat never destroys Asat never arises Every matter is Sat form because Jainacharya Umaswami wrote in the fifth chapter of Tattvartha Sutra 'Sat Dravya Lakshanam' means the characteristic of Sat matter. The whole universe is full of six matter so it is never destroyed will only change it. which has been going on since eternity and will go on for all eternity. The change is due to synonyms. Synonyms arise and are destroyed. But the fact that matter remains as it is has also been accepted by science as the principle of indestructibility. Scientist also says nothing can we create nothing can we destroy but form can we change. That is, we can neither create nor destroy a matter, only we can change it. In the process of this change, time also changes. There are six such total changes of time as sukhma-sukhma, sukhma, sukhma- dukhma, dukhma- sukhma, dukhma and dukhma- dukhma. After the sixth period there is a catastrophe. 49 days after the doomsday, creation is created again. In the period of that creation there are fourteen Kulkars called Manus. On this land, Pratishruti, Sanmati, Kshemandhar, Kshemankar, Seemkar, Vimalavahana, Chakshushman, Yashasvan, Abhichandra, Chandrabha, Marudeva, Prasenajit, Nabhirai were born. In their time there was Bhogabhumi. The materials for sustenance and subsistence during the pleasure land are obtained from the Kalpa trees. So there is no effort required. That is why it is called Bhogabhumi.

There are 10 types of Kalpa trees. When there is a lack of Kalpa trees, human beings have to perform six karmas like asi, masi, agriculture etc. for their maintenance and survival. That is why it is called Karmabhoomi. In the beginning of Karma Bhoomi, Ayodhya king last Kulkar Shri Nabhirai Raja and Maharani Marudevi from the pious glory, born Mati, Shruta, Awadhi these three knowledge and holder of the title of Tirthankar Shri Rishabhdev was born in Ayodhya. He established Karma Bhumi.

ऋषभदेव तीर्थंकर पद के धारी होने से स्वर्ग के देवों ने आकर अयोध्या नगरी की विशेष रचना की। माता मरूदेवी के गर्भ में आने से छः माह पूर्व रत्न वृष्टि करके देवों ने गर्भ कल्याणक मनाया। जन्म के समय विशेष महोत्सव जन्म कल्याणक के रूप में अयोध्या नगरी में मनाया। उसके बाद तप, ज्ञान, एवं मोक्ष कल्याणक भी देवों ने मनाया। जिस नगरी अयोध्या में विश्वकर्मा प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म हुआ उस नगरी का नाम अयोध्या इसलिए पड़ा कि कोई भी योद्धा आकर उन राजा से युद्ध नहीं कर सकता था। आचार्य जिनसेन महाराज ने महापुराण के बारहवें सर्ग के 76 से 79 तक के श्लोक में ''अरिभिः योद्धं, न शक्या इति अयोध्या'' यह बात स्पष्ट की है।

अयोध्या का दूसरा नाम उन्होंने साकेत भी बताया। **''आकेतैः गृहैः सह वर्तमाना इति साकेता,''** आकेत घर को कहते है और सा का अर्थ स्वर्ग के समान सुंदर मकान जो पताकाओं से सहित है। अर्थात् जहाँ स्वर्ग लोक के समान अति सुंदर महल होते है और जिनपर स्वर्ग लोक से आने वाले देवों को पताका रूपी भुजाओं से संकेत करते है उसे साकेत कहते है। ऐसी स्थिति अयोध्या में आदिब्रह्मा तीर्थंकर ऋषभदेव के समय निर्मित हुई इसीलिए अयोध्या का दूसरा नाम साकेत पड़ा।

आचार्य जिनसेन ने अयोध्या का तीसरा नाम सुकोशला भी बतलाया क्योंकि अयोध्या सुकोशल देश की राजधानी थी। इसलिए सुकोशला सार्थक करती है।

उन्होंने अयोध्या का चौथा नाम विनीता भी बतलाया क्योंकि जहाँ शिक्षित पढ़े लिखे, श्रद्धा–भक्ति से युक्त विनीत मानव रहते है उस स्थान का नाम विनीता सार्थक होता है। ऐसे लोग उस समय अयोध्या में रहते थे इसीलिए अयोध्या का नाम विनीता भी सार्थक है। आदिनाथ स्वामी का जन्म अयोध्या नगरी में होने से हरिवंश पुराण में अयोध्या का नाम जन्मपुरी भी शोभा को प्राप्त होता है, ऐसा भी लिखा है।

कर्म भूमि के संस्थापक भगवान ऋषभदेव के अनेक नाम पड़े वे जगहितकारी धर्म का उपदेश देने में श्रेष्ठ और ज्येष्ठ थे 'वृष' धर्म को कहते हैं उन्होंने धर्म अर्थात् वृष का उपदेश दिया इसलिए वृषभनाथ कहलाये।

गर्भ के समय माता मरूदेवी ने ऋषभ (बैल) को स्वपन में देखा था एवं जन्म के उपरांत सुमेरू पर्वत पर अभिषेक के समय सौधर्म इंद्र ने दाये पैर के अंगूठे में ऋषभ (बैल) का चिन्ह् देखा था। इसीलिए उनका नाम ऋषभनाथ पड़ा।

Rishabhadev being the holder of the title of Tirthankar, the gods of heaven came and created a special city of Ayodhya. Mother Marudevi, Six months before the child's conception, the Gods declared the pregnancy auspicious by showering gems. At the time of birth, a special festival was celebrated in the city of Ayodhya as a blessing for the birth. After that the dieties also celebrated the welfare of penance, knowledge and salvation. The city Ayodhya, where Vishwakarma I Tirthankara Rishabhdev was born, was named Ayodhya because no warrior could come and fight with Ayodhya king. Acharya Jinsen Maharaj has made this clear in the verses 76 to 79 of the twelfth canto of Mahapuran, "Aribhih Yoddha Na Shakya Iti Ayodhya".

He also told Saket as another name of Ayodhya. "Aaketaih Grihaih Saha Varjana Iti Saaketa," Aaketa means house and Sa means a house as beautiful as heaven with flags. That is, the place where there are very beautiful palaces like heaven and on which flags are signaled to the deities coming from heaven, it is called Saket. Such a situation was created in Ayodhya during the time of Adibrahma Tirthankar Rishabhdev, hence another name of Ayodhya was Saket.

Acharya Jinsen also gave the third name of Ayodhya as Sukoshala because Ayodhya was the capital of Sukoshala country. Therefore Sukoshala makes sense.

He also mentioned the fourth name of Ayodhya as Vineeta because the place where educated, humble people with faith and devotion live, the name of that place is meaningful Vineeta. Such people lived in Ayodhya at that time, that is why the name Vinita of Ayodhya is also meaningful. Due to the birth of Adinath Swami in the city of Ayodhya, it is also written in Harivansh Purana that it also gets the name of Ayodhya as *Janmapuri*.

Lord Rishabhdev, the founder of Karma Bhoomi, has many names. He was the best and eldest in preaching the worldly religion. The religion is called 'Vrish'. He preached the religion *i.e*. Taurus, hence he was called Vrishabhanath.

At the time of pregnancy, Mother Marudevi had seen Rishabh (bull) in her dream and after birth, at the time of consecration on Mount Sumeru, Saudharma Indra had seen the symbol of Rishabh (bull) on the toe of his right foot. That is why his name was Rishabhnath.

इन्द्र ने जन्माभिषेक के समय मरूदेवी के पुत्र ऋभषदेव को पहले तीर्थंकर होने के कारण पुरूदेव नाम से पुकारा था इसलिए उनका नाम पुरूदेव भी सार्थक होता है।

ऐसे ऋषभदेव स्वामी ने आयु के 1/4 भाग बीत जाने के उपरांत असि, मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य, विद्या का उपदेश दिया। आवास व्यवस्था, राज्य व्यवस्था, नगर व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, विवाह व्यवस्था, दंड व्यवस्था, राजस्व व्यवस्था, वंश व्यवस्था आदि का उपदेश देकर कर्म भूमि की स्थापना की।

जिनसेन आचार्य महाराज ने महापुराण में लिखा है कि भोगभूमि के अवसान होने पर कल्पवृक्षों के नष्ट होते ही कर्मभूमि प्रारम्भ हो जाती है कर्म भूमि के प्रारम्भ होते ही शुभ मुहुर्त में सौधर्म इन्द्र अयोध्या नगरी की रचना करता है। नगर के बीचों बीच एवं चारों दिशाओं में एक विशाल भव्य जिनालय की रचना करता है। तदन्तर देश, प्रदेश, नगर, वन, गांव, और खेड़ो आदि की रचना करता है। उसके पश्चात ऋषभ देव प्रजा को जीवनयापन हेतु कृषि आदि षट् कार्यों को करने का उपदेश एवं अधिकार देते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों की स्थापना करते हैं। उसके पश्चात् कुरूवंश, हरिवंश आदि राजवंशो की स्थापना कर योग्य व्यक्तियों को उन देशों के राजा अधिकार पूर्वक नियुक्त करते हैं।

इस प्रकार योग्यता कर्तव्यनिष्ठा एवं ईमानदारी के आधार पर अधिकारों को दिया जाता है और उसी आधार पर प्राप्त किया जाता है। अधिकार कभी बेचे नहीं जाते। अधिकार अयोग्य मानव को नहीं दिये जाते हैं। लेकिन वर्तमान में लोकतांत्रिक चुनाव प्रणाली के माध्यम से वोट खरीदकर अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध किया जा रहा है और अधिकारों को खरीदा जा रहा है। इसीलिए मानवीय अधिकारों की जो स्वाभाविक प्रतिष्ठा, निष्ठा, सम्पन्नता, स्वाधीनता, एवं न्याय पालिका की मजबूत नीव थी वह कमजोर हो रही है और अन्याय अत्याचार पनप रहा है। जैनाचार्यों ने 'जियो और जीने दो' का सूत्र देकर मानवीय अधिकारों की प्रतिष्ठा और निष्ठा की प्रतिष्ठा बढ़ाई है। मानवीय अधिकारों को गगनचुम्बी ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। लेकिन इस लोकतांत्रिक बहुमत के जमाने में इसे दबाया जा रहा है। जो अब भविष्य के लिए खतरे की घंटी है।

At the time of birth ceremony, Indra had called Marudevi's son Ribhashdev by the name Purudev because he was the first Tirthankar, hence his name Purudev is also meaningful.

After 1/4th of his life, Rishabhdev Swami gave advice on Asi, Masi, Agriculture, Craft, Commerce and Education. He established Karma Bhoomi by preaching about system, state system, city system, caste system, marriage system, penal system, revenue system, lineage system etc.

Jinsen Acharya Maharaj has written in the Mahapuran that after the end of the Bhogbhoomi, as soon as the Kalpavrikshas are destroyed, the Karmabhoomi begins. As soon as the Karmabhoomi begins, at an auspicious time, Saudharma Indra creates the city of Ayodhya. Constructs a huge grand temple in the middle of the city and in all four directions. Subsequently, he creates the country, state, city, forest, village, and fields etc. After that, Rishabh Dev gives advice and authority to the people to do six tasks like agriculture etc. for livelihood. Brahmin, Kshatriya, Vaishya and Shudra and established these four varnas. After that, dynasties like Kuruvansh, Harivansh etc. are established and the kings of those countries appointed as qualified persons with authority.

In this way, rights are given on the basis of merit, duty and honesty and are obtained on the same basis. Rights are never sold. Rights are not given to unworthy human beings. But at present, people are proving themselves superior by buying votes through the democratic election system and rights are being bought. That is why the natural dignity, integrity, prosperity, independence, and strong foundation of the judiciary, human rights are becoming weak and injustice and oppression are flourishing. Jainacharyas have increased the prestige of human rights and loyalty by giving the formula of 'live and let live'. Human rights have been taken to sky-scraping heights. But in this era of democratic majority it is being suppressed. Which is now an alarm bell for the future.

दिगम्बर दीक्षा का अधिकार

युग के आदि में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव आदिनाथ ने बाल्यकाल, कुमार काल, राज्यकाल को पूर्ण करके भगवान बनने का अधिकार स्वयं प्राप्त किया एवं अन्य सभी जीवों को दिया। सभी मानवों को मार्ग बताया और स्वयं दिगम्बरी दीक्षा लेकर कठोर तप करते हुए स्वयं उस भूमि पर चले। उन्होंने तप करके अनादिकाल से कर्मों से जकड़ी परतंत्र आत्मा को स्वतंत्र किया और परमात्म पद को प्राप्त किया। उन्होने दिगम्बर जैन मुनि बनने का उपदेश दिया इसी के अनुसार भगवान महावीर स्वामी ने चन्दनवाला से आहार लेकर उसे दासता अर्थात् गुलामी की प्रथा से मुक्त कराया था। अतः जैन तीर्थंकरों ने दास प्रथा को समाप्त करके स्वतंत्र जीवन जीने का अधिकार दिया। इतना ही नहीं अपनी आत्मा को कर्मों की गुलामी से मुक्त कराने का भी रास्ता बताया। बल पूर्वक दास बनाना दूसरों की इच्छा के विपरीत कार्य कराना ही एक अन्याय है। मानव अधिकारों के खिलाफ है उन्होंने ऐसा बताया। जैनाचार्यों एवं तीर्थंकरों ने क्रूर, अन्यायी एवं हिंसक प्रवृत्ति वाले लोगों के अन्याय, अत्याचार को सहन करके सहष्णुता, अहिंसा, मित्रता, समानता, स्वतंत्रता, सम्मान और गरिमा को स्थान दिया। पशुओं के ऊपर अतिभारारोपण न करने का संविधान बनाया। व्यर्थ में तोड़–फोड़ करना, छेदन–भेदन करना इत्यादि अत्याचारों पर प्रतिबन्ध लगाया, इस प्रकार प्रतिबंध लगाने के लिए उन्होंने ग्रहस्थों के लिये बारह व्रत और ग्यारह प्रतिमाओं के पालन करने की शिक्षा प्रदान की। इन व्रतों के पालन करने से मानव अधिकारों की रक्षा होती है, ऊर्जा मिलती है तथा उपेक्षित, निरीह प्राणियों को जीने का अधिकार प्राप्त होता है। ''जियो और जीने दो'' का अधिकार मूलतः जैन विचार धारा को जाता है, जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ स्वामी ने युग के आदि से ही मानवीय अधिकारों को प्रभावशील बनाया और मजबूत बुनियाद रखी।

भरत चक्रवर्ती ने दिग्विजय यात्रा के समय 32 हजार मलेच्छ कन्याओं से विवाह किया और उन्हें उच्च आचरण व्रत, नियम, संयम सहित धर्म पालन करने का अधिकार दिया और जाति वर्ण आदि भेदों को खारिज किया। इस प्रकार जैन धर्म के प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव ने सहिष्णुता, अंहिसा, सत्य, अचौर्य, और ब्रह्मचर्य आदि की जो गंगा प्रवाहित की थी वह अनवरत होकर आज भी प्रवाहित है।

Right to Digambara Diksha

At the beginning of the era, the first Tirthankar Rishabhdev Adinath completed his childhood, Kumar period and kingdom period and obtained the right to become God himself and gave it to all other living beings. He told the path to all the humans and after taking Digambari initiation, he himself went to that land and performed rigorous penance. By doing penance, he freed the soul which had been bound by karma since time immemorial and attained the status of God. He preached to become a Digambar Jain monk, accordingly, Lord Mahavir Swami freed her from the practice of slavery by taking food from Chandanbala. Therefore, Jain Tirthankaras abolished slavery and gave the right to live an independent life. Not only this, he also told the way to free one's soul from the slavery of karma. Enslaving someone by force and making others work against their will is an injustice. He said that it is against human rights. Jainacharyas and Tirthankaras gave place to tolerance, non-violence, friendship, equality, freedom, respect and dignity by tolerating the injustice and oppression of people with cruel, unjust and violent tendencies. A constitution was made to prevent overloading of animals. He banned the atrocities like vandalism, piercing etc., thus imposing the ban, he taught the people of the world to observe twelve fasts and eleven idols. By observing these fasts, human rights are protected, energy is gained and neglected and innocent creatures get the right to live. The right to "live and let live" originally goes to the Jain school of thought, Adinath Swami, the first Tirthankara of Jainism, made human rights effective from the beginning of the era and laid a strong foundation.

Bharat Chakrabarty married 32 thousand Maleccha girls during the Digvijay Yatra and taught them high conduct of religion including fasting, rules and restraint. Gave the right to follow and rejected the differences like caste and creed. In this way, the Ganga of tolerance, non-violence, truth, non-observance, celibacy etc. which was started by the first Tirthankar Shri Rishabhdev, the originator of Jainism, continues to flow even today.

मध्यकाल में मुगल शासकों ने इसे नष्ट करने का प्रयास किया और ऐतिहासिक स्मारकों को नष्ट किया जैनधर्मानुयाइयों को क्षति पहुंचाई। उस समय अनेक हत्यायें और लूट पाट भी हुईं। उस मध्य युग में मानवाधिकारों का हनन किया। कोई भी धर्म अधिकारों को नष्ट करने के लिये नहीं बल्कि अधिकारों को प्रदान करने के लिये होता है। धर्म की आड़ में कन्याओं का अपहरण, निर्दोष व्यक्तियों का बन्दीकरण, आतंक के नाम से हत्याएँ एवं धर्म परिवर्तन कराना मानवाधिकारों पर घोर अत्याचार था।

मानवाधिकार जन्म सिद्ध अधिकार है। इसे धार्मिक क्रिया कलापों से जोड़ना एक अच्छी पहल रही है। वर्तमान में इसे शिक्षा के पाठ्यक्रम में जोड़ना एक नई पहल है, नवीनतम दृष्टि है जो सभी को समानता का अधिकार दिलायेगी।

In the medieval period, the Mughal rulers tried to destroy it and destroyed historical monuments and caused harm to the followers of Jainism. Many murders and looting also took place at that time. Human rights were violated in that Middle Ages. Any religion is not meant to destroy rights but to provide rights. Under the guise of religion, kidnapping of girls, imprisonment of innocent people, killings in the name of terror and religious conversion were grave atrocities on human rights.

Human rights are birth rights. Linking it with religious activities has been a good initiative. Currently, adding it now to the curriculum of education is a new initiative, the latest vision which will give the right to equality to all.

धर्म-कर्म करने का अधिकार

ऋषि और कृषि प्रधान इस भारत देश में हमेशा दान, पूजन व्रत–उपवास, ज्ञान–ध्यान, त्याग–तपस्या, व्रत–संयम, करने का अधिकार धार्मिक कृत्यों से जोड़ा गया है। इसी के साथ सत्य, अंहिसा, ब्रह्मचर्य, अचौर्य, अपरिग्रह एवं समाजसेवा इत्यादि को भी धार्मिक अधिनियमों से जोड़ा गया है। ये धार्मिक अधिनियम व्यक्ति को शान्त, सज्जन, सभ्य, सहिष्णु, परोपकारी और सत्यनिष्ठ आदि बनााते है। जिससे विश्व में फैली अराजकता, हिंसा, अन्याय, अत्याचार आदि कुरीतियाँ मिटती हैं। यह अधिकार मात्र पुरुषों को ही नहीं बल्कि स्त्रियों को भी दिया गया है।

जैन धर्म में तो पुरुषों से अधिक अधिकार स्त्रियों को दिये गये हैं। इस बात की सिद्धि सौधर्म इन्द्र की इन्द्राणी शची को तीर्थंकर बालक के प्रथम दर्शन एवं सौधर्म इन्द्र से पहले ही स्वर्ग से आकर मुनि बनाकर मोक्ष प्राप्त करने का अधिकार देने से होती है।

प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ स्वामी की पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी को आर्यिका बनने का अधिकार स्वयं उनके पिता ने ही दिया। जैन पद्म पुराण के अनुसार राजा दशरथ के साथ कैकई को युद्ध में ले जाना सिद्ध करता है कि नारी को बराबरी का अधिकार था। अनेक आर्यिकाओं ने अन्त में सल्लेखना ग्रहण कर समाधिमरण किया। अतः पुरुष के समान नारी को सल्लेखना लेने का अधिकार जैन धर्म में दिया गया है। पंचकल्याणक महोत्सव में देवों के साथ देवियों द्वारा आकर सहभागिता निभाना सिद्ध करता है कि स्त्रियों को विशेष महोत्सव में जाने का भी अधिकार है। नारी में विनय, संतोष, गम्भीरता, सहनशीलता, श्रमशीलता, मितव्यता आदि अनेक गुण होते है जो अपने परिवार एवं समाज को पवित्र बनाये रखते हैं एवं एक सूत्र में बांधे रखते हैं। नारी त्रय कुल वर्धनी होती है। प्रथम तो अपने माता–पिता के कुल को, द्वितीय अपने सास–ससुर के कुल को और अन्त में अपने गुरु के पास दीक्षा लेकर गुरु कुल का संवर्धन करती है। इसीलिए वह त्रय कुल वर्धनी कहलाती है। अपने पति के साथ सुख–दुःख में हमेशा छाया की तरह साथ रहती है। नारी को विद्या की अधिष्ठात्री, सरस्वती देवी, धन की अधिष्ठात्री लक्ष्मीदेवी के नाम से भी जाना जाता है। इसी कारण नारी को विशेष अधिकार जैन धर्म में दिये गये हैं। नारी को श्रीमती कहते हैं क्योंकि श्री यानि लक्ष्मी और मति यानि बुद्धि। शुद्धि की दात्री सरस्वती है इसलिए जहाँ लक्ष्मी और सरस्वती का वास होगा वहाँ दुख, दर्द और दरिद्रता नहीं रह सकती है। श्रीमती में लक्ष्मी और सरस्वती दोनों का वास है।

Right to Practice Religion

In this sage and agrarian country of India, the right to charity, worship, fasting, knowledge-meditation, sacrifice-penance, fasting-restraint, etc. has always been linked to religious activities. Along with this, truth, non-violence, celibacy, acharya, aparigraha and social service etc. have also been linked to religious acts. These religious acts make a person peaceful, gentle, civilized, tolerant, charitable and truthful etc. Due to which the evils like anarchy, violence, injustice, atrocities etc. spread in the world are eradicated. This right has been given not only to men but also to women.

In Jainism, women have been given more rights than men. This is accomplished by giving Saudharma Indra's Indrani Sachi the first darshan of the Tirthankar child and giving her the right to attain salvation by becoming a sage by coming from heaven before Saudharma Indra.

Brahmi and Sundari, daughters of the first Tirthankar Adinath Swami, were given the right to become Aryika by their father himself. According to the Jain Padma Purana, taking Kaikai into battle with King Dasharatha proves that women had equal rights. Many Aryikas finally took Sallekhana and attained Samadhimaran. Therefore, in Jainism, women have been given the same right to take Sallekhana as men. Goddesses coming and participating with the Gods in the Panchkalyanak festival proves that women also have the right to go to the special festival. Women have many qualities like modesty, contentment, seriousness, tolerance, hard work, thrift etc. which keep their family and society pure and tied together. The female triad enhances the clan. Firstly, she takes initiation from her parents' clan, secondly from her mother-in-law's clan and finally by taking initiation from her Guru, she enriches the Guru's clan. That is why that triad is called Kul Vardhini. She always remains with her husband like a shadow in happiness and sorrow. Woman is also known as goddess Saraswati, goddess of knowledge and Goddess Lakshmidevi, goddess of wealth. For this reason women have been given special rights in Jainism. Woman is called Shrimati because Shri means Lakshmi and Mati means intelligence. Saraswati is the giver of purification, therefore where Lakshmi and Saraswati reside, there will be no sorrow, pain and poverty can exist. Both Lakshmi and Saraswati reside in Shrimati.

हमारी संस्कृति में पिता–माता नहीं बल्कि माता–पिता कहा जाता है। पुरुष–स्त्री नहीं बल्कि स्त्री–पुरुष कहा जाता है। राम–सीता नहीं बल्कि सीता राम कहा जाता है। इससे स्पष्ट है कि हमारी जैन संस्कृति में या धर्म में या यूँ कहें कि भारतीय संस्कृति में पुरुष से पहले स्त्री को स्थान दिया गया है। विवाहिता नारी के साथ श्रीमती लगाया जाता है, अविवाहित स्त्री के सामने सुश्री लगाया जाता है। श्री शब्द महान पुरुषों के साथ लगाया जाता है। इससे भी स्पष्ट है कि नारी को महापुरुषों की तरह सम्मानजनक स्थान दिया गया है। नारी को गृह लक्ष्मी कहा जाता है। अतः देवी के समान सम्मान दिया जाता है। जब तक पुरुष की शादी नहीं होती अर्थात् गृहणी बनकर पत्नि नहीं आती तब तक ग्रहस्थ आश्रम प्रारम्भ नहीं होता। इसीलिए ग्रहस्थ वही है जिसकी ग्रहणी हो। ग्रहणी बनाते समय पाणिग्रहण किया जाता है। हाथ में हाथ मिलाया जाता है। ग्रहणी के बिना ग्रहस्थापना नहीं हो सकती है। अतः ग्रहस्थ आश्रम का मूल आधार नारी है। घर की आत्मा नारी है, परिवार के प्राण नारी है। यही वजह है कि स्त्री को पुरुष के बराबर अधिकार ऋषभदेव भगवान ने दिये। पति की सम्पत्ति पर अधिकार नारी (पत्नि) को दिया गया है, लेकिन माता–पिता की सम्पत्ति पर अधिकार पुत्र को दिया गया है, पत्नि को एक पुत्र को प्राप्त सम्पत्ति के बराबर ही अधिकार दिया गया है। यदि पुत्र और पति दोनों का अवसान हो जावे तो पति की सम्पत्ति पर पूरा अधिकार पत्नि को होता है। यदि पुत्री मात्र है तो उस सम्पत्ति का अधिकार पुत्री को भी है।

विवाह के समय जो धन, सम्पत्ति, वस्त्र, आभूषण एवं बर्तन आदि कन्या के माता–पिता के द्वारा दिये जाते है उस पर अधिकार सिर्फ उस कन्या का ही रहता है। उसका बँटवारा ससुराल पक्ष में नहीं किया जाता है क्योंकि वह स्त्रीधन कहलाता है। इसके पीछे कारण यह है कि जैसे स्त्री का बँटवारा नहीं होता उसी प्रकार स्त्री धन का भी बँटवारा नहीं होता। यहाँ तक कि यदि तलाक हो जावे तो माता–पिता द्वारा प्रदान की गई धन सम्पत्ति पुनः उसी कन्या को वापिस दी जाती है। इससे भी स्पष्ट है कि नारी को पुरुष से ज्यादा अधिकार प्राप्त हैं।

प्राचीनकाल में जो वस्त्र, आभूषण और वर्तन आदि जीवनोपयोगी आवश्यक सामग्री दी जाती थी वही बाद में दहेज का रूप बन गया और लोभी लोग दहेज की मांग करने लगे। दहेज मांगना गलत है लेकिन बेटी की शादी में भेंट देना उचित है।

In our culture it is not called father-mother but parents. It is not called man-woman but woman-man. Not Ram-Sita but Sita is called Ram. It is clear from this that in our Jain culture or religion or rather in Indian culture, woman has been given a place before man. In front of a married woman, 'Shrimati.' is used, and in front of an unmarried woman, 'Sushri.' The word Shri is associated with great men. It is also clear that women have been given a respectable place like great men. Woman is called Griha Lakshmi. Therefore, she is given respect like a goddess. Grahastha Ashram does not start until a man gets married, that is, until he becomes a housewife and becomes a wife. That's why the planet is the one who has a duodenum. Water intake is done while making the duodenum. There is a handshake. Planetary establishment cannot take place without the duodenum. Therefore, the basic foundation of Grahastha Ashram is women. The soul of the house is the woman, the soul of the family is the woman. This is the reason why Lord Rishabhdev gave equal rights to women as men. The right over the husband's property has been given to the woman (wife), but the right over the parents' property has been given to the son, the wife has been given the same right to the property as a son. If both the son and the husband die, the wife has full rights over the husband's property. If there is only one daughter, then the daughter also has the right to that property.

Only the girl has the right over the money, property, clothes, jewelery and utensils etc. given by the girl's parents at the time of marriage. It is not divided among the in-laws because it is called stridhan. The reason behind this is that just as women are not divided, similarly women's wealth is also not divided. Even if there is a divorce, the property given by the parents is returned to the same girl. It is also clear that women have more rights than men. In ancient times, clothes, jewelery and utensils etc. were useful for life.

Necessary material was given which later became the form of dowry and Greedy people started demanding dowry. Asking for dowry is wrong. But in daughter marriage it is appropriate to give it as a gift at a wedding.

सल्लेखना मरण अधिकार

जैन धर्मानुसार संथारा सल्लेखना लेने का अधिकार श्रमण मुनि और ग्रहस्थ श्रावक दोनों को प्राप्त है। सल्लेखना को संथारा, वीरमरण, संन्यास मरण, समाधि मरण इत्यादि नामों से जाना जाता है। इस संथारा को धारण करना उचित है या अनुचित। इसका निर्णय करने का अधिकार अज्ञानियों को नहीं बल्कि ज्ञानियों को है। जो यह जानता ही नहीं संथारा अर्थात समाधि मरण क्या कहलाता है वह सही निर्णय नहीं दे सकता करने की बात तो बहुत दूर है। अतः उसे जैन आगम के परिपेक्ष में जानना आवश्यक है। समाधिमरण को समझने के पहले हमें मरण की परिभाषा और उसके भेद–प्रभेद जानना आवश्यक है।

मरण की परिभाषा

आयु कर्म के क्षय (नाश) होने का नाम मरण है। ऐसा धवला पुस्तक एक के अध्याय एक में लिखा है अथवा प्राणों के परित्याग का नाम मरण है ऐसा भगवती आराधना के अध्याय 25 गाथा 86 में लिखा है।

अथवा मन वचन काय ये तीन बल, स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पांच इन्द्रियाँ श्वॉसोच्छवास और आयु इन दस प्राणों के विनाश होने का नाम मरण है।

मरण के प्रकार

मरण को विगम, विनाश, मृत्यु, विपरिणमन मौत आदि भी कहते है। मरण मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है–

1. नित्य मरण
2. तद्भव मरण।

1. नित्य मरण- प्रत्येक जीव का जन्म लेने के साथ ही मरण प्रारंभ हो जाता है क्योंकि जन्म लेते ही प्रतिक्षण आयु का क्षय होना प्रारंभ हो जाता है। अर्थात प्रत्येक पल आयु का कम होना ही नित्य मरण कहलाता है। इस मरण को जैनाचार्यों ने अवीचि मरण भी कहा जाता है।

2. तद्भव मरण– जब प्रतिक्षण आयु का क्षय होता चला जाता है और मन–वचन–काय के साथ इन्द्रियों की शक्ति निरंतर घटती चली जाती है। तब एक समय ऐसा आता है कि आयु पूर्णतः समाप्त हो जाती है और शरीर से आत्मा का वियोग हो जाता है उसे तद्भव मरण कहते हैं। दुनिया में सभी लोग इसी मरण को ही मरण मानते हैं।

Right to Death

According to Jainism, both Shramana Muni and Grahastha Shravaka have the right to take Santhara or Sallekhana. Sallekhana is known by the names Santhara, Veeramaran, Sanyas Maran, Samadhi Maran etc. Is it appropriate or inappropriate to wear this Santhara? It is not the ignorant but the knowledgeable people who have the right to decide this. One who does not know what Santhara *i.e.* Samadhi Maran is, cannot give the right decision, let alone make one. Therefore, it is necessary to know it in the context of Jainism. Before understanding Samadhimaran, it is necessary to know the definition of death and its differences.

Definition of death

The decay (destruction) of age-related karma is called death. It is written in Chapter 1 of Dhavla Book 1 or the name of giving up one's life is death, it is written in Chapter 25, Gatha 86 of Bhagwati Aradhana.

Or mind, speech, body, these three forces, touch, taste, smell, eyes and ears, these five senses, and, breathing and age. The name of the destruction of these ten life forces is called as death.

Types of death

Death is also called Vigam, destruction, death, viparinman death etc. There are mainly two types of death-

1. Eternal death
2. Tadbhava death.

1. Daily death – Every living being dies as soon as it is born because the age starts decreasing every moment after birth. That is, reduction in age every moment is called daily death. This death is also called Avichi death by Jainacharyas.

2. Tadbhava death- When age keeps on decreasing every moment and the power of senses along with mind, speech and body keeps on decreasing. Is. Then there comes a time when age completely ends and the soul gets separated from the body, this is called Tadbhava death. Everyone in the world considers this death as death.

यह तद्भव मरण पाँच प्रकार का होता है,

1. बाल–बाल मरण, 2. बाल मरण, 3. बाल पण्डित मरण, 4. पण्डित मरण, 5. पण्डित–पण्डित मरण।

1. बाल-बाल मरण- अज्ञानी, नास्तिक, मूर्ख, विषयभोगी, पुरूषार्थ हीन, आहार, भय, मैथुन, परिग्रह रूपी चार संज्ञा की वांछा से युक्त होकर मन वचन, काय रूप योग की कुटिलता से सहित होकर शस्त्र, विष भक्षण, अग्नि, जल में प्रवेश कर स्वयं का अपघात करते हैं, आत्मा और शरीर के भेद–विज्ञान से रहित चारित्रहीन आर्तरौद्र ध्यान करने वाले मिथ्यादृष्टि का जो इच्छा या अनिच्छा पूर्वक समय या असमय में जो असमाधि पूर्वक परलोक गमन होता है उसे बाल–बाल मरण कहते हैं।

इस बाल–बाल मरण के 5 प्रकार होते हैं–

(अ) अव्यक्त बाल-बाल मरण- जो अज्ञान जीव धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप चारों पुरूषार्थों को नहीं जानता और उसे व्यक्त रूप से यह श्रद्धान ही नहीं होता कि मैं एक चैतन्य अजर, अमर, अविनाशी आत्मा हूँ ऐसे व्यक्ति के मरण को अव्यक्त बाल–बाल – मरण कहते हैं।

(ब) व्यवहार बाल मरण- लोक व्यवहार का और पुराण ग्रंथों का ज्ञान हुए बिना ही जो मरण होता है उसे व्यवहार बाल मरण कहते हैं।

(स) अदर्शन बाल-बाल मरण- दर्शन का अर्थ सम्यक्दर्शन से लिया जाता है। सम्यक्दर्शन जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन सात तत्वों पर एवं सच्चे देव, शास्त्र, गुरू पर श्रद्धान करने से होता है अतः जिसे इन पर श्रद्धान नहीं होता और बिना श्रद्धान के ही मिथ्यादर्शन सहित मरणको प्राप्त होते है उसे अदर्शन बाल–बाल मरण कहते हैं।

(द) अज्ञान बाल-बाल मरण- जिन्हें जन्म और मरण, द्रव्य और पर्याय, तत्व और कुतत्व, संगति और कुसंगति, सद्गति और दुर्गति का ज्ञान नहीं होता उनका जो मरण होता है उसे अज्ञान बाल–बाल मरण कहते हैं।

This tadbhava death is of five types,

1. Child's - Child's death, 2. Child's death, 3. Child's Pandit death, 4. Pandit's death, 5. Pandit - Pandit's death.

1. Child's death - ignorant, atheist, foolish, sensual, effortful Being filled with the desires of the four nouns like inferiority, food, fear, sex and attachment, with the crookedness of mind, speech and body form of yoga, they cause harm to themselves by using weapons, consuming poison, entering into fire and water, the difference between soul and body. - The untimely departure to the after life of a person devoid of science, characterless and with false vision, who does Artraudra meditation, willingly or unwillingly, at the right time or at the wrong time, is called as a child's death.

There are 5 types of this Child's - Child's death.

(a) Unmanifested Child's - Child's death - which is caused by ignorance of life, religion, wealth and lust and the form of salvation does not know the four efforts and does not have the faith that I am a conscious immortal, indestructible soul. The death of such a person is called unmanifested Child's - Child's death.

(b) Behavioral child death – The death that occurs without having knowledge of folk behavior and Puranic texts is called behavioral child death.

(c) Invisibility, infant death – The meaning of darshan is taken from right darshan. Samyakdarshan is achieved by paying homage to the seven elements of Jiva, Ajiva, Ashrava, Bandha, Samvara, Nirjara and Moksha and to the true God, scriptures and Guru. Therefore, one who does not pay homage to these and without devotion attains death along with false darshan. Invisibility means infant death.

(d) Ignorance is a child's death - those who suffer from birth and death, matter and The death of those who do not know about synonyms, elements and vices, compatibility and bad compatibility, good and bad luck is called the death of a child of ignorance.

(ई) कुचारित्र बाल-बाल मरण- मांस, मदिरा, परस्त्री सेवन, वेश्यागमन, शिकार करना, जुआ, चोरी ये सप्त व्यसन कहलाते हैं और अनंत जीवों की हिंसा से बने शहद आदि पदार्थ का सेवन करना हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिगह संग्रह रूप पांच पापों में लिप्त होना कुचारित्र कहलाता है। ऐसे मरण को कुचारित्र बाल–बाल मरण कहते है।

ये पांचों प्रकार के मरण इच्छापूर्वक अथवा अनिच्छा पूर्वक अपने समय में या समय के पूर्व विष खा लेने से, फाँसी लगाने से, शस्त्र घात से अकाल में मरण को प्राप्त होना ये सब आत्म हत्या अथवा इच्छा मृत्यु के अंतर्गत आते हैं।

2. बालमरण- आत्मा, परमात्मा, जीव–अजीव, भाग्य, पुरूषार्थ और सच्चे देव, शास्त्र, गुरू पर श्रृद्धान सहित होकर और जो शरीर से अपनी आत्मा को पृथक मानते हुए भी व्रत, नियम, संयम, त्याग, तपस्या से रहित होते है ऐसे अविरत सम्यक्दृष्टि का जो मरण होता हैं उसे बाल मरण कहते है। बाल मरण और बाल–बाल मरण दोनों असंयम अवस्था में होते हैं बाल मरणके अंतर्गत वशार्त मरण भी आता है जो इस प्रकार है–

(i) वशार्त मरण- सम्यक्दृष्टि होकर भी इष्ट के वियोग, अनिष्ट के संयोग, शारीरिक दर्द, पीड़ा का चिंतन और मरने के बाद आगामी काल में विषय भोगों की प्राप्ति की भावना रूप आर्त भाव एवं लड़ाई–झगड़ा, हत्या रूप हिंसा, झूठ, चोरी और धन दौलत रूप परिग्रह संग्रह के लिए अथवा उसमें आनंद मनाते हए रौद्र भाव से युक्त होकर मरने को वशार्त मरण कहते हैं।

इस वशार्त मरण के चार प्रकार होते हैं–

(अ) इन्द्रिय वशार्त बाल मरण- मन की इच्छा पूर्ण न होने पर अथवा आगामी काल में मन की इच्छा पूर्ण करने के लिए स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण इन पाँचों इन्द्रियों के विषय भोगों को भोगते हुए और आगामी काल में भोगों की प्राप्ति की इच्छा करते हुए मरना इन्द्रिय वशार्त बाल मरण कहलाता है।

(ब) वेदना वशार्त बाल मरण- शारीरिक और मानसिक दुःख, दर्द रूप वेदना होने पर असमय में जहर आदि खाकर वेदना से मुक्ति मिलेगी ऐसा सोचकर मरना, आगामी काल में सुख मिलेगा ऐसा शर्तसहित मरण करना वेदना वशार्त बाल मरण कहलाता है।

(e) Short death due to bad character - meat, alcohol, adultery, prostitution, hunting, gambling, theft, these are called seven addictions and consuming things like honey made from the violence of infinite living beings are called violence, lies, theft, bad habits and Indulging in five sins in a cumulative manner is called bad character. Such death is called childish death by bad people.

These five types of deaths, willingly or unwillingly, by consuming poison, by hanging, by weapon attack, and dying prematurely, all come under suicide or voluntary death.

2. Balmaran - Having faith in the soul, God, living beings, destiny, efforts and true God, scriptures and Guru and who, despite considering his soul as separate from the body, is free from fasting, rules, restraint, renunciation and penance. The death of such an uninterrupted right vision is called child death. Child death and infant death both occur due to incontinence. Child death also includes accidental death which is as follows-

(i) Vasharta death - despite having proper vision, thoughts of separation of good, combination of bad, physical pain, suffering and the feeling of attaining sensual pleasures in the future after death, grief in the form of fights and quarrels, violence in the form of murder, lies, Dying for the sake of theft and accumulation of wealth or while rejoicing in it is called Vasharta death.

In this condition there are four types of death-

(a) Indriya Vashart Baal Marana – In case the desire of the mind is not fulfilled or in order to fulfill the desire of the mind in the future, by enjoying the pleasures of the five senses of touch, taste, smell, sight and hearing and in the future, there will be no enjoyment of the pleasures. Dying while desiring to achieve something is called childish death due to sensual pleasures.

(b) Pain and its associated child death – In case of physical and mental pain, pain, etc., one will get relief from the pain by consuming poison etc. at untimely time and rebirth will give pleasure and painless life.

(स) कषाय वशार्त बाल मरण- क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, मोह, छल–कपट रूप कषायों से सहित होकर मरना कषाय वशार्त बाल मरण कहलाता है।

(द) नौकषाय वशार्त बाल मरण- हास्य (हंसी–मजाक), रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा (ग्लानी) स्त्री वेद, पुरुष वेद, नपुंसक वेद में जिसकी बुद्धि भी कुबुद्धि, मति भी कुमति, हो गई हो और इन्हीं नौ कषायों के वशीभूत होकर जो मरण करते हैं उसका मरण नौ कषाय वशार्त बाल मरण कहलाता है।

बाल–बाल मरण एवं बाल मरण करने वालों का असमाधि मरण होता है। इन्हीं दोनों प्रकार के मरण को आत्म हत्या, इच्छा मृत्यु सती प्रथा और अकाल मौत के अंतर्गत लिया जाता है। इन मरण के अलावा जो बाल पण्डित मरण, पंडित मरण और पंडित–पंडित मरण करने वालों को समाधि मरण, संथारा, सल्लेखना अथवा वीरमरण के अंतर्गत लिया जाता है। इस प्रकार के मरण की सम्यक् विधि जैन शास्त्रों में बताई गई है। इसे जानने से पहले इन मरणों की परिभाषा समझ लेना उचित होगा।

3. बाल पंडित मरण- जो आत्मा से शरीर को भिन्न मानते हैं। देव, शास्त्र, गुरु पर सच्चा श्रद्धान करते हुए हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह इन पांच पापों का स्थूल रूप से (मोटे रूप में) त्याग देते हैं। देशव्रत, दिग्व्रत, अनर्थदण्डव्रत इन तीन गुण व्रतों का पालन करते है। समता रूप सामायिक पर्वो पर दिन में एक बार भोजन रूप प्रोषधोपवास, परिग्रहप्रमाण (आवश्यक वस्तुओं के अलावा सब वस्तुओं का त्याग) करते है और अंत में सल्लेखना व्रत इन चार शिक्षा व्रतों को मिलाकर श्रावक के कुल बारह व्रतों का पालन करते है एवं पंच परमेष्ठी का ध्यान या मंत्र का जाप करते हुए या सुनते हुए जो ग्रहस्थ श्रावक मरण करते हैं, उसे बाल–पंडित मरण कहते हैं।

घर में रहने वाले ग्रहस्थ श्रावक को यदि परिजन दीक्षा लेकर सल्लेखना लेने की अनुमति प्रदान नहीं करते तो मरण का प्रसंग आने पर वह ग्रहस्थ श्रावक अपने शरीर और कषाय को कम करते हुए आलोचना प्रतिक्रमण करके निःशल्य होकर घर में ही संथारा (संस्तर) पर आरोहण करता है उस ग्रहस्थ की मृत्यु बाल पंडित मरण कहलाती है। सभी व्रती ग्रहस्थ श्रावकों का सल्लेखना पूर्वक मरण हो ऐसा कोई नियम नहीं है। कुछ ही साहसी पुण्यवान श्रावक ही सल्लेखना पूर्वक मरण कर पाते है। जो श्रावक घर में संथारा धारण करते है उनका पूर्ण सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण नहीं कहलाता है।

(c) Kashay Vashart child death - Dying due to the effects of anger, pride, illusion, greed, passion, attachment, deceit and deceit is called Kashay Vashart child death.

(d) Naukshaya and Vashart child death - humor (laughter), Rati, Aarti, grief, fear, guilt, in female Veda, male Veda, impotent Veda, one whose intelligence has become evil, mind has also become kumati, and these The death of a person who dies under the control of nine Kashayas is called navkashya child death.

Those who die childishly and die in childhood die asamadhi (untimely death). These two types of death are taken under suicide, euthanasia, Sati practice and untimely death. Apart from these deaths, those who die as Child Pandit Maran, Pandit Maran and Pandit-Pandit Maran are taken under Samadhi Maran, Santhara, Sallekhana or Veermaran. The proper method of this type of death has been described in Jain scriptures. Before knowing this, it would be appropriate to understand the definition of these deaths.

3. Baal Pandit Maran- Those who consider the body as separate from the soul. By paying true respect to God, scriptures and Guru, we give up these five sins of violence, lies, theft, greed and attachment. Deshvrat, Digvrat and Anarthadandavrat are the three Guna fasts. On Samata form Samayik festivals, he observes food once a day in the form of Proshadhopvas, Parigrahapramana (renouncing all things except essential things) and finally Sallekhana Vrat. By including these four Shiksha Vrats, Shravak observes a total of twelve Vrats and observes Panch Parmeshthi. Those devotees who die while meditating or chanting or listening to mantras are called Baal-Pandit death.

If the family members do not allow the Grahastha Shravak living in the house to take initiation and take Sallekhana, then when the occasion of death comes, That planetary devotee, reducing his body and the astringency, does Pratikraman and becomes free from pain and ascends to the Santhara (bed) at home. The death of that planetary person is called Baal Pandit Maran. There is no rule that all fasting devotees should die in a dignified manner. Only a few courageous and virtuous devotees are able to die with dignity. Those devotees who wear Santhara at home, their complete samadhi death is not called death.

4. पंडित मरण- जो सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान से सहित होकर पांच पापों का पूर्ण रूप से त्याग करके अहिंसा, सत्य, अचौर्य ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह रूप पांच महाव्रतों को धारण करते है। पांच इन्द्रिय विजय। ईर्या, भाषा, एषण आदान निक्षेपण प्रतिष्ठापन रुप पांच समिति। प्रभु स्तुति, वंदन, प्रतिक्रमण सामायिक, प्रत्याख्यान (समस्त संसारिक क्रिया कलापों का त्याग) शरीर के प्रति मत्वके त्याग रूप षड़ आवश्यक। केंशलोंच, दिगम्बरत्व, भूमिशयन, स्थिति भोजन (खड़े होकर आहार करना), एक बार भोजन करना, आहार के पूर्व मंजन नहीं करने रूप अदंत धावन और अस्नान इन सात विशेष गुणों को धारण करते हुए सम्यक् चारित्र रूप कुल 28 मूल गुणों को धारण करके मुनि बनकर परमात्मा या अपनी आत्मा का ध्यान करते हुए मरण को प्राप्त होता है उसे पंडित मरण कहते हैं। यही पूर्ण सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण कहलाता है।

इस पंडित मरण के पांच प्रकार होते हैं–

(अ) व्यवहार पंडित मरण- जो मुनि अनेक शास्त्रों के जानकार होकर अपने गुरु एवं संघ के साधुओं की सेवा शुश्रुषा, विनय आदि सम्यक् व्यवहार से युक्त होते हैं समस्त आवश्यक धार्मिक व्यवहार की क्रियाओं में निपुण होते हैं वे व्यवहार पण्डित मुनि कहलाते हैं। ऐसे मुनि के मरण को व्यवहार पंडित मरण कहते हैं।

(ब) दर्शन पंडित मरण- जो मुनि क्षायिक सम्यक् दर्शन, क्षयोपशम सम्यग्दर्शन और औपशमिक सम्यक् दर्शन अथवा आज्ञा, मार्ग, उपदेश, सूत्र, बीज, संक्षेप, विस्तार, अर्थ, अवगाढ़ और परमावगाढ़ रूचि रूप दस प्रकार के सम्यग्दर्शन के श्रद्धान से सहित होते हैं उन्हें, दर्शन पंडित मुनि कहते हैं। ऐसे मुनि के मरण को दर्शन पंडित मरण कहते है।

(स) ज्ञान पंडित मरण- जो मुनि मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय इन पांच सम्यग्ज्ञान से परिणत होते हैं उन्हें ज्ञान पंडित मुनि कहते हैं। ऐसे मुनि के मरण को ज्ञान पंडित मरण कहते है।

(द) तप पंडित मरण- जो मुनि अनशन, अमौदर्य, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्त शय्यासन कायक्लेश रूप इन छह बाह्य (बहिरंग) तप और प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य (सेवा) स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान इन छह अभ्यन्तर (अंतरंग) तप के धारक होते है। वे पंडित मुनि कहलाते है। ऐसे मुनि के मरणको तप पंडित मरण कहते है।

4. Pandit Maran – One who is imbued with right philosophy and right knowledge. By completely renouncing the five sins, one observes the five great vows of non-violence, truth, celibacy and aparigraha. Five senses victory. Jealousy, language, material exchange, establishment and formation of five committees. Praise to the Lord, worship, Pratikraman Samayik, Pratyakhyaan (renouncement of all worldly activities), renunciation of the mind towards the body are essential. By adopting the seven special qualities of Hair Lonch, Digambaratva, Bhumishayaan, Stit Bhojan (eating while standing), eating once, not brushing before eating, bathing and follow non bathing, a sage becomes the form of Samyak Charitra by adopting a total of 28 basic qualities. One dies while meditating on God or one's soul; this is called Pandit death. This is called samadhi death with full consciousness.

There are five types of this Pandit Maran-

(a) Vyavar Pandit Maran – Those monks who are knowledgeable about many scriptures, serve their Guru and the sages of the Sangha, have proper behavior like Shushrusha, Vinay (humility) etc. and are adept in all the necessary activities of religious behaviour, they are called Vyavar Pandit Muni. The death of such a sage is called the death of a learned scholar.

(b) Darshan Pandit Maran - the sage who teaches Kshayik Samyak Darshan, Kshayopasham Samyak Darshan and Aupshamik Samyak Darshan or ten types of command, path, sermon, sutra, seed, summary, expansion, meaning, Avagaad and Paramavagaad interest form. Those who are associated with the devotion of Samyagdarshan are called Darshan Pandit Muni. The death of such a sage is called Darshan Pandit death.

(c) Gyan Pandit Maran – The sage who is accomplished through these five Samyagyan – Mati, Shruta, Awadhi and Manahparya is called Gyan Pandit Muni. The death of such a sage is called the death of a learned scholar.

(d) Penance Pandit Maran - The sage who performs these six external penances in the form of fasting, non-mouldarya, vrittiparisankhyan, ras-parityaag, vivikt shayasana, kayklesh form and atonement, vinaya (humility), vayavritya (service), self-study, vyutsarga and meditation, these six internal (inner) penances. There are holders. He is called Pandit Muni. The death of such a sage is called the death of an ascetic (Pandit).

(ई) चारित्र पण्डित मरण- जो मुनि सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसांपराय और यथाख्यात चारित्र इन पांच प्रकार के सम्यकचारित्र के धारक होते हैं उन्हें चारित्र पंडित कहते हैं। ऐसे मुनि के मरण को चारित्र पंडित मरण कहते है।?

इस चारित्र पंडित मरण के तीन भेद होते हैं–

(i) भक्त प्रत्याख्यान मरण- मुनि जब अपने शरीर और आयु को क्षीण होते हुए एवं मृत्यु को निकट देखता है तब वे निर्यापक आचार्य गुरु के पास जाकर भक्ति, विनय, प्रतिक्रमण सहित सल्लेखना धारण करने की प्रार्थना करते हैं। निर्यापक आचार्य समस्त स्थिति को देखकर क्षपक (सल्लेखना के योग्य) मुनि को देखकर आहार का क्रमिक त्याग कराते है जिसमें उत्कृष्ट बारह वर्ष की अवधि दी जाती है। उस सल्लेखना की अवधि को स्वीकार करके वह क्षपक अपने रत्नत्रय धर्म का विशुद्धि पूर्वक पालन करता है। शरीर और कषायों को क्रमशः क्रश करता हुआ एक दिन आत्म ध्यान में लीन क्षपक मुनि देह का विसर्जन कर देता है। मुनि के इस मरण को भक्त प्रत्याख्यान मरण कहते है। जब वह क्षपक मुनि समाधि के समय अपने स्वयं हाथों से सेवा करता है और दूसरों से कराते हुए उपकार की अपेक्षा रखता है तब उसे भक्त प्रत्याख्यान समाधि मरण कहते है।

इस भक्त प्रत्याख्यान के दो भेद होते है जो इस प्रकार हैं–

(a) सविचार प्रत्याख्यान- अनेक प्रकार के चारित्र का पालन करते हुए अपनी शक्ति का, द्रव्य, क्षेत्र, काल का एवं निर्यापक आचार्य का विचार करके अन्न जल आदि का त्याग करके संन्यास मरण में प्रवर्तन करना ही सविचार भक्त प्रत्याख्यान सन्यास मरण कहलाता है।

इस सन्यास मरण को करने वाले मुनि के 40 अधिकार कहे गये है। जैसे – समाधि के योग्य उचित साधन कहाँ मिलेगें ऐसा विचार करना लिंगाधिकार है। ज्ञानार्जन कहाँ होगा ऐसा शिक्षाधिकार है। मन की एकाग्रता कहाँ किस प्रकार बनेगी ऐसा समाधि अधिकार है। कर्तव्य परायणता बनी रहे ऐसा परिणाम अधिकार है। सबको क्षमा करना और सब से क्षमा मांगना क्षमण अधिकार है। अपनी स्वयं की शक्ति का परीक्षण करना परीक्षाधिकार है। गुरु के सामने अपराध कहना आलोचना अधिकार है।

(e) Charitra Pandit Maran – The sage who is the holder of these five types of Samyakcharitra, Chedopasthapana, Parihar-vishuddhi, Subtle Sampraya and Yathayakyat charitra is called Charitra Pandit. The death of such a sage is called Charitra Pandit Maran. ,

There are three types of this Charitra Pandit Maran -

(i) Devotee Pratyakhyaan Maran - When the sage sees his body and age diminishing and death approaching, then he goes to Niryapak Acharya Guru and prays for adopting Sallekhana along with devotion, Vinay, Pratikraman. Niryapak Acharya, after seeing the entire situation and seeing a Kshapak (worthy of mention) sage, makes one to gradually give up food, in which a period of twelve years is given. By accepting the period of that Sallekhana, that Kshapaka strictly follows his Ratnatraya Dharma. One day, Kshapak Muni, engrossed in self-meditation, after crushing the body and the astringents respectively, immerses the body. This death of the sage is called Pratyakhyaan death by the devotees. When that Kshapaka Muni does service with his own hands at the time of Samadhi and expects favor from others while getting it done, then the devotee calls it Pratyakhyaan Samadhi Maran. There are two types of this devotee Pratyakhyaan which are as follows-

(a) Savichara Pratyakhyaan – Following various types of characters, thinking about one's power, matter, area, time and the Nirayapak Acharya. By renouncing food, water etc. and adopting the path of renunciation and death is called renunciation by the devotee Pratyakhyaan Sanyas Maran.

There are said to be 40 rights of the monk who commits this Sanyasa death. For example, it is a gender privilege to think about where the proper means for attaining Samadhi can be found. Where will the learning take place? There is such a right to education. Where and how will the concentration of the mind be formed, such is the right to attain Samadhi. The result of continuing devotion to duty is a right. Forgiveness is the right to forgive everyone and ask for forgiveness from everyone. Testing one's own strength is a test right. Self criticism in front of guru is also a right.

समाधि के योग्य वसतिका का विचार होना शैय्या अधिकार है। योग्य निर्यापक आचार्य का विचार निर्यापक अधिकार है। इस प्रकार भावना, दिशा, अर्ह, शिक्षा, विनय, उपधित्याग, अनुशिष्टि, मार्गणा, उपसंपदा, प्रतिलेखन, पृच्छा, प्रकाशन, प्रत्याख्यान, धारणा, कवच, समता, ध्यान, लेश्या और फल इत्यादि 40 अधिकार है।

(b) अविचार प्रत्याख्यान- मुनि को ऐसा रोग जिसका उपचार सम्भव न हो सके जैसे– ऐसा नगरदाह जिससे जीवित बचना असंभव हो, ऐसा शेर–हाथी का उपसर्ग, चोर, डाकू आतंकी इत्यादि हत्यारे के द्वारा सहसा (अचानक) मरण का प्रसंग उपस्थित होने पर तत्काल बिना सोचे–विचारे मरण का प्रसंग दूर न होने तक अन्न, जल का त्याग करना अविचार भक्त प्रत्याख्यान कहलाता है।

(ii) प्रायोपगमन समाधि मरण

जब क्षपक मुनि अपने और पर की सेवा व उपकार की अपेक्षा से रहित होता हुआ समाधि धारण करता है तब उसे प्रायोपगमन समाधि मरण कहते हैं।

(iii) इंगिनी समाधि मरण

जब क्षपक मुनि स्वयं अपने शरीर की सेवा और उपकार करता है किन्तु दूसरों से कोई अपेक्षा नहीं रखता उसे इंगिनी समाधि मरण कहते है।

इन तीनों प्रकार के समाधि मरण में विशेष अंतर नहीं है सिर्फ सेवा (वैय्यावृत्ति) और उपकार दूसरों से या स्वयं से करने या कराने की अपेक्षा से अंतर है। बाकि सब एक ही है।

5. पण्डित-पण्डित मरण- अरिहंत परमेष्ठी बनकर मुक्ति प्राप्त करना पंडित मरण है। पंडित पंडित मरण होने के उपरांत शरीर कपूर की तरह उड़ जाता है। फिर पुनः संसार में भटकना नहीं पड़ता है। अनंतकाल के लिए आत्मा शरीरातीत हो जाती है। अरिहंत परमेष्ठी को मोक्ष की प्राप्ति होती है फिर भी इसे मरण इसलिए कहा कि आयु आदि प्राणों के और शरीर के वियोग होने को मरण कहते है। अरिहंत अवस्था में इनका क्षय होता है इसलिए मरण हुआ लेकिन अब पुनः जन्म–मरण कभी नहीं होगा और शरीर की प्राप्ति भी नहीं होगी। वे अनंत काल तक, अशरीरी रहकर अनंत ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य आदि से गुणों से सहित रहेंगे इसलिए मोक्ष कहा हैं।

Having the thought of a Vasatika worthy of Samadhi is Shayya Adhikari. The opinion of a qualified arbitrator is the arbiter authority. Thus, there are 40 rights like Bhavana, Disha, Arh, Shiksha, Vinay, Upadhityaag, Anushishti, Margana, Upasampada, Transcription, Prichcha, Prakashan, Pratyakhyaan, Dharana, Kavach, Samata, Dhyana, Lesya and Phal etc.

(b) Avichara Pratyakhyaan - A sage may suffer from a disease whose treatment is not possible, such as a city fire from which it is impossible to survive, a situation of sudden death caused by a lion-elephant, a thief, a dacoit, a terrorist, etc. But giving up food and water immediately without thinking until the fear of death goes away is called Pratyakhyaan for a thoughtless devotee.

(ii) Prayopagamana Samadhi death

When Kshapak Muni attains samadhi without any expectation of service or favor from others, then it is called Prayopagamana Samadhi Maran.

(iii) Ingini Samadhi Death

When Kshapak Muni himself serves and benefits his own body but does not expect anything from others, it is called Ingini Samadhi Maran. There is no special difference between these three types of samadhi death, only service.

(Vaiyavritti) and Upkar are different from expecting to do or get done from others or from oneself. Everything else is the same.

5. Pandit - Pandit Maran - Attaining liberation by becoming Arihant Parmeshthi is Pandit Maran. After Pandit Pandit's death, the body evaporates like camphor. Then there is no need to wander in the world again. The soul transcends the body for eternity. Arihant Parmeshthi attains salvation, yet it is called death because age etc. separation of life and body is called death. In the state of Arihant, they decay, hence death occurs, but now there will never be birth or death again and the body will not be attained. They will remain bodyless for eternity and will be filled with qualities like infinite knowledge, philosophy, happiness, semen etc. hence it is called Moksha.

वर्तमान में मोक्ष की प्राप्ति अर्थात् पंडित पंडित मरण नहीं है। होता तो प्रत्यक्ष मुक्ति दिखती और आज समाधि मरण को आत्महत्या कहने का किसी को साहस भी नहीं होता।

केवल्य ज्ञान को प्राप्त करके प्रत्येक आत्मा परमात्मा बनती है, आयु पूर्ण होते ही जिनका शरीर कपूर की भाँति उड़ जाता है उसे पंडित–पंडित मरण कहते हैं। इस प्रकार पंडित–पंडित मरण को करने हेतुं प्रत्येक साधक जिन्दगी भर साधना करके सल्लेखना पूर्वक मरण करता है।

संसार में मरण (मृत्यु) निश्चित है। मृत्यु से सब डरते हैं, परन्तु जो मृत्यु से नहीं डरते, शरीर से आत्मा को पृथक श्रद्धान करते है वे मोह को पराजित कर देते हैं। जो आनंद पूर्वक परमात्मा का ध्यान या मंत्रोच्चारण करते हुए मरण करते हैं उनका मरण मातम का रूप न होकर महोत्सव का रूप हो जाता है। यह मृत्यु महोत्सव एक बार भी कर लेने पर सैकड़ों मरण को समाप्त कर देता है। जन्म के समान दुःख और मरण के समान भय दुनिया में और कोई दूसरा नहीं होता है।

अध्यात्म योगी जैनाचार्य कुन्द–कुन्द स्वामी ने लिखा है 'संयम, नियम, तप और सम्यक ज्ञान पूर्वक जो अपनी आत्मा या परमात्मा को ध्याता है उसे समाधि कहते हैं। संसार के समस्त विकल्प जालों का नाश होना परम समाधि है। उस समाधि के समय पाँचों इन्द्रिय वचन, शरीर, हाथ–पैर और मनको संयत बना लिया जाता है ऐसे संयत व्यक्ति को ही समाधि होती है। जो ऐसे साधु की समाधि कराते हैं अथवा उनके सहयोगी बनते है तथा सेवा करते हैं वे भी तीर्थंकर जैसे परमात्मा पद को प्राप्त करते है। समाधि पूर्वक मरण को सल्लेखना मरण कहते है।

सल्लेखना का अर्थ-

सल्लेखना, समाधि मरण, सन्यास मरण, वीरमरण, एवं संथारा ये पर्यायवाची है परन्तु व्युत्पत्यर्थ अलग–अलग है। ध्येय वस्तु में एकाग्रता पूर्वक मन को लगाना समाधि है। अधि धातु में सम उपसर्ग लगाने से समाधि बना है। सम अर्थात् समीचीन रूप से अपनी आत्मा के दर्शन, ज्ञान, चारित्र आदि गुणों के अधि अर्थात् अधीन होना समाधि है। अथवा समा+धि अर्थात् समा जाना आत्मा के धि यानि ज्ञान गुण के ध्यान में इसी का नाम समाधि है। इस प्रकार की समाधि पूर्वक मरण करना समाधि मरण कहलाता है।

At present there is no attainment of salvation *i.e.* death of Pandit Pandit. Had it been so, salvation would have been visible and today no one would have the courage to call death in Samadhi as suicide.

By attaining Kevalya Gyan, every soul becomes God, the one whose body evaporates like camphor on completion of life is called Pandit-Pandit Maran. In this way, to die a Pandit-Pandit (Pandit) death, every seeker does spiritual practice throughout his life and dies with good intentions.

Death is certain in this world. Everyone is afraid of death, but those who are not afraid of death, who worship the soul separately from the body, defeat the illusion. Those who die while happily meditating on God or chanting mantras, their death becomes not a form of mourning but a form of celebration. This death festival, if performed even once, eliminates hundreds of deaths. There is no other sorrow like birth and fear like death like no other in the world.

Spiritual Yogi Jainacharya Kund - Kund Swami has written, 'One who meditates on his soul or God with restraint, rules, penance and proper knowledge is called Samadhi. The ultimate samadhi is the destruction of all the webs of choice in the world. At the time of that Samadhi, the five senses, speech, body, hands, feet and mind are brought under control. Only to such a controlled person only, Samadhi takes place. Those who perform samadhi of such a saint or become his associates and serve him also attain the divine status like Tirthankara. Death by samadhi is called Sallekhana death.

Meaning of Sallekhana-

Sallekhana Samadhi Maran, Sanyas Maran, Veermaran and Santhara are synonyms but their etymology is different. Samadhi is the concentration of the mind on the objective object. Samadhi is formed by adding prefix sam to adhi dhatu. Samadhi is Samadhi, *i.e.* subjugation of the qualities like vision, knowledge, character etc. of one's soul in an appropriate manner. Or Samadhi *i.e.* becoming absorbed in the meditation of the soul's power i.e. knowledge quality, this is called Samadhi. This type of death in samadhi is called samadhi death.

सम्यग प्रकार से काय, कषाय और शल्यों को कृश करना सल्लेखना है। इस प्रकार सल्लेखना पूर्वक मरण करना सल्लेखना मरण कहलाता है। समीचीन रूप से बाह्य आभ्यंतर वस्तुओं का त्याग करके उपयोग को अपनी आत्मा में लवलीन रहना अथवा अपनी आत्मा में अपनी आत्मा को निक्षिप्त किये रहना सन्यास कहलाता है, इस प्रकार अपनी आत्मा में आत्मा को समीचीन रूप से निक्षिप्त करके मरण करना सन्यास मरण कहलाता है।

अपनी आत्मा शक्ति को श्रद्धा, ज्ञान और चारित्र के द्वारा उद्घाटित करके मरण के भय से नहीं डरना बल्कि एक योद्धा की तरह होश हवास में मृत्यु का सामना करने हुए अपने रत्नत्रय की रक्षा और मृत्यु को जीतने के लिए मरण स्वीकार कर लेना वीरमरण कहलाता है।

समस्त सम्पदा, संस्था और संसार के आरम्भ परिग्रह इत्यादि को छोड़कर, शरीर के प्रति मोह, मन में क्लेश और संक्लेश को छोड़कर संसार से तरने के लिए एक स्थान पर स्थिर होकर भोजन, पानी आदि त्याग देना संथारा कहलाता है।

इन सभी का अर्थ है कि बाह्य आडम्बर, संकल्प, विकल्प और मोह माया जाल आदि छोड़कर मन को विशुद्ध परिणामों से सहित करके शरीर का त्यागना सल्लेखना है इन परिभाषाओं में कहीं भी भूखा प्यासा रखकर मारना अथवा भूखा प्यासा रहकर मरना नहीं आया है। जैन आगम ग्रंथों में कहा है हितकारी, आवश्यकताअनुसार, स्वास्थ्य वर्धक आहार देकर कराया और कषाय को क्रश करना सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण है, अतः यह उचित है। इस समाधि मरण, अर्थात् सल्लेखना को धारण करने का प्रत्येक ग्रहस्थ श्रावक और श्रमण मुनि को अधिकार है। जबकि तीव्र कषाय में आकर, मन को कलुषित करते हुए, अस्त्र–शस्त्र में घात करके या विष भक्षण करके अपने आपको मार डालना आत्म हत्या है, जो पूर्णतः अनुचित है, अपराध है, गुनाह है। फिर भी यहाँ सल्लेखना मरण के कुछ साक्ष्य अवगत करायें जा रहे है।

1. सल्लेखना में मन, वचन, काय को शुद्ध और विशुद्ध बनाया जाता है। जब बुढ़ापा, दुर्भिक्ष, उपसर्ग और रोग का प्रतिकार असंभव हो तभी समाधि पूर्वक सल्लेखना की जाती है।

To weaken the body, the muscles and the muscles in the right way is good writing. In this way, dying in a proper manner is called a proper death. Renunciation of the external and internal things in an appropriate manner and remaining absorbed in one's soul or keeping one's soul deposited in one's soul is called Sanyas. In this way, filling the soul in one's soul by depositing it appropriately is called renunciation and death.

Not being afraid of the fear of death by revealing one's soul power through wisdom, knowledge and character, but facing death consciously like a warrior and accepting death to protect one's gem and conquer death is called Veermaran.

Leaving aside all wealth, institutions and worldly attachments, attachment to the body, pain and confusion in the mind, settling at one place and giving up food, water etc. in order to escape from the world is called Santhara.

All this means that leaving aside external ostentation, choice of resolutions and the trap of illusion etc., the mind should be engaged with pure results and the body should be. It is a good thing to give up the word 'killing' or 'dying while being hungry'. Nowhere in these definitions has it been mentioned. It is said in Jain Aagam texts that by giving beneficial, health enhancing food as per requirement and crushing the astringent is a conscious death, hence it is appropriate. Every Grahastha Shravak and Shramana Muni has the right to adopt this Samadhi Marana *i.e.* Sallekhana. Whereas killing oneself due to intense anger, tainting the mind, killing with a weapon or consuming poison is suicide, which is completely inappropriate, a crime, a crime. Nevertheless, some evidence of Sallekhana's death is being presented here.

1. In Sallekhana, mind, speech and body are made pure and pure. When prevention of old age, famine, disease and disease is impossible, only then Samadhi Sallekhana is done.

2. शरीर हर पर्याय में मिलता है परन्तु धर्म नहीं मिलता। मनुष्य पर्याय में धर्म विशेष रूप में मिलता है, उसका उपसंहार, समता, विवेक, बुद्धि, भक्ति, आराधना और समाधि पूर्वक किया जाता है।

3. जैन धर्म में सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण धर्मात्मा के जीवन का एक अंतिम अनुष्ठान है, जीवन भर के त्याग तपस्या का प्रतिफल है। इसलिए प्रत्येक साधक निरंतर समाधि मरण की भावना करता है।

4. समाधि मरण के संबंध में अनेक तीर्थक्षेत्र एवं नगरों में प्राचीन शिलालेख वर्तमान में मिलते हैं। जैसे श्रवण बेलगोला कर्नाटक में समाधि मरण करने वालों के लगभग सौ से अधिक शिलालेख है जो 6व 7वी शताब्दी के हैं, उनमें मुनि, आर्यिका श्रावक और राजघराने वालों के भी उपवास की संख्या पूर्वक समाधि मरण की तिथि दी गई है। इसी प्रकार सम्मेद शिखर (झारखंड) पालीताना, गिरनार जी (गुजरात), राहतगढ़, कुण्डलपुर, नैनागिरि (मध्यप्रदेश), ऐलोरा की गुफा (महाराष्ट्र), महावीर जी (राजस्थान), हस्तिनापुर, शौरीपुर बटेश्वर (उत्तर प्रदेश), चम्पापुर, भागलपुर (बिहार) इत्यादि तीर्थ क्षेत्रों एवं नगरों में प्राचीन शिलालेख एवं समाधि स्थली उपलब्ध हैं।

5. (समाधिमरण में) भूखा प्यासा रखकर नहीं बल्कि आवश्यकतानुसार उचित आहार, पानी दे कर वैद्य, डाक्टर की उचित सलाह व औषधि देकर और मोहममता छोडकर परमात्म भावना में लीन रखकर शरीर का विसर्जन किया जाता है ।

6. आवेग, आक्रोश, लोभ, ईर्ष्या, शत्रुता, लालच आदि बुरी भावनाओं को नियंत्रित करके समता, साहस, शांति और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करते हुए आध्यात्मिक, नैतिक, व्रत, नियम, संयम के संरक्षण के लिए किया गया उपक्रम और आत्म भावनाओं को बलवती बनाकर देह को विसर्जन की ओर क्रमशः बढ़ने का नाम समाधि मरण है।

7. (समाधिमरण में) मरण का अप्रतिहार्य कारण उपस्थित होने पर क्षपक की अपनी अंतरंग भावना के अनुसार, अपने परिवार की अनुमति, डॉक्टर की सलाह, गुरु और प्रभु की शरण, ली जाती है।

2. Body is found in every alternative but religion is not found. Religion is found in a special form in the synonym of man, its conclusion, equality, prudence, it is done with wisdom, devotion, worship and samadhi.

3. In Jainism, samadhi (samadhi) is the last ritual in the life of a virtuous soul and is the result of a lifetime of sacrifice and penance. That's why every seeker constantly feels the feeling of dying in Samadhi.

4. Ancient inscriptions regarding death in Samadhi are currently found in many pilgrimage places and cities. For example, in Shravan Belgola, Karnataka, there are more than a hundred inscriptions of people who died in Samadhi which are of 6th and 7th century, in them the date of Samadhi death is given along with the number of fasts of sages, Aryika Shravakas and royal family members. Similarly, Sammed Shikhar (Jharkhand), Palitana, Girnar Ji (Gujarat), Rahatgarh, Kundalpur, Nainagiri (Madhya Pradesh), Ellora Cave (Maharashtra), Mahavir Ji (Rajasthan), Hastinapur, Shauripur Bateshwar (Uttar Pradesh), Champapur, Bhagalpur (Bihar) etc. Ancient inscriptions and mausoleum sites are available in pilgrimage areas and cities.

5. (In Samadhimarana) the body is immersed not by keeping it hungry and thirsty but by giving proper food and water as per requirement, by giving proper advice and medicines from the doctor and by giving up attachment and keeping it absorbed in divine feelings.

6. Undertaking for the preservation of spiritual, moral, fasts, rules, restraints by controlling bad emotions like impulse, resentment, greed, jealousy, enmity, greed etc. and achieving equanimity, courage, calmness and victory over the senses and self emotions. The gradual progress of the body towards dissolution by strengthening it is called Samadhi Maran.

7. (In Samadhimaran) When the irrefutable cause of death is present, according to the person's own inner feelings, the permission of his family, doctor's advice, refuge to the Guru and the Lord is taken.

जैन धर्म साहित्य के अलावा अन्य साहित्य में भी सन्यासमरण की बात मिलती है। जैसे महाकवि कालीदास ने अपने साहित्य में लिखा कि राजा अज एवं मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने सन्यास मरण स्वीकार किया था। अन्य कई ऐसे और भी पुरुष हुये जिन्होंने सन्यासमरण स्वीकार किया था। जैसे महाराजा भर्तृहरी, स्वामी रामदीन, राष्ट्रीय नेता विनोवाभावे आदि।

बाल्मीकि रामायण में समाधि के अनेक प्रसंग मिलते हैं। जैसे नारायण लक्ष्मण ने सरयू नदी के तट पर सशरीर महाप्रयाण किया। दूसरा प्रसंग वानरों का है कि सीता की खोज करते–करते शरीर का ह्रास हो जाने पर वानरों ने आमरण उपवास करने का निश्चय किया। रामायण की तरह महाभारत में भी स्वेच्छा मरण के कई प्रसंग पढ़ने को मिलते हैं। जैसे कौरव पाण्डवों की दादी सत्यवती ने स्वेच्छा से मरण स्वीकार किया। नकुल और सहदेव की माता माद्री ने भी समाधिमरण स्वीकार किया, इन ग्रन्थों में मृत्यु का अनुष्ठान अथवा मृत्यु महोत्सव करने की प्रशंसा भी की गयी है, उसे वैश्य घोषित करते हुए पुण्यकारी बताया।

8. कृत्य कई प्रकार के होते हैं, उनमें कुछ मान्य और कुछ अमान्य होते है जैसे पूजन–पाठ, भक्ति–आराधना, व्रत–उपवास आदि धार्मिक कृत्य, विवाह, संतान उत्पत्ति आदि सामाजिक कृत्य एवं सेवा, सुरक्षा न्यायिक व्यवस्था आदि राजकीय कृत्य मान्य है। जैसे ये सब किये गये कृत्य अपराध नहीं है वैसे ही समाधिमरण धार्मिक कृत्य होने से अपराध नहीं है।

समाधिमरण क्या आत्महत्या है ऐसा प्रश्न जो आज उठाया गया है। ऐसा ही प्रश्न लगभग हजार वर्ष पूर्व उठा था उसका समाधन आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने इस प्रकार दिया कि श्रमण संस्कृति में समाधि मरण को गौरव की दृष्टि से देखा जाता है। समाधि मरण जिन्दगी भर की त्याग तपस्या का प्रतिफल है। समाधि मरण अर्थात् सल्लेखना आत्मा को पवित्र करती है और महिमावान बनाती है। समाधि मरण, योग, साधना से जुड़ा जीवन का आध्यात्मिक अनुष्ठान है। इस अनुष्ठान को ऊर्जावान, साहसी ज्ञान, ध्यान, तप में लीन महान योगी ही कर सकता है। वह अनुष्ठान तब किया जाता है जब जीवन का अंत आ जाता है। मृत्यु निकट दिखने लगती है।

Apart from Jain religious literature, there is talk of renunciation in other literature also. Like the great poet Kalidas wrote in his literature that King Aja and Maryada Purushottam Ram had accepted Sanyas death. There were many other such men who had accepted renunciation. Like Maharaja Bhartrihari, Swami Ramdin, national leader Vinoba Bhave etc.

There are many incidents of Samadhi in Valmiki Ramayana. Like Narayan Lakshman sacrificed his body on the banks of river Saryu. The second incident is about the monkeys, that while searching for Sita, when their body deteriorated, they decided to fast unto death. Like Ramayana, many incidents of voluntary death are found in Mahabharata also. Like Satyavati, the grandmother of Kauravas and Pandavas, voluntarily accepted death. Nakul and Sahadev's mother Madri also accepted Samadhimaran. In these texts, performing the death ritual or death festival has also been praised, declaring him a Vaishya and calling him virtuous.

8. There are many types of activities, some of them are valid and some are invalid, such as religious activities like worship, devotion, fasting etc., marriage, birth of children etc., social activities and service, security. Governmental acts like judicial system etc. are valid. Just as all these acts are not a crime, similarly Samadhimaran is not a crime because it is a religious act.

Is Samadhimaran suicide is a question that has been raised today. A similar question was raised about a thousand years ago and its solution was given by Acharya Pujyapad Swami in such a way that in the Shramana culture, death in Samadhi is seen as a matter of pride. Samadhi death is the result of a lifetime of sacrifice and penance. Samadhi death *i.e.* sallekhana purifies the soul and makes it glorious. Samadhi is a spiritual ritual of life associated with death, yoga and sadhana. Only an energetic, courageous great yogi absorbed in knowledge, meditation and penance can perform this ritual. This ritual is performed when the end of life comes. Death seems near.

जीवन का उद्देश्य धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ से पूर्ण हो जाता है। अथवा यथा शक्ति उद्देश्य को पूर्ण कर लेने पर अपनी आत्मा के गुणों की सम्पत्ति लुटती हुई दिखने लगती है तब उसे एक योगी लुटने नहीं देता। यदि जीवन की रक्षा के लिए धर्म को छोड़ना पड़े तो उस जीवन का कोई मूल्य नहीं परन्तु जब अपने आत्म गुणों की सम्पत्ति रूपी रक्षा के लिए जीवन को समाधि मरण पूर्वक छोड़ा जाता है तो जीवन और मरण दोनों बहमूल्य हो जाते हैं। वह जीव मरकर भी अमर होता है।

धर्म रक्षा के लिए या देश की रक्षा के लिये यदि जीवन उसमें लगा दिया जाता है तो वह आत्म हत्या नहीं कहलाती है बल्कि महान पुण्य का कार्य कहलाता है। उसे भारतीय संस्कृति में मृत्यु महोत्सव कहा जाता है। जीवन से अधिक महत्त्वपूर्ण धर्म और देश होता है। लोक और परलोक की अपेक्षा से धर्म दो प्रकार का होता है। देश, समाज, परिवार और प्राणीमात्र की रक्षा करना लोक धर्म है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, त्याग, तप आदि आध्यात्म दृष्टि को रखकर कार्य करना परलोक धर्म हैं। अतः सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण आत्म हत्या नहीं है।

राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रह चुके श्री पानाचन्द्र जैन अपने एक आलेख के माध्यम से व्यक्त करते हैं। सन् 1972 में लॉ कमीशन ने इस बात को माना था कि भारतीय दण्ड संहिता की धारा 309 में आत्म हत्या पर सजा का प्रावधान है। यह समाप्त कर दिया जाए। इस विषय में एक बिल भी लाया गया था। पर वह कानून का अंग नहीं बन पाया। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 25 स्पष्ट करता है कि देश के प्रत्येक नागरिक को अंतः करण की स्वतंत्रता और धर्म के आबाध रूप से मानने, आचरण करने और प्रसार करने का समान अधिकार है।

संथारा अर्थात् सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण जैन साधु–साध्वी तथा साधक श्रावक के लिये जीवन के अंत में महाप्रयाण के पथ पर जाने की एक प्रक्रिया के रूप में मान्य नहीं है। प्रत्येक जैन साधक को सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण करने का अधिकार है।

अनादि काल से जैन मुनि सल्लेखना धारण कर अपने प्राणों का विसर्जन करते रहे हैं। जो जैन धर्म की एक निरंतर तथा आबाध रूप से चली आ रही परम्परा है। देह को अनन्त में विलीन करने की यह आध्यात्मिक प्रक्रिया विशेष श्रद्धा, ज्ञान, त्याग, तपस्या रूप साधना और परिस्थितियों के साथ जुड़ी है। अतः यह किसी भी प्रकार से लोक व्यवस्था के विरुद्ध नहीं है।

The purpose of life is religion and the effort for salvation becomes complete. Or after completing the objective to the best of his ability, he sees his soul's wealth being plundered, then a Yogi does not allow it to be plundered. If one has to give up one's religion to save one's life, then that life has no value, but when life is left with a samadhi (death) to protect one's spiritual qualities, then both life and death become precious. That creature remains immortal even after death.

If one's life is sacrificed for the protection of religion or for the protection of the country, then it is not called suicide but is called an act of great virtue. It is called death festival in Indian culture. Religion and country are more important than life. Religion is of two types in terms of expectation of this world and the next world. Protecting the country, society, family and living beings is folk religion. Working with spiritual vision like knowledge, philosophy, character, sacrifice, penance etc. are the religions of the hereafter. Therefore, deliberate samadhi death is not suicide.

Shri Panachandra Jain, who has been a judge of Rajasthan High Court, expresses this through one of his articles. In 1972, the Law Commission had accepted that section 309 of the Indian Penal Code. There is a provision for punishment for murder. This should be ended. A bill was also brought in this subject. But that did not constitute a breach of law. Article 25 of the Indian Constitution makes it clear that every citizen of the country has equal right to freedom of conscience and free profession, practice and propagation of religion.

Santhara *i.e.* Samadhi death by writing is not accepted as a process for the Jain Sadha-Sadhvi and Sadhak Shravak to go on the path of Mahaprayana at the end of life. Every Jain devotee has the right to die in a well-intentioned manner.

From time immemorial, Jain monks have been immersing their lives in Sallekhana. Which is a continuous and uninterrupted tradition of Jainism. This spiritual process of merging the body into the infinite is associated with special devotion, knowledge, renunciation, penance, sadhana and circumstances. Therefore, it is not against public order in any way.

नीदरलैण्ड में 1983 से इच्छा मृत्यु कानूनन स्वीकार है। इस कानून के अन्तर्गत 3000 लोग प्रतिवर्ष मृत्यु के लिये आवेदन करते हैं। आस्ट्रेलिया में भी इसे कानूनी स्वीकृति दी थी। कई देशों में इस इच्छा मृत्यु पर विवाद चल रहे हैं। इच्छा मृत्यु की ओर बढ़ रहे लोगों के अध्ययन से पता चला कि अधिकांश लोग अवसाद की वजह से आत्म हत्या करते हैं, ताकि शारीरिक कष्ट के कारण इस अवसाद का इलाज किया जा सकता है। समाधि अवसाद के कारण नहीं ली जाती, ये आत्म सम्वेदना से ली जाती है, समाधि जवानी में या शरीर के ठीक रहने पर या निराशा के कारण नहीं ली जाती बल्कि जब प्राण बचना असंभव हो तभी ज्ञान, विवेक, बुद्धि, श्रद्धा, भक्ति जगाकर, पाप कर्मों को गलाकर और अगले भव में सुख शान्ति की प्राप्ति या मोक्ष सुख की प्राप्ति की आशा से ली जाती है।

सल्लेखना-साधना की पराकाष्ठा

श्रावक हो या श्रमण सभी को सत्य के साक्षात्कार के लिए और आत्मा को परमात्मा बनाने के लिए जीवन के अंत में सल्लेखना धारण करना अनिवार्य है। सल्लेखना साधना की पराकाष्ठा है। सल्लेखना शरीरातीत होने का उपक्रम है। इसी कारण प्रत्येक जैन आराधक दिन में कम से कम तीन बार और प्रत्येक पूजन भक्ति के अंत में पाठ करते हुए भावना करता है कि अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगई गमणं, समाहि मरणं, जिनगुण संपत्ति होउ मज्झं। अर्थात् मेरे द्वारा जो अर्चना, पूजन, वंदन, नमस्कार किया गया उसके फल से मेरे दुख का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि (रत्नत्रय) की प्राप्ति हो, सुगति (मोक्ष) में गमन हो, 'समाधि सहित मरण हो', जिनेन्द्र देव की केवल ज्ञान आदि की संम्पत्ति प्राप्त हो। इस प्रकार समस्त पूजन पाठ, त्याग, तपस्या का लक्ष्य ही समाधि मरण होता है।

जो मोह माया जाल के चक्कर में तड़प–तड़पकर घर में अथवा अस्पताल में मरना अथवा क्रोध कषाय में आकर, कुआँ में डूबकर, जहर खाकर, फाँसी लगाकर, हथियार से गर्दन आदि काटकर मरने की अपेक्षा धार्मिक आस्था पूर्वक व्रत, नियम, संयम लेकर समाधि पूर्वक मरण करना श्रेष्ठ है।

ईसा से 200 वर्ष पूर्व मनुस्मृति की रचना की गई थी। एफ, मेक्समूलर ने अपनी पुस्तक मनु की विधियाँ में उल्लेख किया हैं कि अन्न जल त्याग कर मुक्ति प्राप्त करना श्रावक और मुनियों के जीवन की सबसे बड़ी साधना मानी जाती रही है।

Euthanasia has been legally accepted in the Netherlands since 1983. Under this law, 3000 people apply for death every year. It was also given legal approval in Australia. There are controversies going on in many countries on this matter of euthanasia. Studies of people moving towards euthanasia have shown that most people commit suicide because of depression, not because of physical pain. This depression can be treated. Samadhi is not taken due to depression, it is taken out of self-compassion, Samadhi is not taken in youth or when the body is healthy or due to despair, but when it is impossible to save life, then only by awakening knowledge, discretion, intelligence, faith, devotion, It is taken with the hope of destroying sinful deeds and attaining peace and happiness or salvation in the next life.

Sallekhana – culmination of sadhana

Be it a Shravaka or a Shraman, everyone should wear Sallekhana at the end of their life to realize the truth and make the soul divine. mandatory . Sallekhana is the pinnacle of spiritual practice. Writing is the undertaking of being beyond the body. That is why every Jain worshiper, while reciting at least thrice a day and at the end of every puja, worships with the feeling that Achchemi, Poojemi, Vandami, Namassami, Dukkhakho, Kammakkho, Bohilaho, Sugai Gamanam, Samahi Maranam, Jinguna Sampatti Hou Majjham. . That is, as a result of the worship, salutation and namaskar done by me, my sorrows should be destroyed, my karmas should be destroyed, I should attain Bodhi (Ratnatraya), I should reach Sugati (salvation), I should die with Samadhi. May Increase Jinendra Dev's only the wealth of knowledge etc. In this way, the goal of all worship, renunciation and penance is death in Samadhi.

Instead of dying in agony at home or in the hospital due to the trap of attachment or in anger, by drowning in a well, by consuming poison, by hanging, by cutting the neck with a weapon, etc., instead of dying with religious faith, by observing fasts, rules, restraint, and attaining Samadhi. It is best to die.

Manusmriti was composed 200 years before Christ. F. Max Muller has mentioned in his book Manu's Laws that attaining salvation by renouncing food and water has been considered the greatest practice in the life of devotees and monks.

आत्महत्या नहीं है सल्लेखना मरण

आत्म हत्या जीवन के कर्तव्यों से मुँह मोड़ लेना, जीवन से ऊब जाना, जीवन से पलायन करके अवैध तरीके से मरना आत्म हत्या है। आत्महत्या मानवता के प्रतिकूल है। जिसे दूसरों से तो क्या अपने आप से भी प्रेम नहीं होता है, वहीं आत्महत्या करता है। विपरीत परिस्थितियों से घबराने वाला आत्महत्या का विचार करता है। अमेरिका में हर वर्ष 30 से 40 हजार लोग आत्महत्या करते है। अवसाद, उन्माद, गरीबी, तनाव, व्यसन या डिप्रेशन आत्म हत्या में कारण हैं, जबकि धर्म–धर्मात्मा, आत्मा–परमात्मा के प्रति आस्था प्रेम और समर्पण से ही आत्म हत्या से बचाया जा सकता है। आत्महत्या के विचार तब आते हैं जब तन और मन का दर्द असहनीय हो जाता है। इस दर्द से लड़ने का साहस टूट जाता है। जीने की इच्छा समाप्त हो जाती है या अपने आपको अनावश्यक, यूजलेश, अकेला महसूस करने लगता है। जब आदमी अपने कर्त्तव्य, जिम्मेदारियों से डरकर भागने लगता है, अर्थात् कायर बन जाता है, जब आत्महत्या के विचार आते है।

आंतरिक वेदना से लड़ने की क्षमता समाप्त हो जाने पर आदमी आत्म हत्या करते हैं, जबकि सल्लेखना आंतरिक वेदना से लड़ने की क्षमता प्रकट होने पर करते हैं आत्मा व परमात्मा के प्रति प्रेम होने पर, श्रद्धा, भक्ति विवेक, बुद्धि प्रकट हो जाने पर और संसार के विषय भोगों की लालसा छूट कर वैराग्य हो जाने पर सल्लेखना ली जाती हैं। जबकि आत्महत्या भावुकता प्रकट होने पर की जाती है, सल्लेखना, भगवत्ता की भावना प्रकट होने पर की जाती है।

सल्लेखना मरण है संवैधानिक

सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण अपराध सिद्ध नहीं होता है। अपराध का अर्थ है गलत उद्देश्य से पूर्वापर तैयारी करके हत्या, डकैती आदि अहितकारी कृत्य करना। अर्थात् अपराध के तीन बिन्दु है– (1) गलत आशय से कृत्य (कार्य) करना। (2) अपराध के पूर्व योजना बद्ध तरीके से तैयारी करना। (3) अपराध के कृत्य को प्रेरित करना। यही धारा 306 के अनुच्छेद नं. 21 में की है। उसमें यह भी कहा कि जीवित रहने का अधिकार सबको है। धारा 309 में पीड़ा रहित मृत्यु चिकित्सक द्वारा निर्धारण की जाना अर्थात् अतिपीड़ा होने पर जहर आदि देकर मारना।

Sallekhana Death is Not Suicide

Suicide: Turning away from the duties of life, getting bored with life, running away from life and dying illegally is suicide. Suicide is against humanity. The one who does not love others, not only himself, commits suicide. A person who is afraid of adverse circumstances contemplates suicide. Every year 30 to 40 thousand people commit suicide in America. Depression, mania, poverty, stress, addiction or depression are the reasons for suicide, whereas suicide can be saved only through faith, love and dedication towards religion, religion, soul and God. Thoughts of suicide come when the pain of body and mind becomes unbearable goes. The courage to fight this pain is lost. The desire to live disappears or one starts feeling unnecessary, useless and lonely. When a man starts running away from his duties and responsibilities out of fear, that is, he becomes a coward, when thoughts of suicide arise.

People commit suicide when their ability to fight internal pain is lost, whereas Sallekhana commits suicide when the ability to fight internal pain appears, when love for the soul and God, faith, devotion, discretion and intelligence are manifested and the world Sallekhana is taken when one has given up the desire for pleasures and becomes renunciation. While suicide is done out of sentimentality, Sallekhana is done out of the spirit of godliness.

Sallekhana death is constitutional

Intentional cremation does not prove a crime. Crime means committing harmful acts like murder, robbery etc. with prior preparation for a wrong purpose. That is, there are three points of crime - (1) Doing the act with wrong intention. (2) Making systematic preparations before committing a crime. (3) Inducing the commission of a crime. This is Article No. 306 of Section In article 306 it also said that everyone has the right to survive. Under Section 309, a painless death must be determined by a doctor, that is, killing by giving poison etc. in case of extreme pain.

इन दोनों धाराओं में सिद्धांतानुसार सल्लेखना अपराध सिद्ध नहीं होता क्योंकि सल्लेखना तपस्या है उद्देश्य से आत्म कल्याण होता है आत्म हत्या से नहीं। हत्या के उद्देश्य से कोई साधु तपस्या नहीं करता। यदि तपस्या ही हत्या कहलाने लगे तो संसार के सभी धर्म भी अधर्म की श्रेणी में आकर सभी तपस्वी हत्यारे कहलाने लगेंगे।

सल्लेखना दूसरों से प्रेरित होकर नहीं बल्कि स्व वैराग्य, ज्ञान, विवेक और संयम की भावना से टेन्सन रहित होकर अदृश्य पाप कर्म और बुरी भावना को नाश करने हेतु धारण की जाती है, शरीर का नाश करने के उद्देश्य से नहीं। सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण का उद्देश्य आत्मा के ज्ञान, दर्शन, सुख आदि गुणों को ढ़कने वाले कर्मों का नाश करने और इन्द्रियों को जीतने का किया जाता है। संक्षेप से सल्लेखना मरण और आत्म हत्या में इस प्रकार अंतर समझ सकते है।

सल्लेखना एवं आत्म हत्या में अंतर

सल्लेखना	आत्म हत्या
1. वैराग्य की तीव्रता में देवशास्त्र गुरु को साक्षी पूर्वक	1. कषाय की तीव्रता में अकेले एकान्त में
2. सुरिची पूर्वक	2. कुरूति पूर्वक
3. ज्ञानी बनाकर	3. अज्ञानी रहकर
4. परमात्मा की प्राप्ति के लिए	4. जीवन की समाप्ति के लिए
5. आत्मा की प्रीति पूर्वक	5. जीवन की अप्रीति पूर्वक
6. रीति और नीति से	6. अन्याय और अनीति से
7. परमात्मा की भक्ति में डूबकर	7. विषय कषायों में डूबकर
8. व्रत संयम/नियम की रक्षार्थ	8. असंयम में शरीर के विनाशनार्थ
9. आत्मा में डूबकर	9. जीवन से घुटकर
10. होशो हवास में विवेक पूर्वक	10. बेहोशी में अविवेक पूर्वक
11. बुढ़ापे में मृत्यु निकट आने पर	11. जीवन में कभी भी
12. नैतिक, धार्मिक, समाजिक, चिकित्सा की दृष्टि से उपयुक्त	12. नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, चिकित्सीय दृष्टि से अनुपयुक्त।
13. उज्जवल भविष्य बनाने के लिए	13. भविष्य को बिगाड़ने के लिए

According to the theory in both these sections, sallekhana does not prove to be a crime because sallekhana is a penance, the purpose of which is self-welfare and not suicide. No saint does penance for the purpose of killing. If penance itself starts being called murder, then all the religions of the world will also come under the category of unrighteousness and all the ascetics will start being called murderers.

Sallekhana is worn not by being inspired by others, but by the spirit of self-dispassion, knowledge, prudence and restraint, without tension, to destroy invisible sins and bad feelings, not with the aim of destroying the body. The purpose of dying in Samadhi with proper care is to destroy the deeds which cover the qualities of the soul like knowledge, philosophy, happiness etc. and to conquer the senses. In brief, we can understand the difference between self-inflicted death and suicide.

Difference between Sallekhana and suicide

Sallekhana	Suicide
1. In the intensity of renunciation, with the witness of Devshastra Guru	1. Alone in the intensity of bitterness in solitude
2. Carefully	2. Kuruti Purva
3. By becoming knowledgeable	3. Remaining ignorant
4. To attain God	4. To end life
5. With love for the soul	5. Dislike of life
6. By custom and policy	6. From injustice and unfairness
7. By being immersed in devotion to God	7. By drowning in sensual pleasures
8. For the protection of fasting restraint/rules	8. Incontinence causes destruction of the body.
9. Deep in the soul	9. Suffocated by life
10. Consciously and in senses	10. Indiscriminately in unconsciousness
11. When death approaches in old age	11. Anytime in life
12. Appropriate from moral, religious, social and medical point of view	12. Moral, social, religious, medical Visually inappropriate.
13. To create a bright future	13. To spoil the future

14. आत्मिक निधि के संरक्षण हेतु	14. आत्मिक निधि के विनाश हेतु
15. अनाशक्त भाव से शांतिपूर्वक	15. आशक्त भाव से अशांतिपूर्वक
16. मन वचन काय व भोजन–पान पर नियंत्रण रखकर	16. अनियंत्रित होकर
17. मृत्यु का समय आने पर	17. मृत्यु का समय न होने पर अकाल में
18. क्षमादि धर्म और संवेग भावना में	18. क्रोध आदि आवेग में
19. संतुलित स्वास्थ्य वर्धक आहार लेकर	19. जहर आदि भक्षण करके
20. आलस्य और प्रमाद छोड़कर	20. आलस्य और प्रमाद में
21. अनुच्छेद नं. 21 की धारा 306 अनुसार सल्लेखना संवैधानिक	21. धारा 309 के अनुसार असंवैधानिक
22. आत्मा, परमात्मा और अपने परिजन के सम्मुख।	22. सबसे विमुख होना।
23. समाधि मरण करना विद्वता है।	23. आत्महत्या करना मूर्खता है।
24. सल्लेखना 12 वर्ष तक विधि और उपचार पूर्वक होती है	24. आत्महत्या का क्रम नहीं होता।
25. सांसारिक दुखों से मुक्ति पाने के लिए की जाती है।	25. शारीरिक दर्द से मुक्ति पाने के लिए की जाती है।
26. समता संवेग और वैराग्य पूर्वक होती है।	26. क्रोधावेश में की जाती है।
27. शरीर को पराया मान करके भेद विज्ञान पूर्वक की जाती है।	27. शरीर को अपना मानकर की जाती है।
28. सल्लेखना लेने वाला स्वयं से निजात पाता है और परिवार को सद मार्ग दिखा जाता है।	28. आत्म हत्या करने वाला तो स्वयं से निजात पा जाता है, लेकिन परिवार को फंसा जाता है।
29. सल्लेखना में शरीर और आत्मा में भेद विज्ञान होना सदगुरु और परमात्मा का संयोग मिलना, पाप कर्म से भीति होना और भोगों में विरक्ती कारण है।	29. निराशा, असफलता, डिप्रेशन उदासी, तनाव, शोक, वेदना, सदमा, आर्थिक अभाव, पारिवारिक झगड़े आदि अनेक कारण है।

14. For the protection of spiritual wealth	14. For destruction of spiritual wealth
15. Peacefully with disinterest	15. Restlessly with attachment
16. By controlling your mind, speech, body and food habits	16. Out of control
17. When the time of death comes	17. In famine without time for death
18. Forgiveness in religion and emotion	18. In anger etc. impulse
19. Eating a balanced healthy diet	19. By consuming poison etc.
20. Giving up laziness and carelessness	20. In laziness and carelessness
21. According to section 306 article of 21, writing is constitutional.	21. Unconstitutional according to section 309
22. In front of the soul, God and your family.	22. To be alienated from everyone.
23. To die in Samadhi is scholarship.	23. Committing suicide is foolish.
24. Sallekhana method till 12 years and is curative	24. There is no sequence of suicide.
25. It is done to get relief from worldly sorrows.	25. It is done to get relief from physical pain.
26. Equality is achieved with passion and detachment.	26. It is done in anger.
27. The body is considered alien and discrimination is done scientifically.	27. The body is treated as one's own.
28. The one who takes Sallekhana gets relief from himself and his family is shown the right path.	28. The person who commits suicide gets relief from himself, but the family is implicated.
29. In Sallekhana, the reason for distinguishing between body and soul, meeting the Sadguru and God, being afraid of sinful deeds and detachment from pleasures is the reason.	29. There are many reasons for disappointment, failure, depression, sadness, stress, grief, pain, shock, financial lack, family fights etc.

- जैन धर्म अच्छा जीवन जीने के साथ–साथ मरने की कला भी सिखाता है, जिसका मरण अच्छा होगा उसका अगला जन्म अच्छा होगा, इसीलिए जन्म में नहीं मरण में उज्जवल भविष्य छुपा है।
- जिस प्रकार राष्ट्र की रक्षा, परिवार की रक्षा, समाज और धर्म की रक्षा करते हुए, किसी मिलेट्री के वीर जवान का मर जाना दंडनीय अपराध नहीं बल्कि सराहनीय कार्य है, वीरता का कार्य है, उसी प्रकार अपने व्रत संयम और आत्म गुणों की रक्षा हेतु रीति पूर्वक समाधिमरण कर लेना अपराध नहीं है बल्कि शहीद की तरह वीरता का कार्य होने से वीर मरण है।
- प्रत्येक देश के प्रत्येक नागरिक का अपने देश के अनुसार अपना–अपना मौलिक अधिकार है, प्रत्येक प्राणी को जीने का, धर्म रक्षा करने का, अपना मौलिक अधिकार है। सल्लेखना लेने वाला धर्म रक्षा और आत्म रक्षा और आत्म कल्याण के लिए कार्य करना अपना मौलिक अधिकार है।

सल्लेखना और सती प्रथा में अंतर

सती सावित्री कही जाने वाली नारी जवानी में अक्रम से कभी भी पति की अचानक मौत के बाद पति के मोह, वियोग और भविष्य की चिंता में अचानक आवेग में आकार पति की चिता में कूद कर आत्महत्या करती है, जबकि सल्लेखना समाधि मरण में ऐसा कुछ नहीं होता है बल्कि मोह, वियोग, आवेग आदि से ऊपर उठकर प्रभु और गुरु की शरण लेकर सभी से क्षमा याचना करके विवेक बुद्धि और श्रद्धा भक्ति के क्रम से भोजन कम करते हुए मरण का समय निकट आने पर सल्लेखना ली जाती है अतः सती प्रथा और सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण में जमीन आसमान का अंतर है, स्वर्ग और नरक का अंतर है, रात और दिन का अंतर है।

- Jainism teaches the art of dying along with living a good life, one whose death is good, his next birth will be good, that is why a bright future is hidden in death and not in birth.
- Just as the death of a brave military soldier while protecting the nation, protecting the family, society and religion is not a punishable crime but a commendable act, an act of bravery, in the same way, protecting one's fast, restraint and self-qualities Therefore, ritually committing suicide is not a crime but it is a heroic death due to an act of bravery like that of a martyr.
- Every citizen of every country has his own fundamental right according to his country, every living being has his own fundamental right to live and protect religion. It is one's fundamental right to work for the protection of religion, self-defense and self-welfare.

Difference between Sallekhana and Sati practice

A woman called Sati Savitri commits suicide by jumping into her husband's funeral pyre in a sudden impulse due to her husband's attachment, separation and worry about the future, after the sudden death of her husband due to untimely death in her youth, whereas in Sallekhana Samadhi death there is nothing like this. Rather, by rising above attachment, separation, impulse etc., everyone takes refuge in God and Guru. After apologizing to God, reducing food with prudence, wisdom and devotion, when the time of death approaches, Sallekhana is taken, hence in the practice of Sati and Samadhi death with Sallekhana, there is a difference between the earth and the sky, the difference between heaven and hell and difference like night and day.

सल्लेखना का समय और स्वामी

व्रत नियम, संयम की विराधना होने पर, शरीर अतिवृद्ध हो जाने पर जब मृत्यु अति निकट आ जाती है अथवा कैंसर आदि असाध्य रोग हो जाता है, सिंह, अजगर, साँप आदि के द्वारा पकड़ लिया जाता है और प्राण बचना असंभव हो जाते हैं एवं ऐसा दुर्भिक्ष, महामारी आ जाती है जिसका प्रतिकार असंभव है जब वैद्य, डॉक्टर, राजा आदि भी मौत से बचाने में असमर्थ हो जाते हैं, तब सम्यक रीति से गुरु के उपदेश को पाकर क्रमशः भोजनपान आवश्यकतानुसार देते हुए विषय कषायों और काया को क्रश करने का समय सल्लेखना या संथारा धारण करने का होता है। सल्लेखना श्रावक और श्रमण दोनों धारण कर सकते हैं। पशु–पक्षी भी अणु व्रत लेकर सल्लेखना मरण कर सकते है।

जब डॉक्टर और परिवार के लोग बचाने और सेवा करने से हाथ खड़े कर देते हैं तब संत उसकी सेवा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। आदमी तड़प–तड़प कर मरने के स्थान पर संतों के चरणों में शांतिपूर्वक परमात्मा का ध्यान करते हुए देह का विसर्जन करते हैं ऐसा करना श्रेष्ठ है और यही सल्लेखना का उचित काल है। ऐसी स्थिति में संथारा आत्म हत्या जैसा बुरा कृत्य कैसे हो सकता हैं? जिसे जैन धर्म के सिद्धांतों का ज्ञान नहीं वही सल्खना को आत्म हत्या कह सकते है।

सल्लेखना अहिंसा है हिंसा नहीं

आत्म हत्या हिंसा है। अहिंसा प्रधान जैन धर्म में आत्म हत्या को हिंसा कहा है उसे धर्म नहीं कहा है। समाधि मरण को पूरी जिन्दगी भर के अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह इत्यादि धर्म और त्याग, तपस्या का फल कहा है। जरा सोचो जिंदगी भर अहिंसा और त्याग, तपस्या को करने वाला आत्म हत्या जैसा हिंसक कार्य जीवन के अंत मे कैसे कर सकता है? अतः यदि सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण को आत्म हत्या कहा जाएगा तो परमात्मा पद की प्राप्ति करने वाले अरिहंत परमेष्ठी का भी पंडित–पंडित मरण भी आत्म हत्या कहलाने लगेगा। जिस समाधि मरण मे मोक्ष की प्राप्ति होती है, अरिहंत परमेष्ठी के पद की प्राप्ति होती है वह आत्म हत्या करने वालों की श्रेणी में नहीं आ सकता है।

Time and owner of Sallekhana

When the rules of fasting and restraint are violated, when the body becomes too old, when death comes very near or incurable disease like cancer etc, it is caught by lion, python, snake etc. and it becomes impossible to save life and such a famine and epidemic comes, which is impossible to counter, when even physicians, doctors, kings etc. are unable to save from death, then after following the advice of the Guru in the right way, by giving food and drink as per the need, the aim is to crush the body and the body. It is time to wear Sallekhana or Santhara. Sallekhana can be worn by both Shravaka and Shramana. Animals and birds also observe Anu Vrat Sallekhana and can die.

When doctors and family members give up on saving and serving him, then the saints become ready to serve him. Instead of dying in agony, people immerse their bodies peacefully at the feet of saints while meditating on God. It is best to do so and this is the appropriate time for Sallekhana. In such a situation, how can a bad act like suicide be committed? Only those who do not have knowledge of the principles of Jainism can call the act as suicide.

Sallekhna is Non-violence Not Violence

Suicide is violence. In non-violence based Jainism, suicide is called violence and not religion. Samadhi death is said to be the result of non-violence, truth, non-attachment etc., renunciation and austerity throughout life. Just think, how can someone who has practiced non-violence and sacrifice and penance throughout his life commit a violent act like suicide at the end of his life? Therefore, if untimely death in Samadhi would be called suicide, then the death of Arihant Parmeshthi, who attained the status of Paramatma, would also be considered a Pandit-Pandit death. It will be also called suicide. The person who attains salvation through Samadhi death and attains the status of Arihant Parmeshthi cannot come in the category of those who commit suicide.

सल्लेखना तो वृद्ध, रोगी, मरणासन्न, आस्तिक व्रती व्यक्ति के शरीर, मन वचन और आत्मा का आध्यात्मिक उपचार है। यदि उपचार करना और उपचार करने वाला हिंसा की श्रेणी मे आयेगा तो समस्त वैद्य, डॉक्टर, हिंसक और हत्यारों की श्रेणी में आ जायेगें, जो नितान्त गलत है।

वासना एक भूत है जो एक बार सवार हो जाता है तो फिर उससे पिंड छुड़ाना टेढ़ी खीर हो जाता है। वासना के भूत ने असंख्य लोगों को घायल किया है। अच्छे–अच्छे वीर योद्धाओं को हराया है, निरोगी काया को रोगी बनाया है और जवानी में भी मौत के घाट उतारा है। वासना के भूत को उतारने वाला वीर ही नहीं महावीर होता है, वह हिंसक नहीं अहिंसक होता है। तरुण अवस्था से पीछे पड़ा यह भूत जीवन भर सुख चैन से जीने नहीं देता, भोजन–पानी पचने नहीं देता, परमात्मा का नाम लेने नहीं देता, सद्शास्त्रों को पढ़ने नहीं देता, वृद्धों और साधुओं की सेवा करने नहीं देता, गुरुओं से मिलने नहीं देता, कोई नियम–धर्म पालने नहीं देता। यह वासना का भूत माँ–बाप, भाई–बहन, कुटुंब– कबीला, दुकानदारी आदि से भी नाता छुड़वा देता है इसीलिए यह वासना का भूत, भय के भूत से भी बड़ा होता है। भय का भूत वास्तविक भूत से भी बड़ा होता है। वास्तविक भूत से भी बड़ा यह वासना का जिंदा भूत होता है। सल्लेखना इस भूत को उतारने का कार्य है। इसको सद्गुरु ही ज्ञान और वैराग्य उत्पन्न करा कर करते हैं।

सल्लेखना की विधि

सल्लेखना धारण करने वाले को क्षपक कहते है। क्षपक जब स्वयं अपनी आयु को क्षीण होता हुआ मरण के निकट अनुभव करने लगता है। तब वह योग्य गुरु के पास जाता है। गुरु की विनय, भक्ति करते हुए अपने शरीर की स्थिति को अवगत कराता है और सल्लेखना लेने का निवेदन करता है। सल्लेखना प्रदाता गुरु को निर्यापकाचार्य कहते हैं। अतः निर्यापकाचार्य उस क्षपक की शरीरिक, मानसिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक परीक्षा करते हैं। उस परीक्षा में जब वह सफल हो जाता है तब कहीं उसे सल्लेखना प्रदान की जाती है। सल्लेखना जबरदस्ती या असमय में नहीं की जाती है। यदि आचार्य स्वयं क्षपक बनकर सल्लेखना धारण करना चाहते है तो वे अपने वरिष्ठ योग्य शिष्य को उचित शुभ मुहूर्त में आपना आचार्य पद प्रदान करते हैं। तदुपरांत संघ के समस्त साधुओं को संतुष्ट करके क्षमा याचना करते हैं और परसंघ में जाने को कहते हैं। वे जिस संघ में जाना चाहते हैं उस संघ की पहले से गवेषणा कर लेते हैं। वे सर्वश्रेष्ठ चारित्रवान, अनुभवशील आचार्य के पास जाकर एक मुनि की तरह रहते हैं।

Sallekhana is the spiritual treatment of the body, mind, speech and soul of an old, sick, dying, believer fasting person. If treatment and the person treating it come in the category of violence, then all the physicians, doctors will come in the category of violent people and murderers, which is absolutely wrong.

Lust is a ghost that once it takes over, it becomes difficult to get rid of it. The ghost of lust has injured countless people. Good and brave warriors have been defeated, healthy bodies have been made sick and even young ones have been killed. The one who drives away the ghosts of lust is not only a hero but a Mahavir, he is not violent but non-violent. This ghost, which has been lagging behind since youth, does not allow us to live a happy life, does not allow us to digest food and water, does not allow us to take the name of God, does not allow us to read good scriptures, does not allow us to serve elders and sages, does not allow us to meet gurus., does not allow any rules and religion to be followed. This ghost of lust makes one break ties with parents, brothers-sisters, family, clan, shop etc. That is why this ghost of lust is bigger than the ghost of fear. The ghost of fear is bigger than the real ghost. This living ghost of lust is bigger than the real ghost. Sallekhana is the act of exorcising this ghost. Only Sadguru does this by inculcating knowledge and renunciation.

Method of Writing

The one who wears Sallekhana is called Kshapak. When Kshapak starts feeling his own age diminishing and getting closer to death. Then he goes to a qualified guru. While paying obeisance and devotion to the Guru, he informs about the condition of his body and requests to take Sallekhana. The Guru who provides Sallekhana is called Niryapacharya. Therefore, Niryapakacharya examines that Kshapak physically, mentally, characteristically and spiritually. When he succeeds in that exam Somewhere he is provided with a letter. Writing is not done forcefully or untimely. If the Acharya himself wants to become a Kshapak and take up Sallekhana, then he offers the post of Acharya to his senior qualified disciple at an appropriate auspicious time. Thereafter, after satisfying all the sages of the Sangha, he apologizes and asks to go to Parasangha. They research the organization they want to join in advance. They go to the best character and experienced Acharya and live like a sage.

परसंघ प्रवेश- स्वसंघ को छोड़कर परसंघ में इसलिए प्रवेश करते हैं क्योंकि स्वसंघ में रहने से खेद, कलह, कोप, दुःख, विषाद, स्नेह, मोह एवं करूणा उत्पन्न होने की पूरी संभावना रहती है। जिससे सल्लेखना में अनेक दोष उत्पन्न होने से सल्लेखना बिगड़ सकती है।

क्षमायाचना- क्षपक अपने को गुरु से सल्लेखना की स्वीकृति मिलने के उपरांत समस्त पूर्व परिजनों से एवं गुरु सहित समस्त मुनिगणों के बीच उपस्थित होकर यह निवेदन करता है कि मैं अतिवृद्ध हो गया हूँ। मेरी मृत्यु निकट है, आप सब के साथ दीर्घकाल तक सहवास रहा, अतः अभी तक मेरे द्वारा जाने अनजाने और प्रमाद या कषाय वश मेरे द्वारा कोई भूल–चूक हुई हो आप सभी जनों के प्रति कोई दुर्व्यवहार हुआ हो, ममत्व, स्नेह, राग, द्वेषवश कटु या कठोर शब्द कहे हो तो आप मुझे क्षमा करें। मैं आप सभी से मन, वचन, काय की शुद्धि पूर्वक क्षमा मांगता हूँ। मैं दोष, शल्य और कषाय रहित होकर अपने व्रत, नियम, त्याग की साधना का श्रेष्ठ फल सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण को प्राप्त करना चाहता हूँ।

प्रायश्चित और प्रतिक्रमण- क्षपक सल्लेखना के पूर्व में ही अपने जीवन पर्यन्त हुए पाप कर्म की और धारण किये गये व्रतों में लगे दोषों की आलोचना पूर्वक निंदा गर्हा निर्यापकाचार्य के सम्मुख एक सहज–सरल बालक की तरह करता हैं तदुपरांत उत्तमार्थ अर्थात् जीवन भर में हुए दोषों का प्रतिक्रमण करता है और प्रायश्चित भी लेता है। प्रतिक्रमण और प्रायश्चित से व्रत शुद्ध हो जाते है, मन शल्य रहित हो जाता है और आत्मपरिणाम विशुद्ध हो जाते है।

निर्यापकाचार्य का मार्गदर्शन- निर्यापकाचार्य क्षपक को उपदेश देकर व्रत, नियम, संयम मे उत्साही बनाते हैं। आहार, शरीर और इन्द्रिय विषयों, मानसिक और आध्यात्मिक उपचार करके स्वस्थ बनाते हैं। समस्त राग, द्वेष, मोह इत्यादि विकल्प जालों को हटाना आध्यात्मिक उपचार है। शल्य से रहित करना मानसिक उपचार है और शरीर को आवश्यकतानुसार आचामल, निर्विकृत आहार देकर शरीर को स्वस्थ बनाना शारीरिक उपचार है। संघस्थ साधुगण भी समय–समय पर सेवा सलाह और मार्गदर्शन रूप कार्य करते हैं।

Parsangh entry- Leaving Swasangh and entering Parasangh. Because by living in Swasangha, there is every possibility of regret, discord, anger, sadness, affection, attachment and compassion arising. Due to which many defects may arise in the writing and the writing may get spoiled.

Apology - To get the approval of one's teacher for writing the letter. After this, he appears before all his former family members and among all the sages including the Guru and requests that he has become very old. My death is near, I have been living with all of you for a long time, hence till now, knowingly or unknowingly, due to carelessness or anger, I may have committed some mistake or misbehavior towards all of you, affection, attachment, Please forgive me if I have spoken bitter or harsh words out of malice. I apologize to all of you with purity of mind, speech and body. I wish to attain samadhi death without any defect, pain or astringency, having achieved the best result of my fast, discipline and practice of renunciation.

Atonement and Pratikraman – Before Kshapaka Sallekhana itself Like an innocent child, Garha critically criticizes the sins committed throughout his life and the shortcomings in the vows he has observed, and then does Uttamartha *i.e*. pratikraman throughout his life and also takes atonement. Through pratikraman and atonement, the fast becomes pure, the mind becomes free from pain and the self's results become pure.

Niryapacharya's guidance - Niryapacharya by giving advice to Kshapak makes one enthusiastic in fasting, rules and restraint. Makes healthy by treating diet, body and sense objects, mental and spiritual. Removing all the webs of attachment, hatred, attachment etc. is spiritual treatment. To make the body free from surgery is mental treatment and to make the body healthy by giving it normal, non-disordered food as per requirement is physical treatment. Sanghastha Sadhus also provide service, advice and guidance from time to time.

उचित आहार- क्षपक को कटुक तिक्त, अम्लीय, क्षारीय, मधुर, व्रत आदि से बने पौष्टिक और तामसिक आहार को न देकर हित–मितकारी, सुपाच्य, संयम रक्षक, वात, पित्त, कफ नाशक, उबला हुआ मध्यम रस से युक्त आहार दिया जाता है। ऐसा आहार देने से शरीर विकृति रहित स्वस्थ हो जाता है।

जो क्षपक बारह वर्ष की सल्लेखना धारण करते हैं। उन्हें प्रथम चार वर्ष तक दूध, दही, घी, गुड़, नमक, तेल इन छः रसों का त्याग कराकर उबला हुआ अचाम्लिक आहार दिया जाता है और अनेक प्रकार के कायक्लेश रूप तप करता है। अगले चार वर्ष तक एक दो प्रकार के अनाज फल, सब्जी, रस ग्रहण करता है। अगले दो वर्ष तक अनाज छोड़कर छाछ एवं आचाम्ल ग्रहण करता है। अगले 1 साल 6 माह तक सिर्फ छाछ और जल ग्रहण करता है। तदुपरांत शेष 3 माह तक जल ग्रहण करता है बचे हुए शेष समय में सभी प्रकार के भोजन पानी का त्याग करके निर्जल उपवास सहित निर्जन स्थान में कठोर तप करता है।

समता और ध्यान- संस्तरारुढ़ क्षपक प्रतिक्रमण, प्रायश्चित और क्षमापना से शुद्ध होकर कायोत्सर्ग अर्थात् शरीर के प्रति पूर्णतः मोह, ममत्व भाव छोड़कर अपने आत्म तत्त्व के अभिमुख होता है। संसार में प्रत्येक पदार्थ विनाश शील है, नित्य रहने वाले नहीं है। ऐसी अनित्य अनुप्रेक्षा करता है। आत्मा और परमात्मा के अलावा संसार में कोई स्थाई शरण भूत नहीं है ऐसी अशरण अनुप्रेक्षा करता है, मैं शरीर, मकान आदि सभी पदार्थों से पृथक हूँ ऐसी अन्यत्व भावना करता है, यह शरीर हाड़ माँस आदि सप्त धातु एवं मल–मूत्र आदि का पिटारा है, यह कभी शुद्ध नहीं हो सकता। सिर्फ एक आत्मा ही है जो शुद्ध पवित्र है ऐसी अशुचित्वानुप्रेक्षा करता है। अनादि काल से पाप क्रिया के कारण से मैने पाप कर्मों का आश्रव किया है जो मुझे अनादिकाल से दुःख दे रहे है इसलिए मुझे इन कर्मों के आश्रव को रोकना है, उसका उपाय सिर्फ योग, ध्यान, तप, त्याग है ऐसी आश्रव अनुप्रेक्षा करता है। संसार में धर्म ही सुख दे सकता है ऐसी धर्मानुप्रेक्षा करता है।

Proper Diet- Bitter, Acidic, Alkaline, Sweet, Fasting

Instead of giving nutritious and tamasic diet made from acidic, tasty and healthy foods etc., A diet containing beneficial, digestible, restraining, vata, pitta, phlegm destroyer and boiled medium juice is given. By giving such diet the body becomes healthy without any deformity.

Those who wear Sallekhana for twelve years. For the first four years, they are made to give up the six essences of milk, curd, ghee, jaggery, salt and oil and are given boiled non-acidic food and undergo many types of penances in the form of Kaiklesh. For the next four years, one or two types of grains, fruits, vegetables and juices are consumed. For the next two years, he gives up grains and consumes buttermilk and achamel. For the next 1 year and 6 months, he consumes only buttermilk and water. After that, he consumes water for the remaining 3 months and in the remaining time, he gives up all types of food and water and performs rigorous penance in a deserted place including fasting without water.

Equanimity and meditation – Shastrarudh Kshapaka Pratikraman, Atonement and After being purified by forgiveness, one attains Kayotsarga *i.e*. completely leaves attachment towards the body and turns towards one's soul. Every thing in the world is perishable and does not last forever. Such is the eternal expectation. Apart from the soul and God, there is no permanent refuge in the world. He feels such as Asharan Anupreksha, I am separate from all things like body, house etc. He feels such otherness, this body is a box of flesh, bones etc., seven metals and excreta, urine etc. , it can never be pure.There is only one soul which is pure and pure and has such impure thoughts. Since time immemorial, due to sinful actions, I have indulged in sinful deeds which are giving me sorrow since time immemorial, hence I have to stop the indulgence of these deeds, the solution for that is only yoga, meditation, penance, renunciation, such ashrava Anupreksha suggests. Religion believes that only religion can give happiness in this world.

संवेग एवं वैराग्य पूर्वक तप से कर्म की निर्जरा अनुप्रेक्षा करता है। मुझे अनंतकाल से भटकते–भटकते यह सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, व्रत, नियम संयम, विवेक और बुद्धि बड़ी दुर्लभता से मिली है ऐसी बोधि दुर्लभ अनुप्रेक्षा करता है। इसी प्रकार लोक अनुप्रेक्षा और संवर अनुप्रेक्षा करता है। इन बारह अनुप्रेक्षा का चिंतन करते हुए वह क्षपक अपने मन को एकाग्रचित्त करते हुए धर्म ध्यान करता है और समता भाव लाता है। अनुप्रेक्षा को भावना भी कहते है। भावना भव नाशनी होती है अर्थात् संसार के दुःख को नाश करने वाली होती है। यह भावना और विधि क्षपक को निर्यापकाचार्य बतलाते हैं।

वह क्षपक वसतिका, संस्तर, बंधु वर्ग और समस्त साधर्मी आदि से भी विरक्ति का भाव लाता है। इष्ट, अनिष्ट, शत्रु–मित्र, सुख–दुख में समता भाव लाता है। एक वीर योद्धा पुरुष की तरह अपने अंदर बैठे हुए पाप कर्म रूपी शत्रुओं से लड़ता है। ज्ञान, ध्यान, संयम, तप और त्याग रूपी शस्त्रों से उन कर्म रूपी शत्रुओं को परास्त करता है। यही सल्लेखना का मुख्य उद्देश्य हुआ करता है। काम चेष्टा, क्लेशकारी, बुद्धकारी, सर्वभक्षी और सम्मोहनी इन पांच कलुशित भावनाओं से ऊपर उठकर अनशन आदि त्याग रूप तप भावना, जीव और मोक्ष आदि ज्ञान प्राप्ति की श्रुत भावना, सब जीवों के प्रति प्रेम और कल्याण रूप सत्त्वभावना, मैं एक अकेला जन्मा हूँ, अकेला ही अपने किये हुए कर्मों का फल भोगूगाँ ऐसी एकत्व भावना और सुख–दुख में साम्य भाव, समताभाव रहने रूप संतोष रुप पाँच भावना को निरंतर भाता है।

मुनि दीक्षा का उद्देश्य

मुनि दीक्षा का उद्देश्य सल्लेखना और मोक्ष प्राप्ति का होता है। जैसे राजपुत्र (राजकुमार) शस्त्र विद्या का नित्य अभ्यास करता है अथवा एक सैनिक कई दिनों तक शत्रुओं से लड़ने रूप युद्ध का प्रशिक्षण लेता है तब वह युद्ध का प्रसंग आने पर शत्रुओं को परास्त कर विजयी होता है। वैसे ही एक दिगम्बर मुनि (साधक) जिंदगी भर तप, त्याग, व्रत, उपचार, नियम, संयम का नित्य अभ्यास करता है। इसी से वह जितेन्द्रीय होता हुआ मरण का अवसर आने पर सल्लेखना धारण करने में समर्थ होता है और कर्म रूपी शत्रुओं को भूख प्यास आदि वेदना को जीतकर मोक्षमार्ग में विजयी होता हुआ पंडित–पंडित मरण करके मोक्ष को प्राप्त करता है। अतः मुनि बनकर जिंदगी भर की साधना का फल सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण और पंडित–पंडित मरण अर्थात् मोक्ष होता है।

The Nirjara Anuprekha of Karma is performed with penance with passion and dispassion. While wandering since eternity, I have very rarely got this Samyagdarshan, knowledge, character, fast, rules, restraint, prudence and wisdom, such a bodhi is rare. Similarly, the public does Anupeksha and the vow does Anupreksha. While thinking about these twelve Anupreksha, he concentrates his mind for a moment and meditates on Dharma and brings a feeling of equanimity. Anupreksha is also called emotion. Emotions are perishable, that is, they destroy the sorrows of the world. This feeling and method describes Kshapaka as Niryapacharya.

That moment also brings a feeling of detachment from Vasatika, class, brother class and all religious people etc. Brings equanimity between good, bad, enemy-friend, happiness and sorrow. Like a brave warrior, he fights against the enemies of sin and karma sitting within him. Defeats those enemies of karma with the weapons of knowledge, meditation, restraint, penance and renunciation. This is the main purpose of writing. Rising above these five tainted emotions of sexual desire, suffering, Buddha-carrying, omnivorousness and hypnotism, feeling of penance in the form of fasting, renunciation, listening feeling of attaining knowledge of life and salvation etc., feeling of sattva in the form of love and welfare towards all living beings, I am born alone. , I alone will reap the fruits of my actions, such a feeling of unity and the feeling of equanimity in happiness and sorrow, and being content in the form of satisfaction, are constantly pleasing to the five senses.

Purpose of Muni Diksha

The purpose of Muni Diksha is to attain Sallekhana and salvation. For example, a royal son (prince) regularly practices the art of weaponry or a soldier takes training for many days in the form of fighting with enemies, then when the situation of war arises, he becomes victorious by defeating the enemies. By the way Only a Digambara monk (seeker) daily practices penance, renunciation, fasting, treatment, rules and restraint throughout his life. Due to this, he becomes Jitendriya and is able to wear Sallekhana when the occasion of death comes and by conquering the enemies in the form of karma, hunger, thirst etc., he becomes victorious in the path of salvation - the Pandit attains salvation after death. Therefore, the result of a lifetime's spiritual practice by becoming a sage is a well-earned death in Samadhi and the death of a Pandit (Pandit) means salvation.

सल्लेखना का फल- सल्लेखना, संथारा या सन्यास मरण धारण करने का फल मोक्ष की प्राप्ति है। जिसे मोक्ष नहीं होता उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। यदि स्वर्ग की प्राप्ति होती है तो अगले भव से पुनः मनुष्य जीवन की प्राप्ति होती है और मनुष्य भव में पुनः सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र रूप रत्नत्रय, सत्य अहिंसा आदि पांच महाव्रत को धारण कर मुनि बनता है फिर उसे मोक्ष फल की प्राप्ति होती है। मोक्ष प्राप्त होने पर शरीर कपूर की तरह उड़ जाता है जीव आत्मा पंचभूत से बने इस हाड़ मांस के शरीर से रहित ज्ञान शरीरी हो जाती है। फिर वह मुक्त आत्मा अनंतकाल के लिए चेतन आत्मा के अनंत सुख काअनंत काल तक भोग करती है और वह संसार में पुनः कभी लौटकर दुःख भोगने के लिए नहीं आती है।

निर्यापकाचार्य के कर्तव्य और संख्या- निर्यापकाचार्य एक कुशल डॉक्टर की तरह होता है। वह समय–समय पर क्षपक का शारीरिक, मानसिक, वाचनिक स्थिति का परीक्षण करते हुए उपदेश, सेवा और उचित आहार रूपी औषधि देता रहता है। एक निर्यापकाचार्य एक क्षपक को ही संथारा ग्रहण कराता है। एक निर्यापकाचार्य के साथ न्यूनतम चार परिचारक मुनि उस क्षपक की सेवा में डॉक्टर और कम्पाउंडर की तरह होते हैं। अधिकतम 48 परिचारक मुनि उस सल्लेखना क्षपक की सेवा में होते हैं।

जिसका कार्य इस प्रकार होता है– 1. चार परिचारक मुनि उस क्षपक के हाथ–पैर दबाने का सहारा देकर उठाने–बैठाने का और करवट आदि दिलाने का कार्य करते हैं। 2. चार परिचारक मुनि समय–समय पर मानसिक विकल्प जालों को दूर करने और आत्म ध्यान में लीन रखने धर्मोपदेश देते है। 3. आठ परिचारक मुनि उस क्षपक के आहार औषधी आदि की व्यवस्था करते हैं। 4. चार परिचारक मुनि उस क्षपक के आहार के समय सहारा देते हैं, हाथ–पैर आदि दबाते हैं, चारों ओर के वातावरण को शांत और शुद्ध रखकर आहार कराते हैं। 5. चार परिचारक मुनि उस क्षपक के मल–मूत्र आदि को साफ करते हैं। वसतिका, संस्तर और उपकरण का शोधन करके व्यवस्थित करते हैं। 6. चार परिचारक मुनि क्षपक की वसतिका के बाहर द्वारपाल का कार्य करते हैं। जिससे असंयमी रोगी अशांत व्यक्ति प्रवेश न कर सके। 7. चार परिचारक मुनि उस क्षपक के दर्शनार्थ आये हुए धार्मिक जनों को उपदेश मंडप में धर्मोपदेश देने का कार्य करते हैं।

Result of Sallekhana - The result of adopting Sallekhana, Santhara or Sanyas Marana is the attainment of salvation. One who does not attain salvation attains heaven. If heaven is attained, then in the next life one attains human life again and in the next human life, one becomes a sage by observing the five Mahavratas like Samyagdarshan - Knowledge - Character, Ratnatray, Satya, Ahimsa etc. and then he attains the fruit of salvation. On attaining salvation, the body evaporates like camphor, the living soul becomes the body of knowledge devoid of this flesh and blood body made of five elements. Then that liberated soul enjoys the infinite happiness of the conscious soul for eternity and it never comes back to this world to suffer sorrow.

Duties and numbers of Niryapacharya- Niryapacharya is like a skilled doctor. From time to time, he examines the physical, mental and verbal condition of the person and gives advice, service and medicine in the form of proper diet. A Niryapacharya makes one attain Santhara only for a Kshapak. A Niryapacharya along with a minimum of four attendant monks are in the service of that Kshapaka, like doctors and compounders. A maximum of 48 attendant monks are in the service of that Sallekhana Kshapak.

Whose work is as follows - 1. Four attendant monks do the work of pressing the hands and legs of that person, making him sit, lift him up, turn him on his side etc. 2. The four attendant sages give sermons from time to time to remove the traps of mental choice and to remain absorbed in self-meditation. 3. Eight attendant sages arrange for the food, medicine etc. of that Kshapaka. 4. The four attendant sages provide support at the time of feeding, press their hands, legs etc., feed them by keeping the surrounding environment calm and pure. 5. Four attendant sages clean the feces, urine etc. of that Kshapak. Vasatika, bed and equipment are cleaned and arranged. 6. Four attendants act as gatekeepers outside the Vasatika of sage Kshapaka. So that an incontinent patient or a disturbed person cannot enter. 7. Four attendant monks work in the preaching pavilion to give sermons to the religious people who have come to see that Kshapak.

8. चार परिचारक मुनि उस क्षपक के पास रात्रि में जागरण करते हुए ड्यूटी देते हैं। 9. चार परिचारक मुनि नगर, देश और वसतिका के चारों ओर के माहौल का एवं शुभ–अशुभ होने वाले क्रिया कलापों की स्थिति का निरीक्षण करते रहते हैं। 10. चार वादी मुनि अर्थात संघ के अन्य मुनियों के पठन–पाठन में निपुण होने से स्वाध्याय, प्रतिक्रमण आदि आवश्यक कार्य कराते रहते हैं। 11. चार परिचारक मुनि चारों ओर सुरक्षा गार्ड की तरह उस परिसर का निरीक्षण करते हुए भ्रमण करते रहते हैं।

इतनी सुंदर सुव्यवस्थित, आत्महितकारी सल्लेखना को आत्म हत्या कहने वाले से बड़ा मूर्ख इस दुनिया में कोई नहीं हो सकता है।

अयोग्य निर्यापकाचार्य से हानि

सल्लेखना तो जिंदगी भर की गई साधना की परीक्षा है। उस परीक्षा को लेने वाला और उसका पेपर तैयार करने वाला परीक्षक अर्थात् निर्यापकाचार्य भी योग्य होना चाहिए। यदि अयोग्य निर्यापकाचार्य होगा तो अनेक हाँनियाँ होगी। जिस आचार्य ने कभी सल्लेखना न कराई हो, न कराते हुए किसी निर्यापकाचार्य को देखा हो, और न अनुभवशील आचार्य से मार्गदर्शन लिया हो ऐसा निर्यापकाचार्य को अयोग्य कहा गया है। क्योंकि उसे यह अनुभव नहीं होता है कि वह क्षपक सल्लेखना योग्य है या नहीं? अभी इसकी आयु शेष है या नहीं? उसकी परीक्षा किस प्रकार दी जाए? इस अनुभवहीनता के कारण समय के पूर्व यदि सल्लेखना संथारा पर आरूढ़ कर देता है और उस क्षपक को आहार त्यागने के बाद भूख, प्यास सताने लगती है ऐसी स्थिति में उसे आहार दिया जाता है तो क्षपक का व्रत भंग होता है और यदि आहार नहीं दिया जाता तो अकाल मौत हो जाती है। जिससे आत्म हत्या का दोष आता है। उसे देखकर लोगों को लगता है कि सल्लेखना में व्यक्ति को भूखा–प्यासा रखकर उसकी आत्म हत्या कराई जाती है। यह सामाजिक, धार्मिक और राजकीय बहुत बड़ी हानि अनुभवहीन निर्यापकाचार्य के माध्यम से होती है। अतः ऐसा आचार्य प्रायश्चित के योग्य होता है उसे भी दण्डित किया जाता है।

8. Four attendant sages perform duty near that Kshapaka by keeping vigil at night. 9. The four attendant sages keep observing the situation of the city, the country and the environment around Vasatika and the auspicious and inauspicious activities. 10. Due to being adept in the studies of Char Vadi Muni *i.e*. other sages of the Sangha, they get the necessary work done like Swadhyaya, Pratikraman etc. 11. Four attendant sages keep roaming around the premises like security guards.

There can be no one in this world more foolish than the one who calls such a beautifully organized, self-serving ritual a suicide.

Loss due to incompetent executor

Writing is a test of the spiritual practice done throughout life. The examiner *i.e*. Niryapkacharya who takes that examination and prepares its paper should also be qualified. If there is an unqualified director, there will be many losses. An Acharya who has never got a Sallekhana done, nor has seen any Niryapacharya doing it, nor has taken guidance from an experienced Acharya, such a Niryapacharya is said to be ineligible. Because he does not feel whether that moment is worth writing about or not? Does it still have enough life left or not? How should he be tested? Due to this inexperience, if the Sallekhana fasts before the time and that Kshapak starts feeling hungry and thirsty after giving up food, in such a situation if he is given food then the Kshapak's fast is broken and if food is not given. Then untimely death occurs. Due to which the blame of suicide arises. people seeing him seems that in Sallekhana, a person is made to commit suicide by keeping him hungry and thirsty. This huge social, religious and political loss is caused through inexperienced Niryapacharya. Therefore, such a teacher who is worthy of atonement is also punished.

यदि निर्यापकाचार्य स्वयं चारित्रहीन होता है तो वह क्षपक को वसतिका, संस्तर, भक्तपान इत्यादि सदोष देता है। वह निर्यापकाचार्य क्षपक को ज्ञान, वैराग्य में दृढ़ नहीं रख पाता है। वह क्षपक को रत्नत्रय के योग्य उपदेश भी नहीं दे पाता है। जिससे क्षपक बाहरी सल्लेखना भले ही धारणकर लेता है लेकिन अंतरंग से उसकी सल्लेखना बिगड़ जाती है वह भेद विज्ञान, वैराग्य और संयम से रहित हो जाता है। जिस प्रकार बास के समूह में एक छोटे से बांस के समूह को उखाड़ना बहुत कठिन होता है। उसी प्रकार भ्रष्ट निर्यापकाचार्य की क्षपक के मन में स्थित विषय कषायों को निकालकर संयम में स्थापित करना बहुत कठिन होता है। ऐसी स्थिति में उस क्षपक की सल्लेखना बिगड़ जाती है। समाज में बदनामी और अन्य लोगों को सल्लेखना की आस्था में कमी आ जाती है। कभी–कभी चारित्रहीन, ख्याति पूजा, लाभ में पड़ा निर्यापकाचार्य अयोग्य निर्यापकाचार्य के समान अयोग्य क्षपक को संथारा दिला देता है। ऐसा निर्यापकाचार्य भी प्रायश्चित आदि दण्ड का अधिकारी है। ऐसे निर्यापकाचार्य के सानिध्य और मार्गदर्शन में सल्लेखना से हानियाँ–हानियाँ ही है। इन हानियों से एक कुशल अनुभवशील, चारित्रवान, निर्यापकाचार्य ही बचा सकता है।

कुछ श्रावक मरणासन्न व्यक्ति की अथवा किसी आस्थावान भावुक व्यक्ति की सल्लेखना अपने घर में ही कराने लगते हैं। उन्हें यह अनुभव नहीं होता कि अभी इसकी भूख–प्यास समाप्त हुई है या नहीं। यदि भूख–प्यास लगती है और वह आहार–पानी माँगता है फिर भी नहीं दिया जाता है तो देखने वालों को यही लगता है कि सल्लेखना में भूखा–प्यासा रखकर मारा जाता है इसलिए यह आत्म हत्या है। देखने वाले उन लोगों की इस धारणा को बदलना बहुत कठिन होता है। वे कभी–कभी विरोध करने लगते है। उनका विरोध करना उचित नहीं है लेकिन उन विरोध करने वालों को समझाना चाहिए कि यह अनुभवहीन है। इसलिए इसने यह कार्य किया है। सल्लेखना में इस प्रकार का कोई कार्य नहीं किया जाता इसकी विधि जैन शास्त्रों में भगवान के द्वारा बतलाई गई है।

If Niryapakacharya himself is characterless then he blames Kshapak for Vasatika, Sanstar, devotion etc. That Niryapacharya is not able to keep Kshapak firm in knowledge and renunciation. He is not even able to give advice worthy of Ratnatraya to Kshapaka. Due to this, even if a person adopts external discipline, his internal discipline gets spoiled and he becomes devoid of discrimination, dispassion and restraint. Just as it is very difficult to uproot a small group of bamboo from a group of bass. In the same way, it is very difficult to remove the sensual pleasures present in the mind of a corrupt Niryapacharya and bring them under control. In such a situation, the soundness of that sensor gets spoiled. There is defamation in the society and loss of faith in others. Sometimes a characterless Niryapacharya, worshiping fame and profit, makes an unworthy Kshapak, like an incompetent Niryapacharya, get punished. Such Niryapacharya is also entitled to punishment like atonement etc. Writing under the guidance and guidance of such a Niryapacharya will only lead to losses. Only a skilled, experienced, characterful, Niryapacharya can save us from these losses.

Some devotees start performing the funeral rites of a dying person or a devout emotional person in their own home. They do not feel whether their hunger and thirst have ended yet or not. If one feels hungry and thirsty and asks for food and water but is not given to him/her, then the onlookers think that the person is killed by being kept hungry and thirsty in Sallekhana, hence it is suicide. It is very difficult to change this perception of those watching. Sometimes they start protesting. It is not right to oppose them but those opposing should be explained that this is naive. That's why he has done this. No such work is done in Sallekhana, its method has been explained by God in Jain scriptures.

सल्लेखना के बाद लिया आहार

यदि कोई ग्रहस्थ या साधु रोग से पीड़ित होने पर यह आभास करने लगता है कि मेरी मृत्यु निकट है। इसलिए सल्लेखना धारण कर लेना चाहिए। ऐसा क्षपक यदि निर्यापकाचार्यों के पास जाता है और सल्लेखना धारण करने की प्रार्थना करता है। निर्यापकाचार्य को लगता है कि इसे सल्लेखना धारण करने की स्वीकृति दे देनी चाहिए और सल्लेखना के लिए संस्तर पर आरुढ़ कर देते हैं। फिर यदि कुछ दिन बाद स्वास्थ्य ठीक हो जाता है और भूख–प्यास सताने के कारण वह क्षपक आहार–पानी मांगता है तो उसे समझाना चाहिए कि तुमने अन्न–जल का त्याग कर दिया है। अब तेरी उम्र बहुत कम बची है तुम अपने नियम को मत तोड़ो यदि तोड़ते हो तो तुम्हारी दुर्गति होगी ऐसा उपदेश सुनाने पर भी उसे भूख–प्यास सताती है, बार–बार आहार मांगता है, कषाय करता है और निर्यापकाचार्य को लगता है कि इस क्षपक की आयु बहुत शेष है तो उस क्षपक को उचित प्रायश्चित्त देकर, संघ से पृथक कर देना चाहिए और यथा योग्य आहार की स्वीकृति प्रदान करना चाहिए। क्योंकि ऐसा एक उदाहरण भद्रबाहु स्वामी के एक शिष्य लोहाचार्य के सल्लेखना के प्रसंग में मिलता है।

जब अस्वस्थता के कारण लोहाचार्य महाराज ने अपनी मृत्यु को निकट जानकर आचार्य पद आदि का परित्याग करके सल्लेखना विधि से संघ के सामने सल्लेखना धारण कर ली। पांच छः दिन के उपवास होने पर उनका स्वास्थ्य ठीक हो गया और भूख–प्यास सताने लगी। उन्हें लगने लगा कि अभी मेरी मृत्यु दूर है अभी मैं कुछ दिन और जीवित रहूंगा। यदि भूख–प्यास की वेदना में आर्त रौद्र ध्यान के साथ मेरा मरण होगा तो समाधि बिगड़ने के साथ मेरी दुर्गति हो जायेगी। अतः उन्होंने संघ के सामने आहार करने की बात रखी। अनेक अनुभवी आचार्यों ने यह निर्णय लिया कि इस क्षपक को प्रायश्चित्त देकर आहार करने की स्वीकृति प्रदान कर देनी चाहिए। उन्हें प्रायश्चित्त इस प्रकार दिया गया कि जो पहले से सम्यग्दृष्टि जैन आस्थावान श्रावक है वे उन्हें आहार नहीं देगे और उस गाँव में भी कोई आहार नहीं देगा जहाँ कोई एक भी जैन अनुयायी श्रावक है। अर्थात् जो जैन धर्मानुयायी नहीं है और जहाँ कोई जैन धर्मानुयायी नहीं है यदि कोई जैनेतर परिवार जैन धर्म स्वीकार करके इस क्षपक को जैन विधि से आहार देता है तो ये मुनिराज आहार ग्रहण कर सकते हैं।

Diet Taken After Sallekhana

If a householder or a saint starts feeling that his death is near when he is suffering from a disease. Therefore, Sallekhana should be worn. If such a person goes to Niryapakacharyas and requests to wear Sallekhana. Niryapacharya feels that he should be allowed to wear Sallekhana and puts him on the bed for Sallekhana. Then, if after a few days his health gets better and due to hunger and thirst he asks for food and water, then you should explain to him that you have given up food and water. Now you have very little life left, do not break your rule, if you break it, you will be in trouble. Even after giving such advice, he is tormented by hunger and thirst, asks for food again and again, feels astringent and Niryapacharya feels that in this moment If a person has a lot of life left then that person should be given proper atonement and should be separated from the Sangha and should be allowed proper food. Because one such example is found in the context of Sallekhana of Lohacharya, a disciple of Bhadrabahu Swami.

When, due to ill health, Lohacharya Maharaj, knowing that his death was near, gave up the post of Acharya etc. and assumed the name of Sallekhana in front of the Sangh with the Sallekhana method. After fasting for five-six days, his health improved and he stopped being tormented by hunger and thirst. They started feeling that my death is far away and he will live for a few more days. He felt if he die in the pain of hunger and thirst while meditating intensely, then samadhi will be disturbed and he will be in misery. Therefore, he put forth the matter of diet in front of the Sangh. Many experienced Acharyas decided that this person should be given atonement and allowed to eat food. They were given atonement in such a way that those who were already Samyagdrishti Jain devotees would not give them food and no one would give them food even in the village where there was not even a single Jain follower. That is, who is not a follower of Jain religion and where there is no follower of Jain religion, if a non-Jain family accepts Jainism and this person adopts Jain law. If the person gives food then this Muniraj can take food.

इस प्रायश्चित्त को लोहाचार्य ने स्वीकार किया, वहाँ से 80 किलोमीटर दूर अग्रोहा ग्राम के जंगल में बने एक छोटे से गाँव में कोई जैनी नहीं था। वहाँ उन्होंने उस गाँव के लोगों को जैन धर्मावलंबी बनाकर उनसे आहार ग्रहण किया। शेष बचे जीवन में उन्होंने एक लाख 40 हजार जैन धर्मावलंबी बनाये। तदुपरांत सल्लेखना धारण की। इस प्रसंग से भी सिद्ध होता है कि क्षपक को भूखा–प्यासा नहीं मारा जाता अतः यह सल्लेखना मरण आत्म हत्या नहीं है।

समाधि मरण एक विज्ञान

जन्म के समय जीव अबोध विवेकहीन अज्ञानी होता है। फिर माता–पिता, गुरु आदि से घर में और फिर गुरुकुल आदि में बोध प्राप्त करता है। मृत्यु के समय ज्ञानी, विवेकी रह सकता है। वही विवेक ज्ञान ही सच्चे सुख की ओर ले जाता है। अतः अंत में आत्मा एवं परमात्मा के ध्यान में लीन होकर समस्त परिग्रह, बाह्य आवरण से रहित किया जाता है। इस कारण भारतीय संस्कृति में मरण समय पूर्णता वस्त्र, मकान, धनादि परिग्रह का त्याग कर दिया जाता है और जैसा जन्म लिया था वैसा सहज सरल परिग्रह रहित कर दिया जाता है फिर माँ के संबोधन की भांति उसे गुरु द्वारा संबोधित किया जाता है यही तो सल्लेखना संथारा है। कुल मिलाकर निष्कर्ष यही निकलता है कि मारने और मरने के अभिप्राय से कृत्य करना हत्या या हिंसा रूप अपराध है इसलिए स्वेच्छा मरण अपराध है, हत्या है लेकिन सल्लेखना में मरने या मारने का अभिप्राय नहीं होता अतः सल्लेखना हत्या रूप अपराध नहीं है। मोक्ष की साधना करने वालों को सल्लेखना लेने का मौलिक अधिकार है।

समाधि मरण के समय कैसे लेटें

प्रत्येक आदमी को दक्षिण दिशा में सिर और उत्तर दिशा में पैर करके सोना चाहिए, परन्तु मरणावस्था देखकर सिर उत्तर दिशा में और पैर दक्षिण दिशा में करना चाहिए क्योंकि प्राणी उर्ध्वगामी हो और प्राणों का निकलना ब्रह्म रंध रूपी द्वार से हो। इसके लिए वैज्ञानिक मान्यता यही है कि दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर निरंतर बहने वाला चुम्बकीय विद्युत प्रवाह निरंतर दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर होता है। चुंबकीय प्रवाह की भांति मनुष्य के शरीर में भी धारा प्रवाहमान रहती है। अतः ब्रह्म रंध से प्राणों का निकलना हो इस कारण उत्तर की तरफ सिर करके लिटा देते है।

This atonement was accepted by Lohacharya, there was no Jaini in a small village situated in the forest of Agroha village, 80 kilometers away from there. There he converted the people of that village into followers of Jain religion and took food from them. In the remaining life, he converted one lakh 40 thousand followers of Jain religion. After that, he wore Sallekhana. This incident also proves that Kshapak is not killed due to hunger and thirst, hence this sallekhana death is not suicide.

Samadhi death is a science

At the time of birth, the living being is innocent and ignorant. Then one attains enlightenment from parents, teachers etc. at home and then in Gurukul etc. A wise person can remain wise at the time of death. Only wisdom and knowledge leads to true happiness. Therefore, in the end, by getting absorbed in the meditation of the soul and God, one is freed from all attachments and external coverings. For this reason, in Indian culture, at the time of death, one completely gives up all the attachments like clothes, house, wealth etc. and one is made free from all the simple attachments as one was born and then one is addressed by the Guru like one addresses the mother, this is Sallekhana. It is Santhara. Overall, the conclusion is that killing and committing an act with the intention of causing death is a crime in the form of murder or violence, hence voluntary death is a crime, it is murder, but in doing so, there is no intention to kill or kill, hence doing so voluntarily is not a crime in the form of murder. Those who pursue salvation have the fundamental right to take Sallekhana.

Samadhi how to lie down at the time of death

Every person should sleep with his head in the south direction and feet in the north direction, but after seeing the death stage, he should turn his head in the north direction and feet in the south direction because the living being is upward moving and the exit of the soul should be through the door in the form of Brahma Randha. The scientific belief for this is that the magnetic electric current flowing continuously from south to north direction is continuously moving from south to north. Human beings behave like magnetic flux The current keeps flowing in the body also. Therefore, in order for the life to come out from Brahmarandha, one is made to lie down with the head towards the north.

कपाल क्रिया क्यों- अर्थी के डंडे से ज्येष्ठ पुत्र के द्वारा जलते शव के सिर में 3 चार स्पर्श करने को कपाल क्रिया कहते है। इसका कारण यह है कि पुत्र संकल्प लेता है कि हे पिता में आपके जीवन के कार्य कलापों की क्रिया की कमी को पूरा करूँगा।

मृत्यु के शुभ दिन- उत्तरायण के 6 मास में शुक्ल पक्ष में मरने वाला का ब्रह्म लोक में जन्म होता है (भगवत् गीता अं. 9/24)

अशुभ दिन- धूम्र रात्रि, कृष्णपक्ष और दक्षिणायन के 6 मास में मरने वाले तिर्यक लोग या भवत्रिक में जन्म लेते है (भगवत् गीता 9/25)

शव यात्रा में सावधानियाँ

- **सल्लेखना**- भूत यानि जीव, प्रेत यानि शरीर होता है। भूत (जीव) निकल जाने पर प्रेत (मुर्दा) रह जाता है। उस प्रेत को नहला धुलाकर नये वस्त्र आदि से विभूषित करके इसे इस ढ़ंग से लिटा कर बांधना चाहिए कि हिल न सके।
- मुर्दे (प्रेत) के मस्तक को गाँव की ओर एवं पैर मरघट की ओर करके ले जाना चाहिए।
- व्रती संयमी के शव को मंत्रित (होम) की हुई अग्नि से दाह संस्कार करना चाहिये। मंत्रित अग्नि का अर्थ एक कुंड मे समिधा अग्नि जलाकर– नँ, ह्मँ, ह्रीं ह्रूँ ह्मैं ह्रः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहाः एवं ऊँ ह्री रं रं स्वाहा। इन मंत्र को 108 बार पढ़कर चंदन कपूर आदि का होम करके हवन करना चाहिए फिर उस अग्नि से संयमी जन के मृत शरीर को जलाना चाहिये।
- शव यात्रा में जाते समय यदि दूरी ज्यादा हो और प्रेत को रास्ते में रखना पड़े तो उसके कुटुम्बी जन पुत्र या अन्य उसके मुख को खोलकर जल सिंचन करें, जिससे शव का पुनः परीक्षण हो जाएगा। ऐसा करने से उपरान्त पुनः मुख ढक दें। यदि रास्ता कम है और श्मशान घाट तक शव पहुँच जाये तो चिता पर रखने के पूर्व मुख पर पानी या सिंचन करके प्राणों का परीक्षण करना चाहिये।
- घृत, दूध, अक्षत आदि मस्तिष्क पर डालना चाहिए। अग्नि प्रज्वलित करने के पूर्व 3 प्रदक्षिणा देना चाहिए।

Why Kapal Kriya - Touching the head of a burning dead body by the eldest son three to four times with the pole of the bier is called Kapal Kriya. The reason for this is that the son takes a pledge that O father, I will fulfill the lack of activity in your life.

Auspicious days of death - The one who dies in Shukla Paksha in the 6th month of Uttarayan is born in Brahma Loka (Bhagwat Geeta No. 9/24).

Inauspicious days – Dhumra Ratri, Krishna Paksha and Dakshinayan people who die in the 6th month are born in Tiryak or Bhavatrik (Bhagwat Geeta 9/25)

Precautions in funeral procession

- Sallekhana – Ghost means living being, ghost means body. When the ghost (creature) leaves, the ghost (dead body) remains. That ghost should be bathed, adorned with new clothes etc. and made to lie down in such a way that it cannot move.
- The head of the dead body (ghost) should be taken towards the village and the feet should be taken towards the graveyard.
- The dead body of a fasting person should be cremated with mantri (homa) fire. Meaning of Mantra Agni: By lighting Samidha Agni in a pond - नँ, ह्मँ, ह्रीं ह्रूँ ह्मैं ह्रः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहाः एवं ऊँ ह्री रं रं स्वाहा। After reciting these mantras 108 times, a havan should be performed by offering sandalwood, camphor etc. and then the dead body of the ascetic should be burnt with that fire.
- While going for the funeral procession, if the distance is long and the dead body has to be kept on the way, then its relative, son or others should open its mouth and irrigate it with water, so that the dead body can be re-examined. After doing this, cover its face again. If the distance is short and the dead body reaches the cremation ground, then before placing it on the pyre, one should test the life by sprinkling water on the face.
- Ghee, milk, Akshat etc. should be poured on the brain. Before lighting the fire, three circumambulation should be done.

इच्छा मृत्यु कुछ देशों में है संवैधानिक

नींदरलैंड, अमेरिका (3 राज्य) स्वट्जरलेंड, बेल्जियम, आयरलेंड, कोलम्बिया, जर्मनी, जापान एवं कनाडा आदि इन ग्यारह देशों में इच्छा मृत्यु की संवैधानिकता प्रदान की जा चुकी है। अन्य कई देश भी इच्छा मृत्यु को वैध्यता प्रदान करने की सोच रहे हैं।

16वीं एवं 17वीं शताब्दी में पीड़ित व्यक्तियों को शान्ति पूर्ण तरीके से डॉक्टर की स्वीकृति पर दवायें देकर इच्छा मृत्यु के अनुसार प्राण तजने का इतिहास पाया गया है। इच्छा मृत्यु का विरोध उन्नीसवीं सदी में न्यूयार्क में शुरू हुआ और वहाँ 1828 में इच्छा मृत्यु रोकने का पहला कानून पारित किया गया।

इच्छा मृत्यु को यूथनेशिया कहते है। यह ग्रीक भाषा का शब्द है। इयू और यानाटोस से यूथनेशिया बना। इयू का अर्थ–अच्छा और यानाटोस का अर्थ– मृत्यु अर्थात् स्वेच्छा से दर्द की पीड़ा सहे बिना जीवन समाप्त करना।

भारतीय कानून और समाधि मरण

भारत देश में इच्छा मृत्यु और दया मृत्यु दोनों ही अवैधानिक हैं, भारतीय दंड संहिता की धारा 309 और 304 के अन्तर्गत हत्या को अपराध माना जाता है।

भारत में इच्छा मृत्यु का अर्थ है मरीज अपनी इच्छा से फाँसी, शस्त्र प्रहार या जहर सेवन आदि करके अपनी जीवन लीला समाप्त करना। जबकि अनैच्छिक मृत्यु का अर्थ है व्यक्ति को स्वयं मरने की इच्छा न होने पर भी असाध्य रोग, पीड़ा को देखकर जहरीले इंजेक्शन आदि लगाकर या शस्त्र आदि साधनों के प्रयोग से मार डालना।

इच्छा मृत्यु, आत्म हत्या, सती हत्या या दया मृत्यु का नाम सल्लेखना मरण नहीं है। सल्लेखना मरण तो इच्छा तप है। तपस्या करना यदि अपराध है तो सल्लेखना को अपराध की श्रेणी में कह सकते हैं। जैन धर्म की प्रत्येक धार्मिक क्रिया के साथ समाधिमरण की भावना जुड़ी है और प्रत्येक त्याग तपस्या, जप–तप, स्वाध्याय आदि क्रियाओं को 6 फलों की प्राप्ति की इच्छा से की जाती है– 1. दुःखों का नाश हो। 2. कर्मों का क्षय हो।

Euthanasia is Constitutional in some Countries

The constitutionality of euthanasia has been provided in eleven countries like Netherlands, America (3 states), Switzerland, Belgium, Ireland, Colombia, Germany, Japan and Canada. Many other countries are also thinking of legalizing euthanasia.

In the 16th and 17th centuries, there has been a history of euthanasia of victims as per their wish by giving them medicines in a peaceful manner with the doctor's approval. Opposition to euthanasia began in New York in the nineteenth century, and the first law prohibiting euthanasia was passed there in 1828.

Euthanasia is called euthanasia. This is a Greek word. Euthanasia was formed from Euthanasia and Yanatos. Iyu means good and Yanatos means death i.e. voluntarily ending life without suffering pain.

Indian law and Samadhi Death

In India, both euthanasia and mercy killing are illegal, murder is considered a crime under sections 309 and 304 of the Indian Penal Code.

In India, euthanasia means the patient willingly ending his life by hanging, using weapons or consuming poison etc. Whereas involuntary death means killing a person by giving poisonous injections etc. or by using weapons etc. despite incurring incurable disease, pain, etc. even if the person does not wish to die.

Euthanasia, suicide, sati murder or mercy killing are not called Sallekhana Maran. Sallekhana death is desire penance. If doing penance is a crime then Sallekhana can be termed as a crime. The feeling of Samadhimaran is associated with every religious ritual of Jainism and Every act of renunciation, penance, chanting, penance, self-study etc. is done with the desire to attain 6 fruits - 1. Destruction of sorrows. 2. Karmas should be destroyed.

3. बोधि अर्थात् सम्यक दर्शन, ज्ञान और चारित्र की प्राप्ति हो। 4. सुगति (मोक्ष गति) में गमन (प्रस्थान) हो। 5. समाधि सहित मरण हो। 6. जिनेन्द्र देव के गुणों की प्राप्ति हो। जैन धर्म में इन 6 इच्छाओं की पूर्ति हेतु ही धर्म करते हैं। इसी कारण सल्लेखना को धर्म कहते हैं।

राजस्थान के जयपुर शहर में एक असाध्य रोगी की संथारा/ सल्लेखना को लेकर देश में सन् 2015 में वर्षायोग के मध्य सल्लेखना को देश में आत्म हत्या कहकर बवाल आया था। इस वर्ष 2016 में वर्षायोग के पूर्व कनाडा में असाध्य रोग से जूझ रहे व्यक्ति के लिए इच्छा मृत्यु को लेकर वहाँ के संसद में पारित विधेयक को लेकर पुनः आत्म हत्या को लेकर बवाल आने लगा।

इसके पूर्व भी इच्छा मृत्यु को लेकर अनेक मामले सामने आये। बॉब डाट आस्ट्रेलिया के व्यक्ति की इच्छा मृत्यु चर्चा का विषय बनी। सन् 1990 में अमेरिका महिला टेरी सियावो का दिमाग सुन्न होने पर उसके पति मर्सी किलिंग ने उसकी तकलीफ देखकर अदालत के फैसले पर इच्छा मृत्यु दी गई।

भारत के पटना शहर में वर्ष 2005 मे तारकेश्वर सिन्हा ने अपनी पत्नी की असहनीय वेदना को देखकर दया मृत्यु की याचिका लगाई, लेकिन मंजूरी नहीं मिली। इसी प्रकार उड़ीसा में मोहम्मद युनस ने 4 बच्चों की पीड़ा को देखकर दया मृत्यु की याचिका लगाई परन्तु उन्हें भी मंजूरी नहीं मिली। हमारे देश में दया दान की बात तो कही गई है लेकिन दया मृत्यु की नहीं क्योंकि किसी को जान से मारना दया नहीं है।

3. Bodhi means attainment of right philosophy, knowledge and character. 4. There should be departure in Sugati (salvation speed). 5. There should be death along with Samadhi. 6. May you attain the qualities of Jinendra Dev. In Jainism, religion is practiced only to fulfill these six desires. For this reason Sallekhana is called religion.

In the year 2015, there was an uproar in the country regarding Santhara/Sallekhana of an incurable patient in Jaipur city of Rajasthan, in the midst of Varshayoga, Sallekhana was called suicide in the country. In the year 2016, before Varshayoga, there was a ruckus again in Canada regarding suicide due to the bill passed in the Parliament regarding euthanasia for a person suffering from incurable disease.

Even before this, many cases regarding euthanasia had come to light. Bomb Dot Australian man's euthanasia became a topic of discussion. In 1990, when American woman Terri Ciavo became mentally numb, her husband Mercy Killing, seeing her suffering, gave her euthanasia on the court's decision.

In the year 2005, in Patna city of India, Tarakeshwar Sinha, seeing the unbearable pain of his wife, filed a petition for mercy killing, but it was not approved. Similarly, in Orissa, seeing the suffering of four children, Mohammed Yunus filed a petition for mercy killing but he too was not approved. In our country there is talk of mercy donation but mercy death. No because killing someone is not mercy.

राजा के अधिकार, कर्तव्य और गुण

जितनी भूमि तक निवास करने वाली प्रजा अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करती है उसे राज्य कहते है। प्रजा जिसकी आज्ञा को स्वीकार करती हुई जिसकी यथायोग्य सेवा करती है उसे राजा कहते है। राजा अपने राज्य के जिस प्रमुख नगर में रहता है उसे राजधानी कहते हैं। जिस महल में राजा अपनी पत्नी, बच्चे आदि परिजनों के साथ रहता है उसे राजमहल कहते है। राजा राज्यसभा में जिस आसन पर बैठते है उसे सिंहासन कहते है। जिसे राजा बनाया जाता है उसका पहले राज्याभिषेक किया जाता है। राजा के पिता को राजपिता माता को राज माता, भाई को युवराज कहते है पुत्र को राजपुत्र और पुत्री को राजपुत्री या राजकुमारी कहते है। राजा के अपने विशेष अधिकार और कर्तव्य होते है।

भूतकाल में राजतंत्र था, राजा राज्य करते थे। वर्तमान में जनतंत्र (लोकतंत्र) है। जनतंत्र में शासक के कर्तव्य और अधिकार बदल गये हैं। लेकिन राजा के अनेक अधिकारों में मुख्य अधिकार इस प्रकार है– राज्याभिषेक का अधिकार, राजसिंहासन पर रानी के साथ बैठने का अधिकार, मंत्रियों की नियुक्ति (मंत्री मंडल गठन) करने का एवं उन्हें कार्यभार सौपनें का अधिकार, राज्य व्यवस्था करने का अधिकार, राज्यदान करने का अधिकार, गुप्तचर व्यवस्था, द्वारपाल, अंग रक्षक रखने, सैन्य प्रयोग करने, युद्ध लड़ने, अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग करने, सुरक्षा व्यवस्था करने, न्याय करने एवं दण्ड देने का अधिकार, कन्या विवाह या स्वयंवर रचाने का, राजद्रोही को देश निकाला देने एवं योग्य ज्येष्ठ पुत्र को उत्तराधिकारी बनाने का अधिकार रहता है।

राजा के कर्तव्य

राजा के कुछ कर्तव्य होते है जैसे सप्त व्यसन से अनाशक्त रहना, बिना विचार और मंत्री की सलाह लिए बिना राज्य संचालन नहीं करना। दूसरों पर जल्दी विश्वास नहीं करना। धर्म और धर्मात्माओं की रक्षा करना, साधु–संतों और धर्मात्माओं को राज्य में धर्म साधना करने से नहीं रोकना, अनुचित दण्ड नहीं देना, दीनहीन और अबला को क्षमा करना, अन्याय से दूर रहना, आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति करना, पुरूषार्थशील बनें रहना, योग्य और हितैषियों को पद और सम्मान देकर संतुष्ट करना, प्रजा की आवश्यकता का ध्यान रखना, संकट आने पर प्रजा की रक्षा करना, गुप्तचरों के द्वारा शत्रु और शत्रु देशो की जानकारी लेना।

Rights, Duties and Qualities of the King

The extent of land where the subjects live and follow the orders of their master is called a state. The person whose orders are accepted and served by the people as per his capacity is called a king. The main city of his kingdom where the king lives is called the capital. The palace in which the king lives with his wife, children etc. is called Rajmahal. The seat on which the king sits in the Rajya Sabha is called throne. The one who is made king is first coronated. The king's father is called Rajpita, mother is called Rajmata, brother is called Yuvraj, son is called Rajputra and daughter is called Rajputri or Princess. The king has his own special rights and duties.

In the past there was monarchy, kings ruled. At present there is democracy. The duties and rights of the ruler have changed in democracy. But among the many rights of the king, the main rights are as follows - the right to coronation, the right to sit with the queen on the throne, the right to appoint ministers (form the Council of Ministers) and assign them responsibilities, the right to manage the state, the right to donate the state. The right to establish intelligence, to have gatekeepers, body guards, to conduct military experiments, to fight wars, to use weapons, to make security arrangements, to administer justice and punishment, to organize girl marriages or swayamvars, to deport traitors. And the eligible eldest son has the right to be made the successor.

Duties of the King

The king has some duties like remaining free from the seven addictions, not running the state without thinking and consulting the ministers. Not trusting others easily. Protecting religion and religious people, not stopping saints and religious people from practicing religion in the state, not giving unfair punishment, forgiving the poor and powerless, staying away from injustice, fulfilling the necessary things, being hard-working and worthy. And satisfying the well-wishers by giving them positions and honours, taking care of the needs of the people, protecting the people in times of crisis, getting information about the enemy and enemy countries through spies.

राजा के गुण

राजा को हमेशा न्यायप्रिय, दृढ़ निश्चयी, विचारशील, सत्यवादी, उत्साही, विद्यानिपुण, दानवीर, अति क्रोध, मान, माया, लोभ से रहित, दूर दृष्टा, प्रजा पालक, राज कोष में वृद्धिकारक, गुणीजनों का विनय कारक, अनासक्त, वृद्धसेवाभावी, धर्म का आराधक, मर्यादावान और शत्रुजयी आदि गुणों से युक्त होना चाहिए।

राजा प्रजा और पशु आदि प्राणियों की रक्षा करता है इसलिए प्राणनाथ कहलाता है। राजा को धरती पर देवों से भी बढ़कर माना जाता है इसलिए उसे धरती का देवता भी कहते है।

राजा के भेद

राजा अनेक प्रकार के होते थे और आगे भी होगे। 63 श्लाका पुरूष, 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण, 9 बलभद्र ये 63 श्लाका पुरूष और इनमें 9 नारद, 12 रूद्र, 24 कामदेव, 14 कुलकर और 24 तीर्थंकरों के माता–पिता ये सब मिला देने पर 169 श्लाका पुरूष होते हैं, ये सभी राजा कहलाते हैं। श्लाका पुरूषों को दिव्य पुरूष भी कहते है। इनके दाढ़ी–मूँछ के बाल नहीं होते है। ये उत्तम संहनन और उत्तम संस्थान से सहित होते है। पूर्व भव के रत्नत्रय आराधक के विशेष पुण्य से राजा बनते है। इन राजाओं के अलावा अर्धमण्डलीक, मण्डलीक, महामण्डलीक, राजाधिराज, महाराजाधिराज, आदि अनेक भेद राजाओं के होते है। इन सबके अपने कर्तव्य और अधिकार होते है। उनका पालन वे नियम से करते है।

तीर्थंकर राजा– संसार के सभी राजाओं में तीर्थंकर सर्वश्रेष्ठ राजा माने गये है। उन्हें चक्रवर्ती, नारायण आदि सभी राजा नमस्कार करते है। विवाह रचाकर राज्य शासन करते है बाद में वैराग्य धारण करते है और नियम से मोक्षगामी होते है।

चक्रवर्ती राजा- षट्खण्डाधिपति को चक्रवर्ती कहते है उसके बाद राजाओं में चक्रवर्ती का क्रम आता है, चक्रवर्ती छः खण्ड का अधिपति होता है। 32 हजार मुकुटबद्ध आर्य राजा एवं 88 हजार म्लेच्छ राजा जिसकी आज्ञा का पालन करते है। जिसके 14 रत्न, 9 निधि, 96 हजार रानियाँ, 32 यक्ष देव, जिनके अंडर में रहते है।

Qualities of a King

The king should always be just, determined, considerate, truthful, enthusiastic, knowledgeable, charitable, free from extreme anger, pride, illusion, greed, far-sighted, protector of the people, an increaser in the treasury, a cause for politeness of the virtuous, detached, devoted to the elderly, religious. One should be full of qualities like worshiper of God, respectful and conqueror of enemies etc.

The king protects the people and animals etc. hence he is called Prannath. The king is considered greater than the gods on earth, hence he is also called the god of the earth.

Secrets of the King

There were many types of kings and there will be many in future too. 63 Shlaka Purushas, 24 Tirthankaras, 12 Chakravarti, 9 Narayans, 9 Pratinarayans, 9 Balabhadras, these 63 Shlaka Purushas and these include 9 Narada, 12 Rudra, 24 Kamadeva, 14 Kulkars and the parents of 24 Tirthankaras, if all these are combined then there are 169 Shlaka Purushas. exist, all of them are called kings. Shlaka men are also called divine men. They do not have beard or mustache hair. These are characterized by excellent compaction and excellent organization. Due to the special virtue of the Ratnatray worshiper of the previous life, he becomes a king. Apart from these kings, there are many types of kings like Ardhamandalika, Mandalika, Mahamandalika, Rajadhiraj, Maharajadhiraj, etc. They all have their own duties and rights. They follow them as per the rules.

Tirthankar King - Tirthankar is considered the best king among all the kings in the world. All the kings like Chakravarti, Narayan etc. salute him. They rule the state after getting married, later adopt renunciation and attain salvation by following the rules.

Chakravarti King - Shatkhandadhipati is called Chakravarti, after him comes Chakravarti among the kings, Chakravarti is the ruler of six divisions. 32 thousand crowned Arya kings and 88 thousand Mlechchha kings whose Obeys orders. Whose 14 gems, 9 treasures, 96 thousand queens, 32 Yaksha Devs, live under him.

3 करोड़ गाय, एक करोड़ थालियाँ, 84 लाख हाथी और रथ, 18 करोड़ घोड़े, 84 करोड़ सैनिक। चक्रवर्ती सबसे बड़ा राजा होता है क्योंकि वह 18 अक्षौणी सेना एवं 32 हजार मुकुट बद्ध राजाओं के अधिपति होकर प्रजा के लिए किमिक्षित फल देने वाला होता है इसलिए कल्पवृक्ष के समान होता है।

बलभद्र राजा - चक्रवर्ती के बाद राजा बलभद्र का क्रम आता है जिसकी 8 हजार रानियाँ, 16 हजार अधीनस्थ राजा, 16 हजार देश, 48 करोड़ गाँव, 42 लाख हाथी और रथ पदाति (सैनिक) होते है। अनेक देव बलभद्र राजा की आज्ञा में रहते है। बलभद्र नियम से स्वर्ग या मोक्ष जाते है।

नारायण राजा- राजा नारायण का वैभव बलभद्र के समान होता है, इनके पास चक्र, गदा, खड्ग, शंख, महामणि, अमोघ शक्ति, धनुष ये सात रत्न अपरिमित कान्ति को धारण करने वाले एक–एक हजार यक्ष देवों के द्वारा रक्षित होते है।

500 राजा के अधिपति को अधिराज कहते है, एक हजार राजाओं को महाराज कहते है। दो हजार मुकुटबद्ध राजा में जो प्रधान होते है उन्हें अर्धमण्डलीक राजा कहते है। चार हजार राजाओं में जो प्रधान होते है उन्हें मण्डलीक राजा कहते है। आठ हजार राजाओं के राजाओं में जो प्रधान होते है उन्हें महामण्डलीक राजा कहते है। इन सभी राजाओं को अपनी राज्य व्यवस्था, समाज व्यवस्था नियम से करना पड़ती है और राज सत्ता को नियम से सुचारू रूप से चलाना पड़ता है। राजा अपने राज्य का सर्वोच्च अधिकारी होता है। उनके पास राज्य के सभी अधिकार प्राप्त रहते है।

राजा के पर्यायवाची नाम

राजा के कर्तव्य, गुण, क्रिया और अधिकार के आधार से राजा के अर्थ में अनेक शब्द प्रयुक्त किये जाते है जैसे– अधिप, ईश, नृप, भूप, क्षितिप, क्षमाधीश, क्षितीश्वर, क्षोणीश, धरणीभुज, धात्रिय, धात्रीपति, भूपेन्द्र, विभु, स्वामी, पार्थिव, प्रजापति, महाराज, महीपति, महीभुज, महीनाथ इत्यादि।

3 crore cows, one crore plates, 84 lakh elephants and chariots, 18 crore horses, 84 crore soldiers. Chakravarti is the greatest king because he is the leader of 18 Akshauni army and 32 thousand crowned kings and gives the desired fruits to the people, hence he is like Kalpavriksha.

Balabhadra Raja - After Chakravarti comes King Balabhadra who has 8 thousand queens, 16 thousand subordinate kings, 16 thousand countries, 48 crore villages, 42 lakh elephants and charioteers (soldiers). Many gods live under the command of King Balabhadra. One goes to heaven or salvation by following the rules of Balabhadra.

Narayan Raja- The glory of King Narayan is like that of Balabhadra, He has seven gems - Chakra, Mace, Sword, Conch, Mahamani, Amogh Shakti and Bow - these seven gems are protected by one thousand Yaksha Gods who possess infinite radiance.

The ruler of 500 kings is called Adhiraj, the ruler of a thousand kings is called Maharaj. The chief among the two thousand crowned kings is called Ardhamandalika king. The chief among the four thousand kings is called Mandalika king. The one who is the chief among the eight thousand kings is called Mahamandalika king. All these kings have to run their state system, social system according to rules and the royal power has to be run smoothly according to rules. The king is the supreme authority of his kingdom. They have all the rights of the state.

Synonyms of King

On the basis of the king's duties, qualities, actions and rights, many words are used in the meaning of king like - Adhip, Ish, Nrip, Bhup, Kshitip, Kshamadheesh, Kshitishwar, Kshonish, Dharnibhuj, Dhatriya, Dhatripati, Bhupendra, Vibhu, Swami, Parthiv, Prajapati, Maharaj, Mahipati, Mahibhuj, Mahinath etc.

प्रजा और राजा के मध्य अधिकार

तत्त्वार्थ सूत्र के चौथे अध्याय में **इन्द्र सामानिकत्रायसत्रिंश पारिषदात्म रक्ष लोकपालानीक प्रकीर्ण काभियोग्य किल्विशिकाश चैकशः** (सूत्र–4)

अर्थात्– इन्द्र (देवों का राजा), सामानिक (इन्द्र के समान वैभवशाली) त्रायस्त्रिस (मंत्रियों के समान) पारिषद (पार्षद के समान) रक्षक (अंगरक्षक पुलिस बल) लोकपाल (कोतवाल के समान) अनीक (पैदल सेना के समान) प्रकीणक क्रोधित जैसा (यत्र तत्र रह रहे नगर वासियों की तरह) आभियोग्य (वाहन भंत्री की तरह) किलविश (सफाई मंत्री की तरह)।

इस प्रकार राजा, सेना, मन्त्री आदि की व्यवस्था स्वर्गों में भी है।

इस प्रकार की व्यवस्थाएँ करके सभी को अलग–अलग अधिकार दिये गये हैं। इसी प्रकार चक्रवर्ती, नारायण, प्रति नारायण, महामण्डलेश्वर राजा, आदि पदों की व्यवस्था जैन ग्रन्थों में वर्णित की गई है। इसी के साथ जनता यानि प्रजा को भी अनेक अधिकार एवं कर्तव्यों के पालन करने का कथन किया गया है। राजा एवं इन्द्र अपने पूरे परिवार एवं राज्य के अधिकारों से युक्त होता है। उसे दण्ड देने, ज्ञान देने, प्रजा की सुरक्षा, लालन–पालन, प्रबंधन, एवं सवंर्धन आदि कर्तव्य करने के अधिकार दिये गये है। इसलिये उन्हें दण्ड नीति, सामाजिक व्यवस्था, देश की सुरक्षा के साथ–साथ प्रजा के संवर्धन आदि नीतियों एवं विद्याओं का ज्ञान होना चाहिये। राजा को अत्यधिक कठोर यानि निर्दयी और अत्यधिक मृदु भी नहीं होना चाहिये। यदि अत्यधिक निर्दयी एवं मृदु है तो वह राज्य का सही संचालन नहीं कर सकता। राजा अपराधी को उतना ही दण्ड दे जितने से उस अपराध करने वाले को अपनी गलती का अहसास हो जावे, आने वाले समय में अपराध न करने के लिये दृढ़ संकल्पित हो जावे और अनुशासित होकर देश के विकास में सहयोगी बन जाये। यदि भूल से कोई अपराध होता है तो उसका दण्ड सामान्य, आलस्य के कारण अपराध होता है तो दो गुना दण्ड, जाना बूझकर अपराध करता है तो तिगुना दण्ड, अपराध पर अपराध करता है तो चौगुना दण्ड दिया जाना चाहिये। जो राजा होकर प्रजा के द्वारा किये गये अपराध को प्रजा द्वारा क्षमा मांग लेने पर अभय दान और क्षमादान देता है वह राजा सदा पूजा जाता है। जो राजा प्रजा की रक्षा और धर्म के कार्य में सहभागी बनकर अनुमोदना भी करता है उस राजा को प्रजा द्वारा किये गये उस पुण्य के छठवें भाग का संचय होता है। जो राजा प्रजा के धर्म कार्य में हस्तक्षेप करता है और धर्म–कर्म नहीं करने देता है तो उसे प्रजा से छह गुना अधिक पाप का संचय होता है। राजा को हिंसक आतंकी व्यक्ति को प्राण दण्ड देने का अधिकार है। उसे प्राण दण्ड देने से राजा को पाप का अर्जन नहीं होता है। लेकिन निरपराधी को दण्ड देने पर महान पाप का आश्रव होता है अपराधी को यदि राजा क्षमा कर देता है। तो राजा एवं राज्य दोनों ही शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

Authority between the Subjects and the King

In the fourth chapter of the Tattvartha Sutra, Indra Samaniktrayatrinsha Parishadatma Raksha Lokapalanika Prakirna Kamiyogya Kilvishika Chaikashah (Sutra-4)

That is, Indra (king of the gods) Samanik (glorious like Indra) Trayastris (like ministers) Parishad (like councillors) Raksha (bodyguard police force) Lokpal (like Kotwal) Anik (like infantry) Prakinaka angry like (where Like the townspeople living there) Accused (like the vehicle inspector) Kilwish (like the cleaning minister).

Thus the arrangement of kings, armies, ministers, etc., is also in the heavens.

By making such arrangements, everyone has been given different rights. Similarly, the arrangement of the posts of Chakravarti, Narayana, Prati Narayana, Mahamandaleshwar Raja, etc. is described in the Jain texts. At the same time, the people, the subjects, are also said to observe many rights and duties. The king and Indra is endowed with the rights of his entire family and kingdom. He is given the power to punish, to impart knowledge, to perform duties such as protection, upbringing, management and enhancement of the subjects. Therefore, they should have knowledge of policies and sciences such as punishment policy, social order, security of the country as well as promotion of the people. The king should not be too harsh or too soft. If he is too ruthless and soft, he cannot run the kingdom properly. The king should punish the offender to the extent that the offender realizes his mistake, is determined not to commit crime in the future and becomes disciplined and contributes to the development of the country. If an offense is committed by mistake, the punishment is normal, if the offense is caused by laziness, the punishment is double, if the offense is committed knowingly, the punishment is triple, if the offense is committed on the offense, the punishment is four times

Punishment should be given according the offence. The king who, as a king, gives fearlessness and pardon when the subjects ask for forgiveness for the crimes committed by them, is always worshipped. The king who protects and approves the subjects by participating in their religious activities gets one-sixth of the good deeds done by the subjects. The king who interferes in the religious activities of his subjects and does not allow them to perform religious activities, he accumulates six times more sins than the subjects. The king has the right to give death sentence to a violent terrorist. By giving him death sentence the king does not incur sin. But punishing an innocent person results in a great sin if the king pardons the criminal. So both the king and the kingdom are soon destroyed.

कन्या विवाह अधिकार

पिता और पुत्री का संबंध पवित्र और मधुर होता है। पुत्री को लक्ष्मी कहा जाता है, पुत्री को बेटी या कन्या कहते है। कन्या का विवाह करना पिता का कर्तव्य होता है। पिता अपनी कन्या को उचित साधर्मी परिवार के कुलीन, गुणवान, चरित्रवान वर को खोज कर विवाह करता है यह सब करना पुत्री का अधिकार होता है। भाई से रहित बहिन अर्थात् जिस पिता के पुत्र नहीं है, सिर्फ पुत्रियाँ है, उन सभी पुत्रियों को पिता की आधी सम्पत्ति पर अधिकार होना चाहिये। लेकिन जिस पिता के पुत्र और पुत्रियाँ दोनों है, उस पिता को पुत्री के विवाह में अपनी शक्ति अनुसार अर्थ सहयोग देना चाहिये, बाद में पुत्री का पिता की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होना चाहिये सिर्फ पुत्र को ही अधिकार मिलना चाहिये। यदि पुत्री के विवाह के उपरांत पुत्री अपने पिता की सम्पत्ति का हिस्सा मांगती है उस हिस्से को पुत्र के हिस्से से घटाकर देना पड़ेगा।

यदि भाई चाहे तो अपने हिस्से की प्राप्त पिता की सम्पत्ति का कुछ हिस्सा बहिन को स्वेच्छानुसार देने का अधिकार होना चाहिए। लेकिन अधिकार पूर्वक बहिन को अपने भाई की सम्पत्ति का हिस्सा लेने का अधिकार नहीं होना चाहिये। प्राचीन काल से ही पाणिग्रहण के समय ही पिता से कन्या पर्याप्त सम्पत्ति प्राप्त करती थी। वह सम्पत्ति पिता अपनी स्वेच्छा से देता था। यही प्रथा सर्वश्रेष्ठ थी। यही आज भी होना चाहिये। लेकिन संशोधित भारतीय संविधान में पिता की सम्पत्ति पर पुत्र के होते पुत्री को हिस्सेदारी का जो संविधान बनाया गया है उसे मैं उचित नहीं समझता। यदि बहिन हिस्सेदारी लेती है तो भाई को भी बहिन की ससुराल पक्ष संपत्ति के बराबरी का हिस्सेदार होना चाहिये। यदि पिता या भाई पर कर्ज हो तो उसकी देन दारी में भी भागीदारी होना चाहिए। पुत्र के समान पुत्री की भी पिता की सेवा, दवा, भरण पोषण में भी भागीदारी होना चाहिए। भारतीय संविधान में 17 जून 1956 को पुत्र और पुत्री को हिन्दु लॉ के अनुसार समान उत्तराधिकारी घोषित किया गया है। वर्ष 2005 में संशोधन के बाद से पुत्री को भी पुत्र के बराबर पिता की संपत्ति पर अधिकार प्राप्त हो गया है। लेकिन कुछ बेटियाँ तो अब माता–पिता की आज्ञा के बिना स्वेच्छा से मनमर्जी शादी करके पिता की संपत्ति को पाने कोर्ट कहचरी कर रही है।

Girl Marriage Rights

The relationship between father and daughter is pure and sweet. Daughter is called Lakshmi, daughter is called Beti or Kanya. It is the duty of the father to marry the daughter. The father finds and marries his daughter to a noble, virtuous and characterful groom from a suitable religious family, it is the daughter's right to do all this. Sisters without brothers, i.e. those daughters of a father who has no sons and only daughters, should have the right to half of the father's property. But the father who has both sons and daughters should give financial support as per his capacity in the daughter's marriage. Later, the daughter should not have any right on the father's property, only the son should get the right. If after the daughter's marriage the daughter asks for a share in her father's property, that share will have to be reduced from the son's share.

If the brother wishes, he should have the right to give some part of his father's property to his sister as per his wish. But a sister should not have the right to take a share of her brother's property by right. Since ancient times, a girl used to receive sufficient property from her father at the time of marriage. The father gave that property voluntarily. This practice was the best. This should happen even today. But in the amended Indian Constitution, I do not consider it appropriate that the provision made in regarding the share of the father's property in the hands of the son and the daughter. If the sister takes a share, then the brother should also have an equal share in the sister's in-laws' property. If the father or brother has a debt, he should also participate in the debt. Like a son, a daughter should also participate in her father's service, medicine and maintenance. In the Indian Constitution on 17 June 1956, son and daughter have been declared equal heirs according to Hindu law. After the amendment in the year 2005, the daughter has also got equal rights on her father's property as the son. But some daughters are now going to court to get their father's property by voluntarily marrying without their parents' permission.

जैन धर्मानुसार विवाह की प्रथा कर्म भूमियों में अनादिकालीन है। इसीलिए तीर्थंकर चक्रवर्ती, नारायण, प्रतिनारायण, कामदेव, और मण्डलेश्वर आदि राजाओं ने विवाह किये। विवाह को एक पवित्र और धर्म संस्कार की क्रिया माना गया है। तीर्थंकरों को तो विवाह करना अनिवार्य ही है। यदि वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ एवं महावीर स्वामी ने अविवाहित रहकर दीक्षा ली तो यह हुण्डावसर्पिणी काल का बहुत बड़ा दोष है। देव–देवियों में विवाह न होकर जन्म से ही नियोग होता है। पहले से ही किस देव के साथ किस देवी का संयोग संबंध होगा, यह निश्चित हो जाता है। भोग भूमि के मनुष्य–मनुष्यनियों का युगल जन्म होता है और एक साथ जीवन जीते है। यह भी उनका नियोग टाला नहीं जा सकता। लेकिन कर्म को टाला जा सकता है। कर्म को टालने के लिये पुरुषार्थ करना पड़ता है। कर्म भूमि के मनुष्य पुरुषार्थ करते हैं। वे काम पुरुषार्थ करने के लिये विवाह रचाते हैं। मनुष्यों में जो विवाह होता है, वह दाम्पत्य जीवन और आध्यत्मिक संबंध को भी सुदृढ़ करता है। विवाह संबंध के संस्कारों को परमात्मा की साक्षी पूर्वक किया जाता है। यह विवाह संबंध कर्तव्यनिष्ठ, सत्यनिष्ठ और आध्यात्मिक बनाता है।

विवाह को परिणय, पाणिग्रहण, उपनय, करपीड़ा, शादी इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। संतान की प्राप्ति इंद्रिय सुख, कुल वृद्धि, धर्म वृद्धि और समाज वृद्धि का कारण माना गया है। युवक युवतियाँ योवनावस्था प्राप्त होते ही परस्पर में एक–दूसरे के प्रति आकर्षित (सम्मोहित) होते है। इस सम्मोहन को विवाह में परिणत करना वैध माना गया है। रूप, बल, धन, पद प्रतिष्ठा दिखाकर पुरूष स्त्री को आकर्षित करते है और स्त्री अपने गुण, शील, संयम, मर्यादा, विनय और रूप दिखाकर पुरूष को आकर्षित करती है। उसको देखकर एक–दूसरे के परिजन भी आकर्षित होते है और विधि–विधान पूर्वक विवाह रचाते है। यह विवाह रचाना युवक–युवतियों का अधिकार है।

आदिनाथ भगवान से लेकर अभी तक विवाह संस्कारों की क्रिया विधि एवं महिमा अक्षुण्य रूप से चली आ रही है। जैन विवाह पद्धति में विवाह के समय वर–वधु दोनों को अलग अलग सात–सात नियम प्रदान किये जाते हैं। व सात फेरे एक–दूसरे के गठबंधन के बाद भगवान को साक्षी मानकर संसार परिभ्रमण को रोकने के उद्देश्य से वृक्ष के एक खम्बे को गाड़ कर पंच परमेष्ठी की पूजा एवं स्थापना करके किये जाते हैं।

According to Jainism, the practice of marriage is ancient in Karma lands. That is why kings like Tirthakar, Chakraborty, Narayan, Pratinarayan, Kamdev, and Mandleshwar etc. got married. Marriage is considered a sacred and religious ritual. It is mandatory for pilgrims to marry. If Vasupujya, Mallinath, Neminath, Parshvanath and Mahavir Swami took initiation while remaining unmarried, then it is a big fault of Hundavasarpini period. Gods and Goddesses are ordained by birth rather than by marriage. It is already decided which goddess will have a coincidental relationship with which god. Human beings of Bhog Bhoomi are born as couples and live life together. This too cannot be avoided. But karma can be avoided. To avoid karma one has to make efforts. People of Karma Bhoomi make efforts. They get married to make efforts. Marriage that takes place in humans also strengthens marital life and spiritual relationships. The rituals of marriage are performed under the witness of God. This makes the marriage relationship dutiful, truthful and spiritual.

Marriage is also known by the names Parinay, Paanigrahan, Upanay, Karpida, Shaadi etc. Having a child is considered to be the reason for sensual happiness, family growth, religious growth and social progress. As soon as boys and girls attain puberty, they become attracted to each other. It is considered legal to convert this hypnosis into marriage. Men attract women by showing their beauty, strength, wealth, status and prestige and women attract men by showing their qualities, modesty, restraint, decorum, modesty and beauty. Seeing that, each other's family members also get attracted and get married as per the rituals. It is the right of young men and women to get married.

From Lord Adinath till now, the rituals and glory of marriage rituals have continued intact. In Jain marriage system, seven separate rules are given to both the bride and groom at the time of marriage. And witness to God after seven rounds of alliance with each other. In order to stop the worldly revolution, this is done by worshiping and establishing Panch Parmeshthi by burying a pillar of a tree.

सात फेरे करने का उद्देश्य

सज्जाति, सद्ग्रहस्थत्वं पारिव्राज्यं सुरेन्द्रता।
सामज्यं पद्मार्हन्त्यं निर्वाण चेति सप्तकम।।

विवाह प्रथा जीवन में इन्द्रिय सुख, संतान प्राप्ति एवं समस्याओं के समाधान हेतु स्त्री–पुरुष का एक आदर्श गठबंधन है। यह गठबंधन संपूर्ण जीवन पर्यन्त के लिये होता है। इस गठबंधन से व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, शारीरिक, मानसिक आदि सभी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया जाता है, लेकिन जब दम्पत्ति में संदेह की दरार पड़ जाती है अथवा अहम् टकराने लगता है अथवा एक–दूसरे को नीचा दिखाने का विचार आ जाता है तब समस्यायें सुलझने की जगह और उलझती चली जाती हैं इसीलिए झगड़े, तलाक और हत्यायें भी होने लगती हैं।

विवाह एक प्रेम का बंधन है। विवाह एक–दूसरे को वहन करने तथा लेकर चलने का सम्बन्ध है। कभी–कभी यह विवाह संबंध ''वाह–वाह से लेकर ''आह तक और आह से लेकर तवाह तक'' का सफर हो जाता है। कभी–कभी यह विवाह की जिन्दगी बड़ी खूबसूरत लगती है, लेकिन जब अहम्, संदेह और लोभ आदि पलने लग जाता है तब भय और हिंसा तक होने लग जाती है।

कन्या का दान करने वाला पिता अपने दिल के टुकड़े रुप बेटी को दिल विशाल करके देता है। देने वाला बड़ा होता है और लेने वाला छोटा होता है। इसीलिए साधु भी आहार लेने के लिये ग्रहस्थ के घर जाते हैं वैसे ही लड़की वालों के घर लड़के वाले को जाना चाहिये, क्योकि लड़की वाला दाता है और लड़का वाला पात्र है। जिस माँ–बाप ने अपनी कन्या को किसी दूसरे सजातीय एवं साधर्मी के बच्चे को योग्य समझ कर दिया है, उस लेने वाले परिवार को अपना सौभाग्य समझना चाहिये। वह कन्या लड़के वाले के यहां अतिथि बन कर आती है। वह सारे रिश्ते एवं जिम्मेदारियाँ निभाती है। वह कुल, खानदान, संस्कार, सयंम एवं धन सम्पत्ति की वृद्धि में सहभागी बनती है। इसीलिए लड़के वालों को कन्या एवं कन्यादान करने वाले परिवार से मधुर व्यवहार रखना चाहिये। मारपीट, गाली–गलोच एवं धोखा–धड़ी नहीं करनी चाहिये।

Purpose of Seven Rounds

Sajjati, Sadgrahasthattvam Parivrajyaam Surendrata.
Samajyam Padmarhantyam Nirvana Cheti Saptakam.

Marriage system is an ideal union of man and woman for sensual pleasure, procreation of children and solving problems in life. This alliance is for the entire life. Through this alliance, efforts are made to solve all the problems - personal, family, social, physical, mental etc., but when there is a rift of doubt in the couple or ego starts clashing or the thought of humiliating each other comes. Then instead of getting resolved, the problems become more complicated, that is why fights, divorces and even murders start happening.

Marriage is a bond of love. Marriage is a relationship of bearing and carrying each other. Sometimes this marriage relationship becomes a journey from "Wah-Wah" to "Aah" and from "Aah to Twah". Sometimes this marriage life seems very beautiful, but when ego, doubt and greed etc. start growing. Then fear and even violence starts happening.

The father who donates his daughter gives a big piece of his heart to his husband. The giver is great and the taker is small. That is why even sages go to the house of a householder to get food. Similarly, a boy should go to the house of a girl, because the girl is the giver and the boy is the recipient. The parents who have considered their daughter suitable for the child of someone else of the same caste and religion, the family taking that daughter should consider themselves fortunate. The girl comes to the boy's house as a guest. She handles all relationships and responsibilities. She participates in the growth of clan, family, values, discipline and wealth. That's why boys need girls and one should maintain cordial relations with the family of the bridegroom. There should be no beating, abuse and cheating etc.

जैन विवाह पद्धति एवं धर्म के अनुसार कन्या का एक बार विवाह होने के उपरांत तलाक होनेअथवा विधवा होनेपर पुनः विवाह स्वीकार नहीं किया गया है क्योंकि कन्या का दान किया जाता है और दान की हुई वस्तु का पुनः दान नहीं किया जाता है। जिस परिवार को कन्या का दान किया जाता है, उस परिवार की योग्यता की परीक्षा जरूर करना चाहिये। भगवान आदिनाथ ने वर जिसे कन्या दी जा रही है उस लड़के के गुणों की परीक्षा के मुख्य सात लक्षण बताये हैं।

'कुलं च शीलं च वयष्च रूपंविद्यां च वित्तं च सनाथनां च।
एत्मन्गुणां सप्त परीक्ष्य देया, कन्या बुधैः शेषमचिन्तनीयम्।।

जो कुल से, शील से, शरीर से, यश से, विद्या (ज्ञान) से, वित्त (धन सम्पत्ति) से और माता–पिता, भाई–बहिन आदि परिवार से सहित है, ऐसे सजातीय कुल एवं धर्म से युक्त वर को खोजकर अपनी कन्या का दान बुद्धिमानों को करना चाहिये। ज्योतिष के अनुसार कुंडली में ३६ गुण मिलाये जाते हैं लेकिन अब इन आधुनिक ३६ गुणों का मिलान करें जो इस प्रकार हैं– १. शरीर की ऊँचाई, २. शरीर का रंग, ३. शरीर का वजन, ४. शारीरिक स्वास्थ्य, ५. शारीरिक शक्ति ६. मनोबल, ७. वाणी, ८. व्यवसाय या नौकरी (आमदनी का जरिया), ९. सदाचार, १०. जाति, ११. धर्म, १२. साहस, १३. खान–पान, १४. परिवार की सदस्य संख्या, १५. शिक्षा, १६. उम्र, १७. कौटुम्बिक व्यवहार, १८. कुटुम्ब की स्थिति, १९. व्यवहार कुशलता, २०. पुरुषार्थ (परिश्रम), २१. आय का साधन, करेन्सी (आर्थिक स्थिति), २२. सत्संग, २३. धार्मिक रुचि २४. शिष्टाचार, २५. कुल का पिछला इतिहास, २६. निवास स्थान, २७. घर की स्थिति, २८. साहस, २९. निवास स्थान, ३०. कार्य करने में सहयोग की भावना, ३१. विचार धारा (आधुनिक आध्यात्मिक या सामाजिक), ३२. आय का साधन, ३३. दोस्त यार, ३४. व्यसन (आदत), ३५.संयुक्त या एकल परिवार में रहने की इच्छा, ३६. सभ्यता।

वैवाहिक संबंध जीवन पर्यन्त के लिए होता है। परमात्मा पर विश्वास के समान होता है। इसलिए विवाह के लिए सुयोग्य वर एवं वधु का चुनाव बहुत सावधानी पूर्वक करना चाहिए। अनुभवी अभिभावक एवं संबंधी–जनों की सलाह, सहमति एवं अनुमति से करना चाहिए। अंत में निर्णय वर–वधु को करना चाहिए। विवाह करने का अधिकार वर–वधु को मुख्य रुप से तो है ही लेकिन अभिभावकों के लिए भी अपनी संतान के विवाह कराने का अधिकार है।

According to Jain marriage system and religion, once a girl gets married, remarriage is not accepted in case of divorce or widowhood because the girl is donated and the donated thing is not donated again. The eligibility of the family to which the girl is donated must be tested. Lord Adinath has given seven main symptoms to test the qualities of the boy to whom the girl is being given.

'Kulam cha Sheelan cha vayascha rupamvidyaam cha vittanch cha Sanathanaan cha. Atmangunam Sapta Parikshya Deya, Kanya Budhai Sheshamchintaniyam.

By finding a groom who has similar family and religion, who is compatible with family, morality, body, fame, education (knowledge), finance (wealth) and family including parents, brothers and sisters etc. A girl child should be donated to the wise. According to astrology, 36 qualities are matched to the horoscope but now it is better to match these modern 36 qualities which are as follows - 1. Body height, 2. Body color, 3. Body weight, 4. Physical health, 5. Physical strength 6. Morale, 7. Speech, 8. Business or job (source of income), 6. Morality, 10. Caste, 11. Religion, 12. Courage, 13. Food habits, 14. Number of family members, 15. Education, 16. Age, 17. Incest, 18. Family status, 16. Behavioral skills, 20. Purushartha (hard work), 21. Source of income, currency (economic condition), 22. Satsang, 23. Religious interest 24. Etiquette, 25. Past history of the clan, 26. Place of residence, 27 Location of house, 28. Courage, 26. Place of residence, 30. Feeling of cooperation in working, 31. School of thought (modern spiritual or social), 32. Source of income, 33. Friends, 34. Addiction (habit). 35. Desire to live in a joint or nuclear family, 36. Civilization .

Marital relationship is for life. It is like belief in God. Therefore, choosing a suitable bride and groom for marriage is very important. Should be done carefully. This should be done with the advice, consent and permission of experienced parents and relatives. Ultimately the decision should be taken by the bride and groom. The bride and groom mainly have the right to get married, but parents also have the right to get their children married.

इन्द्रिय सुख एवं काम पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए परिजन एवं समाज की सहमति से वर–वधु के चुनाव का नाम विवाह है। काम पुरुषार्थ से संतान की उत्पत्ति होती है, संतान से परिवार की वृद्धि होती है, परिवार का उन्हें विशेष रुप से वहन करना होता है। अतः वर–वधु के द्वारा एक–दूसरे को एवं परिवार को वहन करने या निभाने का नाम विवाह है।

विवाह किसी के दवाब, धमकी, लोभ–लालच, छल–कपट और प्यार के मोह जाल में फँस कर नहीं करना चाहिए। यदि अभिभावक दवाब दे कर संतान को विवाह करने पर मजबूर करते हैं तो संतान को अस्वीकार कर देना चाहिए और यदि संतान अपनी मान मर्यादा को छोड़कर मन मर्जी से विवाह करती है तो अभिभावकों को अस्वीकार कर देना चाहिए।

बेटी पराये घर का धन कही जाती है क्योंकि घर के घर में कभी शादी नहीं होती, घर के घर में शादी करने का अधिकार जैन धर्म में नहीं दिया गया है। एक कुल की कन्या दूसरे कुल के लड़के के साथ ही विवाह करती है। दूसरे घर की कन्या से विवाह रचाकर अपने घर में पत्नी बना कर रखा जाता है। यही वजह है कि पत्नी को अंग्रेजी भाषा में हाउस वाइफ कहा जाता है होम वाइफ नहीं। जैसे अपने घर को माई होम कहते हैं लेकिन जो अपना घर नहीं होता पर अतिथि बनकर किसी दूसरे घर में रहते हैं तो हाउस कहते हैं। जो शासनिक और प्रशासनिक अधिकारी या नेता होते हैं वे चुनकर या नियुक्त होकर शासकीय भवन में जाते है तो उसे गेस्ट हाउस, रेस्ट हाउस आदि नामों से कहा जाता है। यही कारण है कि पराये घर की लड़की को लाकर पत्नी बनाकर रखने से हाउस वाइफ कहते हैं।

नारी को घर में रहकर ही अपने बच्चों का लालन–पालन एवं काम धन्धा करना चाहिये। यदि घर से बाहर जाकर अर्थ पुरुषार्थ करना पड़े तो पति या परिजन के साथ ही रहकर करना चाहिये। अलग रह कर नहीं ऐसा करने से शील संयम और जीवन सुरक्षित रहता है। पुरुष घर में घुसा रहे तो नाकारा कहलाता है और स्त्री बाजार में अकेली होकर व्यर्थ में जिस किसी के साथ भी घूमती रहे तो कुलक्षणी कहलाती है। अकेली औरत और अकेले दिगम्बर साधु से हर कोई छेडखानी करता है, इसीलिए जैन धर्म में एक अकेले साधु को विहार करने और रहने का निषेध किया है इसी प्रकार अकेली औरत को बाजार में जाने का निषेध किया है।

Marriage is the name of selection of bride and groom with the consent of family and society for sensual pleasures and accomplishment of sexual efforts. Through sexual efforts, children are born, children lead to growth of the family, they have to take care of the family in a special way. Therefore, marriage is the act of bearing or carrying each other and the family by the bride and groom both.

Marriage should not be done under someone's pressure, threat, greed, deceit or love. If the parents force the child to marry by applying pressure, then the child should reject and if the child leaves his honor and marries as per his wish, then the parents should reject the marriage.

Daughter is said to be the wealth of someone else's house because marriage never takes place in the family house, the right to marry in the family house is not given in Jainism. A girl from one clan marries only a boy from another clan. A girl from another house is married and kept as his wife in his own house. This is the reason why wife is called housewife in English and not homewife. For example, one's house is called my home, but the one who is not one's own house but lives as a guest in some other house is called a house. The government and administrative officers or leaders, when they go to a government building after being elected or appointed, it is called guest house, rest house etc. This is the reason why taking a girl from someone else's house and keeping her as your wife is called a housewife.

Women should stay at home and raise their children and do their work. If you have to go out of the house and make economic efforts, then this should be done while staying with husband or family. By doing this not by staying apart, modesty and life remains safe. If a man stays inside the house, he is called bad and if a woman wanders around aimlessly in the market, alone, then she is called Kulakshani. Everyone tries to flirts with a single woman and a single Digambar Sadhu, that is why in Jainism, a single Sadhu is prohibited from traveling and staying, similarly a single woman is prohibited from going to the market.

दाम्पत्य जीवन में या पारिवारिक जीवन में स्त्री–पुरुष के बीच कलह तब होती है नारी जब अपने आपको समझती ज्यादा है, और जानती कम है, बोलती ज्यादा है और सुनती कम है, अधिकार ज्यादा धौंस जमाती है और कर्तव्य कम करती है। मायाचारी (छल कपट) ज्यादा करती तथा ईमानदारी से काम कम करती है। सुन्दरता ज्यादा दिखाती है और सुन्दर काम कम करती है। आनन्द लूटना ज्यादा चाहती है और लुटाना कम चाहती है। इन अनेक कारणों से आपस में लड़ाई–झगड़े होने लग जाते हैं। जब पुरुष अधिकार ज्यादा धौंस जमाना चाहता है और कर्तव्य कम करता है। बाहर जाकर अर्थ पुरुषार्थ कम करता है और घर में ही घुसा रहता है। अपने परिवार और संबंधि जनों की प्रतिष्ठा को बढ़ाता कम है और दाव पर ज्यादा लगाता है। भोगना ज्यादा चाहता है और शक्ति का संचय कम करता है, दूसरों को महत्व कम देता है, और महत्वाकांक्षी ज्यादा होता है। विस्तार वादी सोच कम रखता है और विस्तार ज्यादा चाहता है। पुरुषार्थ कम करता है और अधिकार ज्यादा चाहता है इत्यादि कारणों से लड़ाई–झगड़े दाम्पत्य जीवन में होने लग जाते हैं।

जैन धर्म में पत्नी को वामाङ्गनी भी कहा गया है क्योंकि विवाह के संस्कार में स्त्री को पुरुष से बायीं तरफ बैठाया जाता है। पुरुष के हृदय में बायी तरफ जो दिल होता है उसमें मंत्रों द्वारा स्थापित किया जाता है। स्त्री को बायीं तरफ बैठाने से वह आज्ञाकारी और धार्मिक होती है। सेवा, शयन, भोजन, पूजा, जात कर्म, हवन, नामकरण, अन्न–प्राशन एवं कन्यादान के समय नारी को पुरुष से बायीं तरफ बैठाया जाता है। वर से वधु कम से कम छह माह छोटी होनी चाहिये। कुल धर्म एवं जाति को पवित्र बनाये रखने के लिये बेटी का विवाह समान जाति, कुल एवं धर्म वालों के साथ करना चाहिये। यही जैन धर्म की वर्ण व्यवस्था है। भले ही इस लोकतांत्रिक प्रणाली में इसे अच्छा नहीं माना जा रहा हो, लेकिन जैन धर्म की इस व्यवस्था के अनुसार चलने पर सुख, शांति, समृद्धि और प्रेम वात्सल्य अधिक होता है।

In married life or in family life, discord occurs between man and woman when the woman understands herself more and knows less, speaks more and listens less, asserts more rights and does less duties. She does more deceitful work and does less work with honesty. Shows more beauty and does less beautiful work. She wants to loot more joy and wants to give less. Due to these various reasons, fights start happening among themselves. When a man wants to have more rights and less duties. He goes out less and, he reduces his economic efforts and remains confined to the house. He enhances the prestige of his family and relatives less and puts more at stake. Wants more enjoyment and accumulates less power, gives less importance to others, and is more ambitious. He thinks less towards expansion and wants expansion more. Due to reasons like he makes less effort and wants more rights etc., fights start happening in married life.

In Jainism, the wife is also called Vamangani because in the marriage ceremony, the woman is made to sit on the left side of the man. It is established through mantras in the left side of a man's heart. By seating a woman on the left side, she becomes obedient and religious. At the time of service, sleeping, eating, worship, caste rituals, havan, naming ceremony, Annaprashan and Kanyadaan, the woman is made to sit on the left side of the man. The bride should be at least six months younger than the groom.

To keep the clan, religion and caste pure, the daughter should be married to people of the same caste, clan and religion. This is the caste system of Jainism. Even though it is not considered good in this democratic system, but following this system of Jainism brings more happiness, peace, prosperity and love.

अंतर्जातीय विवाह क्यों नहीं

जैसे आम, नींबू, गुलाब आदि विजातीय कलम के मिश्रण से जो फल–फूल और बीज उत्पन्न होते हैं उसकी मूल नस्ल समाप्त हो जाती है और प्रायः फल देने की क्षमता समाप्त सी हो जाती है अथवा क्लोन या टेस्ट ट्यूव से उत्पन्न हुए प्राणी में प्रजनन शक्ति समाप्त हो जाती है और असली नस्ल समाप्त हो जाती है। अतः अगली फसल को प्राप्त करने के लिये बिना मिलावट के बीज को सुरक्षित रखा जाता है। उसे वर्ण शंकर से बचाया जा सकता है। उसी प्रकार मानव नस्ल को सुरक्षित रखने के लिये अपने समान गुण, जाति, एवं धर्म वालों के साथ विवाह संबंध करने का अधिकार जैन धर्म में दिया गया है। यह एक वैज्ञानिक सत्य है न कि क्रिया काण्ड और रूढ़िवादिता। जैसे सभी मानवों का खून देखने में एक सा लाल रंग का होता है लेकिन उसे ए, बी, एबी एवं ओ. ग्रुप इन चार समूह में बाँटा गया है यदि गलत ग्रुप का ब्लड चढ़ा दिया जाता है तो मौत भी संभव है। उसी प्रकार मानव देखने में एक से लगते है लेकिन उनके आचार–विचार, स्वभाव आदि से चार वर्णों में वॉटा गया है, उसी वर्ण में रोटी–बेटी का संबंध करना उचित है। अतः इतना ध्यान रखें कि जब रोटी बिगड़ जाती है तो खान–पान बिगड़ जाता है। जब बेटी बिगड़ जाती है तो खानदान बिगड़ जाता है। जब नदी ऊफान पर होती है तो पुलों को डुबो देती है और जब नारी उफान पर होती है तो कुलों को डुबो देती है।

चार पुरुषार्थों की सिद्धि के लिये मानव को जो अधिकार प्राप्त हैं वे पूर्ण अधिकार कहलाते हैं। चारों पुरुषार्थों की सिद्धि में, काम पुरुषार्थ की सिद्धि में स्त्री और पुरुष दोनों की समान भूमिका है, क्योंकि दाम्पत्य जीवन के बिना काम पुरुषार्थ की सिद्धि नहीं होती। विवाह क्रिया के पूर्व शारीरिक संबंध बनाना अन्याय है, अपराध है, अधर्म है, और वह काम पुरुषार्थ नहीं है मात्र कामवासना की सिद्धि है क्योंकि वह अवैध संबंध माना जाता है और संतान प्राप्ति रूप फल की इच्छा नहीं होती है। पुरुषार्थ वही है जिसके करने पर फल की प्राप्ति की जाती है। इसीलिए जैन धर्म और संस्कृति में विवाह बंधन के बाद ही संतान उत्पत्ति के लिये शारीरिक संबंध स्थापित करने को कहा गया है। उसे ही सद्ग्रहस्थ कहा है।

Why no Inter Caste Marriage

Like mango, lemon, rose etc., the fruits, flowers and seeds which are produced by mixing different grafts, their original breed is destroyed and often their ability to bear fruit is lost or reproduction in the creature produced from clone or test tube is reduced. The power is lost and the real breed is lost. Therefore, the seeds are kept safe without adulteration to get the next crop. This can be saved from Varna Shankar. Similarly, to keep the human race safe, the right to marry people of similar qualities, caste and religion has been given in Jainism. This is a scientific truth and not a verb and a stereotype. Like the blood of all humans looks the same red in color but it is classified as A, B, AB and O. The groups are divided into these four groups. If blood of the wrong group is transfused then death is also possible. Similarly, humans look the same but have been divided into four varnas based on their conduct, thoughts, nature, etc. It is appropriate to establish the relationship between father and daughter in the same varna. Therefore, keep this in mind that when the bread spoils, the food habits spoil. When the daughter gets spoiled, the family gets spoiled. When the river is in spate, it sinks the bridges and when the woman is in spate, it sinks the clans.

The rights that human beings have for the accomplishment of the four purusharthas are called absolute rights. Both men and women have equal roles in the accomplishment of the four purushaarthas, in the accomplishment of sexual purushartha, because married life without it, no effort is possible. Having physical relations before marriage is injustice, a crime, unrighteousness, and that work is not an effort of man, it is only the fulfillment of sexual desire because it is considered an illegal relationship and there is no desire for the result in the form of having a child. Effort is that which results in achieving results. That is why in Jain religion and culture, it has been said to establish physical relations for procreation of children only after marriage. He is called Sadgrahastha.

जहाँ सद्ग्रहस्थपना रहता है वहाँ मधुर संबंध रहते हैं, लक्ष्मी का वास रहता है, परिवार में सुख शांति और आनन्द हिलौरे लेता है, वहाँ देवता का वास होता है। नारी और पुरुष दोनों को बराबर आदर और सम्मान मिलता है, इसीलिए नीतिकार ने लिखा है– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'' जहाँ नारी को आदर सम्मान मिलता है वहाँ देवता निवास करते है।

संसार में हर चीज का जोड़ा होता है। जैसे सुख और दुख, रात और दिन, अमीर और गरीब, स्त्री और पुरुष, स्वर्ग और नरक इत्यादि। इन जोड़ों के बिना धर्म, कर्म और संसार की रचना असंभव है। नारी के बिना पुरुष का और पुरुष के बिना नारी का जीवन अधूरा है। अग्रेजी में बेटर हाफ कहते है, सनातन धर्म में अर्धागिनी कहते हैं। शिवजी को अर्ध नारीश्वर भी कहते हैं। इसीलिए जैन धर्म और संस्कृति में विवाह क्रिया धार्मिक और न्यायोचित जीवन जीने की एक कला है। विवाह बंधन से उन्मुक्त वासना पर प्रतिबंध लग जाता है। स्वछन्द जीवन न होकर स्वतंत्र एवं नियंत्रित जीवन जीना प्रारम्भ हो जाता है। विवाह सह अस्तित्त्व प्रेम का सूचक है, अहिंसा, सत्य, अचौर्य और ब्रह्मचर्य का आंशिक रूप है। इसे अणुव्रत के रूप में स्वीकार किया गया है। अतः विवाह को नकारा नहीं गया बल्कि स्वीकारा गया है।

Where there is good establishment, there are sweet relationships, Goddess Lakshmi resides, happiness, peace and joy prevails in the family, God resides there. Both men and women get equal respect and honour, that is why Nitikar has written - "Yatra Naryastu Pujyante Ramante Tatra Devata." Where women are respected, gods reside there.

Everything in the world has a pair. Like happiness and sorrow, night and day, rich and poor, man and woman, heaven and hell etc. Without these couples, the creation of religion, karma and the world is impossible. A man's life without a woman and a woman's life without a man are incomplete. In English it is called better half, in Sanatan Dharma it is called Ardhagini. Lord Shiva is also called Ardha Narishwar. That is why in Jain religion and culture, marriage ceremony is an art of living a religious and righteous life. The bond of marriage puts a restriction on the unfettered lust. Instead of living a free life, one starts living an independent life. Marriage is an indicator of love for co-existence, a partial form of non-violence, truth, non-observance and celibacy. This has been accepted as Anuvrat. Therefore, marriage has not been rejected but has been accepted.

नैतिक अधिकार

मानव को वही अधिकार देना चाहिये जो मानव के अन्दर विवेक बुद्धि, साहस, उमंग, उत्साह, परोपकार, देश और समाज के विकास के साथ–साथ आध्यात्मिक गुणों का विकास कर सकें। इससे स्पष्ट है कि वेश्यावृत्ति (देह व्यापार), मद्यपान, मद्यउद्योग, मत्स्य उद्योग, मुर्गी पालन उद्योग एवं कत्लखाने आदि खोलने और चलाने का अधिकार नहीं देना चाहिए। इन सभी से अराजकता, हिंसा, अन्याय, अत्याचार, आतंकवाद, भ्रष्टाचार इत्यादि को बढ़ावा मिलता है। ये सब कर्म नीति गत न होकर अनैतिक हैं। मानवाधिकार देते समय नीतियां तय की जाती हैं। नीतियों के तहत ही अधिकार दिये जाते हैं नीतियों के तहत प्राप्त किये गये अधिकार से व्यक्ति नैतिक बनता है, क्योंकि नीति से ही नैतिक बना है। नी धातु सब को साथ ले चलने, आगे बढ़ाने और विकास करने के अर्थ में आती है। नीति स्त्री लिंगवाची शब्द है जिसका अर्थ यह भी है व्यवहार के चलन की रीति, सदाचरण की पद्धति, सदविचारों का प्रवाह। अतः नीति वही है जो व्यवहारिक रीति से जोड़ती है, हित के मार्ग पर चलाती है, लोक मर्यादा प्रवाहित करती है।

व्यवहारिक रीति से अपना हित होता है। दूसरों का दुःख दर्द दूर होता है। जिस नीति से राष्ट्र की रक्षा, उन्नति, प्राणियों का हित शांति जिससे प्राप्त होती है वही नीति लोक नीति या धर्म नीति कहलाती है। जिससे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र इन चार वर्णों की तथा ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ वान प्रस्थ, और सन्यास रूपी चार आश्रमों की स्थापना हाती है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप चार पुरुषार्थों की जिन रीतियों से सिद्धि होती है उसे अध यात्म नीति कहते हैं। नीति और रीति का लक्ष्य मानव को लौकिक और पारलौकिक सुख प्रदान करने का होता है। नीतियां लौकिक सुख शांति ही नहीं बल्कि पारलौकिक सुख को प्रदान करने वाली होती हैं। जो नीतियां इस प्रकार की सुख शांति को प्राप्त नहीं होने दे, वे नीतियां मानवाधिकार में गर्वित नहीं की जा सकती, संसार के व्यवहारिक कार्य को भली प्रकार से कराते हुए जो समाज, परिवार और देश को आगे प्रगति के मार्ग पर ले चले उसे नीति कहते है। नीति बालक को चलाने के लिये पिता की अंगुली का काम करती है, इसी कारण विद्वान लोग नीति का अनुपालन करते हैं। नीतियों के आधार पर मान मर्यादा की डोर से बंधकर चलते हैं।

Moral Rights

Humans should be given only those rights which can develop wisdom, courage, enthusiasm, philanthropy, spiritual qualities along with the development of the country and society. It is clear from this that the right to open and run prostitution (prostitution), alcoholism, liquor industry, fishing industry, poultry industry and slaughter houses etc. should not be given. All these promote anarchy, violence, injustice, atrocities, terrorism, corruption etc. All these actions are not ethical but immoral. Policies are decided while giving human rights. Rights are given only under policies. The rights obtained under policies make a person moral, because it is through policies that he becomes moral. Ni metal comes in the meaning of taking everyone along, moving forward and development. Niti is a feminine word, which also means the way of behavior, the method of good conduct, the flow of good thoughts. Therefore, policy is that which connects with practicality, guides on the path of benefit, and makes public decorum flow.

Practically speaking, one's own interests are served. The pain and suffering of others goes away. The policy which brings about protection of the nation, progress, welfare of living beings and peace is called public policy or religious policy. Due to which there are four varnas: Brahmin, Kshatriya, Vaishya and Shudra. Brahmacharya, Grahastha Van Prastha, and Sanyasa form are the four Ashrams. The methods by which the four efforts of Dharma, Artha, Kama and Moksha are achieved are called spiritual policy. The aim of policy and customs is to provide worldly and transcendental happiness to humans. Policies provide not only worldly happiness and peace but also transcendental happiness. Those policies which do not allow this type of happiness and peace to be achieved cannot be considered as human rights; those policies which take the society, family and country on the path of progress while carrying out the practical work of the world well, are called policies. Is. Policy works as the father's finger to guide the child, that is why learned people follow policy. On the basis of policies, we walk bound by the thread of honor and decorum.

नीतियों के मार्ग पर चलने से समाज और राष्ट्र सुधरता है। संस्कार और संस्कृति की रक्षा होती है। अतः उन सब की आधार शिला नीति है। नीतिवान पुरुष नैतिक कहलाता है। नैतिकता मानव के व्यवहार और आचरण को नियंत्रित करके सुव्यवस्थित एवं संतुलित बनाती है। नैतिकता स्वस्थ्य परम्पराओं का विकास और संरक्षण करती है। नैतिकता के बिना सभ्य समाज की कल्पना करना व्यर्थ है। उचित और अनुचित, करणीय और अकरणीय, हेय और उपादेय का माप दण्ड नैतिकता है। नैतिकता को समाज द्वारा स्वीकृत किया जाता है। जिसे समाज द्वारा स्वीकृत नहीं किया जाता उसे नीति के अंतर्गत नहीं लिया जा सकता। मानवीय स्वतंत्रता, मानवीय कल्याण, आत्मबल, आत्महित, आत्मनिष्ठा, होना ही नैतिकता का लक्ष्य होता है, इसीलिए इसे समाज से प्रथक नहीं किया जा सकता। उसके बिना अच्छी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसे नैतिक मूल्यों की प्रतिपादक. कृतियाँ ही समाज की हित साधक होनेसे सत् साहित्य कहलाती है ऐसे सत् साहित्य की रचना जैनाचार्यों ने की है। मानवाधिकार और कर्तव्य पर दिये गये उपदेश लिपिबद्ध होने पर सत् साहित्य कहलायेगा।

नैतिकता से पुण्य की प्राप्ति होती है, पुण्य से राजसम्पदायें, उच्चकुल, पाण्डित्य, दीर्घायु, सुन्दर और स्वस्थ्य शरीर, भोग और उपभोग की सामग्री इत्यादि की प्राप्ति होती है, अन्त में स्वर्ग और मोक्ष की सिद्धि में भी कारण बनती है। इस नैतिकता से संचित पुण्य का फल दिखाने के लिये अर्थ और काम पुरुषार्थ का वर्णन भी धर्म कथाओं के माध्यम से धर्म शास्त्रों में किया जाता है। यदि अर्थ और काम की कथा, धर्म कथा से रहित हो तो वह विकथा कहलाती है जो पापाश्रव का कारण होने से दुख ही देती है। जबकि नैतिक धर्म रूपी वृक्ष में अर्थ की प्राप्ति उसके फल है। काम पुरुषार्थ उन फलों का रस है। धर्म, अर्थ और काम यह त्रिवर्ग हैं। त्रिवर्ग की सिद्धि नैतिक धर्म से होती है। नैतिक धर्म वही है जिसमें श्रद्धा रूपी जड़ होती है। जो दया रूपी जल से सिंचित होती है। जो हिंसा, ईष्या, झूठ, छल, कपट, आदि खर पतवार से रहित होता है। जो सत्य, अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इत्यादि शाखा और उपशाखाओं से सहित होता है। जो मैत्री, प्रमोद, करुणा, माध्यस्थ और दान पूजा रूपी पत्तियों से हरा भरा होता है। जो शील संयम, कुलाचार, आदि से सहित होता है। ऐसा नैतिक धर्म मानव समाज को मूल्यवान् उपयोगी और महान बनाता है। ऐसे नैतिक मूल्य से युक्त मानव को ही राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आदि अधिकारों के न्याय नीति निर्धारण का अधिकार होना चाहिये।

By following the path of policies the society and nation improves. Values and culture are protected. Therefore, the foundation stone of all of them is policy. A person with moral values is called moral. Morality controls human behavior and conduct and makes it orderly and balanced. Morality develops and preserves healthy traditions. It is meaningless to imagine a civilized society without morality. Morality is the measure of what is right and wrong, causeable and uncaused, deserving and meritorious. Morality is accepted by the society. What is not accepted by the society cannot be taken under policy. Human freedom, human welfare, self-confidence, self-interest, self-respect are the goals of morality, that is why it cannot be separated from society. A good society cannot be imagined without it. Only the works that expound such moral values and seek the welfare of the society are called true literature. Such true literature has been composed by Jainacharyas. When the sermons given on human rights and duties are written down, they become true. These will be called a good literature.

Morality leads to virtue, virtue leads to royal wealth, high family status, erudition, long life, beautiful and healthy body, enjoyment and material for consumption etc., ultimately it also leads to attainment of heaven and salvation. To show the fruits of virtue accumulated through this morality, the meaning of artha and kam purushartha are also described in religious scriptures through religious stories. If the story of artha and kaam is devoid of religious story, then it is called Vikatha which only causes sorrow due to being the cause of sinful reactions. Whereas the attainment of meaning in the tree of moral religion is its fruit. Kama is the juice of those fruits of effort. Dharma, Artha and Kama are the three categories. Trivarga is accomplished through moral religion. Moral religion is the one which has the root of faith. Which is irrigated with the water of kindness. Which is free from violence, jealousy, lies, deceit, etc. Which includes branches and sub-branches like truth, non-violence, nonchalance, celibacy and non-attachment etc. Which is green with leaves of friendship, joy, compassion, mediation and charity, worship. Which includes modesty, restraint, good manners, etc. Such moral religion makes human society valuable, useful and great. Only a human being with such moral values should have the right to decide the justice policy for national, social, economic, cultural, political etc.

मानव अधिकारों का वर्गीकरण

1. नागरिकता का अधिकार–: मानव को इस अधिकार के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीने का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, न्यायालयों में अपने पक्ष को समानता से व्यक्त करने का अधिकार, दासता और अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठाने का अधिकार। इन नागरिक अधिकारों को हमारे देश में मान्यता दी गयी है।

2. सामाजिक अधिकार–: एक–एक नागरिक मिलकर समाज बनता है, इसीलिए व्यक्ति–व्यक्ति मिलकर जो एक समूह बनता है उस समूह को समाज कहते हैं। समाज अपने अधिकारों की मांग रखने लगता है। उन मांगों के आधार पर सामाजिक सुरक्षा का अधिकार, जीवन निर्वाह के लिये पर्याप्त संसाधनों का अधिकार, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का अधिकार तथा शिक्षा का अधिकार दिया गया है।

3. राजनैतिक अधिकार–: राजनैतिक अधिकार वे अधिकार हैं जिनके माध्यम से मानव राज्य की राजनीति में सक्रियता से भागीदारी निभा सके और अपना सहयोग प्रदान कर सके। यह अधिकार सिर्फ उस राज्य के नागरिकों को ही प्रदान किये जाते हैं। राजनैतिक अधिकारों के अंतर्गत अपने विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार, अपने अभिमत, वोट डालकर समर्थन करने का अधिकार, सम्मेलन करने का अधिकार, संघ पार्टी बनने का अधिकार, निर्वाचित होने का अधिकार दिया गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि नागरिक, सामाजिक और राजनैतिक अधिकारों के कारण से ही राजतांत्रिक प्रणाली के स्थान पर लोक तांत्रिक प्रणाली प्रारम्भ हुई है, क्योंकि राज्य का प्रत्येक नागरिक निर्वाचित होकर अपना अधिकार जमाना चाहता है। अधिकार जमाना मानव का जन्मजात स्वभाव रहा है। जब बालक का जन्म होता है तो वह किसी वस्तु पर अधिकार जमाने के लिये, वस्तु को प्राप्त करने के लिए रोता है, चिल्लाता है, सिर पटकता है और अनेक प्रकार से हरकते करते हुए अपने परिजनों से अधिकार पूर्वक इष्ट वस्तु प्राप्तकर लेता है। इससे सिद्ध होता है कि अधिकार प्राप्त करना मानव का जन्म सिद्ध अधिकार है।

Classification of Human Rights

1. Right to Citizenship: Under this right, human beings have Right to live with dignity, right to freedom, right to express one's side equally in courts, right to raise voice against slavery and oppression. These civil rights have been recognized in our country.

2. Social Rights: Every citizen together constitutes a society, that is why the group formed by individuals is called society. Society starts demanding its rights. On the basis of those demands, right to social security, right to adequate resources for subsistence, right to physical and mental health and right to education have been given.

3. Political Rights: Political rights are those rights through which human beings can actively participate in the politics of the state and provide their support. These rights are provided only to the citizens of that state. Under political rights, right to freedom of expression of one's thoughts, right to support one's opinion by voting, right to hold conference, right to form a union party and right to be elected have been given.

It seems that due to civil, social and political rights, the Lok Tantrik system has started in place of the democratic system, because every citizen of the state wants to establish his authority by getting elected. It is human's innate nature to assert authority. When a child is born, he cries, screams, bangs his head and does various kinds of activities to get the desired thing from his family members in order to gain control over it. This proves that getting rights is the birth right of human beings.

4. आर्थिक अधिकार–: प्रत्येक मानव को अपने जीवन–यापन के लिये अन्न, जल और धन दौलत की आवश्यकता होती है। रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति के लिये खेती–बाड़ी और धन–दौलत की आवश्यकता होती है। उसे प्राप्त करने के लिये व्यवसाय और मेहनत से काम करना अनिवार्य होता है, इसलिए आर्थिक अधिकारों के अंतर्गत व्यवसाय चुनने का अधिकार, काम करने का अधिकार, श्रम नौकरी करने का अधिकार, श्रम संघ (मजदूर संघ) बनने एवं उसमें सम्मलित होने के अधिकारों को लिया गया है। समान कार्य करने पर समान परिश्रम प्राप्त करने का अधिकार।

5. सांस्कृतिक अधिकार–: जब मानव किसी देश या राज्य का नागरिक हो जाता है। वह समाज के बीच रहने लगता है और अपने जीवनयापन के लिये आर्थिक अधिकारों एवं राजनैतिक अधिकारों को प्राप्त कर लेता है तब उसके जीवन में सांस्कृतिक अधिकारों को प्राप्त करने की बात आ जाती है। अतः सांस्कृतिक अधिकारों के अंतर्गत साहित्य रचने, पढ़ने और पढ़ाने का अधिकार, सांस्कृतिक जीवन में भाग लेने का अधिकार, वैज्ञानिक प्रगति और उसके उपभोग करने का अधिकार दिया गया है।

6. धार्मिक कृत्य करने का अधिकार।

7. पर्यावरण सुरक्षा का अधिकार।

8. बाल एवं महिला विकास अधिकार।

9. रोजगार प्राप्ति का अधिकार।

10. क्षति पूर्ति का अधिकार।

11. अल्प संख्यक अधिकार।

12. गरीब एवं पिछड़े वर्गों का अधिकार।

13. विकलांग, दिव्यांग एवं कैदियों के अधिकार

14. शरणार्थियों के अधिकार।

15. सूचना के आदान प्रदान का अधिकार।

ऐसे अनेक अधिकार इस लोक तांत्रिक प्रणाली के अंतर्गत समय की मांग को दृष्टिगत् रखते हुए दिये गये है।

4. Economic Rights: Every human being has the right to earn his living. For this, food, water and wealth are required. To supply food, clothing and shelter, farming and wealth are required. To achieve this, it is necessary to work hard and professionally, hence economic rights include the right to choose a business, the right to work, the right to do a labor job, the right to form and join a labor union. Has been taken. The right to receive equal labor for doing equal work.

5. Cultural rights: When a human being belongs to a country or state Becomes a citizen. He starts living among the society and acquires economic rights and political rights for his living, then the question of acquiring cultural rights comes in his life. Therefore, under cultural rights, the right to create, read and teach literature, the right to participate in cultural life, the right to scientific progress and its consumption have been given.

6. Right to perform religious activities.

7. Right to environmental protection.

8. Child and women development rights.

9. Right to employment.

10. Right to compensation.

11. Minority rights.

12. Rights of the poor and backward classes.

13. Rights of handicapped and prisoners

14. Rights of refugees.

15. Right to exchange information.

There are many such rights under this Lok Tantrik system. It has been given keeping the demand of person in mind.

आचार्य जिनसेन स्वामी ने आदिपुराण ग्रंथ के 42 वे सर्ग के चौथे श्लोक में राजा के लिये पाँच नैतिक अधिकारों की चर्चा की है।

तच्चेदं कुल मत्यात्म, प्रजानामनुपालनाम्।
संञ्जसत्वं चेत्ये व, मुदिष्टं पंचभेदभाक्।।

अपने कुल के पालन का अधिकार, आत्मरक्षा का अधिकार, प्रजा की रक्षा का अधिकार, देश में विभिन्न जाति एवं धर्म के लोगों के साथ सामंजस बनाकर रखने का अधिकार एवं अन्य देशों के राजाओं से सामंजस बनाकर रखने का अधिकार, अपनी विवेक, बुद्धि से निर्णय लेने का अधिकार।

मानव एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहकर ही व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, परिवार, देश और समाज का विकास कर सकता है। समाज के बीच में रहकर अपने अन्दर अन्तर्निहित शक्तियों का विकास कर सकता है। समाज में रहकर ही मानव चहुँमुखी विकास कर सकता है। समाज के बिना एक व्यक्ति अलग–थलग रहकर असहाय और अर्थहीन हो जाता है। समाज के बिना व्यक्तिगत अधिकारों की बात करना बांझ स्त्री के पुत्र जैसी है अथवा रात्रि में सूर्य के निकलने जैसी बात है। जबकि ऐसा होना असम्भव है। अतः व्यक्तित्व के विकास एवं आर्थिक समृद्धि आदि के लिये समाज में रहना आवश्यक है। जो सिद्धान्त लोकतांत्रिक एवं लोक कल्याण के होते हैं वे सिद्धान्त मानव अधिकारों को और अधिक महत्वपूर्ण बना देते हैं।

मानव को प्रकृति द्वारा प्रदत्त अनेक प्रकार के मूलभूत अधिकार प्राप्त हैं। कुछ अधिकारों का पालन प्रत्येक मनुष्य कर रहा है, जबकि उन्हें उन अधिकारों का न तो ज्ञान है और ना ही इस संबंध में उन्हें शिक्षा दी जा रही है। मानव अधिकारों के बिना मनुष्य की जिन्दगी पशु तुल्य हो जाती है। अधिकार मानव को गरिमा और सम्मान प्रदान करते हैं। चाहे बालक हो या वृद्ध, निम्न हो या उच्च, अमीर हो या गरीब, लेकिन मानव अधिकार सभी की गरिमा की रक्षा करते हैं। यदि कोई गरिमा का ध्यान नहीं रखता तो मानहानि का दावा पेश किया जा सकता है क्योंकि प्रत्येक मानव के अन्दर वही शक्ति, ज्ञान, और भगवत्ता विद्यमान है। इसीलिए सब समान है। इस समानता का अधिकार आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने **''सव्वे सुद्धा हू शुद्धनयः** यह सूत्र लिख कर दिया है। बिना भेदभाव के किसी जाति, प्रजाति, लिंग, भाषा, रंग, और धन से मानवाधिकार प्राप्त है क्योंकि सभी व्यक्ति निश्चय नय से सिद्ध समान है, स्वतंत्र है और सभी आत्माओं का परिणमन स्वतंत्र है।

Acharya Jinsen Swami has discussed five moral rights for the king in the fourth verse of the 42nd canto of the book Adipuran.

Tachchedam Kul Matyatma, Prajnamanupalanam.
Sanjsatvam Chetye and Mudishtam Panchbhedbhaak.

The right to follow one's clan, the right to self-defense, the right to protect the people, the right to maintain harmony with people of different castes and religions in the country and the right to maintain harmony with the kings of other countries, take decisions based on one's discretion and intellect.

Man is a social animal, only by living in society a person can develop his personality, family, country and society. By living among the society, one can develop the inherent powers within oneself. Man can develop all round only by living in society. Without society a person becomes isolated, helpless and meaningless. Talking about individual rights without society is like having a son of a barren woman or like the sun rising at night. Whereas this is impossible. Therefore, it is necessary to live in society for personality development and economic prosperity etc. The principles which are democratic and for public welfare make human rights more important.

Human beings have many types of fundamental rights provided by nature. Every human being is following some rights, while they neither have the knowledge of those rights nor are they being given education in this regard. Without human rights, human life becomes like that of an animal. Rights provide dignity and respect to human beings. Be it child or old, low or high, rich or poor, human rights protect the dignity of everyone. If someone does not take care of dignity then a defamation claim can be filed because the same power, knowledge, and divinity are present within every human being. That's why everything is equal. Acharya Kundakunda Swami has written the sutra "Savve Bhool Hu Shuddhanayah" regarding the right to equality. Human rights are available without any discrimination to any caste, race, sex, language, color and wealth because all people are definitely equal. Is free and the transformation of all souls is free.

मानव के पास सोचने, समझने और निर्णय लेने की शक्ति है। इस शक्ति के कारण उसे अपने भले–बुरे, नैतिक–अनैतिक आदि निर्धारण करने का स्वतंत्र अधिकार है। प्रत्येक देश और समाज में संवैधानिक नियम कानून को पालने का अधिकार व्यवहारिक रूप से मानव को प्राप्त है। उन नियम कानूनों का द्रव्य, क्षेत्र, काल के परिवर्तन होने पर अधिकारों एवं कानूनों में परिवर्तन होता रहा है और होता रहेगा। अलग–अलग शासक अलग–अलग समय और क्षेत्र में मानव अधिकार के सिद्धातों में परिवर्तन करते रहे हैं, क्योंकि ये अधिकार मानव द्वारा बनाये जाते हैं एवं उन्हीं के द्वारा परिवर्तित किये जाते है। प्रकृति प्रदत्त अथवा यूं कहे परमात्मा द्वारा प्रदत्त मूल अधिकारों में कोई परिवर्तन नहीं होता है। एक निश्चित सीमा और द्रव्य, क्षेत्र, काल के अंतर्गत बनाये गये अधिकारों का पालन आवश्यक है। अन्यथा समाज में अव्यवस्था और अराजकता फैलने का संशय बना रहता है। रात्रि में विश्राम करना, दिन में कार्य करना यह सार्वभौमिक प्राकृतिक कानून है। जो मानव के मूल अधिकार के अंतर्गत आता है।

मानवाधिकार सार्वभौमिक रूप से लागू करना एक जटिल कार्य हैं। क्योंकि इसको लेकर काफी मतभेद थे, हैं और रहेंगे। इन अधिकारों को लेकर अनेक युद्ध हुए, देश के विभाजन हुए, पार्टियाँ बनी, राजनीति हुई, परिवार और समाज में विभाजन हुए, वर्तमान में भी हो रहे हैं। जहाँ अधिकारों का अतिक्रमण किया जाता है वहाँ ऐसी घटनायें होना स्वाभाविक है।

मानवाधिकार दोहरी नीतिगत प्रक्रिया है। एक तो राजा द्वारा प्रजा के लिये प्रतिबद्धता दिखाकर सुरक्षा एवं सुविधा की व्यवस्था करना और दूसरी तरफ प्रजा द्वारा राजा से अपनी सुख सुविधा और सुरक्षा आदि की मांग करना। मानवाधिकार जितना व्यवहारिक होता है और नियम कानून से बंधा होता है मानव समाज उतना अधिक विकासशील होता चला जाता है। अधिकार और कर्तव्य उतने अधिक वास्तविक रूप से क्रियान्वित होते चले जाते हैं। जब मानवाधिकार के नियम व्यवहारिक कम होते हैं, तब प्रजा द्वारा आन्दोलन चलाये जाने लगते हैं। आन्दोलन अन्दर और बाहर से हलचल मचा देते हैं। जो अन्दर और बाहर दोनों ओर से हल चल मचा दे उसे ही तो आन्दोलन कहते हैं।

अधिकारों का सिद्धान्त प्रकृति की देन है। प्रकृति प्रदत्त अधिकार स्वयं स्वतंत्र जीवन जीने और दूसरों को जीवन जीने देता है। जब देश के राजा द्वारा नियम कानून बनाकर अधिकारों के साथ छेड़–छाड़ की जाती है और अन्य अधिकार मिल जाते हैं अथवा छीन लिये जाते हैं अथवा रोक लगा दी जाती है तो आन्दोलन एवं लड़ाई झगड़े प्रारम्भ हो जाते हैं।

Human beings have the power to think, understand and take decisions. Because of this power, he has the free right to decide what is good and bad, moral and immoral etc. In every country and society, humans practically have the right to follow constitutional rules and laws. As the substance, scope and time of those rules and regulations change, the rights and laws have been and will continue to change. Different rulers have been changing the principles of human rights in different times and regions, because these rights are created by humans and are changed by them. There is no change in the fundamental rights given by nature or in other words given by God. It is necessary to follow the rights created within a certain limit and subject to matter, area and time. Otherwise there remains a possibility of chaos and anarchy spreading in the society. Rest at night and work during the day is a universal natural law. Which comes under the basic rights of human beings.

Implementing human rights universally is a complex task. Because there were, are and will remain a lot of differences regarding this. Many wars took place regarding these rights, the countries was divided, parties were formed, politics took place, divisions took place in the family and society, which are happening even today. It is natural for such incidents to happen where rights are encroached upon.

Human rights is a dual policy process. On one hand, the king shows commitment and arranges security and facilities for his subjects and on the other hand, the subjects demand from the king for their comforts, facilities, security etc. to do. The more human rights are practical and are bound by rules and regulations, the more human society becomes developing. Rights and duties become more realistically implemented. When the rules of human rights become less practical, then movements start being launched by the people. Movements create turmoil from within and without. Only that which creates a stir both internally and externally is called a movement.

The principle of rights is a gift of nature. The right given by nature is to live an independent life and allow others to live their lives. When the rights are tampered with by making rules and regulations by the king of the country and other rights are granted or taken away or restricted, then movements and fights start.

प्राकृतिक अधिकार और कर्तव्य कालांतर में इतिहास बन जाते हैं, वे रीति–रिवाज और प्रथाओं में बदल जाते हैं। वही रीति–रिवाज परंम्परा और प्रथा कालांतर में अधिकारों का रूप लेती रही है, वही ऐतिहासिक अधिकार कहे जाने लगते हैं।

सभी अधिकार नैतिकता से युक्त जीवनोपयोगी और जनहितकारी होना चाहिये। यदि उसके विरूद्ध हो तो उन अधिकारों को समाप्त कर दिये जाना चाहिये। अधिकार हमेशा आदर्शवादी और स्पष्टवादी होना चाहिये। यही जैन धर्म एवं दर्शन का मत है। भारतीय मानवाधिकार प्रकृति और द्रव्य, क्षेत्र, काल के रीति, रिवाज, परम्परा और प्रथा से चलते हैं। पाश्चात्य मानवाधिकार राजनीति से प्रेरित नियम कानून से चलते हैं। लेकिन इस संबंध में जैन दर्शन की उदारवादी विचारधारा रही है।

आदिनाथ स्वामी के पुत्र भरत चक्रवर्ती ने जब चतुर्थ ब्राह्मण वर्ण की स्थापना की और दान, पूजा, हवन, यज्ञ आदि करने के विशेष अधिकार दिये तब ब्राह्मण वर्ण के प्रधान नियुक्त किये गये। भरत चक्रवर्ती के पुत्र मारीचि ने प्रधान पद को प्राप्त किया लेकिन उसने पद और प्राप्त अधिकारों का दुरूपयोग करना प्रारंम्भ कर दिया। यहां तक कि अपने दादा आदिनाथ का भी अप्रत्यक्ष रूप में विरोध करने लगे, अन्य वर्ण वालों को नीचा दिखाने लगे। मारीचि स्वयं कट्टरवादी बन गया। ऐसी स्थिति में अहिंसावादी, साम्यवादी, और उदारवादी लोगों ने उसका विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। इससे स्पष्ट है कि योग्य व्यक्तियों को विशेष अधिकार देना चाहिये। कभी–कभी राजाओं के राज्यकाल में युवराज आचरणहीन, अज्ञानी अथवा हठवादी होने से प्रजा द्वारा विरोध किया गया और उनके अधिकारों को समाप्त करने की मांग उठने लगी, अन्य लोग अधिकार मांगने लगे, यहीं से मानवाधिकारों की विशेष अवधारणा का उदय हुआ था।

वर्तमान में मानवाधिकार पर साहित्य लिखा जा रहा है, शिक्षा दी जा रही है और विश्वव्यापी संयुक्तराष्ट्र संघ की अंतर्राष्ट्रीय महासभा की स्थापना भी हो चुकी है जो निरंतर विकसित होती चली जा रही है, सार्वभौमिक घोषणायें की जा रही है, नियम कानून बनाये जा रहे हैं और 30 अनुच्छेद अभी तक बनाये जा चुके हैं। लगभग 100 वर्षों में प्रायः सभी देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्थायें चल रही हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में प्रजा द्वारा अधिकारों की मांग ज्यादा उठने लगी है और आन्दोलन भी होने लगे हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के आने से अधिकारों के प्रति लोगो में जागृति आई है। लोग अपने कर्तव्यों और अधिकारों को समझने लगे हैं, मानवाधिकारों का चरम सीमा पर विकास हुआ है। बच्चे भी अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों को समझने लगे हैं। भले ही मानव का अर्थ ना जानते हों।

Natural rights and duties become history with time, they turn into customs and practices. The same customs, traditions and traditions have been taking the form of rights over time and they are being called historical rights.

All rights should be useful for life and of public interest, with morality. If it is against humanity then those rights should be abolished. Authority should always be idealistic and forthright. This is the opinion of Jain religion and philosophy. Indian human rights are governed by the nature and substance, customs, traditions and customs of the region and time. Western human rights are governed by politically motivated rules and regulations. But Jain philosophy has a liberal ideology in this regard.

When Bharat Chakraborty, son of Adinath Swami, established the fourth Brahmin varna and gave special rights to perform charity, worship, havan, yagya etc., then he was appointed the head of the Brahmin varna. Marichi, son of Bharat Chakravarti, attained the post of chief but he did not give up the post and the rights he had received.

He started misusing power. He even indirectly started opposing his grandfather Adinath and started demeaning people of other castes. Marichi himself became a fundamentalist. In such a situation, non-violent, communist and liberal people started opposing him. It is clear from this that deserving people should be given special rights. Sometimes during the rule of kings, the people protested because the crown prince was unbehaved, ignorant or stubborn and the demand for abolishing his rights started rising, others started demanding rights, it was from here that the special concept of human rights emerged.

At present, literature on human rights is being written, education is being given and the International General Assembly of the worldwide United Nations has also been established which is continuously developing, universal declarations are being made, rules and regulations are being made. Another 30 articles have been made so far. For the last 100 years, democratic systems have been running in almost all the countries. In democratic systems, people have started demanding more rights and movements have also started taking place. With the advent of democratic systems, people have become aware of their rights. People have started understanding their duties and rights, human rights have developed to their utmost extent. Children have also started understanding their rights and duties. Even if Children don't know the meaning of human.

मानव का अर्थ

संसार के सभी प्राणियों से अधिक बुद्धि, सुन्दर शरीराकृति, मन, वचन एवं काय बल मानव में पाया जाता है। इसी की दृष्टि से मानव महान है। इस महानता के कारण हम मानव कहलाते हैं। मानव को परिभाषित करते हुए–

''पंचसंग्रह'' में कहा है कि–

''मण्णंति जंदो णिच्चं मणेण णिउणा जदो दु ये जीवो।
मण डक्कडा य जम्हा ते माणुसा भणिया।।''

जो अपने मन, इंन्द्रिय और ज्ञान से हेय–उपादेय, तत्त्व–कुतत्त्व, धर्म और अधर्म का विचार करने में सर्वाधिक निपुण होता है, उसे मानव कहते हैं।

आचार्य नेमिचन्द सिद्धान्त चक्रवर्ती महाराज ने गोम्मटसार जीव काण्ड में मनुष्य को परिभाषित करते हुए लिखा है

मण्णंति जदा णिच्चं, मणेण णि उणा मणुक्कडा जम्हा।
मण्णुब्भवा य सव्वे, तम्हा ते माणुसा भणिदा।।

जो हमेशा हेय–उपादेय को जानते हैं, शिल्प वाणिज्य आदि कलाओं में प्रवीण हैं, तत्त्व के धारणा आदि का दृढ़ उपयोग वाले हैं और जो मनु की सन्तान है वही मानव या मनुष्य कहलाते हैं।

मानव की उपयोगिता के संबंध में जैनाचार्यों ने लिखा है

''मणुवगईए वि तओ मणवुगईए महव्वदं सयलं।
मणुवगदीए झाणं, मणुव गदीए विणिव्वाणं।।

मनुष्य महान इसीलिए है कि महाव्रत, संयम को धारण कर सकता है, अपने मन को एकाग्र करके उत्कृष्ट योग ध्यान को प्राप्त कर सकता है और मोक्ष सुख की प्राप्ति भी सिर्फ मनुष्य ही कर सकता है।

राजा श्रेष्ठो मनुष्याणां, मृगाणां केसरी यथा।
पक्षिणां विनता पुत्रो भवानां मानुषो भवः।।

नृपेषु चक्री त्रिदशेषु वज्री मृगेषु सिंहः प्रशमो व्रतेषु।
मतो महीभृत्सु सुवर्ण शैली भवेषु मानुष्य भवः प्रधानः।।

Meaning of Human

More intelligence, beautiful physique, mind, speech and physical strength are found in humans than all the living beings in the world. From this point of view man is great. Because of this greatness we are called human. Defining human being-

Man dakkada ya jamha te manusa bhaaniya. , ,

It is said in "Panchsangraha" that-

"Mannanti jando niccham manen niuna jado du ye jeevo.

The one who is most adept in considering the merits and demerits, principles and evils, righteousness and unrighteousness through his mind, senses and knowledge is called a human being.

Acharya Nemichand Siddhant Chakraborty Maharaj has written while defining human being in Gomatsar Jeev Kand.

Mannanti jada niccham, manen ni una manukkada jamha.
Mannubhava ya savve, tamha te manusa bhanida.

Those who always know the merits and demerits, are proficient in the arts like craft, commerce etc., have firm use of the perception of elements etc. and those who are the children of Manu are called human beings.

Jainacharyas have written regarding the utility of human beings

"Manuvagaiya vi tao manavugaiya mahavadam saylam.
Manuvagadiye jhanam, manuvgadiye vinivvanam.

Man is great because he can observe Mahavrata and self-restraint.

Only a human being can achieve excellent yoga meditation by concentrating his mind and can also attain the happiness of salvation.

Raja Shrestho Manushanaam Mrigaanaam Kesari Yatha.
Pakshinam vinata putro bhavanam manusho bhava.

Nripeshu Chakra Tridasheshu Vajri Mrigeshu Singh: Prashmo Vrateshu.

Mato mahibhritsu golden style bhaveshu manushya bhavah pradhanah

यथैव मेरूः प्रवरो गिरीणां जलाशयानामुदधिर्विशिष्टा।
गोशीर्श वृक्षस्तरूषु प्रधानस्तथा भवानां मनुजत्वमाहुः।।

जैसे मनुष्यों में राजा, पशुओं में सिंह, पक्षियों में गरूड़, राजाओं में चक्रवर्ती, देवताओं में इन्द्र, पर्वतों में सुमेरू पर्वत, समुद्रों में क्षीर समुद्र, वृक्षों में चन्दन श्रेष्ठ है वैसे ही सभी प्राणियों में मनुष्य और सभी भवों में मनुष्य भव महान है। यह मनुष्य भव मिलना अति दुर्लभ है। जैन संस्कृति के अनुसार प्रत्येक चेतना का स्वर आध्यात्मिकता है। मनुष्य न सिर्फ शरीर है, न मन और न वचन बल्कि मनुष्य एक आत्मा है। मनुष्य का सम्पूर्ण विकास उत्तम भोग की प्राप्ति और अधिकारों की पूर्णता तभी सम्भव है जब वह शारीरिक, मानसिक, वाचनिक और आध्यात्मिक रूप से पूर्ण विकसित हो, यदि नहीं हुआ तो सारा लोक आपदाओं से भर जावेगा।

दयोदय महाकाव्य में जैनाचार्य ज्ञानसागर महाराज ने कहा भी है।

द्यूत–मांस–मदिरा–परांगन–पष्यदार मृगया चुराश्चना।
नास्तिकत्वमपि संहरेत्तरामन्यथा व्यसन संकुला धरा।।

अर्थात्– जो मनुष्य जुआ खेलता है, मांस खाता है, मदिरापान करता है, परस्त्री में रमण करता है, वेश्या गमन करता है, शिकार करता है, चोरी करता है, और नास्तिकपने के आचरण को धारण करता है। वह इस भूमण्डल को अनेक प्रकार की आपदाओं से भर देता है तथा स्वयं भी दुखी रहता है। इसलिये ऐसे आचरण को त्यागना चाहिये और आध्यात्मिकता को धारण करना चाहिये, तभी समस्त अधिकारों को प्राप्त कर सकता है और विकास कर सकता है। आचरणहीन नास्तिक मानव से संसार के सभी जीवों को खतरा है। यहाँ तक कि ऐसे मनुष्य से सम्पूर्ण मानव जाति को भी खतरा है। ऐसे आचरण हीन नास्तिक मानव दुर्दान्त, दानव, बर्वर, पशु, पत्थर से कठोर हृदय वाले बन जाते हैं और आतंकवादी बनकर नरभक्षी बन जाते हैं। मानव से दानव होना मानव जीवन की हार है। महामानव होना चमत्कार है। महाऋषि बन जाना जीत है और उसे नमस्कार है।

Just as Meru is the best of mountains and the ocean is the best of reservoirs

Goshirsh Vrikshastarushu Pradhanstatha Bhavanaam Manujatvamahuh.

Just as the king is the best among humans, the lion among animals, Garuda among birds, Chakravarti among kings, Indra among gods, Sumeru mountain among mountains, milky ocean among oceans, sandalwood among trees, similarly man is the greatest among all living beings and may man be the greatest among all beings. . It is very rare to get birth human being. According to Jain culture, the voice of every consciousness is spirituality. Man is not just a body, nor mind nor speech, but man is a soul. Complete development of man, attainment of best enjoyment and fulfillment of rights is possible only when he is fully developed physically, mentally, verbally and spiritually, if not then the whole world will be filled with disasters.

Jainacharya Gyansagar Maharaj has also said this in Dayodaya epic.

Gambling- meat-alcohol- parangan- pashyadar mrigaya churaschana.

Atheism is a complex of addictions.

That is, a person who gambles, eats meat, drinks alcohol, has pleasure in another woman, goes to prostitute, hunts, steals and adopts the behavior of an atheist. He fills this earth with many types of disasters and himself also remains unhappy. Therefore, such behavior should be abandoned and spirituality should be adopted, only then one can attain all the rights and develop. All living beings in the world are in danger from the atheist human being without conduct. Even the entire human race is in danger from such a person. Atheistic humans without such conduct become vicious, demons, barbarians, animals, hard-hearted like stones and become terrorists and cannibals. Transforming a human into a demon is the defeat of human life. Being a great man is a miracle. Becoming a great sage is victory and salutations to him.

जो पुरुषार्थ को नकारते हैं, वे नाकारा कहलाते हैं। जो कर्तव्यनिष्ठ होकर पुरुषार्थ करते हैं उन्हें सभी दिल से पुकारते हैं। ऐसे मनुष्य सबको अपना दास बना लेते हैं और अधिकारों को प्राप्त कर लेते हैं। एकता में अनेकता और अनेकता में एकता देखने वाला सम्यक्दृष्टि होता है। वह समन्वय वादी होता है, दयाद्र, गुण ग्राही, आत्म हितैषी होता है और वह हटाग्रह, दुराग्रह से ऊपर उठकर सत्याग्रह को अपनाता है। ऐसे मनुष्य का व्यवहार स्वार्थ के लिये नहीं बल्कि परमार्थ के लिये भी होता है। उसका संबंध मात्र सुखी जनों से नहीं बल्कि दुखी जनों से भी होता है। ऐसा व्यक्ति जन, धन, और राष्ट्र रक्षक होता है। सही मायने में वह मानव सही कर्म करने वाला होता है।

मानव को कैसे कर्म करना चाहिये इसके संबंध में विदुर नीति के अध्याय तीन श्लोक 67, 68 में कहा है। कि–

दिवसेनौवें तत्कुर्याद् येन रात्रौ सुखं वसेत्।
अष्टमासेन तत्कुर्याद येन वर्षः सुखं वसेत्।।

पूर्वे वयसि तत्कुर्याद् येन वृद्धः सुखं वसेत्।
यावज्जीवने तत्कुर्याद् येन प्रेत्य सुखं वक्षेत्।।

प्रत्येक मनुष्य को दिन भर ऐसे कार्य करने चाहिये कि रात्रि में कोई काम न करना पड़े। रात्रि में सुख पूर्वक निश्चिन्त सो सके और सुबह अपनामुख प्रसन्नता से भरा हुआ सबको दिखा सके। पूरे वर्ष के आठ माह ऐसा उद्योग करना चाहिये कि वर्षा काल के चार माह सुख पूर्वक काट सके। आयु के पूर्वाद्ध काल में युवावस्था में ऐसे कार्य करना चाहिये कि वृद्धावस्था सुख पूर्वक गुजार सके। पूरे जीवन काल में ऐसा श्रेष्ठ आचरण करना चाहिये कि मरण के बाद अगला भव सुख–शांति पूर्वक जी सके। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने मानवाधिकार के संरक्षण हेतु यह सूत्र दिया था–

"सव्वेपाणा पियाउआ सुहसाया दुक्ख पडिकूला।
अपिय वहा पिय जीविणो जिविउ कामा।।
सव्वेसिं जीवियं पियं।।

Those who deny efforts are called worthless. Everyone appeals to those who make efforts by being dutiful. Such people make everyone their slaves and acquire rights. in unity

One who sees diversity and unity in diversity has right vision. He is a co-ordinator, compassionate, appreciative of qualities, self-interested and he rises above hatred and obstinacy and adopts Satyagraha. The behavior of such a person is not only for selfishness but also for altruism. His relation is not only with happy people but also with unhappy people. Such a person is a protector of people, wealth and nation. In true sense, that human being is one who does right deeds.

Regarding how a human being should act, it is said in Chapter 3 Verse 67, 68 of Bidur Niti. That-

दिवसेनौवें तत्कुर्याद् येन रात्रौ सुखं वसेत्

Ashtamasen Tatkuryaad Yen Varsha Sukham Vaset.

Purve vayasi tatkuryaad yena vriddhaah sukham vaset.

Yaavjjivane tatkuryaad yen pretya sukham vakshet.

Every person should work throughout the day in such a way that he does not have to do any work at night. One can sleep comfortably and carefree at night and one can show everyone one's face full of happiness in the morning. For eight months of the year, one should do such industry that four months of the rainy season can be spent happily. During youth, during the first half of life, one should do such work so that old age can be spent happily. One should behave so well throughout life that after death the next one can live happily and peacefully. The twenty-fourth Tirthankar Lord Mahavir Swami had given this formula for the protection of human rights-

"Savvepaana piyaua suhasaya dukkha padikula.

Apiya waha piya jeevino jeeviu kaama.

Drink all the living beings.

संसार के सभी प्राणियों को अपने प्राण प्रिय हैं, सभी जीव सुख चाहते हैं, दुख से डरते हैं, मरना नहीं चाहते हैं, जीने की सभी इच्छा करते हैं और सभी को अपना जीवन प्रिय है। इसलिये सबको जीने का अधिकार हैं, सभी जीवों को जीने दिया जावे, उनको सुरक्षा प्रदान की जावे, मानव निंरकुश न हो, राजा प्रजा का शोषण करने वाला न हो, राजा स्वयं जुल्मी, अत्याचारी, बलात्कारी न हो। प्रत्येक जीवात्मा का परिणमन स्वतंत्र है। स्वतंत्रता उसका स्वभाव है। बंधन, विभाव है। विभाव दुख का कारण है। निजात्म सत्ता का भान होनेपर मानव अध्यात्मवादी होता है। दूसरों के अधिकारों को प्राप्त करता है। मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य निजात्म सत्ता को पहचान कर निजात्म अधिकारों को प्राप्त करने का होना चाहिये। जब तक राज सत्ता को नहीं त्यागते तब तक निजात्म सत्ता को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

मानवाधिकारों का सार्वभौमिक घोषणा पत्र सन् 1919 में अंतर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना करके घोषित किया गया था परन्तु 2600 वर्ष पूर्व भगवान महावीर स्वामी ने अपनी निजात्म सत्ता के अधिकारों को प्राप्त करने के लिये मानवाधिकारों की इस प्रकार घोषणा की थी।

1. यदि अंतर्यात्रा, शांति और सुरक्षा चाहते हो तो मिथ्यात्व, अज्ञान आदि विरोधी तत्त्वों का निराकरण करो। आत्मा के अंदर घुसे आक्रमण कारी कर्मों को निकालो और मोह से उत्पन्न हो रहे विषय कषायों को रोको।
2. संसार के सभी जीवों के प्रति मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करो।
3. **'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'** सूत्र का पालन करो अर्थात् समस्त जीवों पर उपकार करके सहयोग की भावना रखो।
4. श्रद्धा–भक्ति और उपासना को स्वतंत्र रूप से करो।
5. सत्य भाषण से वास्तविक तत्त्वों की अभिव्यक्ति करो।
6. भय, आशंका आदि से मुक्त होकर निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा आदि अष्ट गुणों को धारण करो।
7. अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह रूप पाँच महाव्रतों का पालन करो।
8. ईर्या, भाषा, एषणा, आदान–निक्षेपण, और प्रतिष्ठापन आदि पाँच समितियों का पालन करो।

All the living beings in the world love their life, all the living beings want happiness, are afraid of sadness, do not want to die, all wish to live and all love their life. Therefore everyone has the right to live, everyone living beings should be allowed to live, they should be provided security, humans should not be autocratic, the king should not exploit the people, the king himself should not be a tyrant, a tyrant or a rapist. The evolution of every soul is independent. Freedom is his nature. There is a bond, a potential. Potential is the cause of suffering. When a person becomes aware of his personal existence, he becomes a spiritualist. Receives the rights of others. The ultimate goal of human life should be to recognize individual existence and attain individual rights. Unless one gives up royal power, one cannot attain personal power.

The Universal Declaration of Human Rights was declared by the establishment of the International Organization in 1919, but 2600 years ago, Lord Mahavir Swami had declared human rights in this way to achieve the rights of his individual power.

1. If you want inner journey, peace and security then eliminate the opposing elements like falsehood, ignorance etc. Remove the aggressive karmas that have entered the soul and stop the sensual desires arising from attachment.
2. Establish friendly relations towards all living beings in the world.
3. 'Follow the sutra 'Parasparopgrahaho Jeevanam' *i.e.* all Have a spirit of cooperation by doing a favor to living beings.
4. Do devotion and worship freely.
5. Express real facts through truthful speech.
6. Be free from fear, apprehension etc. and adopt the eight qualities of being free from doubt, without desire, without attachment etc.
7. Follow the five great vows of non-violence, truth, non-observance, celibacy and non-celibacy.
8. Follow five committees like jealousy, language, desire, exchange, deposit and establishment.

महिला मानव अधिकार

मानव के लिये गरिमामय जीवन जीने की आधारशिला का काम नारी करती है इसलिये पुरुष की तरह ही नारी को भी व्यक्तिगत विकास, खुशहाली और व्यक्तित्व विकास के लिये अधिकार और स्वतंत्रता दी जाती रही है। उसी के लिए वर्तमान में महिला मानवाधिकार भी गठित कर दिया गया है। जिसके अंतर्गत महिलावादी चिंतन, आन्दोलन, विचारधारा, अवधारणा, संस्कृति, इतिहास, समाज और राजनीति के धरातल पर उतारने का प्रयास किया गया है। महिलाओं को सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षणिक आदि अनेक अधिकार महिला अधिकार के अंतर्गत आते हैं जो महिलाओं के उचित गुण, शक्ति, प्रकृति, और बुद्धि के आधार पर प्रदान किये गये हैं। युद्ध संबंधि, श्रमिक संबंधि, शासन एवं प्रशासन संबंधि, देश की रक्षा, सूचना प्रसारण, जनकल्याण एवं मानवतावादी इत्यादि अनेक अधिकार इस युग में दिये जा रहे हैं। इतिहास के पन्नों पर महिलाओं के द्वारा किये गये ऐतिहासिक, सांस्कृतिक अनेक कार्य अंकित किये गये हैं। जैनधर्मानुसार ब्राह्मी, सुन्दरी, चन्दनवाला, अन्जना, सुलोचना इत्यादि के नाम इतिहास के पन्नों में अंकित हैं।

भारतीय नारियों के संबंध में नीति लिखी गई है कि जहाँ नारियों को पूजा जाता है वहाँ देवता निवास करते हैं। यहाँ पूजा का अर्थ जल चन्दन आदि अर्घ चढ़ाना, अथवा आरती उतारना अथवा चरण पूजना नहीं बल्कि पूजा का अर्थ यहाँ सम्मान देना है। जहाँ नारी को सम्मान दिया जाता है, वहाँ स्वर्ग के देवताओं जैसी सुख शांति और समृद्धि का वास होता है। नारी से ही घर, परिवार, समाज और देश उन्नत होता है। नारी से बेटी, बहिन, पोती, पत्नि, माँ, बुआ, मामी, चाची, भाभी, बहू, दादी, नानी, ननद, देवरानी और जेठानी आदि संबंध बनते हैं। सारे संसार में नारी की सहभागिता पुरुष के बराबर होती है। आज डॉक्टर, इन्जीनियर, जज, पुलिस, नेता, अध्यापिका, अभिनेत्री, एकाउन्टेन्ट, पायलेट और प्रशासनिक अधिकारी के पदों पर नारियां बड़ी कुशलता से कार्यकर रही हैं। लेकिन इतनी तरक्की के बाद भी नारियों पर अत्याचार, एवं शोषण आज भी हो रहा है। आखिर क्यों ? इस का कारण है कि नारियों की अज्ञानता (अशिक्षा) अधिकारों की जानकारी न होना, अंग प्रदर्शन, स्वच्छन्द आचार–विचार, वासना की अधिकता, व्यसनी लोगों की संगति, लोभ–लालच, धन का अभाव, धर्म के प्रति अनास्था भाव और पाप से डर न होना अन्याय, अत्याचार और शोषण का कारण है।

Women Human Rights

Women act as the foundation stone of living a dignified life for human beings, hence, like men, women too have been given rights and freedom for personal development, happiness and personality development. Presently, Women's Human Rights has also been constituted for the same. Under which an attempt has been made to bring feminist thinking, movement, ideology, concept, culture, history, society and politics to the ground. Many rights of women, including social, cultural, economic, political, educational etc. come under women's rights, which have been provided to women on the basis of their proper qualities, strength, nature and intelligence. Many rights related to war, labor related, governance and administration, defense of the country, information broadcasting, public welfare and humanitarian etc. are being given in this era. Many historical and cultural works done by women have been recorded on the pages of history. According to Jainism, a policy has been written regarding Indian women in history with the names of Brahmi, Sundari, Chandanbala, Anjana, Sulochana etc. that where women are mentioned in the pages.

The gods reside there where women are worshipped. The meaning of worship here is not to offer water, sandalwood etc., or to perform aarti or to worship the feet, but the meaning of worship here is to give respect. Where women are respected, there resides happiness, peace and prosperity like the gods of heaven. Home, family, society and country progress only through women. Relationships with a woman include daughter, sister, granddaughter, wife, mother, aunt, sister-in-law, daughter-in-law, grandmother etc. Throughout the world, women's participation is equal to that of men. Today, women are working very efficiently in the positions of doctors, engineers, judges, police, politicians, teachers, actresses, accountants, pilots and administrative officers. But despite so much progress, oppression and exploitation of women is still happening. Why after all ? The reasons for this are women's ignorance (illiteracy), lack of knowledge about their rights, body exhibitionism, promiscuous conduct, excess of lust, company of addicted people, greed, lack of money, disloyalty towards religion and sin. Lack of fear is the cause of injustice, oppression and exploitation.

महिला अधिकारों का शोषण

जब से महिला आयोग गठित हुआ है तब से महिलाओं के अधिकारों के हनन एवं शोषण पर बहुत अध्ययन हुआ है जिससे ज्ञात हुआ कि–

1. **दहेज द्वारा शोषण–:** विवाह के समय पर वर पक्ष की ओर से दहेज की मांग होने से महिलाओं की हत्या आगजनी, तलाक, आदि करके शोषण किया गया।
2. **भ्रूण हत्या द्वारा शोषण–:** एक समय ऐसा आया जब सोनोग्राफी से गर्भ में पलने वाली सन्तान का लिंग परीक्षण किया गया और यदि गर्भ में बेटी हुई तो उसे गर्भपात करके मार दिया गया।
3. **बलात्कार द्वारा शोषण–:** वर्तमान में महिलायें भी पुरुष की बराबरी से नौकरी–पेशा करने लगी हैं और घर से बाहर रहने लगी हैं जिससे मनचले सहभागी, कर्मचारी, मकानमालिक अथवा शराब आदि के व्यसनी लोगों द्वारा छेड़छाड़, अपहरण एवं बलात्कार करके उनका शोषण किया जा रहा है।
4. **देह व्यापार द्वारा शोषण–:** देह व्यापार का अर्थ वेश्यावृत्ति है। वेश्यावृत्ति में गरीबी, लाचारी या अति कामवासना कारण है। यह मानव समाज के ऊपर एक कलंक है लेकिन आश्चर्य की बात है कि हमारी सरकार ने वेश्यावृत्ति के लिये सर्टीफिकेट बांट रखे हैं। यह भारतीय संविधान और सरकार के ऊपर एक कलंक है।
5. **घरेलू हिंसा द्वारा शोषण–:** घरेलू हिंसा का अर्थ परिजनों द्वारा शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना देना। प्रताडना को सहन न कर पाने के कारण अनेक महिलायें पागल हो रही हैं या आत्महत्या कर रही हैं। हमारे देश में घरेलू हिंसा के लगभग 5000 मामले प्रतिवर्ष सामने आते हैं।
6. **आतंकवादियों द्वारा शोषण–:** वर्तमान समय में 135 आतंकवादी संगठन कार्यरत हैं। जिसमें महिलायें भी शामिल हैं। आतंकवादी लोग गरीब और परेशान महिलाओं को अपने चंगुल में फंसाकर उनका शारीरिक शोषण, अपमानित एवं अश्लील निरुपित करते हैं यहाँ तक कि आत्मघाती बम के रूप में उपयोग करके भी शोषण करते हैं।

Exploitation of Women's Rights

Ever since the Women's Commission was formed, many studies have been done on the violation and exploitation of women's rights, which revealed that-

1. **Exploitation through dowry:** Due to demand of dowry from the groom's side at the time of marriage, women are exploited by murder, arson, divorce, etc.
2. **Exploitation through foeticide:** There came a time when the sex of the unborn child was determined through sonography and if the fetus was a daughter, she was aborted and killed.
3. **Exploitation through rape:** Nowadays, women have also started working on par with men and have started living outside the house due to which they are exploited by molestation, kidnapping and rape by unruly partners, employees, landlords or people addicted to alcohol etc. being done.
4. **Exploitation through prostitution:** Prostitution means exhibition body. Poverty, helplessness or excessive lust are the reasons for prostitution. This is a stigma on human society but it is surprising that our government has distributed certificates for prostitution. This is a disgrace on the Indian Constitution and government.
5. **Exploitation through domestic violence:** Domestic violence means physical and mental torture by family members. Unable to bear the harassment, many women are going mad or committing suicide. About 5000 cases of domestic violence are reported every year in our country.
6. **Exploitation by terrorists:** At present 135 terrorist organizations are operating. In which women are also included. Terrorists trap poor and distressed women, physically exploit them, humiliate them and sexually assault them, and even exploit them by using them as suicide bombs.

अंतर्राष्ट्रीय महिलाधिकारों का उदय एवं विकास

जैन धर्म एवं संस्कृति के अनुसार महिलाओं को समानता का अधिकार दिया गया है। उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। उन्हें देवियों की तरह माना जाता रहा है। इसके अनेक साक्ष्य इतिहास में मिलते हैं। विवाह के पूर्व शील की रक्षा करना किसी भी पुरुष से शारीरिक संबंध नहीं बनाना यही नारी का धर्म स्वीकार किया है। विवाह के बाद सम्पत्ति और सदस्यता का समान अधिकार मिलता रहा है इसीलिए यहाँ महिला मानव अधिकार की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ी और महिलाओं ने किसी प्रकार के अधिकारों के लिये आन्दोलन भी नहीं किया, लेकिन पाश्चात्य देशों में नारी को मात्र भोग्या के रूप में माना जाता रहा है, विवाह के पूर्व शारीरिक संबंध बनाकर घर में रखा जाता रहा है। यदि पत्नी बनाकर रखा भी गया तो कुछ समय के लिये अनुबंध के रूप में रखा गया। उन्हें अपने पति की सम्पत्ति आदि पर कोई अधिकार नहीं दिया गया। सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्र में भी पुरुषों के समान कोई अधिकार नहीं दिये गये इसीलिए पंद्रहवी शताब्दी के आरम्भ में फ्रांसीसी महिला क्रिश्चियन डे विजन ने महिलाओं के लिये शिक्षा, स्वतंत्रता एवं पति की सम्पत्ति आदि के स्वामित्व के अधिकारों की बात की थी। उसके बाद महिलाओं के लिये सामाजिक कार्य करने के अधिकार पुरुषों के समान ही करने की मांग प्रबोधन काल की बुर्जुआ क्रांति से प्रारम्भ हुई।

सन् 1776 से लेकर 1783 तक अमेरिकी क्रांति के दौरान मर्सीवारेन एवं एवी गैलएडम्स के नेतृत्व में महिलाओं ने पहली वार मताधिकार करने और सम्पत्ति सम्बंधी अधिकार प्राप्त करने की मांग की। जॉर्ज वाशिंगटन और थॉमस जैफर्सन ने इन दोनों मुद्दों को संविधान में शामिल करने पर जोर डाला लेकिन बुजुर्वा वर्ग ने इसका विरोध किया जिससे वह मांग सफल नहीं हुई। यूरोप में फ्रांसीसी क्रांति के दौरान महिलाओं को राजनैतिक कार्यवाहियों में खुलकर हिस्सा लेने हेतु आन्दोलन किया गया। वर्ष 1791 में राष्ट्रीय असेम्बली द्वारा महिला अधिकारों से सम्बंधित दो दस्तावेज प्रकाशित किये गये। समाजवादियों ने नारियों को ऊपर उठाने की बहुत कोशिश की। विलियम थॉम्सन ने अपनी एक पुस्तक में महिलाओं के लिये शारीरिक और मानसिक दृष्टि से पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक श्रेष्ठ बताया और महिलाओं की आर्थिक एवं शैक्षणिक स्वतंत्रता को जरूरी बताया।

The Rise and Development of International Women's Rights

According to Jain religion and culture, women have been given equal rights. He has been viewed with respect. They have been treated like goddesses. Many evidences of this are found in history. It is the accepted religion of women to protect their modesty before marriage and not to have physical relations with any man. After marriage, equal rights of property and membership have been available, that is why there was no need for women's human rights here and women did not even protest for any kind of rights, but in western countries, women are considered as mere victims. Since then, physical relations have been established before marriage and they have been kept in the house. Even if she was kept as a wife, it was kept as a contract for some time. She was not given any rights over her husband's property etc. No rights were given equal to men in the social, family, political and economic fields, that is why in the beginning of the fifteenth century, the French woman Christian de Vijn talked about the rights of women to education, independence and ownership of husband's property etc. After that, the demand for women to have the same rights to do social work as men started with the bourgeois revolution of the enlightenment period.

During the American Revolution from 1776 to 1783, women, under the leadership of Mercy Warren and AV Gal Adams, demanded the right to vote and property rights for the first time. George Washington and Thomas Jefferson insisted on including both these issues in the Constitution but the elderly class opposed it, due to which the demand was not successful. During the French Revolution in Europe, there was a movement for women to participate openly in political actions. In the year 1791, two documents related to women's rights were published by the National Assembly. Socialists tried hard to uplift women. William Thomson in one of his books said that women are far superior to men physically and mentally. Told and described the economic and educational independence of women as essential.

महिला अधिकारों का आन्दोलन 18वीं सदी से सुदृढ़ हुआ, 19वीं सदी के आते–आते महिला अधिकारों की मांग राजनीति का एक मुख्य मुद्दा बन गया। शिक्षा, कानून, राजनीति, और मतदान आदि अनेक क्षेत्रों में आंदोलन होने लगे, नारीवादी विचारकों में मुख्य रूप से इग्लैण्ड के जॉन स्टुअर्ट तथा उनकी पत्नी हैरीयट टेलर और अमरिकी एजिलाबैथ कैडी स्टैंटन का नाम मुख्य रूप से सामने आया। सन् 1776 में अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा पर आधारित एक घोषणा पत्र था जिसके द्वारा महिलाओं के लिये मतदान का अधिकार, सम्पत्ति का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, रोजगार का अधिकार राजनीति का अधिकार और गिरिजाघरों में सार्वजनिक भागीदारी का अधिकार दिया जाता है।

सन् 1952 में संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्ट में महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार के सिद्धान्तों पर अमल करने की सहमति दी गई। 20 दिसम्बर 1952 प्रस्ताव संख्या 640 के द्वारा महिलाओं के राजनैतिक अधिकार पर हस्ताक्षर कर पुष्टीकरण किया गया जो 7 जुलाई 1954 को क्रियान्वित हुआ।

भारत में 29 अप्रैल 1953 को लाया गया और 1 नवम्बर 1961 को क्रियान्वित किया गया। इसी प्रकार विवाहित महिलाओं की राष्ट्रीयता पर 1957 में एक समझौता हुआ जो 11 अगस्त 1958 को क्रियान्वित किया गया। विवाह की सहमति, न्यूनतम आयु एवं पंजीकरण पर 1962 को समझौता हुआ, जो 9 दिसम्बर 1964 को क्रियान्वित किया गया। महिलाओं के विरूद्ध भेद–भाव की समाप्ति सम्बंधी प्रस्ताव सयुंक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 7 दिसम्बर 1967 को प्रस्तावित किया गया। जो आपातकाल एवं सशस्त्र संघर्ष में महिलाओं एवं बच्चों के संरक्षण की संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 14 दिसम्बर 1974 को इसकी घोषणा की गई। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा कोपेन हेंगन में 1980 में, नेरोबी में 1985 में, बीजिंग में 1995 में महिला मानव अधिकारों के संवर्धन हेतु विश्व सम्मेलन हुए।

इस प्रकार महिलाओं को समानता के अधिकारों की मांग की शुरूआत पाश्चात्य संस्कृति से हुई, क्योंकि जैसा पूर्व में कहा गया कि बिना विवाह के पाश्चात्य संस्कृति में स्त्री–पुरुष का पति–पत्नी के समान जीवनयापन करने का रिवाज था। बिना विवाह के शारीरिक संबंध बनाकर स्त्री–पुरुष का पति–पत्नि की तरह रहने के रिवाज का विरोध बेलेनटाइन ने किया था। उन्होंने कहा था कि भारतीय सांस्कृतिक रीति रिवाज के अनुसार विवाह करके रहना चाहिये। इसका विरोध किया गया और उन्हें मृत्यु दण्ड की सजा दी गई थी।

The women's rights movement became stronger from the 18th century, by the 19th century the demand for women's rights became a main issue of politics. Movements started taking place in many areas like education, law, politics, and voting etc. Among the feminist thinkers, mainly the names of England's John Stuart and his wife Harriet Taylor and American Elizabeth Cady Stanton came to the fore. There was a declaration based on the American Declaration of Independence in 1776, by which women are given the right to vote, the right to property, the right to education, the right to employment, the right to politics and the right to public participation in churches.

In 1952, in the Charter of the United Nations, women and men were agreed to follow the principles of equal rights. On 20 December 1952, the political rights of women were signed and confirmed through resolution number 640, which was implemented on 7 July 1954.

It was introduced in India on 29 April 1953 and implemented on 1 November 1961. Similarly, an agreement was reached in 1957 on the nationality of married women which was implemented on 11 August 1958. Agreement on consent, minimum age and registration of marriage was reached in 1962, which was implemented on 9 December 1964. The resolution regarding the end of discrimination against women was proposed by the United Nations General Assembly on 7 December 1967. It was announced by the United Nations General Assembly on 14 December 1974 for the protection of women and children in emergencies and armed conflicts. After this, world conferences were held by the United Nations in Copenhagen in 1980, Nairobi in 1985 and Beijing in 1995 for the promotion of women's human rights.

Thus, the demand for equal rights for women started from Western culture, because as said earlier, in Western culture, without marriage, men and women live equal to husband and wife. It was customary to do so. Ballentine had opposed the custom of man and woman living like husband and wife by having physical relations without marriage. He had said that one should get married and live according to Indian cultural customs. This was opposed and he was given the death penalty.

इस्लाम धर्म में भी विवाह नहीं होता बल्कि निकाह होता है। निकाह का अर्थ इकरारनामा है। इस इकरारनामें में लड़की पर्दे के पीछे से बोलती है निकाह मन्जूर (कबूल) है। उस समय गवाह होते है। उस समय महरदोन (सिक्योरिटी) राशि जमा की जाती है जो तलाक के समय लौटा दी जाती है। वह तलाक भी चार प्रकार का होता है 1. तलाक ए अहसन 2. तलाक ए हसन 3. तलाक ए विद्दत 4. तलाक ए सुन्नत। इसके अलावा एक हलाला भी होता है। इस निकाह पद्धति से सिद्ध है कि इस्लाम धर्म ने नारी को किसी भी प्रकार के अधिकार नहीं दिये गये हैं। एक शादी के बाद वह तलाक करके दूसरे से और दूसरे से तलाक करके तीसरे से निकाह कर सकती है। हलाला के अनुसार पहले वाला पति तलाक की हुई पत्नी से पुनः निकाह कर सकता है। यही कारण है कि नारी को मस्जिद में जाकर नमाज अदा करके धार्मिक अनुष्ठान करने का अधिकार एवं धन सम्पत्ति पर बराबर का अधिकार नहीं दिया गया। महिलाओं को इन अधिकारों के न मिलने के कारण ही महिला अधिकारों की मांग पाश्चात्य देशों से उठी, हमारे देश की ओर से नहीं। भारतीय संस्कृति में नारी एक पुरुष से शादी करके आजीवन पतिव्रत धर्म निभाती है। परिवार का सदस्य बनकर रहती है। इसलिये उसे पुरुष के समान ही प्राचीन काल से महिलोचित मानवाधिकार, बहुआयामी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शारीरिक, राजनैतिक और व्यवहारिक सर्वव्यापी मानवतावादी एवं कल्याणकारी अधिकार प्राप्त हैं। वह पूजा–पाठ धार्मिक शिक्षा–दीक्षा लेकर अपना आत्म कल्याण भी कर सकती है। इसीलिए मेरा मन है कि भारतीय नारियों को अपने अधिकारों की लड़ाई वैसी नहीं लड़नी चाहिये जैसी विदेशों में लड़ती है और न किसी प्रकार का आन्दोलन करना चाहिये बल्कि जो अधिकार प्राप्त है उन्ही का ज्ञान करना चाहिये और जीवन में उतारना चाहिये।

आज वैज्ञानिक विकास भी सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक दरिद्रता का कारण है, क्योंकि विज्ञान के विकास में मन चाही, जब चाही सन्तान को पैदा करना प्रारंभ कर दिया है। विज्ञान और तकनीकी के युग में स्त्रियों को मानवाधिकारों ने खुली छूट दे रखी है। इसीलिए विकास के क्षेत्र में स्त्रियों के जीवन का मानवाधिकारों से सीधा संबंध हो रहा है। जहाँ–जहाँ स्त्री के हाथ में संसाधन प्रबंधन है वहाँ विकास है।

Even in Islam religion, there is no marriage but Nikah. Nikah means agreement. In this confession the girl speaks from behind the curtain. The marriage is accepted. There are witnesses at that time. At that time, Mahardon (security) amount is deposited which is returned at the time of divorce. That Talaq is also of four types: 1. Talaq-e-Ahsan 2. Talaq-e-Hassan 3. Talaq-e-Widdat 4. Talaq-e-Sunnah. Apart from this, there is also a Halala. This Nikah system proves that Islam religion has not given any kind of rights to women. After one marriage, she can divorce another and after divorcing the second, she can marry a third. According to Halala, the former husband can remarry the divorced wife. This is the reason why women were not given the right to go to the mosque and offer namaz and perform religious rituals and equal rights on wealth. It is because of women not getting these rights that the demand for women's rights arose from western countries, not from our country. In Indian culture, a woman marries a man and remains faithful to her husband for life. Lives as a member of the family. That is why, just like men, since ancient times, she has enjoyed human rights, multi-dimensional social, economic, cultural, physical, political and practical universal humanitarian and welfare rights. She can also do self-welfare by taking religious education and initiation into worship. That is why I feel that Indian women should not fight for their rights like they do in foreign countries, nor should they do any kind of movement, but they should know about the rights they have and implement them in life.

Today, scientific development is also the cause of cultural, social and religious poverty, because in the development of science, whatever one wants, whenever one wants and has started giving birth to children. In the era of science and technology, human rights have given free rein to women. That is why women's lives are directly related to human rights in the field of development. Wherever resource management is in the hands of women, there is development.

ऐसी सोच भी पुरुषों की बनती जा रही है। अफ्रीका के जिन कबायली समाजों में कृषि और खाद्य संग्रहण महिलाओं के हाथ में है वहाँ जैविक विविधता बनी हुई है, पर्यावरण सुरक्षित है और विकास है। स्त्रियों के संबंध में यह भी कहा जा रहा है कि हर पुरुष की सफलता के पीछे किसी ना किसी स्त्री का हाथ होता है। इसी कारण कई देशों में स्त्रियों को उन्मुक्त वासना, व्यवसाय, आचार–विचार आदि की खुली छूट दे दी गई। कुछ स्थानों पर नारी अर्धनग्न होकर प्रचार–प्रसार में आगे खड़ी है। दूसरी ओर स्त्रियों के अधिकारों के सवालों को प्रथ्क मानवीय मुद्दा बनाने को मैं समाज और संस्कृति की व्यवस्था को कमजोर करना मानता हूँ। प्रायः देखा जा रहा है कि स्त्रियों को घर से बाहर भेजने पर धर्म, समाज और संस्कृति से सरोकार कम होता जा रहा है। वह मन मानी करने लग जाती है। इसीलिए अमेरिका जैसे देशों में जड़ों की ओर लौटने का आग्रह किया जा रहा है नारियों की घर वापसी का पक्ष जोर पकड़ रहा है क्योंकि नारियों को बाहर निकल कर काम करने की जोखिम उठाने के बाबजूद भी समस्याओं से मुक्ति नहीं मिल रही है। दूसरी ओर देखे तो कुछ हद तक कुछ नारियों को मातृत्व जैसे सहज सुखों से वंचित होना पड़ रहा है। आतंकवाद, दहशत, भय, दंगे, और जाति संघर्ष के कारण स्त्रियों को बेबस और असहाय बनना पड़ रहा है किसी भी प्रकार का आक्रमण हमेशा स्त्रियों पर कट्टर पंथियों द्वारा होता है क्योंकि स्त्री मूल है। यदि मूल को ही नष्ट कर दिया जाए अथवा परिवर्तित कर दिया जाए तो अपना वर्चस्व बन जाएगा, ऐसी उनकी सोच है। युद्ध में होनेवाले विस्थापित, दुनिया भर के शरणार्थियों में 80 प्रतिशत औरतें और बच्चे थे। बलात्कार, स्त्रियों के खिलाफ इस्तेमाल किये जाने वाला सबसे क्रूरतम हथियार है। बलात्कार से अवांछनीय संतान, शारीरिक पीड़ा, कुंठा और तनाव पैदा होता है जिससे मृत्यु भी संभव है। अतः स्त्रियों के मानवाधिकारों की लड़ाई का लक्ष्य पुरुषों से प्रतिस्पर्धा के रूप में नहीं होना चाहिए। स्त्रियों के अधिकार का सीधा संबंध जीवन से है क्योंकि स्त्री बच्चों को जीवन देती है। उन्हें जीवित रहने के लिए स्तनपान कराती है। संस्कारित करती है और हर प्रकार से रक्षा करती है। घर की व्यवस्था, बच्चों को संस्कार देने, धर्म, संस्कृति और घर की रक्षा करने का अधिकार नारी के हाथ में होना चाहिए। जिस घर में नारी के हाथ में यह व्यवस्था होती है वह घर स्वर्ग बन जाता है।

Such thinking is also becoming prevalent among men. In African tribal societies where agriculture and food gathering are in the hands of women, biological diversity is maintained, the environment is safe and there is development. Regarding women, it is also being said that behind the success of every man is some woman. For this reason, in many countries, women were given free rein to pursue passion, business, conduct, etc. At some places, women are standing half naked in the publicity campaigns. On the other hand, I consider making the questions of women's rights a separate human issue as weakening the system of society and culture. It is often seen that when women are sent out of the house, their concern for religion, society and culture is decreasing. She starts obeying. That is why in countries like America, there is an urge to return to the roots. The favor of women returning home is gaining momentum because despite women taking the risk of going out and working, they are not getting freedom from problems. On the other hand, to some extent, some women are being deprived of simple pleasures like motherhood. Due to terrorism, terror, fear, riots, and caste conflict, women are becoming helpless. Any kind of attack on women is always done by fanatics because women are the origin. If the origin is destroyed or changed, then it will become their supremacy, this is their thinking. 80 percent of refugees around the world displaced by war were women and children. Rape is the most cruel weapon used against women. Rape leads to unwanted children, physical pain, frustration and stress, which can even lead to death. Therefore, the aim of the fight for women's human rights should not be in the form of competition with men. Women's rights are directly related to life because women give life to children. Breastfeeds them to survive. Cultivates and protects in every way. The right to manage the house, impart values to children, protect religion, culture and home should be in the hands of women. The house where this arrangement is in the hands of a woman, that house becomes heaven.

महिला अधिकारों में आने वाली बाधाएँ

सार्वजनिक एवं निजी जीवन के क्षेत्र में अनेक बाधायें महिलाओं के जीवन में आती हैं, क्योंकि महिलाओं की शारीरिक क्षमता, मानसिक तनाव, अपर्याप्त साधन, आर्थिक ढांचा, इत्यादि बाधायें उत्पन्न करती हैं। शिक्षा, सुविधा, अधिकार, कानून, नेतृत्व, सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक इत्यादि क्षेत्र में पुरुष के समान अधिकार देने का आन्दोलन चला और अधिकार दिये भी गये, लेकिन दिये गये उनमें से कुछ अधिकारों से मैं सहमत नहीं हूँ क्योंकि अधिकार हमेशा योग्यतानुसार, समयानुसार, स्वभावानुसार और पर्याय अनुसार देने चाहिये क्योंकि स्त्री और पुरुष दोनों की प्रकृति, स्वभाव, शारीरिक संरचना और बल आदि में अन्तर होता है। जैसे स्त्री गर्भ धारण कर सकती है, पुरुष नहीं। स्तनपान स्त्री करा सकती है पुरुष नहीं। स्त्री ग्रहणी होने के कारण घर ग्रहस्थी के कार्य जैसे भोजन बनाने झाड़ू–पोंछा करने आदि के कार्य जितना अच्छा स्त्री कर सकती है, उतना अच्छा पुरुष नहीं। इसीलिए समानता की बात हर क्षेत्र में बना नहीं सकती। यदि तर्क किया जावे कि जो कार्य पुरुष करता है वह कार्य समान रूप से स्त्री को भी करना चाहिये और जो स्त्रियाँ करती हैं, वे पुरुषों को भी करना चाहिए। ऐसी स्थिति में गर्भ धारण जैसी समस्याएँ पैदा हो जाएगी अतः स्त्रियों को अधिकार तो उनकी स्थिति और योग्यतानुसार ही मिलना चाहिए।

समान अधिकार में स्त्रियों को विशेष अधिकार क्यों?

पिछले कई वर्षों से महिला विरूद्ध भेदभाव उन्मूलन समिति, महिला संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय महिला अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (यूनीफेम), महिला अंतर्राष्ट्रीय शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान (यू. ए. इन्स्ट्रॉ) संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन, यूनिसेफ इत्यादि संगठन, महिला विकास एवं समान अधिकार के लिये निरंतर कार्यरत हैं। जब समानता की बात कही जा रही है तो फिर समानता की ही होना चाहिए पुरुषों से आगे महिलाओं को विशेष अधिकार नहीं होना चाहिये।

Obstacles to women's rights

Many obstacles come in the life of women in the field of public and private life, because women's physical capacity, mental stress, inadequate resources, economic structure, etc. create obstacles. There was a movement to give equal rights to men in the fields of education, facilities, rights, law, leadership, cultural, social, family etc. and rights were given, but I do not agree with some of the rights given. Because rights should always be given according to ability, according to time, according to nature and according to synonyms because there is a difference in the nature, nature, physical structure and strength etc. of both men and women. Like a woman can conceive, a man cannot. A woman can breastfeed, not a man. Due to the fact that a woman is a housewife, she can do the household chores like cooking, sweeping, etc. as well as a man can do. That is why equality cannot be said in every field. If the argument is made that whatever work a man does, women should do it equally and whatever women do, men should also do it. In such a situation, problems like pregnancy will arise, hence women should get rights according to their status and ability.

Why do women have special rights in equal rights?

For the past several years, Women's Committee for the Elimination of Discrimination against Women, United Nations International Institute for Women's Research and Training (UNIFEM), Women's International Research and Training Institute (U.A. INSTRU), United Nations Women's Organization, UNICEF etc. organizations, women's development and equal rights. Are continuously working for rights. When equality is being talked about then it should be about equality only, women should not have special rights over men.

बाल अधिकार

बच्चे चार प्रकार के होते हैं गर्भस्थ शिशु, शिशु, नाबालिग, बालिग। इन सभी को जीने का पूर्ण अधिकार है। माता–पिता, परिवार, समाज और राष्ट्र का कर्तव्य है कि बच्चों को संरक्षण, लालन–पालन, शिक्षण और संस्कार देकर योग्य बनाये क्योंकि आज का बालक कल का भविष्य है और देश का कर्णधार है। किसी देश का भविष्य बच्चों पर टिका होता है। बच्चों का भविष्य माता–पिता और समाज पर टिका होता है। बच्चे दिल के सच्चे होते हैं। बच्चे तन से कच्चे होते हैं। बच्चे समाज के सबसे कमजोर अंग हैं पर भविष्य का सबसे मजबूत अंग हैं। बच्चे गॉड गिफ्ट माने जाते हैं। जो परिवार, समाज या देशवासी भगवान के दिये हुए बच्चे रुपी उपहार को नकार देता है उसका भविष्य नियम से अंधकारमय होता है। जैसा कि आज कल लोग कहते है कि जल है तो कल है। वैसे ही मैं कहता हूँ कि बच्चे है तो कल है। कल है तो आनन्द है, खुशी है, सुख है, भविष्य उज्जवल है, आगे की संस्कृति, कुल, परम्परा, समाज, परिवार और देश जीवित है।

एक परिवार में उतनी ही संतान होनी चाहिए जितनी संतान का वह अच्छी तरह से भरण–पोषण करते हुए उच्च शिक्षा और संस्कार देकर उन्हे योग्य बना सके देश धर्म संस्कृति और समाज जनसंख्या नियंत्रण कानून पर विचार कर रही है जो समयानुसार ठीक है। लेकिन इस बात का ध्यान रखा जाए कि जैसे आय के आधार पर टेक्स लिया जाता है वैसे ही संपत्ति के आधार पर जनसंख्या नियंत्रण कानून बनना चाहिए। जैन धर्मानुसार देखे तो चक्रवर्ती की संपत्ति अपार होती है अतः 96 हजार रानियाँ और अधिकतम 60 हजार पुत्र, एक लाख 80 हजार पुत्रियाँ होती हैं। नारायण 16 हजार, बलदेव की 8 हजार रानियाँ होती हैं। आम जनता अर्थात्, प्रजा की इतनी पत्नियाँ और संतान नही होती थी इस से स्पष्ट है कि धन–वैभव के अनुसार पत्नी, पुत्र और पुत्रियाँ होती थी वैसी व्यवस्था आज भी होनी चाहिए। लेकिन आज इस लोकतंत्र में गरीब की संतान अधिक और अमीरों की संतान कम पैदा हो रही है जिसे अमीर और अमीर बन रहा है जबकि गरीब और गरीब बन रहा है। ऐसी स्थिति में ईर्ष्या, नफरत, भुखमरी आदि को नहीं रोक सकते।

Child Rights

There are four types of children: fetus, infant, minor and adult. All of them have full right to live. It is the duty of parents, family, society and nation to make children capable by providing them protection, upbringing, education and values because today's child is the future of tomorrow and the leader of the country. The future of a country depends on its children. The future of children depends on parents and society. Children are true at heart. Children are raw in body. Children are the weakest part of the society but the strongest part of the future. Children are considered God's gift. The future of any family, society or countryman who rejects the gift of a child given by God is usually bleak. As people say these days, if there is water, there is tomorrow. Similarly, I say that if you have children, there is tomorrow. If there is tomorrow, there is joy, happiness, happiness, the future is bright, the culture, clan, tradition, society, family and country are alive. A family should have as many children as its number of children.

The country, religion, culture and society is considering a population control law which is right as per the time so that they can be qualified by giving them higher education and values while providing them good nutrition. But it should be kept in mind that just as tax is taken on the basis of income, similarly population control law should be made on the basis of property. According to Jainism, Chakravarti's wealth is immense, hence he has 96 thousand queens and maximum 60 thousand sons and one lakh 80 thousand daughters. Narayan has 16 thousand queens, Baldev has 8 thousand queens. The general public, that is, the people, did not have so many wives and children. It is clear from this that there were wives, sons and daughters according to their wealth and prosperity, the same system should be there even today. But today in this democracy, more children of the poor are being born and less children of the rich, due to which the rich are becoming richer while the poor are becoming poorer. In such a situation jealousy, hatred, hunger etc. Can't stop.

इसे रोकने के लिए आज गरीब आदमी के परिवार में एक संतान होनी चाहिए, मध्यम परिवार में दो और अमीर आदमी के एक परिवार में कम से कम तीन या चार सन्तान होनी चाहिये, यदि अर्थिक दृष्टि से जनसंख्या वृद्धि कानून लागू किया जाए तो देश में आर्थिक स्थिति सुधरेगी, अधिक संतान की प्राप्ति वाले मेहनत करके धनी बनना चाहेगे, जनता अपनी संपत्ति उजागर करेगी, सरकार को कर प्राप्त होगा। गरीबों का धन कम खर्च होने से उनकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी गरीब और अमीर के बीच की खाई भरेगी और नफरत मिटेगी। क्योंकि एक संतान देश की रक्षा के लिये, नेता, अभिनेता, सैनिक, इत्यादि के रूप में चाहिये। जिसे हम देश भूषण के रूप में देख सकते है। दूसरी संतान धर्म, दर्शन, संस्कृति और इतिहास के संरक्षण के लिये चाहिये। जो पण्डित, विद्वान, त्यागी, व्रती, उपदेशक साधु सन्त बना सकें, और धर्म, संस्कृति आदि की रक्षा कर सकें। जिसे हम धर्म भूषण नाम दे सकें। तीसरी संतान समाज और संबंधों के संरक्षण के लिये चाहिये जो समाज की रक्षा कर सकें, रिश्ते नातों को निभा सकें और सेवा देकर समाज की प्रगति कर सकें, जिसे हम समाज भूषण नाम दे सकें।

चौथी सन्तान मां, बाप, भाई, बहिन, दादा, दादी आदि कुल खानदान की रक्षा के लिये चाहिये। पैत्रिक धंधा, सम्पत्ति आदि को संभाल सकें जिसे हम कुल भूषण नाम दे सकें। यदि हम दूसरे प्रकार से विचार करें तो भी चार सन्तान चाहिये। एक सन्तान व्यवसाय करने के लिये, दूसरी संतान कृषि कार्य करने के लिये, तीसरी सन्तान उद्योग करने के लिये, चौथी सन्तान नौकरी करके देश की सेवा के लिये।

यदि एक दम्पत्ति एक सन्तान पैदा करता है तो, सारी मानव समाज सौ साल में समाप्त हो जाएगी, क्योंकि पति–पत्नी दो प्राणी मिलकर एक सन्तान पैदा करेंगे तो जब दो की मृत्यु होगी तब एक जन्म लेगा। यदि आज दुनिया में सात अरब मानव हैं तो पच्चीस वर्ष बाद साड़े तीन अरब बच्चे बचेंगे। फिर वह सन्तान बड़ी होकर दम्पत्ति बनेगी और दो मिलकर एक संतान पैदा करेगी, तब पचास वर्ष बाद एक अरब पचहत्तर करोड़ मानव जाति बचेगी पुनः पच्चीस वर्षों के बाद वह सन्तान बड़ी होकर दम्पत्ति बनोगी और दो मिलकर एक संतान पैदा करेगी तो फिर 75 वर्ष वाद सतासी करोड़ मानव जाति बचेगी।

To stop this, today a poor man should have one child in his family, a middle class family should have two and a rich man should have at least three or four children in his family. If the population growth law is made from the economic point of view, then the economic situation in the country will improve. It will improve, those having more children will want to work hard and become rich, people will reveal their assets, the government will receive taxes. By spending less money on the poor, their economic condition will improve, the gap between the poor and the rich will be bridged and hatred will disappear. Because a child is needed to protect the country, in the form of a leader, actor, soldier, etc. Which we can see as the jewel of the country. The second child is needed for the preservation of religion, philosophy, culture and history. Who can create pundits, scholars, renunciants, preachers, saints and can protect religion, culture etc. Which we can name as Dharma Bhushan. A third child is needed for the protection of the society and relationships, who can protect the society, maintain relationships and progress the society by providing service, which we can name as Samaj Bhushan.

The fourth child is needed to protect the family including mother, father, brother, sister, grandfather, grandmother etc. Can handle ancestral business, property etc. which we can call Kul Bhushan. Even if we think differently, four children are required. One child to do business, second child to do agricultural work, third child to do industry, fourth child to serve the country by doing a job.

If a couple produces a child, then the entire human society will end in a hundred years, because if two beings, husband and wife, together produce a child, then when two die, one will be born. If there are seven billion humans in the world today, then after twenty-five years three and a half billion children will be left. Then those children will grow up and become a couple and together they will produce a child, then after fifty years one billion seventy-five crore human race will be left and again after twenty-five years those children will grow up and become a couple. If two of them come together and produce a child, then in 75 years 87 crore human beings will be saved.

वे पच्चीस वर्ष बाद बड़े होकर दम्पत्ति बनेगे तब दो मिलकर एक सन्तान पैदा करेंगे तब दो की मृत्यु होगी और एक सन्तान छोड़कर जावेगें इसलिये 100 वर्ष बाद 42 करोड़ पचास लाख मानव जाति (बच्चें) बचेगें। पर यह भी ध्यान रखना होगा कि इतने बच्चे भी नहीं बचेंगे क्योंकि प्रत्येक सौ दम्पत्ति (जोड़े) से उत्पन्न हुई दो तीन सन्तान रोगी, एक्सीडेन्ट या विकलांग अवस्था में मर जाती हैं और सौ जोड़े में दो–तीन जोड़े ऐसे होते हैं जो निःसंतान होते हैं, अतः सिद्ध हुआ कि सौ साल में इस दुनिया से मानव जाति समाप्त हो जावेगी। यदि प्रत्येक दम्पत्ति मात्र दो सन्तान को जन्म देता है तब सौ बच्चों में 4 बच्चों की लगभग मौत हो जाने पर सौ दम्पत्ति में दो–तीन दम्पत्ति निःसंतान होने से एवं इसी के साथ प्रत्येक एक सौ वर्ष में प्लेग, एड्स इत्यादि महामारी से लाखों करोड़ों मानवों की मृत्यु हो जाने की स्थिति में एक हजार वर्ष में समस्त मानव जाति समाप्त हो जावेगी, इसीलिए अमीर आदमी को कम से कम तीन–चार सन्तान और गरीब को एक मध्यम परिवार को दो संतान को जन्म देना चाहिये। ऐसा करने से जनसंख्या पर नियंत्रण बना रहेगा और गरीबी नफरत आदि भी समाप्त हो जायेगी। अन्यथा न मानव रहेंगे न मानवाधिकार रहेगा।

इकलौती सन्तान प्रायः जिद्दी, हिसंक और क्रूर हो जाती है इसका कारण है कि जब सन्तान शिशु अवस्था में होती है तब उसके लिये माता–पिता या परिजन टेडीवियर खेलने के लिये दे देते हैं, लेकिन जब उस बच्चे की इच्छा पूर्ति नहीं होती तब उसे क्रोध आता है और क्रोध में आकर वह टेडीवियर के हाथ पैर तोड़ देता है। टेडीवियर अचेतन होने से कोई प्रतिकार नहीं करता। उस सन्तान को इस प्रकार की हिंसक प्रवृत्ति करने पर कोई शिक्षा भी नहीं मिल पाती, लेकिन जब वही शिशु अपने अन्य साथियों के साथ खेलता है और इच्छाओं की पूर्ति न होनेसे अथवा आपसी झगड़ा हो जाने से मारपीट करता है तो उसे यह ज्ञान हो जाता है कि मारने से दुख होता है। इसके अलावा जिस बच्चे को मारा जाता है उस बच्चे की माँ उस मारने वाले बच्चो को दण्डित करती है जिससे बच्चा संस्कारित और अहिंसक हो जाता है, आपसी प्रेम और बधुत्व को अपनाने लगता है।

After twenty-five years, they will grow up and become a couple, then two together will produce a child, then two will die and leave one child, hence after 100 years, 42 crore fifty lakh human beings (children) will be saved. But it should also be kept in mind that even this number of children will not Will be saved because out of every hundred couples, two or three children born to them die due to disease, accident or disability and out of every hundred couples, there are two-three couples who are childless, hence it is proved that in a hundred years they will leave this world. The human race will come to an end. If every couple gives birth to only two children, then almost 4 out of every 100 children will die, 2-3 couples out of 100 will be childless and along with this, every 100 years there will be plague, AIDS. etc. In case of death of millions of humans due to epidemic, the entire human race will be destroyed in a thousand years, that is why a rich person should give birth to at least three-four children and a poor middle class family should give birth to two children. By doing this, control over population will be maintained and poverty, hatred etc. will also end. Otherwise there will be neither human beings nor human rights. Only children often become stubborn, violent and cruel.

The reason is that when the child is in infancy, the parents or relatives give him a teddy bear to play with, but when the child's wish is not fulfilled then he gets angry and in anger he breaks the teddy bear's arms and legs. Teddybear has no resistance to being unconscious. That child does not get any education due to such violent tendencies, but when the same child plays with his other friends and starts fighting because his desires are not fulfilled or there is a mutual fight, then he gets this knowledge. . That killing hurts. Apart from this, the mother of the child who is beaten punishes the child who beats the child. Becomes cultured and non-violent, starts adopting mutual love and brotherhood.

मानव समूह में रहना चाहता है। बच्चे–बच्चों के साथ, युवा–युवाओं के साथ, वृद्ध–वृद्धों के साथ रहना चाहते हैं। इकलौती सन्तान को बच्चों का समूह नहीं मिलने से वे हीन भावनाओं से ग्रसित हो जाते हैं और स्वाभाविक ज्ञान वृद्धि से और संस्कारों से वंचित रह जाते हैं। इकलौती संतान यूनिट की बात करती है लेकिन यूनिटी की बात नहीं करती, यही वजह है कि जिस जाति या परिवार में संतान ज्यादा हैं उसमें यूनिटी है तथा जिस जाति या परिवार में एक–एक संतान है उसमें यूनिटी (एकता) नहीं है। जब एक परिवार के बहुत सारे बच्चे एक साथ खेलते–कूँदते, लड़ते–झगड़ते, उठते–बैठते हैं तो उन बच्चों को अपने शारीरिक, मानसिक, एवं बौद्धिक विकास के लिये पर्याप्त आनंद, शिक्षा, प्यार एवं अनुभव मिल जाता है। संतुलित भोजन, सुसंस्कार, बच्चों को बच्चों की संगति, माता–पिता का प्यार, अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिये पूर्ण स्वतंत्रता, खेलकूद एवं पाठशाला (विद्यालय) यही उनके अधिकार है।

बालक मानव समाज का एक अभिन्न अंग है। उनके अधिकारों का हनन बहुत ही आसानी से किया जा सकता है और होता भी रहा है। चालाक लोग बच्चों को अपने चंगुल में बड़ी आसानी से फंसा लेते है, क्योंकि बालक सरल स्वभावी होते हैं। यही वजह है कि भारत में हत्यायें, बाल यौन शोषण, बालश्रम, बालविवाह, सामुदायिक हिंसा, आतंकवाद, इत्यादि में आसानी से बच्चों को झोंक दिया जाता है एवं उन्हें अपने अधिकारों से वंचित रखा जाता रहा है। कुछ लोकतांत्रिक देशों में बच्चों को महत्वहीन समझा जाता है क्योंकि लोकतंत्र में वोटर को महत्व दिया जाता है। मतदान का अधिकार न होने से उन्हें महत्वहीन समझा जाता है और अधिकारों से भी वंचित रखा जाता है जबकि देश का भविष्य बच्चों पर टिका होता है।

Humans want to live in groups. Want to live with children, young people and old people. Due to the only child not getting a group of children, he suffers from inferiority complex and is deprived of natural growth of knowledge and values. Only child talks about unit but does not talk about unity, that is why there is unity in the caste or family which has more children and there is no unity in the caste or family which has only one child. When many children of a family play together, fight, get up and sit together, then those children get enough enjoyment, education, love and experience for their physical, mental and intellectual development. Balanced food, good values, company of children, love of parents, complete freedom to express their thoughts, sports and school are their rights.

Child is an integral part of human society. Their rights can and have been violated very easily. Cunning people easily trap children in their clutches, because children are simple in nature. This is the reason why in India, children are easily involved in murders, child sexual abuse, child labour, child marriage, community violence, terrorism, etc. and they are deprived of their rights. In some democratic countries, children are considered unimportant because voters are given importance in democracy. Because they do not have the right to vote, they are considered unimportant and deprived of their rights, while the future of the country depends on the children.

जैन धर्म में बाल अधिकार

युग के आदि में अंतिम कुलकर महाराज नाभिराय के पुत्र ऋषभदेव तीर्थंकर ने बाल अधिकारों की बात कही है। उन्होंने आठ वर्ष के बाद मौजी बंधन, जिन दर्शन एवं सिर मुण्डन आदि करने का अधिकार दिया। उसके बाद प्रतिमा का अभिषेक, पूजन, भिक्षुओं को आहार दान एवं दीक्षा लेने का अधिकार दिया। उसके पूर्व बच्चे को अपने माँ–बाप के पास स्वतंत्र रहकर जीवनयापन करने का अधिकार दिया। ८ वर्ष से पूर्व पढ़ाई के बोझ से भी दूर रहने को कहा है। सोलह वर्ष के पूर्व विवाह बन्धन का निषेध किया। भ्रूण हत्या, आत्महत्या करने और कराने वालों को दण्डनीय अपराधी माना है।

बच्चों के जीवन स्तर को ऊर्ध्वगामी बनने और उज्जवल भविष्य के लिये लगभग तीन दशक से विश्व स्तर पर अनेक संस्थाएँ क्रियाशील हुई हैं। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) द्वारा अनेक सार्वभौमिक बाल अधिकार प्रदान किये गये। दुनिया में हो रहे बाल यौन शोषण, बाल अपराध, बाल श्रम, बाल कुपोषण, भ्रूण हत्या आदि अपराधों के नियंत्रण हेतु अनेक नियम कानून बनाये गये, परन्तु इतने नियम कानून बनने के उपरांत और बाल अधिकार देने के उपरांत भी इसे रोक पाना एक बड़ी चुनौती है।

बाल यौन शोषण–: बाल यौन शोषण एक सार्वभौम समस्या है जिससे कई प्रकार के विकार उत्पन्न होना स्वाभाविक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 10 प्रतिशत बच्चे प्रतिवर्ष बाल यौन शोषण के शिकार हो रहे हैं। यूनिसेफ की रिर्पोट के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग बारह लाख नाबालिग बच्चियों को वेश्यावृत्ति में लगा दिया जाता है। इसमें बच्चों की गलती नहीं बल्कि बड़ों की गलती है, क्योंकि यौन शोषण करने वाले बड़े व्यक्ति होते है और देह व्यापार में लगाने वाले भी बड़े व्यक्ति होते हैं।

बालश्रम–: इतिहास के अनुसार बालश्रम प्राचीन काल से ही होता आ रहा है। लेकिन उद्योग के कारण इसमें तेजी से वृद्धि हुई है। यूनिसेफ के द्वारा किये गये सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2005 में लगभग पच्चीस करोड़ बच्चे बालश्रम करते हुए पाये गये। उसमें पंद्रह करोड़ से भी अधिक एशिया महाद्वीप में पाये गये।

Child Rights in Jainism

At the beginning of the era, Rishabhdev Tirthankar, son of the last Kulkar Maharaj Nabhiraya, has spoken about child rights. After eight years, he gave the right to perform Mauji Bandhan, Jin Darshan and head shaving etc. After that, the idol was consecrated, worshiped and the monks were given the right to donate food and take initiation. Before that, the child was given the right to live an independent life with his parents. It is also said to stay away from the burden of studies before the age of 8 years. Prohibited marriage before the age of sixteen. Those who commit feticide, suicide and those who commit suicide are considered punishable criminals.

For almost three decades, many organizations have been active at the global level to improve the standard of living of children and for their bright future. Many universal child rights are provided by the United Nations Children's Educational Fund (UNICEF). Many rules and laws have been made to control the crimes of child sexual abuse, child crime, child labour, child malnutrition, feticide etc. happening in the world, but even after making so many rules and laws and giving child rights, it is a big challenge to stop it.

Child sexual abuse -: Child sexual abuse is a universal problem which naturally gives rise to many types of disorders. According to the World Health Organization, 10 percent of children are becoming victims of child sexual abuse every year. According to UNICEF report, approximately twelve lakh minor girls are forced into prostitution every year. It is not the fault of the children but the fault of the adults, because those who sexually exploit are big people and those who force them into prostitution are also big people.

Child Labour: According to history, child labor has been happening since ancient times. But due to industry it has increased rapidly. According to a survey conducted by UNICEF, in the year 2005, approximately twenty-five crore children were found doing child labour. Of these, more than fifteen crore were found in the Asian continent.

बालक प्रत्येक देश के कर्णधार होते है। देश का भविष्य बच्चों पर आधारित होता है। हमारे देश की कुल आबादी में 16 करोड़ बच्चे हैं। जिसमें एक करोड़ पच्चीस लाख बाल श्रमिक हैं। सबसे ज्यादा बाल श्रमिक उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, जम्मू–कश्मीर, तमिलनाडू, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में हैं। इन प्रदेशों में 12 वर्ष से कम आयु के 50 प्रतिशत बच्चे ग्रामीण क्षेत्रों के हैं। शहरों में अधिकांश बच्चे केन्टीन, रेस्टोरेन्ट और फेरी लगाने का काम करते हैं। पचास हजार से अधिक बच्चे पटाखे और माचिस बनाने का कार्य करते हैं। पचास हजार बच्चे चूड़ी के कारखानों में, एक लाख पचास हजार बच्चे कपड़े बनाने और रंगने में, पचास हजार बच्चे बर्तन बनाने जैसे खतरनाक उद्योग में श्रमिक बनकर कार्य कर रहे हैं।

बाल अपराध–: बालक बचपन से ही चंचल स्वभाव वाले होते हैं, लेकिन जन्म जात अपराधी नहीं होते। बालकों को परिस्थितियाँ, सामाजिक परिवेश, गरीबी, पारिवारिक कलह, अशिक्षा, संस्कार हीनता, और गलत संगति अपराधी बनाती है। यदि इन सब कारणों से बच्चों को बचा लिया जावे और आध्यात्मिक शिक्षा के साथ सुसंस्कारित किया जावे तो बच्चों में आपराधिक प्रवृत्ति नहीं होगी। यदि अपराध से विरक्ति हो जाए तो शिक्षा और सत्संगति से आसक्ति हो सकती है।

बाल व्यापार–: अमानवीय व्यापार में प्रतिवर्ष लाखों बच्चों को संलग्न कर दिया जाता हैं। कई देशों में बच्चों की खरीद–फरोख्त होती है। गरीब देशों में क्रूरतम व्यवसाय, खतरनाक उद्योगों जैसे पटाखा, चूड़ी कांच, शराब इत्यादि कार्यों में तथा मनोरंजन हेतु सर्कस एवं जादू–टोना के कार्यों में लगा दिये जाते हैं।

बाल विस्थापन–: बच्चों को अपराधी बनने में विस्थापन एक कारण बनता है। विस्थापन मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है। प्रथम प्रकार का वह जब माता–पिता स्वयं एक स्थान से दूसरे स्थान पर नौकरी पेशा के लिये जाते हैं। दूसरे प्रकार का बाल विस्थापन वह जब स्वयं बालक नौकरी पेशा के लिये अकेला ही माता–पिता की आज्ञा से जाता हैं। तीसरे प्रकार का विस्थापन वह जब बालक बिना बताये ही घर से बाहर भाग जाता है। जब बालक अकेला स्वछंद रहता है तब उस पर किसी का नियंत्रण नहीं रहता।

Children are the leaders of every country. The future of the country depends on children. There are 16 crore children in the total population of our country. In which there are one crore twenty five lakh child labourers. The highest number of child laborers are in Uttar Pradesh, Bihar, Rajasthan, Jammu and Kashmir, Tamil Nadu, Orissa, Chhattisgarh and Madhya Pradesh. In these states, 50 percent of children below 12 years of age are from rural areas. In cities, most of the children work in canteens, restaurants and as street vendors. More than fifty thousand children work in making firecrackers and matchsticks. Fifty thousand children are working as laborers in bangle factories, one lakh fifty thousand children are working in making and dyeing clothes, fifty thousand children are working as laborers in dangerous industries like making utensils.

Juvenile Crime: Children are of playful nature since childhood. But criminals are not born by birth. Circumstances, social environment, poverty, family discord, illiteracy, lack of culture, and wrong association make children criminals. If children are saved from all these reasons and are cultured with spiritual education, then children will not have criminal tendencies. If one becomes detached from crime then one can become attached to education and good company.

Child Trafficking: Every year lakhs of children are involved in inhuman trafficking. Trading of children takes place in many countries. In poor countries, people are employed in the cruelest occupations and dangerous industries like firecrackers, glass bangles, liquor etc. and for entertainment, they are engaged in circus and magic acts.

Child Displacement: Displacement is one of the reasons for children becoming criminals. Is made. There are mainly three types of displacement. The first type is when the parents themselves go from one place to another for employment. The second type of child migration is when the child himself goes alone for a job with the permission of his parents. The third type of displacement is when the child runs away from home without informing. When a child is alone and free, no one has any control over him.

ऐसे बच्चे मनमानी करने लगते हैं, आपराधिक गिरोह के चक्कर में फँस जाते हैं, इसलिये बच्चों को स्वतंत्र छोड़ना अपराध वृत्ति को प्रोत्साहन देना है। यदि बालिका स्वतंत्र रहेगी तो नियम से मां–बाप के नियंत्रण में नहीं रह पायेगी। क्योंकि बालिका जिज्ञासु भावुक और संवेदात्मक स्वभाव वाली होती है।

बाल कुपोषण–: बच्चों की एक सबसे बड़ी समस्या कुपोषण एवं अतिपोषण की है। कुपोषण में गरीबी एवं अतिपोषण में अमीरी एवं एक परिवार में एक दो बच्चों का होना मुख्य कारण है। दोनों प्रकार के पोषण से बच्चों की मृत्यु दर अधिक है। अमीर आदमी बच्चों को ज्यादा खिलाना चाहता है जबकि गरीब आदमी कम खिला पाता है। इन सभी कारणों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार महासभा द्वारा बाल अधिकार एवं बाल कोष की स्थापना हेतु 10 दिसम्बर 1948 को सार्वभौमिक घोषणा पत्र स्वीकृत किया गया। उक्त घोषणा पत्र में कई अनुच्छेदो में बाल अधिकारों का उल्लेख किया गया है।

1. बच्चों को भिक्षा वृत्ती में लगाना अपाहिज और अपराधी बनाना है।
2. कुपोषण की समस्या
3. बाल वध और जादू टोना करना या करवाना कुरीतियाँ है।
4. भ्रूण हत्या
5. कानून (जुवेनाइल जस्टिस कोड) बना है।
6. बाल विवाह एक समस्या है।
7. पोलियों जैसी अनेक बीमारियाँ है उनका टीकाकरण हो।

Such children start acting as per their wish and get involved in criminal gangs. They get trapped, so leaving children free is encouraging criminal behavior. If the girl child remains independent then she will not be able to remain under the control of her parents as per rules. Because the girl is of inquisitive, emotional and sensitive nature.

Child Malnutrition: One of the biggest problems of children is malnutrition and is of overnutrition. The main reasons are poverty in malnutrition and richness in overnutrition and having one or two children in a family. The mortality rate for children is high due to both types of nutrition. A rich man wants to feed more children while a poor man is able to feed less. In view of all these reasons, the Universal Declaration on Child Rights and the establishment of the Children's Fund was approved by the General Assembly of the United Nations on 10 December 1948. Child rights were mentioned in many paragraphs in the said manifesto.

1. To involve children in begging is to make them handicapped and criminals.
2. Problem of malnutrition
3. Child slaughter and witchcraft are evils.
4. Feticide
5. Law (Juvenile Justice Code) has been made.
6. Child marriage is a problem.
7. There are many diseases like polio, they should be vaccinated.

संयुक्त राष्ट्र और बाल कोष

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष का मुख्य उद्देश्य गरीब, उपेक्षित, पिछड़े रोगी और माँ–बाप से वंचित बच्चों की सहायता करना। विश्व के लगभग 150 देशों की सरकारों द्वारा 75 प्रतिशत धन राशि का योगदान एवं 25 प्रतिशत योगदान जनता के द्वारा बच्चों की सहायता के लिये किया जाता है।

नागरिक और राजनैतिक अधिकारों पर प्रसंविदा एवं बाल अधिकारों को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दिसम्बर 1966 में स्वीकृति प्रदान की थी जो 23 मार्च 1976 से लागू हुई। इसके अंतर्गत भूकम्प, बाढ़, सूखा एवं महामारी इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं के आने पर शिशु एवं उसकी माँ के लिए आवश्यकतानुसार सहायता करना भी लिया गया। यूनिसेफ ने अपने बजट का 75 प्रतिशत भाग अलग–अलग देशों की सरकार से लेकर इस कार्य के लिए खर्च किया इसलिए यूनिसेफ को वर्ष 1965 में नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

मानवाधिकार पर सार्वभौमिक बाल अधिकार घोषणा पत्र संयुक्त राष्ट्र के महासभा द्वारा 10 दिसम्बर 1948 को स्वीकृत किया गया था। इस घोषणा पत्र के अनुसार मुख्य अधिकार इस प्रकार प्रस्तुत किये गये–: किसी भी बालक को जाति, लिंग, भाषा, क्षेत्र, रंग, राष्ट्रीय या सामाजिक भेद–भाव के बिना अधिकारों का हक दिया जायेगा। सभी बालकों को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक विकास के साथ–साथ अपनी गरिमा की रक्षा स्वतंत्रता और बालकों के हित का ध्यान रखा जायेगा। जिस देश में बालक का जन्म होगा और माता–पिता जिस देश के होगें उस देश की राष्ट्रीयता का अधिकार दिया जायेगा। शारीरिक, मानसिक रूप से विकलांग बच्चों का विशेष उपचार, शिक्षा और रख–रखाव का सामाजिक एवं शासकीय रूप से सहयोग दिया जायेगा। बिना माता–पिता या परिवार के बेसहारे बच्चों को समाज द्वारा एवं लोक प्राधिकारियों द्वारा सर्व सुविधायें एवं देख–रेख प्रदान की जायेगी। प्राथमिक स्तर तक निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जायेगी। बच्चों की उपेक्षा, क्रूरता और शोषण के विरूद्ध सुरक्षा प्रदान की जायेगी।

'जैन धर्म के अनुसार दत्तक पुत्र जिस कुल, जाति या गोत्र में जायेगा उसी जाति कुल और गोत्र का माना जायेगा। उसमें किसी प्रकार का भेद–भाव या छुआ–छूत नहीं मानी जायेगी।

United Nations and Children's Fund

The main objective of the United Nations Children's Fund is to help poor, neglected, backward, sick and parentless children. 75 percent of the funds are contributed by the governments of about 150 countries of the world and 25 percent are contributed by the public to help the children.

The Covenant on Civil and Political Rights and the Rights of the Child was approved by the United Nations General Assembly in December 1966, which came into force on 23 March 1976. Under this, necessary help was also provided to the child and his mother in case of natural calamities like earthquake, flood, drought and epidemic etc. UNICEF spent 75 percent of its budget from the governments of different countries for this work, hence UNICEF received the Nobel Prize in the year 1965.

The Universal Declaration of Human Rights of the Child was adopted by the General Assembly of the United Nations on 10 December 1948. According to this manifesto, the main rights were presented as follows -: Any child will be entitled to rights without any discrimination of caste, sex, language, region, colour, national or social status. Along with physical, mental, intellectual, social, spiritual and moral development of all children, their dignity, freedom and welfare of children will be protected. The child will be given the right to acquire the nationality of the country where he is born and the country where his parents belong to. Social and government support will be provided for special treatment, education and maintenance of physically and mentally handicapped children. All facilities and care will be provided to destitute children without parents or family by the society and public authorities. Free education will be provided up to primary level. Children will be protected against neglect, cruelty and exploitation.

'According to Jainism, whichever family, caste or gotra the adopted son goes to, he will be considered to belong to the same caste, clan and gotra. There will be no discrimination or untouchability in it.

नागरिक और राजनैतिक अधिकारों पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रसंविदा एवं बाल अधिकारों के अनुसार बाल अपराधी को व्यस्कों से अलग रखा जायेगा। अपराधिक बच्चों के मामले की प्रक्रिया उसकी आयु और पुनर्वास को ध्यान में रखकर की जायेगी। पृथक न्यायालय J.J. शेल्टर होम अलग बनाया जायेगा। माता–पिता या संरक्षक द्वारा बच्चों को धार्मिक व नैतिक शिक्षा देने की स्वतंत्रता का सम्मान किया जायेगा।

'अपराधिक बच्चों को अपराध में पकड़े जाने पर माता–पिता व संरक्षक आदि की मौजूदगी, प्रतिपरीक्षा एवं सलाह देने का अधिकार दिया जायेगा। अपराधी बालक की सुनवाई के दौरान बालकों को कानूनी सलाह कार्य की मौजूदगी एवं सलाह मुफ्त दी जायेगी। जांच के समय उन बालकों पर न्यूनतम प्रतिबंध लगाये जाएँगें, उन्हें और दण्ड नहीं दिया जायेगा। बच्चों का मुकदमा शीघ्र निपटाया जायेगा और उनके अपराधों को गोपनीय रखा जायेगा। बच्चों से माता–पिता और उनके संरक्षकों को मिलने का अधिकार दिया जायेगा। भारत में 11 दिसम्बर 1992 को **बाल अधिकार प्रसंविदा** की पुष्टि की गई। 18 वर्ष से कम की आयु के व्यक्ति को बच्चा माना गया। बाल अधिकार प्रसंविदा में कुल 54 अनुच्छेद को स्वीकृत किया गया। उन अनुच्छेदों के अनुसार मुख्य रूप से बालकों के इन अधिकारों का उल्लेख किया गया। बालक का जन्म होते ही उसका नाम दर्ज कराया जाये और जन्म प्रमाण प्रत्र पंचायत नगर पालिका से बनवाया जाए। (जैनधर्मानुसार) बालक का नाम करण 10 वे दिन से लेकर एक माह तक किये जाने का कथन है।

देखभाल की जिम्मेदारी माता–पिता की होगी। अयोग्य विकलांग और बेसहारा बालकों की शिक्षा चिकित्सा और देखभाल की व्यवस्था समाज और सरकार की होगी। बालकों को नशीले पदार्थों के उत्पादन व्यापार और सेवन करने पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। 15 वर्ष से कम आयु के बालक आक्रमण या लड़ाई में भाग नहीं ले सकेंगे बल्कि उन्हें विशेष संरक्षण प्रदान किया जायेगा।

अल्पसंख्यकों के बच्चों को अपनी धर्म, संस्कृति और भाषा के प्रयोग करने की पूर्ण स्वतंत्रता रहेगी। बहला–फुसलाकर, लोभ–लालच देकर, नशीले पदार्थ खिलाकर अथवा भय दिखाकर अपहरण कर ले जाने वालों के विरूद्ध अथवा व्यापार कराने वालों के विरूद्ध सरकार कठोर कदम उठायेगी। इस प्रकार बाल अधिकार प्रसंविदा में अनेक अनुच्छेदों का उल्लेख बालकों को अधिकार देने के लिये किया गया।

According to the International Covenant on Civil and Political Rights and the Rights of the Child, juvenile delinquents will be kept separate from adults. The cases of delinquent children will be processed keeping in mind their age and rehabilitation. Separate Court J.J. Shelter home will be built separately. The freedom of parents or guardians to impart religious and moral education to children will be respected.

'Criminal children, if caught in a crime, will be given the right to be present, cross-examined and counseled by parents or guardians etc. During the hearing of a criminal child, children will be provided with free legal counsel and advice. At the time of investigation, minimum restrictions will be imposed on those children and they will not be given any further punishment. The cases of children will be disposed of expeditiously and their crimes will be kept confidential. Children will be given the right to meet their parents and their guardians. The Convention on the Rights of the Child was ratified in India on 11 December 1992. A person under the age of 18 years is considered a child. A total of 54 articles were approved in the Child Rights Convention. According to those articles, mainly these rights of children were mentioned. As soon as the child is born, his name should be registered and the birth certificate should be made from the Panchayat Municipality. (According to Jainism) The naming of the child is said to be done from the 10th day till one month.

The responsibility of care will be of the parents. The education, medical care and care of incompetent, disabled and destitute children will be provided by the society and the government. There will be a complete ban on the production, trade and consumption of intoxicants for children. Children below 15 years of age will not be able to participate in attack or fight but will be provided special protection.

Children of minorities will have complete freedom to use their religion, culture and language. The government will take strict action against those who kidnap people by cajoling them, luring them, giving them intoxicants or showing fear, or those who force them into trade. Thus, many articles were mentioned in the Child Rights Convention to give rights to children.

बाल अधिकारों की प्रसंविदा पर वर्ष 1990 में विश्व बाल सम्मेलन 29 सितम्बर को न्यूयार्क में किया गया। 25 मई 2000 को बाल अधिकार पर प्रसंविदा के दो ऐच्छिक प्रोटोकॉल को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार महासभा द्वारा अंगीकृत किया गया।

1. बालकों के विक्रय, बाल वेश्यावृत्ति और बाल अश्लील साहित्य पर ऐच्छिक प्रोटोकॉल लागू किया गया।

2. युद्ध के संघर्ष में बच्चों की भर्ती पर ऐच्छिक प्रोटोकॉल लागू किया गया। इसके अनुसार युद्ध में लड़ने के लिए बालक की उम्र कम से कम 18 वर्ष हो। चितंनीय बात यह है कि बाल अधिकारों पर ऐच्छिक प्रोटोकॉल लागू किये जाने पर भी वर्तमान में सभी देशों में बाल वेश्यावृत्ति, बालकों के क्रय–विक्रय और अश्लील साहित्य बिना रोक–टोक के चल रहा है। कई जगह तो 14–15 साल की बालिकाओं के साथ बड़े–बड़े अधिकारी और नेता गलत कार्य करते हुए जाँच में पकड़े जा रहे हैं। इसलिये लगता है कि उन्हें प्रोटोकॉल का जरा भी ध्यान नहीं आ रहा है। वर्तमान में सामुदायिक हिंसा, दंगे, आतंकवाद, वेश्यावृत्ति, नशीले पदार्थों का व्यवसाय, खतरनाक विस्फोटक, माचिस या पटाखे, चूड़ी, चाकू और केमिकल संबंधी उद्योग बाल श्रमिकों द्वारा कराये जा रहे हैं। देश में बाल श्रमिकों की बढ़ती संख्या और उनका शोषण चिंतनीय विषय है। इसके कारण इस प्रकार है–

1. आवश्यकताओं की पूर्ति ना हो पाना।
2. माता–पिता के द्वारा शिक्षा का अभाव होना।
3. बढ़ती मँहगाई और बेरोजगारी होना।
4. फिल्मों द्वारा कुसंस्कारों का प्रदर्शन होना।
5. औद्योगकीकरण का होना।
6. अत्यधिक गरीबी का होना।
7. माता–पिता का स्वयं कुसंस्कारित होना।
8. मद्यपान, माँस, भक्षण एवं वेश्यावृत्ति आदि में संलग्न होना।

इन सबसे बचने के लिये और बालकों के संरक्षण के साथ संवर्धन के लिए राष्ट्रीय बाल आयोग की स्थापना की गई है। आज महिला बाल विकास नाम से एक मंत्रालय विभाग है– ऐसी स्थिति में बच्चों को सही मार्ग पर लाने के लिये माता–पिता और धार्मिक सद्गुरुओं को आगे आना होगा।

Of child rights the World Children's Conference on the Covenant was held in New York on 29 September in the year 1990. On 25 May 2000, two optional protocols to the Covenant on the Rights of the Child were adopted by the United Nations Human Rights General Assembly.

1. Optional Protocol on the Sale of Children, Child Prostitution and Child Pornography was implemented.

2. The Optional Protocol on Recruitment of Children in Conflict was implemented. According to this, a child must be at least 18 years of age to fight in the war. The matter of concern is that despite the implementation of the Optional Protocol on Child Rights, child prostitution, buying and selling of children and pornography are still going on without any restrictions in all countries. At many places, big officials and leaders are being caught in the investigation doing wrong things with 14-15 year old girls. That's why it seems they are not paying any attention to protocol. At present, community violence, riots, terrorism, prostitution, drug trade, dangerous explosives, matches or firecrackers, bangles, knives and chemical related industries are being run by child labour. The increasing number of child laborers and their exploitation in the country is a matter of concern. The reasons for this are as follows-

1. Non-fulfillment of needs.
2. Lack of education by parents.
3. Increasing inflation and unemployment.
4. Demonstration of bad values through films.
5. Occurrence of industrialization.
6. Existence of extreme poverty.
7. Parents themselves being ill-mannered.
8. Indulging in drinking, eating meat and prostitution etc.

To avoid all this and for the protection and promotion of children, the National Children's Commission has been established. Today there is a ministry department named Women and Child Development - In such a situation, parents and religious gurus have to come forward to bring the children on the right path.

पिछड़े वर्गों के अधिकार

भारतीय संस्कृति में जातियों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है। यह विभाजन सर्वप्रथम युग के आदि में प्रथम तीर्थंकर ऋृषभनाथ स्वामी ने किया था। उन्होंने सर्वप्रथम क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन तीन वर्गो में विभाजित किया था। उसके बाद ऋषभनाथ स्वामी ने दीक्षा ग्रहण कर ली और 1000 वर्ष तक कठोर तपस्या करने के बाद केवल ज्ञान की प्राप्ति की। जब आदिनाथ भगवान की दिव्य देशना हुई तब उन्होंनें उपदेश में कहा कि पेड़–पौधों में प्राण होते हैं। वे भी जीव हैं। इनकी हिंसा नहीं करनी चाहिए। उपदेश सुनकर प्रथम चक्रवर्ती भरत स्वामी के मन में आया कि समस्त श्रोताओं की परीक्षा कर ली जाए कि किस–किस ने भगवान के उपदेश को ग्रहण किया है? इसी अपेक्षा से उन्होंने अपने राज दरबार के चारों ओर के प्रवेश द्वारों पर हरी–भरी फूल–पत्तियाँ बिछवा दीं। तदोपरांत चक्रवर्ती महाराज ने घोषणा की, कि जो आज मिलने आयेगा उसे पुरस्कृत किया जायेगा। सभी लोग चक्रवर्ती से मिलने के लिए आतुर हो उठे। लोग फूल–पत्तियों को कुचलते हुए चक्रवर्ती महाराज के पास पहुँचे। उन्हीं में से कुछ लोग फूल–पत्तियों को ना कुचलते हुए पीछे वाले मार्ग से आये जहाँ पर हरी–भरी फूल–पत्तियाँ नहीं थी। चक्रवर्ती महाराज ने उन श्रावकों से पूछा आप इतनी देरी से क्यों आये। तब उन्होंनें कहा मैंने कल ऋषभदेव स्वामी के समवशरण में उपदेश सुना था कि हरी–भरी फूल–पत्तियों एवं वृक्षों में प्राण होते हैं। उनकी हिंसा नहीं करना चाहिए। उन पर हथियार नहीं चलाना चाहिए। जब हम राज दरबार के पास पहुँचे तो वहाँ हरी–भरी फूल–पत्तियाँ पड़ी हुई थीं। इसलिये हम पीछे के दरवाजे से आये हैं। यह बात सुनकर चक्रवर्ती के मन में आया कि भगवान का उपदेश इन्हीं श्रावकों ने सुनकर अपने जीवन में उतारा है। अतः इन्हें भगवान की पूजा अर्चना एवं मुनियों के लिए आहारदान देने का अधिकार यह कह कर दिया कि मनुष्य जन्म से नही कर्म से महान बनता है। भरत स्वामी ने उन सभी को अधिकार दिया और ब्राह्मण जाति की स्थापना कर दी। इस प्रकार चार वर्गों की स्थापना युग के आदि में हो चुकी थी। उन चारों वर्णों के व्यक्तियों को अलग–अलग अधिकार दिये गये थे। उन्हें अपने कर्तव्यों का बोध भी करा दिया गया था।

Rights of Backward Classes

In Indian culture, castes are divided into four classes. This division was first made by the first Tirthankar Rishabhanath Swami at the beginning of the era. He first divided it into three classes – Kshatriya, Vaishya and Shudra. After that, Rishabhnath Swami took initiation and attained enlightenment only after doing rigorous penance for 1000 years. When Lord Adinath delivered his divine sermon, he said in his sermon that trees and plants have life. They are also living beings. There should be no violence against them. After listening to the sermon, it came to the mind of the first Chakravarti Bharat Swami that all the listeners should be tested as to who has accepted the sermon of God? With this expectation, he spread green flowers and leaves at the entrances around his royal court. After that Chakraborty Maharaj announced that whoever comes to meet him today will be rewarded. Everyone became eager to meet Chakraborty. People crushed flowers and leaves and reached Chakravarti Maharaj. Some of them, without crushing the flowers and leaves, came from the back route where there were no lush green flowers and leaves. Chakravarti Maharaj asked those disciples why did you come so late. Then they said, they had heard the sermon of Rishabhdev Swami yesterday that green flowers, leaves and trees have life. There should be no violence against them. Weapons should not be fired at them. When we reached near the royal court, there were lush green flowers and leaves lying there. That's why we came through the back door. Hearing this, it came to Chakraborty's mind that it was these devotees who listened to God's teachings and implemented them in their lives. Therefore, they were given the right to worship God and donate food to the sages by saying that a man becomes great not by birth but by his deeds. Bharat Swami gave rights to all of them and established the Brahmin caste. In this way four classes were established at the beginning of the era. Individuals of those four varnas were given different rights. He was also made aware of his duties.

यहाँ पिछड़े वर्गों के अधिकार का प्रसंग है। ये SC/ST के भारत में रहने वाले ऐसे कमजोर वर्ग के लोग हैं जिन्हें संवैधानिक शब्दावली में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति अन्य पिछड़े (O.B.C.) (वर्तमान में) कहा जाता है। यद्यपि ये भारतीय संस्कृति के अनुसार परम्परागत रूप से शूद्र जाति के लोग कहे जाते थे। पौराणिक इतिहास के अनुसार जिनका खानपान, रहन–सहन, आचार–विचार, और व्यापार शुद्ध नहीं रहा। मांस भक्षण, मद्यपान एवं अन्य नशीले पदार्थ आदि व्यसनों का सेवन करने के कारण उन्हें युग के आदि में ही शूद्र जाति में रखा गया था। यह जाति देश की शूद्र वर्ग का प्रतिनिधित्व करती रही है। इसे अछूत और आदिम समुदायों के रूप में देखा जाता रहा है। पुराण ग्रंथों के अनुसार शूद्र भी दो प्रकार के थे। एक लुहार, बढ़ई, धीवर, नाई आदि स्पर्श शूद्र कहलाते थे एवं चर्मकार आदि अस्पर्श शूद्र कहलाते थे। इसी आधार पर वर्तमान समय में पिछड़े वर्ग के अधिकार की बात उत्पन्न हुई है। इस वर्ग को दो भागों में अंग्रेजों ने विभक्त किया था। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के रूप में इन्हें वे दलित भी कहते थे। इन्हें अस्पृश्य बहिष्कृत अथवा निम्न जाति भी कहा गया था। महात्मा गाँधी ने इन्हें हरिजन की संज्ञा दी थी। अनुसूचित जाति की संकल्पना का उद्‌गम भारतीय शासन अधिनियम 1935 के अन्तर्गत हुआ। इस अधिनियम में 421 जातियों को रखा गया। 1935 में इनकी कुल जनसंख्या 6 करोड़ थी।

भारतीय संविधान लागू होने के बाद सन् 1949–50 में अनुसूचित जाति घोषित किया गया। बाद में अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़े वर्ग ऐसे तीन भागों में विभाजन किये गये।

Here is the context of the rights of backward classes. These are the weaker sections of SC/ST people living in India who are called Scheduled Castes and Scheduled Tribes, Other Backward Classes (O.B.C.) (at present) in constitutional terminology. Although according to Indian culture, they were traditionally called people of Shudra caste. According to mythological history, those whose food, lifestyle, conduct, thoughts and business were not pure. Due to his addictions like meat eating, drinking and other intoxicants, he was placed in the Shudra caste at the beginning of the era. This caste has been representing the Shudra class of the country. They have been seen as untouchable and primitive communities. According to the Puranas, there were two types of Shudras. A blacksmith, carpenter, carpenter, barber etc. were called Sparsh Shudra and tanners etc. were called Asparsh Shudra. On this basis, the issue of rights of backward classes has arisen in the present time. The British had divided this class into two parts. They were also called Dalits in the form of Scheduled Castes and Scheduled Tribes. They were also called untouchable, outcastes or lower caste. Mahatma Gandhi had called them Harijan. The concept of Scheduled Caste originated under the Government of India Act 1935. 421 castes were included in this Act. Their total population in 1935 was 6 crores.

After the implementation of the Indian Constitution, it was declared a Scheduled Caste in 1949-50. Later it was divided into three parts namely Scheduled Tribe, Scheduled Caste and Other Backward Classes.

अनुसूचित जनजातियों के अधिकार

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत देश में लगभग 8 करोड़ अनुसूचित जनजातियों की संख्या थी। जो भारत की कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत था। वर्तमान समय में लगभग 700 जातियाँ अनुसूचित जनजातियों के अंतर्गत आती हैं। संवैधानिक रूप से सुख–सुविधाओं, नौकरी–पेशा और शासकीय सहायता के लोभ लालच में आकर अनेक जातियां इस अनुसूचित जनजाति में शामिल होना चाहती हैं। इसके लिए वे आन्दोलन भी करती हैं। किन–किन जातियों को अनुसूचित जनजातियों का दर्जा दिया जाए इसकी सूची बनाकर राज्य सरकारें राष्ट्रपति के पास भेजती हैं। राष्ट्रपति राज्यों के राज्यपालों से परामर्श करके निर्णय देता है। अनुसूचित जाति को एस.सी. और अनुसूचित जनजातियों को एस. टी. नाम दिया गया है। इन दोनों जातियों में कुछ भिन्नताऐं हैं इसलिए इन्हें अलग–अलग नाम दिया गया है। जैसे–

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति में छुआ–छूत और आपसी मतभेद की समस्या रही है। दोनों जातियाँ हिन्दू समाज की अंग रही हैं। दोनों के अधिकारों में शासन की ओर से विशेष अंतर नहीं है।

भारतीय संसद द्वारा सन् 1955 में अस्पृश्यता निवारण अधिनियम (Right to Protection of Civil Rights Act.) पारित किया गया। प्राचीन संस्कृति के अनुसार इन जातियों से चली आ रही छुआ–छूत को एवं सफाई आदि करने को दण्डनीय अपराध घोषित किया गया। दुकान, होटल, धर्मशाला, मुसाफिर खाना आदि में किसी प्रकार से कोई रोक टोक नहीं की जाये। नदी, तालाब, कुआं, स्नान घर, श्मशान आदि में किसी प्रकार से प्रतिबंधित ना किया जाये। उच्च वर्ग के साथ सामाजिक, धार्मिक, व्यवसायिक और सांस्कृतिक सभी कार्यों को सामान्य रूप से बिना भेद–भाव के करने दिया जाए। सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक जूलूस में भाग लेने अथवा जूलूस निकालने पर रोक न लगाई जाये। इन जातियों के किसी सदस्य या परिवार के आस–पास कूड़ा–कचरा, मलमूत्र, मृत पशु–पक्षी अथवा कोई घ्रणित पदार्थ ना डाला जाये और न उसे उठाने के लिए बाध्य किया जाये। इस जाति वालों को अखाद्य घृणित पदार्थ खाने या पीने के लिए विवश ना किया जाये। इस जाति वालों को अपमानित अथवा क्षुब्ध ना किया जाये।

Rights of Scheduled Tribes

According to the 2001 census, there were approximately 8 crore Scheduled Tribes in India. Which was 8.2 percent of the total population of India. At present about 700 castes come under Scheduled Tribes. Many castes want to join this Scheduled Tribe due to the greed of constitutional comforts, employment and government assistance. They also protest for this. State governments prepare a list of which castes should be given the status of Scheduled Tribes and send it to the President. The President gives decisions in consultation with the Governors of the states. SC to Scheduled Castes And Scheduled Tribes are called S.T. The name has been given. There are some differences between these two species, hence they have been given different names. As-

1. There has been a problem of untouchability and mutual differences among Scheduled Castes and Scheduled Tribes. Both the castes have been a part of the Hindu society. There is no special difference in the rights of both from the government side.

The Right to Protection of Civil Rights Act was passed by the Indian Parliament in 1955. According to the ancient culture, untouchability and cleaning etc. which was prevalent among these castes was declared a punishable offence. There should be no restrictions of any kind in shops, hotels, dharamshala, traveler food etc. There should be no restrictions in any way in rivers, ponds, wells, bathrooms, crematoriums etc. All social, religious, business and cultural activities should be allowed to be done normally without any discrimination with the upper class. There should be no ban on taking part or taking out processions in cultural, social and religious processions. Garbage, excrement, dead animals, birds or any disgusting substance should not be thrown around any member or family of these castes nor should they be forced to pick it up. People of this caste should not be forced to eat or drink inedible disgusting substances. to be done. People of this caste should not be insulted or angered.

कपड़े उतारकर नग्न करके अथवा चेहरे पर कालिख आदि पोत कर ना घुमाया जाये। महिलाओं का अनादर या लज्जित न किया जाये। बल पूर्वक गाँव, मोहल्ला या मकान छोड़ने के लिये विवश न किया जाए। किसी व्यक्ति विशेष को मतदान देने के लिए अथवा मतदान न करने के लिए विवश न किया जाए। बँधुआ मजदूरी करने को विवश ना किया जाये। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों को कृषि संबंधी कार्य, स्वरोजगार, लघु उद्योग, तकनीकी, परिवहन आदि कार्य के लिये राज्य एवं राष्ट्र (केन्द्र सरकार) इन्हें सहायता पहुँचाये। युवाओं को कम्प्युटर जैसी उच्च टेक्नोलॉजी की निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जायें। रहने के लिए निगम द्वारा आवास परियोजना के अंतर्गत लगभग दो लाख से पाँच लाख रुपये की सहायता दी जाये। सिर पर मैला ढोने की प्रथा समाप्त की जाये। नौकरियों में 7.5 प्रतिशत का आरक्षण प्रदान किया जाये। यदि आरक्षण में इतने बच्चे न मिले तो उन्हें अगले वर्ष के लिए रिजर्व रखा जाय। सरकारी नौकरी में आयु सीमा में 5 वर्ष की छूट प्रदान की जाये। आवेदन पत्र निःशुल्क दिया जाये। भर्ती के समय (चयन) में उदारता वर्ती जाये एवं पदोन्नति में विशेष छूट दी जाये। लोकसभा एवं विधान सभा में स्थानों का आरक्षण प्रदान किया जाये। वर्तमान समय में 554 निर्वाचित क्षेत्रों में कुल 131 स्थान एस सी. एस. टी के लिये आरक्षित हैं। संविधान के अनुच्छेद 15 (4), 16(4), 46, 164, 243, 244, 275, 330, 332, 335, 338, 339, 340, 341, 342, 336, 366,(24,25) मात्र SC/ST अन्य पिछड़े वर्गों के अधिकार देने के लिए बनाएँ गये हैं।

नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम, अनुसूचित और अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति आयोग का एक पृथक न्यायालय स्थापित किया गया। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कल्याण अधिनियम, वित्त निगम, विकास निगम, वन में रहने वाले जातियों के कल्याण अधिनियम, व्यवसायिक शिक्षण कला, संस्कृति, सर्वशिक्षा, सलाहकार परिषद, पुरूस्कार नीति, काका कालेरकर आयोग, सर्वशिक्षा अभियान, अत्याचार की रोकथाम, इत्यादि अनेक परिषद, निगम एवं संरक्षण इन जाति वालों के लिये बनाये गये हैं। वर्तमान में अनेक योजनाओं द्वारा अनेक सुविधाएँ इन जातियों को प्रत्येक पार्टी एवं सत्ता द्वारा प्रदान की जा रही हैं। मात्र वोट बैंक बनाने के लिए।

They should not be paraded naked after taking off their clothes or with black paint on their faces. Women should not be disrespected or embarrassed. One should not be forced to leave the village, locality or house by force. No particular person should be forced to vote or not to vote. Should not be forced to do bonded labour. The state and the nation (central government) should provide assistance to the people living below the poverty line for work related to agriculture, self-employment, small scale industries, technology, transportation etc. Youth should be provided free education in high technology like computers. For living, the corporation should provide assistance of about Rs 2 lakh to 5 lakh under the housing project. The practice of manual scavenging should be ended. Reservation of 7.5 percent should be provided in jobs. If so many children are not found in the reservation, then they should be kept in reserve for the next year. Age relaxation of 5 years should be provided in government jobs. The application form should be given free of cost. There should be leniency at the time of recruitment (selection) and special relaxation should be given in promotion. Reservation of seats should be provided in the Lok Sabha and Legislative Assembly. At present, a total of 131 seats in 554 elected constituencies are for SC/ST are reserved for Articles 15(4), 16(4), 46, 164, 243, 244, 275, 330, 332, 335, 338, 339, 340, 341, 342, 336, 366, (24,25) of the Constitution only. /ST have been created to give rights to other backward classes.

A separate court of Civil Rights Protection Act, Scheduled and Scheduled Tribes Prevention of Atrocities Act, National Scheduled Castes and Scheduled Tribes Commission was established. Scheduled Castes and Scheduled Tribes Welfare Act, Finance Corporation, Development Corporation, Forest Dwelling Castes Welfare Act, Vocational Education, Art, Culture, Universal Education, Advisory Council, Award Policy, Kaka Kalerkar Commission, Universal Education Campaign, Prevention of Atrocities, etc. Council, corporation and protection should be created for these castes. At present, many facilities are being provided to these castes through many schemes by every party and government. Just to create vote bank.

इसका कारण डॉ. भीमराव अम्बेडकर के द्वारा स्वतंत्रता के बाद बनाया गया संविधान भी है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर को सन् 1942 में इंस्टीट्यूट ऑफ पेसिफिक रिलेशन्स के चेयरमैन की तरफ से भारत के अछूतों की समस्या पर कनाडा के क्यूबेक के मानट ट्रमबलेनाट में होने वाली कान्फ्रेंस में एक पेपर पढ़ने के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अछूतों की मुसीबतों को नीग्रो और यहूदियों की मुसीबत से भी अधिक कठिन बताया था। उन्होंने अस्पृश्यता को दास प्रथा से भी अधिक खतरनाक और घिनोना बतलाया था। उन्होंने भारतीय अस्पृश्यता की समस्या को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर सामाजिक और राजनैतिक स्तर पर उठाया था। उनके मन में अस्पृश्यता (अछूत) को लेकर बड़ी टीस थी। उन्होंने साउथ बोरो समिति के सामने लिखित रूप में साक्ष्य प्रस्तुत किये थे सन् 1919 में अस्पृश्यता के संबंध में डॉ. अम्बेडकर जी ने मनु स्मृति ग्रंथ के आठ और विष्णु स्मृति ग्रंथ से कुछ श्लोक उद्धृत किये जिसमें वर्ण व्यवस्था से बाहर अछूत के जन्म और उनके नौकरी–पेशे के बारे में बतलाया गया है। जो इस प्रकार है–

1. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों से जितने भी लोग हैं वे चाहे म्लेच्छ हो या आर्य हो वे सब दस्यु (अछूत) कहलाते हैं।
2. वे गाँव की सीमा के पार वृक्षों के नीचे श्मशानों में, पर्वतों में, वनों में, अपने अलग–अलग पेशों के अनुसार जीवन निर्वाह करते हैं।
3. चाण्डाल और श्वपच (मुर्दे) को जलाने या मृत पशु को फेंकने या ले जाने वाले दोनों गाँव के बाहर वसें।
4. इनके कपड़े उतारे हुए हों, बर्तन टूटे–फूटे हों, आभूषण लोहे के हों और सदा घुमक्कड़ रहकर जीवन व्यतीत करें।
5. इनका विवाह इन्हीं के बीच आपस में हो। धर्मात्मा पुरुष इन लोगों से दूर रहें।
6. इनका भोजन दूसरों के अधीन है। दूसरों के द्वारा दिये गये अन्न से अपना पेट भरें। रात के समय शहरों में या गाँव में घूमने न जाएँ।
7. राजा की आज्ञा से अपनी जाति के चिन्हों से सहित दिन में अपने कार्य के लिए गाँव में जाएँ।

The reason for this is also the constitution made by Dr. Bhimrao Ambedkar after independence. In 1942, Dr. Bhimrao Ambedkar was invited by the chairman of the Institute of Pacific Relations to read a paper on the problem of untouchables in India at a conference in Mont-Tromblenot, Quebec, Canada. He had described the problems of untouchables as more difficult than the problems of Negroes and Jews. He had described untouchability as more dangerous and disgusting than slavery. He had raised the problem of Indian untouchability on the international platform at the social and political level. He had a great pain in his heart about untouchability. He had presented evidence in written form before the South Boro Committee. In 1919, Dr. Ambedkar ji quoted eight verses from Manu Smriti Granth and some verses from Vishnu Smriti Granth regarding untouchability, in which the birth of untouchables outside the Varna system and their occupation have been described. Which are as follows-

1. All the people belonging to these four Varnas, Brahmin, Kshatriya, Vaishya and Shudra, whether they are Mlechchha or Arya, are all called Dasyu (untouchables).
2. They live beyond the boundary of the village, under the trees in crematoriums, in mountains, in forests, according to their different occupations.
3. Both Chandal and Shupach (those who burn dead bodies or throw or carry dead animals, should live outside the village.
4. Their clothes should be taken off, utensils should be broken, ornaments should be made of iron and they should always live a nomadic life.
5. Their marriages should be among themselves. Religious men should stay away from these people.
6. Their food is dependent on others. Fill your stomach with food given by others. Do not go out for a walk in the cities or villages at night.
7. With the permission of the king, go to the village for your work during the day with the symbols of your caste.

8. ये लोग राजा की आज्ञा से वध (मृत्युदण्ड) के योग्य पुरुषों का वध करें। वध किये गये पुरुष के वस्त्र आभूषण को ग्रहण करें।
9. जो निम्न जाति (अछूत) की स्त्री के साथ संबंध रखता है वे समाज में बाध्य हैं।
10. यदि कोई अछूत व्यक्ति, सवर्ण (उच्चवर्ण) को जानबूझ कर छू लेता है तो वह अस्पर्श बाध्य है।

इस प्रकार से धार्मिक शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद उन्होंने अस्पृश्यता की परिभाषा इस प्रकार दी कि अस्पृश्यता आंतरिक तिरस्कार की बाहरी अभिव्यक्ति है। जो एक हिन्दू किसी निश्चित व्यक्ति के बारे में महसूस करता है (राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज, खंड 5, पृष्ठ 169) यह बात लिखी है। उन्होंने राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज, खंड 2 में लिखा है कि गुलामी कभी भी बाध्यकारी नहीं रही लेकिन अस्पृश्यता हमेशा बाध्यकारी रही है। गुलामी अर्थात् दासता में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को गुलाम बनाकर रखने के लिए अनुमत रहता है। यदि वह ऐसा ना करना चाहे तो उस पर कोई पाबंदी नहीं होती है। लेकिन अस्पृश्यता के पास कोई अन्य विकल्प नहीं है। गुलामी के कानून ने गुलाम को उसकी मुक्ति की स्वीकृति दी है। यदि कोई एक बार गुलाम हो गया तो सदा गुलाम बना रहे ऐसा नियम नहीं है। लेकिन अस्पृश्यता में इसका कोई बचाव नहीं है। अस्पृश्यता अप्रत्यक्ष है इस लिए वह गुलामी का सबसे निक्रष्ट रूप है। उपयुक्त मनुस्मृति एवं विष्णुस्मृति के उदाहरण देकर डॉ. अम्बेडकर जी ने अछूतों को हिन्दुओं से अलग स्वीकार किया था। अतः उन्होने लिखा हैं कि अछूत (राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज) हिन्दू समाज के अंग नहीं है। यदि वे अंग है भी तो एक अलग ही अंग हैं। अस्पृश्य कही जाने वाली कौम में कौन है ? उनकी नस्ल क्या हैं ? उनका धर्म क्या है ? इन प्रश्नों को बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने साईमन कमीशन के सामने अपने साक्ष्य प्रस्तुत करके यह सिद्ध किया कि अछूत कहे जाने वाले समुदाय के लोग हिन्दू समुदाय के अंग नहीं हैं।

अछूतों के लिये हिन्दू उसी प्रकार के विदेशी लोग हैं जिस प्रकार से यूरोप के लोगों के लिए हम विदेशी हैं। जैसे जर्मनी फ्रांसीसियों के लिए, यहूदी गैर यहूदियों के लिए और श्वेत लोग नीग्रो के लिए हैं, उसी प्रकार स्वर्णों के लिए शुद्र अछूत हैं। यद्यपि चार वर्ण हिन्दूओं के अन्तर्गत आते हैं फिर भी हिन्दुओं ने आज तक अछूतों को कभी अपनाया नहीं है।

8. These people should, with the king's permission, kill men who are eligible for death penalty. Accept the clothes and jewelery of the murdered man.
9. Those who have relations with a woman of lower caste (untouchable) are bound in the society.
10. If an untouchable person intentionally touches a upper caste person, he is bound to become an untouchable.

After studying the religious scriptures in this way, he defined untouchability in such a way that untouchability is an external expression of internal contempt. What a Hindu feels about a certain person (Writings and Speeches, Volume 5, Page 169) has been written. He has written in Writings and Speeches, Volume 2 that slavery has never been compulsory but untouchability has always been compulsory. In slavery one person is allowed to enslave another person. If he does not want to do this then there is no restriction on him. But untouchability has no other option. The law of slavery grants the slave his freedom. If someone once becomes a slave, there is no rule that he remains a slave forever. But there is no protection from untouchability. Untouchability is indirect and hence it is the worst form of slavery. By giving appropriate examples of Manusmriti and Vishnusmriti, Dr. Ambedkar ji had accepted the untouchables as different from Hindus. Therefore, he has written that the untouchables (writings and speeches) are not a part of the Hindu society. Even if they are organs, they are a separate organ. Who is in the community called untouchable? What is their breed? What is their religion? Baba Saheb Ambedkar ji presented his evidence on these questions before the Simon Commission and proved that the people of the community called untouchables are not a part of the Hindu community. For the untouchables, Hindus are foreigners in the same way as we are foreigners for the Europeans. Just as the Germans are to the French, the Jews are to the Gentiles and the white people are to the Negroes, similarly the Shudras are untouchable to the Goldens. Although four varnas come under Hindus, still Hindus have never accepted the untouchables till date.

यदि अछूत लोग भिन्न नस्ल के नहीं है तो कम से कम भिन्न समाज के लोग जरूर हैं। इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर जी द्विजों और दलितों (अछूत) को अलग मानते हुए स्पष्ट लिखा है। कि दलितों का अपना एक अलग समूह है, वे मुसलमानों से भी भिन्न हैं। यद्यपि दलितों को हिन्दुओं में शामिल किये जाने पर भी वे हिन्दुओं से भिन्न हैं। इसीलिए उन्होंने अपनी माँग इन जोरदार शब्दों में रखी की हमें अछूतों को हिन्दू समुदाय से अलग और स्वतंत्र अल्पसंख्यक समुदाय माना जाए। हिन्दु समुदाय में शामिल करके अब तक हमारा अल्पसंख्यक वाला चरित्र छिपाया गया है। जबकि सच्चाई यह है कि दलित वर्ग और हिन्दू समाज में कोई संबंध नहीं है। हम अछूत हिन्दुओं से अपना संबंध खत्म करना चाहते हैं। यह बात उन्होंने कम्पलीट पार्टीशन में कही थी।

बाबा अम्बेडकर साहब शूद्रों की उत्पत्ति आर्य समुदाय के सूर्यवंश से मानते थे। उन्होंनें राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज, खंड 7 स्पष्ट लिखा है कि शूद्र आर्य समुदायों के सूर्यवंश में से एक थे। हिन्दुओं और अछूतों में नस्लगत कोई भेद नहीं है। उन्होंने 'हू वर दि शूद्र एन्ड दि अनटचेबल्स' में लिखा है कि आर्यों ने अपनी वर्ण शंकर और नाजायज संतानों को आज तक नहीं अपनाया। शास्त्रों में बाकायदा अनुलोम और प्रतिलोम संतानों के नाम दिये हैं। लेकिन उन्हें प्यार और सम्मान नहीं दिया गया है। डॉ. अम्बेडकर जी 4 वर्णों की व्यवस्था को मनु (कुलकर) के द्वारा बनाई गई स्वीकार करते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इनमें 5वां कोई वर्ण के होने की मनाही है। अस्पृश्य को वर्ण बाह्य के रूप में स्वीकारा है।

अंबेडकर जी लिखते हैं कि जब अछूत लोग धर्म की बात करते हैं तो हम अछूत लोगों को अलग मानते हैं। अतः धर्म, कर्म की बात करते ही हम अछूत हो जाते हैं। जब हिन्दू धर्म पर कोई आफत आती है तो वे हिन्दुओं के अभिन्न अंग हो जाते हैं अतः हम इसी कथनी और करनी के अंतर के साथ–साथ हिप्पोक्रेसी से जूझ रहे हैं।

मैंने जैन धर्मानुयाईयों के अपने बड़े बुजुर्गों से सुना है कि डॉ. अम्बेडकर जी ने जैन समाज के विद्वान श्रेष्ठीजनों से चर्चा के दौरान कहा था कि जैन धर्म के सत्य अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अनेकांत, स्यादवाद के सिद्धांत और मद्यपान, मांसाहार इत्यादि अभक्ष्य के त्याग के सिद्धांतों से मानव का विकास हो सकेगा। सभ्यता, संस्कार, संस्कृति और लोकतंत्र की रक्षा हो सकेगी।

If the untouchable people are not of different race then at least they are definitely people of different society. Thus, Dr. Ambedkar ji has clearly written about considering Dwijas and Dalits (untouchables) as separate. That Dalits are a separate group of their own, they are different from Muslims also. Although Dalits are included among Hindus, they are still different from Hindus. That is why he put forward his demand in these strong words that we should consider the untouchables as a separate and independent minority community from the Hindu community. Till now our minority character has been hidden by including us in the Hindu community. Whereas the truth is that there is no relation between the Dalit class and the Hindu society. We want to end our relationship with the untouchable Hindus. He had said this in Complete Partition.

Baba Ambedkar Saheb believed the origin of Shudras to be from the Suryavansh of the Aryan community. He has clearly written in Writings and Speeches, Volume 7 that Shudras were one of the Suryavansh of the Aryan communities. There is no racial difference between Hindus and untouchables. He has written in 'Who Were the Shudras and the Untouchables' that till date the Aryans have not accepted their Varna Shankar and the illegitimate children. In the scriptures, names of children are given as Anulom and Pratiloma. But they have not been given love and respect. Dr. Ambedkar ji accepts the system of 4 varnas created by Manu (Kulkar). It is prohibited to belong to any fifth varna including Brahmin, Kshatriya, Vaishya and Shudra. Untouchables are accepted as outsiders.

Ambedkar ji writes that when untouchable people talk about religion, we consider untouchable people different. Therefore, as soon as we talk about religion and karma, we become untouchable. When any calamity befalls Hindu religion then they Therefore, we are struggling with this difference of words and actions as well as Hippocracy.

I have heard from my elders of Jain followers that Dr. Ambedkar ji had said during the discussion with the learned scholars of Jain community that the truths of Jain religion are non-violence, celibacy, aparigraha, anekant, principles of Syadvad and alcoholism, non-vegetarianism etc. Human development will be possible through the principles of renunciation of non-food items. Civilization, values, culture and democracy will be protected.

इसीलिए जैन धर्म के सिद्धांत सर्वश्रेष्ठ हैं। अतः हम सभी दलित कहे जाने वाले लोगों को जैन धर्म अपनाना चाहिए। हमें आप अपनाएँ लेकिन जैन धर्मानुयाईयों ने उस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। इसीलिए उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाया।

अस्पृश्यता के भेद–भाव को मिटाने के लिए अम्बेडकर साहब ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया। जब संविधान लिखने की बात आई तो उन्होंने अनुच्छेद 17 में मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के साथ एक नया आयाम जोड़ते हुए लिखा अस्पृश्यता का अंत किया जाता है और उसका किसी भी रूप से आचरण निषिद्ध किया जाता है। अस्पृश्यता से उपजी किसी निर्योग्यता को लागू करना अपराध होगा, जो विधि के अनुसार दंडनीय भी होगा। लगता है कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के मन में संविधान लिखते समय दलित लोगों के प्रति मोह ज्यादा रहा है। इसलिए उनके प्रति पैरवी करके संविधान में उनके उत्थान संबंधी कानून, कठोर और हितग्राही बनाये हैं। इसी के साथ संविधान में आरक्षण का प्रावधान एक निश्चित अवधि के लिये रखा जो अब तक प्रभावी है। जिसे हटाने की भी यदा–कदा चर्चा होती रहती है। सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, और व्यवसायिक, नौकरी–पेशे, सामुदायिक सेवा, खेल, विज्ञान आदि के क्षेत्र में सभी प्रकार की सुविधाएं दी गई है। इनकी गतिविधियों को जानने के लिए एवं सभी प्रकार की सुविधाएं देने के लिए आयोग मण्डल गठित किये गये हैं।

आयोग के अपने कुछ कार्य हैं, जैसे–संविधान के अंतर्गत किसी कानून अथवा सरकार के द्वारा किसी प्रकार के अन्य आदेश प्रदान किये गये तो उनकी सूचना देना, सुरक्षा के उपायों के मामलों की जाँच करना, अधिकारों और सुरक्षा के उपायों से वंचित करने संबंधी विशेष जांच करना, सभी प्रकार के विकास की योजना प्रक्रिया में भाग लेने की सलाह देना और समीक्षा करके रिपोर्ट प्रस्तुत करना। उत्कृष्ट, शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान, सेवा, आदि क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को प्रोत्साहन देना।

इस कार्य के लिए आयोग अपनी सिफारशें सरकार को भेजता है। इसके पश्चात् यह केन्द्रीय केबिनेट में पेश किया जाता है। संसद में पारित होने के बाद राष्ट्रपति के हस्ताक्षर होते हैं। महामहिम राष्ट्रपति के हस्ताक्षर होने के उपरांत लोक अधिसूचना जारी की जाती है और वह एक विधेयक अधिनियम कानून बन जाता है।

That is why the principles of Jainism are the best. Therefore, all of us who are called Dalits should adopt Jainism. You accept us but the Jain followers did not accept that proposal. That is why he adopted Buddhism.

To end the discrimination of untouchability, Ambedkar adopted Buddhism. When it came to writing the Constitution, he added a new dimension to the Universal Declaration of Human Rights in Article 17 by writing that untouchability is abolished and its practice in any form is prohibited. Enforcing any disability arising out of untouchability would be an offence, which would also be punishable as per law. It seems that Dr. Bhimrao Ambedkar ji had more attraction towards the Dalit people while writing the Constitution. Therefore, by advocating for them, the laws related to their upliftment have been made stringent and beneficial in the Constitution. Along with this, the provision of reservation was kept in the Constitution for a fixed period which is still effective. There is occasional discussion about its removal. All types of facilities have been provided in the fields of social, educational, cultural, and professional, job-profession, community service, sports, science etc. Commission boards have been formed to know about their activities and to provide all kinds of facilities.

The Commission has some of its own functions, such as giving information about any law under the Constitution or any other order given by the government, investigating matters related to security measures, To carry out special investigations on deprivation of rights and safeguards, advise to participate in the planning process of all types of development and review and submit reports. To encourage those who have excelled in the fields of education, culture, science, service, etc.

For this work the commission sends its recommendations to the government. After this it is presented in the Central Cabinet. After it is passed in Parliament, it is signed by the President. After the signature of His Excellency the President, public notification is issued and a Bill Act becomes a law.

यहाँ यह सब बतलाने का मेरा यह तात्पर्य है कि ऐसी नीतियां और सुख सुविधाएं अनुसूचित जाति या जनजाति के लिए होने के साथ–साथ यदि जन–जन के लिए होती तो यह जन आचार संहिता बन जाती। इससे सभी समुदायों को लाभ मिल सकता था और जाति भेद, वर्ण भेद, ऊँच नीच का भेद, एवं गरीब–अमीर का भेद ही समाप्त हो जाता और वास्तव में यह लोकतांत्रिक देश का वास्तविक संविधान हो जाता।

यहाँ मैं जिस बात का उल्लेख कर रहा हूँ वह बात अन्य धर्म और जाति वर्ग के विद्वान लोगों के अन्दर भी उत्पन्न हुई है। इसी कारण एस. सी (अनुसूचित जनजाति) और एस.टी. (अनुसूचित जाति) के अलावा ओ. बी. सी. (अन्य पिछड़ा वर्ग) अपनी मांग लेकर सरकार के सामने खड़ा हो गया और उन्हें भी अनुच्छेद 16 (4) तथा अनुच्छेद 340 के अंर्तगत पिछड़ा वर्ग अन्य पिछड़ा वर्ग को आरक्षण देना पड़ा।

अन्य पिछड़ा वर्ग

भारतीय संविधान, सामाजिक न्याय और मांग के सिद्धान्त पर आधारित है। इसलिये दलित वर्ग के बाद अन्य पिछड़ा वर्ग की मांग के बाद सरकार के द्वारा उन्हें भी आरक्षण का लाभ प्रदान किया गया। 31 दिसम्बर 1980 को मण्डल आयोग ने अपनी रिपोर्ट सरकार के सामने प्रस्तुत की। पिछड़े वर्ग की जातियों के निर्धारण के लिए सामाजिक आर्थिक एवं शैक्षणिक माप दण्डों का प्रयोग किया गया। इन्हीं माप दण्डों के आधार पर 3743 जातियों को पिछड़ा वर्ग घोषित करके आरक्षण दिया गया। इसके बाद भी समाधान नहीं हुआ और अन्य लोगों ने भी अपनी मांगे सरकार के सामने रखी। परिणाम स्वरूप अल्पसंख्यक क्रीमीलेयर के रूप में सहायता देना पड़ी।

अधिकार उसे देना चाहिए जो योग्य हो। अयोग्य व्यक्ति को अधिकार देना बंदर के हाथ में छुरी देने के समान है। आरक्षण नीति ऐसी हो जिससे आरक्षण अयोग्य को योग्य बनने के लिए होना चाहिए। पढने–लिखने, खाने–पीने, खेलने–कूदने और रहने आदि सुविधाओं का देने रुप आरक्षण होना चाहिए। ऐसा करके पहले योग्य बनाना चाहिए फिर अधिकार देना चाहिए। जैसे डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, पुलिस अधीक्षक, कलेक्टर आदि प्रशासन के पद पर और शासन की कुर्सी पर, पद लेकर अयोग्य व्यक्ति बैठ जायेंगे तो देश, समाज, संस्कृति और संस्कारों का भविष्य क्या अच्छा होगा? यह बात पद पर बैठे लोग स्वयं सोचें, उत्तर यही होगा कि अयोग्य को उस पद पर नहीं होना चाहिए। अयोग्य व्यक्ति सही पुरुषार्थ, सही निर्णय और सही कर्तव्य का पालन नहीं कर सकता।

What I mean by telling all this here is that if such policies and facilities were meant for the Scheduled Castes or Tribes as well as for the general public, then it would have become a code of conduct for the people. All communities could have benefited from this and caste discrimination, caste discrimination, discrimination between high and low, and discrimination between rich and poor would have ended and in fact it would have become the real constitution of a democratic country.

What I am mentioning here has also arisen among learned people of other religions and castes. For this reason S. C (Scheduled Tribe) and S.T. Apart from (Scheduled Caste) O. B. C. (Other Backward Classes) stood in front of the government with their demand and they too had to give reservation to the Backward Classes and Other Backward Classes under Article 16 (4) and Article 340.

Other backward classes

The Indian Constitution is based on the principle of social justice and demand. Therefore, after the demand of Dalit class and other backward classes, the benefit of reservation was also provided to them by the government. On 31 December 1980, the Mandal Commission presented its report to the government. Socio-economic and educational parameters were used to determine the backward castes. On the basis of these parameters, 3743 castes were declared backward classes and given reservation. Even after this there was no solution and other people also put forward their demands before the government. As a result, assistance had to be provided in the form of minority creamery.

Rights should be given to those who are worthy. Giving authority to an unworthy person is like giving a knife to a monkey. The reservation policy should be such that reservation should be made for the incompetent to become eligible. There should be reservation in the form of facilities like reading, writing, eating, drinking, playing, living etc. By doing this one should first make one capable and then give rights. Like doctor, lawyer, engineer, superintendent of police, collector etc., if incompetent people occupy the posts of administration and the chair of government, then what will be the future of the country, society, culture and values? People holding positions should think about this for themselves, the answer would be that the unqualified should not be on that position. An incompetent person cannot perform the right effort, right decision and right duty.

अधिकार देने के नियम, कानून

अधिकारों को देने के कुछ सिद्धांत भी होते हैं। अधिकारों के इन सिद्धांतों को इस प्रकार समझा जा सकता है–:

1. अधिकारों के प्राकृतिक सिद्धांत

प्राकृतिक का अर्थ है स्वभाव। सिद्धांत का अर्थ है नियम और धर्म। जो मूल अधिकार जीने के लिये, भरण–पोषण करने के लिए, धन संपत्ति की रक्षा के लिए, परिवार के संरक्षण के लिए और अपने आचार–विचार के अनुसार धर्म का निर्वाहन करने के लिए जो अधिकार दिये जाते हैं वे प्राकृतिक सिद्धांत कहलाते हैं। उनके बिना जीवन का निर्वाह नहीं हो सकता है। ये अधिकार जन्म से ही प्रत्येक प्राणी को प्राप्त हैं। जैसे पक्षियों के उड़ने के लिए पंख होते हैं वैसे ही ये अधिकार नियम, धर्म, मानव के लिए प्रकृति प्रदत्त होते हैं।

2. अधिकारों के कानूनी सिद्धांत

कानूनी अधिकार प्राकृतिक या अकृत्रिम नहीं होते बल्कि कृत्रिम होते हैं। ये राजा, समाज, या किसी अधिकारी द्वारा बनाये गये होने से कृत्रिम होते हैं। देश, समाज, धर्म, परिवार, और राज्य को दृष्टि में रखकर अधिकारों को देने हेतु कानून बनाये जाते हैं। अधिकारों के इन नियम कानूनों का जो व्यक्ति उल्लघंन करता है उसे दंडित किया जाता है। अयोग्य व्यक्ति उनका उल्लघंन करता है। जिससे अपराध बढ़ते हैं और शांति भंग होती है। जिस देश, समाज या परिवार में जितने कठोर नियम, कानून और दण्ड सहिंता होती है वह देश समाज और परिवार उतना ही अनुशासित होता है। उसमें अपराध कम होते हैं और शांति अधिक होती हैं।

3. अधिकारों के ऐतिहासिक सिद्धांत

प्राचीन काल से जो जिस देश, समाज, या परिवार में रीति–रिवाज, प्रथायें, धर्म–कर्म, इत्यादि की परम्परायें चली आ रही हैं उन्हें ही अधिकारों के ऐतिहासिक सिद्धांत कहते हैं क्योंकि यही परम्परायें अधिकारों का दर्जा प्राप्त कर लेती हैं। यही परम्परागत अधिकार प्राचीन काल से चले आने के कारण ऐतिहासिक सिद्धांतों के अंतर्गत आ जाते हैं। जो व्यक्ति अयोग्य होता है वह उन ऐतिहासिक अधिकारों के सिद्धांतों का पालन और संरक्षण नहीं कर पाता है। इसलिए अयोग्य को कभी अधिकार नहीं देना चाहिए।

Rules, Laws Granting Rights

There are also some principles for granting rights. These principles of rights can be understood as follows:

1. Natural principles of rights

Natural means nature. Siddhanta means rules and religion. The basic rights which are given for living, for maintenance, for protection of wealth, for protection of family and for practicing religion according to one's conduct and thoughts, are called natural principles. Life cannot exist without them. Every living being has these rights since birth. Just as birds have wings to fly, similarly these rights, rules, religion, are given to humans by nature.

2. Legal principles of rights

Legal rights are not natural but are artificial. These are artificial because they are made by the king, society, or any official. Laws are made to provide rights keeping in mind the country, society, religion, family and state. The person who violates these rules and regulations of rights is punished. An incompetent person violates them. Due to which crimes increase and peace is disturbed. The stricter the rules, laws and punishments in a country, society or family, the more disciplined the country, society and family are. There is less crime and more peace there.

3. Historical theory of rights

The traditions, customs, rituals, etc. which have been going on in the country, society or family since ancient times are called historical principles of rights because these traditions acquire the status of rights. These traditional rights come under historical principles as they have been prevalent since ancient times. A person who is ineligible is not able to follow and protect the principles of those historical rights. Therefore, rights should never be given to the unworthy.

4. अधिकारों का आदर्शवादी सिद्धांत

आदर्शवादी सिद्धांत का अर्थ है सादा भोजन–उच्च विचार, शाकाहारी–सदाचारी, सेवाभावी–न्यायाचारी। जो तन, मन और वचन को विकृत करते है स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं जिन्हें लोग अच्छा नहीं समझते हैं, बुद्धि भी कुबुद्धि हो जाती है और हिंसा के साथ भय, पीड़ा उत्पन्न होती है ऐसे मद्य, मांस, मदिरा, इत्यादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन और आचार विचार व्यवहार को नहीं करना अतः अच्छे मर्यादित शालीन वस्त्र आभूषण धारण करना, बड़ों की मान–मर्यादा का पालन करते हुए नैतिक जीवन जीना और सत्य समीचीन व्यवहार करना ही आदर्शवादी सिद्धांत कहलाता है। जब कोई व्यक्ति श्रेष्ठ आचार, विचार, विवेक और बुद्धि से कार्य को करते हुए सफलता प्राप्त करता है तो वह अन्य लोगों के लिए आदर्श बन जाता है। आदर्श का अर्थ दर्पण (आईना) होता है। आईने में जो जैसा होता है वैसा झलकता है। आदर्शवादी व्यक्ति अंदर और बाहर, कथनी और करनी में एक होता है। ऐसा व्यक्ति सभी के लिए प्रिय होता है। ऐसे व्यक्तियों का लोग उदाहरण दिया करते हैं जैसे–राम, हनुमान, कृष्ण महावीर इत्यादि। ये सभी आदर्श पुरुष अवतार कहलाते है। लोग इनकी नकल करते हैं। आदर्शवादी बनने के लिए योग्यता हासिल करना आवश्यक होता है। अयोग्य व्यक्ति आदर्शवादी सिद्धान्तों का न तो पालन कर सकता है, न स्वयं आदर्शवादी बन सकता है इसीलिए अच्छा यही है कि योग्य व्यक्ति को ही अधिकार दिये जाना चाहिए।

5 अधिकारों का सामाजिक कल्याणकारी सिद्धांत

एक जैसे आचार–विचार, पूजन–पाठ, धर्म–कर्म, खान–पान, रहन–सहन, वाले लोगों का समूह समाज कहलाती है। जिस सिद्धांत में आचार–विचार, सेवा, सहयोग से समाज का हित निहित होता है, उसे समाज कल्याणकारी सिद्धांत कहते हैं। समाज कल्याणवादी लोग उदार और सहिष्णु होते हैं।

6. अधिकारों का उपभोगवादी सिद्धांत

प्रकृति से प्राप्त भोगोपभोग के फल–फूल, साग–सब्जी, अनाज–पानी भोग्य पदार्थ, गिरिगुफा आदि वस्तुएँ एवं कृत्रिम रूप से बनाये गये वस्त्र, आभूषण, वाहन एवं भवन आदि का जन–जन की सुख–सुविधा के लिए सही–सही उपयोग में लाकर उपभोग करना उपभोगवादी सिद्धांत कहलाता है।

4. Idealistic theory of rights

Idealistic principle means simple food – high thoughts, vegetarian – virtuous, service minded – righteous. Those which deform the body, mind and speech are injurious to health, which people do not consider good, the intellect also becomes foolish and along with violence, fear and pain arise. Such non-edible substances as alcohol, meat, liquor, etc. Not following the rules of consumption and conduct, hence wearing good, dignified clothes and jewellery, living a moral life by following the dignity of elders and behaving truthfully and appropriately are called idealistic principles. When a person achieves success by doing work with good conduct, thoughts, wisdom and intelligence, then he becomes a role model for other people. Adarsh means mirror. Whatever happens is reflected in the mirror. An idealistic person is one inside and out, in words and deeds. Such a person is dear to everyone. People give examples of such persons like Ram, Hanuman, Krishna Mahavir etc. All these ideal men are called incarnations. People copy them. To become an idealist it is necessary to acquire qualifications. An unqualified person can neither follow idealistic principles nor become an idealist himself, that is why it is better that only a qualified person should be given rights.

5. Social welfare theory of rights

A group of people having similar morals, thoughts, worship, religious practices, eating habits and lifestyle is called a society. The principle in which the welfare of the society lies through conduct, thought, service and cooperation is called social welfare principle. Social welfare people are generous and tolerant.

6. Consumerist theory of rights

Fruits, flowers, vegetables, grains, water, edible items, caves etc. obtained from nature and artificially made clothes, jewellery, vehicles and buildings etc. for the comfort and convenience of the people. Consuming by using it properly is called consumptive theory.

वस्तु का सही–सही उपयोग करना, दुरूपयोग नहीं करना, यही जन आचार सहिंता का एक सिद्धांत है। इसका पालन योग्य व्यक्ति ही कर सकता है, अयोग्य नहीं। इसलिए अधिकार योग्य व्यक्ति को ही देना चाहिए। मानव अधिकारों का आदिम युग से क्रमिक विकास हुआ है। जीवों के कुछ जन्म सिद्ध अधिकार हैं। अधिकारों के बिना जीवनयापन असंभव है। मानव अधिकार की बात करें तो मानव अधिकारों के बिना न तो गरिमा पूर्ण जीवनयापन कर सकता हैं, न सभ्यता, संस्कृति, संस्कार, सम्पत्ति और गुणों का विकास कर सकता हैं। इसीलिए मानवाधिकार में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, नागरिक, धार्मिक इत्यादि अधिकारों को रखा गया है।

सामाजिक अधिकारों के सिद्धांत होते हैं, विधि विज्ञान होता है या यूँ कहे नियम कानून होता है। विधि का अर्थ नियम कानून ही होता है। प्रत्येक नियम कानून राजा की आज्ञा से विद्वानों और मंत्रियों की सलाह से राज्य और प्रजा के हित में बनाये जाते हैं। नियम कानून सुख–शांति अमन चैन के लिए बनाये जाते हैं। लेकिन जब नये कानून बनाये जाते हैं तब वे क्रांति लाते हैं। वह क्रांति इसलिए आती है कि पुरानी चली आ रही रूढ़ीवादी परम्परायें टूटती या बदलती नजर आती हैं। ऐसा देखकर ये रूढ़ीवादी लोग सहन नहीं कर पाते हैं। इसलिए नये कानून क्रांति लाते हैं। जब वे नियम कानून जनता जनार्दन के हित में होते हैं तो वह क्रांति शांति में बदल जाती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में बनाये जाने वाले सिद्धांतों का उद्देश्य सबको एक समान अधिकार प्राप्त करने का धार्मिक, सामाजिक, व्यवसायिक, वैचारिक, अभिव्यक्ति एवं जीवन जीने का स्वतंत्र अधिकार देने या प्राप्त करने का होता है। लोकतंत्र में अधिकारों के लिए आन्दोलन करना पड़ता है और राज्यतंत्र में युद्ध करना पड़ता है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं वैचारिक स्वतंत्रता के बिना राजनैतिक नियम कानून एवं अधिकारों का कोई महत्व नहीं है।

वर्तमान लोकतंत्र में जनता के द्वारा, जनता पर जनता के लिये, नियम कानून, धन, संपत्ति, पद प्रतिष्ठा है।

Using things properly and not misusing them is a principle of public conduct. Only a qualified person can follow it, not an unqualified one. Therefore, authority should be given only to a qualified person. Human rights have gradually developed since the primitive era. Living beings have some birth rights. Living without rights is impossible. Talking about human rights, without human rights one can neither lead a dignified life nor develop civilization, culture, values, property and qualities. That is why social, economic, cultural, political, civil, religious etc. rights have been included in human rights.

There are principles of social rights, there is jurisprudence or in other words there are rules and laws. Law means rules and regulations. Every rule and law is made by the order of the king and with the advice of scholars and ministers in the interest of the state and the people. Rules and regulations are made for happiness and peace. But when new laws are made they bring revolution. That revolution comes because the old conservative traditions seem to be breaking or changing. These conservative people cannot bear seeing this. That's why new laws bring revolution. When those rules and regulations are in the interest of the public then that revolution turns into peace. The purpose of the principles formulated in a democratic system is to give or get equal rights to everyone in religious, social, business, ideological, expression and independent right to live life. In democracy one has to agitate for rights and in polity one has to fight. Without social, economic, religious and ideological freedom, political rules, laws and rights have no significance.

In the present democracy, by the people, for the people, there are rules and regulations, money, property, position and prestige.

जैन धर्म में नीच गोत्र बनाम दलित

जैनधर्मानुसार वर्ण चार है। कर्म सिद्धांत में आठ प्रकार के कर्म में एक गोत्र कर्म है। उस के भी दो भेद उच्च और नीच गोत्र के रूप में है। जिन कुलों में मांस, मच्छी, अंडे आदि अभक्ष्य पदार्थ एवं शराब, चरस आदि नशीले पदार्थों का सेवन नहीं किया जाता है और दीक्षा, शिक्षा, व्रत नियम संयम का पालन करते हुए उच्च आचरण किया जाता है उसे उच्च गोत्र कहते है। जिन कुलों में, मांसाहार एवं मद्यपान आदि किया जाता है और आचार, विचार आहार, व्यवहार उच्च नहीं होता। उसे नीच गोत्री कहते हैं।

जो जन्म से उच्च गोत्रीय होते हैं वे यदि मांस, मदिरा, आदि का सेवन या व्यवसाय करते हैं तो वे नीच गोत्रीय हो जाते हैं। इसी प्रकार जो म्लेच्छ आदि नीच गोत्र में जन्म लेने वाले स्त्री या पुरुष उच्च गोत्रियों के साथ रहकर अपना उच्च आचरण करने लगते हैं तो वे उच्च गोत्रिय हो जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि जैन धर्म में क्षत्रिय आदि चार प्रकार की जातियों को सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से वर्गीकृत किया गया है। इसमें कोई भेद–भाव मनु स्मृति के समान नहीं किया गया है। एक नीति है 'जन्मतः जायते शूद्रः' जन्म से सभी शूद्र होते हैं। इसी कारण 10 दिन तक सूतक पातक का विधान जन्म–मरण के समय किया गया है और उस काल में दान, पूजन पाठ से वंचित रखा जाता है लेकिन जब दीक्षा–शिक्षा और आचार–विचार उच्च हो जाता है तब वह व्यक्ति कर्म से उच्च हो जाता है।

Low Gotra vs Dalit in Jainism

According to Jainism, there are four varnas. Gotra karma is one of the eight types of karma in karma theory. It also has two types in the form of high and low gotra. Those clans in which non-edible items like meat, fish, eggs etc. and intoxicating substances like liquor, hashish etc. are not consumed and high conduct is followed by following initiation, education, fasting rules and restraint, are called high clans. Those clans where non-vegetarian food and alcohol consumption are practiced and the conduct, thoughts, food and behavior are not high. He is called a low caste.

If those who are of high Gotra by birth consume meat, liquor, etc. or do business then they become of low Gotra. Similarly, the men or women born in low Gotra like Mlechchha etc. start behaving in a high manner by living with higher Gotras, then they become high Gotris. This makes it clear that in Jainism, four types of castes like Kshatriya etc. have been classified from the point of view of social system. There is no discrimination in this like Manu Smriti. There is a policy 'Janamtha Jayate Shudra', everyone is a Shudra by birth. For this reason, the rule of Sutak Patak has been made for 10 days at the time of birth and death and during that period one is deprived of charity and worship, but when the initiation, education and conduct thoughts become high then that person becomes high in deeds. goes.

विकलांगों के अधिकार

यदि अधिकार की बात आती है तो बच्चे से बूढ़े तक, अमीर से गरीब तक, राजा से रंक तक, भिखारी से सेठ साहूकार तक सभी अपने अधिकार की बात करने लग जाते हैं। इसीलिए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जब अधिकारों की बात अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर की जाने लगी तब विकलांगों के अधिकार की बात उठने लगी। अधिकारों की समस्या तब से बनी हुई है जब से यह दुनिया है। इन्हीं अधिकारों में विकलांग गरीब, दलित आदि व्यक्तियों के अधिकारों की समस्या उतनी ही प्राचीन है। जितनी मानव सभ्यता प्राचीन है।

युग के आदि में जंगल में रहने वाले मानव के सामने आग, तूफान, पशु–पक्षी आदि के शिकार होने से विकलांगता आती थी और कुछ मानव जन्म से ही विकलांग होते थे। समय बदला, रहन–सहन, खान–पान, वातावरण, और सोच–विचार बदला। इसी के साथ सुरक्षा के साधन बढ़ते गये, आबादी बढ़ती गई गाँव और शहर बढ़ते गये, लोभ–लालच, धन–दौलत की इच्छा बढ़ती गई, और नजदीकियाँ बढ़ती गईं जिससे आपसी झगड़े, युद्ध, मारपीट और बदले की भावना से एक मानव दूसरे मानव को हाथ पैर आदि से विकलांग करते गये। इसीलिए आज भी विकलांगता की समस्या बराबर बनी हुई है। या यूँ कहें कि विज्ञान की प्रगति से भौतिक, सुख, सुविधाओं जैसे कि वाहन, उपग्रह, मोबाइल आदि से विकलांगता और अधिक बढ़ती जा रही है। विकलांगता के कुछ कारण रोग, दवा, लापरवाही (असावधानी) गरीबी, संसाधनों का अभाव अथवा अति प्रयोग, अज्ञानता एवं कषाय इत्यादि भी हैं।

वर्तमान समय में लगभग 70 करोड़ व्यक्ति विश्व में विकलांग हैं कुल आबादी का 10 प्रतिशत व्यक्ति विकलांग है। यदि उपरोक्त बतलाये गये कारणों से बचा जाए तो विकलांगता से निजात पा सकते हैं। भूकम्प, बाढ़ आदि से हुए विकलांगों को अधिकार देने के पहले विकलांगता लाने वाले कारणों का ज्ञान होना और सावधानी रखना आवश्यक है।

Rights of Disabled People

If it comes to rights, then everyone from child to old, from rich to poor, from king to king, from beggar to rich moneylender starts talking about their rights. That is why when rights started being discussed at the international level by the United Nations, the issue of rights of the disabled started being raised. The problem of rights has existed since the world existed. Among these rights, the problem of the rights of the disabled, poor, Dalits etc. is equally ancient. As ancient as human civilization is.

In the beginning of the era, humans living in forests faced disability due to falling victim to fire, storm, animals, birds etc. and some humans were disabled from birth. Time changed, lifestyle, food habits, environment and thinking changed. Along with this, the means of security increased, the population increased, villages and cities increased, greed and desire for wealth increased and closeness increased, which led to mutual fights, wars, fights and feelings of revenge, one human being biting the hands and feet of another human being etc. Started becoming handicapped. That is why the problem of disability remains the same even today. Or we can say that with the progress of science and physical comforts like vehicles, satellites, mobiles etc., disability is increasing further. Some causes of disability are disease, medicine, carelessness, poverty, lack or overuse of resources, ignorance and bitterness etc.

At present, about 70 crore people are disabled in the world. 10 percent of the total population is disabled. If the reasons mentioned above are avoided then one can get relief from disability. Before giving rights to the disabled people caused by earthquake, flood etc., it is necessary to know the reasons causing disability and be careful before granting them special rights.

संयुक्तराष्ट्र संघ द्वारा अधिकारों की घोषणा

संयुक्तराष्ट्र संघ द्वारा 9 दिसंम्बर 1975 को विकलांगों के अधिकारों की घोषणा की गई थी। यद्यपि विकलांगों को हर देश द्वारा अनेक अधिकार दिये गये हैं। जो इस प्रकार हैं–:

1. घोषणा पत्र के अनुसार जाति, धर्म, लिंग, भाषा इत्यादि बिना भेद भाव के मानव मात्र को अधिकार मिलेंगें।
2. विकलागों को भी सामान्य व्यक्तियों की तरह नागरिकता और राजनैतिक अधिकार मिलेंगे।
3. विकलांगों को उनकी क्षमता के अनुसार रोजगार, आर्थिक, सामाजिक, तौर पर सुरक्षा और अनेक अधिकार दिये जाएँगे।

विकलांगों को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सुरक्षा दी जाये जिससे कि वे अपना जीवन स्तर और अच्छा बना सकें एवं अपनी योग्यतानुसार अधिकार पा सकें। विकलांग अपने परिवार और माता–पिता इत्यादि के साथ आत्म सम्मान से रह सकें । सभी प्रकार की सामाजिक सृजनात्मक और मनोरंजन आदि गतिविधियों में भाग ले सकें। अतः ये सभी अधिकार दिये जाते हैं।

1. शोषण, भेदभाव और नीचा दिखाने के दुर्व्यवहारों से बचाया जाए।
2. विकलांगों के लिये शारीरिक, मानसिक उपचार किया जाए।
3. रोजगार, पुनर्वास सहायता सेवा का पूर्ण अधिकार दिया जाए।
4. सामान्य नागरिकों की तरह समस्त मूल अधिकार दिये जाए।
5. कानूनी सहायता, जान माल की सुरक्षा दी जाए।
6. व्यसकों के लिए उच्च स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराई जाए।
7. गुजारा भत्ता एवं नौकरी में विशेष छूट प्रदान की जाए।
8. धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेने दिया जाए।
9. क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर खेल इत्यादि एवं राजनीति में प्रतिनिधित्व करने दिया जाए।
10. भारतीय संविधान में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रदान किये गये विकलांगों के अधिकारों को लगभग पूर्ण रूप से दिया जाए।

Declaration of Rights by United Nations

The rights of the disabled were declared by the United Nations on 9 December 1975. Although many rights have been given to the disabled by every country. Which are as follows:

1. According to the manifesto, without any discrimination like caste, religion, gender, language etc. Only human beings with feelings will get rights.
2. Disabled people will also get citizenship and political rights like normal people.
3. The disabled will be given employment, economic, social, security and many rights according to their ability.

The disabled should be given economic, social, political and security so that they can improve their standard of living and get rights as per their ability. Disabled people can live with self-respect with their families and parents etc. Can participate in all types of social, creative and entertainment activities etc. Therefore all these rights are given.

1. To be protected from exploitation, discrimination and demeaning abuses.
2. Physical and mental treatment should be provided for the handicapped.
3. Full rights to employment and rehabilitation assistance services should be given.
4. All fundamental rights should be given like ordinary citizens.
5. Legal aid and security of life and property should be provided.
6. Higher level education should be made available for adults.
7. Special relaxation in subsistence allowance and job should be provided.
8. Allowed to participate in religious, social and political activities Go.
9. Be allowed to play (Games) and represent in politics at regional and national level.
10. The rights of the disabled given by the United Nations should be given almost completely in the Indian Constitution.

बंदियों के अधिकार

एक राज्य के राजा की दूसरे राज्य के राजा से यदि दुश्मनी हो और वे अपने राज्य के किसी व्यक्ति को अवैध रूप में भेजके हैं जैसे कि पाकिस्तान के व्यक्ति जब बिना आज्ञा के सीमा का उल्लंघन करके अशांति फैलाने के लिए आते हैं तो वे भारत में अपराधी कहलाते हैं। अथवा देश के किसी नागरिक के द्वारा डकैती, हिंसा, बलात्कार, मारपीट, आदि अपराध किये जाते हैं इसीलिए वे अपराधी कहलाते हैं। ऐसे अपराधियों को पुलिस पकड़ती है और फिर न्यायालयों में प्रकरण चलते हैं। दोष सिद्ध होने पर पुलिस कैद करके कारागृह ले जाकर बंद कर देती है इसलिए उन्हें बंदी कहते हैं। इन बंदीयों के भी अपने अधिकार हैं। वे भी इंसान हैं जेल में भी जीना चाहते हैं। वे कहते है कि मैंने गुनाह किया है इसे मैं स्वीकार करता हूँ। उसकी सजा में आपने मुझे इस कारागृह में कैद करके रखा है लेकिन आप इंसान की तरह हमें रखें और आप इंसानियत का परिचय दें। ऐसा एक अपराधी पुलिस अधिकारी से कहता है और अपनी रक्षा के लिए लड़ता है।

प्रत्येक गाँव, शहर, राज्य और देश में अपराधी होते हैं। उन अपराधियों को अपराध से मुक्त करने के लिए दण्डित किया जाता है। राजा या शासन द्वारा दण्ड ऐसा दिया जाता है कि उसे देखकर कोई अन्य व्यक्ति वही अपराध न करें। जब वह अपराधी बार–बार अपराध करता है अथवा कोई राज्यकीय कानून का उल्लंघन करता है तो उसे निगरानी शुदा मुजरिम कहते हैं कारागृह को जेल या बंदीग्रह कहते हैं।

कारागृह में जो भी कैदी रहते हैं उनके भी मानव अधिकार को लेकर लंबे समय से लड़ाई चली आ रही है। कारागृह में कैदियों के साथ राजाओं के राज्य में तथा अंग्रेजों के शासन काल में अथवा डाकू या आतंकवादियों के द्वारा बंदी बनाये जाने पर कैदियों को समय–समय पर यातनाएँ दी जाती थीं। उनके साथ निरंतर अत्याचार होता था। मानवता खो जाती थी और दानवता प्रगट हो जाती थी। लेकिन जब से लोकतंत्र आया है तब से ऐसी यातनाएँ नहीं दी जाती। प्रत्येक नागरिक को अधिकारों के प्रति सजग एवं कर्तव्यों के प्रति समर्पित रहना चाहिये। संयुक्त राष्ट्र संघ ने कैदियों के अधिकार की बात उठाई जो सभी ने स्वीकार की और कारावास का क्षेत्र भी मानवाधिकार का एक हिस्सा बन गया।

Rights of Prisoners

If the king of one state has enmity with the king of another state and he sends someone from his state illegally, like when people from Pakistan cross the border without permission and come to create unrest, then they are criminals in India. Are called. Or crimes like robbery, violence, rape, assault, etc. are committed by any citizen of the country, that is why they are called criminals. The police catch such criminals and then cases proceed in the courts. After being proven guilty, the police arrests them and takes them to jail, hence they are called prisoners. These prisoners also have their rights. They are also human beings and want to live even in jail. They say that I have committed a crime and I accept it. As punishment for that, you have kept me imprisoned in this prison, but you treat us like a human being and you show us humanity. This is what a criminal says to the police officer and fights to protect himself.

There are criminals in every village, city, state and country. Those criminals are punished to free them from the crime. Punishment is given by the king or the government in such a way that no other person after seeing it commits the same crime. When that criminal repeatedly commits crimes or violates any state law, then he is called a supervised criminal. The prison is called jail or prison.

The fight for the human rights of all the prisoners living in prison has been going on for a long time. In the prisons, prisoners were tortured from time to time in the reign of kings and during the British rule or when they were captured by dacoits or terrorists. They were continuously tortured. Humanity was lost and monstrosity became visible. But ever since democracy has come, such torture is not done. Every citizen should be aware of his rights and dedicated to his duties. The United Nations raised the issue of the rights of prisoners which was accepted by all and also the field of imprisonment became a part of human rights.

वर्तमान समय में जो अधिकार कैदियों को दिये गये हैं वे सब यातनाएँ न देकर सुधारने के लिए हैं, बुरी आदतों को सुधारने के लिए हैं। इसी कारण अब कारागृह को सुधारागृह नाम दे दिया गया है। कारागृह में बंदियों को अनेक शिक्षण प्रशिक्षण आदि भी दिये जाते हैं। संतों, अधिकारियों, दार्शनिकों विद्वानों एवं मनोचिकित्सकों के उपदेश कराये जाते हैं। मैं भी अभी तक ५0 जेलों में प्रवचन कर चुका हूँ। अतः उन्हें कष्ट नहीं दिया जाता लेकिन स्वाभिमानी लोग जेल में जाना, बंदी बनकर रहना जीवन का सबसे बड़ा कलंक मानते हैं। वे बदनामी का अनुभव करते हैं और देखा भी जाता है। एक कहावत कहते हैं बद अच्छा बदनाम बुरा। जेल में जाने से बदनामी होती है। कालाधब्बा लग जाता है। जेल में व्यसनी और धनहीनों की संख्या अधिक होती है इसीलिए वे मानवाधिकारों की रक्षा कम कर पाते हैं। वे अपनी बुरी आदतों से पेश नहीं आते हैं इसीलिए पुलिस को कभी–कभी यातनाएं भी देना पड़ती हैं। वे यातनाएँ उनकी बुरी आदतों को सुधारने के लिए होती हैं। जैसे–माँ अपने शैतान बच्चों को पीटती है कभी–कभी चूल्हे से जलती हुई लकड़ी दिखाकर डराती–धमकाती है। ऐसी क्रिया बच्चों को यातनाएँ देने के लिए नहीं बल्कि पतन से सुधारने के लिए होती हैं। माँ बाप और गुरु की डाँट में प्यार और उपकार छिपा होता है। राजा और मंत्री के द्वारा दिये गये दंड में सुधार छुपा होता है।

पूर्व में देखा गया कि जो अशासकीय कारागृह होते थे उनमें कई दिनों तक भूखा रखा जाता था। उन कैदियों के साथ मारपीट आदि अनेक अभद्र व्यवहार किए जाते थे। एक देश से दूसरे देश मे पकड़े गये अपराधी के साथ अथवा एक देश के राजा द्वारा दूसरे देश के अपराधी को पकड़ लिये जाने पर मानवाधिकारों के मूल अधिकारों का उल्लंघन करते हुए दंडित किया जाता था। अंग्रेजों के शासन काल में बंदी बनाये गये हमारे देश के नागरिकों के साथ भी अभद्र और यातना पूर्ण व्यवहार किया गया था। आज भी कई देशों में यह सब चल रहा है और इसी कारण संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा कैदियों के अधिकार का एक स्वतंत्र अधिनियम बनाया गया और कैदियों के लिए भी मूल अधिकार दिये जाने का प्रस्ताव पारित किया गया। भारत में कारागृह संबंधी सुधारों की आवश्यकता को देखते हुए समय–समय पर अनेक समितियाँ गठित की गई। जैसे–

1. अखिल भारतीय जेल नियम समिति ।

At present, all the rights given to prisoners are not for torturing them but for improving their bad habits. For this reason the prison has now been named reformatory. Many educational training etc. are also given to the prisoners in the prison. Sermons are given by saints, officials, philosophers, scholars and psychiatrists. I have also preached in 50 jails so far. Therefore, they are not given any trouble, but self-respecting people consider going to jail and being a prisoner as the biggest stigma of life. They feel stigmatized and are also looked down upon. People have a saying that bad is good and infamous is bad. Going to jail brings disgrace. A black spot appears. There are more addicts and moneyless people in jail, hence they are less able to protect human rights. They do not give up their bad habits, that is why the police sometimes have to torture them. Those tortures are meant to correct their bad habits. For example, a mother beats her naughty children and sometimes scares them by showing them burning wood from the stove. Such actions are not meant to torture children but to correct them from their fall. Love and gratitude are hidden in the scoldings of parents and teachers. The correction is hidden in the punishment given by the king and the minister.

It was seen in the past that people were kept hungry for many days in non-government prisons. Those prisoners were subjected to many indecent practices like beatings etc. When a criminal caught from one country to another country or by the king of one country caught a criminal from another country, he was punished in violation of the fundamental human rights. During the British rule, the citizens of our country who were taken captive were also treated indecent and torturous manner. Even today, all this is going on in many countries and that is why an independent act of prisoners' rights was made by the United Nations and a proposal was passed to give basic rights to the prisoners also. Keeping in view the need for prison reforms in India, many committees were formed from time to time. As-

1. All India Jail Rules Committee.

2. अखिल भारतीय न्यायमूर्ति मूल जेल सुधार समिति।

3. जेल प्रशासन आर. के. कपूर समिति।

4.. महिला कैदी राष्ट्रीय विशेषज्ञ समिति।

दिल्ली स्थित अन्तर्राष्ट्रीय स्वयं सेवी संघ के कॉमनवेल्थ ह्यूमन राइट्स इनीशिएटिव ने अपने आलेख प्रिजनर्स एडं ह्यूमन राइट्स में यह बात कही कि कैदी अधिकारों का उल्लंघन इसीलिए भी करते हैं कि उन्हें अपने अधिकारों का ज्ञान ही नहीं है। इसीलिए प्रत्येक नागरिक और प्रत्येक कैदी को अपने मानवाधिकारों का ज्ञान जरूर होना चाहिए।

संयुक्तराष्ट्र संघ के द्वारा वर्ष 1955 में जेनोवा में आयोजित पहली कांग्रेस ने कैदियों के साथ किए जाने वाले व्यवहार से संबंधित सुधार हेतु एक नियमित नियमावली तैयार की। इस नियमावली में लगभग दो दर्जन से अधिक नियम बनाये गये। जो इस प्रकार हैं–

जिस जेल में कैदी को रखा जाता है उस जेल में एक रजिस्टर रखा जाए जिसमें कैदी से संबंधित जानकारी जैसे गिरफ्तारी का कारण गिरफ्तारी की तारीख, पता, परिवार की जानकारी, पहचान पत्र के साथ नोट की जाए और अंत में रिहा (छूटने) करने की तारीख भी नोट की जाए। मुजरिम जो जिस धर्म को मानता है उसका आदर किया जाये। अपराधी पुरुषों, बालकों कैदियों के लिए खाने–पीने, उठने–बैठने, सोने और स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को पूर्ण किया जाए।

1. जेल में हवा, प्रकाश व मौसम के अनुसार उचित व्यवस्था की जाए।
2. स्वच्छता एवं सफाई का पूरा ध्यान रखा जाए।
3. अलग–अलग विस्तर, वस्त्र और बेड (पलंग) दिया जाए।
4. पूर्ण पौष्टिक और पेट भर दिन में दो बार भोजन दिया जाए।
5. जेल में डॉक्टर, मनोचिकित्सक एवं उचित रसोईया रखा जाए।
6. महिला कैदी के प्रसव के पूर्व और बाद देखभाल और इलाज की उचित व्यवस्था की जाए।
7. कैदी को कानून की शतों के अनुसार ही दंड दिया जाए।
8. किसी भी कैदी को तब तक दंड न दिया जाए जब तक कि उसका कथित अपराध सिद्ध न हो जाए।
9. क्रूर, अमानवीय, अपमान जनक दंड न दिया जाए।

2. All India Justice Basic Jail Reform Committee.

3. Jail Administration R. K. Kapoor Committee.

4.. Women Prisoners National Expert Committee.

Commonwealth Human Rights Initiative of the Delhi-based International Voluntary Association, in its article Prisoners and Human Rights, said that prisoners violate their rights also because they are not aware of their rights. That is why every citizen and every prisoner must know their human rights.

The first Congress of the United Nations, organized in Geneva in 1955, prepared a regular manual for improving the treatment of prisoners. More than two dozen rules were made in this manual. Which are as follows-

A register should be maintained in the jail where the prisoner is kept in which information related to the prisoner like reason for arrest, date of arrest, address, family information, identity card is noted and finally the date of release. The date should also be noted. The religion that the criminal follows should be respected. Food, drink, shelter, sleep and health facilities for criminal men and children prisoners and related needs should be fulfilled.

1. Proper arrangements should be made in the jail according to air, light and weather.
2. Complete care should be taken of cleanliness and hygiene.
3. Separate bedding, clothes and bedding should be given.
4. Fully nutritious and filling food should be given twice a day.
5. Doctors, psychiatrists and proper cooks should be kept in the jail.
6. Proper arrangements should be made for care and treatment of female prisoners before and after delivery.
7. The prisoner should be punished only according to the terms of the law.
8. No prisoner should be punished until. The alleged crime may not be proven.
9. Cruel, inhuman, humiliating punishment should not be given.

10. हथकड़ी और बेड़ियों का कुछ परिस्थितियों में ही इस्तेमाल किया जाए।
11. कैदियों के लिए अपने परिवार और मित्रों से नियमित अंतराल से जेल में आकर मिलने दिया जाए। पत्राचार करने की सुविधा दी जाए।
12. कैदियों को पत्र, पत्रिकाएं, अपने धार्मिक, सामाजिक या पाठ्यक्रम संबंधी साहित्य को पढ़ने हेतु पुस्तकालय की सुविधा दी जाए।
13. जेल में कैदियों के लिए मनोरंजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हेतु व्यवस्था दी जाए।
14. कैदियों के पास पैसा, कीमती वस्तुएँ, हिंसा के उपकरण और अन्य कोई आपत्ति जनक वस्तुएँ नहीं रखने दी जाए।
15. यदि कैदी को भयंकर बीमारी हो जाए, गंभीर चोट पहुँच जाए, मस्तिष्क रोगी (पागल) हो जाए तो उसका तुरंत इलाज कराया जाए।
16. यदि उसकी मृत्यु हो जाए तो जेल अधीक्षक द्वारा उसकी सूचना उनके परिजनों को दी जाए और उसे जेल से हटा दिया जाए।
17. जेल का नियमित रूप से निरीक्षण किया जाए। इस हेतु अनुभवी जेल निरीक्षक की नियुक्ति की जाए।
18. कैदियों को सुधारने हेतु सदाचार की शिक्षा, उचित साहित्य दिया जाए।

कारागृह में रखे गये कैदियों की सुरक्षा से संबंधित संयुक्त राष्ट्र संघ ने मतदान द्वारा 19 दिसम्बर 1988 को 39 नियम प्रस्तावित कर उन्हें लागू किया गया।

वर्तमान समय में भारतीय कारागृहों में एक माँग और उठी कि महिला कैदी को अपने पति से महीने में कम से कम एक बार जेल में एक दिन साथ रहने दिया जाए। पुरुष कैदी को अपनी पत्नी के साथ एक दिन रहने दिया जाए। वह बंदी को पत्नी की याचिका पर संतान उत्पत्ति हेतु पेरोल प्रदान करने का निर्णय ठीक है। कैदियों को रोजगार दिया जाए। उसके द्वारा संचित धन राशि को उनके परिजनों को जीवन यापन हेतु दी जाए।

मेरी दृष्टि से तो बंदियों की सुख सुविधाओं में कुछ कटौती होना चाहिए और उचित दंड के साथ अभाव महसूस कराना चाहिए जिससे जेल जाने से अपराधी को भय उत्पन्न हो और अपराध करने से डरे।

10. Handcuffs and shackles should be used only in certain circumstances.
11. Prisoners should be allowed to visit their family and friends in the jail at regular intervals. Facility for correspondence should be provided.
12. Prisoners should be given library facilities to read letters, magazines and their religious, social or curriculum related literature.
13. Arrangements should be made for entertainment and cultural programs for the prisoners in the jail.
14. Prisoners should not be allowed to keep money, valuables, instruments of violence and any other objectionable items.
15. If a prisoner suffers from serious illness, serious injury or becomes mentally ill (mad), he should be treated immediately.
16. If he dies then he should be removed from jail his family members should be informed by the Jail Superintendent and he should be removed from jail.
17. The jail should be inspected regularly. For this, an experienced jail inspector should be appointed.
18. To improve the prisoners, they should be given moral education and appropriate literature.

On 19 December 1988, the United Nations proposed and implemented 39 rules by voting regarding the security of prisoners kept in prison.

At present, another demand has arisen in Indian jails that the female prisoner should be allowed to stay with her husband in the jail at least once in a month for one day. The male prisoner should be allowed to stay with his wife for one day. The decision to grant parole to the prisoner for the purpose of having a child on the petition of his wife is right. Prisoners should be given employment. By him The accumulated money should be given to their families for their living. From my point of view, there should be some reduction in the comforts and facilities of the prisoners and they should be made to feel deprivation along with appropriate punishment so that the criminal gets scared of going to jail and becomes afraid of committing crime.

शरणार्थियों के अधिकार

शरणार्थी उसे कहते हैं जो अपने मूल देश से राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, एवं अन्य अत्याचार आदि के कारणों से असुरक्षित महसूस करता है और दूसरे देश में जाकर उस देश के संरक्षण को प्राप्त कर लेता है। बाद में वह अपने मूल देश के संरक्षण को प्राप्त करने में असमर्थ हो जाता है अथवा लौटना नहीं चाहता। इस प्रकार से वह अपने राष्ट्र की राष्ट्रीयता खो देता है। वर्तमान समय में लगभग छः करोड़ शरणार्थी सम्पूर्ण विश्व में हैं। कुछ देश शरणार्थियों को नागरिकता प्रदान करके अपने देश का नागरिक बना लेते हैं।

किसी भी व्यक्ति की पहचान उसकी अपने देश की नागरिकता से होती है। हर व्यक्ति जन्म से ही अपने राष्ट्र का नागरिक होता है। नागरिकता हर व्यक्ति को सुरक्षित करती है और पहचान बनाने में अहम भूमिका निभाती है। उसे गर्व और अहसास होता है कि मैं अपने राष्ट्र का नागरिक हूँ। नागरिकता के कारण ही वह अपने राष्ट्र के सभी अधिकारों को प्राप्त करने का हक रखता है। अपना राष्ट्र छोड़कर अन्य राष्ट्र में शरणार्थी बनकर रहना उसकी अपनी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, व्यवसायिक, भौगोलिक आदि परिस्थितयाँ होती हैं। परन्तु भारत जैसे प्राजातांत्रिक देश में एक व्यक्ति भी जाकर निवास, व्यवसाय कर सकता है। यह भारत देश के संविधान का विशेष उदाहरण है।

शरणार्थियों की समस्याएँ

जब कोई व्यक्ति अपने देश को छोड़कर दूसरे देश में जाता है और शरणार्थी बनकर रहता है तो उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समस्याए कुछ इस प्रकार की होती हैं। जैसे–

1. जान माल की सुरक्षा की समस्या।
2. बच्चों की पढ़ाई–लिखाई की समस्या।
3. स्थानीय ताकतवर नागरिकों से भय और प्रताड़ना की समस्या।
4. उस देश के अधिकारों को प्राप्त करने की समस्या।
5. धर्म पालन एवं संस्कारों की रक्षा की समस्या।
6. नारियों के शील संयम को बचाने और शारीरिक शोषण से बचने की समस्या।

Rights of Refugees

A refugee is someone who feels unsafe in his native country due to political, social, religious, and other atrocities etc. and goes to another country and seeks protection from that country. Later he becomes unable to obtain the protection of his country of origin or does not want to return. In this way he loses the nationality of his nation. At present there are about six crore refugees all over the world. Some countries provide citizenship to refugees and make them citizens of their country.

Any person is identified by his citizenship of his country. Every person is a citizen of his own nation by birth. Citizenship protects every person and plays an important role in creating identity. He feels proud and realizes that I am a citizen of my nation. Due to citizenship, he has the right to enjoy all the rights of his nation. Leaving one's own country and living as a refugee in another country has its own physical, mental, economic, social, political, business, geographical etc. circumstances. But in a democratic country like India, even a person can go and live and do business. This is a special example of the Constitution of India.

Problems of refugees

When a person leaves his country and goes to another country and lives as a refugee, he has to face many problems. Problems are of some types. As-

1. Problem of safety of life and property.
2. Problem of children's education.
3. Problem of fear and harassment from local powerful citizens.
4. The problem of acquiring the rights of that country.
5. Problem of following religion and protecting values.
6. The problem of protecting the modesty of women and avoiding physical exploitation.

7. रोजगार और आवास प्राप्त करने की और धन संम्पत्ति के सुरक्षा की समस्या।
8. जिस देश में शरण ली है, उस देश से कभी भी निकाले जाने की समस्या।

ये सब समस्याए शरणार्थियों को प्रथम विश्व युद्ध के बाद ज्यादा हुई। इसीलिए वर्ष 1920 में नॉर्वे के डॉ. फ्रिडजॉफ नानसेन ने शरणार्थियों की सहायता के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय तंत्र बनाया। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 20 अगस्त 1921 को शरणार्थियों के लिए उच्च आयुक्त की स्थापना की। जिसमें नैनसेन को उच्च आयुक्त के रूप में नियुक्त किया गया। उनके द्वारा शरणार्थियों को अनेक अधिकार दिये जाने की सिफारिश की गई।

अंतर्राष्ट्रीय शरणार्थी संगठन की स्थापना

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 15 दिसम्बर 1946 को अन्तर्राष्ट्रीय संघ की स्थापना की गई। संगठन द्वारा एक करोड़ से अधिक शरणार्थियों को सम्पूर्ण विश्व में रहने के लिए स्थाई आवास की व्यवस्था कराई गई। 1 जनवरी 1951 को उच्च आयुक्त का मुख्यालय जेनेवा में बनाया गया। उच्चायुक्त की अवधि 3 वर्ष निश्चित की गई। शरणार्थियों के लिए सुरक्षा एवं अधिकार प्रदान करने हेतु लिखित रूप से प्रसंविदा बनाई गई। जो 22 अप्रैल 1954 से लागू की गई। जिसमें 336 राज्यों (देशों) ने इसका समर्थन किया। लेकिन भारत देश ने उसका समर्थन नहीं किया था। उस समय बनाई गई प्रसंविदा के मुख्य नियम इस प्रकार हैं–:

1. प्रत्येक शरणार्थी को उस देश के प्रति विधियों व नियमों के साथ–साथ लोक व्यवस्था को बनाये रखने में अपना पूरा सहयोग देना होगा और उसका पालन करना होगा जिस देश में वह शरण को प्राप्त हुआ है।
2. वह राज्य भी शरणार्थियों को चल एवं अचल सम्पत्ति के अर्जन, संवर्धन के अधिकारों को उसी प्रकार देगा जैसा कि अपने देशवासी मूल नागरिकों को देता है।
3. वह राज्य शरणार्थियों को शिक्षा का अधिकार एवं सामाजिक सुरक्षा का अधिकार, काम धंधे का अधिकार, न्यायालयों में जाने का अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार बिना भेदभाव के प्रदान करेगा।

7. Getting employment and housing and security of wealth Problem of.
8. The problem of being deported at any time from the country in which one has taken refuge.

All these problems faced the refugees more after the First World War. That is why in the year 1920, Dr. Fridtjof Nansen of Norway created an international system to help refugees. The High Commissioner for Refugees was established by the United Nations on 20 August 1921. In which Nansen was appointed as the High Commissioner. He recommended giving many rights to the refugees.

Establishment of International Refugee Organization

The international organization was established by the United Nations on 15 December 1946. The organization has provided permanent accommodation to more than one crore refugees all over the world. On 1 January 1951, the headquarters of the High Commissioner was established in Geneva. The tenure of the High Commissioner was fixed at 3 years. A written covenant was made to provide protection and rights to refugees. Which was implemented from 22 April 1954. In which 336 states (countries) supported it. But India did not support this. The main rules of the covenant made at that time are as follows:

1. Every refugee will have to give his full cooperation and follow the laws and rules of the country in which he has received asylum, as well as in maintaining public order.
2. That State will also give the refugees the same rights to acquire and develop movable and immovable property as it gives to its native citizens.
3. That State shall provide refugees with the right to education and social security, the right to work, the right to go to courts, and the right to religious freedom without any discrimination.

4. वह देश शरणार्थी को अपने राज्य से राष्ट्रीय सुरक्षा एवं लोकव्यवस्था के आधार को छोड़कर अन्य किसी आधार पर अपने देश से उसे निष्कासित नहीं करेगा।
5. वह राज्य शरणार्थी को विधि पूर्वक ठहरने के लिए एवं अपने राज्य से बाहर यात्रा अथवा व्यवसाय के उद्देश्य से जाने हेतु सुरक्षा व्यवस्था के लिए दस्तावेज जारी करेगा।
6. वह राज्य शरणार्थी को निवास स्थान चुनने एवं स्वतंत्रता पूर्वक आवागमन करने का अपने देशवासी नागरिक के समान अधिकार प्रदान करेगा।
7. वह देश शरणार्थी को वहाँ के मूल नागरिकों के परिजनों से विवाह संबंधी को स्थापित करने का अधिकार प्रदान करेगा।

इन सभी अधिकारों की नियमावली को देखकर भारत देश ने इसे स्वीकार नहीं किया। भारत देश वैसे भी आबादी की समस्या से जूझ रहा है। अपने मूल देश के नागरिकों को सुरक्षा व्यवस्था, रोजगार, आवास और शिक्षा आदि को प्रदान करने में कठिनाई महसूस कर रहा है। फिर अन्य देश के शरणार्थीयों को सुख–सुविधाएँ देकर नागरिकता प्रदान करना संभव नही है। फिर भी नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका आदि पड़ोसी देशों से शरणार्थी भारत में आकर अब रहने लगे हैं। देश ने कुछ शर्तों पर शरणार्थी को शरण प्रदान की है।

वर्ष 1981 में संयुक्त राष्ट्र के विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी) के अन्तर्गत भारत में संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्च आयुक्त का मुख्य कार्यालय, अफगान शरणार्थियों की समस्या की निदान हेतु खोला गया।

4. That country shall not expel the refugee from its country on any ground other than the grounds of national security and public order.
6. That State will issue documents to the refugee for legal stay and security arrangements for going outside its State for the purpose of travel or business.
6. That State shall provide the refugee with the same rights as its own citizens to choose their place of residence and to move freely.
7. That country will provide the refugee the right to establish marriage relations with the relatives of the native citizens there.

Seeing the rules of all these rights, the country of India did not accept it. India is anyway struggling with the problem of population. They are finding it difficult to provide security, employment, housing and education etc. to the citizens of their native country. Then it is not good to provide citizenship to refugees from other countries by giving them luxuries. Nevertheless, refugees from neighboring countries like Nepal, Bangladesh, Sri Lanka etc. have now started living in India. The country has provided asylum to the refugee on certain conditions.

In the year 1981, under the United Nations Development Program (UNDP), the main office of the United Nations High Commissioner for Refugees was opened in India to solve the problem of Afghan refugees.

विस्थापितों के अधिकार और समस्या

जब कोई व्यक्ति अपने ही देश की सीमा के अंतर्गत राजनैतिक, सामाजिक, व्यक्तिगत, भौगोलिक अथवा अन्याय, अत्याचार, आतंक आदि के कारण एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने को मजबूर होता है और वहाँ बस जाता है उसे विस्थापित व्यक्ति कहा जाता है। विस्थापित और शरणार्थी में वर्ष 1991 में जो परिभाषा दी गई उसके अनुसार दोनों में अंतर है। लगभग छः करोड़ व्यक्ति पूरे विश्व में विस्थापित होकर रह रहे हैं। उनकी समस्याओं पर अभी तक कोई भी कानूनी तौर पर प्रसंविदा नहीं बनी है। न कोई घोषणा पत्र तैयार किया गया। 1993 में विस्थापितों के लिए मार्गदर्शन हेतु सिद्धांत तैयार किया गया था। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2001 में विस्थापित व्यक्तियों पर एक इकाई की स्थापना की गई थी। जिसका कार्य संयुक्त राष्ट्र के सचिवालय को विस्थापित व्यक्तियों की स्थिति पर राय एवं सहायता देने का कार्य दिया गया था।

मानवाधिकार के संबंध में हमारे भारत देश की भारतीय परंम्परा अनादिकाल से रही है। मानवों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अनेक अधिकार एवं व्यवस्थाएँ व्यक्तिगत, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, और राजनैतिक, दृष्टिकोण से दी जाती रही हैं। बीच–बीच में राजाओं के युद्ध होते रहे हैं। एक राजा दूसरे राजा के राज्य में अपना अधिकार जमाता रहा है और युद्ध भी करता रहा है। वह सब अधिकारों के लिए हुआ है। अंग्रेजों ने जब देश पर अधिकार जमा लिया था तब लोकमान्य तिलक ने अपने अधिकारों की मांग करते हुए कहा था स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। महात्मा गाँधी जी ने कहा था सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्वतंत्रता के बिना राजनैतिक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों का कोई महत्व नहीं है।

Rights and Problems of Displaced People

When a person is forced to move from one area to another within his own country due to political, social, personal, geographical or injustice, atrocities, terrorism etc. and settles there, he is called a displaced person. According to the definition given in the year 1991, there is a difference between the two. Approximately six crore people are living in displacement across the world. No legal agreement has yet been made on their problems. Neither was any manifesto prepared. In 1993, principles were prepared to guide the displaced people. A unit on displaced persons was established by the United Nations in the year 2001. Whose work was given to the Secretariat of the United Nations to provide opinion and assistance on the situation of displaced persons.

Our country India has an Indian tradition regarding human rights since time immemorial. Many rights and systems have been given for the protection and promotion of human beings from personal, social, religious, economic and political perspectives. There have been wars between kings every now and then. One king has been establishing his authority in the kingdom of another king and has also been waging war. All that happened for rights. When the British had taken control over the country, Lokmanya Tilak had demanded his rights and said that Swaraj is our birthright. Mahatma Gandhiji had said that without social, economic and religious freedom, political freedom and human rights have no meaning.

मानवाधिकारों का भविष्य

मानवाधिकारों का भविष्य उज्जवल है। बिना अधिकारों के मनुष्य ही क्या संसार के किसी भी प्राणी के जीवित रहने की कल्पना नहीं की जा सकती। पेड़–पौधों का अधिकार हवा, धूप, खाद, मिट्टी, पानी, और पर्यावरण पर है। पेड़–पौधों पर गाय, हिरण, हाथी, घोड़ा, आदि प्राणियों का अधिकार है। पेड़–पौधे आदि वनस्पतियों के फल–फूल, अनाज और बीज पर मानव का अधिकार है। कीड़े–मकोड़े पर मेढ़क–सांप, आदि मूक जन्तुओं का अधिकार है। मूक जन्तुओं पर सिंह व्याघ्र आदि हिंसक प्राणियों का है।

बादलों पर अधिकार हवा का है। अग्नि पर अधिकार पानी का है। इस प्रकार सबके अपने–अपने अधिकार हैं। अधिकार मिलने पर मानव जब उसका उपभोग न करके दूसरों के हित के लिये छोड़ देता है और अधिकारों पर अपना आधिपत्य न जमाकर उसे त्याग देता है तो वही तप कहलाता है। इंन्द्रिय विजय और अध्यात्म साधना कहलाती है। ऐसा त्यागी इन्द्रिय विजेता, वीतरागी, अरहंत और केवली परमात्मा आदि के नाम से जाना जाता है। उसे लोग अपना आदर्श मानकर पूजते हैं। मनुष्यों को मिले अधिकारों में जीवन का एक मौलिक अधिकार है अतः जीवन जीने के लिए और अपने प्राणों की रक्षा के लिये क्या खाएँ ? यह एक प्रश्न हमारे सामने उभर कर आता है या उसे सिंह, व्याघ्र आदि हिंसक प्राणियों की तरह मांस खाकर जीवित रहने का अधिकार है। गाय, बैल, हाथी, घोड़ा, हिरण आदि शाकाहारी प्राणियों के समान फल, पत्ती, अनाज आदि खाकर जीवन जीने का अधिकार है।

Future of Human Rights

The future of human rights is bright. It is impossible to imagine the survival of any creature in the world, let alone human beings, without rights. Trees and plants have rights over air, sunlight, fertiliser, soil, water and environment. Animals like cow, deer, elephant, horse, etc. have authority over trees and plants. Humans have the right over the fruits, flowers, grains and seeds of trees and plants. Silent animals like frogs, snakes, etc. have authority over insects. Silent animals are of predatory creatures like lion, tiger etc.

The wind has power over the clouds. Water has power over fire. In this way everyone has their own rights. When a person, after getting rights, does not enjoy them but gives them up for the benefit of others and does not assert his authority over the rights and gives them up, then that is called penance. It is called conquering the senses and spiritual practice. Such a renunciant is known by the names of conqueror of senses, vitaraagi, arahant and kevali parmatma etc. People worship him as their ideal. One of the fundamental rights given to humans is the right to life, so what should we eat to live life and save our lives? This one question arises before us or does it have the right to survive by eating meat like predatory creatures like lion, tiger etc. Like vegetarian animals like cow, bull, elephant, horse, deer etc., they have the right to live life by eating fruits, leaves, grains etc.

खण्ड–2

कर्तव्य, कानून और संविधान

SECTION-2

Duties, Law and Constitution

कर्तव्य का अर्थ

कर्तव्य को अंग्रेजी में ड्यूटी कहते हैं। दायित्व के निर्वहन करने को कर्तव्य कहते हैं। अर्थात देश और समाज में रहने वाले व्यक्तियों को समाज और शासन से प्राप्त सुविधाओं और अधिकारों के बदले जिन दायित्व का अनिवार्य रूप से पालन करना होता है उसे कर्तव्य कहते है। मानव को प्राप्त अधिकारों का ईमानदारी से निर्वहन करना कर्तव्य कहलाता है। कर्तव्य करने का उद्देश्य देश, समाज और परिवार के हित करने और सुरक्षित करने का होता है। कर्तव्य को छोड़कर अधिकारों की दौड़ में शामिल होने से देश, समाज, परिवार की गाड़ी गड्ढे में गिर जाती है। देश, समाज और परिवार के विकास की स्थिति और जीवन में सुख–शान्ति की प्राप्ति अधिकारों से कम कर्तव्यों के पालन से अधिक मिलती है।

आवश्यकता अनुसार यथाशक्ति कर्तव्य करते रहना चाहिये। कर्तव्य ही पूजा है। कर्तव्य ही धर्म है। कर्तव्य ही सुख–शांति, पद–प्रतिष्ठा, यश और ख्याति की प्राप्ति का सरल उपाय है। कर्तव्य ही स्वस्थ रहने की रामवाण औषधि है। कर्तव्य का पालन करने के लिए श्रद्धा, समर्पण, लगन और त्याग की प्रवृत्ति आवश्यक है। कर्तव्य पालन करने में कठिनाइयाँ जरूर आती है लेकिन आदर्शवादी व्यक्ति उन कठिनाइयों का सामना करता है। कठिनाइयों से भरी विपरीत परिस्थितियों में वह विचलित नहीं होता है। कर्तव्य परायण बनने के लिए मानव जीवन मिलता है क्योंकि कर्तव्यों का निर्वहन पूर्ण रूप से मनुष्य ही कर सकता है। मानव जीवन उसीका सार्थक है जो कर्तव्यनिष्ठ है। जिस समाज और परिवार के लोग कर्तव्यनिष्ठ हुए हैं उन्हीं का विकास हुआ है। कर्तव्यशील व्यक्ति का अंतःकरण परमात्मा के समान निश्छल, निष्कपट, स्वच्छ, निर्मल और स्वस्थ होता है। कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति का जीवन आशा के फूलों से खिला हुआ, उमंग के आकाश से भरा हुआ, सिंह के समान निर्भीक, पक्षियों के समान आनंदित और उल्लसित होता है। कर्तव्य पूर्ण करने के लिये कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों को कभी–कभी अपना बलिदान भी देना पड़ता है।

Meaning of Duty

Duty is called duty in English. Discharging a responsibility is called duty. That is, the responsibilities that people living in the country and society have to compulsorily follow in exchange for the facilities and rights received from the society and government are called duties. It is called duty to honestly discharge the rights given to humans. The purpose of doing duty is to protect and serve the interests of the country, society and family. By leaving the duty and joining the race for rights, the car of the country, society and family falls into the pit. The state of development of the country, society and family and attainment of happiness and peace in life is achieved more by the fulfillment of duties than by rights.

One should continue performing duties as per requirement. Duty is worship. Duty is religion. Duty is the simple way to attain happiness, peace, position, prestige, fame and glory. Duty is the panacea for staying healthy. To perform one's duty, devotion, dedication, perseverance and a spirit of sacrifice are necessary. There are certainly difficulties in performing one's duty but an idealistic person faces those difficulties. He does not get distracted in adverse circumstances full of difficulties. One gets human life to become dutiful because only a human being can discharge his duties completely. Human life is meaningful only for those who are dutiful. Only those societies and families whose people have been dutiful have developed. The conscience of a dutiful person is innocent, sincere, clean, pure and healthy like God. The life of a dutiful person is full of flowers of hope, filled with the sky of enthusiasm, fearless like a lion, joyful and cheerful like birds. To fulfill their duty, dutiful people sometimes have to sacrifice themselves.

कर्तव्य परायण को अधिकार माँगने नहीं पड़ते बल्कि उसे सहज मिल जाते है। कर्तव्य के प्रति आदर भाव होने से कर्तव्य परायणता आती है। मानवीय गुणों से भरा व्यक्ति कर्तव्य परायण होता है। कर्तव्य परायण व्यक्ति महापुरूषों की श्रेणी में आता है। बड़ों के प्रति आदर भाव रखना परमात्मा के प्रति श्रद्धा, भक्ति, विनय रखना देश, समाज और परिवार के प्रति वफादार बनना, उसकी उन्नति में सहयोगी बनना, बचपन में ज्ञान प्राप्त करना, जवानी में मेहनत करके धनार्जन करना, बुढ़ापे में धर्म करके अगले भव को सुधारने के लिए पुण्यार्जन करना मानवीयता से भरे व्यक्ति का कर्तव्य होता है। कर्तव्य परायण व्यक्ति जिम्मेदार, हिम्मतदार, अनुशासन प्रिय, निष्ठावान, सत्यनिष्ठ और पुरुषार्थी होता है। चारित्रवान की पहचान कर्तव्य के निर्वहन से होती है।

प्रत्येक व्यक्ति का संबंध बदलने के साथ कर्तव्य बदल जाते हैं। जैसे राजा मंत्री, माता–पिता, भाई–बहन, दादा–दादी, पत्नि, बच्चे, मालिक इत्यादि अनेक रिश्ते और संबंध एक ही व्यक्ति के होते है। अतः उन संबंधो के अनुसार उन्हें कर्तव्य करने पड़ते है। इसी के साथ एक ही व्यक्ति को राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक इत्यादि कर्तव्य भी करने पड़ते है। इन कर्तव्यों के करने से ही व्यक्ति मानवीय गुणों से युक्त गुणी कहलाता है। कर्तव्य के बिना मानव का जीवन पशु तुल्य हो जाता है। उसकी इज्जत मिट्टी में मिल जाती है। शत्रुता पैदा हो जाती है।

संसार के प्रत्येक पदार्थ, द्रव्य और प्राणी अपना कर्तव्य निभा रहे हैं तभी यह दुनिया चल रही है। जैसे सूर्य ऊर्जा, उष्मा और प्रकाश प्रदान करके, पेड़–पौधे प्रदूषित वायु ग्रहण करके और प्राण वायु ऑक्सीजन प्रदान करके, बादल, नदी, कूप जल प्रदान करके, चन्द्रमा शीतलता प्रदान करके और कीड़े–मकोड़े, पशु–पक्षी, इत्यादि अपना–अपना कर्तव्य निभा रहे है। इसलिए प्रत्येक प्राणी को अपने मूल कर्तव्य करने और मूल अधिकार प्राप्त करने का अधिकार है। प्रत्येक देश इन्हें संविधान के रूप में स्वीकार कर रहा है। प्रत्येक नागरिक को अहम भाव ना रखकर सेवा भाव सकारात्मक दृष्टिकोण, संवेदनशीलता, एवं सद्भावना के भाव से कार्य करना होगा।

A dutiful person does not have to ask for rights, rather he gets them easily. Devotion to duty comes from having respect for duty. A person full of human qualities is dutiful. A person devoted to duty comes in the category of great men. To have respect for elders, to have reverence, devotion and humility towards God, to be loyal to the country, society and family, to be supportive in its progress, to acquire knowledge in childhood, to earn money by working hard in youth, to practice religion in old age and to prepare for the next future. It is the duty of a person full of humanity to earn good deeds in order to improve himself. A dutiful person is responsible, courageous, disciplined, loyal, truthful and hard-working. Character is determined by the discharge of duty.

Duties change as each person's relationship changes. Like king, minister, parents, siblings, grandparents, wife, children, boss etc. many relations and relations belong to the same person. Therefore, they have to perform duties according to those relationships. Along with this, a person also has to perform political, religious, economic, social, family duties etc. Only by performing these duties a person is called a virtuous person with human qualities. Without duty, human life becomes like that of an animal. His honor turns into dust. Enmity arises.

Every object, substance and creature of the world is performing its duty only then this world is running. Like the sun by providing energy, heat and light, trees and plants by absorbing polluted air and providing vital air oxygen, clouds, rivers, wells by providing water, moon by providing coolness and insects, animals and birds etc. Performing their duty. Therefore every living being has the right to perform his fundamental duties and enjoy fundamental rights. Every country is accepting these as their constitution. Every citizen will have to work with a sense of service, positive attitude, sensitivity and goodwill rather than having egoistic feelings.

यही तथ्य भारत के संविधान को प्रस्तावना में लोगों को मूल भावना और प्रजातंत्र की मंशा जनता से, जनता के लिये, जनता द्वारा शासन के अनुरूप है, जिसमें देश के प्रत्येक नागरिक को अपने अधिकारों की रक्षा के साथ ही कर्तव्यों के प्रति समर्पित रहने की भी अपेक्षा की गई है। अधिकार एवं कर्तव्य एक दूसरे से जुड़े हुऐ हैं। किसी का अधिकार है तो किसी का कर्तव्य।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद (आर्टिकल) 51A में हमे संविधान का आदर करने, कर्तव्यों के प्रति समर्पित रहने को कहा गया है।?

संविधान के आदर का अर्थ है, अपना स्वयं का आदर और अधिकारों की रक्षा करना। राष्ट्र ध्वज देश की आन बान और शान का प्रतीक है। इसके तीन रंग– केसरिया, सफेद, हरा क्रमशः बलिदान, शांति और समृद्धि (प्रगति) के प्रतीक हैं, और मध्य नीले रंग का अशोक चक्र धर्म की राह पर चलने का संदेश देता है।

हमें अधिकारों के प्रति जागरूक एवं कर्तव्यों के प्रति समर्पित रहना होगा, तभी भारतवर्ष का लोकतंत्र मजबूत व अखंड रहेगा।

This fact is in line with the basic spirit of the people in the Preamble to the Constitution of India and the intention of democracy to be of the people, for the people, by the people, in which every citizen of the country has the right to protect his rights as well as to be dedicated to his duties. Has been expected. Rights and duties are related to each other. Someone has a right and someone has a duty.

In Article 51A of the Indian Constitution, we have been asked to respect the Constitution and remain dedicated to our duties.

Respecting the Constitution means protecting one's own respect and rights. The national flag is a symbol of the country's pride and glory. Its three colors saffron, white, green respectively symbolize sacrifice, peace and prosperity (progress), and the middle blue Ashoka Chakra gives the message of following the path of religion.

We have to remain aware of our rights and dedicated to our duties, only then India's democracy will remain strong and intact.

भारतीय संविधान में मूल कर्तव्य

आजादी के बाद 26 नवंबर 1949 तदनुसार मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी विक्रम संवत 2006 को भारत का संविधान बनकर तैयार हुआ। इस संविधान के अनुच्छेद 51क (आर्टिकल 51A) में भारतीय नागरिक के कर्तव्य क्या क्या होंगे इसको लेकर कुल 11 मूल कर्तव्य दिए गए हैं –

(क) भारत का प्रत्येक नागरिक संविधान का पालन करें और उनके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उन आदर्शों का पालन करें।

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण बनाए रखें।

(घ) प्रत्येक नागरिक देश की रक्षा करें, आव्हान करने पर राष्ट्र की रक्षा और सेवा करें।

(ङ) भारत के सभी नागरिक समरसता, समानता और भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें। धर्म, भाषा, प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेद भाव से परे रहें और ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं।

(च) हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझें और उसका परीक्षण करें।

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी, वन्य प्राणी (वायु ध्वनी इत्यादि) आते हैं उनकी रक्षा, संवर्धन करें और प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखें ।

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद, ज्ञानार्जन और सुधार की भावना का विकास करें।

(झ) सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा करें और हिंसा से दूर रहें।

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का ऐसा सतत प्रयास करें जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की ऊंचाइयों को छू ले।

(ट) यदि माता–पिता या संरक्षक हैं तो वे 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु वाले अपने बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

Fundamental Duties in the Indian Constitution

After independence, the Constitution of India was prepared on 26 November 1949. Accordingly, on Margashirsha Shukla Saptami Vikram Samvat 2006. In Article 51A of this Constitution, a total of 11 fundamental duties have been given regarding what the duties of an Indian citizen will be.

(a) Every citizen of India should follow the Constitution and respect its ideals, institutions, national flag and national anthem.

(b) To cherish in our heart the high ideals which inspired our national movement for freedom and to follow those ideals.

(c) Protect the sovereignty, unity and integrity of India and Keep intact.

(d) Every citizen should protect the country, protect and serve the nation when called upon.

(e) All citizens of India should create a feeling of harmony, equality and fraternity. Be free from all discrimination based on religion, language, region or class and abandon such practices which are against the dignity of women.

(f) Understand and examine the importance of the glorious tradition of our social culture.

(g) Protect, promote the natural environment which includes forests, lakes, rivers, wild animals (air sounds etc.) and have compassion towards living beings.

(h) Develop the spirit of scientific approach, humanism, learning and reform.

(i) Protect public property and stay away from violence.

(j) Make continuous efforts to move towards excellence in all spheres of individual and collective activities so that the nation reaches ever-increasing heights of effort and achievement.

(k) If there are parents or guardians, they should provide opportunities for education to their child or ward aged between 6 years to 14 years.

अब हमें इन 11 मूल कर्तव्यों की समीक्षा करने के बाद देखने में आ रहा है कि इन मूल कर्तव्यों की ओर प्रायः किसी की दृष्टि नहीं। आज अधिकार सब चाहते हैं। अधिकारों की बात सब करते हैं लेकिन कर्तव्य कुछ ही लोग करना चाहते हैं।

वर्तमान में कुछ भारतीय नागरिक ऐसे हैं जो राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान और ऐतिहासिक प्राचीन आदर्श पुरुषों का अनादर करते हैं। संस्थानों ऐतिहासिक इमारतों की तोड़फोड़ करते हैं। आदर्शों को हृदय में ना रख कर खुल्लम खुल्ला हृदय से अपमानित करते हैं। भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा न करके शत्रु देशों का साथ देते हैं। देश के टुकड़े–टुकड़े करने का नारा लगाते हैं। अनादि काल से चले आ रहे धर्म, संस्कार, संस्कृति, इत्यादि को खण्ड–खण्ड करके कुचल देना चाहते हैं। वे सिर्फ अपने धर्म, जाति, संस्कृति और संप्रदाय का परचम लहराना चाहते हैं। ऐसा चाहने वाले लोग भी अंग्रेजों जैसे भारत में विदेश से आए थे इसका इतिहास गवाह है उन्होंने यहाँ आकर प्राचीन भारतीय संस्कृति को दिल से दिमाग से और हथियारों से खूब मिटाया है। धर्म और जाति के नाम से देश के टुकड़े–टुकड़े किये लेकिन अंग्रेजों को विदेशी कहकर देश से निकाल दिया क्या अंग्रजों के समान उन्हें भी निकाला जा सकता है या अनादि काल से चले आ रहे इस भारतीय सनातन धर्म का पालन करने वाले भारतीयों को ही निकाल कर फेंका जायेगा। आतंकवादियों द्वारा तो स्थिति कुछ ऐसी ही बनाये जाने की धमकी मिल रही है।

वर्तमान में आधुनिक विचारधारा के युवाओं को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक गौरवशाली परंपरा का महत्व समझ नहीं आ रहा है। वन, नदी, झील, तालाब, वायु आदि पर्यावरण की रक्षा संवर्धन, प्राणियों के प्रति दया, करुणा, अहिंसा का भाव समझ में न आने से उनके प्रति संरक्षण का भाव समाप्त होता जा रहा है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण तो आया है लेकिन भौतिकवादी आया है, अध्यात्मवादी, ज्ञानवादी, सुधारवादी, उदारवादी, समतावादी नहीं आ रहा है। बल्कि यूं कहें कि विकास की जगह बिगाड़ और पतन हो रहा है।

क्या ऐसे कर्तव्य विहीन लोग भारत के सच्चे नागरिक हो सकते हैं। क्या ऐसे लोगों को दंडित किया जा रहा है? यदि नहीं तो आतंकवाद, नक्सलवाद, नफरतवाद और विषमतावाद तो फैलेगा ही। अतः इन सब से बचने के लिए मूल कर्तव्यों पर जोर देना चाहिए। एवं प्रत्येक भारतीय नागरिक को इन कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

Now after reviewing these 11 fundamental duties, we are seeing that almost no one is paying attention to these fundamental duties. Today everyone wants rights. Everyone talks about rights but only a few want to do the duties.

At present there are some Indian citizens who disrespect the national flag, national anthem and historical ancient ideal men. Institutions vandalize historical buildings. Instead of keeping the ideals in their heart, they openly insult them. Instead of protecting India's sovereignty, unity and integrity, they support enemy countries. They raise slogans of breaking the country into pieces. They want to break into pieces and crush the religion, rituals, culture, etc. that have been going on since ancient times. They just want to hoist the flag of their religion, caste, culture and sect. People who wanted this also came to India from foreign countries like the British, history is witness to this. They came here and destroyed the ancient Indian culture with their hearts, minds and weapons. The country was divided into pieces in the name of religion and caste but the British were expelled from the country by calling them foreigners. Can they also be expelled like the British or should only those Indians who follow this Indian Sanatan Dharma which has been going on since time immemorial be expelled? Terrorists are threatening to create a similar situation in the country.

At present, the youth of modern ideology do not understand the importance of social, cultural and religious glorious traditions. forest, river, due to lack of understanding of protection and promotion of environment like lakes, ponds, air etc., kindness, compassion and non-violence towards living beings, the feeling of protection towards them is ending. Scientific approach has come but materialistic approach has come, spiritualist, cognitive, reformist, liberal, egalitarian is not coming. Rather, it can be said that instead of development, deterioration and degradation is taking place.

Can such duty-less people be true citizens of India? Are such people being punished? If not, terrorism, Naxalism, hatred and inequality will definitely spread. Therefore, to avoid all this, emphasis should be laid on fundamental duties. And every Indian citizen should follow these duties.

मानवीय कर्तव्यों का वर्गीकरण

मानव के कर्तव्यों को अनेक वर्गों में बांटा जा सकता है जैसे–

राजनैतिक या कानूनी कर्तव्य – ऐसे कर्तव्य जो राजाज्ञा या गुरु आज्ञा के मिलने पर मानव को अनिवार्य रूप से करना पड़ते हैं वे राजनीतिक या कानूनी कर्तव्य कहलाते है। ये कर्तव्य संवैधानिक होते हैं इन कर्तव्यों का पालन न करने पर दंडित किया जाता है।

सामाजिक कर्तव्य – मानव सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर उसका पालन–पोषण और विकास होता है। अतः प्रत्येक मानव का कर्तव्य बनता है कि वह असहाय, निर्धन, रोगी, अनाथों की यथाशक्ति सहायता करें। मानव ऐसे कार्य करें जिस से समाज चलती है सामाजिक विकास होता है। विवाह आदि की जो परंपराऐं चली आ रही हैं जिन्हें सामाजिक तौर पर नियमित रूप से पालन करना होता है, उन्हे वे करते हैं लेकिन पालन न करने पर दंडित और निंदित किया जाता है, उन्हें बहिष्कृत या अनुचित दंड नहीं दिया जाता है। यही समाज का सामाजिक कर्तव्य है। लेकिन दहेज प्रथा, बाल विवाह, एक समान जाति में छुआछूत इत्यादि कुरीतियों को समाज से दूर करना भी उनका कर्तव्य है।

नैतिक कर्तव्य – नागरिकता के नाते सफाई, सभ्यता, सुरक्षा, व्यवस्था, मधुर व्यवहारिकता एवं वृद्धों का आदर इत्यादि रूप से जो कार्य करने पड़ते हैं उन्हें नैतिक कर्तव्य कहते हैं। इन कर्तव्यों का पालन न करने पर चेतावनी अथवा समाझाया जाता है।

पारिवारिक कर्तव्य – परिवार में माता–पिता, पति–पत्नी, भाई–बहिन, बेटा–बेटी इत्यादि सदस्यों के प्रीति सेवा, सुरक्षा, भोजन, पानी, वस्त्र, मकान, व्यवसाय, इत्यादि की व्यवस्था रूप जो कर्तव्य करने पड़ते हैं उन्हें पारिवारिक कर्तव्य कहते हैं।

धार्मिक कर्तव्य – सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, क्षमा, कोमलता दया, व्रत, उपवास, इष्ट देवता की पूजा–पाठ रुप आराधना इत्यादि जो कार्य करने पड़ते हैं वे धार्मिक कर्तव्य कहलाते हैं।

Classification of Human Duties

Duties of a human being can be divided into many categories such as -

Political or legal duties: Such duties which a human being has to perform compulsorily on receiving the royal order or Guru's orders are called political or legal duties. These duties are constitutional and non-compliance of these duties is punished.

Social duty: Human is a social animal. He is nurtured and developed by living in society. Therefore, it is the duty of every human being to help the helpless, poor, sick and orphans as much as possible. Humans should work in such a way that society runs and social development takes place. They follow the prevailing traditions like marriage etc. which have to be followed regularly socially, but for not following them, they are punished and condemned, they are not ostracized or given unfair treatment. This is the social duty of the society. But it is also their duty to remove the evils like dowry system, child marriage, untouchability within the same caste etc. from the society.

Moral Duties: As a citizen, the work that has to be done in the form of cleanliness, civility, safety, order, polite behavior and respect for elders etc. is called moral duty. If these duties are not followed, warning or advice is given.

Family Duties: The duties that have to be performed in the family in the form of providing love, service, security, food, water, clothing, house, business, etc. to the family members like parents, husband-wife, brother-sister, son-daughter etc. are family duties. They say.

Religious duties: The tasks that have to be done like truth, non-violence, honesty, forgiveness, tenderness, kindness, fasting, worship of the favorite deity etc. are called religious duties.

नागरिक कर्तव्य – जिस देश की नागरिकता प्राप्त हो उस देश के नागरिकता के बनाये गये कानूनों का पालन करना नागरिक कर्तव्य कहलाते हैं।

प्राकृतिक कर्तव्य – पर्यावरण की सुरक्षा करना, प्रदूषण नहीं फैलाना, गंदगी नहीं फैलाना, एवं जो मूल अधिकार प्राप्त हैं उनका सही रीति से निर्वहन करना और उपयोग करना प्राकृतिक कर्तव्य कहलाते है।

व्यक्तिगत कर्तव्य – अपने भविष्य के निर्माण हेतु शारीरिक, मानसिक, वाचनिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, शैक्षणिक विकास करते हुए शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, और भौतिक सुख की प्राप्ति करना, मितव्ययी बनना अपनी स्वयं की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाना, पैतृक संपत्ति के भरोसे नहीं बैठना, अपना स्वयं का व्यक्तित्व विकसित करना एवं सदाचार का पालन करना व्यक्तिगत कर्तव्य कहलाते हैं।

मित्र या पड़ोसी के कर्तव्य – अच्छा पड़ोसी या मित्र वह है जो ईमानदार हो, सुख दुख में साथ देता हो, अपने पड़ोसी का ध्यान रखता हो, लड़ाई–झगड़े, गाली–गलौज न करता हो, ध्वनि–वायु आदि प्रदूषण न फैलाता हो, पड़ोसी को मित्र मानकर उसके हित का ध्यान रखता हो यही पड़ोसी या मित्र के कर्तव्य हैं।

Civic Duties: It is called civic duty to follow the laws made for citizenship of the country in which one has citizenship.

Natural duties: Protecting the environment, not polluting, not littering, and properly discharging and using the fundamental rights that we have are called natural duties.

Personal Duties: To build your future, physically, mentally, To achieve physical, mental, spiritual and material happiness while developing verbally, economically, spiritually and educationally, to be thrifty, to strengthen one's own financial position, not to depend on ancestral property, to develop one's own personality and to follow good conduct. To do is called personal duty.

Duties of a friend or neighbor: A good neighbor or friend is one who be honest, support your neighbor in happiness and sorrow, take care of your neighbor, do not indulge in fights, abuse, do not cause noise and air pollution, consider your neighbor as a friend and take care of his welfare. There are duties of a friend or neighbour.

अधिकार एवं कर्तव्य

कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के अधिकार और सफलता दूर नहीं है। कर्तव्यनिष्ठ से बड़ा दुनिया में कोई शूरवीर और ज्ञानी नहीं। अधिकार में लेने की बात होती है और कर्तव्य में देने की बात होती है। प्रत्येक प्राणी वहीं जाता है जहाँ उसे कुछ मिलता है। जैसे पेड़ भी प्राणी है उसकी जड़ें उसी और जाती है जहाँ उसे खाद, पानी मिलता है। तना उसी ओर बढ़ता है जिस ओर से भोजन बनाने योग्य सूर्यप्रकाश मिलता है। चीटीं उसी ओर बढ़ती है जिस ओर से मिठास मिलती है, मधुमक्खी उसी ओर उड़ान भरती है जिस ओर से परागकण मिलता है। नेता उसी ओर भागता है जिस ओर से वोट और सपोर्ट मिलता है। व्यापारी उसी ओर जाता है जिस तरफ उसका व्यवसाय चलता है। प्रेम का भूखा व्यक्ति उसी ओर बढ़ता है जिस ओर उसे प्रेम मिलता है। इससे सिद्ध होता है कि जिससे मिलता है उसी से प्रभावित होता है। इसलिए देना सीखो लोग अपने आप आपकी ओर खिचे चले आएँगे।

चतुर्मुखी विकास के लिए कर्तव्य करना जरूरी है। अधिकार देने पर कर्तव्य पूर्ण कराने के लिए कानून का निर्माण किया जाता है। अर्थात् कर्तव्य निभाने के लिए कानून बनाये जाते है। अधिकार देने पर जो कर्तव्य का पालन नहीं करता उसे दण्डित किया जाता है।

प्रत्येक देश के अपने नियम कानून होते है। प्रत्येक देश कानून के पालन करने की प्रेरणा भी देते है। यदि कानून के उलंघन करने वाले को दण्डित नहीं किया जाता तो अन्याय, अत्याचार, अराजकता फैल जाती है। उससे राज्य, राजा और प्रजा का अहित होता है। अतः कानून का पालन करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बनता है। राज्य द्वारा बनाये गये यदि किसी कानून का विरोध करना हो तो संवैधानिक ढंग से करना चाहिए।

जैसे शरीर प्राणों के बिना नहीं चलता। मानव पाँच इन्द्रिय मन, वचन, काय ये तीन बल, आयु और श्वासोच्छवास इन दस प्राणों से जीता है। वैसे ही टैक्स के बिना देश और राज्य नहीं चलता।

Rights and Duties

Authority and success are not far away for a conscientious person. There is no braver and wiser person in the world than the one who is dutiful. There is a matter of taking possession and there is a matter of giving in duty. Every creature goes where it finds something. Just as a tree is also a living being, its roots go only where it gets fertilizer and water. The stem grows only in the direction from which sunlight is available to produce food. Ants move towards the direction where sweetness is available, bees fly towards the same direction. The direction from which the pollen is found. The leader runs in the direction from which he gets votes and support. A businessman goes in the direction in which his business runs. A person hungry for love moves only in the direction in which he gets love. This proves that one is influenced by the one who meets needs. Therefore, learn to give, people will automatically be drawn towards you.

It is necessary to do duty for all-round development. Laws are made to ensure that duties are fulfilled when rights are given. That is, laws are made to perform duties. The one who does not perform his duty after being given authority is punished.

Every country has its own rules and laws. Every country also gives inspiration to follow the law. If those who violate the law are not punished, injustice, oppression and anarchy spread. It causes harm to the state, king and people. Therefore, it is the duty of every citizen to follow the law. If made by the state

If any law has to be opposed then it should be done in a constitutional manner. Just as the body cannot function without the soul. Human beings survive with the five senses, mind, speech, body, three forces, age and breathing, these ten lives. By the way The country and the state cannot run without taxes.

अतः टैक्स (कर) देश/राज्य के प्राण है। राज्य को चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है। धन की प्राप्ति टैक्स से होती है अतः प्रत्येक नागरिक को शासन द्वारा निश्चित किये गये टैक्स को कर्तव्य समझकर और नैतिकता की दृष्टि से अवश्य देना चाहिए। लेकिन शासक का कर्तव्य भी बनता है कि वह गरीब जनता को भले ही टैक्स मुक्त कर दे लेकिन अकाल आदि विशेष परिस्थितियों को छोड़कर मुफ्त में राशन, पानी आदि नही देना चाहिए अन्यथा देश की और स्थिति अधिक बिगड़ जायेगी और देशवासी आलसी हो जायेंगे।

वर्तमान भारत देश में प्रजातांत्रिक शासन चल रहा है इसमें प्रजा ही राजा है। वोट से सरकार बनती है। जनता द्वारा चुने गये सांसद अथवा प्रधानमंत्री और अन्य मंत्री चुनते है वे सब मिलकर राष्ट्रपति चुनते हैं वह सब मिलकर सरकार कहलाती है, वही शासक कहलाते हैं और देश में कुछ समय तक शासन करते है। राजतंत्र और प्रजातंत्र में शासकों में कुछ अंतर होता है।

प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बनता है कि वह जिस देश में रहता है और जिस राजा के शासन काल में रहता है उसके प्रति श्रद्धा, भक्ति, प्रेम और निष्ठा बनाये रखें। जिसके अंदर निष्ठा, भक्ति, प्रेम नहीं है वह सच्चा देश/राज्य का सच्चा भक्त नहीं है, वह देशद्रोही है। ऐसे व्यक्ति अराजकता हिंसा और आतंकवाद आदि फैलाते है। देश में भय, संकट और दहशत पैदा करते है।

देश/राज्य से प्राप्त अधिकारों को प्रत्येक नागरिक को उनका उपयोग करना एक कर्तव्य है। नागरिकों को मतदान का अधिकार दिया गया है अतः प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बनता है कि वह किसी के बहकावे, लोभ–लालच, जाति या पार्टी के बंधन में आकर मतदान न करें बल्कि ईमानदारी, बुद्धिमानी और समझदारी से देश समाज और प्रजा के हित में मतदान करें। जो व्यक्ति अपने स्वार्थ को तजकर अपने परिवार देश, समाज और धर्म के लिए निस्वार्थ भाव से समय और सेवा दान करता है वह एक दिन महान बन जाता है।

Therefore, tax is the lifeblood of the country/state. Money is required to run the state. Money is earned through tax, hence every citizen must pay the tax fixed by the government considering it as a duty and from the moral point of view. But it is also the duty of the ruler that even if he makes the poor people tax-free, he should not give free ration, water etc. except in special circumstances like famine, otherwise the condition of the country will worsen and the countrymen will become lazy.

At present, democratic governance is going on in India, in which the people are the king. Government is formed by votes. The MPs or the Prime Minister and other ministers are elected by the people, they all together elect the President, all of them together are called the government, they are called the rulers and rule the country for some time. There is some difference between the rulers in monarchy and democracy.

It is the duty of every citizen to maintain faith, devotion, love and loyalty towards the country in which he lives and the king under whose rule he lives. The one who does not have loyalty, devotion and love is not a true devotee of the country/state, he is a traitor. Such persons spread anarchy, violence and terrorism etc. Create fear, crisis and terror in the country.

It is the duty of every citizen to utilize the rights received from the country/state. Citizens have been given the right to vote, hence it is the duty of every citizen not to be influenced by someone's deceit, greed, caste or party, but to vote with honesty, intelligence and understanding in the interest of the country, society and people. Do it. The person who sacrifices his selfishness and cares for his family, country and society and he who donates his time and service selflessly for the cause of religion becomes great one day.

अधिकारों और कर्तव्यों का दिन और रात, चोली और दामन, दूध और पानी, शक्कर और मिठास और सिक्के के दो पहलू जैसा अटूट संबंध है एक के मिट जाने पर दूसरा अपने आप मिट जाता है। अधिकार माँगे जा सकते हैं, कर्तव्य माँगे नहीं जाते बल्कि किये जाते हैं। हमारे स्वयं के अधिकारों को प्रदान करना सामने वाले व्यक्तियों का कर्तव्य होता है और सामने वाले व्यक्तियों को उनके अधिकारों को देना हमारा कर्तव्य होता है। अतः यदि हम अपने दृष्टिकोण से देखते हैं तो अधिकार है और दूसरों के दृष्टिकोण से देखते है उन अधिकारों को पूर्ण करना हमारा कर्तव्य है। अतः अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू है यही अनेकांत दृष्टि है और यही स्याद्वादमयी कथन है। जैसे राजा का कर्तव्य है प्रजा की सुख–शांति और सुविधा को देना और प्रजा का अधिकार बनता है राजा से उन साधनों की प्राप्ति करना। अब प्रजा का कर्तव्य बनता है राजा की आज्ञा का पालन करते हुए अधिकारों का उपभोग करना और देश में सुख–शांति बनाये रखना। इसी प्रकार संतान का अधिकार माँ के दूध पर है तो माँ का कर्तव्य बच्चे को दूध पिलाना बनता है। पुत्र का अधिकार पिता की संपंत्ति पर है तो पुत्र का कर्तव्य पिता की सेवा करने पर बनता है। इस दृष्टि से दोनों अनिवार्य है, एक–दूसरे पर आधारित है और दोनों एक–दूसरे की मांगें हैं। एक का अधिकार दूसरे का कर्तव्य है। सभी का कर्तव्य बनता है कि वह दूसरों के अधिकारों में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न करें। कुल मिलाकर इसी निष्कर्ष पर पहुँते है कि जो दूसरों का अधिकार है वह मेरा कर्तव्य है यदि मुझे जीवित रहने का अधिकार है तो अन्य प्राणियों को भी जीने का अधिकार है हम उसके जीवन जीने में बाधा न पहुँचायें उसके अधिकारों का आदर करना हमारा कर्तव्य है। हम अधिकारों का सदुपयोग करे दुरूपयोग नहीं अधिकारों का सही उपयोग करना ही सही मायने में कर्तव्य है। कर्तव्य परायण स्वस्थ, चरित्रवान, बुद्धिमान और सुखी संपन्न होता है।

There is an unbreakable relationship between rights and duties like day and night, blouse and hem, milk and water, sugar and sweetness and the two sides of a coin, when one disappears, the other automatically disappears. Rights can be demanded, duties are not demanded but are done. It is the duty of the people in front to provide our own rights and it is our duty to provide the rights of the people in front of us. Therefore, if we see from our own perspective, we have rights and if we see from the perspective of others, it is our duty to fulfill those rights. Therefore, rights and duties are two sides of the same coin, this is an infinite view and this is a valid statement. Just as it is the duty of the king to provide happiness, peace and facilities to the subjects and it is the right of the subjects to get those resources from the king. Now it becomes the duty of the people to follow the orders of the king, enjoy their rights and maintain happiness and peace in the country. Similarly, if the child has the right on the mother's milk, then it is the duty of the mother to feed the child. If the son has the right over his father's property, then the son's duty is to serve his father. From this point of view both are essential, based on each other and both are demands of each other. One's right is another's duty. It is everyone's duty not to create any kind of hindrance in the rights of others. Overall, we reach the same conclusion that what is the right of others is my duty. If I have the right to live, then other living beings also have the right to live. We should not hinder their living, it is our duty to respect their rights. We should make good use of our rights and not misuse them. It is our duty to use our rights properly. One who is dutiful is healthy, has good character, is intelligent and is happy.

कानून और कर्तव्य

कानून को विधि संविधान और अंग्रेजी में लॉ कहते है। लॉ शब्द जर्मन भाषा लॉग धातु से बना है। जिसका अर्थ है स्थिर या निश्चित। कानून की अनेक परिभाषाए अनेक–अनेक विद्वानों ने दी है। लेकिन कोई भी विद्वान इसको ठीक ढंग से परिभाषित नहीं कर सकें। क्योंकि कानून कुछ परिवर्तनीय कुछ अपरिवर्तनीय कुछ समझौते वाले, कुछ रीति–रिवाज वाले, कुछ क्रूर सत्ता वाले, कुछ देवीय विचार धारा वाले होने से अनेक प्रकार के है जैसे– प्राकृतिक, नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक, दार्शनिक, धार्मिक, राजकीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कानून/संविधान इत्यादि अनेक प्रकार के इस दुनिया में विधि कानून चल रहे हैं। इसलिए इसे परिभाषित करना कठिन है। कानून के भेद के आधार पर ही इसे परिभाषित किया जा सकता हैं।

मुख्यतः कानून दो प्रकार के है–

1. अपरिवर्तनीय कानून 2. परिवर्तनीय कानून

अपरिवर्तनीय कानून भी दो प्रकार का है–

1. प्राकृतिक कानून 2. ईश्वरीय कानून

प्राकृतिक कानून उसे कहते हैं जो वस्तु का जैसा गुण, धर्म, स्वभाव अर्थात् प्रकृति है वह वैसी ही बनी रहना उसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होना जैसे अग्नि का स्वभाव जलना, जलाना, ऊष्मा पैदा करना और प्रकाशित करना अथवा जल का स्वभाव शीलता प्रदान करना, ढलान की और प्रवाहित होना। आकाश द्रव्य का स्वभाव है सभी पदार्थों का अवगाहन करना। काल द्रव्य का स्वभाव है सभी द्रव्यों में परिवर्तन और छोटे–बड़े का भेद कराना। जीव द्रव्य का स्वभाव है जानना, देखना, सुख–दुःख का संवेदन करना इत्यादि। ये नियम–कानून प्राकृतिक है इनको बदला नहीं जा सकता ये अनादिकाल से है और अनंतकाल तक रहेंगे। इसलिए इन्हें प्राकृतिक अपरिवर्तनीय कानून कहते हैं। अपरिवर्तनीय कानून ईश्वरीय और प्राकृतिक होते है।

Law and Duty

Law is called law, constitution and in English, law. The word law is derived from the German language log metal. Which means stable or certain. Many definitions of law have been given by many scholars. But no scholar can define it properly. Because laws are of many types, some changeable, some immutable, some contractual, some customary, some with cruel power, some with divine ideology, such as natural, moral, social, political, philosophical, religious, state, national and Many types of laws like international law/constitution etc. are running in this world. Therefore it is difficult to define. It can be defined only on the basis of difference of law.

Mainly there are two types of laws-

1. Immutable Law

2. Convertible law

Immutable law is also of two types –

1. Natural law

2. Divine Law

Natural laws are those which remain the same as the quality, religion, nature of an object *i.e*. nature and there is no change in it, like the nature of fire is to burn, burn, generate heat and illuminate or the nature of water is to provide fluidity. To do, to flow towards the slope. The nature of etheric matter is to absorb all substances. The nature of Kaal Dravya is to cause change in all substances and to differentiate between big and small. The nature of living matter is to know, see, feel happiness and sorrow etc. These rules and regulations are natural, they cannot be changed, they have been there since time immemorial and will remain so for eternity. Therefore these are called natural immutable laws. Immutable laws are divine and natural.

ईश्वरीय कानून- सत्य ही ईश्वर है, सत्य की सदा विजय होती है। सत् द्रव्य का लक्षण है। जो अस्तित्व रूप में जैसे स्वभाव वाला है वैसे स्वभाव का सत् रूप में स्वीकार करना सत्य कहलाता है। इसीलिए सत्य को ईश्वर कहा गया है। जैन धर्म में अरिहंत और सिद्ध परमेष्ठी को ही परमात्मा या ईश्वर कहते हैं। उनके द्वारा देखे, जाने गये संसार के सभी छह द्रव्य, सात तत्व, नौ पदार्थ जो जिस रूप में है उनको उन्होंने उसी रूप में प्रतिपादित किया है। अतः वे द्रव्य व पदार्थ आदि अपरिवर्तनीय होने से और भगवान का ज्ञान भी स्थायी, शाश्वत, वास्तविक सत्य और आध्यात्मिक होने से उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत सत्य, शाश्वत और अपरिवर्तनीय है। इसी प्रकार प्रत्येक धर्म और दर्शन में माने गये ईश्वर के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को उनके अनुयायी सत्य, शाश्वत् और अपरिवर्तनीय मानते हैं। यदि कोई उनमें परिवर्तन करता है या एक–दूसरे के प्रतिपादित परमात्मा के सिद्धातों के विरूद्ध बोलता है तो लड़ाई–झगड़े और युद्ध प्रारंभ हो जाते हैं अथवा एक नये मत का उद्भव हो जाता है। इसी कारण ईश्वरीय कानून अपरिवर्तनीय है।

परिवर्तनीय कानून

परिवर्तनीय कानून अनेक प्रकार के हैं। जैसे नैतिक, सामाजिक, दार्शनिक, राजकीय या राजनैतिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कानून इत्यादि।

नैतिक कानून- व्यवहारिक आंतरिक जीवन में आदर्श युक्त आचरण के लिए बनाए गये नियमों को नैतिक कानून कहते हैं। ऐसे कानून व्यक्ति के आंतरिक अर्थात् व्यक्तिगत कार्यों और उद्देश्यों को संतुलित नियंत्रित और व्यवस्थित करते हैं।

सामाजिक कानून- व्यवहारिक बाहरी जीवन में समाज को आदर्शवान, आचरणवान, संयमित, संतुलित और एक–दूसरे व्यक्ति और परिवार से संबंध बनाये रखने के लिए जोड़ने के लिए एक समान आचार–विचार और शादी–विवाह आदि का रिश्ते बनाने के लिए जो आचार संहिता और नियम–कानून समूह द्वारा समझौता करके समाज हित में बनाये जाते हैं उसे सामाजिक कानून कहते है। सामाजिक कानून पुराने रीति–रिवाज से बनते है और रीति–रिवाज में समयानुसार परिवर्तन होता रहता है इसीलिए इन्हें परिवर्तनीय सामाजिक कानून कहते हैं। सामाजिक कानून संवैधानिक रीति–रिवाज, समझौता, सामाजिक संगठन द्वारा बनाये गये जीवन यापन और सामाजिक व्यवस्था के लिए होते हैं। इस कानून से पारिवारिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जाता है।

Divine Law- Truth is God, truth always wins. Sat is a characteristic of matter. Accepting that nature as true in the form of existence is called truth. That is why truth has been called God. In Jainism, Arihant and Siddha Parmeshthi are called God or Bhagwan. All the six substances, seven elements and nine substances of the world that he observed have been presented in the same form as they are. Therefore, since those substances and substances etc. are immutable and the knowledge of God is also permanent, eternal, real truth and spiritual, the theory propounded by them is true, eternal and immutable. Similarly, the principles propounded by God in every religion and philosophy are considered by his followers to be true, eternal and immutable. If someone changes them or speaks against the principles of God propounded by each other, then fights and wars start or a new belief emerges. For this reason divine law is immutable.

Convertible law

There are many types of convertible laws. Such as moral, social, philosophical, state or political, national and international law etc.

Moral Law- The rules made for ideal conduct in practical inner life are called moral laws. Such laws balance, control and organize the internal *i.e.* personal actions and objectives of the individual.

Social Law- Ideal to the society in practical external life, to maintain conduct, restrained, balanced and to maintain relations with each other person and family, to create common conduct and thoughts and to create marriage-marriage etc. relationships which are in the interest of the society by compromising the code of conduct and rules and regulations. Are made and are called social laws. Social laws are formed from old customs and customs keep changing with time, that is why These are called convertible social laws. Social laws are for constitutional customs, agreements, way of life and social system created by social organization. Family, economic and social problems are solved by this law.

राजकीय या राजनैतिक कानून- राज्य को चलाने, राज्य की सुख, शांति और समृद्धि के लिए राजा द्वारा प्रतिपादित और प्रजा द्वारा स्वीकृत जो नियम कानून बनाये जाते हैं उसे राजकीय कानून कहते हैं। ये कानून राज्य में रहने वाले नागरिकों के लिए अधिकार और कर्तव्य के लिए होते हैं। इनका पालन नहीं करने पर दण्डित किया जाता है।

नागरिकों के बाह्य आचरण में एक रूपता बनाये रखने के लिए, एकता–अखण्डता बनाये रखने के लिए, शासक को अपनी सत्ता– समप्रभुता को बनाये रखने के लिए, न्यायालय द्वारा न्याय दिलाने के लिए, अधिकार देने और कर्तव्य का पालन कराने के लिए और व्यक्तिगत सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए जो राज्य द्वारा नियमावली बनाई जाती है। जिसका पालन राज्य में रहने वाले सभी को करना पड़ता है उसे भी राजकीय कानून कहते है।

दार्शनिक कानून- साहित्य रचने के लिए, भाषा बोलने के लिए व्याकरण के जो सिद्धांत प्रतिपादित किये जाते है अथवा वर्तमान में प्रचलित जैन, बौद्ध, सांख्य, नैयायिक आदि दर्शनकारों द्वारा तर्क–वितर्क करके जो अपने दर्शन की पुष्टि के लिए नियम कानून और सिद्धांत बनाये जाते हैं उन्हें दार्शनिक कानून कहते हैं।

कानून की परिभाषा

देश, समाज और व्यक्ति को अनुशासित ढ़ंग से चलाने, विकसित करने, सुख–शांति बनाये रखने और जीवन–यापन करने के लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल के अनुसार समाज में चले आ रहे रीति–रिवाज, पदार्थों के गुण–धर्म, ज्ञानी महापुरुषों के द्वारा जन–हित के लिए बनाये गये नियम, सिद्धांत, वैधानिक रीति–रिवाज, नियमावली जिनका पालन बनाने वाले, शासन करने वाले और राज्य में रहने वाले सभी नागरिक जन करते हैं। न करने पर शासक द्वारा दण्डित किया जाता है और जिसके आधार पर न्याय दिया जाता है। ऐसे मानवीय आचरण के योग्य स्वीकार किये गये सभी नियम सिद्धांत या रीति–रिवाज कानून कहलाते हैं।

सामाजिक रीति–रिवाजों के बदलने पर समय–समय पर सामाजिक कानूनों में परिवर्तन होता रहा है और होता रहेगा और राजा द्वारा बनाये गये जिन कानूनों को प्रजा स्वीकार नहीं करती उसका विरोध भी होता है। ऐसी स्थिति में राजा को अपने कानूनों में परिवर्तन करना पड़ता है। प्रजा की आवश्यकता के अनुसार भी कानून परिवर्तित होते है और नये कानूनों का उद्‌भव भी होता है।

State or political law- running the state, happiness of the state, the rules and regulations propounded by the king and accepted by the subjects for peace and prosperity are called state laws. These laws are for rights and duties for the citizens living in the state. Not following them is punished.

To maintain uniformity in the external conduct of the citizens, to maintain unity and integrity, to enable the ruler to maintain his authority and sovereignty, to provide justice through the court, to grant rights and perform duties and for personal rights rules are made by the state for social and economic development. The law which has to be followed by everyone living in the state is also called state law.

Philosophical laws - The principles of grammar that are propounded for writing literature, for speaking language or by the currently prevalent philosophers like Jain, Buddhist, Sankhya, Naiyayika etc. who create rules and principles to confirm their philosophy by arguing. They are called philosophical laws.

Definition of law

In order to run the country, society and individual in a disciplined manner, develop it, maintain peace and happiness and live, the customs prevalent in the society as per the material, region and time, properties of the materials and the wise great men. The rules, principles, legal customs and regulations made by the State for the public interest are followed by the makers, the rulers and all the citizens living in the state. Failure to do so is punished by the ruler and on the basis of Justice is given. All the rules, principles or customs accepted for such human conduct are called laws.

Due to changing social customs, social laws have been and will continue to be changed from time to time and those laws made by the king which are not accepted by the subjects are also opposed. In such a situation the king has to change his laws. Laws change as per the needs of the people and new laws also emerge.

कानून की आवश्यकता क्यों

कानून के बिना अधिकार मिलते नहीं है। कर्तव्यों का पालन होता नहीं है। सामाजिक जीवन और राज्य सत्ता चलती नहीं है। सामाजिक, पारिवारिक और राजकीय व्यवस्था सुचारू रूप से कानून के बिना चलती नहीं है। राज्य के अंदर और बाहर शांति, समृद्धि और मर्यादा बनती नहीं है। नैतिक आचरण, एकता और अखण्डता, समप्रभुता और एक से रीति–रिवाज का पालन होता नहीं है। न्याय नीति का निर्धारण होता नहीं है। इसलिए कानून की हर राज्य को आवश्यकता पड़ी और प्रत्येक राज्य, समाज, देश ने अपने–अपने कानून बनाये।

कानून का उद्‌भव

जहाँ समान अधिकार, समान सुख–सुविधाएँ, समान आचार–विचार, समान रूप–लावण्य, समान धन–वैभव, समान आज्ञा और ऐश्वर्य, समान न्याय–नीति, समान विवेक–बुद्धि, समान रीति–रिवाज होते हैं वहाँ कानून की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसी स्थिति देवगति के ग्रैवयिक, अनुदिश और अनुत्तर विमानों के अहमिन्द्रों में एवं भोग–भूमि के मनुष्यों में होती है। इसलिए वहाँ कानून की आवश्यकता नहीं होती है। इस भरत क्षेत्र की भूमि पर जब प्रथम सुखमा–सुखमा, द्वितीय सुखमा और तृतीय सुखमा–दुखमा काल में भोग–भूमि थी उस समय उपरोक्त सभी समान सुख–सुविधा आदि उपलब्ध थी। अतः वहाँ कानून की कोई आवश्यकता नहीं थी। लेकिन जब कल्पवृक्षों से मिलने वाली जीवन–यापन की सुख–सुविधाएँ समाप्त हो गईं और इस धरा पर कर्म भूमि प्रारंभ हो गई तब अंतिम कुलकर राजा नाभिराय (मनु) थे। उन्होंने भोजन–पानी, वस्त्रावरण और आवास आदि की समस्या का निराकरण किया। लूट–पाट और हिंसा होने लगी तो उसका भी निराकरण किया। उसी निराकरण के लिए उन्होंने कुछ नियम बनाये और नियम का उल्लघंन करने वालों को सजा के रूप में हा, मा, धिक अर्थात हा तूने ऐसा किया, मा यानि तू ऐसा मत कर, धिक यानि मुझे धिक्कार है जो तूने ऐसा किया। इस प्रकार शब्दों का प्रयोग करने का प्रावधान रख कर दण्ड संबंधी नियम बनाये वहीं से कानून का उद्‌भव हुआ।

Why is the law needed?

Rights are not available without law. Duties are not performed. Social life and state power do not work. Social, family and political systems do not run smoothly without law. There is no peace, prosperity and dignity inside and outside the state. Ethical conduct, unity and integrity, sovereignty and adherence to customs do not happen. Justice policy is not determined. Therefore, there was a need for law in every state and every state, society, country made its own laws.

Emergence of law

Where there are equal rights, equal comforts, equal morals, equal beauty, equal wealth, equal command and opulence, equal justice, equal discretion, equal customs, there is no need for law. it occurs. Such a situation occurs in the egominds of the Gravyak, Anudish and Anuttar planes of Devgati and in the humans of Bhog-Bhoomi. Therefore there is no need for law. When there was Bhog-Bhoomi in the first Sukhma-Sukhma, Second Sukhma and Third Sukhma-Dukhma period on the land of Bharat region, at that time all the above mentioned luxuries etc. were available. Therefore there was no need for law. But when the comforts of living provided by the Kalpavrikshas ended. And when Karma Bhoomi started on this earth, the last Kulkar king was Nabhiraya (Manu). He solved the problems of food, water, clothing and shelter etc. When looting and violence started happening, that too was resolved. To resolve the same, they made some rules and as punishment to those who violated the rules, they said Ha, Ma, Dhik meaning yes you did this, Ma meaning you don't do this, Dhik meaning I am cursed that you did this. In this way, rules related to punishment were made by making provision for using words, from there the law originated.

प्राचीन काल में कानून आदेश रूप में होते थे लिखित रूप में नहीं। पारिवारिक समस्याओं को परिवार में ही सामाजिक समस्याओं को समाज में ही सुलझा लिया जाता था लेकिन जब प्रभु सत्ता आयी उस सत्ता के बल से उन्होंने अपने क्षेत्रों का विभाजन और समाज को अपने समर्थन में करके एक सीमा बनाई उस सीमा के अंदर राज्य करने वाले व्यक्ति को राजा कहा गया। राजा के द्वारा ही समस्त राजकीय समस्याओं का समाधान किया जाने लगा और अपराधी को उचित दण्ड दिया जाने लगा।

जैन धर्म में श्रावक और श्रवण दोनों की आचार संहिता है। जो अरिहंत परमात्मा के द्वारा प्रतिपादित है। उन्हीं के द्वारा धार्मिक, सामाजिक, प्राकृतिक सिद्धांतो का प्रतिपादन किया गया है और उनका उल्लंघन करने वालों को प्रायश्चित्त का विधान किया है, जो अनादिकालीन है। आचार्य संहिता और सिद्धांत ही जैन कानून है और प्रायश्चित्त ही दण्ड संहिता है।

राजा प्रत्येक देश का न्यायधीश होता था और कानून का निर्माता भी होता था। लेकिन जब लोकतांत्रिक प्रणाली अर्थात् जनता का जनता के लिए जनता का ही चुना हुआ शासक कुछ समय के लिए नियुक्त किया जाने लगा तब से कानून में आमूलचूल परिवर्तन किया गया। वर्तमान समय में इनमें परिवर्तन भी देखा जा रहा है। लेकिन कानून में वह गुणवत्ता नहीं आ पा रही है जो आना चाहिए। हर शासक पुराने कानून को तोड़–मरोड़ कर सामने ला रहा है और नये–नये कानून बना रहा है। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए।

अच्छे कानून हम उन्हें कह सकते है जिसमें स्थायित्व हो, व्यापकता हो, स्पष्टवादिता हो, मतभेद से रहित समानता हो, विकासवादी हो मूल अधिकारों का रक्षक और कर्तव्यनिष्ठा की ओर ले जाने वाला हो, सभी के लिए हितकारक हो, जनमत पर आधारित हो, यदि जन मत का हितकारी नहीं होता तो जनता उस कानून का पालन नहीं करती। कानून सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, विकास कराने वाला हो।

देश का कानून ऐसा हो कि देशवासी उसका पालन कर सकें, कानून का पालन करने के लिए एक–दूसरे को प्रोत्साहित कर सकें, कानून का पालन डर, भय से नहीं बल्कि बुद्धि और विवेक से कर सकें ऐसा होना चाहिए। कानून का ज्ञान सबको होना चाहिए, कानून मनुष्य के ज्ञान और आचरण में अर्थात् आदत और स्वभाव में आ जाना चाहिए।

In ancient times, laws were in the form of orders and not in written form. Family problems were solved within the family and social problems were solved in the society itself, but when the Lord came to power, with the power of that power, he divided his areas and made a boundary by making the society support him. The person who ruled within that boundary was called king. All the government problems started being solved by the king and appropriate punishment was given to the culprits.

In Jainism, there is a code of conduct for both Shravaka and Shravan. Which is propounded by Arihant Parmatma. Religious, social and natural principles have been propounded by him and a provision of atonement has been made for those who violate them, which is ancient. Acharya Samhita and principles are Jain law and penance is the penal code.

The king was the judge of every country and was also the maker of laws. But when the democratic system, *i.e.* a ruler elected by the people for the people, was appointed for a period of time, radical changes were made in the law. In the present times, changes are also being seen in these. But the law is not of the quality it should be. Every ruler is distorting old laws and making new laws. Whereas this should not happen.

We can call good laws those which have stability, comprehensiveness, clarity, equality without differences, are evolutionary, protector of fundamental rights and lead to conscientiousness, beneficial for all, based on public opinion, if If public opinion is not beneficial then people do not follow that law. The law should bring about social, economic, moral and development.

The law of the country should be such that the countrymen can follow it, can encourage each other to follow the law, should follow the law not out of fear but with intelligence and discretion. Everyone should have knowledge of law, law should become human's knowledge and conduct *i.e.* habit and nature.

हम जिस कर्तव्य और अधिकार की बात करने और समझने के लिए बैठे है उस कानून का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। कभी यह नहीं कहना चाहिए कि हमें कानून से क्या लेना, कौन सा अच्छा, कौन सा बुरा जो चल रहा है चलने दो चुपचाप अपना काम करो। ऐसी सोच वाले प्रमादी अर्थात् आलसी नागरिक देश को पतन की ओर ले जाते हैं। कानून समानता और स्वतंत्रता का पोषण होना चाहिए, सर्वांगीण विकास का सहायक होना चाहिए। जन–जन के आर्थिक, नैतिक, सामाजिक और आत्म कल्याण में सहायक होना चाहिए।

कानून सुख शांति के लिए बनाए जाते है इसलिए कानून का पालन जरूर करना चाहिए। एक–दूसरे को कानून का पालन करते हुए देखकर सभी नागरिक कानून का पालन करने लगते है। कानून व्यक्तित्व के विकास में कारण होता है। स्वतंत्रता अधिकार और कर्तव्य की प्रेरणा देते हुए रक्षा करता है। किसी कानून को बुरा कहने के पहले उस के पूर्वा पर विचार जरूर कर लेना चाहिए। बुरे कानून का विरोध करना और उसे रद्द कराना नागरिकों का नैतिक कर्तव्य होना चाहिए। कानून का अनैतिक ढंग से और बार–बार विरोध नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से राज्य, राजा और कानून की गरिमा एवं मर्यादा समाप्त हो जाती है। अराजकता फैल जाती है।

नैतिकता का संबंध सामाजिकता से रहता है। नैतिक व्यक्ति उचित, अनुचित, भले, बुरे का विचार करके भले और उचित कार्य को करता है। नैतिकता का बल मिलने से कानून भी बलशाली हो जाता है। इसलिए नैतिकता और कानून का घनिष्ठ संबंध है। यद्यपि कानून का संबंध बाह्य आचरण से होता है और नैतिकता का संबंध बाह्य और आंतरिक दोनों आचार–विचार से होता है इसलिए नैतिकता का क्षेत्र कानून से अधिक व्यापक होता है। व्यक्ति को क्या करना चाहिए यह कानून बतलाता है। जबकि व्यक्ति को क्या करना चाहिए यह बतलाने के साथ–साथ कब, क्यों और कैसे करना चाहिए यह नैतिकता सिखलाती है। नैतिकता का संबंध व्यक्ति के व्यक्तित्व और अध्यात्म से होता है। यह स्थाई और विशुद्ध होता है। अलग–अलग रीति–रिवाजों और रूचियों के कारण नैतिक मान्यताओं में भी अंतर देखा जाता है। इसी अंतर से धर्म और दर्शन का उद्भव होता है। इसीसे व्यक्ति आस्तिक और नास्तिक बनता है। कानून स्वतंत्रता को प्रदान करता है लेकिन स्वच्छंदता पर लगाम लगाता है।

We should have complete knowledge of the law about which we are sitting to talk about and understand the duties and rights. We should never be told what to do with the law, which is good, which is bad, let whatever is going on, do your work quietly. Ignorant or lazy citizens with such thinking lead the country towards decline. Law should nurture equality and freedom and should be helpful in all-round development. It should be helpful in the economic, moral, social and self-welfare of the people.

Laws are made for happiness and peace, hence the law must be followed. Seeing each other following the law, all citizens start following the law. Law is the reason for the development of personality. Protects freedom while inspiring rights and duties. Before calling any law bad, its antecedents must be considered. It should be the moral duty of the citizens to oppose bad laws and get them repealed. The law should not be opposed unethically and repeatedly. By doing this the dignity of the state, king and law is destroyed. Chaos ensues.

Morality is related to sociality. A moral person thinks about what is right, wrong, good and bad and does good and appropriate work. With the strength of morality the law also becomes stronger. Therefore morality and law are closely related. Although law is related to external conduct and morality is related to both external and internal conduct, hence the scope of morality is broader than law. The law tells what a person should do. Whereas, along with telling what a person should do, it teaches when, why and how to do it. Morality is related to a person's personality and spirituality. It is permanent and pure. Due to different customs and interests, differences in moral beliefs are also seen. It is from this difference that religion and philosophy emerge. Due to this a person becomes a believer or an atheist. Law provides freedom but restrains freedom.

संविधान का अर्थ और उद्देश्य

संविधान को देश का कानून माना जाता है। कानून का पालन करना राजा, प्रजा, शासक, प्रशासक इन सभी को करना आवश्यक है। समय–समय पर संविधान बनते रहे, संशोधित होते रहे और हर देश में पृथक–पृथक संविधान बनाये जाते रहे। संविधान हमेशा पारस्परिक संबंधों और पारम्परिक प्रथाओं के अभिमत को लेकर बनाया जाता है। विधान शब्द में सम् उपसर्ग पूर्वक संविधान शब्द बनाया गया है। संविधान का अर्थ है मूल सिद्धांतो का समुच्चय, सम्मिलन या संचय, दस्तावेज जो विशिष्ट पवित्र नीति, न्याय, संगत, सर्वजनहितकारी होता है। जो राजा, राज्य सरकार, प्रजा आदि के प्रमुख कार्यों को निर्दिष्ट करता है उन्हें इस नियम कानून के अन्तर्गत चलने को बाध्य करता है। कार्यपालिका, विधायिका और न्याय पालिका इन सभी अंगों के संचालन के मार्गदर्शन हेतु सिद्धांत प्रस्तुत करता है उसे संविधान कहते हैं। जिन नियमों के आधार पर पारम्परिक प्रथायें, धर्म, दर्शन और सरकार चलती है वही संविधान या कानून बन जाता है। संविधान बनाते समय इन सब बातों का ध्यान रखा जाता है।

संविधान किसी एक व्यक्ति, समाज, धर्म, दर्शन और दो–चार दिन की उपज नहीं होती बल्कि बहुत ग्रंथों, नियम–कानूनों का बहुत समय तक बहुत से लोगों का तर्क, वितर्क और समस्या के चिंतन, मंथन करने के बाद संविधान निसृत होकर आता है। ऐसा संविधान लोकतांत्रिक प्रणाली में विशेष कारगर होता है। राजतंत्र में राजा अपने मंत्री मंडल के साथ बैठकर और प्रजा के बीच से कुछ विद्वानों की सलाह लेकर संविधान बनाता है। लोकतंत्र और राजतंत्र चलाने के लिए राजकीय संविधान अलग होता है और मोक्षमार्ग पर चलने और मुक्ति पाने के धार्मिक और दार्शानिक सिद्धांत अलग होते हैं। वे सिद्धांत अपरिवर्तनीय होते हैं, प्राकृतिक होते हैं, वैज्ञानिक होते हैं और पारम्परिक होते हैं। यदि धार्मिक सिद्धांत और संविधान रूढ़िवादी, काल्पनिक, अहितकारी, हिंसक, स्वार्थपूर्ण, विद्वेषकारी, हटग्राही और आतंकवादी हो तो उसे हम धार्मिक सिद्धांत, दर्शन या संविधान नहीं कह सकते हैं। उसे लोकतांत्रिक प्रणाली में किसी देश को पर्सनल लॉ के रूप में लागू नहीं करना चाहिए। यदि किया जाता है तो अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है।

Meaning and Purpose of the Constitution

The Constitution is considered the law of the country. It is necessary for the king, the subjects, the ruler and the administrator to all follow the law. From time to time, constitutions keep being made and amended and separate constitutions keep being made in every country. The Constitution is always made taking into account mutual relations and traditional practices. In the word Vidhan, the word Constitution has been formed with the prefix Sam. Constitution means a set, combination or accumulation of basic principles, a document which is a specific sacred policy, justice, consistent and in the public interest. This rule, which specifies the main duties of the king, state government, subjects etc., forces them to follow the law. The principles that are presented to guide the functioning of all these organs, namely the executive, legislature and judiciary, are called the Constitution. The rules on the basis of which traditional practices, religion, philosophy and government are run become the constitution or law. All these things are kept in mind while making the Constitution. The Constitution is based on a person, society, religion, philosophy and not made for two-four days.

There is no product, but after many texts, rules and laws, many people argue, debate and ponder over the problem for a long time, the Constitution emerges. Such a constitution is especially effective in a democratic system. In a monarchy, the constitution is made by the king sitting with his cabinet and taking the advice of some scholars from among the people. The state constitution for running a democracy and monarchy is different and the religious and philosophical principles for walking on the path of salvation and attaining salvation are different. Those principles are immutable, natural, scientific and traditional. If a religious principle and constitution is conservative, imaginary, harmful, violent, selfish, xenophobic and terrorist then we cannot call it a religious principle, philosophy or constitution. It should not be implemented as a personal law of any country in a democratic system. If this is done, many problems may arise.

भारतीय संविधान का इतिहास और क्रमिक विकास

वर्तमान में जो भारतीय संविधान लागू है उसका अपना प्राचीन इतिहास भी है और कृमिक विकास हुआ भी है। सर्वप्रथम युग के आदि में ऋषभ देव आदिनाथ स्वामी ने संविधान बनाया और हा, मा, धिक इन तीन प्रकार के दण्ड व्यवस्था का प्रतिपादन किया। हा का अर्थ था कि खेद की बात है कि तुमने ऐसा अपराध किया। मा का अर्थ था कि खेद व्यक्त करते हुए कहना कि ऐसा अपराध दुबारा नहीं करोगे। धिक् का अर्थ था कि धिक्कार है कि आपको रोकने के बाद भी तुमने ऐसा अपराध किया। उसके बाद उन्हीं के पुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत स्वामी ने अपराधी या दोषी लोगों को शारीरिक दण्ड देने की व्यवस्था की थी ऐसा महापुराण के सर्ग 16 श्लोक 250 से 253 में जिनसेन स्वामी ने लिखा है। आदिनाथ के समय मानव मंदबुद्धि के थे। उसके बाद क्रमशः तेईस तीर्थंकर और हुए। अजितनााथ से लेकर पार्श्वनाथ भगवान के पूर्व तक मानव कुशाग्र बुद्धि और सरल स्वभावी थे। उसके बाद पार्श्वनाथ एवं महावीर स्वामी के समय कुटिल बुद्धि और कुटिल स्वभाव के मानव हो गये थे। तब से अब तक मानव और अधिक कुटिल बुद्धि के हो गये हैं। तीर्थंकरों के समय 12 चक्रवर्ती, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण, 9 बलभद्र, 24 कामदेव, 24 तीर्थंकरों के माता–पिता, 11 रूद्र इस प्रकार कुल 169 महापुरुष हुए जिन्होंने भारतीय संविधान का क्रमिक विकास किया। इन महापुरुषों के अभाव के बाद यहाँ मुगल शासकों ने शासन किया। उन्होंने अपने हिसाब से नियम कानून बनाए उसी के अनुसार उन्होंने लगभग 900 वर्ष तक शासन किया। उनके नियम कानून (संविधान) पर्सनल लॉ के रूप में चल रहे है कई इस्लामिक देशों में आज भी शरिया कानून के रूप में उनका संविधान चल रहा है। यहाँ भारत देश में भी आबादी बढ़ाकर इस्लामिक स्टेट बनाना चाह रहे थे। लेकिन पूरा भारत तो इस्लामिक स्टेट नहीं बन पाया। लेकिन भारत के टुकड़े करा कर अफगानिस्तान, कजाकिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि देशों में उनका अपना संविधान चल रहा है। मुगलों के बाद भारत में अंग्रेजों ने शासन किया।

History and Evolution of the Indian Constitution

The Indian Constitution which is in force at present has its own ancient history and has also undergone gradual development. First of all, in Yuga Adi, Rishabh Dev Adinath Swami made the Constitution and propounded three types of punishment system – Ha, Ma, Dhik. Ha meant that it is regrettable that you committed such a crime. Ma meant to express regret and say that you will not commit such a crime again. Dhik meant that it was a shame that you committed such a crime even after being stopped. After that, his son Pratham Chakravarti Bharat Swami had made arrangements to give physical punishment to criminals or guilty people, this has been written by Jinsen Swami in canto 16 verse 250 to 253 of Mahapuran. At the time of Adinath, humans were mentally retarded. After that there were twenty-three more Tirthankaras respectively. From Ajitnath to Lord Parshvanath, humans were sharp-witted and simple-natured. After that, during the time of Parshvanath and Mahavir Swami, people had become people with crooked intellect and crooked nature. Since then, humans have become more devious. At the time of Tirthankaras, there were 12 Chakravartis, 9 Narayans, 9 Pratinarayans, 9 Balabhadra, 24 Kamadeva, 24 parents of Tirthankaras, 11 Rudras. Thus, there were a total of 169 great men who made the overall development of the Indian Constitution. After the absence of these great men, Mughal rulers ruled here. He made rules and laws as per his own and accordingly he ruled for about 900 years. Their rules and regulations (constitution) are running in the form of personal law. Even today in many Islamic countries, their constitution is running in the form of Sharia law. Here in India too, they wanted to create an Islamic state by increasing the population. But the whole of India could not become an Islamic State. But after breaking India into pieces, their own constitution is running in countries like Afghanistan, Kazakhstan, Pakistan, Bangladesh etc. After the Mughals, the British ruled India.

वर्तमान में यह जो संविधान चल रहा है यदि हम इस संविधान के क्रमिक विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में जाए तो ज्ञात होता है कि हमारा संविधान इंग्लैण्ड से अंग्रेजों द्वारा ई. सन् 1600 में लायी गई ईस्ट इंडिया कंपनी से प्राचीन काल से चले आ रहे भारतीय नियम एवं कुछ अन्य देशों के संविधान से जुड़ा हुआ है।

16वीं सदी में इंग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ का शासन था। उस समय भारत की अपार धन संपदा की जानाकारी पाकर वहाँ के शासकों की अभिलाषा भारत की संपदा को पाने के लिए समुद्री मार्गों से आने की हुई। कुछ अंग्रेज व्यापारियों ने उस समय ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना भारत में की और व्यापार पर एकाधिकार जमा लिया। उल्लंघन करने वाले कर्मचारियों को उनके द्वारा दंडित किया जाने लगा। सर्वप्रथम सूरत में मुगल शासक जहाँगीर बादशाह ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान की थी। उसके बाद मुंम्बई, मद्रास, कोलकत्ता में कम्पनी की स्थापना हुई। अंग्रेजों ने अपने कुछ संविधान बनाये एवं गर्वनर स्थापित किये और एक परिषद का गठन किया। ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना और कानून महारानी एलीजाबेथ के एक राजलेख द्वारा की गई। जो इस प्रकार है–

राजलेख 1726

सन् 1726 के राजलेख द्वारा कलकत्ता, मुम्बई, मद्रास, प्रेसीडेन्सियों के गर्वनर एवं उनकी परिषद को विधि अर्थात् कानून बनाने की शक्ति मिली। इंग्लैण्ड स्थित निर्देशक बोर्ड (Board of Directors) के हाथ में विधि बनाने की शक्ति थी। भारत स्थित कम्पनी की सरकार गर्वनर जनरल की परिषद को नियम, उपनियम और अध्यादेशों को पारित करने का प्राधिकार प्रदान किया और उसके उल्लंघन करने वालों को दंडित करने की शक्ति प्रदान की। उस कानून का भारतीय नागरिक पालन करने लगे थे। इसलिए ईस्ट इंडिया कंम्पनी ने अपना व्यापारिक चोला बदलकर बंगाल देश के शासन को अपने हाथों में ले लिया और जो मुगलों का साम्राज्य चल रहा था। वह प्रायः समाप्त हो गया था। शक्तिहीन हो गया था।

If we go into the historical background of the gradual development of this Constitution which is in operation at present, then it becomes clear that our The Constitution is linked to the ancient Indian rules from the East India Company brought by the British from England in 1600 AD and the constitutions of some other countries.

Queen Elizabeth of England ruled in the 16th century. At that time, after getting information about the immense wealth of India, the rulers there desired to come through sea routes to get the wealth of India. At that time, some English traders established the East India Company in India and established a monopoly on trade. Violating employees started being punished by them. First of all, the Mughal ruler Jahangir Badshah had given approval to establish the East India Company in Surat. After that the company was established in Mumbai, Madras, Kolkata. The British made some of their constitutions, installed governors and formed a council. The East India Company was established and legislated by a royal decree of Queen Elizabeth. which is like this-

Rajlekh 1726

By the Royal Charter of 1726, the Governor of Calcutta, Mumbai, Madras and Presidencies and his council got the power to make laws. The power to make laws was in the hands of the Board of Directors based in England. The Government of the Company based in India gave the Governor General's Council the authority to pass rules, bye-laws and ordinances and the power to punish those who violate them. Indian citizens started following that law. Therefore, the East India Company changed its business attire and took over the rule of Bengal, which was under the rule of the Mughals. He was almost finished. Had become powerless.

1757 में नवाब सिराजुदद्ौला को अंग्रेजों ने प्लासी की लड़ाई में पराजित कर दिया था और स्वयं शासक बन कर बैठ गये थे। सन् 1765 में बिहार और उड़ीसा के राज्यों का प्रशासन अंग्रेजों ने अपने हाथों ले लिया था। मालगुजारी की रक्म वसूलने का कार्य प्रारंभ कर दिया था और ईस्ट इंडिया कंम्पनी ने पूरे भारत पर अपना स्थापत्य जमा लिया था। उस समय नये नियम कानून संविधान के रूप में बनकर लागू कर दिये गये थे। अंग्रेज भारत का धन इंग्लैण्ड ले जाने लगे थे। ब्रिटिश संसद ने एक गोपनीय समिति बनाई। उस समिति में प्रशासन की अनेक त्रुटिया दिखाई। उन्हें शीघ्र सुधारकर सन् 1773 ई. में रेग्यूलेटिंग एक्ट पारित किया गया। अर्थात् संविधान में सुधार किया गया। उसके बाद सन् 1781 ई. में एक्ट ऑफ सेटेलमेंट एक्ट की त्रुटियों को दूर करने के लिए प्रस्ताव पारित किया गया।

पिट्स इण्डिया ऐक्ट, 1784

एक्ट ऑफ सेटेलमेंट एक्ट में सुधार न होने से एक्ट ने कम्पनी के व्यापारिक कार्यों का प्रबन्ध कम्पनी के हाथ में ही रहने दिया। किन्तु उसके ऊपर राजनैतिक नियंत्रण एवं सरंक्षण के लिए बोर्ड ऑफ कंट्रोल की स्थापना कर दी। उसके सदस्यों की नियुक्ति इंग्लैण्ड का सम्राट करता था। इस प्रकार भारतीय उपनिवेश के दो शासक हो गये थे।

सन् 1813 के राजलेख द्वारा ब्रिटिश सरकार ने कम्पनी के ऊपर अपने नियन्त्रण को और अधिक बढ़ा दिया था। सन् 1833 के राजलेख अधिनियम ने देश की शासन व्यवस्था में अनेक परिवर्तन किये। इस अधिनियम ने गवर्नर जनरल की परिषद् के गठन और अधिकारों में परिवर्तन कर बंगाल के गवर्नर जनरल को सम्पूर्ण भारत का गवर्नर जनरल बना दिया। इस प्रकार के देश के शासन का केन्द्रीयकरण कर दिया गया और एक विधि सदस्य बढ़ा दिया था। अतः पूर्व में जिन विधियों को विनियम कहा जाता था उन्हें अधिनियम कहा जाने लगा। राजलेख की धारा 87 के अनुसार दास प्रथा समाप्त कर दी गई थी। धर्म वंश, वर्ण और जन्म स्थान के आधार पर सरकारी सेवाओं के लिए उचित नहीं समझा जाता। सन् 1853 के राजलेख अधिनियम के आधार पर कार्य पालिका और विधान परिषद् को अलग कर दिया गया था। विधान परिषद् में 12 सदस्य की संख्या की गई। जिसमें कमाण्डर–इन–चीफ, गवर्नर जनरल, परिषद के चार सदस्य, छः सभासद होते थे।

In 1757, Nawab Siraj-ud-Daula was defeated by the British in the battle of Plassey and became the ruler himself. In 1765, the British took over the administration of the states of Bihar and Orissa. Was. The work of collecting land revenue had started and the East India Company had established its influence over the whole of India. At that time new rules and laws were made and implemented in the form of the Constitution. The British started taking India's wealth to England. The British Parliament formed a confidential committee. Many errors of administration were seen in that committee. They were quickly rectified and the Regulating Act was passed in 1773 AD. That is, the Constitution was reformed. After that, in 1781 AD, a proposal was passed to remove the errors of the Act of Settlement.

Pitt's India Act, 1784

Due to lack of reform in the Act of Settlement, the Act left the management of the company's business operations in the hands of the company itself. But a Board of Control was established for political control and protection. Its members were appointed by the King of England. In this way the Indian colony had two rulers.

By the Royal Charter of 1813, the British Government had further increased its control over the Company. The Rajlekh Act of 1833 made many changes in the governance system of the country. This Act changed the constitution and powers of the Governor General's Council and made the Governor General of Bengal the Governor General of the whole of India. The governance of this type of country was centralized and one legislative member was increased. Therefore, the laws which were earlier called regulations came to be called Acts. According to Section 87 of the Rajlekh, slavery was abolished. It is not considered appropriate for government services on the basis of religion, race, caste and place of birth. On the basis of the Rajlekh Act of 1853, the Executive and Legislative Council were separated. The number of members in the Legislative Council was increased to 12. In which there were Commander-in-Chief, Governor General, four members of the Council and six councilors.

इस विधान परिषद् का मुख्य कार्य देश के लिए विधि बनाना होता था। लेकिन वह बोर्ड ऑफ कंट्रोल कम्पनी के ऊपर नियन्त्रण नहीं रख सकी। 1857 में राज्यक्रांति हुई। जिसमें कम्पनी के शासन को समाप्त जैसा कर दिया था। 1858 में ऐक्ट फॉर दी बेटर गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के अधिनियम ने भारत का शासन इंग्लैण्ड के सम्राज्ञी के हाथ कर दिया। भारत का प्रशासन राज्य सचिव के हाथों सौंप दिया था। सचिव को भारत से प्राप्त मालगुजारी का लेखा प्रतिवर्ष संसद के सामने पेश करना होता था और भारत देश के नैतिक, भौतिक, सामाजिक रिपोर्ट संसद को देना पड़ती थी। कुल मिलाकर भारतीय शासन इंग्लैण्ड के सम्राट के हाथों में पहुँच गया था। भारत का यह राज्य सचिव मूलतः ब्रिटिश मंत्री मण्डल का सदस्य होता था। भारत से इंग्लैण्ड की छः हजार मील दूरी होने से वह इंग्लैण्ड में बैठकर भारत का शासन नहीं संभाल सका। जिससे जनता और सरकार में असंतोष बढ़ गया था। इस गलती को दूर करने 1861 में भारतीय परिषद् अधिनियम पारित किया गया और विधि बनाने के कार्य में उन भारतीयों का सहयोग लिया जाने लगा जिसे भारत में रहने का कम से कम 10 वर्ष का अनुभव होना अनिवार्य था। लेकिन उन्हें कोई महत्वपूर्ण अधिकार एवं विधि का कोई ज्ञान नहीं दिया गया था। अतः भारतीयों को भी कोई लाभ न हो सका। परिणाम स्वरूप देश का राजनैतिक वातावरण विस्फोटक बन गया था। 1857 में राजक्रांति ने राष्ट्रीयता का बीज बोया। अंग्रेजों की दमन की नीति को समझा। भारतीयों को प्रशासन और विधि निर्माण के कार्यों में प्रतिनिधित्व किया जाए ऐसी माँग उठने लगी। 1885 में अखिल भारतीय काग्रेस की स्थापना हुई। 1892 में स्थानीय विद्यालयों, राज्य जिला बोर्ड, नगरपालिका, न्यायपालिका आदि संस्थाओं में भारतीय नियुक्त किये जाने लगे। इस अधिनियम में भारतीय संविधान प्रतिनिधि सरकार की नींव रखी। 1909 में भारतीयों को प्रशासन तथा विधि निर्माण के कार्यों में सरकारी प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया। जिसमें निर्वाचित सदस्यों की संख्या 60 कर दी गई। प्रतिनिधि सदस्यों को लोकहित के विषयों पर चर्चा करने का अधिकार भी दिया गया। इस निर्वाचन में मताधिकार की पद्धति दोष युक्त, विभेदकारी, जातिगत एवं संकुचित थी। जिसके कारण आगे जाकर देश का विभाजन हुआ। क्योंकि उस समय एक जाति का पक्ष विपक्ष को लेकर अधिकांश अधिनियम बनाये गये थे। इसीलिए भारतीयों ने विदेशी सत्ता के विरूद्ध आन्दोलन बढ़ा दिया था।

The main function of this Legislative Council was to make laws for the country. But that Board of Control controls the company couldn't keep it. There was a state revolution in 1857. In which the governance of the company. As it was finished. Act for the Better Government of 1858. The Indian Act handed over the rule of India to the Queen of England. The administration of India was handed over to the Secretary of State. to the secretary Presenting the accounts of revenue received from India before the Parliament every year and the moral, material and social reports of India were presented to the Parliament. Had to give. Overall, Indian rule was in the hands of the Emperor of England. This Secretary of State of India was originally a member of the British Council of Ministers. Was a member of due to the distance of six thousand miles from India to England, he could not rule India sitting in England. through which the public and dissatisfaction had increased in the government. To correct this mistake, in 1861 Indian Council Act was passed and in the process of making law cooperation was taken from those Indians who had no desire to live in India. It was mandatory to have at least 10 years of experience for them. No knowledge of rights and law was given. Therefore Indians couldn't get any benefit either. As a result, the political environment of the country had become explosive. The Rajkanti in 1857 sowed the seeds of nationalism to understand the British policy of repression. Indians in administration and law. The demand for representation in law construction works began to arise. 1885 All India Congress was established in. Local schools in 1892, Indians in institutions like state district board, municipality, judiciary etc. established and Indians were being appointed. The Indian Constitution represents in this Act laid the foundation of government. In 1909, the Indian was given the responsibility of administration and law making. Government representation was provided in the works. in which elected members The number was increased to 60. To representative members on matters of public interest. The right to discuss was also given. voting rights in this election. The system was flawed, discriminatory, caste based and narrow thinking. because of which later the country was divided. Because at that time one caste side Most of the acts were made regarding the opposition. That's why Indians have started the movement against foreign power.

सन् 1914 के प्रथम विश्वयुद्ध ने भारतवासियों की आजादी की महत्वाकांक्षा को बढ़ा दिया। कुल मिलाकर 1917 में राज्य सचिव मिस्टर मान्टेग्यू ने संविधान में सुधार का समर्थन किया। उन्होंने 1918 में एक रिपोर्ट पेश की जो 'मान्टफोर्ड योजना' कहलायी। इस रिपोर्ट के आधार पर ब्रिटिश संसद में एक विधेयक पारित हुआ जो भारत सरकार अधिनियम 1919 (गर्वमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1919) कहलाया।

सन् 1919 में 'मोन्टेग्यू–चेम्सफोर्ड' रिपोर्टः अर्थात् भारत सरकार अधिनियम, 1919 से प्रारंभ हुआ स्वशासन का काल। इस समय संविधान के सिद्धांतों में अनेक संशोधन किये गये।

लेकिन इस सिद्धांत को केन्द्र सरकार में लागू नहीं किया गया। केन्द्र सरकार बिट्रिश संसद के प्रति यथावत बनी रही। गवर्नर जनरल का कार्य 5 वर्ष का हो गया। केन्द्रीय सरकार के दो सदन विधानसभा और राज्य परिषद् के रूप में हो गये। केन्द्रीय विधान मण्डल के दोनों सदनों को समान अधिकार प्राप्त हो गये थे। प्रांतीय सरकार की स्थापना की गई। पुनः प्रांतीय विषयों को दो वर्गों में बाँटा गया। रक्षित और हस्तान्तरित। पुलिस, जेल, न्याय, वित्त, सिंचाई आदि महत्वपूर्ण कार्यों को रक्षित की श्रेणी में रखा गया। शिक्षा, खेती आदि कम महत्वपूर्ण विषय को हस्तान्तरित रखा गया। विधेयकों को वीटो करने का अधिकार प्राप्त था। प्रान्तीय विधान परिषदों में निर्वाचित सदस्यों की संख्या बढ़ा दी गई, लेकिन मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल का सिद्धान्त यथावत् बनाए रखा। उत्तरदायी सरकार माँग पूरी न कर सकी, द्वैध शासन असफल रहा। इसलिए नेताओं ने 'पूर्ण स्वराज्य' की मांग आन्दोलन के रूप में तेज कर दी।

साइमन आयोग-1927

1919 में बनाये गये अधिनियमों की दोहरी नीतियाँ असफल रहने के कारण मोहन दास करमचंद गाँधी भारतीय राजनीति में आये। उन्होंने भारत में पूर्ण उत्तरदायित्व वाली सरकार की स्थापना हेतु स्वतंत्रता की लड़ाई का नेतृत्व करना प्रारंभ कर दिया। समस्त देश में असहयोग आन्दोलन फैल गया। इस आन्दोलन ने अंग्रेज शासकों का ध्यान आकर्षित किया। वे उस समय की परिस्थितियों को सुधारने के लिये मजबूर हो गये और 1927 में साइमन–आयोग की नियुक्ति कर दी गयी। लेकिन आयोग में भारतीय कोई भी सदस्य न होने से भारत के सभी राजनैतिक दलों ने उसका बहिष्कार कर दिया।

The First World War of 1914 increased the ambition of Indians for independence. Overall, Mr. Montagu, the Secretary of State in 1917, supported reform of the Constitution. He presented a report in 1918 which was called 'Montford Plan'. On the basis of this report, a bill was passed in the British Parliament which was called the Government of India Act 1919.

'Montagu-Chelmsford' Report in 1919: That is, the period of self-rule started with the Government of India Act, 1919. At this time many amendments were made in the principles of the Constitution.

But this principles were not implemented in the central government. The central government remained unchanged towards the British Parliament. The tenure of the Governor General became 5 years. The Central Government became two houses in the form of Legislative Assembly and State Council. Both the houses of the Central Legislature had got equal rights. Provincial government was established. Again the provincial subjects were divided into two categories. Preserved and transferred. Important functions like police, jail, justice, finance, irrigation etc. were kept in the protected category. Less important subjects like education, agriculture etc. were kept transferred. Had the right to veto bills. The number of elected members in the provincial legislative councils was increased, but the principle of separate electorate for Muslims was maintained as it was. The responsible government could not fulfill the demands, the diarchy failed. Therefore, the leaders intensified the demand for 'complete independence' in the form of a movement.

Simon Commission - 1927

Due to the failure of the dual policies of the Acts made in 1919, Mohan Das Karamchand Gandhi came into Indian politics. He started leading the freedom struggle to establish a government with full accountability in India. The non-cooperation movement spread throughout the country. This movement attracted the attention of the British rulers. They were forced to improve the conditions of that time and in 1927, Simon Commission was appointed. But since there was no Indian member in the Commission, all the political parties of India boycotted it.

आयोग की रिपोर्ट श्वेत पत्र में उल्लेखित संविधान के सुधारों पर विचार करने का कार्य संसद की सेलेक्ट–समिति को सौंप दिया। परिणाम स्वरूप बिटिश सदन में एक विधेयक लाया गया जो भारत सरकार अधिनियम 1935 कहलाया।

भारत सरकार अधिनियम, 1935

भारत सरकार अधिनियम में 321 धाराएँ और 10 अनुसूचियाँ जारी की गई थी। जो भारत में चल रहा वर्तमान में संविधान है वह बहुत कुछ इसी 1935 में बनाई गयी संविधान से मिलता जुलता है। 1935 में बनाये गये अधिनियमों द्वारा प्रान्तों के दोहरे शासन को समाप्त करके उसे केन्द्र में लागू कर दिया। उस अधिनियम के आधार पर प्रान्तों में उत्तरदायित्व पूर्ण सरकार की स्थापना की और शासन की शक्ति जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथों में आ गई थी। उन अधिनियमों के आधार पर कुछ प्रान्तों में द्विसदनीय विधान मंडल की स्थापना की गई। जो उच्च सदन विधान परिषद और निम्न सदन विधानसभा कहलायी। मताधिकार की अर्हताएँ (योग्यताएँ) भी प्रत्येक प्रान्त में भिन्न–भिन्न की गई। विभिन्न जातियों के स्थान आरक्षित किये गये। लेकिन कोई भी विधेयक गवर्नर जनरल (सम्राट) के विचारार्थ आरक्षित रहता था।

अर्थात् कोई विधेयक आने पर गवर्नर उसे अस्वीकृत कर सकता था। परिणाम स्वरूप गवर्नर प्रान्तों में एक तानाशाही की भाँति काम करने लगा।

संविधान में पुनः संशोधन हुआ। प्रशासन की सुविधा के लिए सन् 1935 के दण्ड विधि, दण्ड संहिता, दीवानी संहिता, विवाह विधि इत्यादि अधिनियमों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया था।

1. संघ सूची– इसमें 59 विषय रखे गये थे।
2. प्रान्तीय सूची– इसमें 54 विषय रखे गये थे।
3. समवर्ती सूची– इसमें 36 विषय रखे गये थे।

The task of considering the constitutional reforms mentioned in the White Paper of the Commission's report was handed over to the Select Committee of the Parliament. As a result, a bill was brought in the British House which was called the Government of India Act 1935.

Government of India Act, 1935

The Government of India Act contained 321 sections and 10 schedules. The present Constitution in India is very similar to the Constitution made in 1935. Through the acts made in 1935, the dual governance of the provinces was abolished and implemented at the Centre. On the basis of that Act, accountable government was established in the provinces and the power of governance came into the hands of the representatives elected by the people. On the basis of those Acts, bicameral legislatures were established in some provinces. Which is the upper house called Legislative Council and the lower house called Legislative Assembly. The qualifications for voting rights were also different in each province. Places were reserved for different castes. But any bill was reserved for the consideration of the Governor General (Emperor).

That is, if any bill was introduced, the Governor could reject it. As a result, the Governor started acting like a dictatorship in the provinces.

The Constitution was amended again. For the convenience of administration, Acts like Penal Code, Civil Code, Marriage Law etc. of 1935 were amended. Were divided into three categories.

1. Union List – 59 subjects were kept in it.
2. Provincial list – 54 subjects were kept in it.
3. Concurrent List- 36 subjects were kept in it.

संघ और इसमें शामिल होने वाली इकाईयों के बीच उठने वाले संवैधानिक विवादों को सुलझाने के लिए फेडरल न्यायालय की स्थापना दिल्ली में की गई। उस समय यही भारत का उच्च न्यायालय था। जिसमें एक मुख्य न्यायाधीश और अधिकतम 7 अपर न्यायाधीश होते थे। जिसकी नियुक्ति सम्राट करता था और अधिकतम आयु 65 वर्ष तक पद पर बने रहने की निर्धारित की गई थी। फेडरल न्यायालय की सिविल और दण्डिक मामलों की कोई अपीलीय अधिकारिता नहीं थी। न्यायालय में प्रमाण पत्र के बिना भी प्रवी कॉसिल में अपील की जा सकती थी। इसलिए राजनैतिक दलों ने एक होकर भारत सरकार अधिनियम 1935 की आलोचना की।

सन् 1937 में होने वाले निर्वाचन (चुनाव) में सभी राजनैतिक दलों ने भाग लिया। कॉंग्रेस पार्टी कई प्रान्तों में बहुमत से जीतकर आई और उसने सरकार बनाई। लेकिन मंत्री–मंडल और कॉंग्रेस दल के आपसी मत–भेद और विरोध के कारण अच्छी तरह से कार्य नहीं कर सकें। इसी बीच द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हो गया। बिटिश सरकार ने भारत को युद्ध में शामिल करने की घोषणा की। यह कार्य बिटिश सरकार ने भारतीय विधान मंडल की सहमति के बिना किया था। इसलिए मंत्री मंडल ने त्याग पत्र दे दिया और यह घोषणा कर दी कि जब तक ब्रिटिश सरकार सार्वजनिक रूप से भारत को पूर्ण रूप से स्वतंत्रता प्रदान नहीं कर देगी, तब तक भारत युद्ध में शामिल नहीं होगा।

क्रिप्स-मिशन, 1942

भारतीयों की जाग्रति और माँग को देखकर ब्रिटिश सरकार को यह विश्वास हो गया कि भारत देशवासी स्वतंत्र होकर रहेंगे परिणामस्वरूप तत्कालीन प्रधानमंत्री चर्चिल ने सर स्टेफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व वाला एक दूत–मंडल भारत भेजा। क्रिप्स ने भारतीयों के बीच बैठकर संविधान में अनेक सहयोग सुधार किये और उनकी घोषणा इस प्रकार की–

1. युद्ध समाप्त होने के बाद एक निर्वाचित संविधान सभा की स्थापना की जाएगी। जो भारत के लिए एक नया संविधान बनायेगी।
2. संविधान सभा में भारतीय राज्यों के प्रतिनिधि शामिल किये जाएँगे। बिटिश सरकार भारतीय प्रान्तों को नये संविधान की रचना करने में शामिल होने का अधिकार देगी।

The Federal Court was established in Delhi to resolve constitutional disputes arising between the Union and its constituent units. At that time this was the High Court of India. In which there was a Chief Justice and maximum 7 additional judges. Who was appointed by the emperor and the maximum age for holding the post was fixed at 65 years. The Federal Court had no appellate jurisdiction in civil and criminal cases. An appeal could be made to the Privy Council even without a certificate from the court. Therefore, political parties unitedly criticized the Government of India Act 1935.

All political parties participated in the elections held in 1937. The Congress party won with majority in many provinces and formed the government. But due to mutual differences and opposition between the Council of Ministers and the Congress party, they could not function well. Meanwhile, the Second World War started. The British government announced India's involvement in the war. This work was done by the British Government without the consent of the Indian Legislature. Therefore, the Council of Ministers resigned and announced that India would not join the war until the British Government publicly granted complete independence to India.

Cripps Mission, 1942

Seeing the awakening and demands of the Indians, the British government became confident that the Indians would live independently and as a result, the then Prime Minister Churchill sent a delegation led by Sir Stafford Cripps to India. Cripps, sitting among the Indians, made many cooperative reforms in the Constitution and announced them as follows-

1. After the war ends an elected Constituent Assembly will be established. Which will make a new constitution for India.
2. Representatives of Indian states will be included in the Constituent Assembly. The British government will give the Indian provinces the right to participate in drafting the new constitution.

3. बिटिश सरकार भारतीयों के हाथों में शासन हस्तांतरित करने पर उत्पन्न समस्याओं का हल निकालेगी।
4. जाति और भाषा संबंधी अल्पसंख्यक वर्गों के सुरक्षा का प्रावधान करेगी।
5. युद्ध के पहले भारतीय नेताओं के जनसंख्या अनुपात में प्रतिनिधि चुनने का अधिकार संबंधी परिवर्तन करेगी।
6. युद्ध काल में भारत के प्रति रक्षा का उत्तरदायित्व ब्रिटिश सरकार का होगा। लेकिन सैनिकों के नैतिक और भौतिक रूप से संगठन का तथा सहयोग का उत्तरदायित्व भारत सरकार का होगा।

इस मिशन के प्रस्तावित संविधान को भारत के राजनैतिक दलों ने ठुकरा दिया। क्योकि इस मिशन के प्रस्तावों से स्पष्ट हो रहा था कि उनका उद्‌देश्य कॉंग्रेस रियासतों के राजाओं और धार्मिक जाति अल्पसंख्यकों एवं मुस्लिम लीग के लोगों को संतुष्ट करने का था।

इसके बाद नेताओं ने भारत छोड़ों आन्दोलन का प्रस्ताव पारित कर दिया और आन्दोलन उग्र हो गया। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने दमन नीति का सहारा लेते हुए सभी नेताओं को जेल में बंद कर दिया। ब्रिटिश सरकार के इस कार्य से भारतीय कुछ युवाओं को हिंसक होना पड़ा और उन्होंने दिखा दिया कि भारत की जनता अपनी हिंसक शक्ति के आधार से स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश सरकार को विवश कर देगी। इस घटना के कारण ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओं से संविधान बनाने संबंधी विचार विमर्श करने के लिए दूसरा दूत मंडल भेजा जो कैबिनेट मिशन के नाम से जाना गया। इस बीच सुभाष चन्द्र बोस ने क्रान्तिकारी और गांधी जी ने सत्य अहिंसा के सिद्धांत को आधार लेकर आजादी का आन्दोलन चलाया।

कैबिनेट-मिशन, 1946

इस मिशन में लार्ड पैथिक लारेन्स, सर स्टेफर्ड क्रिप्स एवं ए.बी. एलेक्जेन्डर ये ब्रिटिश मंत्रीमंडल के तीन सदस्य दूत बनकर आये थे। उन्होंने भारत के नेताओं के साथ बैठकर निम्न योजना संविधान के रूप में प्रस्तुत की–

3. The British government will find solutions to the problems arising after transfer of rule to Indians.
4. Will make provision for protection of minority groups related to caste and language.
5. Before the war, there will be changes related to the right to elect representatives in the population ratio of Indian leaders.
6. During the war, the British Government will be responsible for India's defence. But the responsibility of morally and materially organizing and supporting the soldiers will be that of the Government of India.

The proposed constitution of this mission was rejected by the political parties of India. Because it was clear from the proposals of this mission that their objective was to satisfy the kings of the Congress princely states and the people of religious caste minorities and Muslim League.

After this the leaders passed the resolution of Quit India Movement and the movement became violent. Therefore, the British government resorted to repression policy and imprisoned all the leaders. This action of the British government caused some Indian youth to become violent and showed that the people of India would force the British government for independence with the help of their violent power. Due to this incident, the British government sent a second delegation, which came to be known as the Cabinet Mission, to discuss the issue of drafting a constitution with Indian leaders. Meanwhile, Subhash Chandra Bose was a revolutionary and Gandhiji started the freedom movement based on the principle of truth and non-violence.

Cabinet Mission, 1946

In this mission, Lord Pethick Lawrence, Sir Stafford Cripps and A.B. Alexander These three members of the British cabinet had come as ambassadors. Sitting with the leaders of India, mission presented the following plan in the form of a constitution-

1. भारत पर ब्रिटिश सरकार अपनी प्रभु सत्ता समाप्त कर देगी।
2. भारतीय रियासतों को यह छूट होगी कि वे संघ में शामिल या स्वतंत्र रह सकेंगे।
3. एक अन्तरिम सरकार की स्थापना तत्काल की जाएगी जिसे भारत के सभी राजनैतिक दलों का समर्थन प्राप्त हो।
4. संविधान बनाने के लिए सभा का निर्वाचन शीघ्र होगा।
5. ब्रिटिश भारत और प्रान्तों को मिलाकर भारत का एक संघ होगा। कुछ विषयों को छोड़कर सभी प्रान्तों में उसका अधिकार क्षेत्र होगा।

कैबिनेट मिशन के प्रस्तावों को भारतीयों ने स्वीकार कर लिया। जुलाई 1946 में संविधान सभा के सदस्यों का निर्वाचन हुआ और 1947 में भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम लिखित रूप में प्रस्तावित हुआ।

भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम, 1947-

1. 15 अगस्त 1947 को भारत और पाकिस्तान दोनों की अलग–अलग स्वतन्त्र अधिराज्यों की स्थापना की जाएँगी।
2. 14 अगस्त 1947 के बाद ब्रिटिश सरकार का दोनों राज्यों पर कोई अधिकार नहीं रहेगा।
3. नये संविधान के निर्माण होने के पूर्व तक 1935 में बनाये गये अधिनियम दोनों अधिराज्यों में लागू रहेंगे। इस प्रकार कुल 7 अधिनियम प्रस्तावित किये गये और भारत में चल रही लगभग दो सौ वर्ष पुरानी ब्रिटिश सरकार का अंत हुआ।

1. The British government will end its sovereignty over India.
2. Indian princely states will have the option to join the union or remain independent.
3. An interim government will be established immediately which will have the support of all the political parties of India.
4. Elections for the assembly to make the constitution will be held soon.
5. There will be a union of India consisting of British India and the provinces. He will have jurisdiction in all provinces except a few subject.

Indians accepted the proposals of the Cabinet Mission. The members of the Constituent Assembly were elected in July 1946 and the Indian Independence Act was proposed in written form in 1947.

Indian Independence Act, 1947-

1. On August 15, 1947, separate independent dominions of both India and Pakistan will be established.
2. After August 14, 1947, the British government will have no authority over both the states.
3. Until the formation of the new Constitution, the Acts made in 1935 will remain in force in both the Dominions. In this way, a total of 7 acts were proposed and the almost two hundred years old British government in India came to an end.

वर्तमान भारतीय संविधान

स्वतन्त्रता प्राप्त होने के उपरांत सबसे कठिन और महत्वपूर्ण कार्य था ऐसे नये संविधान की रचना जिन उद्देशों को लेकर आजादी की लड़ाई लड़ी थी। सन् 1947 से 1950 तक यह संविधान निर्माण का कार्य बड़ी कठिनाई से संभंव हो सका।

कैबिनेट योजना के अनुसार नवंबर 1946 को संविधान सभा के चुनाव में कुल 296 सदस्यों को चुना जाना था, लेकिन 211 सदस्य कॉग्रेंस के और 73 मुस्लिम लीग के चुने गये थे शेष 12 स्थान खाली थे। जब संविधान बनाने के लिए सभा की बैठक 9 दिसम्बर 1946 को हुई, तब कैबिनेट योजना के तहत निर्धारित की गई सीमाएँ और दूसरी और मुस्लिम लीग के सदस्यों द्वारा बैठक में शामिल नहीं होना एक समस्या बनी थी। लेकिन घटना चक्र तेजी से परिवर्तित हुआ और 3 जून 1947 को दोनों देश का विभाजन होना है यह निर्णय हो गया इसलिए मुस्लिम लीग का असहयोग महत्वहीन हो गया और जो अगस्त 1947 तक कैबिनेट योजना के अधिनियम की सीमा थी वह भी समाप्त हो गई। अतः डॉक्टर अम्बेडकर की अध्यक्षता में संविधान सभा में संविधान के प्रारूप का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। जिसकी बहस 8 माह तक 11 अधिवेशन तक चली जिसमें संविधान के अनेक अनुबंध संशोधित किये गये। इस प्रकार 2 वर्ष 11 माह 18 दिन के पश्चात् 26 नवंम्बर, 1949 को भारतीय संविधान के निर्माण का कार्य पूर्ण हुआ और 15 अनुच्छेद रूप संविधान को उसी दिन से लागू कर दिया गया। शेष अनुबंध को 26 जनवरी 1950 से लागू किया गया। जिसे हम संविधान लागू होने का गणतंत्र दिवस के रूप में स्वीकार करके मनाते है।

इस प्रकार अंग्रेजों के समय बनाये गये इस भारतीय संविधान का क्रमिक विकास हुआ और इस संविधान में अमेरिका, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया, कनाडा, अफ्रिका, रूस आदि देशों के संविधान का अवलोकन कर जो संविधान श्रेष्ठ जनहितकारी लगा उसको भी देश के संविधान में जोड़ा गया। अतः हम कह सकते है कि हमारे देश के संविधान का क्रमिक विकास हुआ है।

Current Indian Constitution

After attaining independence, the most difficult and important task was to create a new constitution for the purposes for which the freedom struggle was fought. From 1947 to 1950, the work of making this constitution was possible with great difficulty.

According to the cabinet plan, a total of 296 members were to be elected in the Constituent Assembly elections in November 1946, but 211 members were elected from the Congress and 73 from the Muslim League, the remaining 12 seats were vacant. When the Assembly met on 9 December 1946 to frame the Constitution, one problem was the limitations set under the Cabinet Plan and the non-attendance of the Muslim League members on the other. But the cycle of events changed rapidly and on 3 June 1947, it was decided that the two countries would be divided, hence the non-cooperation of the Muslim League became insignificant and the extent of the Cabinet Plan Act till August 1947 also ended. Therefore, the proposal for the draft of the Constitution was presented in the Constituent Assembly under the chairmanship of Dr. Ambedkar. The debate of which continued for 8 months and 11 sessions in which many clauses of the Constitution were amended. Thus, after 2 years, 11 months and 18 days, the work of drafting the Indian Constitution was completed on 26 November 1949 and the 15 Article Constitution was implemented from the same day. The remaining contract came into effect from 26 January 1950. Which we celebrate by accepting the implementation of the Constitution as Republic Day.

In this way, the Indian Constitution made during the British rule gradually developed and after observing the constitutions of countries like America, England, Australia, Canada, Africa, Russia etc., the constitution which was found to be in the best public interest was also added to the Constitution of the country. Therefore, we can say that the Constitution of our country has developed gradually.

संविधान किसी भी देश का हो वह उस देश का प्रधान कानून माना जाता है। उसके अनुसार प्रत्येक नागरिक, नेता, मंत्री और शासनिक, प्रशासनिक अधिकारियों का चलन अनिवार्य होता है। स्वतंत्र भारत के पूर्व 2 सिंतम्बर 1946 को अंतरिम सरकार का गठन हुआ। जिसके प्रधानामंत्री जवाहरलाल नेहरू बने डॉ. बी. आर. अम्बेडकर कानून मंत्री बने लॉर्ड माउंट बेटन योजना के अनुसार संविधान होने के लिए सभा का गठन हुआ। 15 अगस्त 1947 को भारत देश स्वतंत्र हुआ और देश का विभाजन हुआ। डॉ. बी. आर अम्बेडकर का निर्वाचन क्षेत्र पूर्व पाकिस्तान चला गया। इसलिए उनकी सदस्यता समाप्त हो गई। उन्हें फिर से बम्बई प्रादेशिक विधानसभा से चुन गया। 21 अगस्त 1947 को संविधान सभा ने संविधान मसोदा समिति का गठन किया। जिसका अध्यक्ष अम्बेडकर जी को चुना गया। संविधान सभा ने विशद चर्चा करके 28 अगस्त 1948 को संविधान मसोदा समिति के 60 सदस्य मनोनीत किये। उनमें मनोनीत मुख्य सदस्य थे–

1. डॉ. बी. आर अम्बेडकर अध्यक्ष
2. अल्लादी कृष्णा स्वामी अय्यर
3. डॉ. के. एम. मुंशी
4. एन. गोपाल स्वामी अयंगर
5. सैयद मोहम्मद सैदुल्ला
6. बी. एल. मीत्तर
7. डी. पी. खैतान।

अनुच्छेद 344 के अनुसार राष्ट्रपति इस संविधान के प्रारंभ से 5 वर्ष की समाप्ति पर और उसके पश्चात् दस वर्ष की समाप्ति पर आदेश द्वारा आयोग गठित करेगा। जो एक अध्यक्ष और आठवी अनुसूची में निर्दिष्ट विभिन्न भाषा का प्रतिनिधित्व करने वाले अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा। जिसकी नियुक्ति राष्ट्रपति करेगा। आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया निश्चित की जायेगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का कर्त्तव्य होगा कि वह हिन्दीं भाषा का प्रसार बढ़ाये। उसका विकास करें। जहाँ आवश्यक हो वहाँ शब्द भंण्डार के लिए संस्कृत और गौण रूप से अन्य भाषाओं के शब्द ग्रहण करते हुए। उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे। भारत के संविधान की समिति 1946 से 1950 के बीच जो रही उसके सदस्य गण इस प्रकार थे।

The Constitution of any country is considered to be the main law of that country. According to him, behavior is mandatory for every citizen, leader, minister and government and administrative officers. Before independent India, an interim government was formed on 2 September 1946. Whose Prime Minister was Jawaharlal Nehru and Dr. B. R. Ambedkar became the Law Minister and an assembly was formed to have a constitution as per Lord Mountbatten's plan. On 15 August 1947, India became independent and the country was divided. Dr. B. R Ambedkar's constituency went to East Pakistan. Therefore his membership ended. He was again elected from the Bombay Territorial Assembly. On 21 August 1947, the Constituent Assembly constituted the Constitution Drafting Committee. Whose president Ambedkar was chosen. The Constituent Assembly, after a detailed discussion, nominated 60 members of the Constitution Drafting Committee on 28 August 1948. The main members nominated among them were-

1. Dr. B. R Ambedkar President
2. Alladi Krishna Swamy Iyer
3. Dr. K. M.Munshi
4. N. Gopal Swami Iyengar
5. Syed Mohammad Saidullah
6. B. L. Mittar
7. D.P. Khaitan.

According to Article 344, the President will constitute a Commission by order after the expiry of five years from the commencement of this Constitution and after the expiry of ten years thereafter. Which shall consist of a Chairman and other members representing different languages specified in the Eighth Schedule. Who will be appointed by the President. The procedure to be followed will be decided by the Commission. According to Article 351, it will be the duty of the Union to increase the spread of Hindi language. Develop it. Wherever necessary, adopting words from Sanskrit and secondarily from other languages for vocabulary. Ensure his prosperity. The members of the Committee on the Constitution of India which existed between 1946 and 1950 were as follows.

भारत के संविधान की समिति के सदस्यगण (1947-1950)

सर्व माननीय फ्रैंक अंथनी, सेठ गोविंद दास, महाराजा ऑफ दरभंगा, खुर्शीदलाल, एन. माधवराव, रेणुका राय, डॉ. जीवराज एन. मेहता, मोहनलाल सक्सेना, के.एम. मुंशी, हंसा मेहता, ओ.पी. रामस्वामी रेड्डियार, ॲनी मस्कारन्स, पूर्णिमा बनर्जी, अनुग्र नारायण सिंह, कृष्ण सिंह, ए.वी.ठक्कर, लक्ष्मीकांत मैत्रा, आर.आर. दिवाकर, एस. बलदेव सिंह, डॉ. जॉन मथाई, जी. वी. मावलंकर, राजकुमारी अमृत कौर, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. एच. सी. मुखर्जी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (अध्यक्ष), बी.जी. खेर, अब्दुल हलीम गजनवी, पं. रविशंकर शुक्ल, गोपीनाथ बरदोली, टी. प्रकाशम, जे.जे. एम. निकोस राय, के.सी. नियोगी, डॉ. पट्टाभी सीतारामय्या, के.सी. रेड्डी, पी. गोविंदा मेनन, सरदार स्वरूप सेठ, प्रो. निवारन चंद्र लष्कर, डॉ. रघुवीर, के. संथानाम, डॉ. आई मातारी, रोहिणी कुमार चौधरी, बाबू रामनारायण सिंह, लक्ष्मीनारायण साहू, आर. के. सीध्वा, सुचेता कृपलानी, महाराजा ऑफ पार्लकीमेडी, बी. दास, जसपतराय कपूर, के.बी. सहाय, श्यामानंदन, ताजमहल हुसेन, सारंगधर सिन्हा, एन.जी. रंगा, डॉ. रघुनंदन प्रसाद, काजी सय्यद करीमुद्दीन, जफर इमाम, मोहम्मद ताहीर, मोहम्मद हिफाजुर रहमान, लतिउर रेहमान, एम. नारायण मेहता, बिनेदानंद झा, गुप्तनाथ सिंह मेहता, सीताराम एस. जाजू, ठाकुर लाल सिंह, चंद्रिकाराम, यशवंतराय, डॉ. धर्मप्रकाश, प्रागीलाल, भगवान दीन, दयालदास भगत, पी. कक्कन, दविंद्रनाथ सामंत, ठाकुर छेदीलाल, रामचंद्र गुप्ता, वी. एन. तिवारी, के.सी. शर्मा, जयनारायण व्यास, कल्लुर सुभाराव, बी. एन. बियाणी, गोकुललाल असवा, लाला अचिंत राय, जसवंत सिंह जी, गिरीजाशंकर गुहा, पी.ढी. हिम्म सिंहका, एच. जे. खांडेकर, एस. नगप्पा, अरीबहादुर गुरंग, सी.एम. पूनचा, वी. रामय्या, एस.सी. मजुमदार, यू. एस. मल्लाया, सुरेंद्र मोहन घोष, डॉ. पी. के. सेन, सरदार सिंह बहादुर ऑफ खेत्री, ए. थानू पिल्लाई, बनारसीप्रसाद झुनझुनवाला, जगतनारायण लाल, हुसेम इमाम, किशोरीमोहन त्रिपाठी, मोहम्मद अहमद काझमी, अब्दुर रौफ, बी.एम. गुप्ता, महेश प्रसाद सिंहा, कर्नल बी. एच. जैदी, डॉ. पी. सुब्बारायन, एस. बी. कृष्णमूर्ति राव, आर. सी. उपाध्याय, के. पी. यादव,

Members of the Committee of the Constitution of India (1947-1950)

All Honorable Frank Anthony, Seth Govind Das, Maharaja of Darbhanga, Khurshidlal, N. Madhavrao, Renuka Rai, Dr. Jeevraj N. Mehta, Mohanlal Saxena, K. M. Munshi, Hansa Mehta, O.P. Ramaswami Reddiar, Anne Mascarans, Purnima Banerjee, Anugrah Narayan Singh, Krishna Singh, A.V. Thakkar, Laxmikant Maitra, R.R. Diwakar, S. Baldev Singh, Dr. John Mathai, G. V. Mavalankar, Rajkumari Amrit Kaur, Jawaharlal Nehru, Dr. H.C. Mukherjee, Dr. Rajendra Prasad (Chairman), B. Yes. Kher, Abdul Haleem Ghaznavi, Pt. Ravi Shankar Shukla, Gopinath Bardoli, T. Prakasam, J. J. M. Nikos Rai, K.C. Niyogi, Dr. Pattabhi Sitaramaiah, K. C. Reddy, P. Govinda Menon, Sardar Swaroop Seth, Prof. Nivaran Chandra Lashkar, Dr. Raghuveer, K. Santhanam, Dr. I Matari, Rohini Kumar Chaudhary, Babu Ramnarayan Singh, Lakshminarayan Sahu, R. Of. Sidhwa, Sucheta Kripalani, Maharaja of Parlakimedi, B. Das, Jaspat Rai Kapoor, K.B. Sahay, Shyamanandan, Taj Mahal Hussain, Sarangdhar Sinha, N. Yes. Ranga, Dr. Raghunandan Prasad, Qazi Syed Karimuddin, Zafar Imam, Mohammad Tahir, Mohammad Hifazur Rahman, Latiur Rehman, M. Narayan Mehta, Binedanand Jha, Guptnath Singh Mehta, Sitaram S. Jaju, Thakur Lal Singh, Chandrikaram, Yashwantrai, Dr. Dharmaprakash, Pragilal, Bhagwan Deen, Dayaldas Bhagat, P. Kakkan, Davindranath Samant, Thakur Chhedilal, Ramchandra Gupta, V.N. Tiwari, K.C. Sharma, Jayanarayan Vyas, Kallur Subharao, B. N. Biyani, Gokullal Aswa, Lala Achint Rai, Jaswant Singh ji, Girijashankar Guha, P.D. Himm Singhka, H.J. Khandekar, S. Nagappa, Aribahadur Gurung, C.M. Pooncha, V. Ramayya, S. C. Majumdar, U. S. Mallaya, Surendra Mohan Ghosh, Dr. P.K. Sen, Sardar Singh Bahadur of Khetri, A. Thanu Pillai, Banarasi Prasad Jhunjhunwala, Jagatnarayan Lal, Husem Imam, Kishori Mohan Tripathi, Mohammad Ahmed Kazmi, Abdur Rauf, B. M. Gupta, Mahesh Prasad Singha, Colonel B. H. Zaidi, Dr. P. Subbarayan, S. B. Krishnamurthy Rao, R. C. Upadhyay, K. P. Yadav,

शंतनुकुमार दास, ठाकुर किशन सिंह, एल. के. भारती, वी. सी. केशवराव, भगवत प्रसाद, जयपाल सिंह, एम. थिरुमुल राव, धीमती जी. दुर्गाबाई, धीमती कमला चौधरी, धीमती दाक्षायणी वेलायुधन, धीमती अम्मु स्वामिनाथन, बेगम ऐजाज रसूल, टी. सिद्धलिंगया, मोहनलाल गौतम, बी. एल. सोंधी, महावीर त्यागी, आर. एल, मालवीय (जैन), रामप्रसाद पोटाई, सारंगधर दास, के. हनुमंतय्या, एच. वी. कामत, एच. गुरुव रेड्डी, लाला राजकंवर, सरदार रणजीत सिंह, पदमपत सिंघानिया, एम.ए. मुथय्या चेट्टियार, सय्यद मोहम्मद सादुल्ला, टी.जी.एम. विल्सन, आचार्य जुगल किशोर, सी. एच. हैदर हुसैन, के. टी. एम. अहमद इब्राहिम, बी. पोक्कर, मोहम्द इस्माइल, ओ.वी. अलगसेन, सी. सुब्रमण्यम् हीरालाल शास्त्री, गोकुलभाई डी. भट्ट, लेफ्ट कर्नल के. आर. दलेल सिंघजी, जी. विजय बगिस, पं. हृदयनाथ कुंझरू, डॉ. बक्शी टेकचंद, डॉ. प्राणलाल ठाकुरलाल मुंशी, कुलधर चालिया, मुकुट बिहारीलाल भार्गव, विनायकराव बी. वैद्य, सरदार हुकुम सिंह, महबूब अली बेग, रणबीर सिंह, नंदकिशोर दास, ठाकुरदास भार्गव, डॉ. जोसेफ अल्बन डिसूजा, टी. चन्नय्या, कैप्टन अवधेश प्रताप सिंह, शंभुनाथ शुक्ल, के. एम. . जठे, एच. वी. पाटसकर, आर. बी. कुंभार, एन. संजीव रेड्डी, डी. गोविंद दास, एस. भूपेंद्र सिंह मान, एच. सीद्दवीरप्पा, पी. कुन्हिरामन, ए. के. मेनन, भवानजी अर्जुन खिमजी (जैन), राम सहाय तिवारी, मुन्नालाल द्विवेदी, खंडुभाई देसाई, के. एन. देसाई, सी.सी. शहा (जैन), डॉ. वाय. एस. परमार, दरबार गोपालदास, ए. देसाई, बलवंतराय (जैन). मेहता, जयसुखलाल हाथी, अजित प्रसाद जैन, सरदार जोगिंदर सिंह, बालकृष्ण शर्मा, एम. एल. चट्टोपाध्याय, हरगोविंद पंत, आर. वी. धुलेकर, मसूर्या दीन, बंसीधर मिश्रा, जी. एस. गुप्ता, बी. ए. मंडलोई, एस. टी. धर्माधिकारी, कुसुमकांत जैन, राज बहादुर, देशबंधु गुप्ता, विश्वनाथ दास, एम.सी. वीरा बाबू, वी. नदीमुथू पिल्लई, टी. ए. रामलिंगम चेट्टियार, केके. कामराज, गोविंद मालवीय, एस. निजलिंगप्पा, सत्यनारायण सिंहा, कमलापति त्रिपाठी, शिब्बनलाल सक्सेना, पं. मोतीराम बागरा, मौलाना मोहम्मद सय्यद मसुदी, मिर्जा मोहम्मद अफजल बेग, सुंदरलाल, सतीशचंद्र, युधिष्ठिर मिश्रा, अरुणचंद्र गुहा, वी. सुब्रमण्यम, एम. सत्यानारायण, बी. के. दास,

Shantanukumar Das, Thakur Kishan Singh, L. Of. Bharti, V.C. Keshavrao, Bhagwat Prasad, Jaipal Singh, M. Thirumul Rao, Dhimathi G. Durga Bai, Dheemati Kamala Choudhary, Dheemati Dakshayani Velayudhan, Dheemati Ammu Swaminathan, Begum Aijaz Rasool, T. Siddalingaya, Mohanlal Gautam, B. l. Sondhi, Mahavir Tyagi, R. L, Malaviya (Jain), Ramprasad Potai, Sarangdhar Das, Of. Hanumanthayya, H.V. Kamat, H.Guruva Reddy, Lala Rajkanwar, Sardar Ranjit Singh, Padampat Singhania, M.A. Muttiah Chettiar, Syed Mohammed Saadullah, T.G.M. Wilson, Acharya Jugal Kishore, C.H. Haider Hussain, Of. T.M. Ahmed Ibrahim, B. Pokkar, Mohammad Ismail, O.V. Algasen, C. Subramaniam, Hiralal Shastri, Gokulbhai D. Bhatt, Lt. Col. K. R. Dalel Singhji, G. Vijay Bagis, Pt. Hridaynath Kunjru, Dr. Bakshi Tekchand, Dr. Pranlal Thakurlal Munshi, Kuldhar Chalia, Mukut Biharilal Bhargava, Vinayakrao B. Vaidya, Sardar Hukum Singh, Mehboob Ali Baig, Ranbir Singh, Nandkishore Das, Thakurdas Bhargava, Dr. Joseph Alban D'Souza, T. Channaya, Captain Awadhesh Pratap Singh, Shambhunath Shukla, K. M. Jathe, H.V. Pataskar, R. B. Kumbhar, N. Sanjeev Reddy, D. Govind Das, S. Bhupendra Singh Mann, H. Siddaveerappa, P. Kunhiraman, A. Of. Menon, Bhavanji Arjun Khimji (Jain), Ram Sahay Tiwari, Munnalal Dwivedi, Khandubhai Desai, K. N. Desai, C.C. Shaha (Jain), Dr. Y. S. Parmar, Darbar Gopaldas, A. Desai, Balwantrai (Jain). Mehta, Jaisukhlal Hathi, Ajit Prasad Jain, Sardar Joginder Singh, Balkrishna Sharma, M.L. Chattopadhyay, Hargovind Pant, R. V. Dhulekar, Masooriya Deen, Bansidhar Mishra, G. S. Gupta, B. A. Mandloi, S. T. Dharmadhikari, Kusumkant Jain, Raj Bahadur, Deshbandhu Gupta, Vishwanath Das, M.C. Veera Babu, V. Nadimuthu Pillai, T.A. Ramalingam Chettiar, KK. Kamaraj, Govind Malviya, S. Nijalingappa, Satyanarayana Singha, Kamalapati Tripathi, Shibbanlal Saxena, Pt. Motiram Bagra, Maulana Mohammad Syed Masoodi, Mirza Mohammad Afzal Baig, Sunderlal, Satishchandra, Yudhishthir Mishra, Arunchandra Guha, V. Subramaniam, M. Satyanarayana, B. K. Das,

सतीशचंद्र सामंता, जसीमुद्दीन अहमद, डॉ. मनमोहन दास, पी.टी. चाको, को. ए. अहमद, आर. संकर, पी. एस. नटराज पिल्लई, वी. एस. सरवटे, डॉ. पी. एस. देशमुख, गोपाल नारायण, पी. एल. नरसिंह राजू, एल. एस. भास्कर, आर.एम. नलाबडे, वी.डी. त्रिपाठी, अलगुराय शास्त्री, ए. धर्मदास, एच. वी. त्रिपाठी, ज्ञानगुरु मुखसिंह मुसाफिर, नवाब मोहम्मद इस्माईल खान, मौलाना हसरत मोहानी, लालमोहन पती, (पांच पुलिस के जवान), कला व्यंकट राब, नसीरुद्दीन अहमद, काका भगवंत राय।

भारत के संविधान समिति के जैन सदस्य

आजादी के बाद जब भारत देश का संविधान बना उस समय संविधान समिति में 6 सदस्य जैन समाज के इस प्रकार थे–

1. श्री अजीत प्रसाद जैन सहारनपुर, उत्तर प्रदेश
2. श्री कुसुमकांत जैन इंदौर, मध्य प्रदेश
3. श्री रतनलाल मालवीय सागर, मध्य प्रदेश
4. श्री भवानी अर्जुन खेमजी कच्छ, गुजरात
5. श्री चमनभाई चीकूभाई शाह सौराष्ट्र, गुजरात
6. श्री बलवंतसिंह मेहता उदयपुर, राजस्थान

Satishchandra Samanta, Jasimuddin Ahmed, Dr. Manmohan Das, P.T. Chacko, Co. A. Ahmed, R. Sankar, P.S. Nataraja Pillai, V.S. Sarwate, Dr. P.S. Deshmukh, Gopal Narayan, P.L. Narasimha Raju, L. S. Bhaskar, R.M. Nalawade, V.D. Tripathi, Algurai Shastri, A. Dharamdas, H.V. Tripathi, Gyanguru Mukhsingh Musafir, Nawab Mohammad Ismail Khan, Maulana Hasrat Mohani, Lalmohan Pati, (five policemen), Kala Vyankat Raab, Naseeruddin Ahmed, Kaka Bhagwant Rai.

Jain members of the Constitution Committee of India

After independence, when the Constitution of India was made, there were six members of the Jain community in the Constitution Committee as follows:

1. Shri Ajit Prasad Jain Saharanpur, Uttar Pradesh
2. Shri Kusumkant Jain Indore, Madhya Pradesh
3. Shri Ratanlal Malviya Sagar, Madhya Pradesh
4. Shri Bhavani Arjun Khemji Kutch, Gujarat
5. Shri Chamanbhai Chikubhai Shah Saurashtra, Gujarat
6. Shri Balwant Singh Mehta Udaipur, Rajasthan

भारतीय संविधान का संक्षिप्त परिचय

आजादी के बाद भारतीय संविधान कुल 22 भागों में लिखा गया है। उसमें कुल 395 मुख्य अनुच्छेद रखे गये। इन अनुच्छेदों के अंर्तगत उप अनुच्छेद भी रखे गये।

1. प्रथम भाग में अनुच्छेद एक से चार तक संघ (देश) और उसका राज्य क्षेत्र। उसमें संघ का नाम भारत। अनेक राज्यों के नाम निर्दिष्ट किये गये। नये राज्यों की स्थापना, सीमा, परिवर्तन इत्यादि संबंधी कुल चार संविधान रखें गये।
2. भाग दो में पाँच से ग्यारह तक कुल सात अनुच्छेद नागरिकता अधिकार से संबंधी रखे गये।
3. भाग तीन में 12 से 35 तक कुल 24 अनुच्छेद मूल अधिकार से संबंधी रखे गये। जिसमें मूल अधिकार की परिभाषा समता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शोषण के विरूद्ध अधिकार, धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार, संस्कृति और शिक्षा का अधिकार, धन अर्जन विनिमय इत्यादि विविध व्यावृत्ति अधिकार एवं संवैधानिक उपचारों का अधिकार संबंधी संविधान रखा गया।
4. भाग 4 में 36 से 51 तक कुल 16 अनुच्छेदों में राज्य की नीति के निदेशक तत्व संबंधी अधिकार एवं मूल कर्त्तव्य रखे गये इसमें राज्य लोक कल्याण, सामाजिक व्यवस्था, राज्य की नीति, ग्राम पंचायतों का संगठन, कर्मचारी और मजदूरों के निर्वाहन सिविल संहिता, बालकों के लिए शिक्षा का उपबंध, अनुसूचित जाति–जनजाति और गरीब वर्गों की शिक्षा एवं अर्थ आहार स्वास्थ्य, कृषि पशु–पालन, संरक्षण, संवर्धन, कार्यपालिका से न्यायपालिका का पृथक करण एवं अंर्तराष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधी संविधान रखे गये इसी भाग में एक और भाग 4 को अंर्तनिहित किया गया। जिसमें मूल कर्तव्य संबंधी 51वां अनुच्छेद रखा गया।

Brief introduction to the Indian Constitution

After independence, the Indian Constitution has been written in a total of 22 parts. A total of 395 main articles were kept in it. Sub-paragraphs were also placed under these articles.

1. In the first part, articles one to four cover the Union (country) and its territory. The name of the union in it is India. Names of many states were specified. A total of four constitutions were kept regarding establishment of new states, boundaries, changes etc.
2. In Part Two, a total of seven articles from five to eleven were kept related to citizenship rights.
3. In Part Three, a total of 24 articles from 12 to 35 related to fundamental rights were kept. In which the constitution related to the definition of fundamental rights, right to equality, right to freedom, right against exploitation, right to freedom of religion, right to culture and education, right to earn money, exchange etc., various rights of livelihood and right to constitutional remedies were kept.
4. In Part 4, in a total of 16 articles from 36 to 51, rights and fundamental duties related to the Directive Principles of State Policy were laid down. These included state public welfare, social system, state policy, organization of Gram Panchayats, civil code for maintenance of employees and labourers. Provision of education for children, education of Scheduled Castes, Tribes and poor classes and economics, food, health, agriculture, animal husbandry, conservation, promotion, separation of judiciary from executive and international security were kept in this part of the Constitution. Part 4 incorporated. In which the 51st article related to fundamental duties was kept.

5. भाग पाँच में 52–151 तक कुल 100 अनुच्छेद रखे गये जिसे 5 अध्यायों में विभाजित किया गया। जिसके अंर्तगत 5 अध्याय है। जिसके प्रथम अध्याय में कार्यपालिका अर्थात् राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, मंत्री परिषद, सरकारी कार्य का संचालन। द्वितीय अध्याय में संसद का गठन अवधि विघटन अधिकार कार्य संचालन शक्ति विशेष अधिकार, विधाई प्रकिया, वित्तीय प्रकिया, साधारण प्रकिया का कथन है। अध्याय तीन में राष्ट्रपति की विधाई शक्ति। अध्याय चार में संघ की न्याय पालिका। अध्याय पाँच में भारत का नियंत्रक, भारत का महालेखा परीक्षक संबंधी संविधान रखा गया है।

6. भाग छः में 152 से 237 तक कुल 86 अनुच्छेद है जिसे छः अध्यायों में राज्याधिकार संबंधी संविधान रखा गया है। जिसमें कुल छः अध्याय है। प्रथम अध्याय में साधारण परिभाषा, द्वितीय अध्याय में कार्यपालिका से संबंधित राज्यों के राज्यपाल की नियुक्ति, अर्हताएं, शपथ, कार्य, शर्ते, मंत्रि–परिषद् एवं मंत्री संबंधी उपबंध राज्य के महाअधिवक्ता एवं राज्य की सरकार के मुख्यमंत्री से लेकर अन्य सभी कार्य संचालक को रखा गया है। तृतीय अध्याय में राज्य के विधानसभा मंडल का गठन, संरचना, अवधि, अर्हताएँ, विघटन, राज्यपाल का अधिकार, विधानसभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष/ सभापति और उप सभापति की नियुक्ति, पद शपथ, त्याग पत्र, वेतन, भत्ता, राज्यों के विधानसभा मंडल के अधिकार सदस्यों की शक्ति, समितियाँ, विधेयक, वित्तिय प्रकिया, साधारण प्रकिया एवं विनिमय संबंधी संविधान रखें गये। अध्याय 4 में राज्यपाल की विधाई शक्ति, उच्च न्यायालय, न्यायालयों का गठन, उच्च न्यायालयों का गठन, न्यायाधीशों की नियुक्ति शपथ, वेतन, अधिकार, संघ राज्य क्षेत्रों का विस्तार, सेवा और व्यय संबंधी संविधान रखे गये।

7. भाग 7 में मात्र एक 238 नम्बर का अनुच्छेद है जिसमें संविधान की बारह अनुसूचीयों में से राज्य और संघ क्षेत्र की प्रथम अनुसूची द्वारा निरसित संविधान को रखा गया है।

5. A total of 100 articles from 52-151 were kept in Part Five which were divided into 5 chapters. Under which there are 5 chapters. In the first chapter of which the executive *i.e.* President, Vice President, Council of Ministers, conduct of government work. In the second chapter, the constitution of Parliament, period, dissolution, powers, operational powers, special powers, legislative process, financial process and general process are mentioned. Legislative power of the President in Chapter Three. Judiciary of the Union in Chapter Four. In Chapter Five, the Constitution related to the Comptroller and Auditor General of India has been kept.
6. In Part Six, there are a total of 86 articles from 152 to 237, which have been placed in six chapters as the constitution related to state power. In which there are total six chapters. In the first chapter, general definition, in the second chapter, the provisions related to the appointment, qualifications, oath, functions, conditions, Council of Ministers and ministers of the Governor of the states related to the executive, including the Advocate General of the state and the Chief Minister of the state government and all other administrators have been kept. Has gone. Chapter III contains the constitution, composition, duration, qualifications, dissolution, authority of the Governor of the Legislative Assembly of the State, appointment of Speaker and Deputy Speaker/Chairman and Deputy Speaker of the Legislative Assembly, oath of office, resignation letter, salary, allowances, powers of the Legislative Assembly of the States. Constitutions related to power of members, committees, bills, financial procedure, general procedure and exchange were laid down. Chapter 4 Legislative power of the Governor, High Court, Constitution of High Courts, Appointment of Judges, Oath, Salary, Powers, Union Constitutions related to expansion of state areas, services and expenditure were kept.
7. There is only one article number 238 in Part 7 in which out of the twelve schedules of the Constitution, the Constitution of the States and Union Territories repealed by the First Schedule has been kept.

8. भाग 8 में 239 से 242 तक कुल चार अनुच्छेद रखे गये है जिसमें संघ राज्य क्षेत्रों का प्रशासन, मंत्री परिषदों का सर्जन, केन्द्र सरकार से संबंधित उपबंध, विधान मंडल के अध्यादेश, प्रशासन की शक्ति राज्य क्षेत्रों में विनिमय संबंधी राष्ट्रपति की शक्ति राज्य क्षेत्रों के लिए उच्च न्यायालय और निरसन संबंधी संविधान रखा गया है।

9. भाग 9 में 243 वॉ अनुच्छेद रखा गया है उस अनुच्छेद के 32 उप अनुच्छेद किये गये हैं। जिसमें पंचायतों संबंधी और नगरपालिका संबंधी गठन, आरक्षण, अवधि, उत्तरदायित्व शक्ति निर्वाचन, वित्त, योजना, निर्हताओं संबंधी संविधान रखा गया है।

10. भाग 10 में 244वॉ अनुच्छेद है जिसमें अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों का प्रशासन और उससे संबंधी संविधान रखा गया।

11. भाग 11 में 245 से 263 तक कुल 19 अनुच्छेद रखे गये है जिसे दो अध्यायों में बाँटा गया है। अध्याय एक में संघ और राज्य (संसद और विधायक) संबंधी संविधान रखा गया है।

    अध्याय 2 में मुख्य रूप से प्रशासनिक संबंध के संविधान को रखा गया है। जिसमें राज्य और देश की बाध्यता, नियंत्रण, शक्ति प्रयोग, भारत के बाहर राज्य क्षेत्रों के संबंधी देश की अधिकारिता, सार्वजनिक कार्य, न्यायिक कार्यवाहियाँ, जल संबंधी विवाद और राज्यों के बीच समन्वय से संबंधित संविधान को रखा गया है।

12. भारतीय संविधान के भाग 12 में 264 से 300 तक कुल 37 अनुच्छेद रखे गये हैं। जिसे 4 अध्याय में बांटा गया है। उसमें वित्त, संपत्ति, संविदाएं और वित्त संबंधी वादे, व्यय, शुल्क, व्यापार, उधार लेना देना, कर वसूली वित्तीय उपबंध एवं संपत्ति के आधिकार से संबंधित संविधान रखे गए हैं।

13. भारतीय संविधान के भाग 13 में 301 से 307 तक कुल 7 अनुच्छेद हैं। जिसमें देश के राज्यों के अंदर व्यापार, वाणिज्य समागम की स्वतंत्रता, संघ और राज्य की शक्ति निर्वंधन, निरसन इत्यादि संविधान को रखा गया है

8. A total of four articles from 239 to 242 have been kept in Part 8, in which administration of Union Territories, creation of councils of ministers, provisions related to the Central Government, ordinances of the Legislative Assembly, administration.

   The power of the President regarding exchange in the territories, the High Court for the territories and the power to repeal the Constitution has been kept.

9. Article 243 has been placed in Part 9 and 32 sub-articles have been made in that article. In which the constitution related to Panchayat and Municipal related formation, reservation, duration, responsibility power, election, finance, planning, disqualifications has been kept.

10. Part 10 contains Article 244 in which the administration of Scheduled Tribe areas and the constitution related to it were laid down.

11. A total of 19 articles from 245 to 263 have been kept in Part 11, which are divided into two chapters. Chapter One contains the constitutions related to the Union and the State (Parliament and Legislature).

    Chapter 2 mainly laid down the constitution of administrative relations. In which the compulsion, control, power of the state and country The Constitution deals with the use, jurisdiction of the country over territories outside India, public works, judicial proceedings, water disputes and coordination between the states have been kept.

12. There are a total of 37 articles from 264 to 300 in Part 12 of the Indian Constitution. Which is divided into 4 chapters. It contains constitutions related to finance, property, contracts and promises expenditure, duties, trade, borrowing, tax collection, financial provisions and property rights have been kept.

13. Indian Constitution Part 13 has a total of 7 articles from 301 to 307. In which the Constitution has been kept, freedom of trade, commercial association, restriction of power of Union and State, repeal etc. within the states of the country.

14. भारतीय संविधान के भाग 14 में 308 से 323 तक कुल 16 अनुच्छेद रखे गये है। जिसे 2 अध्याय में बांटा गया है। प्रथम अध्याय में देश और राज्य के अधीनस्थ सेवा संबंधी अधिनियम एवं अध्याय 2 में लोक सेवा आयोग संबंधी अधिनियम रखे गए हैं।
15. भारतीय संविधान के भाग 15 में 324 से 329 तक कुल 6 अनुच्छेद रखे गये हैं। जिसमें निर्वाचन संबंधी अधिनियम है, लोकसभा, विधानसभा के निर्वाचन हेतु मताधिकार इसी से संबंधित संसद की शक्ति एवं न्यायालयों के वर्जन निरसन संबंधी अधिनियम रखे गये हैं।
16. संविधान के भाग 16 में अनुच्छेद 330 से 342 तक कुल 13 अनुच्छेद रखे गये हैं। जिसमें लोकसभा एवं राज्यसभा में अनुसूचित जाति, जनजाति और अन्य वर्गों से संबंधित आरक्षण प्रतिनिधित्व शैक्षणिक अनुदान अन्वेषण इत्यादि उपबंध संबंधि अधिनियम रखे गए हैं।
17. संविधान के भाग 17 में 343 से 351 तक कुल 9 अनुच्छेद रखे गए हैं जिसे 4 अध्याय में बांटा गया है। प्रथम अध्याय में संघ यानी देश की राजभाषा, द्वितीय अध्याय में राज्य की भाषा, तृतीय अध्याय में उच्च न्यायालय और न्यायालय आदि शासकीय स्थानों में अधिनियम विधेयक आदि के लिए प्रयुक्त की जाने वाली भाषा और अध्याय 4 में भाषा संबंधी, विशेष निर्देश, भाषाई अल्पसंख्यक, प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा की शिक्षा सुविधा एवं हिंदी भाषा के विकास के लिए विशेष निर्देश संबंधी अधिनियम रखे गए हैं।
18. संविधान के भाग 18 में 352 से 360 तक, कुल 9 अनुच्छेद रखे गए हैं, जिसमें आपातकाल संबंधी अधिनियम जैसे आपातकाल की उद्घोषणा बाहरी और आंतरिक अशांति की सुरक्षा में देश के कर्तव्य शक्तियों का प्रयोग, उपबंध संबंधों का निलंबन, वित्तीय आपात के उपबंध इत्यादि अधिनियम रखे गए हैं ।
19. संविधान के भाग 19 में 361 से 367 तक कुल 7 अनुच्छेद रखे गए हैं, जिसमें राष्ट्रपति, राज्यपाल, संसद और राजप्रमुख के संरक्षण, राजनीतिक पद पर नियुक्ति के लिए निरर्हता निरसन वर्जन उपबंधआदि प्रकीर्ण के रूप में संविधान रखे गए हैं।

14. A total of 16 articles from 308 to 323 have been kept in Part 14 of the Indian Constitution. Which is divided into 2 chapters. In the first chapter, the acts related to subordinate services of the country and the state and in chapter 2, the acts related to Public Service Commission have been kept.
15. A total of 6 articles from 324 to 329 have been kept in Part 15 of the Indian Constitution. In which there are acts related to elections, voting rights for the elections of Lok Sabha and Vidhan Sabha, acts related to the power of Parliament and repeal of injunctions of courts have been kept.
16. A total of 13 articles from Articles 330 to 342 have been kept in Part 16 of the Constitution. In which acts related to provisions related to reservation, representation, educational grants, research etc. related to Scheduled Castes, Tribes and other classes have been kept in Lok Sabha and Rajya Sabha.
17. A total of 9 articles from 343 to 351 are included in Part 17 of the Constitution, which are divided into 4 chapters. In the first chapter the Union i.e. the official language of the country, in the second chapter the language of the state, in the third chapter the language used for acts, bills etc. in government places like High Court and Court and in Chapter 4 the language related, special instructions, linguistic minorities, Acts related to special instructions have been made to facilitate mother tongue education and development of Hindi language at the primary level.
18. A total of 9 articles, from 352 to 360, are contained in Part 18 of the Constitution, in which emergency related acts like proclamation of emergency, exercise of duty powers of the country in protection of external and internal disturbances, provisions for suspension of relations, provisions for financial emergency. Acts etc. have been kept.
19. A total of 7 articles from 361 to 367 have been kept in Part 19 of the Constitution, in which various provisions like protection of the President, Governor, Parliament and the Head of State, provisions for revocation of disqualification for appointment to political post, etc. have been kept.

20. संविधान के भाग 20 में मात्र एक 368 वाँ अनुच्छेद है, जिसमें संविधान के संशोधन करने की संसद शक्ति और उसकी प्रक्रिया संबंधी अधिनियम रखा गया है।

21. संविधान के भाग 21 में 369 से 392 तक कुल 24 अनुच्छेद रखे गए हैं, जिसमें राज्य सूची के विषय में राष्ट्रपति एवं संसद की अस्थाई शक्ति, संक्रमणकालीन स्थिति और विशेष स्थिति के विशेष उपबंध जैसे जम्मू कश्मीर के 370 धारा के संबंध में अस्थाई उपबंध इसी प्रकार महाराष्ट्र, गुजरात, नागालैंड, असम, मणिपुर, आंध्रप्रदेश, सिक्किम, मिजोरम, अरुणाचलप्रदेश, गोवा आदि राज्य के उपबंध एवं उसी के संबंध में उच्च न्यायालय न्यायधीश लोक सेवा आयोग के विशेष उपबंध संबंधी अधिनियम रखे गए हैं।

22. संविधान के भाग 22 में 393 से 395 तक कुल 3 अनुच्छेद रखे गए हैं जिसमें भारत का संविधान यह नाम, संविधान प्रारंभ होने की तारीख एवं हिंदी भाषा में प्राधिकृत पाठ एवं निरसन संबंधी अधिनियम रखे गए हैं।

संविधान के बिना राज्य और देश की सत्ता को चलाना असंभव है। संविधान के बिना अराजकता फैल जाती है। इसलिए प्रत्येक देश का संविधान होना जरूरी है। संविधान सरकार की रूप रेखा निर्धारित करती है। संविधान राज्य में प्रभु सत्ता का विभाजन और प्रयोग को करने प्रेरित करता है। संविधान राज्य की सरकार के स्वरूप तथा नागरिकों के अधिकार और कर्तव्यों का निर्माण करता है। संविधान सरकार के संगठन, विघटन, राष्ट्रीय–अर्न्तराष्ट्रीय पारिस्परिक संबंध, लोकाचार, सदाचार और शक्तियों से संबंधित सिद्धांतों का निर्धारण करता है। संविधान राज्य या देश के ढाँचे को तैयार करता है। इस प्रकार संविधान न्यायनीति के नियमों का एक संग्रह होता हैं। राष्ट्रीय संविधान व्यापक, संक्षिप्त, स्पष्ट, मौलिक अधिकारों से सहित, उच्च, पवित्र, स्वतंत्र, निष्पक्ष, स्थिर, द्रव्य क्षेत्र काल के अनुसार परिवर्तनीय, लिपिबद्ध पूर्वापर विरोध संशय विपर्यय से रहित और लोकहितकारी होना चाहिए। धार्मिक संविधान आध्यात्मिक, नैतिक, संयमित, कल्याणकारी और अपरिवर्तनीय होना चाहिए।

20. There is only one 368th article in Part 20 of the Constitution, in which the Act related to the power of Parliament to amend the Constitution and its procedure has been kept.
21. A total of 24 articles have been kept in Part 21 of the Constitution from 1369 to 392, in which there are special provisions regarding the temporary power of the President and Parliament, transitional status and special status regarding the State List, such as temporary provisions regarding Article 370 of Jammu and Kashmir, similarly Maharashtra. Acts related to the provisions of the states like Gujarat, Nagaland, Assam, Manipur, Andhra Pradesh, Sikkim, Mizoram, Arunachal Pradesh, Goa etc. and special provisions of the High Court Judges Public Service Commission in relation to the same have been kept.
22. A total of 3 articles from 393 to 395 have been kept in Part 22 of the Constitution, in which the name of the Constitution of India, the date of commencement of the Constitution, the authorized text in Hindi language and the Act related to repeal have been kept.

It is impossible to run the power of the state and the country without the Constitution. Without a constitution anarchy spreads. Therefore it is necessary for every country to have a constitution. The Constitution determines the form of government. The Constitution encourages the division and exercise of sovereign power in the state. The Constitution establishes the form of government of the state and the rights and duties of its citizens. The Constitution determines the principles related to the organization, dissolution, national-international relations, ethos, morality and powers of the government. The Constitution prepares the structure of the state or country. Thus the Constitution is a collection of rules of justice. The national constitution should be comprehensive, concise, clear, inclusive of fundamental rights, high, sacred, independent, impartial, stable, changeable according to the time and place, scripted, free from contradictions, doubts and inversions and in public interest. The religious constitution should be spiritual, moral, restrained, welfare and immutable

आचार संहिता और नागरिकता

दुनिया में जो धर्म, दर्शन और संप्रदाय हैं, उनके सिद्धांतों में एक–दूसरे से मेल नहीं खाता है। जिन सिद्धांतों में मेल नहीं खाता उन सिद्धांतों को फिलहाल गौण करना चाहिए। जो समानता रखने वाले सिद्धांत हैं, उन्हें लोकतांत्रिक देश में प्रतिपादित करना चाहिए। उन समन्वय के सिद्धांतों को लेकर एक जैसी आचार–संहिता बनाई जाना चाहिए। यदि ऐसा संभव हो गया तो सोने में सुहागा होगा। वे सब धर्म ऐकमेक हो जायगें और राजनीति में धर्म भी दूध और शक्कर की भाँति एकमेक हो जाएगा।

क्रिया को सुधारने से प्रतिक्रिया सुधर जाती है। प्रवृत्ति को सुधारने से परिणाम सुधर जाता है। बिंब को सुधारने से प्रतिबिंब सुधर जाता है। नागरिकों को सुधारने पर नगर सुधर जाता है। देश की बागडोर थामने वालों को सुधारने से देश सुधर जाता है।

देश की बागडोर किसके हाथ में देना, यह मुख्य है। यदि दायित्व किसी अच्छे व्यक्ति के हाथ में सौंपा जाएगा तो परिणाम अच्छा ही निकलेगा इसलिए लोकतांत्रिक देश में उचित उम्मीदवार को चुनना चाहिए। देश के दायित्व को समझने वाले व्यक्ति में योग्यता होनी चाहिए। उसकी भी एक आचार–संहिता होना चाहिए। जो देश को संभालने का उम्मीदवार है उसे नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण पहले देना चाहिए । धर्म की बागडोर संभालने वाले साधु को प्रशिक्षण पहले दिया जाता है तभी उसे आचार्य बनाया जाता है। आचार–संहिता का पालन करने वाला ही आचार्य होता है। प्रत्येक नेता आचार–संहिता का पालन करने वाला होना चाहिए क्योंकि प्रत्येक नेता या मंत्री एक आचार्य की तरह होता है अतः उसे अपनी इन्द्रियों पर कुछ लगाम लगाना चाहिए कुछ संयमी, अनुशासित, नैतिक सुशील और नीतियों का जानकार होना चाहिए। देश की बागडोर यदि चरित्रहीन भ्रष्ट लोगों के हाथ में होगी तो अरबों खरबों का घोटाला होगा। देश का उत्थान न होकर पतन होगा। इसलिए देश के शासक को जितेंद्रिय, अहिंसक, त्यागी, संयमी, परोपकारी और सदाचारी होना चाहिए।

Code of Conduct and Citizenship

The religions, philosophies and sects in the world do not match each other in their principles. Those principles which do not match should be subordinated for the time being. The principles of equality should be propounded in a democratic country. A uniform code of conduct should be created based on those principles of coordination. If this becomes possible then it would be icing on the cake. All those religions will become one and in politics religion will also become one like milk and sugar.

Correcting the action improves the reaction. Improving the trend improves the outcome. By correcting the image the image is improved. The city improves when the citizens improve. The country improves by improving those who hold the reins of the country.

It is important to hand over the reins of the country. If the responsibility is handed over to a good person then the result will be good, hence in a democratic country a suitable candidate should be chosen. A person who understands the responsibilities of the country should have competence. It should also have a code of conduct. The candidate who wants to take charge of the country should first be given training in moral values. The monk who takes charge of the religion is first given training and only then he is made an Acharya. Only the one who follows the code of conduct is an Acharya. Every leader should follow the code of conduct because every leader or minister is like a teacher, hence he should control his senses, be restrained, disciplined, moral and knowledgeable about policies. If the reins of the country are in the hands of characterless corrupt people then there will be a scam worth billions. The country will not rise but will decline. Therefore, the ruler of the country should be courageous, non-violent, ascetic, self-controlled, charitable and virtuous.

विवाह करना बुरा नही है लेकिन विवाह करके घर के जंजाल में फँसे रह कर मर जाना बुरा है। भौतिकवादी होना बुरा नहीं लेकिन भौतिक वाद में आत्मा और परमात्मा को भूल जाना बुरा है। **सांप्रदायिक होना बुरा नहीं लेकिन सांप्रदायिक का उन्माद बुरा होता है।** धन–संग्रह बुरा नहीं लेकिन धन–संग्रह का अहंकार बुरा होता है। चुनाव लड़ना–लड़ाना बुरा नहीं लेकिन गलत नीति से गलत व्यक्ति को चुनना बुरा होता है।

उम्मीदवारों को पहले प्रशिक्षण और योग्यता का निर्धारण होना चाहिए। लोकतंत्र क्या हैं? लोकतांत्रिक सिद्धांत क्या है ? हमारे देश का संविधान क्या है? जनता के क्या कर्तव्य हैं? देश के राजा और प्रजा के क्या अधिकार और क्या कर्तव्य है इन सब का ज्ञान प्रत्येक नागरिक और नेता को होना चाहिए। प्रशिक्षण के अभाव में नागरिक और नेता दोनों को अपने दायित्व का ज्ञान नहीं हो पा रहा है इसी कारण अन्याय, अत्याचार भ्रष्टाचार, आतंकवाद, नक्सलवाद, जातिवाद और संतवाद आदि फैल रहा है। धर्म निरपेक्षता के साथ जाये या पंथ निरपेक्षता हो।

'समान आचार संहिता आजादी के दिन से प्रारंभ होना चाहिए थी' सबसे बड़े इस लोकतांत्रिक भारत देश में जो वर्तमान समय में भारतीय संविधान चल रहा है वह आजादी के बाद सन 1950 से लागू किया गया था । जब आजादी मिली थी उस समय ही समान आचार संहिता लागू की जानी चाहिए थी लेकिन किन्ही कारणों बस लागू नहीं की जा सकी। इसलिए अनुच्छेद 44 में समान आचार संहिता की जिक्र की गई है लेकिन आजादी के 60 साल बीत जाने के बाद भी वोट की राजनीति और किसी कट्टरवादी पार्टी और समाज विशेष की वजह से वह लागू नहीं की जा सकी, लेकिन देश में बढ़ते सामाजिक, धार्मिक, जातीय और राजनीतिक असंतुलन को देखते हुए एवं कट्टरपंथियों के बढ़ते हुए प्रभाव को देखते हुए समान आचार संहिता को शीघ्र – अतिशीघ्र लागू की जानी चाहिए, तभी देश में आतंकवाद, नफरतवाद, नक्सलवाद, जातिवाद, पंथवाद और भेदभाव इत्यादि को मिटाया जा सकता है। हमारे देश का संविधान किसी परमात्मा का बनाया हुआ नहीं है बल्कि परमात्मा पर आस्था रखकर उन्हीं के मार्ग पर चलने वाले सामाजिक व्यक्तियों द्वारा समाज के हित में बनाया गया है इसलिए राष्ट्र और समाज हित को देखते हुए इसमें सुधार और परिवर्तन संभव है। इसलिए सुधार किया जाना चाहिए।

It is not bad to get married, but it is bad to die after getting married and trapped in the entanglement of the family. It is not bad to be materialistic but it is bad to forget the soul and God in materialism. Being communal is not bad but communal frenzy is bad. Accumulation of wealth is not bad but arrogance of accumulation of wealth is bad. Contesting elections is not bad but electing the wrong person with the wrong policy is bad.

Candidates must first determine their training and qualifications. What is democracy? What is democratic principle? What is the constitution of our country? What are the duties of the public? Every citizen and leader should know what are the rights and duties of the king and the people of the country. Due to lack of training, both citizens and leaders are not aware of their responsibilities, due to which injustice, atrocities, corruption, terrorism, Naxalism, casteism and saintism etc. are spreading.

'The uniform code of conduct should have started from the day of independence' The Indian Constitution which is currently in force in the largest democratic country, India, was implemented after independence in 1950. When independence was achieved, a uniform code of conduct should have been implemented but due to some reasons it could not be implemented. Therefore, uniform code of conduct has been mentioned in Article 44, but even after 60 years of independence, it could not be implemented due to vote politics and any fundamentalist party and society, but due to the growing social, religious, In view of the ethnic and political imbalance and the increasing influence of fundamentalists, a uniform code of conduct should be implemented as soon as possible, only then terrorism, hatred, Naxalism, casteism, sectarianism and discrimination etc. can be eradicated in the country. The Constitution of our country is not made by any God but has been made in the interest of the society by the social persons who have faith in God and follow His path. Therefore, keeping in mind the interest of the nation and society, improvement and change is possible. Therefore improvement should be made.

धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में पंथ निरपेक्षता और जाति निरपेक्षता की कोई बात नहीं हो रही है। चुनाव की वोटिंग के समय जाति की बात पहले की जाती है किस जाति की कितनी वोट है उसी को लेकर उम्मीदवार खड़ा किया जाता है। जातिवाद को लेकर चलने से भी धर्मनिरपेक्षता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। राजनीति में पंथवाद और जातिवाद को लेकर चलने से नफरत और अस्थिरता का माहौल बनता है। जातिवाद एवं पाखंडवाद को लेकर चलने से संप्रदायवाद उत्पन्न होता है और समस्याएं बढ़ती चली जाती हैं।

आचार्य संहिता के अनुसार एक दूसरे पर छींटाकशी, दोषारोपण, आरोप–प्रत्यारोप नहीं लगा सकते हैं लेकिन आज दोष प्रकाशन की राजनीति चल रही है। अपने देश समाज एवं परिवार के गुप्त रहस्य और बुराइयों को दबाना चाहिए लेकिन पांच साल की सत्ता की सीट पाने के लिए लोग गुप्त रहस्य को उद्घाटित कर रहे हैं एवं एक दूसरे पर दोषारोप कर रहे हैं। दोषारोपण करने से जातिवाद नफरत और हिंसा को बढ़ावा मिलता है। देश की गुप्त नीतियां विदेशी लोगों तक पहुंच जाती है फिर वे उसका पूरा फायदा उठाते हैं। जिससे देश की रक्षा राजनीति, और अर्थनीति आदि संकट में पड़ जाती है। नैतिक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति पर दोषारोपण नहीं करता है यहां तक की दोषी व्यक्ति के दोषों का प्रकाशन भी नहीं करता है।

जैन साधु राजनीति नहीं करते परंतु राजनीति का ज्ञान रखते हैं। वे नीति वान होने से चुनाव की नीति निर्धारण का उपदेश दे सकते हैं। नेता न्याय प्रिय, सदाचारी, अहिंसक, देश एवं राष्ट्र रक्षक हो ऐसी भावना कर सकते हैं। लोकतांत्रिक देशों में चुनाव लड़ने वाली पार्टियां और उनके उम्मीदवार कम होना चाहिए। चुनाव के समय जितने अधिक उम्मीदवार चुनाव मैदान में होते हैं देश में उतनी अधिक अस्थिरता बनती है, अखंडता और एकता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा होता है और उठापटक दलबदल की प्रक्रिया अधिक होती है। इन सब से बचने के लिए एक समान आचार्य संहिता बनना चाहिए और कड़क कानून बनना चाहिए। चुनाव की तारीख निश्चित होने पर आचार्य संहिता तो लागू कर दी जाती है लेकिन चुनाव होते ही उसे हटा दिया जाता है चुनाव जैसी आचार्य संहिता शासकीय कार्य को छोड़कर यदि देश में हमेशा बनी रहे तो हमेशा सुख शांति बनी रहेगी।

There is no talk of secularism and caste neutrality in a secular nation. Caste is discussed first during election voting. The candidate is fielded based on how many votes the caste has. Taking issue with casteism also puts a question mark on secularism. Following sectarianism and casteism in politics creates an atmosphere of hatred and instability. By following casteism and hypocrisy, communalism arises and problems keep increasing.

According to Acharya Samhita, one cannot slander, blame or make counter-allegations against each other, but today the politics of blaming is going on. The hidden secrets and evils of our country, society and family should be suppressed, but to get the seat of power for five years, people are revealing the hidden secrets and blaming each other. Placing blame promotes casteism, hatred and violence. The secret policies of the country reach the foreign people and then they take full advantage of it. Due to which the country's security, politics and economics etc. are in trouble. A moral person does not blame anyone else and does not even publish the faults of the accused person.

Jain Sadhus do not do politics but have knowledge of politics. Being a policy maker, one can give advice on determining election policy. Leaders can feel that they are justice-loving, virtuous, non-violent, protectors of the country and the nation. In democratic countries, there should be fewer parties and their candidates contesting elections. The more candidates are in the fray at the time of elections, the more instability is created in the country, the integrity and unity are questioned and the process of defection is more frequent. To avoid all this, a uniform Acharya Samhita should be made and strict laws should be made. The Acharya Samhita is implemented when the election date is fixed but it is removed as soon as the elections take place. If the Acharya Samhita remains in the country forever except for government work, then there will always be peace and happiness.

नागरिक का अर्थ

जिसके माता–पिता जिस राज्य के नागरिक हैं उस राज्य में जन्म लेकर जो रहते हैं, उस राज्य के प्रति श्रद्धा, भक्ति और समर्पण सहित उस देश के नियम, कानून और कर्तव्यों का पालन करने वाले होने से राजनैतिक और सामाजिक अधिकार प्राप्त व्यक्ति को उस राज्य का नागरिक कहते हैं। अर्थात् राज्य के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं मूल अधिकारों को प्राप्त व्यक्ति को नागरिक कहते हैं। संघटित मानव समाज के वे व्यक्ति जो राजकीय और समाजिक नियम–कानून से बंधकर कर्तव्यों का पालन करते हैं, राजा और समाज से प्राप्त राजनैतिक और सामाजिक आदि अधिकारों का पूर्णरूप से लाभ उठाते हैं, उसे नागरिक कहते हैं।

इस परिभाषा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी देश का नागरिक है। लेकिन एक ही व्यक्ति एक साथ अनेक देशों का नागरिक नहीं हो सकता है। एक देश की नागरिकता छोड़कर दूसरे देश का नागरिक हो सकता हैं। जिस देश में जन्म लेकर अथवा जिस देश में कुछ दिन रहकर उसने वहाँ की नागरिकता प्राप्त की हो, वह उस देश का नागरिक हो जाता है। यदि नागरिकता न ली हो तो वह विदेशी, प्रवासी, व्यापारी, या पर्यटक संज्ञा को प्राप्त होता है।

नागरिक के भेद

मूलतः नागरिक स्वदेशी और विदेशी ये दो प्रकार के होते है।

स्वदेशी नागरिक- जिन्हें राज्य और समाज की ओर राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि सभी अधिकार प्राप्त हो वे देशी नागरिक कहलाते है। देशी नागरिक भी अनेक प्रकार के होते है जैसे

1. नागरिकता प्राप्त नागरिक – जो पहले किसी दूसरे देश में नागरिक थे लेकिन किसी कारणवश उस देश को छोड़कर किसी दूसरे देश में नागरिकता प्राप्त करके सामाजिक और राजनैतिक आदि सभी अधिकार प्राप्त कर लेते है उन्हें नागरिकता प्राप्त नागरिक कहते है।

Meaning of Citizen

A person who gets political and social rights by virtue of being born and living in the state of which his parents are citizens and having faith, devotion and dedication towards that state and following the rules, laws and duties of that country. Called a citizen of the state. That is, a person who has political, social, economic, religious and fundamental rights of the state is called a citizen. Those people of the organized human society who follow the duties bound by the political and social rules and regulations and take full advantage of the political and social rights received from the king and the society are called citizens.

According to this definition, every person is a citizen of some country. But the same person cannot be a citizen of several countries simultaneously. One can give up citizenship of one country and become a citizen of another country. A person is a citizen of the country in which he has acquired citizenship by being born or by staying in that country for some time. If one has not taken citizenship then he is called a foreigner, migrant, businessman or tourist.

Civil Rights

Basically there are two types of citizens, indigenous and foreign.

Native citizens – Those who have all the rights like political, social, economic, religious etc. towards the state and society are called native citizens. There are many types of native citizens like

1. Citizens having citizenship - Those who were earlier citizens of some other country but due to some reason leave that country and acquire citizenship in another country and acquire all the social and political rights etc., they are called citizens having citizenship.

2. मताधिकार प्राप्त नागरिक – जिन्हें सामाजिक और राजनैतिक आदि सभी अधिकार प्राप्त हो ऐसे 18 वर्ष से अधिक उम्र के योग्य व्यक्ति को मताधिकार प्राप्त नागरिक कहते है।

3. मताधिकार रहित नागरिक – 18 वर्ष से कम उम्र की वे बालक–बालिकाएँ जिन्हें सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनैतिक सभी अधिकार प्राप्त होते है, लेकिन जो उनका उपभोग नहीं कर पाते वे मताधिकार रहित नागरिक कहलाते है। इसमें वे मनुष्य भी आते है जो देशद्रोही, दिवालिया, पागल, विदेशी शरणार्थी, आतंकी और प्रवासी है।

अपने देश के देशवासी नागरिक को अपने देश के प्रति पूर्ण निष्ठा, भक्ति, समर्पण और कर्तव्य निष्ठ होना चाहिए। उन्हें देश के नियम–कानून का पालन करना चाहिए।

जो विद्यार्थी दूसरे देश से अध्धयन करने, देशाटन (पर्यटन) करने, अथवा व्यवसाय करने कुछ समय की सीमा लेकर आते है और उसी समय सीमा के अंदर अपने स्वदेश लौट जाते है, उन्हें विदेशी नागरिक कहते है। अतः स्वदेशी नागरिक वे जिनको देश की नागरिकता प्राप्त है। राजनैतिक, सामाजिक आदि अधिकार प्राप्त है, जो देश भक्त है, कर्तव्यनिष्ठ है जिन्हें चल–अचल संम्पत्ति खरीदने और बेचने का अधिकार है, जिन्हें बिना कारण देश से निर्वासित नहीं किया जा सकता सदैव देश की भूमि पर रहने का अधिकार है सेना, पुलिस, सुरक्षा आदि के पदों पर भर्ती होने का चुनाव में मत देने और लेने का अधिकार है और मंत्री सांसद आदि पदों को प्राप्त करने का अधिकार है।

नागरिकता समाप्ति के कारण – जब कोई नागरिक बिना सूचना के कई वर्षों तक देश में अनुपस्थित रहता है अथवा कोई सैनिक या व्यक्ति राज्य छोड़कर भाग जाता है अथवा देश द्रोही हो जाता है। देश के प्रति आतंक आदि फैलाने का गंभीर अपराध करता है अथवा कोई स्त्री दूसरे देश के नागरिक से विवाह रचा लेती है तो उसकी नागरिकता समाप्त कर देना चाहिए। प्रत्येक के मूल अधिकार अलग–अलग होते है। जिस देश का जो नागरिक होता है उस देश के नियम कानून का पालन करना उस देश के नागरिकों का कर्तव्य होता हैं यदि नहीं करते तो नागरिकता समाप्त की जा सकती है।

2. Enfranchised citizens: A person above 18 years of age who has all the social and political rights is called an eligible citizen.

3. Citizens without voting rights: Those boys and girls below the age of 18 years who get all the social, economic and political rights, but who are unable to enjoy them, are called citizens without voting rights. This also includes those people who are traitors, bankrupts, madmen, foreign refugees, terrorists and migrants.

A citizen of his country should have full loyalty, devotion, dedication and duty towards his country. They should follow the rules and laws of the country.

Students who come from another country for study, tourism, or business for a certain period of time and return to their home country within the same time limit, are called foreign citizens. Therefore, indigenous citizens are those who have citizenship of the country. Those who are patriotic and dutiful, who have the right to buy and sell movable and immovable property, who cannot be deported from the country without any reason, who are patriotic and dutiful, who cannot be deported from the country without any reason, have the right to live on the country's land forever, the army, police, Have the right to vote and vote in elections, to be recruited on security posts etc. and have the right to get the posts of Minister, MP etc.

Due to termination of citizenship, a citizen remains absent from the country for many years without any information or a soldier or person flees the state or becomes a traitor. If a woman commits a serious crime of spreading terror etc. against the country or if a woman marries a citizen of another country, then her citizenship should be revoked. Everyone's fundamental rights are different. It is the duty of the citizens of the country of which they are citizens to follow the rules and laws of that country. If they do not do so, their citizenship can be revoked.

आदर्श नागरिक

जो मानवीय गुणों से सहित हो, अपने अधिकार और कर्त्तव्यों का समीचीन ज्ञान रखकर पालन करता हो, उचित–अनुचित, न्याय–अन्याय को समझने की बुद्धि रखता हो, सदाचारी, स्वस्थ, आत्म संयमी, उत्साहित, कलुशित भावनाओं पर नियंत्रक, जागरूक, विवेक–बुद्धि से सहित, व्यवहार कुशल, नैतिक, अर्थ पुरुषार्थी, मितव्यायी, परोपकारी, देश के नियम कानून का पालक, पक्ष–पात से रहित और देश भक्त आदि गुणों से सहित हो वही आदर्श नागरिक कहलाता है।

भारतीय नागरिकता

जब भारत का सन् 1949 में संविधान बना। तब संविधान में नागरिकता अधिकार का एक खण्ड अलग बनाया गया। जिसमें 5 से लेकर 11 तक कुल 7 अनुच्छेद प्रस्तावित कर रखें गये। जो इस प्रकार है– (1) तारीख 26 जनवरी 1950 के दिन से संविधान लागू होने के समय से जिसका जन्म भारत में हुआ है। (2) जिनके माता–पिता का जन्म भारत में हुआ है। (3) जो संविधान लागू होने से 5 वर्ष पूर्व से भारत का नागरिक बनकर रह चुका हो। (4) भारत और पाकिस्तान के विभाजन होने पर 19 जुलाई 1948 के पहले भारत में आकर रहने लगा हो और भारत सरकार द्वारा जारी आवेदन पत्र भरकर नाम रजिर्स्टड करा लिया हो। (5) विदेश में रहने वाले विदेशी या भारतीय व्यक्तियों भारत शासन अधिनियम 1935 में परिभाषित सभी शर्तों को पूर्ण किया हो। ऐसे सभी व्यक्ति भारतीय नागरिकता के अधिकार स्वतंत्रता मिलने के बाद माने गये है। लेकिन संविधान लागू होने के बाद सन् 1955 में नागरिकता अधिनियम की कानून व्यवस्था में कुछ परिवर्तन किया गया। उसके बाद सन् 1986, सन् 1992, 2003, 2005 में भारती नागरिकता अधिनियम में कुछ संशोधन पुनः किया गया।

समान नागरिक संहिता

लोकतांत्रिक देशों में समान नागरिक संहिता होनी चाहिए तभी लोकतांत्रिक सिद्धांत का मतलब सिद्ध होता है। लोकतांत्रिक सिद्धांत समान अधिकार के लिए ही बनाएँ जाते हैं फिर इसमें राजनीति क्यों भारत देश के गोवा राज्य में समान नागरिक संहिता चल रही है इसलिए हर राज्य मे सत्ता में आने वाली पार्टी समान नागरिक संहिता का निर्णय लेना चाहिए।

Ideal Citizen

One who is full of human qualities, follows one's rights and duties with proper knowledge, has the intelligence to understand right-wrong, justice-injustice, virtuous, healthy, self-controlled, excited, controlled on tainted emotions, aware, discriminating. -The one who is intelligent, well mannered, moral, economical, thrifty, philanthropic, upholding the rules and regulations of the country, free from bias and patriotic etc. is called an ideal citizen.

Indian citizenship

When the Constitution of India was made in 1949. Then a separate section of citizenship rights was created in the Constitution. In which a total of 7 articles from 5 to 11 were proposed. Which are as follows - (1) Who is born in India from the date the Constitution came into force on 26 January 1950. (2) Whose parents were born in India. (3) Who has been a citizen of India for 5 years before the coming into force of the Constitution. (4) Must have come to India before July 19, 1948 after the partition of India and Pakistan and have got the name registered by filling the application form issued by the Government of India. (5) Foreigners or Indian persons living abroad must have fulfilled all the conditions defined in the Government of India Act 1935. All such persons have been considered to have the rights of Indian citizenship after independence. But after the implementation of the Constitution, some changes were made in the legal system of the Citizenship Act in 1955. After that, some amendments were made in the Indian Citizenship Act in the years 1986, 1992, 2003 and 2005.

Uniform Civil Code

There should be uniform civil code in democratic countries only then the meaning of democratic principle is proved. Democratic principles are made only for equal rights, then why politics in it?

Uniform Civil Code is running in the state of Goa of the country, hence the party coming to power in every state should take the decision of Uniform Civil Code. Now UCC is adopted by Uttarakhand also.

इसमें किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। यह अकेले गोवा में ही नहीं बल्कि पूरे देश में ही लागू होना चाहिए। केंद्र सरकार भी इस ओर अपने कदम बढ़ाए है तथा उत्तराखण्ड मे भी इसे लागू कर दिया जाय तथा लगता है कि कुछ वर्षों में इसे सभी राज्यों में लागू कर दिया जाए।

सदियों पहले भारत में घूंघट की एवं अरब देशों में हिजाब, नकाब, बुर्का की जरूरत रही होगी लेकिन आज आधुनिक युगीन परिधान में इसका कोई औचित्य नहीं रह गया है। जब स्त्रियाँ घर के बाहर नौकरी पेशा के लिए जाने लगी है, हाई क्लास की शिक्षा लेने लगी है, खेलकूद में और नृत्य गान में भाग लेने लगी है तब उन सब पुरानी परंपराओं का कोई औचित्य नहीं रह जाता है। जब डॉक्टर पुलिस, मिलिट्री ड्राइवर आदि की ड्रेस एकसी सी है तो स्कूल के विद्यार्थियों की ड्रेस एक ही होना चाहिए इसमें बहस करने की कोई बात ही नहीं रह जाती है। इसी प्रकार जब एक समान मौलिक अधिकार, राशन पानी दिया जा रहा हैं तो फिर विद्यालयों में समानता होनी चाहिए। घर परिवार एवं धार्मिक स्थलों में, धार्मिक क्रियाओं में जो जैसी पोशाक पहने वो वैसी पहन सकते हैं इसमे कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए।

No one should have any objection to this. This should be implemented the entire country. The Central Government should also take further steps in this regard, and it seems that GoI is constantly working on this.

Centuries ago, there might have been a need for veil in India and hijab, niqab, burqa in Arab countries, but today there is no need for it in modern attire. When women have started going outside the home for employment, have started taking high class education, have started participating in sports and dance and music, then all those old traditions no longer have any relevance. When the dress of doctors, police, military drivers etc. is the same then the dress of school students should be the same, there is no point of debate in this. Similarly, when equal fundamental rights and ration water are being given, then there should be equality in schools. There should be no restriction on the number of people who can wear whatever dress they want at home, in religious places or in religious activities.

खण्ड-3

जैन संविधान अधिकार और आध्यात्म

SECTION-3

Jain Constitutional Rights and Spirituality

जैन संविधान की ऐतिहासिक भूमिका

जैन कानून के निर्माता अंतिम चौदहवें मनु महाराजा नाभिराय के पुत्र ऋषभ देव थे। उन्हीं के द्वारा युग के आदि में जब कल्पवृक्षों से चलने वाली आजीविका समाप्त हो गई, वनचर प्राणी हिंसक हो गये, मनुष्यों के उदर पूर्ति व तन ढकने के लिए वस्त्र आदि की समस्या उत्पन्न हो गई तब जनता ने महाराजा नाभिराय के पास जाकर अपनी मूलभूत समस्या जीने, खाने–पीने, रहने और संतान की सुरक्षा आदि की समस्या रखी। तब उन्होंने इन समस्याओं को अपने पुत्र प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ स्वामी के सामने रखने को कहा। आदिनाथ स्वामी ने मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान के बल से न्यायनीति निर्धारित की और सामाजिक, पारिवारिक, प्राकृतिक और व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान असि–मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या का उपदेश देकर समाधान किया। उनका उपदेश ही जैन कानून के रूप में स्वीकार किया गया। जिसे अन्तिम श्रुत केवली श्री भद्रबाहु स्वामी ने भद्रबाहु संहिता में लिपी बद्ध किया। उसके पश्चात् जिनसेन आचार्य महाराज ने महापुराण में लिपि बद्ध किया। उसके पश्चात् अमितगति श्रावकाचार, इंद्रनन्दी जिनसहिंता, त्रिवर्णाचार आदि अनेक ग्रंथों में जैन कानून और आचार संहिता को लिपि बद्ध किया। उन्हीं के अनुशरण करते हुए मैने यहाँ लिखा है।

सामाजिक आवश्यकताओं, भौतिकता का विकास, धार्मिक विसंगतियों एवं राजतंत्र के परिवर्तन से समय–समय पर आदिनाथ स्वामी के द्वारा बनाये गये नीति न्यायों में परिवर्तन होता गया। वर्तमान में जो यहाँ जैन कानून की बात कह रहा हूँ वह हमारे आदिनाथ स्वामी द्वारा प्रतिपादित और जैनाचार्यों द्वारा लिपिबद्ध किये गये कानून पर ही आधारित है।

इस जैन कानून, जैन आचार संहिता और नागरिक संहिता को बाहरी आक्रमण और दुराचारी लोगों के द्वारा नष्ट किया गया। फिर भी वर्तमान में यह जीवित है लेकिन इसे न्यायालयों में प्रविष्ट नहीं किया गया। इसके पीछे अन्य और भी अनेक कारण रहे हैं उनमें से कुछ यहाँ दृष्टव्य हैं जिसे बेरिस्टर श्री चम्पतराय जैन ने जैन लॉ नाम से रचित पुस्तक में लिपिबद्ध किया –

Historical role of Jain Constitution

The creator of Jain law was Rishabh Dev, son of Maharaja Nabhiraya, the last fourteenth Manu. It was through him, at the beginning of the era, when the livelihood based on Kalpavrikshas came to an end, the wild animals became violent, the problem of human sustenance and clothes to cover the body etc. arose, then the people went to Maharaja Nabhiraya and solved their basic problem. The problems of living, eating, living and safety of children etc. were raised. Then he asked to put these problems before his son, the first Tirthankara Adinath Swami. Adinath Swami determined the judicial policy with the power of Matigyan, Shrutgyan, Avadhigyan and solved social, family, natural and personal problems by preaching Asi-Masi, agriculture, crafts, commerce and education. His teachings were accepted as Jain law. The last verse of which was written down by Shri Bhadrabahu Swami in Bhadrabahu Samhita. After that, Jinsen Acharya Maharaj wrote the script in Mahapuran. After that, Jain law and code of conduct were written down in many texts like Amitgati Shravakachar, Indranandi Jinasahinta, Trivarnachar etc. Following them, I have written here.

Due to social needs, development of materialism, religious discrepancies and change in monarchy, the policy decisions made by Adinath Swami changed from time to time. What I am saying about Jain law at present is based on the law propounded by our Adinath Swami and written down by Jainacharyas.

This Jain law, Jain code of conduct and civil code were destroyed by external invasions and evil people. Still it is alive at present but it has not been entered in the courts. There are many other reasons behind this, some of them are visible here, which were written by Barrister Shri Champat Rai Jain in the book written by the name Jain Law -

जब अंग्रेज हमारे देश में आये तब उन्होंने जैनियों के शास्त्रों को न्यायालयों में पेश करने को कहा लेकिन जैनियों ने अपने धर्म शास्त्रों को पेश नहीं किया क्योंकि जैन धर्म के अनुसार उन शास्त्रों की अविनय होने का डर था। लोग पन्ना पलटते समय थूँक लगाते हैं। पैरों के नीचे कहीं पर रख देते हैं। जब बार–बार निवेदन करने पर भी अंग्रेजों को जैन धर्म के न्याय कानून रीति रिवाज के ग्रंथ नहीं दिये गए तो उन्होंने धारणा बना ली कि जैनियों के पास कोई निर्णायक नीति परख न्याय के ग्रंथ नहीं हैं। लेकिन हिन्दुओं ने, ईसाईयों ने, मुस्लमानों ने अपने ग्रंथ दे दिये अतः जैन समाज को अंग्रेजों के शासन काल में हिन्दू कानून में सम्बद्धकर दिया गया। यह जैन समाज की उस समय की सबसे बड़ी भूल (गलती) थी। भारत की आजादी के पश्चात भी जैन धर्मावलम्बियों पर हिन्दु विवाह अधिनियम 1955 के अन्य कानून लागू होते हैं। देश में अब समान नागरिक संहिता की आवाज उठ रही है।

यदि जैनियों ने अपने नीति, न्याय, परख के धर्म ग्रंथ अंग्रेजों को दे दिये होते तो आज जैनियों का कानून पूरे देश में अथवा जैनियों के लिए पर्सनल लॉ के रूप में चल रहा होता। जैनी अल्पसंख्यक, अलग धर्म और अलग दर्शन वाले हैं ऐसा आज सरकार के सामने प्रस्तुत करने की या माँग रखने की जरूरत नहीं पड़ती। द्रव्य, क्षेत्र, काल के अनुसार उस समय के वरिष्ठ लोगों को ध्यान रख कर निर्णय लेने की जरूरत थी। आज हमें यह बताने की जरूरत नहीं होती कि हमारा जैन धर्म कितना पुराना श्रेष्ठ नीति, न्याय, विज्ञान संगत है।

जब सन् 1921 में डॉ. हरि सिंह गौर द्वारा हिन्दू कोड प्रकाशित किया गया उसमें जैनियों को हिन्दू धर्म अनुयाई लिखा गया कुछ जैनियों ने इसका विरोध भी किया लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। अनेक मुकद्मे जैन रीति–रिवाज से विरूद्ध फैसले भी लिये गये। जब कोई नियम कानून बन जाता है तब उसे तोड़ना अथवा गलत प्रमाणित करना अत्याधिक कठिन कार्य हो जाता है। स्वतंत्र जैन कानून लागू न होने से हमें और भी अनेक प्रकार की हानियाँ तब से अभी तक हमें उठानी पड़ रही हैं।

When the British came to our country, they asked to present the Jain scriptures in the courts but the Jains did not present their religious scriptures because there was a fear that those scriptures would not be respected in the court as per Jainism. People spit while turning the page. Keep it somewhere under the feet. When the British were not given the texts of justice, law and customs of Jainism despite repeated requests, they formed the impression that Jains do not have any texts of conclusive policy and justice. But Hindus, Christians and Muslims gave their scriptures, hence the Jain community was incorporated into Hindu law during the British rule. This was the biggest mistake of the Jain society at that time. Even after the independence of India, other laws of Hindu Marriage Act 1955 are applicable on the followers of Jain religion. Now the voice for Uniform Civil Code is being raised in the country.

If the Jains had given their religious texts of policy, justice and wisdom to the British, then today the Jain law would have been in force in the entire country or as a personal law for the Jains. Today, there is no need to present or make demands to the government that the Jains are a minority, have a different religion and a different philosophy. The senior people of that time needed to take decisions carefully according to the material, area and time. Today there is no need to tell us how old our Jain religion is, which is compatible with the best policy, justice and science.

When the Hindu Code was published by Dr. Hari Singh Gaur in 1921, Jains were written as followers of Hindu religion. Some Jains also opposed it but did not get any success. In many cases, decisions were taken against Jain customs. When a rule becomes a law then it becomes very difficult to break it or prove it wrong. Due to non-implementation of Swatantra Jain Law, we are facing many other types of losses from then till now.

वर्तमान में अधिकांश व्यक्तियों की धारणा बना गई है कि जैन धर्म, हिन्दू धर्म की शाखा है इसलिये हिन्दू रीति रिवाज के अनुसार सभी विवाह आदि क्रिया कलाप होते हैं कुछ लोग जैनियों को वैष्णव धर्म विमुख हिन्दू मानने लगे हैं जो कि सर्वथा गलत है। जैन धर्म का श्रोत हिन्दू धर्म किसी प्रकार से नहीं हो सकता है। जैन धर्म पूर्णतः वीतराग विज्ञान से युक्त है और हिन्दू धर्म राग–रंगमय भक्ति अलंकार से युक्त है।

जब एक धर्म दूसरे धर्म से पृथक होकर निकलता है तब उनके सिद्धांत प्रायः मिलते–जुलते एक से होते हैं। अंतर कुछ क्रिया कलापों को लेकर होता है जबकि जैन और हिन्दू धर्म के सिद्धांतों में प्रायः सभी जगह भिन्नता पाई जाती है। जैसे जैन धर्म ईश्वर कृतित्व को स्वीकार नहीं करता एक ब्रम्हा या ईश्वर को नहीं मानता प्रत्येक प्राणी अपने–अपने कर्म के अनुसार फल पाते हैं। परमात्मा हमें कर्मों का फल या दण्ड नहीं देता एक बार मुक्त हो जाने पर पुनः संसार में अवतार नहीं होता है। परमात्मा भूख प्यास और काम वासना आदि से ग्रसित नहीं होता है इत्यादि अनेक सिद्धांत जो जैन धर्म के हैं वे हिन्दू धर्म में मान्य नहीं हैं और हिन्दू धर्म के जैन धर्म में मान्य नहीं हैं अतः दोनों धर्म पूर्णतः स्वतंत्र हैं न हिन्दू धर्मानुयायी जैनियों के धर्म ग्रंथों को मान्यता देते हैं और न जैन धर्मानुयायी हिन्दूओं के ग्रंथों को मान्यता देते हैं। यदि जैन और हिन्दूओं में कोई समानता पाई जाती है तो केवल सामाजिक क्रिया कलापों में पाई जाती है न कि धार्मिक क्रिया कलापों में। जैसे वैवाहिक संबंध हिन्दू और जैनियों के कुछ हद तक समान होते हैं। इतने मात्र से जैन और हिन्दू एक नहीं हो जाते यदि इस अपेक्षा से एक कहेंगे तो फिर बौद्ध और ईसाईयों में भी सामाजिक क्रिया कलाप एक से पाये जाते हैं। अतः उन्हें भी हिन्दू धर्म में गर्भित करना पड़ेगा जबकि ऐसा नहीं है। इस प्रकार की समानता राजाओं के अनुसार देखा देखी और आज्ञा से एक–दूसरी जाति में समानता को लेकर होने लग जाती है। जो रीति–रिवाज के रूप में प्रचलित होकर परम्परा अनुसार चलने लगती है। अनभिज्ञ लोग उसे अपना धर्म मानने लग जाते हैं। जैन धर्म के साथ भी यही हुआ है। यदि अंग्रेजों को जैनियों ने अपने न्याय नीति संगत धर्म शास्त्र दे दिये होते तो आज हमें अल्पसंख्यक आरक्षण और धर्म को पृथक सिद्ध करने की मांग नहीं करनी पड़ती उसी समय दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता।

At present, most of the people have formed the impression that Jainism is a branch of Hindu religion, hence all marriages etc. activities are conducted according to Hindu customs. Some people have started considering Jains as Hindus who are alien to Vaishnav religion, which is completely wrong. Hinduism cannot be the source of Jainism in any way. Jain religion is completely full of Veetarag science and Hindu religion is full of raga-coloured devotional ornaments.

When one religion emerged separately from another religion, their principles were often similar. The difference is regarding some activities whereas the principles of Jainism and Hinduism differ almost everywhere. Just like Jainism does not accept the creation of God, it does not believe in one Brahma or God, every living being gets results according to his/her deeds. God does not give us the fruits or punishment of our deeds. Once we are liberated, we do not reincarnate in the world again. God does not suffer from hunger, thirst, lust, etc. Many of the principles of Jainism are not valid in Hindu religion and are not valid in Jainism of Hindu religion, hence both the religions are completely independent and neither are the religions of Hindu followers or Jains. Neither do they recognize the scriptures nor the followers of Jain religion recognize the scriptures of Hindus. If any similarity is found between Jains and Hindus then it is found only in social activities and not in religious activities like marital relations are similar to some extent between Hindus and Jains. Jains and Hindus do not become one just because of this expectation, then similar social activities are found in Buddhists and Christians also. Therefore, they will also have to be converted into Hindu religion whereas this is not the case. This type of equality starts happening as per the discretion and orders of the kings regarding equality between castes. Which becomes prevalent in the form of customs and starts following tradition. Ignorant people start considering it as their religion. Same thing has happened with Jainism also. If the Jains had given the religious scriptures consistent with their justice policy to the British, then today we would have got minority reservation and separation of religions. There is no need to demand proof, at the same time milk becomes milk and water becomes water.

जैन कानून और हिन्दू कानून में विशेष अंतर यह है कि हिन्दू कानून में सम्मिलित (कुल में) संयुक्त सम्पत्ति और उत्तरजीविता (Survivorship) का नियम है। जबकि जैन कानून में संयुक्त अभिधृति (Joint Tenancy) का नियम है अर्थात् ज्वाइन्ट स्टेट में यदि कोई सहभागी मर जाये तो उसके उत्तराधिकारी जायदाद के लेनदार नहीं होते हैं, अवशिष्ट भागियों की जायदाद रहती है, और हिस्से का बँटवारे के समय तक नहीं हो सकता है परंतु संयुक्त अभिधृति (Joint Tenancy) सर्वथा नहीं होता।

हिन्दू लॉ में खानदान का कोई एक भाई मरण को प्राप्त हो जाए तो उसके मृत भाई की विधवा पत्नि को जमीन जायदाद की हिस्सेदारी की हैसीयत नहीं रखती सिर्फ वह भोजन, वस्त्र रहने की पात्रता रखती है। लेकिन जैन कानून में यह मृत भाई की विधवा पत्नि हिस्सेदारी की अधिकारणी भी होती है। यह जैन कानून वर्तमान में शासन द्वारा भारतीय संविधान में भी यह कानून सभी के लिए लागू कर दिया गया है।

The special difference between Jain law and Hindu law is that in Hindu law there is a rule of joint property and survivorship. Whereas in Jain law there is a rule of joint tenancy, that is, if a partner dies in a joint state, his heirs are not creditors of the property, the property of the residuary partners remains, and the shares cannot be divided at the time of But joint tenancy does not happen at all.

According to Hindu law, if one of the brothers of the family dies, then the widow of his deceased brother does not have the right to share in the land and property, only she is entitled to food and clothing. But in Jain law, the widow of the deceased brother is also entitled to the share in property. At present, this Jain law has been implemented by the government for all in the Indian Constitution.

पिता पुत्र विभागाधिकार

'पिता क्या हैं' संतान के जन्मदाता को पिता कहते हैं। पिता का कर्तव्य बनता है कि वह अपनी संतान को विनय, विवेक, संस्कार, सभ्यता, लोक व्यवहार इत्यादि का ज्ञान देकर अपना अनुभव प्रदान करें और सच्चा इंसान बना कर भगवान बनाने के रास्ते पर चलने को प्रेरित करें। पिता स्वयं नियम कानून का पालन करें और पुत्र को नियम कानून का पालन कराए। संतान का लालन पालन प्रेम से सत्य निष्ठ हो कर करें। संतान को श्रद्धा ज्ञान चरित्र और न्याय नीतिज्ञ बनाएं। पिता अपनी संतान को गलती होने पर दंडित करें लेकिन अनुचित और गलत व्यवहार ना करें । पिता अपनी संतान के सामने गलत आचरण ना करें। जो पिता ऐसा करता है वही सही मायने में पिता है। जो माता–पिता अपने अपनी संतान को ज्ञान विद्या आदि नहीं देते उनके संबंध में नीति कारों ने लिखा है 'माता शत्रु, पिता बैरी येन बालो न पाठितः। न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये बको यथा। **''पिता की कुछ विशेषताएं हैं** जैसे–' पिता पूरे परिवार की उम्मीद है।

पिता हो तो लगती अच्छी नींद है।
पिता सभी आशाओं की किरण है।
पिता ही बच्चों के लिए उत्तम शरण है ।
पिता एक जमींदार है।
पिता एक चौकीदार हैं।
पिता जिसके पास है उसके लिए।
खुला स्वर्ग और मोक्ष का द्वार है।
पिता परिवार की हिम्मत है।
पिता सब बच्चों की किस्मत है।
पिता दिल का विश्वास है।
पिता बच्चों के लिए श्वास है।
पिता बाहर से कठोर भीतर से नर्म होता है।
पिता का कर्म ही सच्चा धर्म होता है।

Father Son Jurisdiction

'What is a father? The one who gives birth to a child is called a father. It is the duty of the father to impart his experience to his child by giving him the knowledge of modesty, prudence, values, civilization, public behavior etc. and to inspire him to walk on the path of becoming a God by making him a true human being. The father himself should follow the rules and regulations and should make his son follow the rules and regulations. Raise your children with love and truthfulness. Develop children with faith, knowledge, character and justice. Father should punish his child if he commits a mistake but should not behave inappropriately or wrongly. Father should not misbehave in front of his children. The father who does this is a father in the true sense. Niti Karan has written in relation to those parents who do not impart knowledge etc. to their children, 'Mother is enemy, father is enemy and children are not taught. Be like a swan in an unbecoming gathering. "There are some characteristics of a father like- 'Father is the hope of the entire family.

If you are a father then it seems like you sleep well.

Father is the ray of all hope.

Father is the best refuge for children.

Father is a landlord.

Father is a watchman.

For the one who has a father.

The door to heaven and salvation is open.

Father is the courage of the family.

Father is the destiny of all children.

Father is the faith of the heart.

Father is breath for children.

The father is hard on the outside and soft on the inside.

Father's work is the true religion.

पिता संघर्ष की आंधियों में हौसले की दीवार है।
पिता परेशानियों से लड़ने की धारदार तलवार है।
पिता बचपन में खुश करने के लिए खिलौना है।
पिता का पेट ही बच्चों को सोने के लिए बिछौना है।
पिता जिम्मेदारियों से लदे रथ का सारथी है।
पिता बराबरी का हक दिलाने वाला महारथी है।
पिता सपनों को पूरा करने वाला यजमान है।
पिता से ही तो होती परिवार की होती पहचान है।

पिता–पुत्र का संबंध अनादिकालीन है। पिता को पुत्र प्रिय होता है। पुत्र एक चेतन रत्न है, पुत्र आज्ञाकारी और गुणवान होना चाहिए। पिता को पुत्र से हमेशा स्नेह रखना चाहिए। पिता के लिए पुत्र को गुणवान बनाने के लिए शिक्षा और संस्कार देना चाहिए। दोनों के अपने–अपने अधिकार होते है।

पैत्रिक सम्पत्ति पर पुत्र का बराबर का अधिकार होता है। लेकिन पुत्र द्वारा अर्जित की गई सम्पत्ति पर पिता एवं अन्य भाईयों का अधिकार विवाह के उपरांत नहीं होता है। पिता की आज्ञा का पालन करना पुत्र का धर्म है और कर्तव्य भी। जो पुत्र पिता की आज्ञा का पालन नहीं करता है और स्वयं ही अलग हो जाता है उसे पिता की सम्पत्ति का अधिकार नहीं होना चाहिये। इसी प्रकार जो पुत्री माता–पिता की आज्ञा के बिना विवाह संबंध करती है, उसे भी माता–पिता की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होना चाहिये। यदि पुत्र अधर्मी है, चरित्रहीन (व्यसनी) पागल, नपुंसक है तो उसे पिता की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होना चाहिये।

लोक में अनेक प्रकार के पुत्र हैं जैसे 1. निज का जाया पुत्र (औरस) 2. दत्तक पुत्र (गोद लिया) 3. क्रीत पुत्र 4. बहिन का पुत्र 5. भाई का पुत्र 6. साले का पुत्र 7. नौकर का पुत्र 8. पड़ोसी का पुत्र 9. दासी का पुत्र इत्यादि अनेक पुत्र माने गये हैं। लेकिन कानून के अनुसार निज का जाया पुत्र, क्रीत पुत्र और दत्तक पुत्र ही पुत्र माने गये हैं। इन्हीं को पिण्ड दान (दाह संस्कार) करने वाला और वंश चलाने वाला माना गया है। यदि किसी संतान को कोई गुप्त रीति से फेंक कर चला जाता है और कोई उसे सार्वजनिक रूप से अपना पुत्र मान कर लालन–पालन करता है। तो वह भी औसर पुत्र की तरह होता है।

Father is a wall of courage in the storms of struggle.

Father is a sharp sword to fight problems.

Father is a toy to please in childhood.

Father's stomach is the bed for children to sleep on.

The father is the charioteer of the chariot laden with responsibilities.

Father is a master who provides equal rights.

Father is the host who fulfills dreams.

The identity of the family comes from the father only.

The relationship between father and son is eternal. Father loves his son. Son is a conscious gem, son should be obedient and virtuous. A father should always have affection for his son. For the father, education and values should be given to the son to make him virtuous. Both have their own rights.

The son has equal rights on the ancestral property. But the father and other brothers do not have the right over the property acquired by the son after marriage. It is the son's duty and duty to obey his father's orders. A son who does not obey his father's orders and goes away on his own should not have the right to his father's property. Similarly, a daughter who marries without the permission of her parents should also not have any right on her parents' property. If the son is unrighteous, characterless (addicted), mad and impotent, then he should not have any right on his father's property.

There are many types of sons in this world like 1. Own son (Auras) 2. Adopted son (Adopted) 3. Creet son 4. Sister's son 5. Brother's son 6. Brother-in-law's son 7. Servant's son 8. Neighbor's son, 9. Maid's son, etc. are considered to be many sons. But according to law, only one's own son, adopted son and adopted son are considered as sons. He is considered to be the one performing the Pinda Daan (cremation) and running the dynasty. If someone secretly abandons a child and someone publicly considers him as his own son and brings him up. So he is also like the second son.

यदि किसी पिता के तीन–चार पुत्र हैं और उन पुत्रों के किसी एक का पुत्र हैं बाकि पुत्र रहित है तो वह एक पुत्र ही सभी भाइयों का पुत्र कहलाएगा। लेकिन जिनके पास पुत्र नहीं है यदि वह किसी की संतान को गोद लेना चाहे तो ले सकता है गोद लेने के बाद वह भी पुत्र माना जायेगा। ऐसा भद्रबाहु संहिता अध्याय 38 में कहा गया है। यही बात हिन्दू लॉ में भी मनुस्मृति के अध्याय 9 सूत्र 182 में कही गई है। गौर का हिन्दू कोड द्वितीयावृत्ति पृ. 324 में कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति बिना गोद लिये मर जाए तो दूसरे भाई का पुत्र उस मृतक के पुत्र की भांति उस संपत्ति का अधिकारी होगा।

भद्रबाहु संहिता अध्याय 39 में कहा है कि यदि किसी पुरूष की एक से अधिक स्त्रियाँ (पत्नियॉ) हों और उनमें से किसी एक के पुत्र हो तो वे सब स्त्रियाँ पुत्र वधु समझी जायेगी। इसी के अध्याय 40 में कहा है कि उन अन्य स्त्रियों को गोद लेने का अधिकार नहीं होगा क्योंकि स्त्रियाँ अपने निमित्त से संतान को गोद नहीं ले सकती। केवल अपने मृत पति के लिये ही ले सकती है और केवल उस दशा में जबकि वह मृतक पति पुत्र विहीन हो वह एक स्त्री का पुत्र ही उस सब संपत्ति का अधिकारी होगा।

गोद लेने का अधिकारी कौन?

भद्रबाहु संहिता अध्याय 41 में कहा है कि जिस दंपत्ति के निज का जाया (औरस) पुत्र न हो अथवा मर गया है तो पुरूष अपने निमित्त से गोद ले सकता है अथवा पुत्र दुराचारी होने के कारण अलग कर दिया गया हो गोद लिया जा सकता है। यदि पुत्र अविवाहित मर गया हो और पति भी मर गया हो तो विधवा स्त्री भी संतान को गोद ले सकती है। उसे अन्य सदस्यों से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है। यदि दो विधवा हो तो एक–दूसरे से अनुमति लेना आवश्यक है यदि सास और बहू दोनों विधवा हो तो बहू गोद ले सकती है। लेकिन शर्त यह है कि बहू ने संपत्ति को प्राप्त कर लिया। यदि जायदाद सास के नाम है तो बहू गोद लेने के पहले अपनी सास से भी अनुमति लेवें। गोद लिया गया पुत्र यदि अविवाहित मर जाये अथवा परिग्रह त्यागी साधु संत बन जाये तो उस संपत्ति को धर्म कार्यों में लगावे अथवा समाज में लगावे अथवा स्वेच्छानुसार परिजन को बाँट देवें अथवा जामाता को दे दे। वह विधवा जामाता पुत्र को गोद ले सकती है।

If a father has three-four sons and one of those sons has a son and the rest are without son, that one son will be called the son of all the brothers. But those who do not have a son, if they want to adopt someone's child, they can do so and after adoption, he will also be considered as a son. This has been said in Bhadrabahu Samhita Chapter 38. The same thing has been said in Hindu Law also in Chapter 9 Sutra 182 of Manusmriti. Gaur's Hindu Code Dwitiyavritti p. Section 324 states that if a person dies without adopting, then the son of the other brother will be entitled to that property like the son of the deceased.

It is said in Bhadrabahu Samhita Chapter 39 that if a man has more than one wife and one of them has a son, then all those women will be considered as sons and daughters-in-law. In Chapter 40 of this, it is said that those other women will not have the right to adopt because women cannot adopt a child for their own sake. She can take it only for her deceased husband and only in the case when the deceased husband is without a son, only the son of a woman will be entitled to all that property.

Who is the authority for adoption?

It is said in Bhadrabahu Samhita Chapter 41 that if a couple does not have a son of their own or who has died, then the man can adopt for his own sake or if the son has been separated due to misbehavior, he can be adopted. If the son died unmarried and the husband also died, then the widow woman can also adopt the child. He does not need to take permission from other members. If there are two widows, it is necessary to take permission from each other. If both mother-in-law and daughter-in-law are widows, then the daughter-in-law can adopt. But the condition is that the daughter-in-law inherits the property. If the property is in your mother-in-law's name, then take permission from your mother-in-law before adopting your daughter-in-law. If the adopted son dies unmarried or becomes a saint, then he should use that property for religious purposes or in the society or give it to his family as per his wish. Distribute it or give it to your son-in-law. That widow can adopt the son-in-law.

दत्तक पुत्र

पुत्र एक रत्न है पुत्री लक्ष्मी है पुत्री का कन्यादान किया जाता है जो विवाह के समय योग्य वर के साथ किया जाता है। पुत्री जिस कुल में जाती है उस कुल की हो जाती है उसका गोत्र, कुल और खानदान पति के अनुसार हो जाता है। लेकिन पुत्र अपने पिता से लड़–झगड़ कर अलग होने पर भी उसी कुल, खानदान और गोत्र का कहलाता है। पुत्र से ही आगे कुल परम्परा चलती है जिसके पुत्र नहीं होता है उसके कुल का सत्यानाश माना जाता है। पुत्र होना बड़े सौभाग्य की बात है पुण्य आत्मा के पुत्र होते हैं पुत्र को परमात्मा के द्वारा दिया गया उपहार माना जाता है। जो परमात्मा के द्वारा दिये गये उपहार को स्वीकार नहीं करता और न ही साधु संत बनता है वह अभागा माना जाता है। जैन धर्मानुसार बहु विवाह और बहु संतान पुण्य का फल माना गया है और इसे स्वीकार किया गया है। बहु विवाह करने का अधिकार भी दिया गया है। इसीलिए जिसके पुत्र नहीं होता वह अपनी कुल परम्परा को जीवित रखने के लिए संतान को गोद लेता है। लेकिन गोद किसको लिया जाए इस पर विचार करना भी आवश्यक है।

संतान के कारण ही पति–पत्नि को माता–पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है। जिसके संतान नहीं होती वे अपने आप को दीन–हीन समझते हैं। स्त्री को लोग बांझ समझते हैं इसीलिए प्रत्येक विवाहिता नारी माँ बनना चाहती है। संतान से युक्त नारी सौभाग्यवती कहलाती है। जिसके बहुत संतान होती हैं वे दम्पत्ति आनंद का अनुभव करते हैं। बहुत संतान वाले ही अपने संतान को गोद दे सकते हैं। जिनकी एक ही संतान हो उसे गोद देने का अधिकार नहीं होना चाहिए। प्रथम पुत्र को भी गोद नहीं देना चाहिए और गोद लेने वालों को भी ऐसी संतान गोद नहीं लेना चाहिए।

गोद लेने वाले दम्पत्ति को अपनी उम्र से अधिक उम्र की संतान को गोद नहीं लेना चाहिए। अपने भाई का पुत्र, चाचा का पुत्र, बहिन का पुत्र, मामा का पुत्र, मौसी का पुत्र, लड़की का पुत्र अथवा अपने जाति भाई का पुत्र गोद लेना उत्तम है। अनाथ आश्रम का पुत्र गोद लेना मध्यम है। अवैध रीति से अथवा वैध रीति से उत्पन्न पुत्र को जो माँ जन्म देते ही कहीं गुप्त रीति से फेंक कर जाती है उस संतान को गोद लेना जघन्य है।

Adopted son

Son is a gem, daughter is Lakshmi and Kanyadaan of the daughter is done at the time of marriage with a suitable groom. The daughter belongs to the family to which she goes and her Gotra, clan and lineage depends on that of her husband. But even if the son gets separated from his father due to a fight, he is said to belong to the same clan, family and clan. The family tradition continues only through the son. The one who does not have a son, his family is considered doomed. It is a matter of great fortune to have a son. Sons are of virtuous souls. A son is considered a gift given by God. One who does not accept the gift given by God nor becomes a saint is considered unfortunate. According to Jainism, multiple marriages and multiple children are considered the result of virtue and have been accepted. The right to practice polygamy has also been given. That is why a person who does not have a son adopts a child to keep his family tradition alive. But it is also necessary to consider who should be adopted.

It is because of children that husband and wife get the privilege of becoming parents. Those who do not have children consider themselves destitute. People consider women to be infertile, that is why every married woman wants to become a mother. A woman with children is called Saubhagyavati. Those couples who have many children experience happiness. Only those who have many children can give their children for adoption. Those who have only one child should not have the right to give it up for adoption. Even the first son should not be given for adoption and the adopters should also not adopt such a child.

The adopting couple should not adopt a child older than their age. Your brother's son, uncle's son, sister's son, It is better to adopt maternal uncle's son, aunt's son, girl's son or son of one's own caste brother. Adopting a son from an orphanage is moderate. It is heinous to adopt a son who is born illegally or legally and who is secretly thrown away by the mother as soon as she gives birth to him.

गोद लेने की विधि

जो दम्पत्ति संतान विहीन होते हैं वे दूसरों की संतान गोद लेते हैं तो उन्हें शुभ मुहूर्त में गोद लेना चाहिए। शुभ मुहूर्त में प्रातः काल मंदिर जाकर जिनेन्द्र देव की पूजा करना चाहिए। कुटुम्बी जन, संबंधी जन एवं समाज के लोगों को एकत्रित करके प्राप्त हुई संतान को गाजे–बाजे के साथ उस परिवार के पास जाना चाहिए जो अपनी संतान को गोद दे रहा है तदुपरांत जन्मोत्सव के भाँति उसे अपने घर लाकर आसन पर बिठा कर आरती करना चाहिए क्योंकि दत्तक पुत्र भी गोद लेने के उपरांत अपने जाये हुए (औरस) पुत्र के समान होता है। उसके बाद उसे मंदिर ले जाकर अभिषेक, पूजन सहित विधान रचाना चाहिए। समाज का यथा शक्ति वात्सल्य भोज कराना चाहिए। संतान गोद लेने के पूर्व सामाजिक और राजकीय स्तर पर नियम कानून सहित लिखा पड़ी करना चाहिए।

उस लिखा पढ़ी में शासकीय, सामाजिक और पारिवारिक सभी शर्तों का खुलासा होना चाहिए। दत्तक पुत्र को अपने माता–पिता और जिसके यहाँ वह दत्तक पुत्र बन कर गया है उस माता–पिता की सम्पत्ति को बेचने अथवा गिरवी रखने का अधिकार नहीं होना चाहिए। यदि दत्तक पुत्र नियम कानून और धर्म विरूद्ध कार्य करने लगे अथवा आचरणहीन हो जाये तो सामाजिक स्तर और शासकीय स्तर पर कार्यवाही करके उसे छोड़ देना चाहिए। यदि निज का जाया पुत्र भी इस प्रकार का हो जाये और समझाने के बाद सही मार्ग पर न आये तो उसे भी अलग कर देना चाहिए। अर्थात् औरस पुत्र हो या दत्तक पुत्र दोनों को आचरणवान, विनयशील, आज्ञाकारी, सेवाभावी और आस्थावान होना चाहिए।

यदि संतान गोद लेने के पश्चात् औरस पुत्र उत्पन्न हो जाये तो दत्तक पुत्र को पिता अपनी आधी सम्पत्ति दे और जो माता–पिता के हिस्से में आधी सम्पत्ति आती है उसका आधा भाग दत्तक पुत्र को देना चाहिए। अर्थात् दत्तक पुत्र को एक चौथाई भाग देना चाहिए।

Method of Adoption

If couples who are childless adopt someone else's child, they should do so at an auspicious time. In the auspicious time, one should go to the temple in the morning and worship Jinendra Dev. After gathering the family members and people of the society, the child should be taken with musical instruments to the family which is adopting its child. After that, like a birth festival, he should be brought to his home and made to sit on a seat and perform Aarti because An adopted son also becomes like his own son after adoption. After that, he should be taken to the temple and rituals including consecration and worship should be performed. A love feast should be organized as per the capacity of the society. Before adopting a child, rules and regulations should be read at the social and government level.

All the government, social and family conditions should be disclosed in that writing. An adopted son should not have the right to sell or mortgage the property of his parents and the parents to whom he has gone as an adopted son. If the adopted son starts acting against the rules, law and religion or becomes unethical, then action should be taken at the social level and government level and he should be released. If one's own son also becomes like this and does not come on the right path after explaining, then he should also be separated. That is, auras. Whether it is a son or an adopted son, both should be polite in conduct, obedient, the son should be service-oriented and faithful.

If another son is born after adopting a child, then the father should give half of his property to the adopted son and the other half will go to the parents Half of the property should be given to the adopted son. That is, one-fourth share should be given to the adopted son.

पुत्र के समान यदि पुत्री माता–पिता की आज्ञा के बिना अपनी स्वेच्छा से अन्यत्र विवाह करती है अथवा आचरणहीन हो जाती है तो उसे माता–पिता की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होना चाहिए। वैसे भी माता–पिता की सम्पत्ति पर पुत्र का अधिकार होना चाहिए पुत्री का नहीं यदि पुत्र न हो तो आधी सम्पत्ति पर कुटुम्ब जनों का और आधी सम्पत्ति पर पुत्री का अधिकार होना चाहिए। वर्तमान समय में भारतीय संविधान में जो संशोधन करके पुत्र के समान ही समान भाग में पुत्री को माता–पिता की सम्पत्ति पर विवाह के बाद भी अधिकार दिया है उसे मैं अनुचित समझता हूँ क्योंकि विवाह के समय माता–पिता यथायोग्य सम्पत्ति दे देते हैं। यदि भारतीय कानून पुत्री को माता–पिता की सम्पत्ति का अधिकार देता है तो सुसराल पक्ष की सम्पत्ति पर पुत्री के भाई को भी सम्पत्ति प्राप्त करने का समान अनुपात में अधिकार होना चाहिए। नाबालिग अवस्था के होने पर माता–पिता को अपनी संतान को संस्कारित करने और विद्वान बनने का कर्तव्य समझकर करना चाहिए जिससे वह समाज, देश और कुल परम्परा का नाम रोशन कर सके। अपनी आजीविका और माता–पिता आदि की सेवा का निर्वाहन कर सकें। पुत्र के पूर्ण वयस्क होने पर उस पुत्र की शादी कर देनी चाहिए और उसे अपनी अजीविका चलाने, अर्थ कमाने, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाने इत्यादि का स्वतंत्र भार दे देना चाहिए।

Like a son, if a daughter voluntarily marries someone else without the permission of her parents or becomes immoral, then she should not have any right on her parents' property. Anyway, the son should have the right on the parents' property, not the daughter. If there is no son, then the family members should have the right on half the property and the daughter should have the right on the other half. At present, the amendment made in the Indian Constitution which has given the daughter equal rights over her parents' property even after marriage, like a son, I consider unfair because at the time of marriage, the parents give away the property as per their entitlement. If Indian law gives the daughter the right to inherit the property of her parents, then the daughter's brother should also have the right to inherit the property of his in-laws in equal proportion. When they are minors, parents should consider it their duty to educate their children and make them scholars so that they can bring glory to the society, country and family tradition. To be able to maintain their livelihood and serve their parents etc. When the son becomes a full adult, the son should be married and he should be given the independent responsibility of running his livelihood, earning money, increasing his prestige in the society etc.

विवाह संबंध अधिकार

विवाह को स्वयंवर शादी एवं अंग्रेजी भाषा में मैरिज कहा जाता है विशेषण वहनं इति विवाह अर्थात् विशेष रूप से एक–दूसरे को लेकर चलना ढोना और वहन करना विवाह कहलाता है। अथवा एक–दूसरे आजीवन अपनी इंद्रियों के सुख एवं वंश की वृद्धि हेतु संतान की उत्पत्ति के लिये जो शारिरिक रिश्ता या संबंध स्थापित किया जाता है उसे विवाह कहते है। वासना की असीम इच्छाओं को किसी एक अथवा दो स्त्री तक सीमित कर लेना और समस्त संसार की स्त्रियों का त्याग करने के लिए विवाह किया जाता है। इसलिए विवाह भी एक धर्म है।

विवाह अपनी बेटी, बहन, बुआ, भांजी, भतीजी एवं माता से नहीं करना चाहिए। अर्थात् विवाह घर के घर में ही नहीं करना चाहिए। विवाह हमेशा दूसरे घर की कन्या से करना चाहिए। दूसरे घर की बेटी को पत्नि बनाकर अपने घर में रखा जाता है। वह अपने घर की नहीं होती है उस कन्या के लिए यह अपना घर नहीं होता है। शादी होने के बाद उसका अपना घर अधिकार पूर्वक हो जाता है। अपने घर को होम कहते है और दूसरे के घर में आकर अतिथि के रूप में जहाँ रहा जाता है उसे हाऊस कहते है। जैसे गेस्ट हाऊस, रेस्ट हाऊस आदि वह किसी का नहीं होता बल्कि उसमें मेहमान आकर रहता है। विवाहिता स्त्री भी अपने पति के साथ अतिथि के रूप में रहती है यह उसका जन्मजात घर नहीं होता है। यही कारण है कि अंग्रेजी भाषा में विवाहिता स्त्री अर्थात् पत्नि को होम वाईफ नहीं हाऊस वाईफ कहा जाता है। विवाह किस धर्म या जाति वालों से करना चाहिए यह जैनाचार्यों ने भी बतलाया है।

माता–पिता को अपनी संतान का विवाह अपनी जाति और धर्म वालों के साथ करना चाहिए। लेकिन अपने गोत्र में ही संतान की शादी नहीं करना चाहिए। जिस कन्या के साथ पुत्र की शादी की जाए वह कन्या शीलवती, विद्यावती, आरोग्यवान, कुलीन और उत्तम गुण आदि सुलक्षण से सम्पन्न होना चाहिए। कुलक्षणी नहीं होना चाहिए। जिस कन्या के साथ विवाह संबंध किया जा रहा हो उसके ग्रह नक्षत्र और राशि आदि का ज्योतिष शास्त्रानुसार मिलान करना चाहिए।

Marital Rights

Marriage is called Swayamvar Shaadi and in the English language, Marriage with the adjective Vahanam Iti Vivah i.e. especially carrying and bearing each other is called marriage or living with each other for the pleasure of one's senses and for the growth of offspring. The physical relationship or relationship that is established for the birth of a child is called marriage. Marriage is done to limit the limitless desires of lust to one or two women and to sacrifice all the women of the world. Therefore marriage is also a religion.

One should not marry one's daughter, sister, aunt, niece, nephew and mother. That is, marriage should not be done within the family itself. Marriage should always be done with a girl from another family. The daughter of another house is taken as wife and kept in her own house. She does not belong to her own house, for that girl this is not her own home. After marriage, one gets one's own house by right. One's own house is called home and the place where one comes and stays as a guest in someone else's house is called house. Like guest house, rest house etc. it does not belong to anyone but guests come and stay in it. A married woman also lives with her husband as a guest; this is not her birth home. This is the reason why in English language a married woman *i.e.* wife is called housewife and not homewife. Jainacharyas have also told about which religion or caste one should marry.

Parents should marry their children with people of their own caste and religion. But one should not marry one's child within one's own clan. The girl with whom the son is to be married should be Shilvati, Vidyavati, healthy, noble and full of good qualities etc. There should not be any negative symptoms. The planets, constellations and zodiac signs etc. of the girl with whom marriage is being done. Matching should be done as per astrology.

लेकिन दत्तक पुत्र अथवा ऑपरेशन से असमय में जन्मी संतान की जन्म कुण्डली मिलाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मात्र गोत्र, जाति, धर्म, गुण और आयु देखकर विवाह संबंध किया जा सकता है। अपने कुल की पुत्री, बहिन, भतीजी, बुआ से अथवा विधवा तलाकशुदा नारी से अथवा गुरूकुल की बेटी अर्थात् ब्रह्मचारिणी से विवाह नहीं करना चाहिए। जैन धर्मानुसार एक पुरूष अनेक विवाह कर सकता है, लेकिन एक स्त्री एक ही विवाह कर सकती है। विवाह के उपरांत सात दिन तक वर और वधु दोनों को ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके तीर्थ–यात्रा और धर्म ध्यान करना चाहिए। उसके बाद ही घर आकर दाम्पत्य जीवन का सुख भोगना चाहिए।

विवाह संबंध की लिखा–पढ़ी (इकरार नामा) हो चुकने पर यदि लड़की के पक्ष वाले विवाह करने से इन्कार करते हैं तो हर्जाना लड़की वालो को देना चाहिए। यदि वर पक्ष अर्थात् लड़के वाले विवाह से इन्कार करते हैं तो हर्जाना लड़के वालों को लड़की वालों के लिए देना चाहिए। यदि विवाह के पूर्व ही कन्या का मरण हो जाये तो खर्च काट कर जो कुछ ससुराल से धन और गहना आदि आभूषण मिला हो उसे उस कन्या के परिवार वालों को वापस दे देना चाहिए।

आदिपुराण के पर्व 16 श्लोक 247 में आचार्य जिनसेन स्वामी ने लिखा है कि

''शूद्रा शूद्रेण वोढव्यं नान्यातां स्वांच नैगमः।
वहेत्सवां ते च राजन्माः वा द्विजन्मःत्रकृचिच्ताः।।

अर्थात् उच्च वर्ण का पुरूष अपने नीच वर्ण की कन्या से विवाह कर सकता है और उच्च वर्ण की कन्या का विवाह नीच वर्ण के पुरूष से नहीं कर सकते हैं। पूर्व काल में एक प्रचलन और था कि ब्राह्मण चारों वर्णों की कन्याओ से, क्षत्रिय ब्राह्मण के बिना तीन वर्ण की कन्याओं से, वैश्य अपनी सवर्ण और शूद्र इन दो वर्ण की कन्याओं से एवं शूद्र अपने ही वर्ण की कन्या से शादी कर सकता है। वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति सभ्यता और आधुनिक भौतिकवादी सोच विचार के कारण उपरोक्त नियम का कोई पालन नहीं करता है।

But there is no need to match the horoscope of an adopted son or a child born prematurely through operation. Marriage can be done only by looking at clan, caste, religion, qualities and age. One should not marry the daughter, sister, niece, aunt of one's family or a widowed divorced woman or the daughter of one's Gurukul *i.e.* a celibate woman. According to Jainism, a man can marry multiple times, but a woman can marry only once. After marriage, both the bride and groom should observe a vow of celibacy for seven days and go on pilgrimage and meditate on religion. Only after that one should come home and enjoy the happiness of married life.

If the girl's family refuses to marry after the marriage contract is finalized, then compensation should be paid to the girl's family. If the groom's side, *i.e.* the boy's family, refuses to marry, then compensation should be paid by the boy's family to the girl's family. If the girl dies before marriage, then after deducting the expenses, whatever money and jewelery etc. she got from her in-laws should be given back to the girl's family.

Acharya Jinsen Swami wrote in Parva 16 Verse 247 of Adipuran is that

"Shudra Shudren Vodhavya Nanyatam Svanch Naigam.
Vahetsvaan te cha rajanmaah va dwijanamah trakrichichtaah.,

That is, a man of a higher caste can marry a daughter of a lower caste and a girl of a higher caste cannot marry a man of a lower caste. Another trend in earlier times was that a Brahmin could marry girls of all four varnas, a Kshatriya could marry girls of three varnas without being a Brahmin, a Vaishya could marry girls of his own upper caste and a Shudra could marry a girl of these two varnas and a Shudra could marry a girl of his own varna. At present, due to western cultural civilization and modern materialistic thinking, Does not follow.

सरकार भी इसमें संशोधन करके किसी भी वर्ण का, किसी भी वर्ण से (लड़का या लड़की का) विवाह करने की अनुमति देती है। इसे धर्म शास्त्रों में अन्तर्जातीय या विजातीय विवाह कहा है। विजातीय विवाह करने से वर्ण व्यवस्था, धर्म व्यवस्था, जाति व्यवस्था, व्यवसाय व्यवस्था आदि सब बिगड़ जाती है। मान–मर्यादाएँ समाप्त हो जाती है, युवक–युवतियाँ चारित्रहीन हो जाती हैं और नस्ल भी समाप्त हो जाती हैं। जैसे नींबू, आम, गुलाब, आदि की विजातीय या अन्तर्जातिय वृक्षों से कलम करने पर संक्रमण हो जाता है जिससे नई जाति का फल–फूल और वृक्ष उत्पन्न होता है। उसमें प्रजनन शक्ति समाप्त हो जाती है अर्थात् क्लोन और कलम से उत्पन्न किये गये वृक्ष, बीज और जीव–जंतुओं में प्रजनन शक्ति समाप्त हो जाती है। वैसे ही अन्तर्जातीय या विजातीय विवाह करने से मूल नस्ल समाप्त हो जाती है। इसी कारण धर्म शास्त्रों में इसका निषेध किया गया है।

विवाह के भेद

पूर्व में काम–पुरूषार्थ के व्याख्यान के समय पिशाच विवाह, गंधर्व विवाह, राक्षस विवाह, असुर विवाह, प्रजात्य विवाह, देव विवाह, आर्ष विवाह, ब्रह्म विवाह, स्वयंवर विवाह ये नौ प्रकार के विवाह कहे गये थे। इन विवाहों में ब्रह्म, देव, आर्ष, प्रजात्य एवं स्वयंवर विवाह को धर्म विवाह माना गया है। लेकिन असुर, गंधर्व, राक्षस, पिशाच इन चार विवाह को अधर्म विवाह माना गया है। इन विवाहों के भेद, विधि एवं फल आदि की व्याख्या काम–पुरूषार्थ के अध्याय में देखें। वर्तमान में लव मैरिज, कोर्ट मैरिज और अरेन्ज मैरिज ऐसे तीन भेद है।

विधवा विवाह

संयोग के साथ वियेाग जुड़ा होता है, दामपत्य जीवन संयोगी जीवन है। पति का पत्नि के पहले परलोक गमन हो जानाा अशुभ माना जाता है ऐसी नारी को विधवा कहते हैं। धवा धातु में वि उपसर्ग लगाने से विधवा बनता है। वि अर्थात् विगत अथवा गुजरा हुआ और धवा अर्थात् पति अर्थात् जिसका पति गुजर गया हो उसे विधवा कहते हैं।

The government can also amend it and make it available to any caste. It allows marriage of a boy or a girl from any varna. This is called inter-caste or inter-caste marriage in religious scriptures. By doing inter-caste marriage, the varna system, religious system, caste system, business system etc. all get spoiled. Respect- The dignity is lost, the young men and women become characterless and the species also gets destroyed. For example, when lemon, mango, rose, etc. are grafted from alien or inter-species trees, infection occurs due to which the new species grows and flourishes. A tree is born, its reproductive power is lost, that is, the trees, seeds and animals produced from clones and cuttings lose their reproductive power. Similarly, due to inter-caste or inter-caste marriage, the original breed gets destroyed. For this reason it has been prohibited in religious scriptures. Secrets of Marriage

Earlier, during the lectures of Kama-Purushartha, nine types of marriages were said to be like, vampire marriage, Gandharva marriage, Demon marriage, Asur marriage, prajatya marriage, Deva marriage, Aarsh marriage, Brahma marriage, Swayamvar marriage. In these marriages, Brahma, Dev, Aarsh, Prajatya and Swayamvar marriages are considered religious marriages. But these four marriages – Asura, Gandharva, Rakshasa and Pishach – are considered illegal marriages. See the explanation of the types, methods and results of these marriages in the chapter on Kama-Purushartha. At present there are three types of love marriage, court marriage and arranged marriage.

Widow Marriage

Separation is associated with coincidence, married life is a coincidental life. It is considered inauspicious for the husband to die before the wife and such a woman is called a widow. Widow is formed by adding prefix 'vi' to 'Dhawa' metal. Vi means past or passed away and Dhava means husband, that is, the person whose husband has passed away is called a widow.

विवाह के समय कन्या जिस वर को चुनती है वह दुनिया में सर्वश्रेष्ठ होता है। शीलवान नारी के लिए अपने पति के अलावा दिल में किसी का स्थान नहीं होता है। उसके लिए पति ही पूज्य होता है। पति ही देव, गुरू और प्रभु होता है कहा भी है–

पतिः पूज्यः पतिर्देवः पति स्वामी पतिर्गुरूः।
सुखे दुःखे कुल स्त्रीणां शरणं पतिरेव हि।।

अर्थात् पति पूज्य है, पति देव स्वरूप है, कुलीन नारियों का पति ही स्वामी है पति ही गुरू है सुख–दुख में पति ही शरण है। जो स्त्री अपने मन में अपने पति के गुण, रूप, ऐश्वर्य, धन आदि की अपेक्षा अन्य किसी पुरूष को श्रेष्ठ नहीं मानती है और अपने इन्द्रिय सुख के लिए अन्य पुरूष के प्रति स्वप्न में भी काम विकार का भाव नहीं लाती वही नारी पतिव्रता सती सावित्री कहलाती है।

कन्या का दान किया जाता है। दान की हुई वस्तु का पुनः दान नहीं किया जाता इसलिए विवाह के समय एक बार कन्यादान कर देने पर पति के मरण होने के उपरांत उसका पुनः विवाह नहीं किया जाता है।

नारी भोग्या है। पुरूष भोक्ता है। जिस पदार्थ को एक बार भोग लिया गया हो उस पदार्थ को बमन होनेपर अथवा झूठन को पुनः नहीं भोगा जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार भोगी हुई नारी बमन के समान होनेसे पुनः उस विधवा के साथ विवाह नहीं करना चाहिए। कहा भी है।

विधवा विवाह को, विवाह के भेदों में नहीं लेना चाहिए। उत्तर भारत में एवं जैन धर्म में विधवा विवाह का प्रचलन नहीं है। जिसने विधवा विवाह किया हो उससे दिगम्बर मुनियों को आहार लेने का निषेध मूलाचार ग्रंथ में किया गया है, उनसे उत्पन्न संतान से भी आहार लेने का निषेध किया गया है क्योंकि कुल शुद्धि विधवा विवाह वालों की नहीं मानी गयी है। विधवा नारी को अपने पति के मृत्यु के बारह दिन के उपरांत ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लेना चाहिए। शरीर पर काजल आभूषण आदि सोलह श्रृंगार को नहीं करना चाहिए। श्वेत वस्त्र धारण करना चाहिए। पलंग पर नहीं सोना चाहिए।

The groom a bride chooses at the time of marriage is the best in the world. A virtuous woman has no place in her heart except her husband. For her, the husband is the worshipper. The husband is God, Guru and Lord.

The husband is to be worshipped, the husband is the god, the husband is the master, the husband is the teacher. In happiness and distress the husband is the refuge of the women of the family

That is, the husband is worshipped, the husband is the form of God, the husband is the master of noble women, the husband is the teacher, the husband is the refuge in happiness and sorrow. A woman who does not consider any other man superior to her husband's qualities, appearance, wealth, etc. in her mind and does not bring a sense of lust disturbance towards another man even in her dreams for her sense pleasure is a chaste Sati Savitri is called.

The bride is donated. The donated thing is not re-donated so once the bride is given at the time of marriage, she is not remarried after the death of her husband.

The woman is the sufferer. The man is the enjoyer. A substance once enjoyed is not enjoyed again when it is vomited or lied to. According to this principle, a woman who has suffered should not marry a widow as she is like a dwarf. It is also said. Again, that

Widow marriage, should not be taken among the differences of marriage. Widow marriage is not practiced in North India and in Jainism. The Digambara Munis are forbidden to take food from those who have married widows in the Mulachara Granth, they are also forbidden to take food from the children born to them because the total purity of those who have married widows is not considered. A widow should observe celibacy twelve days after the death of her husband. Sixteen makeup such as mascara ornaments should not be done on the body. Should wear white clothes. Don't sleep in bed.

परिवार, समाज और संबंधी जनों को विधवा नारी के प्रति अच्छी दृष्टि और आदर का भाव रखना चाहिए। उसकी उपेक्षा नहीं करना चाहिए। इसके अलावा विधवा विवाह वालों का किसी भी धर्म ग्रंथों में स्पष्ट निषेध नहीं किया गया है

सकृज्जल्पन्ति राजानाः, सकृज्जल्पन्ति पण्डिताः।
सकृत कन्या प्रदीयन्ते, त्रीण्येतानि सकृत्सकृत।।

अर्थात् राजा एक बार ही आदेश देता है, पण्डित एक बार ही बोलता है कन्या एक बार ही दान दी जाती है। इसी प्रकार एक नीति ओर भी कही गई है

सिंह सवन कदली फलन, सत्पुरुष वचन इक बार।
तिया तेल हम्मीर हठ, चढ़े न दूजी बार।।

विधवा नारी की चर्या

विधवा नारी को प्रिंट, चटक, भड़कीले वस्त्र धारण नहीं करना चाहिए। गरिष्ट तामसिक भोजन, रागवर्धक कोमल सैया, राग वर्धक सोलह श्रृंगार, हल्दी उबटन, मंगल सूत्र, काँच की चूड़ी इत्यादि का त्याग करना चाहिए। कांच की चूड़ी, मंगल सूत्र धारण करना, मांग में कुमकुम भरना एवं पैर में बिछिया पहनना ये सौभाग्यवती नारी के चिन्ह हैं। इसीलिए शादी के बाद प्रत्येक नारी को इन्हें धारण करना चाहिए। विधवा नारी को इनका त्याग करना चाहिए एवं ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके अपने कर्मों का फल मान कर पति के वियोग का शोक न करके बैराग्य एवं संयम धारण करना चाहिए। दोनों संध्याओं में स्त्रोत, मंत्र जाप, बारह भावनाओं का चिंतन और शास्त्र श्रवण करना चाहिए। इससे संबंधित श्रीपाल पुराण, हरिवंश पुराण में मैना सुंदरी, बंसत सुंदरी, गुण प्रभा, सुप्रभा, एवं राजुल आदि के अनेक उदाहरण दिये गये हैं।

Needed Family, society and relatives should have a good attitude and respect towards the widowed woman. She should not be ignored. Apart from this, there is no clear prohibition on widow remarriage in any religious scriptures.

Sakrijjalpanti Rajanaah Sakrijjalpanti Panditaah.

Sakrit Kanya Pradyante Trinyetani Sakritskrit.

That is, the king orders only once, the priest speaks only once and the girl is given in charity only once. Similarly, another policy has also been stated.

Leo Sawan Kadali Falan, good man's words once.

Tiya Tel Hammir stubbornness, don't climb the second time.

Discussion of Widow Woman

A widow woman should not wear printed, bright or flashy clothes. One should give up heavy, tamasic food, raga-enhancing soft saiya, sixteen adornments, turmeric decoction, mangal sutra, glass bangle etc. Wearing a glass bangle, Mangal Sutra, filling kumkum in the mouth and wearing a toe ring on the foot are the signs of a fortunate woman. That is why every woman should wear them after marriage. The widowed woman should give up these and observe the vow of celibacy and accept the fruits of her deeds and instead of mourning the loss of her husband, she should adopt dispassion and restraint. In both the evenings one should chant stotras, mantras, contemplate the twelve feelings and listen to the scriptures. Related to this, many examples of Maina Sundari, Bansat Sundari, Guna Prabha, Suprabha and Rajul etc. have been given in Shripal Purana, Harivansh Purana.

सम्पत्ति विभागाधिकार

जैन कानून के अनुसार सम्पत्ति चल (जंगम) और अचल (अजंगम या स्थावर) अथवा चेतना और अचेतना के भेद से दो प्रकार की होती है। जो सम्पत्ति एक स्थान से दूसरे स्थान न ले जाई जा सके जैसे खेत, मकान, बाग आदि उसे अचल या स्थावर सम्पत्ति कहते हैं। जो सम्पत्ति एक–स्थान से दूसरे स्थान आसानी से ले जाई जा सकें जैसे वस्त्र, आभूषण, वाहन इत्यादि। गाय, बैल आदि पशु धन चेतना सम्पत्ति है। सोना, चाँदी, वस्त्र और बर्तन आदि अचेतना सम्पत्ति इन दोनों का विभाजन किया जा सकता है। विभाजन बँटवारे की दृष्टि से कुछ सम्पत्ति बँटवारे में सप्रतिबंधन रूप और कुछ सम्पत्ति अप्रतिबंधन होती है। जो सम्पत्ति पिता के मरण के पश्चात् सीधे संतान के पास पहुँचती हैं वह अप्रतिबंधन रूप संपत्ति कहलाती है। जो सम्पत्ति सीधे पिता से ना मिलकर चाचा, ताऊ आदि कुटुम्बी जनों से या संबंधी जनों से विशेष शर्त के साथ मिलती है उसे प्रतिबंधन सम्पत्ति कहते है। सम्पत्ति से देश समाज, परिवार और व्यक्तिगत जीवन चलता है। सम्पत्ति को धन या अर्थ कहते है। जैनाचार्यों ने मनुष्य के पांच इंद्रिय, आयु, मन, वचन, काय ये तीन बल और श्वासोच्छवास ये दस प्राण कहें है लेकिन धन को ग्यारहवा प्राण कहा है और अन्य को बारहवॉ प्राण कहा है। यही वजह है कि धन को प्राणों से प्यारा मानते है। भोगवादी हो या साम्यवादी सभी को धन चाहिए।

भोगवादी हो, या साम्यवादी हो, या पूँजीवादी हो सभी के केन्द्र में अर्थ रहता है। सारी लड़ाई अर्थ के लिए हो रही है। भले ही साम्यवादी लोगों की मान्यता हो कि अर्थव्यवस्था का उच्चतम विकास हो जाने पर राज्य नाम की संस्था समाप्त हो जाएगी क्योंकि राज्य का वर्चस्व तो दमन पर आधारित है। मानवीय संबंध नैतिकता पर कम और अर्थ पर ज्यादा परिसंचालित होता है। अर्थ के बिना समाज और सत्ता नहीं चलती है। अर्थ से धरती पर स्वर्ग भी उतर आता है और नरक भी बना जाता है। अर्थ से अन्याय व अनीति, का दैत्य भी अवतरित हो जाता है। गरीबी, अमीरी, समानता, असमानता, साम्यवाद, पूँजीवाद, ये सभी अर्थ की देन है। इसी अर्थ के लिए मानव समाज में संघर्ष जारी है। इसी को लेकर मैंने पैसों की करामात नाम से एक कविता लिखी है–

Property Rights

According to Jain law, property is of two types - movable (movable) and immovable (anjangam or immovable) or conscious and unconscious. The property which cannot be moved from one place to another like farm, house, garden etc. is called immovable property. The property which can be easily moved from one place to another like clothes, jewellery, vehicles etc. Animals like cow, bull etc. are wealth, consciousness and property. Unrealized assets like gold, silver, clothes and utensils etc. can be divided. From the point of view of division, some property distribution is conditional and some property is unrestricted. The property which passes directly to the children after the father is called unrestricted property after death. The property which is received not directly from the father but from relatives like uncles, aunts etc. or from relatives with special conditions is called restricted property. Country, society, family and personal life run through property. Property is called wealth or money. Jainacharyas considered the five senses of man, age. Mind, speech, body, these three forces and breathing are called the ten pranas, but money is called the eleventh prana and others are called the twelfth prana. This is the reason why money is considered dearer than life. Be it a materialist or a communist, everyone wants money.

Be it materialistic, communist or capitalist, meaning of wealth is at the center of all. The whole fight is taking place for money and wealth. Even though communists may believe that once the economy reaches the highest level of development, the institution of the state will end because the supremacy of the state is based on oppression. Human relations revolve less on morality and more on money. Society and power cannot function without money. Due to Earth, heaven descends on earth and hell is also created. The demon of injustice and unfairness also descends from wealth. Poverty, wealth, equality, inequality, communism, capitalism, all these are given by money. This The struggle for money continues in human society. Regarding this, I have written a poem named **Paisoni Ki Karamat -**

पैसा इंसान को मानी बना देता है।
पैसा इंसान को शैतान बना देता है।।
पैसे की करामात कहाँ तक कहें बंधुओ।
पैसा इंसान को कैदी बना देता है।।1।।

पैसा अपनें को पराया बना देता है।
पैसा रिश्तों को रास्ता दिखा देता है।।
पैसा मानव को दानव बना देता है।
पैसा आदमी में बुरी लत लगा देता है।।2।।

पैसा इंसान का सम्मान बढ़ा देता है।
पैसा इंसान का सम्मान घटा देता है।।
पैसा इंसान को ऊपर उठा देता है।
पैसा इंसान को नीचे गिरा देता है।।3।।

पैसा इंसान का विश्वास मिटा देता है।
पैसा इंसान को बेईमान बना देता है।।
पैसा इंसान को धोखेबाज बना देता है।
पैसा मायाचारी करना सिखा देता है।।4।।

पैसा इंसान को निर्दयी बना देता है।
पैसा इंसान को स्वार्थी बना देता है।।
पैसा इंसान को लोभी बना देता है।
पैसा इंसान को लालची बना देता है।।5।।

पैसा जब बोलता है तब इंसानियत मर जाती है।
पैसा जब बोलता है तब श्रद्धा मर जाती है।।
पैसा जब बोलता है तब नींद उड़ जाती है।
पैसा जब बोलता है तब छाती फूल जाती है।।6।।

पैसा जब बोलता है तब बोलती बंद हो जाती है।
पैसा जब बोलता है तब लक्ष्मी मुस्काती है।।
पैसा जब बोलता है तब सरस्वती भाग जाती है।
पैसा जब बोलता है तो जिंदगी मिट जाती है।।7।।

Money Makes a Person Respectable
Money turns a man into a devil.
How far can we say about the wonders of money, brothers?
Money makes a person a prisoner ||1||

Money makes itself alien.
Money shows the way to relationships.
Money turns man into a demon.
Money creates bad addiction in a person ||2||

Money increases a person's respect.
Money reduces the respect of a person.
Money elevates a person.
Money brings a person down ||3||

Money destroys a person's faith.
Money makes a person dishonest.
Money makes a person a cheater.
Money teaches us to be deceitful ||4||

Money makes a person cruel.
Money makes a person selfish.
Money makes a person greedy.
Money makes a person greedy. ||5||

When money talks then humanity dies.
When money talks, faith dies.
When money talks, you lose your sleep.
When money talks, the chest swells. ||6||

When money talks, it stops talking.
Lakshmi smiles when money speaks.
When money speaks, Saraswati runs away.
When money talks, life disappears. ||7||

मेरा मानना है कि मानवाधिकार मनुष्य की स्वतंत्रता, संपदा और समानता की भूख से पैदा हुआ है। भारतीय समाज हो या पश्चिमी समाज सभी अर्थ के विकास से अन्य सभी विकास स्वीकार करते हैं। भौतिक और सांस्कृतिक विकास अर्थ की नींव पर खड़ा हुआ है। लोकतंत्र में अर्थ के बिना देश का कभी पूर्ण विकास के स्तर तक नहीं पहुँचाया जा सकता है।

लोकतंत्र को पूर्ण विकास के स्तर पहुँचाना कठिन है। लोकतांत्रिक व्यवस्था सदा अधूरी और कुछ हद तक लेट होती है क्योंकि लोकतांत्रिक व्यवस्था में सरकार का संचालन समाज पर आधारित रहता है। देश का शासन हमेशा जनता की सहमति से चलता है। जो भी कमी राज्य संचालन में होती है उसे एक–दूसरे के लिए उत्तरदायी ठहरा दिया जाता है। जब शासन से प्रजा का काम नहीं बनता है तो प्रजा शासक को बदल देती है। शासक हो या प्रजा दोनों अपने स्वार्थ सिद्धि की ज्यादा सोचते हैं। यदि दूसरी विपक्षी पार्टी की सरकार आ जाती है। स्वार्थ सिद्धि और पंचवर्षीय शासन के कारण योजनाएँ प्रायः अधूरी रह जाती हैं और लेट हो जाती हैं।

लोकतांत्रिक व्यवस्था के केन्द्र में अपनी कुर्सी और अर्थ ज्यादा होता है। विश्व में नये–नये नियम कानून बनाये जाते हैं और अधिकार भी अधिक दिये जाते हैं। नई समाज, नई अर्थ व्यवस्था, नई राजनीति, नई कार्य शैली, सब कुछ नया नयापन चाहते हैं। आज के इंसान को पुराने में संतोष नहीं है। इस परिवर्तनशील संसार में, आधुनिक युग में कुछ ज्यादा ही परिवर्तन हो रहे हैं। यह परिवर्तन कहीं विकास की ओर चलते–चलते विनाश की ओर न चला जाएं यह भय भी पैदा हो रहा है। मानवाधिकार की लड़ाई में जैन धर्म के अनुसार नया कुछ नहीं होता है, सब पुराना है। वही पुराना द्रव्य अपनी पर्याय बदल कर नया बनकर आता है और प्रत्येक द्रव्य स्थिर बना रहता है।

अनादिकालीन इस द्रव्य व्यवस्था में जीव द्रव्य जो चार गति के रूप में इस दुनिया में हैं। उसमें मनुष्य गति के जीव हम सब हैं। मानव के अंदर आहार, भय, मैथुन, और परिग्रह ये चारों संज्ञाएँ अन्य सभी जीवों से अधिक पाई जाती हैं। आहार संज्ञा के कारण अच्छे से अच्छा भोजन करना चाहता है। काम संज्ञा के कारण कामी बनकर विषय भोग भोगना चाहता है।

I believe that human rights are born out of man's hunger for freedom, property and equality. Be it Indian society or Western society, everyone accepts all other developments from the development of money. Material and cultural development stands on the foundation of money. Without money in democracy, the country can never reach the level of full development.

It is difficult to take democracy to the level of full development. The democratic system is always incomplete and delayed to some extent because in the democratic system the operation of the government is based on the society. The governance of the country always runs with the consent of the people. Whatever shortcomings there are in the governance of the state, each other is held responsible. When governance does not serve the people, the people change the ruler. Be it the ruler or the subjects, both think more about achieving their own interests. If the government of another opposition party comes to power. Due to selfishness and five-year rule, plans often remain incomplete and get delayed.

At the center of a democratic system, one's position and meaning are greater. New rules and laws are made in the world and more rights are also given. They want new society, new economy, new politics, new working style, everything is new. Today's man is not satisfied with the old. In this changing world, many changes are taking place in the modern era. There is also a fear that this change, while moving towards development, may lead to destruction. According to Jainism, there is nothing new in the fight for human rights, everything is old. The same old substance changes its form and comes into new form and every substance remains stable.

In this eternal system of matter, the living matter which exists in this world in the form of four speeds. In that we are all human beings. These four nouns - food, fear, sex, and attachment - are found more in humans than in all other living beings. Due to the noun food, one wants to eat the best food. Because of the noun Kama, the object wants to enjoy pleasures by becoming lustful.

परिग्रह संज्ञा के कारण मनुष्य अर्थ लोलुपी हो गया है। भय संज्ञा के कारण जीवन की रक्षा का भय बना रहता है। लेकिन सम्यक्दर्शन और सम्यक्ज्ञान होनेपर संवेग को धारण करता है। संवेग का अर्थ है संसार, शरीर और भोगों से विरक्ति भाव का होना। यह विरक्ति भाव वैराग्य को उत्पन्न करके मानव को अर्थ और काम से हटाकर धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ की ओर अग्रसर करता है। ऐसा व्यक्ति धर्म पुरुषार्थ करते हुए अर्थ और काम पुरुषार्थ में समन्वित दृष्टिकोण रखता है। भौतिकवाद, पूँजीवाद, भोगवाद, से ऊपर उठकर साम्यवाद और समन्वयवाद को अपनाता है। उसके लिए राजनीति, व अर्थनीति दोनों धर्मनीति के साथ श्रेष्ठ लगते हैं। इसे वह न्यायनीति से स्वीकार करता है। वह भौतिकवादी, समाजसेवी से ऊपर उठकर व्रती समाज में पहुँच जाता है।

भगवान महावीर स्वामी ने एक व्रती समाज की स्थापन की है। व्रती समाज के अधिकारों की बात आज नहीं हो रही है। व्रती समाज के लिए आजीविका का अधिकार नहीं चाहिए। उसे आवास, भिक्षा (भोजन) और शिक्षा का अधिकार चाहिए। स्वास्थ्य का अधिकार भी उसके लिए नगण्य ही हैं क्योंकि विशेष रोग आने पर संल्लेखना ग्रहण कर लेता है। इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में परमोत्कृष्ट त्याग की अवस्था को धारण किये हुए ग्रह त्याग कर पात्री पद यात्री दिगम्बर व्रती साधु समाज को दिगम्बरत्व एवं संल्लेखना का अधिकार भी चाहिए। यह उनका मौलिक अधिकार है। व्रती साधु समाज में अर्थ नहीं परमार्थ मुख्य होता है लेकिन अर्थव्यवस्था की कार्य प्रणाली से गुजर कर वे परमार्थ में प्रवेश करते है इसीलिए अर्थशास्त्र की भी बात करते है और यही कारण है कि भगवान महावीर स्वामी ने अर्थ पुरुषार्थ का उपदेश दिया।

हम सब संसारी मानव प्राणियों का जीवन भौतिकवाद पर भी आधारित है क्योंकि कर्म के संयोग से हमारा जीवन पौद्गलिक भी है इसीलिए भौतिकवाद से हटकर केवल अध्यात्मवाद से जीवन की यात्रा पूर्ण नहीं हो सकती है। जीवन यात्रा पूर्ण करने के लिए भोजन, पानी, वस्त्र, मकान इत्यादि भौतिक वस्तुएँ की भी आवश्यकता होती है। यही भौतिकवाद के बीच अनेकांतवाद है। अनेकांतवाद, एकांतवाद, को लेकर नहीं चलता। जैन धर्म में वर्णित स्यादवाद एवं अनेकांतवाद से ही राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, नागरिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत अधिकारों में समन्वय स्थापित हो सकता है। जीवन नैतिक और सुसंस्कारित हो सकता है।

Due to the noun Parigraha, the meaning has become greedy. Due to fear, there is fear of saving life. But when there is right vision and right knowledge, it retains the emotion. Sanvega means detachment from the world, body and pleasures. This sense of detachment generates dispassion and removes man from wealth and lust and moves him towards the pursuit of religion and salvation. Such a person, while making religious efforts, has a coordinated approach towards economic and sexual efforts. Rises above materialism, capitalism and materialism and adopts communism and coordination. For him, both politics and economics seem superior along with religion. He accepts this with justice. He rises above the materialistic and social worker and reaches the fasting society.

Lord Mahavir Swami has established a fasting society. The rights of the fasting community are not being talked about today. The fasting society does not need the right to livelihood. He needs the right to housing, alms (food) and education. The right to health is also insignificant for him because he acquires the right to health when a particular disease occurs. In this democratic system, the Patri Padayatri Digambar Vrati Sadhu Samaj, which has attained the state of supreme renunciation after renouncing the planet, also needs the right to Digambarism and Sanlekhana. This is their fundamental right. In the Vrati Sadhu society, charity is the main thing, not money, but after going through the working system of economy, they enter charity, that is why we also talk about economics and this is the reason why Lord Mahavir Swami preached the artha purushartha.

The life of all of us worldly human beings is also based on materialism because due to the combination of karma, our life is also physical, that is why the journey of life cannot be completed by moving away from materialism and only through spirituality. To complete the journey of life, material things like food, water, clothes, house etc. are also required. This is Anekantvad among materialism. Anekantvad does not support solipsism. Political, social, Coordination can be established between economic, civil, cultural and personal rights. Life can be moral and cultured.

अर्थसंग्रह की प्रवृत्ति

यह निश्चित है कि इच्छा, आवश्यकता और मांग आविष्कार की जननी है। अर्थ की इच्छा, आवश्यकता और मांग दुनिया के सभी लोगों के अंदर है क्योंकि अर्थ से सुविधा, विलासिता, पद, प्रतिष्ठा एवं अन्य सभी संसारिक इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होती है। इच्छा के बिना मानव की गति नहीं होती है। इच्छा की पूर्ति के लिए इंसान तरह तरह के श्रम करता है इसीलिए आधुनिक अर्थशास्त्री कहते हैं कि अनियंत्रित इच्छा हमारे लिए कल्याण और विकास में कारण है। जहाँ असीम इच्छा है वहाँ शक्ति से अधिक श्रम और धन संग्रह की भावना जाग्रत होती है। इच्छा को नियंत्रित करने पर विकास अवरुद्ध हो जाता है और व्यक्ति आलसी हो जाता है, इसलिये धनसंग्रह की अनियंत्रित इच्छा होनी .चाहिए। इच्छाओं और आवश्यकताओं को रोकना नहीं चाहिए बल्कि और तीव्रता लाना चाहिए। मनुष्य की इच्छा पूर्ति होती है तो लालच बढ़ जाता है और इच्छा की पूर्ति नहीं होती है तो क्रोध पैदा होता है और दोनों ही मनुष्य के शत्रु है। इसलिए कहा है कि ''शक्ति नही बल्कि इच्छा राज्य का आधार है।''

आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार अनियंत्रित इच्छाओं से अर्थ नीति का निर्धारण होता है। व्यक्ति अर्थ अर्जन की प्रवृत्ति में संलग्न होता है। जैन दर्शन के अनुसार इच्छाएँ असीम होती हैं। जैन धर्म में इच्छाओं को समाप्त करने को नहीं कहा बल्कि इच्छा को नियंत्रित करने की बात को कहा है। जैन दर्शन में देश, समाज और परिवार के विकास के लिए बात कही गई है। 'इच्छा निरोधस्तपः' इच्छा का निरोध करना तप है। इच्छाओं के दमन करने का नाम तप नहीं है। यही भगवान महावीर स्वामी के द्वारा प्रतिपादित सूत्र का रहस्य है। इच्छाओं के दमन करने पर वे कहीं न कहीं से प्रस्फुटित होती हैं। जैसे किसी व्यक्ति के पैर में फोड़ा हो जाए और वह उसे ऊपर से वह दमन करता रहे, वह उसका पस न निकालें तो वह विकराल रूप लेकर सामने आता है। कुछ समय बाद पैर ही काटना पड़ता है। फोड़े को दबाना दमन की क्रिया कहलाती है जबकि ऐसा खान–पान किया जाए कि फोड़ा उत्पन्न ही न हो इसी का नाम इच्छा निरोध है अथवा उस फोड़े की पस को ऑपरेशन द्वारा निकाल कर साफ किया जाए और सुखाने के लिए उसकी मलहम–पट्टी के साथ दवा ली जाए।

Tendency to Accumulate Wealth

It is certain that desire, need and demand are the mothers of invention. The desire, need and demand for money is there within all the people of the world because from money one gets convenience, luxury, position, prestige and all other worldly desired things. Without desire there is no human movement. Man does various kinds of labor to fulfill his desires, that is why modern economists say that uncontrolled desires are the reason for our welfare and development. Where there is unlimited desire, the feeling of hard work and accumulation of wealth arises more than power. If desire is controlled, growth gets blocked and the person becomes lazy, hence there should be uncontrolled desire to accumulate wealth. Desires and needs should not be stopped but should be intensified. Man's wish is fulfilled. When greed increases and desires are not fulfilled, anger arises and both are enemies of man. That is why it is said that "not power but will is the basis of the state."

According to modern economists, economic policy is determined by uncontrolled desires. The person engages in the tendency to earn money. According to Jain philosophy, desires are limitless. In Jainism, it is not said to end desires but it is said to control desires. Jain philosophy talks about the development of country, society and family. 'Iccha Nirodhastapa:' Restraining desire is penance. Penance is not about suppressing desires. This is the secret of the formula propounded by Lord Mahavir Swami. When desires are suppressed they emerge from somewhere. For example, if a person develops a boil on his leg and he continues to suppress it, if he does not remove the pus from it, then it appears in a monstrous form. After some time the leg has to be amputated. Suppressing the boil is called the act of suppression, while eating and drinking in such a way that the boil does not occur is called Ichcha Nirodh or suppressing the pus of that boil. It should be removed by operation and cleaned and the medicine should be taken along with its bandage for drying.

उस समय जो कष्ट होता है उसे सहन किया जाए। उसी का नाम संयम है। इच्छा का निरोध करना न्याय नीति और धर्म है। अतः जैन धर्म के अनुसार 'न्यायोतपादधनाम्' कहा गया है। धन कमाने और आवश्यकतानुसार धन संग्रह करने का निषेध नहीं है बल्कि धन को न्याय, नीति और संयम पूर्वक कमाना चाहिए। उसका व्यय वर्गीकरण भी आवश्यकतानुसार करना चाहिए। धन के प्रति मूर्च्छा भाव नहीं होना चाहिए। मूर्छा भाव का अर्थ चमड़ी चली जाए पर दमड़ी न जाए, ऐसे लोभ–लालच वाली दशा मूर्च्छा वालों की होती है।

अर्थसंग्रह का उद्देश्य

आर्थिक विकास, पारिवारिक विकास, सामाजिक विकास, सांस्कृतिक विकास, राजनैतिक विकास, बौद्धिक विकास, अध्यात्मिक विकास हो उन सब के पीछे कोई न कोई प्रयोजन या उद्देश्य होता है। सब के उद्देश्य अलग–अलग हो सकते हैं परंतु उन सब का मूल उद्देश्य सुख शांति और आनंद की प्राप्ति का होता है। जैन धर्म में अव्याबाध सुख की बात कही गई है। वह अव्याबाध सुख मुक्त अवस्था में जीव को प्राप्त होता है। संसार अवस्था में नहीं जबकि मोक्ष अवस्था में असीम और अनंत सुख की प्राप्ति हो सकती है। अरहंत परमेष्ठी को अनंत सुख की प्राप्ति हो जाती है। उस अनंत सुख की प्राप्ति अज्ञान, मिथ्यात्व, मोह, कुदृष्टि और विघ्न कारक अतंराय कर्म के नांश होनेपर होती है।

यहाँ आर्थिक विकास और धन संग्रह के प्रयोजन का प्रसंग है अतः धन संग्रह भी ऐसा हो जो अव्याबाध सहित हो जिसके अर्जन में दूसरों को बाधा न आती हो, प्रकृति बाधित न होती हो। राजनीति, समाजनीति, अर्थनीति, देशनीति, आदि बाधित न होती हो। धनार्जन और आर्थिक विकास सुख कारक हों, दुःख कारक नहीं। मार्क्स, कैनिज, मीयर, बाल्डविन, साइमन कुजनेट्स, आर्थर ल्युइस, विलियम्सन, बैट्रिक या कोई भी अन्य अर्थशास्त्री हो, उनका आर्थिक विकास के पीछे मुख्य उद्देश्य या दृष्टिकोण निम्न है–

1. धन के माध्यम से सुख–सुविधाओं को प्राप्त करना।
2. विषय भोग वासना की पूर्ति करना।

The pain that occurs at that time should be tolerated. Its name is restraint. Restraining desire is justice, policy and religion. Therefore, according to Jainism, it has been said 'Nyayopaddhanam'. There is no prohibition on earning money and accumulating it as per need, but money should be earned with justice, policy and restraint. Its expenditure should also be classified as per requirement. There should not be unconsciousness towards money. The meaning of the feeling of unconsciousness is that the skin goes away but the breath does not go away, this is the condition of the foolish people due to greed.

Purpose of Accumulation

Be it economic development, family development, social development, cultural development, political development, intellectual development, spiritual development, there is some purpose or objective behind them all. Everyone's objectives may be different but the basic objective of all of them is to achieve happiness, peace and joy. Jainism talks about uninterrupted happiness. The living being receives that uninterrupted happiness in a free state. While not in the worldly state, one can attain infinite and infinite happiness in the state of salvation. Arahant Parmeshthi attains infinite happiness. That infinite happiness is achieved by the destruction of ignorance, falsehood, delusion, evil vision and Atarai Karma which cause obstacles.

Here there is a reference to the purpose of economic development and accumulation of wealth, hence the accumulation of wealth should also be such that it should be free from obstacles, in which others are not hindered in earning it, and nature should not be disrupted. Politics, social policy, economic policy, national policy, etc. should not be disrupted. Earning money and economic development should be a source of happiness, not a source of sorrow. Be it Marx, Kaniz, Meier, Baldwin, Simon Kuznets, Arthur Lewis, Williamson, Batrick or any other economist, their main objective or approach behind economic development is as follows-

1. Attaining comforts and luxuries through money.
2. Satisfying sexual desires.

3. जीवनयापन के लिए आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करना।
4. पद प्रतिष्ठा प्राप्त करके अहम् का पोषण करना।
5. उच्च पद की प्राप्ति करना।
6. इच्छा पूर्ति करना।
7. निज और पर की आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
8. दान पुण्य और परोपकार आदि धर्म क्रियाओं में लगाकर पुण्य संचय करना।
9. आगामी काल में सुख सुविधाओं को और सद्गति को प्राप्त करना।
10. सामाजिक, राजनैतिक एवं व्यक्तिगत अधिकारों को प्राप्त करना।

वर्तमान में मनुष्य की सोच अर्थ प्रधान हो गई है। वह सोचता है कि सुख–सुविधा और आनंद का मूल स्त्रोत धन है। इन सभी कारणों से सारे विश्व में आज अर्थ मुख्य हो गया है और परमार्थ गौण हो गया है। जहाँ अर्थ प्रधान हो जाता है वहाँ अन्याय और अनीति को जनता अपनाने लग जाती है और अधिकारों की लड़ाई होने लग जाती है। इसीलिए जैन धर्म और दर्शन में अर्थ संग्रह की बात अर्थ पुरुषार्थ के रुप से तो कही गई हैं लेकिन उसके प्रति मूर्छा भाव का निषेध किया गया है। तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय 7 सूत्र न. 17 में आचार्य उमास्वामी ने मूर्छा को परिग्रह कहा है। मूर्छा भाव लड़ाई–झगड़े का कारण है।

अर्थ के प्रति जो अति लालसा, संग्रह वृत्ति, आवश्यकता होने पर भी उसे खर्च नहीं करना और संग्रह कर दबा कर रख लेना मूर्छा कहलाती है। भगवान महावीर स्वामी ने जैन धर्मानुयाईयों को मूर्छा का निषेध किया है। संग्रह वृत्ति वाला यदि मूर्छा से रहित है तो ऐसा व्यक्ति आवश्यकता अनुसार उस धन को खर्च करता है, अनावश्यक खर्च नहीं करता। जैसे हमारे शरीर को भोजन, पानी, कपड़े और मकान आदि आवश्यक है, प्यासे को पानी, भूखे को भोजन, असुरक्षित को मकान और लज्जा ढाकने को वस्त्र आवश्यक हैं। शारीरिक स्थिति बनाये रखने के लिए आवश्यकता अनुसार खाद्य पदार्थों को देना भी आवश्यक है किन्तु चल चित्र देखना, शरीर का अलंकार, (श्रृंगार) करना, स्वाद युक्त हानि कारक भोजन करना, राग रंग से युक्त संगीत सुनना, एवं मद्यपान आदि नशीले पदार्थों का सेवन इत्यादि करना ये सब मन को विकृत और शरीर को अस्वस्थ्य बनाते हैं अतः उसका त्याग करना चाहिए यही जैन दर्शन है। सम्पत्ति पर परिवार के प्रत्येक सदस्य समाज एवं देश का अधिकार होता है परंतु किसका, कितना, कब, कैसे अधिकार होता है। इसके लिए प्रत्येक समाज और देश का संविधान अलग–अलग है।

3. To obtain essential commodities for survival.
4. To nourish the ego by attaining position and prestige.
5. Om To attain a high position.
6. Fulfilling wishes.
7. Fulfilling one's own and others' needs.
8. To accumulate virtue by engaging in religious activities like charity and philanthropy.
9. To achieve happiness and salvation in the future.
10. To achieve social, political and personal rights.

At present man's thinking has become materialistic. He thinks that the basic source of comfort and happiness is money. Due to all these reasons, today in the whole world, money has become the main thing and altruism has become secondary. Where money becomes dominant, people start accepting injustice and unfairness and a fight for rights starts. That is why in Jainism and philosophy, accumulation of wealth has been talked about as a form of effort. But feeling foolish towards him has been prohibited. Tattvartha Sutra Chapter 7 Sutra No. In verse 17, Acharya Umaswami has called unconsciousness as Parigraha. Stupidity is the cause of fights.

The excessive craving for money, the tendency to hoard it, not spending it even when needed and hoarding it and keeping it under control is called foolishness. Lord Mahavir Swami has prohibited Jain followers from becoming unconscious. If a person with the habit of collecting is free from foolishness, then such a person spends the money as per need and does not spend unnecessarily. Just as our body needs food, water, clothes and shelter, the thirsty needs water, the hungry need food, the insecure need shelter and the insecure need clothes to cover their shame. To maintain the physical condition it is essential to provide food as per requirement but watching movies, decorating the body, eating tasty harmful food, listening to music full of passions, drinking alcohol and consuming intoxicants etc. all these distort the mind and make the body unhealthy, hence they should be abandoned this is Jain philosophy. Every member of the family, society and country has a right on the property but who has the right, how much, when and how. Every society and country has different constitution for this.

अविभाज्य सम्पत्ति

जैन कानून के अनुसार पैतृक संपत्ति बंटवारे के योग्य है लेकिन जो सम्पत्ति बँटवारे योग्य नहीं होती है उसे अविभाज्य सम्पत्ति कहते हैं। जिस सम्पत्ति को पिता, चाचा, ताऊ जी आदि ने अपने पराक्रम या योग्यता के आधार पर स्वअर्जित (प्राप्त) किया हो वह सम्पत्ति बँटवारे योग्य नहीं होती, जैसे राज्य, पत्नी, विद्या ज्ञान, मंत्रसिद्धि आदि। ऐसी अविभाज्य सम्पत्ति को पिता अपने ज्येष्ठ पुत्र के लिए दें। लेकिन ज्येष्ठ पुत्र अयोग्य हो तो उससे छोटे पुत्र को दे दे जो पिता की सेवा करे, अंत समय तक भरण पोषण करे।

यदि समस्त सम्पत्ति का बँटवारा हो गया हो और माता–पिता के कोई और दूसरी संतान हो जाती है तो अन्य संतान को दी गई सम्पत्ति को लेकर पुनः विभाजन नहीं किया जा सकता। पति की मृत्यु हो जाने के उपरांत यदि कोई विधवा नारी पुनः विवाह करती है तो पूर्व के पति की सम्पत्ति को प्राप्त करने का अधिकार नहीं दिया जानाा चाहिए। यदि पूर्व पति से उत्पन्न कोई संतान उस माँ के साथ जाती है तो कुछ समय तक उसके भरण–पोषण के योग्य भोजन सामग्री पूर्व पति की सम्पत्ति से प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए। लोकतंत्र के कुछ दिन पूर्व तक जैन धर्मानुसार जैन समाज में बहु विवाह पद्यति थी अतः जैन यदि बहुपत्नी रखता था तो उसके संबंध भद्रबाहु संहिता एवं अर्हदनीति ग्रंथ में एक विशेष बात यह कही है कि यदि एक ही पति की ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन जातियों की पत्नियाँ है और उनकी संतान हैं तो उनके बीच सम्पत्ति का बँटवारा करने के लिए सम्पत्ति के दस भाग करना चाहिए। उसमें चार भाग ब्राह्मणी के पुत्र को, तीन भाग, क्षत्राणी के पुत्र को, दो भाग वैश्यरणी के पुत्र को और एक भाग धर्म कार्य में खर्च करना चाहिए। लेकिन लोकतंत्र के कानून के अनुसार सभी पुत्र पुत्रियाँ बराबर के उस धन संपत्ति के अधिकारी है।

मित्र से, खेल से, ससुराल से, जमीन में गड़ी हुई, खोदने से पिता के मरण के बाद और डूबी हुई प्राप्त सम्पत्ति विभाजन के योग्य नहीं होती है।

माता–पिता को स्वयं अपने जीवित रहते हुए संपत्ति का विभाजन (बँटवारा) कर देना चाहिए विभाजन के उपरांत पिता को मिली सम्पत्ति का विभाजन पिता की मृत्यु के बाद ही करना चाहिए जीवित रहते नहीं।

Indivisible property

According to Jain law, ancestral property is eligible for division but the property which is not eligible for division is called indivisible property. The property which has been self-earned (acquired) by father, uncle, paternal uncle etc. on the basis of their valour or ability is not eligible for division, such as kingdom, wife, knowledge, mantrasiddhi etc. The father should give such indivisible property to his eldest son. But if the eldest son is incapable, then he should give it to the younger son who will serve the father and support him till the end.

If the entire property has been divided and the parents have another child, then the property given to the other child cannot be divided again. If a widow woman remarries after the death of her husband, then she should not be given the right to inherit the property of her previous husband. If a child born from the previous husband goes with the mother, then she should have the right to get food material sufficient for her maintenance from the property of the previous husband for some time. According to Jainism, till some days before democracy, there was polygamy in Jain society, so if a Jain kept multiple wives, then a special thing has been said in the Bhadrabahu Samhita and Arhadneeti texts that if the same husband has wives from Brahmin, Kshatriya, Vaishya castes and they have children, then for dividing the property among them, the property should be divided into ten parts. Out of that, four parts should go to the son of a Brahmin woman, three parts to the son of a Kshatrani woman, two parts to the son of a Vaishyarani woman and one part should be spent on religious work. But according to the law of democracy, all sons and daughters are equally entitled to that wealth and property."Property received from a friend, from games, from in-laws, buried in the ground, after the death of the father by digging and drowned is not eligible for division. Parents should themselves divide their property while they are alive. The property inherited by the father after the division should be divided only after the father's death, not while he is alive.

जो पुत्र अपने पिता के जीवित रहते हुए पिता की सम्पत्ति पर अधिकार जमाता है और उसे लेने की बात करता है वह पुत्र न होकर कुपुत्र है। महापुराण में आचार्य जिनसेन स्वामी ने यह भी कहा है कि पुत्र की शादी होते ही उसे अपनी आजीविका चलाने पुत्र वधु और पुत्र को रहने के योग्य धन सम्पत्ति अवश्य देना चाहिए। बाकी पुत्र अपने पुरूषार्थ से इतना धन कमायें कि अपनी आजीविका उन पत्नि और बच्चों के साथ माता–पिता की देख–रेख, भरण–पोषण कर सकें। यदि पुत्र चोर, व्यसनी, पागल, दुराचारी, नपुंसक, अंधा, गूंगा, बहरा, लंगड़ा, पागल, अपाहिज है तो पिता उसे अपनी सम्पत्ति के भाग से उसे वंचित रख सकता है। लेकिन ऐसी संतान को जीवन के गुजारे के लिए अधिकार है भोजन, वस्त्र आदि जीवन निर्वाह के आवश्यक समाग्री देना चाहिए। लेकिन उनका रोग शांत हो जाने पर अर्थात् पूर्ण स्वस्थ हो जाने और योग्यता आ जाने पर वे सम्पत्ति के अधिकारी हो जाते हैं। यदि उनकी पत्नि या बच्चें पूर्ण स्वस्थ्य और योग्य हैं तो भी वे अपनी सम्पत्ति के अधिकारी हैं। स्व अर्जित सम्पत्ती पिता किसी को भी दे सकता है। पैतृक सम्पत्ति में माँ के गर्भ में ही संतान के आते ही अधिकार प्राप्त हो जाता है।

जब पुत्र बालिग हो जाये और स्वयं अर्थोपार्जन करने लगे तब अपने भरण–पोषण के लिए पिता से धन की माँग करने का अधिकार नहीं है। विधवा माँ जिस बेटे के साथ रहकर अपना भरण–पोषण करते हुए जीवनयापन करती है जीवित रहते हुए उसी पुत्र को लिखकर सम्पत्ति दे सकती है। लेकिन यदि उस पुत्र को सम्पत्ति देने के पूर्व मरण को प्राप्त हो जाती है तो सभी पुत्रों को उस सम्पत्ति के बँटवारे का अधिकार है। जीवित अवस्था में उस माँ को अपनी सम्पत्ति धार्मिक कार्यों जैसे पूजन, मंदिर होना, तीर्थ यात्रा आदि में खर्च करने का पूर्ण अधिकार है। वर्तमान कानून में भी 125 Cr. P.c भरण पोषण का अधिकार एवं दत्तकग्रहण को भरण पोषण अधिनियम के अंतर्गत रखा गया है।

संतान के नाबालिग रहने पर पिता अपनी सम्पत्ति को बेचने अथवा व्यय करने का अधिकार रखता है। बाबा की सम्पत्ति पर पिता और पुत्र दोनों का समान अधिकार है। दत्तक पुत्र को बाबा की सम्पत्ति को समान भाग पाने का कोई अधिकार नहीं है। यदि बाबा और पिता की मृत्यु हो जाये तो उस सम्पत्ति को दत्तक पुत्र भी वसीयत के रूप में प्राप्त कर सकता है।

A son who claims his father's property while his father is alive and talks of taking it is not a son but a bad son. In Mahapuran, Acharya Jinsen Swami has also said that as soon as the son gets married, he must give enough money to his daughter-in-law and son to live on. The rest of the sons should earn enough money through their efforts so that they can earn their livelihood and take care of their parents along with their wife and children. If the son is a thief, addict, insane, immoral, impotent, blind, dumb, deaf, lame, insane, handicapped, then the father can deprive him of his share of property. But such a child has the right to live life and should be given food, clothes, etc., essential items for living. But when their disease subsides, i.e. when they become completely healthy and capable, they become entitled to the property. If their wife or children are completely healthy and capable, then also they are entitled to their property. A father can give his self-earned property to anyone. The child gets the right to the ancestral property as soon as it is conceived in the mother's womb."When the son becomes an adult and starts earning money himself, he does not have the right to demand money from the father for his maintenance. A widowed mother can give the property in writing to the son with whom she lives and earns her livelihood while she is alive. But if she dies before giving the property to that son, then all the sons have the right to divide that property. While alive, that mother has the full right to spend her property in religious activities like worship, building a temple, pilgrimage, etc. Even in the present law, the right to maintenance under 125 Cr. P.c and adoption have been kept under the Maintenance Act.

If the child is a minor, the father has the right to sell or spend his property. Both father and son have equal rights on the property of the father. The adopted son has no right to get an equal share of the father's property. If the father and father die, the adopted son can also get that property by will.

पति के मरण के उपरांत विधवा स्त्री के सास ससुर यदि कोई दूसरी संतान गोद ले लेते है तो वह विधवा बहू अपने सास ससुर की सम्पत्ति को अपने हिस्से की प्राप्त करने की अधिकारी होती है। विधवा पुत्र बधू ने जो सम्पत्ति का संचय अपने पुरूषार्थ से किया हो उस सम्पत्ति का सास ससुर आदि किसी को भी बँटवारा करके प्राप्त करने का अधिकार नहीं है।

यदि ससुर की मृत्यु पहले हो जाये और पति की मृत्यु बाद में हो तो उस विधवा पुत्र बधू को संम्पूर्ण सम्पत्ति को प्राप्त करने का अधिकार है। लेकिन उसके लिए अपनी सास को और कुटुम्बी जनों को भरण–पोषण और जीवन यापन करने के लिए उचित द्रव्य सामग्री देना होगी। लेकिन ऐसी दशा में सास दूसरी शादी करके किसी संतान को जन्म देती है या लेती है तो बधु की संपत्ति का बटवारा नहीं कर सकती क्योंकि उस सम्पत्ति की स्वामिनी पुत्र वधु होती है न कि सास। जो संपत्ति सास ने स्वयं अर्जित कर पहले से अपने नाम पर की है उसे ले सकती है।

संन्यासी पुत्र के सम्पत्त्याधिकार

यदि कोई पुरूष अपनी पैतृक सम्पत्ति के विभाजन के पूर्व संन्यास धारण करके साधु बन जाता है तो उस पैतृक सम्पत्ति को उसकी पत्नी और बच्चों को प्राप्त करने का अधिकार बनता है। यदि कोई व्यक्ति अविवाहित मर जायें अथवा साधु बन जाये तो पैतृक सम्पत्ति का भाग उसके भाईयों में बाँट देना चाहिए। यदि भाई न हो तो बहनों में बाँट देना चाहिए। जो साधूवद छोड़कर पुनः घर आ जाता है तो उसे अपने हिस्से की संपत्ति लेने का अधिकार एवं विवाहिता बेटियों को पैतृक सम्पत्ति के बँटवारे का जैन कानून के अनुसार अधिकार नहीं है। लेकिन यदि कोई बेटी शादी नहीं करती है और घर में रहकर ब्रह्मचर्य व्रत लेकर साध्वी जैसा जीवन बिताती है तो उसे अपनी पैतृक सम्पत्ति का भाग लेने का अधिकार होना चाहिए।

If the mother-in-law and father-in-law of the widow adopt another child after the death of her husband, then that widowed daughter-in-law is entitled to get her share of the property of her mother-in-law and father-in-law. The property that the widowed daughter-in-law has accumulated by her own efforts is not entitled to be divided by anyone including the mother-in-law and father-in-law.

If the father-in-law dies first and the husband dies later, then that widowed daughter-in-law has the right to get the entire property. But for that, she will have to give proper material things to her mother-in-law and family members for their maintenance and living. But in such a situation, if the mother-in-law marries again and gives birth to a child, then she cannot divide the property of the daughter-in-law because the owner of that property is the daughter-in-law and not the mother-in-law. The property that the mother-in-law has already earned and registered in her name can be taken by her mother-in-law.

Property rights of sannyasi son

If a man takes sannyasa and becomes a monk before the division of his ancestral property, then his wife and children have the right to inherit that ancestral property. If a person dies unmarried or becomes a monk, then his share of the ancestral property should be divided among his brothers. If there is no brother then it should be distributed among the sisters. One who leaves Sadhuvad and returns home does not have the right to take his share of the property and married daughters do not have the right to distribute ancestral property as per Jain law. But if a daughter does not marry and stays at home and takes a vow of celibacy and leads a sadhvi-like life, then she should have the right to take part in her ancestral property.

माता के सम्पत्तियाधिकार

पिता की मृत्यु के उपरांत यदि पुत्रों में बँटवारा होता है और माँ जीवित है तो माता को भी अपने पति के न होने पर भी सम्पत्ति के समान भाग प्राप्त करने का अधिकार है। पुत्र यदि चाहे तो माँ को कुछ अधिक सम्पत्ति दे सकते हैं अथवा सभी पुत्र अपने हिस्से का एक चौथाई भाग अधिक भी दे सकते हैं। माता के मरण के उपरांत वह सम्पत्ति समस्त पुत्री और पुत्रों को परस्पर में समान भाग से बाँट लेना चाहिए। जैन कानून के अनुसार जिस व्यक्ति के कोई पुत्र न हो और मात्र पुत्री हो तो उस सम्पत्ति पर पूर्ण अधिकार उस पुत्री का होगा। यदि किसी का कोई निकट उत्तराधिकारी नहीं है तो दोहिता उस सम्पत्ति का अधिकारी होगा क्योंकि नाना और दोहिता के अति निकट पारिवारिक जैसा संबंध होता है। माता का धन पुत्री को मिलता है चाहे वह विवाहिता हो अथवा अविवाहिता। यदि वह पुत्री मृत्यु को प्राप्त हो जाती है और उसके कोई दामाद नहीं है तो उस सम्पत्ति का मृत्यु के बाद उसके भाई का अधिकार होता है। यदि किसी की एक से अधिक विधवा स्त्रियाँ होती हैं तो उस पुरूष की सम्पत्ति का अधिकार उन विधवाओं के पुत्र का होता है। विधवा स्त्री और उसके पुत्र की मृत्यु हो जाने पर यदि कोई पुत्र नहीं है तो उस सम्पत्ति की अधिकारी उस स्त्री की माँ होती है। यदि किसी का पति पागल हो गया हो अथवा संन्यासी हो गया हो अथवा लापता हो गया हो और वह मृत मान लिया गया हो तो उस पति की सम्पत्ति का पूर्ण अधिकार उसकी पत्नि का होता है। जिसकी अनेक पत्नियाँ है और उनमें से किन्हीं एक–दो के पुत्र हैं तो उस सम्पत्ति का अधिकार पुत्रों का होता है। निःसंतान स्त्री के भाग में आई हुई सम्पत्ति को वह अपने मायके या अन्य किसी संबंधी जन को नहीं दे सकती।

यदि किसी व्यक्ति की सम्पत्ति का कोई उत्तराधिकारी न हो तो उस सम्पत्ति को राजा के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। यदि पाँच वर्ष तक कोई उसकी माँग नहीं करता है तो उसके बाद वह सम्पत्ति राजा की हो जाती है। लेकिन उस सम्पत्ति को राजा अपने निजी कार्यो में नहीं ले सकता है। उस सम्पत्ति को धार्मिक और सामाजिक कार्यों में लगाना होता है। धार्मिक संस्थाओं की सम्पत्ति को राजा ग्रहण नहीं कर सकता। उसे धार्मिक कार्यों में उपयोग में लेना चाहिए।

Mother's Property Rights

If after the death of the father there is division among the sons and the mother is alive, then the mother also has the right to receive an equal share of the property even in the absence of her husband. If the son wishes, he can give some more property to the mother or all the sons can give one-fourth more of their share. After the death of the mother, the property should be divided equally among all the daughters and sons. According to Jain law, if a person has no son and only a daughter, then that daughter will have full rights over that property. If someone has no immediate heir then the maternal grandfather will be entitled to that property because the maternal grandfather and the maternal grandfather have a very close family like relationship. The daughter inherits the mother's wealth whether she is married or unmarried. If that daughter dies and she has no son-in-law, then after her death the property goes to her brother. If someone has more than one widow, then the rights of that man's property belong to the sons of those widows. After the death of a widow and her son, if there is no son, then the woman's mother becomes the owner of that property. If someone's husband has gone mad or has become a monk or has gone missing and he is considered dead, then his wife has full rights to his property. If someone has multiple wives and one or two of them have sons, then the sons have the right to that property. A childless woman cannot give away the property that has come to her parents' house or to any other relative.

If there is no heir to a person's property, then that property should be kept safe for the king. If no one demands it for five years, then after that the property becomes the king's. But the king cannot use that property for his personal purposes. That property has to be used for religious and social purposes. The king cannot accept the property of religious institutions. It should be used in religious activities.

बहिन के सम्पत्तियाधिकार

पिता ने अपने पुत्रों के बीच जो सम्पत्ति का विभाजन किया हो और उसके बाद जो सम्पत्ति पिता के हिस्से में रहती है उस सम्पत्ति का माता–पिता के मरण के उपरांत पुत्र और पुत्रियों के बीच अर्थात् भाई–बहनों के बीच समान बँटवारा कर लेना चाहिए। भाई को अपनी बहिन की शादी पिता के न (मृत्यु) होनेपर जिम्मेदारी से योग्य वर खोज कर विवाह कर देना चाहिए। दासी पुत्रों को अपने राजा की सम्पत्ति पाने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिए। उन्हें जीवन के गुजारे एवं भोजन सामग्री देना चाहिए। बहिन की शादी शिक्षण और उसके भरण–पोषण की आवश्कता होने पर भाई को अपने माता–पिता से प्राप्त चतुर्थांश से लेकर दशांश तक अपनी बहिन के लिए खर्च करना या देना चाहिए। इससे अधिक बहिन का कोई अधिकार अपने माता–पिता और भाई की सम्पत्ति पर नहीं बनता है। वर्तमान भारतीय संविधान में भी ऐसा ही नहीं हैं।

स्त्री धन का अर्थ और उपयोग

शादी विवाह में अथवा किसी महोत्सव में देव, शास्त्र, गुरू और अग्नि को साक्षी मानकर वस्त्र, आभूषण, वाहन, जमीन, जायदाद आदि किसी कन्या या स्त्री को दी जाती हैं वह स्त्री धन कहलाता है। उसे अध्यग्नि धन भी कहते हैं।

जो सम्पत्ति वधु अपने माता–पिता, चाचा और भाई आदि परिजन से अपने मायके से लाए वह भी स्त्री धन कहलाता है।

जो सम्पत्ति सास और ससुर आदि ससुराल वाले अपनी बहु को विवाह में देते है वह प्रीतिदान अथवा प्रीतिदत्त नाम का स्त्री धन कहलाता है। जो सम्पत्ति विवाह के उपरान्त माता–पिता या पति से मिलती है उसे औद्विक अथवा सौद्विक अथवा सौदायिका नाम का स्त्री धन कहलाता है। जो धन सम्पत्ति विवाह अथवा विवाह की सालगिरह अथवा जन्मदिवस आदि के समय कोई संबंधी जन या मित्र जन देते है वह अन्वाध्येय नाम का स्त्री धन कहलाता है। कुल मिलाकर स्त्री को जो भी धन विवाह आदि में पुरुस्कार स्वरूप अथवा सहायता स्वरूप अलग से मिलता है वह उस स्त्री का अपना धन होता है। उस पर किसी अन्य व्यक्ति का अधिकार नहीं होता है। इसी कारण वह स्त्री धन कहलाता है उसे पुनः वापिस भी नहीं ले सकते है और उसका बँटवारा भी नहीं कर सकते।

Sister's Property Rights

The property that the father has divided among his sons and the property that remains in the father's share after the death of the parents, should be divided equally between the sons and daughters i.e. between brothers and sisters. A brother should responsibly find a suitable person and get his sister married in the absence of his father (death). Slave sons should not have any right to inherit their king's property. They should be given livelihood and food items. If there is a need for the sister's marriage, education and her maintenance, the brother should spend or give one-fourth to one-tenth of what he receives from his parents for his sister. Beyond this, the sister does not have any right over the property of her parents and brother. This is not the case even in the present Indian Constitution.

Meaning and use of Stree Dhan

In a marriage or any festival, clothes, jewellery, vehicles, land, property etc. are given to a girl or a woman with God, scriptures, Guru and fire as witnesses, that is called women's wealth. It is also called study money.

The property that the bride brings to her parents' home from her parents, uncles and brothers etc. is also called women's wealth.

The property which mother-in-law and father-in-law give to their daughter-in-law in marriage is called women's wealth named Preetidaan or Preetidutta. The property which is received from parents or husband after marriage is called women's wealth named Auvik or Saudik or Saudayika. The wealth and property which is given by a relative or friend at the time of marriage or marriage anniversary or birthday etc. is called women's wealth named Anvadhyaya. Overall, whatever money a woman receives as a reward or as separate help in marriage etc. A woman has her own money. No other person has any right over it. That is why it is called woman's wealth, it cannot be taken back nor can it be divided.

अकाल के समय अथवा दान पूजा के समय अथवा कारागार (जेल) की नौबत आ जाने पर स्त्री धन का पति उपयोग अपनी पत्नि की सहमति से ही कर सकता है। एक बार स्त्री धन लेने के बाद पति को चाहिए कि वह उस धन को लौटा दे यदि वह धन वापस करने की स्थिति में न हो तो वह अपनी पत्नि अथवा माँ से स्त्री धन पुनः न माँगे, उसे वाध्य न करे। स्त्री भी दिये हुए धन को वापिस करने के लिए पुरूष को वाध्य ना करें। विवाहिता पुत्रियां अपनी माँ के स्त्री धन को पाने की अधिकारी होती हैं। पिता के धन का बँटवारा करके पुत्र लेने के अधिकारी होते हैं। विवाहिता पुत्री का स्त्री धन माता–पिता और भाई बंधु को नहीं लेना चाहिए।

सम्पत्ति बँटवारे की विधि

सम्पत्ति विभाजन को बँटवारा कहते हैं। बुंदेलखण्ड में न्यारपन भी कहते हैं। इस बँटवारे की विधि को भगवान आदिनाथ ने प्रतिपादित किया है। उन्होंने बतलाया कि बँटवारे के दिन सर्वप्रथम जिनेंद्र देव की पूजा अर्चना और प्रतिमाभिषेक करना चाहिए। उसके पश्चात् परिजनों को बैठा कर अपनी सम्पत्ति को प्रस्तुत करना चाहिए और उसका लेखा–जोखा कर लेना चाहिए सर्व सहमति से और पिता या बाबाजी को मुखिया बनाकर बँटवारा कर लेना चाहिए। यदि बँटवारा संभव ना हो सके तो रिश्तेदारों और समाज के श्रेष्ठी जनों को बैठा कर बँटवारा कर लेना चाहिए। सबके संतुष्ट हो जाने पर लिखा–पढ़ी कर लेनी चाहिए जिससे आगे किसी प्रकार का विवाद न हो। यदि पिता ने स्वार्थवश, मोहवश बँटवारे में अन्याय किया हो तो वह बँटवारा अमान्य माना जायेगा। यदि उस विभाग में कोई छल कपट करता है तो उसे दंडनीय अपराध माना जायेगा और उसका निर्णय न्यायलय के द्वारा कराना चाहिए। यदि किसी संतान को विभाग के विषय में संदेह हो तो न्यायालय के समक्ष उसे रखा जा सकता है। बँटवारे के पूर्व यदि किसी व्यक्ति समाज, सरकार या संबंधीजनों से सम्पत्ति उधार ली हो तो उसे पहले चुकाना चाहिए फिर शेष बची सम्पत्ति का बँटवारा करना चाहिए। यदि किसी की बेटियाँ अधिक हों और बेटे कम हों तो बेटियों के लिए विवाह हेतु चर्तुथांश अलग निकालना चाहिए। बँटवारे के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अधिकारी एवं सम्पत्ति प्राप्त करता असंतुष्ट न हो।

इंन्द्रनन्दि जिन संहिता के श्लोक 35 के 38 तक दायाद अर्थात् सम्पत्ति देने क्रम क्रम का कथन करते हुए लिखा है कि विधवा पुत्र, भाई, भतीजा, सपिण्ड (सात पीढ़ी), पुत्री, निकटवर्ती गौत्र (चौदह पीढ़ी) सजाति वाले एवं राजा आदि को यथायोग्य धन देना चाहिए।

At the time of famine or at the time of charity or worship or in case of imprisonment, a husband can use his wife's money only with the consent of his wife. Once the husband has taken the woman's money, he should return it. If he is not in a position to return the money, then he should not ask for the woman's money from his wife or mother again, nor should he force her. A woman should also not force a man to return the money given to her. Married daughters are entitled to inherit their mother's wealth. Sons have the right to divide their father's wealth. Parents and brothers should not take the wife's wealth of a married daughter.

Method of Property distribution

Division of property is called partition. In Bundelkhand it is also called Nyarpan. This method of distribution has been propounded by Lord Adinath. He told that on the day of partition, first of all worship and idol consecration of Jinendra Dev should be done. After that, the family members should sit together and present their property and its accounting should be done with unanimous consent and it should be divided by making father or Babaji the head. If division is not possible then division should be done by involving relatives and senior members of the society. Once everyone is satisfied, the writing should be done so that there is no further dispute. If the father has done injustice in the division out of selfishness or attachment, then that division will be considered invalid. If anyone commits fraud in that department, it will be considered a punishable offense and its decision should be taken by the court. If any child has any doubt regarding the department then it can be placed before the court. Before distribution, if any person has borrowed property from the society, government or relatives, then it should be repaid first and then the remaining property should be divided. If someone's daughters. If there are more sons and less sons, then a fourth part should be set aside for the marriage of daughters. At the time of distribution, care should be taken that the officer and the recipient of the property should not be dissatisfied.

Indranandi Jina Samhita's verse 35 to 38, while stating the order of giving Daayad i.e. property, it is written that the widow, son, brother, nephew, Sapinda (seven generations), daughter, adjacent Gotra (fourteen generations) caste members and king etc. should be given as per their eligibility. Money should be given.

भरण-पोषण और संरक्षण अधिकार

भरण–पोषण का अर्थ गुजारे से है। प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन–यापन अर्थात् गुजारा करने के लिए भरण–पोषण करने का अधिकारी है लेकिन कुछ लोग अपना श्रम करके अथवा माता–पिता की सम्पत्ति प्राप्त करके अपने जीवन का और परिवार का गुजारा कर लेते हैं। मृतक पुत्रों की संतानें, विधवा नारियां, दासी–दास की संतानें, अनाथ, गरीब, असहाय और जो मनुष्य अपने परिजन की सम्पत्ति के बँटवारे के अधिकारी नहीं हैं ऐसे लोगों को भी भरण–पोषण का अधिकार चाहिए। जो परिजन साधन सम्पन्न है उन्हें इनका भरण–पोषण करना चाहिए। यदि वे नहीं कर सकते हैं तो राजा को उनका भरण–पोषण करना चाहिए। पिता की मृत्यु के बाद बड़े भाई को अपनी माँ, छोटे भाई बहनों का भरण–पोषण, विद्या अध्ययन और विवाह आदि कार्य करना चाहिए। यदि कोई व्यभिचारी रोगी भी है तो उसका भी भरण–पोषण करना चाहिए और उसे शिक्षा देकर व्यभिचार से मुक्त कराना चाहिए। रोगी को औषध देकर निरोगी भी बनाना चाहिए। सम्पत्ति प्राप्त करने का प्रथम उद्देश्य अपना और परिजनों का भरण–पोषण करने एवं संरक्षण देने का होता है।

प्रकृति, पुरूष, प्राणी, पर्यावरण, देश, समाज, परिवार और जीवन इत्यादि के संरक्षण की चुनौती इस भौतिकवादी युग में सबसे बड़ी है। आज न पर्यावरण सुरक्षित है, न प्राणी सुरक्षित है, इसलिए संरक्षण के अधिकार भी मानव को दिये गये हैं। मनुष्य भक्षण और रक्षण दोनों करता है। पर्यावरण, परिवार, समाज और प्रकृति आदि को बिगाड़ने का काम मनुष्य सर्वाधिक करता है, पशु–पक्षी आदि नहीं। अतः मनुष्य को संरक्षण की शिक्षा दी जाती है और नियम कानून बनाये जाते हैं।

रक्षा कब, क्यों, कैसे, किसकी की जाती है इन चार बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है। धर्म, धर्मात्मा, परिवार, देश, प्रकृति, संस्कृति, संस्कार, धर्म स्थान और प्राणी मात्र की रक्षा करना चाहिए। रक्षा इसलिए की जाती है क्योंकि रक्षा के बिना जीवन चल नहीं सकता, सुख शांति नहीं मिल सकती और समृद्धि नहीं मिल सकती। रक्षा तन, मन, धन, विनय, वात्सल्य और निःस्वार्थ भावना से करना चाहिए। दुःख–दर्द, बीमारी, आपत्ति–विपत्ति और उपसर्ग आने पर रक्षा करना चाहिए।

Maintenance and Protection Rights

Maintenance means subsistence. Every human being has the right to earn his living, but some people manage their life and family by doing their own labor or by acquiring the property of their parents. Children of deceased sons, widowed women, children of maids and slaves, orphans, the poor, the helpless and people who are not entitled to share the property of their relatives, such people also need the right to maintenance. Those family members who are resourceful should support them. If they cannot then the king must provide for them. After the death of the father, the elder brother should take care of his mother, younger siblings, education, study and marriage etc. Even if there is an adulterous patient, he should also be taken care of and freed from adultery by giving him education. The patient should also be made healthy by giving him medicine. The first purpose of acquiring property is to provide sustenance and protection to oneself and one's family.

The challenge of conservation of nature, man, animals, environment, country, society, family and life etc. is the biggest in this materialistic era. Today neither the environment nor the animals are safe, hence the rights of conservation have also been given to humans. Man both eats and protects. Man is responsible for spoiling the environment, family, society and nature etc. Most do it, not animals, birds etc. Therefore, humans are taught protection and rules and regulations are made.

It is necessary to consider these four points: when, why, how and whom protection is done. Religion, righteous soul, family, country, nature, culture, values, religious places and every living being should be protected. Protection is done because without protection life cannot go on, happiness, peace and prosperity cannot be achieved. Protection of body, mind, wealth, humility, affection and selflessness should be done. One should protect oneself in case of sorrow, pain, illness, objection, calamity and adversity

संरक्षण प्रदान करना नैतिक जिम्मेदारी है। पिता को अपनी पत्नि, संतान और परिवार का संरक्षण करना चाहिए। पिता के अभाव में बड़े भाई को छोटे भाईयों और बहिनों का संरक्षण करना चाहिए। यदि किसी परिवार में एक ही संतान है तो उसका संरक्षण पितामह अथवा अपने कुटुम्बीजनों को करना चाहिए। पिता के अभाव में यदि माता सक्षम है और बच्चे नादान हैं तो माता को उनका संरक्षण करना चाहिए। संरक्षण देने वाले पितामह, माता–पिता, भाई–चाचा, नाना–मामा, गुरु, राजा और मित्र होते हैं। इनके कर्त्तव्यनिष्ठ और पुरूषार्थशील होने पर देश, समाज, परिवार, धन, सम्पत्ति और प्रकृति आदि का संरक्षण हो जाता है।

स्वामी को अपनी अचल सम्पत्ति का संरक्षण राजा या सरकार के द्वारा लिखा–पढ़ी अर्थात् रजिस्ट्री स्वामी को अपने नाम से अथवा अपनी संतान के नाम से गवाही पूर्वक वसीयत के रूप में करना चाहिए। यदि वसीयत के बाद वसीयतनामा करनेवाले की मृत्यु हो जाती है तो अदालत द्वारा उस सम्पत्ति के उतराधिकारियों को सब की सहमति से पुनः रजिस्ट्री में अपना नाम दर्ज करा लेना चाहिए। ऐसा करने पर वह सम्पत्ति संरक्षित रहती है और उसका मालिक जब कभी बेचना चाहे या गिरवी रखना चाहे तो रख सकेगा। सम्पत्ति का लेना–देना मौखिक रूप से नहीं करना चाहिए। उसे गवाहगारों की गवाही में स्टाम्प पत्र पर रजिस्ट्री पूर्वक करना चाहिए क्योंकि एक कहावत है सौ वकी और एक लिखी बात बराबर होती है।

Providing protection is a moral responsibility. A father should protect his wife, children and family. In the absence of a father, the elder brother should protect the younger brothers and sisters. If there is only one child in a family, then his protection should be given to the grandfather or his relatives. If the mother is capable in the absence of the father and the children are innocent, then the mother should protect them. Those who provide protection are grandfathers, parents, brothers-uncles, maternal uncles, gurus, kings and friends. When they are dutiful and hard-working, the country, society, family, wealth, property and nature etc. are protected.

The owner should give protection to his immovable property in the form of a will written by the king or the government, i.e., to the registered owner in his own name or in the name of his children and witnessed by him. If the testator dies after the will is made, then the heirs of that property should get their names registered in the registry again with the consent of everyone. By doing this, the property remains protected and its owner will be able to keep it whenever he wants to sell or mortgage it. Transfer of property should not be done verbally. It should be registered on a stamped paper in the testimony of the witnesses because there is a saying that one hundred spoken words are equal to one written word.

अध्यात्म और अधिकार

जैन संस्कृति में मानव को चारों गतियों में सर्वोत्तम स्थान प्राप्त है। मानव को सभी प्रकार के अधिकार प्राप्त हैं। कर्तव्यों का पालन करने के लिए, आत्महित करने के लिए, परोपकार करने के लिए, धर्म, संस्कृति, प्रकृति और प्राणी रक्षा के लिए अधिकार देना या प्राप्त करना आवश्यक है। मनुष्य के अन्दर जिज्ञासायें, इच्छायें, विवेक, बुद्धि और अनेक प्रकार की कलायें जन्म जात होती हैं। जब मनुष्य के अन्दर स्वार्थ और परमार्थ जाग्रत होता है तब वह धर्म और कर्म दोनों करता है, यही उसको सर्वश्रेष्ठ बनाता है। मानव जीवन मूल्यवान तभी बना सकता है, जब उसमें विवेक, बुद्धि, नैतिकता, करूणा सद्व्यवहार, सत्य, सुचिता, कर्तव्य परायणता और आत्म हित की भावना आ जाए। जिसके अन्दर कर्तव्य पालन और परोपकार की भावना होती है, उसके अन्दर योग्यतायें उद्घाटित होने लगती हैं। सद् व्यवहार वह सीढ़ी है जिससे आप किसी के हृदय में उतर सकते हैं और योग्य बन सकते हैं। योग्य व्यक्ति को अधिकारों को पाने के लिये लड़ना नहीं पड़ता बल्कि वे उसे सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। अधिकारित व्यक्ति मूल्यवान हो जाता है। अधिकार की मूल जड़ योग्यता और कर्तव्य निष्ठा है।

कर्तव्य निष्ठ योग्य व्यक्ति निज कल्याण और जन कल्याणक के लिए जीता है। जैसे मूल जड़ के बिना वृक्ष सूख जाता है, वैसे ही कर्तव्यनिष्ठ, योग्य व्यक्तियों के सहयोग के बिना मानव समाज विकृत हो जाता है, अर्थात् अर्थ हीन हो जाता है। कर्तव्यनिष्ठ योग्य व्यक्तियों की हर देश, समाज और परिवार को आवश्यकता होती है, ऐसे व्यक्तियों को मान सम्मान दिया जाना चाहिए। जिसके पास जितने अधिकार होते है वह उतना ही मूल्यवान एवं ताकतवर होता है, परन्तु उसे नरंकुश नहीं होना चाहिए।

परिस्थितिजन्य प्राप्त क्षणिक अधिकारों से व्यक्ति मूल्यवान तो हो सकता है परंतु ऊँचाईयों तक नहीं पहुँच सकता है। गुणहीन वस्तु मूल्यहीन होती है। जैन धर्म में चार पुरुषार्थ रूप, कर्तव्य करने का अधिकार प्रत्येक मानव को दिया गया है। उसमें मोक्ष पुरुषार्थ को परम लक्ष्य माना गया है। मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थ की सिद्धि कर लेना माना गया है। पुरुषार्थ से जीवन मूल्यवान बनता है।

Spirituality and Rights

In Jain culture, man has the best position among all the four activities. Human beings have all types of rights. It is necessary to give or receive rights for performing duties, for self-interest, for charity, for religion, culture, nature and animal protection. Curiosity, desires, discretion, intelligence and many types of arts are born within a human being. When selfishness and altruism are awakened within a person then he does both religion and work, this makes him the best. Human life can be made valuable only when it has prudence, intelligence, morality, compassion, good behaviour, truth, wisdom, devotion to duty and a sense of self-interest. The one who has a feeling of performing duties and philanthropy, abilities start emerging in him. Good behavior is the ladder by which you can enter someone's heart and become worthy. A worthy person does not have to fight to get his rights, rather he gets them easily. The empowered person becomes valuable. The basic root of authority is competence and devotion to duty.

A dutiful, capable person lives for his own welfare and public welfare. Just as a tree dries up without its roots, similarly without the support of dutiful, capable people, human society gets distorted, that is, it becomes meaningless. Every country, society and family needs dutiful, capable persons, such persons should be given respect. The more rights a person has, the more valuable and powerful he is, but he should not be autocratic.

A person can become valuable but cannot reach heights due to momentary rights obtained in circumstances. A qualityless thing is worthless. Four forms of effort in Jainism, of doing duty. Rights have been given to every human being. In it, the pursuit of salvation is considered the ultimate goal. The main objective of human life is considered to be the achievement of Dharma, Artha, Kama and Moksha Purushartha. Life becomes valuable through hard work.

मोक्ष पुरुषार्थ की सिद्धि के लिये आध्यात्मिक होना परम आवश्यक है। आत्मा की निर्मलता बनाये रखने के लिये आत्मा के साक्षात्कार के लिये अध्यात्म परम आवश्यक है। अध्यात्म आत्मा की रक्षा करता है। अध्यात्म आत्मा के परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति कराता है।

आध्यात्मिक व्यक्ति ही आत्मा की अनुभूति करता है। अध्यात्म से ही व्यक्ति विषय भोगों से ऊपर उठकर मूल्यवान होता है। अध्यात्म ही मानवीय व्यवहार के लिए पथ प्रदर्शक होता है। अध्यात्म ही सामाजिक क्रियाकलापों का समीचीन मार्गदर्शन करता है। अध्यात्म आत्मा के निर्मल परिणामों से उत्पन्न होता है। अध्यात्म आत्मदृष्टि की वैचारिक इकाई है। आध्यात्मिक दृष्टि आ जाने पर भौतिक वस्तु का मूल्य कम हो जाता है। भौतिक वस्तुओं का मूल्य कम हो जाने पर अराजकता, हिंसा, झूठ, चोरी, उत्पीड़न, भय, शोषण और अनैतिकता समाप्त हो जाती है। आध्यात्मिक दृष्टि आ जाने पर ईमानदारी, नैतिकता, कर्त्तव्य परायणता, सत्य और अहिंसा पल्लवित होने लगती है। इसीलिए जिस व्यक्ति का जीवन आध्यात्मिक हो जाता है वह व्यक्ति देश और समाज की दृष्टि में आदर्श, मूल्यवान, और पूज्य हो जाता है। अध्यात्म ही मानव जीवन की पूज्यता, आदर्श और मूल्यवान होने का मापदण्ड है।

अध्यात्म के बिना मानवीय दुर्व्यवहार को नियंत्रित करना असम्भव है। अध्यात्म का लक्ष्य आत्मोनमुखी होकर आत्मा को परमात्म गुणों से सुसज्जित करना, अपने निजात्मा के अधिकारों को प्राप्त करना, व्यवहार से समाजोन्मुखी बनाकर समाज का विकास करना, सही दिशा में मार्गदर्शन करना, समाज को श्रेष्ठ और सर्वोच्च ऊँचाइयों तक पहुँचाने का होता है। अध्यात्म मानव जीवन का मूलभूत तत्त्व है। अध्यात्म मानव जीवन को सही दिशा दिखाने वाला मौलिक तत्त्व है। जब जीवन से अध्यात्म निकल जाता है तब मौलिकता समाप्त हो जाती है, और अन्याय, अत्याचार, हिंसा, अशांति फलने–फूलने लगती है। सरलता, सहनशीलता, कोमलता, दया, करुणा, सत्य, परोपकार ये सभी अध्यात्म की फूल–पत्तियाँ है और आत्मोपलब्धि फल है।

To achieve salvation, it is extremely important to be spiritual. To maintain the purity of the soul, spirituality is absolutely necessary to realize the soul. Spirituality protects the soul. Spirituality achieves the ultimate goal of the soul, salvation.

Only a spiritual person experiences the soul. It is only through spirituality that a person becomes valuable by rising above materialistic pleasures. Spirituality is the guide for human behavior. Spirituality alone provides appropriate guidance to social activities. Spirituality arises from the pure results of the soul. Spirituality is the conceptual unit of introspection. When spiritual vision is acquired, the value of material things reduces. When the value of material goods decreases, anarchy, violence, lies, theft, oppression, fear, exploitation and immorality end. When spiritual vision is acquired, honesty, morality, devotion to duty, truth and non-violence begin to flourish. That is why the person whose life becomes spiritual becomes ideal, valuable and worshipable in the eyes of the country and society. Spirituality is the standard of respectability, ideal and value of human life.

Without spirituality it is impossible to control human misbehavior. The aim of spirituality is to equip the soul with divine qualities by being self-oriented, to attain the rights of one's individual, to develop the society by making it society-oriented in behaviour, to guide it in the right direction and to take the society to the best and highest heights. Spirituality is a fundamental element of human life. Spirituality is the fundamental element that shows the right direction to human life. When spirituality from life. When it goes away, originality ends, and injustice, oppression, violence and unrest begin to flourish. Simplicity, tolerance, softness, kindness, compassion, truth, charity, all these are the flowers and leaves of spirituality and the fruit of self-realization.

मानव जीवन मूलाधिकारों से सहित होता है, आंतरिक शक्तियों से सम्पन्न होता है और जन्म से ही मूल्यवान होता है। आठ वर्ष के उपरांत बुद्धि और विवेक की ओर तीव्र गति से अग्रसर होता है। 18 वर्ष के उपरांत निर्णय लेने से सक्षम होता है, लेकिन राजकीय, सामाजिक और पारिवारिक कार्यों के सही निर्णय लेने की क्षमता (योग्यता) 25 वर्ष के बाद प्रस्फुटित होती है।

आध्यात्मिक होने के लिए वीतरागी, सच्चे आध्यात्मिक संतों की संगति, सद् साहित्य का पठन–पाठन और आत्म चिंतन आवश्यक है। जो आध्यात्मिक होते है, वे व्यवहारिक भी होते है, लेकिन जो व्यवहारिक होते है, वे आध्यात्मिक हो ऐसा कोई नियम नहीं है। आध्यात्मिक व्यक्ति की जीवन शैली अलग ही होती है, उसका जीवन न समस्या से घिरा होता है और न समस्या को पैदा करने वाला होता है।

इस वसुन्धरा पर समय–समय पर अध्यात्मिक ऋषि अवतरित होते रहे हैं। उन्होंने अपनी अध्यात्म साधना, ज्ञान, चारित्र और संयम से इस धरा को सिंचित किया है। उसी का परिणाम है कि आज इस पंचम काल (कलि काल) में भी मानवों का अध्यात्म के प्रति रूझान है। अध्यात्म के द्वारा ही मानवाधिकारों के मूल्यों को जाना, समझा और संरक्षित किया जा सकता है, विश्व अशांन्ति और आतंकवाद से मुक्त किया जा सकता है, आत्मा के साथ लगे हुए दुखदायी कर्मों से मुक्त होकर मोक्ष तक पहुँचा जा सकता है और पूर्ण अध्यात्म के द्वारा परमानंद की प्राप्ति की जा सकती है।

Human life is endowed with fundamental rights, is endowed with intrinsic powers and is valuable from birth. After eight years, intelligence and wisdom progress rapidly. One becomes capable of taking decisions after the age of 18, but the ability to take correct decisions regarding government, social and family matters blossoms after the age of 25.

To be spiritual, it is necessary to be ascetic, to be in the company of true spiritual saints, to be reading good literature and to be introspective. Those who are spiritual are also practical, but there is no rule that those who are practical are spiritual. The lifestyle of a spiritual person is different, his life is neither surrounded by problems nor is it a problem creator.

Spiritual sages have been incarnating on this Vasundhara from time to time. He has irrigated this land with his spiritual practice, knowledge, character and restraint. The result of that is that today even in this fifth period (Kali Kaal), humans are inclined towards spirituality. It is only through spirituality that the values of human rights can be known, understood and protected, the world can be freed from unrest and terrorism, salvation can be reached by freeing the soul from the painful karmas attached to it and through complete spirituality Bliss can be achieved.

अध्यात्म का अर्थ

जैन धर्म मूलतः अध्यात्मवादी धर्म है। अध्यात्मवाद अपनी आत्मा के कल्याण और प्राणी मात्र के प्रति प्रेम की भावना से जुड़ा हुआ है। 'जियो और जीने दो' 'मैत्री भाव' 'अहिंसा परमो धर्मः' 'अप्पा सो परमप्पा' इत्यादि अनेक सूत्र भगवान महावीर ने दिये हैं। ये सभी सूत्र आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लिए हैं। 'जियो और जीने दो' यह सूत्र इसलिये दिया कि सभी को जीने का अधिकार है। सभी प्राणियों को अपने प्राण प्रिय होते हैं। कोई भी प्राणी मरना नहीं चाहता। संसारी जीवों का मनुष्य तिर्यंच आदि अवस्था में आयु का समाप्त होना मरण कहलाता है। संसारी अवस्था में मरण एक स्वाभाविक क्रिया है। कहा भी है– जातस्य ही मृत्यु ध्रुवे अर्थात् जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है लेकिन वह कब कहाँ कैसी होगी यह हमारे हाथ में नहीं है लेकिन आयु पूर्ण होने के पूर्व जीवों को मारना एक अधर्म है, अन्याय है, और पाप है। अपने स्वाभाविक आत्म गुणों का चिंतन करके आत्म स्वभाव से जुड़ना अध्यात्म है। प्रत्येक आत्मा स्वंय परमात्मा है। किसी भी जीव को मेरे द्वारा या दूसरों के द्वारा कष्ट न हो ऐसा शत्रु से भी मित्रवत व्यवहारिक प्रवृत्ति करना अध्यात्म है। अध्यात्म के मार्ग पर चलने वाला आध्यात्मिक कहलाता है। अध्यात्म की चरम सीमा में पहुंचने पर मानव स्वयं कष्ट सहन करने लगता है परन्तु दूसरों को कष्ट नहीं पहुँचाना चाहता। यहाँ तक कि वह रोटी, कपड़ा और मकान, जीवन की तीन मूल भूत आवश्यकताओं को भी त्याग देता हैं। हरी काई, घास और फूल–पत्तियों पर भी पैर नहीं रखना चाहता है। वह प्रवृत्ति से निवृत्ति में चला जाता है।

"सव्वे शुद्धा हु शुद्धनयाः" भगवान महावीर स्वामी के द्वारा दिये गये इस सूत्र के अनुसार वह परम अध्यात्मवादी, शुद्ध निश्चय नय की दृष्टि से सभी आत्मा परमात्मा है, ऐसा स्वीकार करता है। प्रत्येक आत्मा में परमात्मा के दर्शन करने लगता है। आत्मा में परमात्मा के दर्शन करते हुए एक दिन स्वयं परमात्मा बन जाता है।

भगवान महावीर स्वामी ने परम अध्यात्म दृष्टि लाने के लिये कहा है कि–**सव्वे पाणा पियाउ आसुह सायादुक्ख पडिकूला अपिय वद्य पिय जीविणो जिविउ कामा।। सव्वेसिं जीवम्।**

Meaning of Spirituality

Jainism is basically a spiritualist religion. Spiritualism is linked to the welfare of one's soul and the feeling of love towards all living beings. Lord Mahavir has given many sutras like 'Live and let live', 'Friendship', 'Ahimsa Paramo Dharma', 'Appa So Paramappa' etc. All these sutras are for spiritual inclination. This formula 'Live and let live' was given because everyone has the right to live. All living beings love their lives. No creature wants to die. The end of life of worldly creatures in the human stage like Tiryancha etc. is called death. In this worldly state, death is a natural process. It is also said - Jaatsya hi mrityu dhruve i.e. the one who has taken birth, his death is certain, but when, where and how it will happen is not in our hands, but killing living beings before the completion of their age is an unrighteousness, injustice and a sin. Spirituality is connecting with one's self by contemplating one's natural qualities. Every soul itself is God. It is spiritual to behave in a friendly manner, even towards the enemy, so that no living being is harmed by me or by others. The one who follows the path of spirituality is called spiritual. When a person reaches the extreme of spirituality, he starts to bear suffering himself but does not want to cause suffering to others. He even gives up the three basic necessities of life, food, clothing and shelter. Doesn't even want to step on green moss, grass and flowers and leaves. He goes into retirement from instinct.

"Savve Shuddha Hu Shuddhanaya" According to this sutra given by Lord Mahavir Swami, the ultimate spiritualist, from the point of view of pure determination, accepts that every soul is God. One starts seeing God in every soul. Seeing God in the soul, one day one becomes God himself.

To bring ultimate spiritual vision, Lord Mahavir Swami has said – ***Savve Paana Piyau Asuh Sayadukkha Padikula Apiya Vadya Piya Jeevino Jivivu Kama. Savvesin jeevam.***

अर्थात्– सभी प्राणियों को अपनी आयु रूपी प्राण और जीवन प्रिय हैं, सभी प्राणी सुख चाहते हैं, दुःख से डरते हैं मरना नहीं चाहते, जीने की इच्छा करते हैं।

अध्यात्म यानि आत्म शोधन, आत्मा का संम्पूर्ण ज्ञान, बाह्य जगत से विरक्ति, अंतर जगत की यात्रा करना। उस यात्रा में चिन्तन करना कि मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? यह खोजने का प्रयास कि कहाँ जाना है? क्या प्राप्त करने आया हूँ ? मैं मनुष्य क्यों बना हूँ ? ऐसे प्रश्न करते हुए अपने निज आत्म स्वरूप को जानना और अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करना अध्यात्म है।

नियमसार की **गाथा 33 की** तात्पर्यवृत्ति नामक टीका में दिगम्बर जैनाचार्य जय सेन स्वामी ने अध्यात्म का अर्थ बतलाते हुए लिखा है कि–

''आत्मानमात्मन्यात्मना संघत्र इत्यध्यात्मम।''

अर्थात् – आत्मा को, आत्मा में, आत्मा से धारण करना अध्यात्म है।

बृहद द्रव्य संग्रह ग्रंथ की टीका में दिगम्बर जैनाचार्य ब्रह्मदेव जी ने अध्यात्म के संबंध में लिखा है कि–

''मिथ्यात्वरागादिसमस्त विकल्प जालरूपपरिहारेण
स्वशुद्धात्मन्यधियदनुष्ठानन्तदध्यात्ममिति।

अर्थात् – मिथ्यात्वरागादि समस्त विकल्प जालों के समूह के त्याग करके निज शुद्धात्मा में जो अनुष्ठान रूप प्रवृत्ति होती है। उसे अध्यात्म कहते हैं।

समयसार ग्रंथ की तात्पर्यवृत्ति टीका में लिखा है कि–

''निजशुद्धात्मानि विशुद्धाधारभूतेऽनुष्ठानामध्यात्म।

अर्थात् – अपने शुद्धात्मा में विशुद्धता का आधारभूत अनुष्ठान करना अथवा आचरण करना अध्यात्म है।

अपनी आत्मा से अशुद्धता का नाश करके शुद्ध बनने की प्रक्रिया का नाम अध्यात्म है। आत्मा में जितने भी पुण्य या पाप रूप कर्म लगे हुए हैं। उन कर्मों को नष्ट करके आत्मा को परमात्म पद की ओर अग्रसर करना अध्यात्म है।

That is, all living beings love their age and life, all living beings want happiness, are afraid of sorrow, do not want to die, wish to live.

Spirituality means self-purification, complete knowledge of the soul, detachment from the external world, traveling to the inner world. In that journey, the art of thinking is who am I? Where have I come from? Trying to find where to go? What have I come to get? Why have I become a human? By asking such questions, it is spirituality to know one's own self and achieve the ultimate goal.

While explaining the meaning of spirituality, Digambar Jainacharya Jai Sen Swami has written in the commentary titled Tatparyavrtti of Gatha 33 of Niyamasaar that –

"Atmanamatmanyaatmana sanghatra ityadhyatmaam"

That is, to imbibe the soul, in the soul, with the soul is spirituality.

In the commentary of the book Brihad Dravya Sangraha, Digambar Jainacharya Brahmadev Ji has written regarding spirituality that-

"Elimination of falsehood, all choices, and traps."

Swashuddhatmanyadhiyadanushthanantadhayatammiti.

That is, the tendency in the form of rituals in one's pure soul after renouncing all the trap of falsehood etc. It is called spirituality.

It is written in the Tatparivrtti commentary of Samaysar Granth that-

"Nijashudhâtmânî vishuddhadharbhûte Gnusthanamadhyatm.

That is, performing or performing the basic rituals of purity in one's pure soul is spirituality.

The process of becoming pure by eliminating impurity from one's soul is called spirituality. All the virtuous and sinful deeds are engaged in the soul. Spirituality is to destroy those karmas and move the soul towards the divine position.

पंचास्तिकाय ग्रंथ की टीका में लिखा है कि–

''अर्थपदानामभेदरत्नामयप्रतिपादकानामनुकूलं यत्र व्याख्यानं क्रियते तदध्यात्मशास्त्र भण्डते।''

अर्थात् – अभेद सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र रूप रत्नत्रय के प्रतिपादक अर्थ और पदों के अनुकूल जहाँ व्याख्यान है। उसे अध्यात्म शास्त्र कहते हैं।

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप रूप चार आराधना ही अध्यात्म है यही चारों आराधनायें आराधक को आध्यात्मिक बनाती हैं और आत्मा को परमात्मा बनाती हैं। आत्मा के ज्ञान, दर्शन रूपी चेतना स्वाभाव में रहना और उसकी अनुभूति करना अध्यात्म है। जीवात्मा स्वयं ज्ञान, दर्शन रूप चेतना स्वभावी है। इसीलिए जीव आत्मा स्वयं अध्यात्म है। अकेले हो जाना, अकेलेपन का अनुभव करना, एक अकेले ज्ञान स्वभाव में लीन हो जाना अध्यात्म है। अपने आत्म अस्तित्व की सत्ता को पहचानना, उसमें स्थिर हो जाना, पुण्य पाप, सुख–दुःख, राग, द्वेष, मोह आदि से रहित हो जाना अध्यात्म है। मात्र हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाने का नाम अध्यात्म नहीं है बल्कि समस्त विकल्प जालों को छोड़ कर अपने निज स्वरूप का विचार व कर्म करना अध्यात्म है। अचेतन द्रव्यों से मोह हटाकर चेतना द्रव्य तक पहुँच जाना अध्यात्म है। अपनी निज आत्मा की स्वतंत्र सत्ता को जानना, पहचानना, स्वीकार करना अध्यात्म है। आत्मा का निर्विकार, निराकांक्ष, सहज स्वरूप अध्यात्म है। सांसारिक अकर्मण्यता स्वीकारना, मोक्ष प्राप्ति के प्रति कर्मव्यता स्वीकारना अध्यात्मवाद हैं। मैं पर पदार्थों का कर्ता, धर्ता और हर्ता नहीं हूँ बल्कि मैं अपनी आत्मा का कर्ता–धर्ता हूँ, मैं स्वयं आत्म निर्भर हूँ ऐसा स्वीकारना अध्यात्म है।

आत्मा की पहचान करने वाला ही अध्यात्म की पहचान करने वाला है– अध्यात्म को जानने वाला मात्र आत्मा को ही नहीं बल्कि सारे जगत को ज्ञाता दृष्टा भाव से जानता है। पर पदार्थों को जानना बुरा नहीं बल्कि पर पदार्थों के साथ मोह भाव और लगाव होना बुरा है क्योंकि पर पदार्थों को अरहंत भी जानते हैं। आचार्य कुन्द–कुन्द स्वामी ने लिखा है–

जो जाणदि अरहंताणं दव्थगुणथ पज्जथेहिं।
सो जाणदि अप्पाणं मोहोखलुजादितस्सलयं।।

In the commentary on the Panchastikaya it is written:

"Where an explanation is given in accordance with the explanations of the differences and gems of the terms of meaning, the scriptures of spirituality break them down."

That is, where the lecture is in accordance with the meanings and terms expressing the three gems of indistinguishable Samyagdarshan, Samyagjnana, Samyak Charitra form. That is called spiritual scripture.

The four worships in the form of Samyagdarshan, Samyagjnana, Samyak Charitra and Samyak Tapa are spirituality. These four worships make the worshiper spiritual and make the soul the Supreme Self. Knowledge of the soul, consciousness in the form of philosophy, to live in nature and feel it is spirituality. The soul itself is knowledge, philosophy form consciousness is natural. That is why the living soul itself is spirituality. To be alone, to experience aloneness, to be absorbed in a lone knowledge nature is spirituality. To recognize the essence of one's self-existence, to become steady in it, to be devoid of virtue and sin, pleasure and pain, passion, hatred, delusion, etc. is spirituality. Spirituality is not just sitting hand in hand, but thinking and acting on one's own self, leaving behind all the traps of choice. Removing delusion from unconscious matter and reaching conscious matter is spirituality. Knowing, recognizing, accepting the independent being of one's own soul is spirituality. The undisturbed, unaspirational, instinctive form of the soul is spirituality. Acceptance of worldly inaction, acceptance of action towards attainment of salvation are spiritualism. But it is spirituality to accept that I am not the doer, holder and destroyer of things but I am the doer-holder of my soul, I am self-dependent.

He who recognizes the soul is the one who recognizes spirituality. He who knows spirituality knows not only the soul but the whole world as a knower and seer. It is not bad to know other things but it is bad to have delusion and attachment to other things because other things are known even by arahants. Acharya Kund - Kund Swami has written-

Jo janadi arahantanam davyagunatha pajjathehin.

So janadi appanam mohokhalujaditassalaya.

अर्थात् जो अरहंत भगवान को द्रव्य गुण और पर्यायों से जानता है। वह अपनी आत्मा को जानता है और शीघ्र ही मोह को नष्ट कर देता है। अरहंत भगवान शुद्ध ज्ञान स्वरूपी होते हैं। अतः अरहंत को जानना अपनी आत्मा को ही जानना है। इस दृष्टि से अरहंत को जानना भी अध्यात्म है।

जे अज्झत्थं जाणइ, सो बहिया जाणइ।
जे बहिया जाणइ, सो अज्झत्थं जाणइ।।

अर्थात्– जो अध्यात्म को जानता है। वह बाह्य जगत को जानता है। जो बाह्य जगत को (निर्विकार होकर) जानता है वह अध्यात्म को जानता है।

जो एगं जाणदि, सो सव्वं जाणदि।
जे एगं जाणदि, से सव्वं जाणदि।।

अर्थात् – जो एक (आत्मा) को जानता है वह सबको जानता है। जो सबको जानता है वह एक आत्मा को जानता है।

आत्मा का ज्ञान ही परम विज्ञान है और परम अध्यात्म है। इसे पराविज्ञान भी कह सकते हैं। जैन दर्शन के अनुसार धर्म का मूल अध्यात्म है। अध्यात्म के बिना सम्यक् दर्शन का उद्घाटन नहीं हो सकता।

अध्यात्म है परमात्मा बनने की छेनी। अध्यात्म के द्वारा आत्मा ही परमात्मा बन जाती है। अध्यात्म की छेनी से कर्म रूपी अतिरिक्त भार को निकाल कर आत्मा को परमात्मा बनाया जाता है। अध्यात्म के द्वारा स्वयं की समस्याओं को सुलझा सकते हैं। अन्तश्चेतना की निष्पंद चिंतन धारा ही अध्यात्म है। आत्मा की तरंगों का संगीत अध्यात्म है। स्वानुभूति का मधुर गीत अध्यात्म है। बाह्य जगत में प्रवृत्ति करने वाली इंन्द्रियों को अपने आत्म जगत में समेट लेना अध्यात्म है। अध्यात्म के माध्यम से संत पुरूष परमात्मा तक का सफर तय कर लेते हैं। सज्जन पुरूष अध्यात्म की साधना से घर ग्रहस्थी के कार्यों की सिद्धि कर लेते है। जब–जब जीव आत्मा अध्यात्म जगत में प्रवेश करता है तब–तब आत्म गुणों की वृद्धि करता है। जो व्यक्ति क्रोध आदि अशुभ विकल्प जालों का शमन करके अपने निज आत्म तत्व में स्थिर होता है तब–तब संसार की सारी समस्याओं से निजात पा लेता है। अध्यात्म साधना का क्षेत्र बाह्य जगत (शरीर आदि) ना होकर अंतर जगत है।

That is, the Arahant who knows God through material qualities and synonyms. He knows his own soul and quickly destroys attachments. Arhant God is pure Gyaach form. Therefore, to know an Arahant is to know one's own soul. From this point of view, knowing an Arahant is also spiritual.

If I am awakened, I will know the sister. Whatever you want, you know it as best you can.

That is, one who knows spirituality. He knows the outside world. One who knows the external world (being free from vices) knows spirituality.

The one who knows everything, is the best person. From J and Janadi to the best Janadi.

That is, the one who knows one (soul) knows all. He who knows all knows one soul.

Knowledge of soul is the ultimate science and the ultimate spirituality. This can also be called parascience. According to Jain philosophy, the root of religion is spirituality. Without spirituality, proper philosophy cannot be inaugurated.

Spirituality is the chisel to become God. Through spirituality the soul itself becomes God. With the chisel of spirituality, the extra burden of karma is removed and the soul is transformed into God. We can solve our own problems through spirituality. Spirituality is the pure stream of thought of the subconscious. The music of the waves of the soul is spirituality. The sweet song of self-realization is spirituality. Spirituality is to integrate the senses which are active in the external world into one's own world. Saints travel the journey to God through spirituality. Gentlemen accomplish their household tasks through spiritual practice. Whenever the living soul enters the spiritual world, its qualities increase. The person who is stable in his own soul by suppressing the traps of inauspicious choices like anger etc., then gets rid of all the problems of the world. Field of spiritual practice: External world (body etc.) There is an inner world without it.

जो बाह्य जगत शरीर आदि अचेतना को अपना मानता है वह बहिरात्मा है। जो शरीर आदि अचेतना बाह्य जगत को अपनी आत्मा से भिन्न मानता है वह अन्तरात्मा है। जो रत्नत्रय धारण करके अपने आत्म स्वरूप को प्रगट कर लेता है वह परमात्मा है। अध्यात्मिक चेतना जाग्रत होते ही समस्त भेद–भाव और विकल्प जाल समाप्त हो जाते हैं।

मनोवैज्ञानिकों ने मस्तिष्क के तीन स्तर स्वीकार किये हैं–१. चेतना मस्तिष्क २. अचेतना मस्तिष्क ३. अवचेतना मस्तिष्क। अध्यात्म चेतना मस्तिष्क की परिणति है। इसी के अनुसार चेतना काम करती है।

चेतना के चार प्रकार हैं।

1. **नैतिक चेतना–** इसका संबंध समाज से है। जब नैतिक चेतनाा काम करती है तब सामाजिक विसंगतिया, कुरीतियां और वाद–विवाद समाप्त हो जाते है।
2. **धर्म चेतना–** धर्म चेतना का संबंध व्यक्ति, देव, शास्त्र, गुरु की श्रद्धा भक्ति और दान, पूजा, करूणा, दया और परोपकार आदि से है।.
3. **अध्यात्म चेतना–** अध्यात्म चेतना का संबंध अपनी निज आत्मा से है। अध्यात्म चेतना जहाँ काम करती है वहाँ ना समाज, ना व्यक्ति, ना देव, शास्त्र, गुरु और ना पूजा पाठ आदि है वहाँ सिर्फ निज आत्मा का बोध है।
4. **शुद्ध चेतना**– इसका संबंध निज आत्मा कि उपलब्धि, अरिहंत और सिद्ध रूपी परमात्मा से है। वहाँ सिर्फ अपनी आत्मा की अनुभूति अक्षय सुख–शांति और आत्मा का आल्हाद होता है।

अध्यात्म को सभी दर्शनकारों ने स्वीकार किया है। लेकिन उसकी व्याख्या अपने अनुसार की है। अध्यात्म जगत में सिर्फ आत्मा को ही मूल्यवान स्वीकार किया है। बाह्य जगत का अध्यात्म में कोई स्थान नहीं है वहाँ ममता के विसर्जन का और समता के समार्जन का महत्व है। अध्यात्म जगत में जाते ही वीतरागता प्रकट हो जाती है। वहाँ सम्प्रदाय, सम्पदा, सत्ता का कोई स्थान नहीं है। वे सभी तत्व अध्यात्म के विरोधी हैं।

The one who accepts the external world, body etc. unconsciousness as his own is the external soul. The one who considers the body and unconscious external world as different from his soul is the inner soul. The one who reveals his true nature by wearing Ratnatraya is God. As soon as spiritual consciousness is awakened, all the traps of discrimination and choice end.

Psychologists have accepted three levels of the brain - 1. Conscious brain 2. Unconscious brain 3. Subconscious brain. Spiritual consciousness is the result of the brain. Consciousness works accordingly.

There are four types of consciousness.

1. **Moral consciousness-** It is related to society. When moral consciousness works then social inconsistencies, evils and debates come to an end. D-controversy
2. **Religious consciousness-** Religious consciousness is related to devotion, devotion to person, God, scriptures, Guru and charity, worship, compassion, mercy and charity etc.
3. **Spiritual consciousness-** Spiritual consciousness is related to one's own soul. Where spiritual consciousness works, there is no society, no individual, no God, no scriptures, no Guru and no worship, there is only awareness of one's own soul.
4. **Pure Consciousness –** It is related to the achievement of one's own soul, God in the form of Arihant and Siddha. There only one's soul experiences eternal happiness, peace and bliss of the soul.

Spirituality has been accepted by all philosophers. But he has interpreted it as per his own. In the spiritual world only the soul is accepted as valuable. The external world has no place in spirituality, there is importance of immersion of affection and cultivation of equality. As soon as one goes to the spiritual world, renunciation becomes visible. There is no place for sect, wealth and power there. All those elements are opposed to spirituality.

अध्यात्म विरोधी तत्व

आत्मा के गुणों के विकास के लिए अध्यात्म जरूरी है। अध्यात्म के रास्ते पर चलने के लिए साधक तत्वों का होना और बाधक तत्वों से बचना आवश्यक है। गरिष्ट, तामसिक आहार आवश्यकता से अधिक परिग्रह, सांसारिक उपाधि, पद प्रतिष्ठा, आदर सत्कार, यश–कीर्ति और रिद्धि आदि अध्यात्म के विरोधी तत्व हैं। ये आत्मा को उलझा देते हैं। हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा (ग्लानि), स्त्री–पुरूष आदि वेद, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषाय अध्यात्म के विरोधी हैं। ये आत्मा को विषय–वासनाा और लड़ाई झगड़े में फँसा देते हैं।

सिक्खो के प्रथम गुरू नानक देव ने सभी धर्म और जाति वर्ग को एक समान समझने की शिक्षा दी थी। उनकी शिक्षायें हर धर्म के लिये थी। गुरू नानक देव जी ने मुनियों को पाँच मुख्य विकारों से बचने की शिक्षा देते हुऐ कहा है कि सत्ता, धन, रूप, जाति और जवानी इन सभी घमंड ने दुनिया को भरमाया है। आपको जो मिला है उसका अहंकार न करें। यह सब ईश्वर का ही देन है, इसे बाँटे। धन को सीमित रखना चाहिये। धन को हृदय में स्थान नहीं देना चाहिये। धन न्यायोचित तरीके से कमाना चाहिये।

किसी भी मार्ग पर चलने के पूर्व मार्ग का ज्ञान होना परम आवश्यक है, तभी मंजिल प्राप्त कर सकते हैं। यदि अध्यात्म के मार्ग पर चलना है अथवा मोक्ष मार्ग पर चलना है तो इसका ज्ञान होना भी आवश्यक है। अध्यात्म का मार्ग भाव प्रधान है। भावना से अध्यात्म मार्ग मोक्ष मार्ग बनता है और भावना से ही संसार मार्ग बनता है। इसीलिए भावों को समझने का प्रयास करना चाहिए। भावनाओं से सारी प्रवृतियाँ संचालित होती हैं। बुरे भाव से बुराईयां आती हैं। अच्छे भाव से अच्छाईयां आती हैं। यदि भावों का संबंध अध्यात्म से है तो कोध्र, मान, माया, लोभ आदि कषाय भाव भी अध्यात्म हैं। ये भाव भी आत्मा से उत्पन्न होते हैं लेकिन इन्हें विभाव भाव कहते हैं। जबकि क्षमा मार्दव आदि भाव स्वभाव हैं। इस अपेक्षा से दोनों अध्यात्म भाव हैं। आध्यात्मिकता का अर्थ आत्मा के भीतर आत्मा में होने वाले भाव।

Anti Spiritual Elements

Spirituality is necessary for the development of qualities of the soul. To walk on the path of spirituality, it is necessary to have positive elements and avoid obstructive elements. Rich food like meat, fish, alcoholic drinks etc., excess attachment, worldly title, position, prestige, respect, fame and fortune etc. are elements opposed to spirituality. These confuse the soul. Humor, Rati (passion), Arati, grief, fear, guilt, men and women etc. Vedas, anger, pride, illusion, greed etc. are opposed to Kashay spirituality. These trap the soul in sensual desires and fights.

Nanak Dev, the first Guru of Sikhs, had taught to consider all religions and castes as equal. His teachings were for every religion. Guru Nanak Dev Ji, while teaching the sages to avoid the five main vices, has said that the pride of power, wealth, beauty, caste and youth have misled the world. Don't be proud of what you have got. All this is God's gift, share it. Money should be limited. Money should not be given place in the heart. Money should be earned in a fair manner.

Before walking on any path, it is very important to know the path, only then one can reach the destination. If we have to walk on the path of spirituality or the path of salvation, then it is necessary to have knowledge of it. The path of spirituality is based on emotions. The spiritual path becomes the path of salvation through emotions and the path of the world becomes the path through emotions. That is why one should try to understand the feelings. All tendencies are governed by emotions. Evil things come from bad intentions. Goodness comes from good intentions. If emotions are related to spirituality then the bitter emotions like anger, pride, illusion, greed etc. are also spiritual. These feelings also originate from the soul but they are called vibhava (bad feelings) feelings. Whereas Kshama (forgiveness), Mardav (soft feelings of heart) etc. are the nature of emotions. In this respect, both are spiritual expressions. Spirituality means the feelings within the soul.

विभाव भाव अध्यात्म होकर भी हमारी आत्मा का भला नहीं करते है। सुख शांति नहीं पहुँचाते है इसीलिए त्याग करने योग्य हैं। ये कषाय आदि भाव कर्म और नौ कर्म के निमित्त से होते है। ये भाव दुनिया में भटकाते हैं दुःख देते हैं। निज आत्म स्वभाव से हटाते हैं। इसीलिए इन्हें विकारी अध्यात्म भाव कहते हैं। कल्याण कारी अध्यात्म तो निर्विकार, स्वाश्रित, स्वाभाविक आत्म गुणों में लीन भाव वाला होता है। आत्मा की अनुभूति कराने वाला होता है।

अनुभूति आत्मा का स्वभाव है। इसका कभी अभाव नहीं होता लेकिन विभाव रूप होता है। इसी कारण अनुभूति भी अनेक प्रकार की होती है। जैसे विषय भोग भोगते समय विषयानुभूति, कषाय करते समय कषायानुभूति, रस पीते समय रसानुभूति, श्रद्धा करते समय श्रद्धानानुभूति, तत्व ज्ञान करते समय ज्ञानानुभूति और इन सब से ऊपर उठकर अपनी आत्मा में लीन होने पर आत्मानुभूति होती है। भक्ति से ही मुक्ती संभव है अनुभूति की दृष्टि से ये सब अनुभूतियाँ आध्यात्मिक हैं। श्रद्धानुभूति चौथे गुण स्थान में, आत्मानुभूति सातवें गुण स्थान में या उसके ऊपर होती है। इसके पूर्व बाकी सभी अनुभूतियाँ पहले गुण स्थान से चौथे गुण स्थान तक होती हैं। कुछ अनुभूतियाँ छठे गुण स्थान तक भी हो सकती हैं। परम अध्यात्म को पाने के लिए साधक को विभिन्न श्रेणियों से गुजरना पड़ता है। ये श्रेणियां साधक को साधना की ऊँचाईयों तक ले जाती है। गुणों में स्थिर होना और ऊँचाईयों तक ले जाने के माप दण्ड को सामान्य भाषा में गुणस्थान कहते हैं। यद्यपि मोह और योग के निमित्त से होनेवाले आत्मा के तारतम्य रूप परिणामों को अध्यात्म की भाषा में गुण स्थान कहते हैं।

अध्यात्म कोई नई बात नहीं है। बोलना–चलना, उठना–बैठना, खाना–पीना आदि सब अध्यात्म है यदि इन सब क्रियाओं के केन्द्र में आत्मा है तो अध्यात्म में भी लड़ाई होती है, सघंर्ष होता है, लेकिन दूसरों से नहीं, स्वयं की बुराईयों से होता है। मतलब यह है कि बुराईयों से अपने आप को बचाने के लिए संघर्ष करना भी अध्यात्म है। इस अध्यात्म युद्ध (संघर्ष) में अब मैं ऐसा बुरा कार्य नहीं करूंगा, ऐसा संकल्प लेना अध्यात्म युद्ध (संघर्ष) का पहला संकल्प रूपी प्रत्याख्यान नाम का शस्त्र है।

Vibhava (bad feelings) Bhava, despite being spiritual, do not do any good to our soul. They do not bring happiness and peace, that is why they are worth sacrificing. These Kashaya etc. feelings occur due to Karma and nine Karmas. These feelings lead astray in the world and cause sorrow, remove one's self from nature. That is why these are called vices though spiritual feelings. Spirituality that brings welfare is free from vices, self-dependent and absorbed in the natural qualities of the self. It makes one experience the soul.

Feeling is the nature of the soul. It is never lacking but exists in the form of potential. For this reason, there are many types of experiences. For example, while enjoying sensual pleasures, there is a sensual experience, while consuming astringent pleasures, while drinking juice, there is a feeling of reverence while doing reverence, realising the sole cause of universe there is a feeling of knowledge, while rising above all these, there is a spiritual experience when one gets absorbed in one's soul. Liberation is possible only through devotion. From the point of view of experience, all these experiences are spiritual. Shraddhanubhuti (experience of reverence) is in the fourth Gunasthan (place of exclusiveness), Self-realization is in or above the seventh Gunasthan. Before this, all the other experiences occur from the first guna sthana to the fourth guna sthana. Some experiences may even occur up to the sixth guna sthan. To attain ultimate spirituality the seeker has to pass through various stages. These categories take the seeker to the heights of spiritual practice. The measurement bar for stability in qualities and taking them to heights is called Gunasthan in common language. However, the results of the harmony of the soul due to attachment and yoga are called gunasthan in the language of spirituality.

Spirituality is not a new thing. Speaking, walking, getting up, sitting, eating and drinking etc. are all spirituality. If the soul is at the center of all these activities, then there is fight and struggle in spirituality too, but not with others, but with one's own evils. This means that struggling to protect oneself from evil is also spirituality. Resolving that I will no longer do such bad things in this spiritual war (struggle) is the first resolution as a weapon named Pratyakhyaan (refusal).

दूसरा व्यक्ति यदि कषाय करने को उत्तेजित कर रहा है तो उस समय कषाय नहीं करने की प्रक्रिया को उपशमन नाम का द्वितीय शस्त्र है। संसार को लुभाने वाली, मोहित करने वाली वस्तुओं से मोह नहीं करके ज्ञाता दृष्टा भाव से वस्तुओं को देखना अध्यात्म युद्ध का ज्ञाता नाम का तृतीय शस्त्र है। मैं अखण्ड अविनाशी एक चेतना पिण्ड हूँ, मुझे कोई मार नहीं सकता, जला नहीं सकता, ऐसा दुश्मन के सामने भी आत्म स्मरण बना रहना अध्यात्म युद्ध का स्मरण नाम का चौथा शस्त्र है। मैंने अज्ञान और प्रमाद के कारण अपने आत्म स्वभाव को नहीं जाना पहचाना और अपने आत्मा के दायरे से बाहर आया हूँ और अनेक पाप किये हैं। वे सब पाप मिथ्या हो, ऐसा विचार करना अध्यात्म युद्ध का पांचवा प्रतिक्रमण नाम का शस्त्र है। यह तन छिद जाए, भिद जाए, कोई ले जाए तो भी यह मेरा नहीं है। ऐसी भावना से अपनी आत्मा में लीन हो जानाा अध्यात्म युद्ध का छटवां समाधि या सामायिक नाम का छटवां शस्त्र है। इन शस्त्रों से यह आत्मा शास्ता (परमात्मा) बना जाती है। दूसरों से संघर्ष किये बिना ही जितेन्द्रिय हो जाते हैं और तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसे जीवन यापन करने हेतु परिवार और समाज की आवश्यकता होती है। क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बीच रहकर कुछ कर्त्तव्य निभाना पड़ते हैं, और कुछ अधिकार भी प्राप्त होते है। समाज में सबके साथ जीवन व्यतीत करने हेतु अहिंसा, सत्य, प्रेम, मैत्री, सद्भाव, समभाव और शांति पूर्ण आचरण करना होता है। स्वयं को बदलना पड़ता है। समाज को बदलने के लिए स्वयं को बदलने वाला अध्यात्म का सहारा लेता है। आध्यात्मिक मात्र साधु या संन्यासी ही नहीं होता बल्कि ग्रहस्थ भी होता है। समाज की अनेक बुराईयों को अध्यात्म के द्वारा मिटाया जा सकता है। अध्यात्म प्रथम सीढ़ी है। बुराईयों को मिटाने और अच्छाईयों को फैलाने के लिए आध्यात्मिक व्यक्ति स्वयं साफ सुथरे आचरण वाला होता है। ऐसा आचरणवान व्यक्ति समाज और राष्ट्र को सुधार सकता है। क्योंकि जो व्यक्ति स्वयं सुधरेगा तो समाज, परिवार और देश स्वयं सुधर जाएगा।

If the other person is provoking to do Kashay, then there is another weapon called Upshaman (alleviation, to keep peace) to prevent the process of doing Kashay at that time. Instead of getting attached to the things that tempt and fascinate the world, seeing things with a knowledgeable observer is the third weapon of the spiritual war called knowing. I am an unbroken, indestructible body of consciousness, no one can kill me or burn me, remembering myself even in front of the enemy is the fourth weapon of spiritual warfare called remembrance. Due to ignorance and carelessness, I have not known my true nature and have come out of the realm of my soul and have committed many sins. Thinking that all those sins are false is the fifth weapon of spiritual warfare called Pratikraman. Even if this body is pierced, pierced, or taken away by someone, it is not mine. Getting absorbed in one's soul with such feelings is the sixth samadhi or the sixth weapon of spiritual warfare called Samayik. With these weapons this soul becomes Shasta (God). Without fighting with others, one becomes Jitendriya and conquers all three worlds.

Man is a creature who needs family and society to survive. Because man is a social animal. While living among the society, some duties have to be performed and some rights are also obtained. To live a life with everyone in the society, one has to behave in a manner full of non-violence, truth, love, friendship, harmony, equanimity and peace. One has to change oneself. To change the society, one who changes himself takes the help of spirituality. A spiritual person is not only a saint or a monk but is also a householder. Many evils of the society can be eradicated through spirituality. Spirituality is the first step. To eradicate evil and spread goodness, a spiritual person himself has clean conduct. A person with such conduct can improve the society and nation. Because if a person improves himself then the society, family and the country will improve itself.

समाज और परिवार को सुधारने की जरूरत नहीं है। स्वयं को सुधारने की जरूरत है। हर व्यक्ति स्वयं को सुधार ले तो देश और समाज स्वयं सुधर जाएगा। इसीलिए मैं कहता हूँ कि–

जब सूर्य उगेगा तो तालाब में कमल स्वयं खिल जाएगा।
जब व्यक्ति सुधरेगा तो देश और समाज स्वयं सुधर जाएगा।।
जब खुद निखर जाओगे तो दुनिया निखर जाएगी।
जब खुद सुधर जाओगे तो दुनिया सुधर जाएगी।।
दूसरों को सम्भालने में समय बर्बाद मत करो।
जब खुद सम्भल जाओगे तो दुनिया सम्भल जाएगी।।

इसीलिए सत्य ही कहा गया है कि नदियों की सफाई नहीं करेगें तो फर्क नहीं पड़ेगा, बस इतना करे कि उसे गंदा करना बंद कर दे। प्रकृति तथा वर्षा ऋतु उसे पानी के बहाव से स्वतः ही स्वच्छ कर देगी। जंगल हेतु पेड़ नही लगायेगे तो फर्क नहीं पड़ेगा, बस पेड़ों की अंधाधुध कटाई बंद कर दें। जंगल में पेड़ अपने आप पनप जायेगी। प्रकृति अपना कार्य भली प्रकार से सम्पादित करती रहती है। जब तक गंदगी फैलाना बंद नहीं करेगें तब तक सफाई की कल्पना व्यर्थ है।

अध्यात्म ह्रदय को बदलने का और खुद को सुधारने का सबसे सरल साधन है। जिस दिन व्यक्ति के सुधरने की प्रक्रिया गतिशील हो जाती हैं उसी दिन से समाज के सुधरने की प्रक्रिया गतिशील हो जाती है। जिस प्रकार पानी के बिना मछली नहीं रह सकती उसी प्रकार समाज के बिना मानव नहीं रह सकता। जब समाज के बिना मानव नहीं रह सकता तब समाज व्यवस्था भी जरुरी है। समाज व्यवस्था के लिए सामाजिक कुछ सूत्र भी जरुरी है।

There is no need to reform society and family. There is a need to improve oneself. If every person improves himself, the country and society will improve itself. That's why I say that :

When the sun rises, the lotus will automatically bloom in the pond.

When the individual improves, the country and society itself will improve.

When you improve yourself, the world will shine.

When you improve yourself, the world will improve.

Don't waste time in taking care of others.

When you take care of yourself, the world will take care of itself.

That is why it has been rightly said that if you do not clean the rivers, it will not make any difference, all you need to do is stop polluting them. Nature and the rainy season will automatically clean it with the flow of water. It will not make any difference if you do not plant trees for the forest, just stop indiscriminate cutting of trees. Trees will grow automatically in the forest. Nature continues to perform its work well. Unless we stop spreading filth, the idea of cleanliness is futile.

Spirituality is the simplest means of changing the heart and improving oneself. The day the process of improvement of an individual becomes dynamic, the process of improvement of society becomes dynamic. Just as fish cannot exist without water, similarly humans cannot exist without society. When humans cannot live without society then social system is also necessary. Some social principles are also necessary for social order.

समाज व्यवस्था के सूत्र

सामाजिक व्यवस्था बनाना कठिन कार्य है। व्यक्ति अपनी व्यवस्था तो कर लेता है लेकिन परिवार की व्यवस्था और सुरक्षा कठनाई से होती है। सामाजिक सुरक्षा और व्यवस्था पारिवारिक व्यवस्था और सुरक्षा से भी अधिक कठिन होती है। जब अहिंसा, करूणा और संवेदनशीलता का व्यक्ति के अंदर विकास होता है तब वह समाज और परिवार के विकास सुरक्षा और व्यवस्था की सोचने लगता है। वह समाज के सदस्यों के प्रति संवेदनशील और करूणावान हो जाता है। वह समाज के किसी भी व्यक्ति की पीढ़ा का स्वयं अनुभव करने लगता है। ऐसा व्यक्ति समाज और परिवार के लिए इष्ट मित्र की तरह हो जाता है और सच्चा सामाजिक और अध्यात्मिक बना जाता है। सामाजिक बुराईयों और परेशानीयों को दूर करने के लिए एक–दूसरे के प्रति सापेक्ष होना और परस्पर सहयोग की भावना का होना आवश्यक है। सापेक्षता के सिद्धांत से समाज बनता है और समाज की सुरक्षा व्यवस्था होती है। सापेक्षता समाज के उत्थान का मूल आधार है परस्पर सहयोग और सापेक्ष भावना का होना। जहाँ सापेक्षता अनुशासन और सहयोग ये तीन गुण होते है वहाँ तीस आदमी अपने आप जुड़ जाते हैं।

वर्तमान में सामाजिक विकास का अर्थ आर्थिक विकास से लिया जाता है। मगर आध्यात्मिक विकास के बिना सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। अध्यात्म के बिना आर्थिक, राजनैतिक और भौतिक विकास हो सकता है लेकिन आदमी मानसिक रूप से रोगी और दारिद्र बना जाता है। मानसिक रोगी तनाव और घुटन महसूस करता है। समाज में नये मूल्यों की स्थापना हो रही है परंतु प्राचीन अध्यात्मिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है।

आज हमें राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की आवश्यकता है। नैतिकता का पाठ बालकों को पढ़ाना अत्यन्त आवश्यक है। राष्ट्र प्रथम होने से नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना को आज के परिक्षेप में बड़ी आवश्यकता है।

Principles of Social Order

Creating social order is a difficult task. A person makes his own arrangements but it is difficult to ensure the security and safety of his family. Social security and order is more difficult than family order and security. When non-violence, compassion and sensitivity develop within a person, then he starts thinking about the development, security and order of the society and family. He becomes sensitive and compassionate towards the members of the society. He himself starts experiencing the suffering of any person in the society. Such a person becomes like a favored friend to the society and family and becomes truly social and spiritual. To remove social evils and problems, it is necessary to be related to each other and have a feeling of mutual cooperation. Society is formed by the principle of relativity and the security system of the society is formed. Relativity is basic basis for the upliftment of society in mutual cooperation and relative feeling. Where relativity, discipline and cooperation are these three qualities, thirty people automatically join them.

At present social development is taken to mean economic development. But without spiritual development there cannot be overall development. Economic, political and material development can take place without spirituality. But the man becomes mentally ill and poor. The mental patient feels stressed and suffocated. New values are being established in the society but ancient spiritual values are declining.

Today we need national character building. It is very important to teach the lesson of morality to children. Since the nation comes first, there is a great need for the feeling of nationalism among the citizens in today's context.

सत् साहित्य और अध्यात्म

सत् साहित्य वही है जिसमें सबका हित निहित है। सत् साहित्य मानव जीवन को मूल्यवान बनाता है चारों पुरुषार्थ को समीचीन बनाता है और पुरुषार्थ जगाता है, धर्म, दर्शन, प्राकृतिक जीवन और आध्यात्मिक चेतना की ओर ले जाता है, आध्यात्मिक व्यक्ति सत् साहित्य ही पढ़ना चाहता है। आध्यात्मिक जीवन जीने वालों को धर्म ऊपर से आरोपित नहीं करना पड़ता बल्कि अंतरंग से स्वतः उद्घाटित होता है। ऊपर से आरोपित किया गया धर्म पानी के टैंक की तरह होता है। अंदर से उद्घाटित धर्म कूप के जल की तरह होता है। वर्तमान में अंतरंग का धर्म कम और ऊपर से आरोपित धर्म अधिक है, इसीलिए धार्मिक क्षेत्रों में आपसी कलह विसंगतियाँ और प्रदर्शन देखा जा रहा है।

आध्यात्मिक व्यक्ति का जीवन ही सत् साहित्य है, आदर्श है और अधिकार देने योग्य सार्थक है। अध्यात्म के बिना मानव का जीवन पशु के समान निरर्थक है जैसे आध्यात्मिक पुरुष भगवान आदिनाथ, पारसनाथ, नेमिनाथ, महावीर स्वामी इत्यादि 24 तीर्थंकर, श्रीरामचन्द्र, आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी, आचार्य अमृतचन्द्र स्वामी, आचार्य उमा स्वामी, आचार्य शांतिसागर जी, इत्यादि हुए। इनके अलावा स्वामी विवेकानन्द जी, मोहनदास करम चन्द्र गाँधी, श्रीकृष्णजी आदि भी हुए हैं। वर्तमान में आचार्य विद्यासागर जी, वर्धमान सागर जी, विपुल सागर जी, इत्यादि अनेक दिगम्बर जैन आचार्य पूर्णतः आध्यात्मिक जीवन जी रहे हैं। उनकी उदारता महत्ता और चर्या समस्त समाज में स्वीकार्य की गई है। आध्यात्मिक व्यक्ति का सत्य अनुभव की कसौटी पर कसा होता है। अध्यात्म व्यक्ति की आधारशिला सत्य और अहिंसा होती है। इसीलिए आध्यात्मिक व्यक्ति का जीवन मूल्यवान होता है। वह समस्त मानव जाति को प्रभावित करता है। वह स्वयं की इन्द्रियों, को इच्छाओं को और दुनिया को नियंत्रित करता है। वैसे तो अध्यात्म का मूल आधारभूत तत्त्व, आत्म तत्त्व है। अनेकांत, स्याद्वाद, सहिष्णुता, क्षमा, सहनशीलता, सत्य और संयम ये सभी अध्यात्म के सहयोगी तत्त्व हैं।

अध्यात्म निश्चय और व्यवहार नय की अपेक्षा दो प्रकार का होता है। निश्चय अध्यात्म प्रतिकार रहित होता है और बाह्य जगत से शून्य।

Truth, Literature and Spirituality

True literature is the one in which everyone's interest lies. True literature makes human life valuable and makes all four efforts appropriate. And it awakens manliness, leads towards religion, philosophy, natural life and spiritual consciousness, a spiritual person wants to read only true literature. Those who live a spiritual life, religion does not have to be imposed from above but it emerges from within. Religion imposed from above is like a water tank. Religion revealed from within is like water from a well. At present, there is less religion of the inner self and more religion imposed from above, that is why mutual discord, inconsistencies and demonstrations are being seen in religious areas.

The life of a spiritual person is true literature, ideal and meaningful enough to be given authority. Without spirituality, human life is as meaningless as that of an animal, Spiritual men like Lord Adinath, Parasnath, Neminath, Mahavir Swami etc. 24 Tirthankaras, Shri Ramchandra, Acharya Kundakund Swami, Acharya Amritchandra Swami, Acharya Uma Swami, Acharya Shantisagar ji, etc. Apart from these, there were also Swami Vivekananda ji, Mohandas Karam Chandra Gandhi, Shri Krishanji etc. have born in the past. At present, many Digambara Jain Acharyas like Acharya Vidyasagar Ji, Vardhaman Sagar Ji, Vipul Sagar Ji, etc. are living a completely spiritual life. Their generosity, importance and behavior have been accepted in the entire society. The truth of a spiritual person is tested on the test of experience. The cornerstone of a spiritual person is truth and non-violence. That is why the life of a spiritual person is valuable. He affects the entire human race. He controls his own senses, desires and the world. Actually, the basic fundamental principle of spirituality is the soul principle. Anekanta, Syadvad, tolerance, forgiveness, tolerance, truth and restraint, all these are the supporting elements of spirituality.

Spirituality is of two types – determination and behavior. Determination spirituality is without resistance and void of the external world.

जो सिर्फ वीतरागी निष्परिग्रही, प्राकृतिक जीवन जीने वाले जैन साधुओं में दृष्टिगत होता है। निश्चय अध्यात्म से बाहर आते ही उदारता, दया, अहिंसा, अपरिग्रह, परोपकार आदि के रूप में व्यवहारिक जीवन में प्रकट होकर आता है। व्यवहारिक अध्यात्म मनुष्य को शोषण से बचाता है, स्वच्छंद जीवन पर विराम लगाता है, अन्याय अत्याचार आदि से बचाता है। अध्यात्म हमेशा यह आभास दिलाता है कि तुम श्रेष्ठ इंसान बनो, श्रेष्ठ कार्य करके अपने जीवन को निखारो। आत्मा से श्रेष्ठ वस्तु दुनिया में कोई भी नहीं है। आत्मा से बढ़कर मूल्यवान कोई पदार्थ नहीं है। जहाँ अध्यात्म है वहाँ–

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्, सत्यमेवजयते, परमात्मएव सत्यम्, परमात्मएव–शिवम्, परमात्मएव–सुन्दरम्, आत्मसेवाएवभक्तिः, जनसेवाएवदेशभक्तिः परस्परोग्रहोजीवानाम् एवं अहिंसा परमो धर्मः भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो। सत्य, संयम, शील का व्यवहार घर घर द्वार हो। इत्यादि सिद्धान्तों को अधिकतर रूप में स्वीकृत करता है। **यतोधर्मः ततः सुखं, यतो अध्यात्म, ततो शिवः।** जहाँ धर्म है वहाँ सुख है। जहाँ अध्यात्म वहाँ मोक्ष है परमात्मा है। इसीलिए अध्यात्म ही कुरीतियों की इति श्री कराता है, कुप्रथाओं का दफन करता है कलयुग में भी सतयुग को स्थापित करता है। अध्यात्म की भूख भव्य जीवों को होती है। अध्यात्म के बिना आत्मा असंतुष्ट और दुखी होती है। नौ खाये–तेरह की भूख सदा बनाी रहती है। जहाँ अध्यात्म होता है वहाँ देवताओं का वास होता है, लक्ष्मी का निवास होता है, सुख शांति हिलोरें लेती हैं। आत्मा ही श्रेष्ठ और मूल्यवान होती है। संसार में एक नीति है ''यत्र–नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'' यह नीति अध्यात्म दृष्टि एवं नारी समाज की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये नीति कही गई है। इस नीति से नारी पर किसी भी प्रकार के अन्याय अत्याचार न हो यही दृष्टि रहती है। शासन द्वारा भी समय समय पर नारी उत्थान एवं संरक्षण के कानून बनाये गये है। भा.द.स. (I.P.C.) मे धारा, 354, 304B, 306, 498A के प्रावधान रखे गये है। महिलाओं पर होने वाले अत्याचार के प्रकरणों के निस्तारण हेतु पृथक से न्यायालायों की भी स्थापना की गई है। मानवीय सर्वोच्च न्यायालय व उच्च न्यायालायों द्वारा समय समय पर नारी संरक्षण हेतु सिद्धांत प्रतिपादित किये गये है जिसमें विशालवा प्रकरण (AIR 1997 S.C. 3011) प्रमुख है।

Which is only among the monks who live a life of selflessness and natural life. As soon as we come out of determination spirituality, it manifests itself in practical life in the form of generosity, kindness, non-violence, non-attachment, charity etc. Practical (behavioural) spirituality protects man from exploitation, puts an end to free life, protects him from injustice, oppression etc. Spirituality always gives the impression that you should become a better person, improve your life by doing better work. There is nothing in the world that is better than the soul. There is no substance more valuable than the soul. Where there is spirituality:

Satyam Shivam Sundaram, Satyamevajayate, Paramatmaev Satyam, Paramatmaev-Shivam, Paramatmaev-Sundaram self-service, devotion to people, service to people, mutual devotion and non-violence Paramo Dharma: this feeling day and night, may everyone be happy in the world. Truth, restraint and modesty should be practiced in every house. etc. accepts the principles in most forms. "Yatodharma: Tatah happiness, Yato spirituality, Tato Shivah". Where there is religion there is happiness. Where there is spirituality there is salvation, there is God. That is why spirituality ends evils, buries bad practices and establishes Satyayuga (period of truth) even in Kaliyuga (period of untruth). Great creatures are hungry for spirituality. Without spirituality the soul becomes dissatisfied and unhappy. Even you Eat nine there always remains hungry for thirteen (hunger for more) all the time. Where there is spirituality, gods reside there, Lakshmi resides there, happiness and peace prevail. The soul itself is superior and valuable. There is a policy in the world "Yatra Naryastu Pujyante, Ramante Tatra Devta" This policy has been said to increase the spiritual vision and prestige of women in society. This policy ensures that women should not face any kind of injustice or oppression. The government has also made laws from time to time for the upliftment and protection of women.. Provisions of sections 354, 304B, 306, 498A have been made in the Indian Penal Code (I.P.C.). Separate courts have also been established to adjudicate cases of atrocities against women. Principles for women's protection have been propounded from time to time by the Supreme Court and High Courts, in which the Vishalwa case (AIR 1997S.C. 3011) is prominent.

नारी और अध्यात्म

नारी के प्रति अनुचित सोच, शोषण, विलासिता और अन्याय को रोकने के लिये अध्यात्म परम आवश्यक है। वैवाहिक जीवन काम पुरुषार्थ को जाग्रत करता है, काम की स्वाभाविक भूख को मिटाता है, कर्मोदय जन्य उत्पन्न हुई काम–वासना को तृप्त व स्वाधीन बनाता है, भय पीड़ा और पराधीनता को मिटाता है। स्त्री पुरुष के बीच सामंजस्य की स्थिति वैवाहिक जीवन से ही निर्मित होती है। उत्श्रृंखला, भोग–विलास, मर्यादाहीन जीवन, अवसाद, अपवाद, चिन्ता, भय इत्यादि स्थितियाँ स्त्री–पुरुष के बीच अवैध संबंधों से निर्मित होती है इसीलिए विवाह को भी हम व्यवहारिक अध्यात्म की श्रेणी में रख सकते हैं।

जैन धर्म में काम, पुरुषार्थ गृहस्थ जीवन का एक अंग है, जिसकी सिद्धि अवैध संबंधों से नहीं बल्कि वैवाहिक संबंधों से होती है। काम पुरुषार्थ की सिद्धि के लिये विवाह एक अनिवार्य क्रिया है। विवाह स्त्री और पुरुष के बीच होता है। समलैगिंक संबंध अनुचित है। उसे हम विवाह की संज्ञा नहीं दे सकते। स्त्री पुरुष के बीच जो संबंध स्थापित होता है उसमें पुरुष के लिये स्वदारा संतोष व्रत और स्त्री के लिये पति व्रत धर्म की अनिवार्यता जैन धर्म में कही गई है। यह संबंध और व्रत जीवन को नैतिक, संतोषी, आध्यात्मिक बनता है और मुक्ति–पथ की ओर अग्रसर करता है। जो नारी पतिव्रत धर्म लेकर शील का पालन करती है उसका जीवन अध्यात्म कह सकते है, मूल्यवान कह सकते है। अच्छाईयों से जीवन मूल्यवान बनता है, विवाह संबंध में अच्छाईयाँ है बिना विवाह के स्त्री पुरुष के बीच शारीरिक संबंध बनाना गृहस्थ जीवन की सबसे बड़ी बुराई है। वह एक ऐसी बुराई है जो हिंसा, झूठ, कुशील, परिग्रह अन्याय, अत्याचार आदि अनेक पाप एवं समस्याओं को पैदा करती है। एक कवि ने कविता लिखी है उसका भाव यह है कि नारी गर्भधारण करती, पानी भरती, कपड़े धोती, घर का झाडू पोंछा करती, जरूरत पड़ने पर थकान होने के बावजूद मजदूरी करके बच्चों का लालन–पालन करती, अपने परिजनों की खरी खोटी सुनती आखिर क्यों ? यह उसकी मजबूरी है या धर्म ?

Women and Spirituality

Spirituality is absolutely necessary to stop unfair thinking, exploitation, lustfulness and injustice towards women. Marital life awakens sexual effort, quenches the natural hunger for lust, makes the lust generated by Karmodya satisfied and independent, removes fear, pain and subjugation. A state of harmony between man and woman is created only through married life. Situations like lust, luxury, undignified life, depression, exception, worry, fear etc. are created by illicit relations between man and woman, that is why we can keep marriage also in the category of practical spirituality.

In Jainism, work and effort are a part of household life, which is accomplished not through illicit relations but through marital relations. Marriage is an essential activity for the accomplishment of sexual efforts. Marriage takes place between a man and a woman. Homosexual relations are inappropriate. We cannot call it marriage. In the relationship that is established between man and woman, the necessity of Swadara Santosh (satisfaction) Vrat for the man and Pati (husband) Vrat for the woman has been stated in Jainism. This relationship and vrat (law) makes life moral, content, spiritual and leads towards the path of liberation. The life of a woman who follows the dharma of dedication to husband and follows modesty can be called spiritual, it can be called valuable. Good things make life valuable, there are good things in marriage relationship, having physical relationship between man and woman without marriage is the biggest evil in family life. It is an evil which gives birth to many sins and problems like violence, lies, mischief, injustice, atrocities etc. A poet has written a poem, its meaning is that a woman conceives, carries water, washes clothes, sweeps the house, works as a labourer despite being tired when needed, brings up children, listens to the bad words from her family members. Why ? Is this his compulsion or religion?

इन सभी प्रश्नों की गहराई में जाने पर सहज ही उत्तर मिलता है कि विकृति को मिटाने, संस्कृति को बचाने, कुल परम्परा की संतति को चलाने, धर्म को निभाने, अपनों को सुख पहुँचाने और आत्म–संतुष्टि को पाने के लिये नारी विवाह करके यह सब सहती है, और हे पुरुष तुम भी ऐसा सहो यह कहती है क्योंकि तुम्हारा जीवन भी अधूरा है, मेरा जीवन भी अधूरा है, तुम भी पराश्रित हो, मैं भी पराश्रित हूँ दोनों मिल जायें तो चारों पुरुषार्थ करने में स्वाश्रित बन जाये हम। संसार में हर चीज का जोड़ा होता है जैसे सुख–दुख, रात–दिन, अमीर–गरीब, राजा–प्रजा, ऊँच–नीच, नारी–पुरुष, इसीलिए नारी – पुरुष, का जोड़ा बनाकर विवाह करना आध्यात्मिक जीवन में साधक है, बाधक नहीं। यदि उनमुक्त वासना उत्पन्न होती है, तो बाधक है। समीचीन जीवन जीने एवं अधूरा जीवन पूरा करने के लिए स्त्री–पुरुष का जोड़ा बनाकर विवाह करना जैन धर्म में नीति संगत है। चारों प्रकार के पुरुषार्थ की सिद्धि के लिये विवाह ही एक मानव जीवन का मूल अधिकार है। विवाह के बिना भी धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ की सिद्धि की जा सकती है लेकिन काम पुरुषार्थ की नहीं। अर्थ पुरुषार्थ भी बिना विवाह के किया जा सकता है लेकिन उसकी सार्थकता तभी है जब उसे धर्म पुरुषार्थ रूप दान पुण्य में अथवा काम पुरुषार्थ में लगा दिया जाता है।

Going deeper into all these questions, the answer is easily found that women do all this by getting married to eradicate deformity, save culture, maintain family tradition, follow religion, bring happiness to their loved ones and attain self-satisfaction. She tolerates, and oh man, you also bear this, she says because your life is also incomplete, my life is also incomplete, you are also dependent, I am also dependent, if both of them come together then we become independent in making all four efforts. Everything in the world has a pair like happiness-sorrow, night-day, rich-poor, king-people, high-low, man-woman, that is why marrying a man-woman is not a hindrance in spiritual life, rather it helps spiritual life. If unfettered lust arises, it is a hindrance. In order to live an appropriate life and complete an incomplete life, marrying a man and a woman is a consistent policy in Jainism. For the accomplishment of all four types of efforts, marriage is the basic right of a human life. Dharma and salvation can be achieved even without marriage, but not sexual effort. Economic effort can also be done without marriage, but it has significance only when it is used in the form of religious effort, charity or sexual effort.

मनुष्य का उचित आहार

यह निश्चित है कि प्रत्येक प्राणी के लिये जीवन जीने के लिये भोजन, पानी और वायु आवश्यक तत्त्व हैं। जहाँ तक मनुष्य के आहार–पानी की बात है तो जैन धर्म के अनुसार मनुष्य का आहार मांसाहार कभी नहीं हो सकता क्योंकि मनुष्य जन्म से ही शाकाहारी, दिवाभोजी है क्योंकि मानव शरीर की संरचना शाकाहारी गाय, घोड़ा, हाथी, हिरण जैसी है न कि कुत्ता, बिल्ली, शेर व्याघ्र आदि मांसाहारी प्राणियों की तरह है। इस बात का स्पष्टीकरण शरीर विज्ञान के आधार पर इस प्रकार किया जा सकता है जैसे कि शाकाहारी प्राणी गाय–बैल आदि के दाँत चपटे होते हैं। मांसाहारी के दाँत नुकीले होते हैं। मनुष्य के दाँत शाकाहारी के समान चपटे होते हैं। शाकाहारी प्राणियों के नखून चपटे होते हैं। मांसाहारी के नुकीले होते हैं। मनुष्य के नाखून शाकाहारी प्राणी के समान चपटे होते हैं। शाकाहारी प्राणियों की आँखे रात्रि में चमकती नहीं हैं और अंधेरे में देख भी नहीं पाती हैं जबकि मांसाहारी प्राणियों की आँखे अंधेरे में चमकती हैं और रात्रि के अंधेरे में देख भी पाती हैं। मनुष्य की आँखें शाकाहारी प्राणियों के समान होती हैं। शाकाहारी प्राणी पानी में मुँह डालकर या मुँह से पानी लगाकर पीते हैं जबकि मांसाहारी प्राणी जीभ से पानी को उचटाकर पीते हैं। मानव शाकाहारी प्राणियों के समान मुँह से पानी लगाकर पीता हैं इत्यादि अनेक शारीरिक संरचना के आधार से सिद्ध होता है कि मनुष्य एक शाकाहारी प्राणी है, मांसाहारी नहीं इसलिए मनुष्य को मांस नहीं खाना चाहिए।

वर्तमान शिक्षा में मनुष्य को सर्वाहारी कह कर पढ़ाया जा रहा है लेकिन जैन धर्मानुसार मांसाहार मनुष्य का आहार नहीं है। मांसाहार प्राप्त करने के लिए पशु–पक्षियों की हत्या करनी पड़ती है जबकि उनको नहीं मारना चाहिए। उनकी हिंसा नहीं करनी चाहिए। मांसाहार त्याग कर और शाकाहार ग्रहण करके मानव समाज अपने जीवन का मूल्य और अधिक बढ़ा सकता है एवं बेहतर जीवन जी सकता है। यदि इन्द्रिय लोलुपता, स्वाद, शक्ति आदि के भ्रामक प्रचार से मांसाहार का सेवन करता है तो मानव अपना मूल्य घटा लेता है। वह उच्च न होकर नीच हो जाता है। सभ्य न होकर असभ्य हो जाता है। सामाजिक न होकर असामाजिक हो जाता है। दयालु न होकर निर्दयी हो जाता है।

Proper Human Food

It is certain that food, water and air are essential elements for survival of every living being. As far as human diet and water are concerned, according to Jainism, human diet can never be non-vegetarian because man is a vegetarian by birth, a day-eater, because the structure of the human body is like a vegetarian cow, horse, elephant, deer and not a dog, cat, lion, tiger etc. who are carnivorous creatures. This can be explained on the basis of physiology like the teeth of herbivorous animals like cows, bulls etc. are flat. Carnivores animals have sharp teeth. Human teeth are flat like those of herbivores. The nails of herbivorous animals are flat. Carnivores animals have fangs. Human nails are flat like those of herbivores. The eyes of herbivorous animals do not shine at night and they cannot see in the dark, whereas the eyes of carnivorous animals shine in the dark and they can also see in the darkness of the night. The eyes of humans are similar to those of herbivorous animals. Herbivorous animals drink water by putting their mouth or by applying water through their mouth, whereas carnivorous animals drink water by scooping it up with their tongue. Like vegetarian animals, humans drink water by applying water through their mouth, etc. On the basis of many physical structures, it is proved that man is a vegetarian animal, not a non-vegetarian, hence man should not eat meat.

In present education, humans are being taught as omnivores. But according to Jainism, non-vegetarian food is not human food. To obtain non-vegetarian food, animals and birds have to be killed whereas they should not be killed. They should not be subjected to violence. By giving up non-vegetarian food and adopting vegetarianism, human society can further increase the value of its life and live a better life. If one consumes non-vegetarian food due to greed, taste, power etc. misleading propaganda of the senses, then the human being reduces his value. Instead of being high, he becomes low. Instead of being civilized, he becomes uncivilized. Instead of being social, he becomes anti-social.

अंहिसक न होकर हिंसक हो जाता है। करूणावान न होकर क्रूर हो जाता है। क्रूर होकर पशु–पक्षियों को लहू–लुहान करता है। पशु–पक्षियों की करुण पुकार निर्दयी मनुष्य के अंदर प्रवेश नहीं करती। वह पशु–पक्षियों के मूल अधिकारों को नहीं समझ पाता है। वह पशु–पक्षियेां के जीवन जीने के मूल अधिकारों का हनन करता है। जो मूक प्राणियों एवं प्रकृति के अधिकारों को नहीं समझता वह अपने अधिकारों का भी पालन नहीं कर सकता। पशु–पक्षी अपने अधिकारों को चाहते हैं क्योंकि उन्हें भी अपना जीवन प्रिय है, लेकिन वे अधिकारों के लिए मनुष्यों के समान लड़ नहीं सकते। यदि लड़ते भी है तो जीत नहीं सकते क्योंकि मनुष्य के सामने मूक अज्ञानी पशुओं की शक्ति विवेक और बुद्धि कमजोर पड़ जाती है। इस प्रकार यदि पशु–पक्षी अपने अधिकारों को नहीं लड़ सकते परन्तु पशु–पक्षियों के अधिकारों के लिए मनुष्य लड़ सकता है और उन्हें उनके मूल अधिकार दे सकता है। जो मानव उन्हें अधिकार देता है वह मानव नहीं महामानव है, लेकिन जो क्रूरता पूर्वक हिंसा करता है वह मानव नहीं दानव है, इंसान नहीं शैतान है।

पशुओं के साथ क्रूरता रोकने के लिए प्रायः सभी देशों में कानून बनाये गये हैं। लेकिन मानव की चेतना का इतना विकास नहीं हुआ कि वे पशुओं के साथ होने वाले क्रूरतम् कत्ल आदि हिंसा के व्यवहार को रोक सकें और उनके साथ भी दया का भाव ला सकें उन्हें भी जीने का मूलभूत अधिकार दे सकें।

मनुष्य अपनी जाति, प्रजाति के सामने दयामय व्यवहार करता है। एक–दूसरे की सहायता मोह में करता है यह उसकी अपनी मानवीयता है लेकिन कुछ ईर्ष्यालु हिंसक लोग दूसरे मानव के प्रति भी क्रूरता पूर्ण व्यवहार करते हैं ऐसे लोग ही आतंकवादी, नक्सलवादी, हत्यारे बनते हैं।

जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक आत्मा परमात्मा है। बस उसे प्रगट करने की जरूरत है। इस्लाम धर्म के अनुसार प्रत्येक जीव खुदा की संतान है। हिन्दू धर्म के अनुसार प्रत्येक जीवात्मा ब्रह्मा का अंश है। ईसाई धर्म के अनुसार प्रत्येक जीव आत्मा के हृदय पर ईश्वर का राज्य है। साम्यवादी लोग हो या पूँजीवाद लोग, भौतिकवादी हो या भोगवादी इस बात को सभी स्वीकार करते हैं। अतः आप कोई भी वादी बनो लेकिन मानवतावादी जरुर बनो। मानवता को पहचानें, अर्थ में उसे न भूलें।

Instead of being kind, he becomes cruel, violent rather than non-violent Instead of being compassionate, he becomes cruel. Being cruel, he makes animals and birds bleed. The pitiful cries of animals and birds do not penetrate the heartless man. He does not understand the basic rights of animals and birds. He violates the basic rights of animals and birds to live. One who does not understand the rights of mute creatures and nature cannot follow his own rights. Animals and birds want their rights because they also love their life, but they cannot fight for their rights like humans. Even if they fight, they cannot win because the power, discretion and intelligence of dumb, ignorant animals becomes weak in front of humans. Thus, if animals and birds cannot fight for their rights, humans can fight for the rights of animals and birds and give them their basic rights. The human who gives them rights is not only a human being but a superman, but the one who brutally uses violence is not a human being but a demon, not a human being but a devil.

Laws have been made in almost all countries to prevent cruelty to animals. But the consciousness of humans has not developed to that extant that they can stop the cruelty and cruel behavior of killing and violence against animals and can also bring a sense of compassion towards them and can give them the basic right to live.

Man behaves compassionately in front of his own caste and species. Helping each other out of attachment is one's own humanity, but some jealous, violent people also behave cruelly towards other human beings and such people become terrorists, Naxalites and murderers.

According to Jainism, every soul is God. It just needs to be revealed. According to the religion of Islam, every living being is a child of God. According to Hindu religion, every living soul is a part of Brahma. According to Christianity, there is the kingdom of God in the heart of every living soul. Be it communist people or capitalist people, materialists or lusty, everyone accepts this. Therefore, no matter what you become, be a humanitarian. Recognize humanity, do not forget it in pursuit of wealth.

मनुष्य की प्रकृति

मनुष्य की प्रकृति आहार, भय, मैथुन, परिग्रह, इन चार संज्ञायों वाली होती है। इन चार संज्ञाओं की पूर्ति के लिए मनुष्य अर्थ संग्रह करता है। अर्थ साधन है और सुख साध्य है। सुख की प्राप्ति के लिए मनुष्य धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष पुरूषार्थ करता है। काम पुरूषार्थ के लिए अर्थ पुरूषार्थ जरूरी होता है। यदि ये दोनों असीम इच्छाओं के साथ होते हैं तो अन्याय, अत्याचार, बेईमानी और बलात्कार जैसे अनैतिक कार्य बढ़ते चले जाते हैं। जब काम और अर्थ पुरूषार्थ अपनी आवश्यकता अनुसार धर्म पुरूषार्थ के साथ नैतिक रूप से किये जाते हैं तो व्यक्ति आचरणवान होता है। खानपान और खानदान, आस्था और अर्थ, नीति और न्याय, सत्य और अहिंसा, ईमान और इंसानियत, नैतिकता और आचरण इत्यादि सभी पवित्र और संतुलित बने रहते हैं। यही समन्वित और धार्मिक अर्थ नीति की प्रणाली है।

सुख–सुविधा का उद्देश्य

अर्थ संग्रह करने का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक सुख–सुविधा के लिए होता है। लेकिन सुख–सुविधाएँ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं। जैसे एयर कंडिशनर (वातानुकूलित व्यवस्था), वाहन, फ्रिज, टी.वी, मोबाइल, लिफ्ट और सभी प्रकार की मशीनारी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं। विलासिता का जीवन जीने वाला व्यक्ति अपने आप को आधुनिक और स्टैण्डर्ड वाला मानता है। 'स्टैण्डर्ड आफ लिविंग' वाली बात करता है। इसके लिए वह शोषण करता है। बड़े–बड़े राजनीतिक, व्यावसायिक और सामाजिक अपराध करता है। इस स्टैण्डर्ड आफ लिविंग ने व्यक्ति के जीवन को खतरे में डाल दिया है। इस स्टैण्डर्ड ने लाइफ को स्टैण्डअप बना दिया है। यही कारण है कि पहले व्यक्ति बैठकर भोजन करता था अब स्टैण्डअप (खड़े) होकर भोजन करता है। बैठकर भोजन करना स्टैण्डर्ड डाउन (हीन) माना जाने लगा है और स्टैण्डप होकर भोजन करना स्टैण्डर्ड मान जाने लगा है। पहले नारी बैठ कर भोजन बनाती थी अब किचन पट्टी के सामने स्टैण्डप (खड़े) होकर भोजन बनाती है। जिससे गर्दन, कमर और घुटने आदि में दर्द होने लगा है।

Human Nature

Man's nature consists of four facets : food, fear, sex, attachment. To fulfill these four facets, man collects money. Money is the means and happiness is the end. To attain happiness, man makes efforts for religion, wealth, work and salvation. Economic effort is necessary for work effort. If both of these happen with unlimited desires then injustice, atrocities, dishonesty and immoral acts like rape keep on increasing. When work and economic efforts are done morally as per one's need along with religious efforts, then the person becomes virtuous. Food and family, faith and meaning, policy and justice, truth and non-violence, faith and humanity, morality and conduct etc. all remain sacred and balanced. This is a system of coordinated and religious economic policy.

Purpose of Comfort

The purpose of accumulating wealth is for physical, mental and emotional well-being. But luxuries are harmful for health. Like air conditioners, vehicles, fridges, TVs, mobiles, lifts and all types of machinery are harmful for health. A person living a life of luxury considers himself modern and standard. Talks about 'Standard of Living'. For this he exploits. Commits major political, commercial and social crimes. This standard of living has put the life of a person in danger. This standard has made life standup. This is the reason that earlier a person used to eat while sitting, now he eats while standing. Eating while sitting has started being considered inferior and eating while standing has started being considered standard. Earlier, women used to cook while sitting. Now she cooks food while standing in front of the kitchen platform, due to which she is having pain in her neck, waist, knees etc.

बैठकर भोजन बनाना स्टैण्डर्ड हीनता मानी जाने लगी है और स्टैण्डअप होकर भोजन बनाना स्टैण्डर्ड माना जाने लगा है। पहले आदमी गद्दी पर बैठ कर दुकान चलाता था। अब काउन्टर पर खड़े होकर दुकान चलाता है। बैठकर दुकान चलाना स्टैण्डर्ड हीनता मानी जाने लगी है और स्टैण्डप होकर दुकान चलाना स्टैण्डर्ड मान जाने लगा है। पहले आदमी बैठ कर लघु शंका (बाथरूम) करता था अब खड़े होकर करता है। बैठ कर लघु शंका करना स्टैण्डर्ड हीन माना जाने लगा है और खड़े होकर लघु शंका करना स्टैण्डर्ड माना जाने लगा है इस प्रकार स्टैण्डर्ड ने व्यक्ति को रोगी बना दिया है और लाइफ को स्टैण्डप कर दिया है।

मांस, मदिरा आदि शरीर के लिए आवश्यक नहीं, अनावश्यक है। इन सब के प्रति संयम धारण करने को जैन धर्म कहा गया है। इसी को इन्द्रिय निरोध कहा है। आधुनिक अर्थशास्त्री अनियंत्रित इच्छाओं को अर्थनीति का निर्धारण मानते हैं। लेकिन वह एकांकी अर्थ नीति है, वह भौतिकवादी है और पतन की ओर ले जाने वाली है। अतः अर्थ संग्रह में भौतिकवाद के साथ अध्यात्मवाद का सामन्जस्य होना अनिवार्य है। इच्छाओं में लगाम लगाना, सुख–सुविधाओं से ऊपर उठना और संतोषी बनाना आवश्यक है।

आधुनिक कुछ अर्थशास्त्रियों ने अर्थ का मुख्य उद्देश्य निर्धन व्यक्ति को धनी बनने का, पूँजीवाद को साम्यवादी बनने का बतलाया है जिससे सभी समान हो जाएँगे दरिद्रता और गरीबी दूर हो जाएगी। दरिद्रता और गरीबी किसी को प्रिय नहीं होती है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों का यह भी उद्देश्य है कि जितना स्वार्थ बढ़ेगा उतना ही विकास होगा। इसलिए स्वार्थवृत्ति को उभारना चाहिए। व्यक्तिगत स्वार्थ जितना होगा उतना ही व्यक्ति काम करेगा। स्वार्थवृत्ति से कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। धन और धनी सबको प्रिय होता है। हर व्यक्ति प्रिय बनना चाहता है। धन संपदा से व्यक्ति प्रिय बनता है। देश, समाज और परिवार का विकास होता है। धन से अधिकार प्राप्त होते हैं।

आधुनिक अर्थशास्त्रियो का यह विचार जैन धर्म से कुछ पृथक है, क्योंकि मानव वैसे भी मान का पुतला है, स्वार्थ भावना कूट–कूट कर भरी होती है, छल कपट इत्यादि कषाय प्रवृत्ति अनादिकाल से जीव के साथ संस्कार रूप में चली आ रही है इसीलिए स्वार्थ भावना अनेक समस्याएँ पैदा करती है।

Cooking food while sitting has started to be considered inferior and cooking food in a standup manner. has come to be considered standard. Earlier a man used to run the shop sitting on his seat. Now he runs the shop standing at the counter. Running a shop while sitting has started being considered inferior and running a shop while standing has started being considered standard. Earlier man used to go use the toilet while sitting, now he does it while standing. Using toilet while sitting has started being considered inferior and passing urine while standing has started being considered standard. In this way the standard has made a person sick and has made life "stand up".

Meat, alcohol etc. are not necessary for the body rather they they are unnecessary. Maintaining restraint towards all these has been called Jainism. This is called restraint of senses. Modern economists consider uncontrolled desires to be the determining factor of economic policy. But that is a one-sided economic policy, it is materialistic and is going to lead to degradation. Therefore, it is essential to have harmony of spiritualism with materialism in the accumulation of wealth. It is necessary to control desires, rise above comforts and be contented.

Some modern economists have stated that the main objective of economics is to make poor people rich, capitalism to become socialist by which everyone will become equal and poverty and there will be no improvished . Poverty and improvished are not liked by anyone. Modern economists also aim that the more selfishness increases, the more will be the development. Therefore, selfishness should be encouraged. The greater the personal interest, the more a person will work. Selfishness motivates us to work. Everyone loves money and the rich. Every person wants to be loved. Wealth makes a person lovable. The country, society and family develop. Rights are obtained from money.

This idea of modern economists is somewhat different from Jainism, because man is anyway an effigy of honor, he is full of selfishness, deceit, cheating etc. The astringent tendency like deceit, cheating has been going on with the living beings in the form of culture since time immemorial, hence emotion of selfishness creates many problems.

यदि करूणा, दया, संवेदनशीलता, न्याय, नीति, अहिंसा, अचौर्य और परमार्थ की भावना से अर्थ नीति जुड़ जाए तो मानव मूल्यों का ह्रास नहीं होगा। क्रूरता, अन्याय, हिंसा आदि अनैतिक कार्य स्वतः ही पलायन कर जाएँगे।

स्वार्थनीति और असीम इच्छाओं से एक मानव डाका डाल कर धनी बनता है। दूसरा मानव लूटकर धनी बनता है तीसरा अपहरण करके फिरौती द्वारा धनी बनता है। चौथा मांस, मछली, अंडे आदि हिंसक व्यवसाय करके धनी बनता है। ये सभी अवैध रूप से धन संग्रह करके धनी तो बन जाते हैं लेकिन अपने मानवीय मूल्यों का ह्रास कर लेते हैं, तनाव ग्रस्त और अस्वथ हो जाते हैं। अपने पतन के लिए स्वयं गढ्डा खोद लेते हैं। पाप करने नरक का रास्ता स्वयं चुन लेते है।

अर्थसंचय होना चाहिए और परिवार चलाने कुछ हद तक स्वार्थसिद्धि भी होनी चाहिए लेकिन इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रकृति और पुरूष का अहित न हो। मानव मूल्यों और नैतिकता का पतन न हो। परमात्मा का और उनकी आज्ञा का अनादर न हो स्वार्थ, काम सेवन, अर्थ संग्रह और इंद्रिय सुख एक सीमा में होना चाहिए। यह ऐसा हो, जो स्वयं के लिए और दूसरों के लिए घातक न हो।

आधुनिक कुछ अर्थशास्त्रियों का विचार है कि– अर्थशास्त्र का जन्म हिंसा से होता है। जब तक देश पूर्णतः विकसित न हो जाए और सभी लोग धनवान न बन जाएँ तब तक नैतिकता और मानव मूल्यों पर विचार नहीं करना चाहिए। इस प्रकार आधुनिक अर्थशास्त्रियों का उद्देश्य जीवन में सुख–शान्ति और अहिंसा का नहीं बल्कि मात्र आर्थिक समृद्धि का है। यह अवधारणा जैन धर्म के अनुसार एवं समस्त भारतीय धर्म एवं लोग व्यवहार के अनुसार अनुचित है। करुणा, दया, संवेदन और परोपकार का विकास भी अर्थ के विकास के साथ होना चाहिए। अर्थ का व्यय भी आवश्यकता अनुसार सीमित होना चाहिए। अर्थात् नीति से धन अर्जन करना और रीति से खर्च करना चाहिए। धर्म और दर्शन आर्थिक विकास में बाधक नहीं है बल्कि साधक है। धर्म, न्याय, नीति और नैतिकता पूर्वक संचित किया गया धन भी पुण्य कर्म कहलाता है। धर्म, अनुचित अर्थ व्यय पर अंकुश लगाता है। अनुपयोगी अर्थ व्यय को रोकने से अर्थ का विकास होता है, क्योंकि–:

If compassion, kindness, sensitivity, justice, ethics, non-violence, inviolability and if economic policy is linked with the spirit of altruism, then there will be no degradation of human values. Cruelty, injustice, violence etc. immoral acts will automatically disappear.

Due to selfishness and unlimited desires, a human being becomes rich by committing robbery. The second person becomes rich by cheating & robbing, the third becomes rich by kidnapping and ransom. Fourth, he becomes rich by doing predatory business of meat, fish, eggs etc. All of them become rich by accumulating wealth illegally but lose their human values, become stressed and unhealthy. They dig their own grave for their downfall. By committing sin, we choose our own path to hell.

There should be accumulation of wealth and there should be some level of self-fulfillment in running the family, but care should be taken that it does not cause harm to nature and man. There should be no degradation of human values and morality. There should be no disrespect to God and His orders; selfishness, lust, accumulation of wealth and sensual pleasures should be within limits. It should be such that it is not fatal for oneself or others.

Some modern economists believe that economics is born from violence. Morality and human values should not be considered until the country is fully developed and everyone becomes rich. Thus, the aim of modern economists is not happiness, peace and non-violence in life but only economic prosperity. This concept is inappropriate according to Jainism and all Indian religions and people's behavior. The development of compassion, kindness, sensitivity and charity should also be accompanied by the development of wealth. Expenditure of money should also be limited as per requirement. That is, money should be earned ethically and spent properly. Religion and philosophy are not hindrances to economic development but are seekers. Wealth accumulated through religion, justice, policy and morality is also called virtuous action. Religion curbs undue expenditure. Stopping unnecessary expenditure of money leads to development of wealth because.

आदमी कमाने से नहीं बचाने से धनवान बनता है।
आदमी खाने से नहीं पचाने से बलवान बनता है।
आदमी उच्चारण और उच्च वस्त्र आभूषण से नहीं,
अरे आदमी तो उच्च आचरण से महान बनता है।

न्याय नीति और मेहनत से कमाया हुआ वैध,धन महालक्ष्मी कहलाता है। अन्याय अनीति से कमाया गया धन अवैध धन कुलक्ष्मी कहलाता है। अधिकार कुलक्ष्मी से नहीं, महालक्ष्मी से प्राप्त करके परोकार के लिए खर्च करने होते हैं। कुलक्ष्मी को प्राप्त करने के बाद धनी बन सकते हैं लेकिन एक दिन सलाखों के अन्दर जेल में भी बंद हो सकते हैं। कुलक्ष्मी आदमी के अंदर विकृतियाँ पैदा करती है। कुलक्ष्मी क्रूर बनाती है और एक दिन पतन की और ले जाकर गड्ढे में गिरा देती है।

अवैध धन को रोकने के लिए भ्रष्टाचार अधिनियम D.A. case एक्ट बनाया गया है। राजाओं के राज्य में भी ऐसे नियम बनाए जाते थे।

एक समय था जब भूखंड का साम्राज्य चलता था और भूमि पर अधिकार जमाया जाता था। फिर एक समय आया जब नारियों पर अधिकार जमाया गया, लेकिन आज अर्थ पर अधिकार जमाया जा रहा है। अतः आज आर्थिक साम्राज्यवाद का युग है। आज आर्थिक साम्राज्यवाद होनेसे लोग जमीन बेच कर फैक्ट्री लगा रहे हैं। मात्र धन के लिए धनी बनने कि वर्तमान में होड़ लगी है। इस होड़ में मानवाधिकारों को दफना दिया है। टैक्नेलोजी का साम्राज्य फैल रहा है। टैक्नोलॉजी का भरपूर प्रयोग अर्थ के लिए हो रहा है, लेकिन मानव कल्याण, मानव अधिकार और अध्यात्म का ह्रास हो रहा है। जितना अधिक टैक्नोलॉजी का विकास हो रहा है उतना अधिक मानव समाज में बेरोजगारी की वृद्धि भी हो रही है। आर्थिक विकास के साथ रोजगार का भी विकास होना चाहिए। रोबोट, कम्प्यूटर और मोटर गाड़ी से हजारों नहीं लाखों करोड़ो मजदूर बेरोजगार हो गये हैं। आदमी आलसी और अस्वस्थ हो रहा है और अपने उद्देश्य से भटक रहा है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय बढ़ाने के लिए और आर्थिक समानता लाने के लिए व्यक्तिगत क्षमता, योग्यता और मेहनत को बढ़ाना चाहिए। दुनिया में एक समान योग्यता और कार्य करने की क्षमता कभी नहीं हो सकती, इसीलिए आर्थिक समानता भी कभी आ नहीं सकती।

Man becomes rich by saving and not by earning.
Man becomes strong not by eating but by digesting.
Man becomes great not by his pronunciation and high clothes and jewellery,
Man becomes great by his conduct .

Legitimate wealth earned through justice and hard work is called Mahalakshmi. The money earned through injustice and wrong policy is called illegal money Kulakshmi. Rights have to be obtained not from Kulakshmi but from Mahalakshmi and spent for welfare. After attaining Kulakshmi, one may become rich but one day one may end up in jail behind bars. Kulakshmi creates deformities inside a person. Kulakshmi makes him cruel and one day leads him to decline and makes him fall into his grave..

Anti corruption Act D.A case Act has been made to stop illegal money. Such rules used to be made even in the kingdoms of kings.

There was a time when there used to be empire on land and control over the land used to be established. Then there came a time when power was established over women, but today power is being established over money. Therefore, today is the era of economic imperialism. Today, due to economic imperialism, people are selling land and setting up factories. At present there is a competition to become rich just for the sake of money. Human rights have been buried in this competition. The empire of technology is expanding. Technology is being used extensively for economic purposes, but human welfare, human rights and spirituality are declining. The more technology is developing, the more unemployment is also increasing in human society. Along with economic development, employment should also develop. Robots, computers and motor vehicles have rendered thousands, if not lakhs, of workers unemployed. Man is becoming lazy and unhealthy and is deviating from his purpose. Every person should increase his personal capabilty, ability and do hard work to increase his income and bring economic equality. There can never be equal ability and capability to work in the world, that is why economic equality can never come

वर्तमान में प्रति व्यक्ति आय का स्रोत बढ़ गया है, लेकिन स्मार्टनेस, स्टैंडर्ड और हाई थिंकिंग ने अर्थ के व्यय का स्रोत भी बढ़ा दिया है। हर व्यक्ति अपना जीवन स्तर बढ़ाना चाहता है, अर्थ बढ़ाना चाहता है और अधिकार भी चाहता है। आज मानव जीवन निर्वाह की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के स्थान पर 'स्टैंडर्ड ऑफ लिविंग' उच्च जीवन जीने की लालसाओं की पूर्ति में लग गया है। समस्या प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति से उत्पन्न नहीं होती बल्कि उच्च स्तर का जीवन जीने की लालसा से होती है उच्च स्तर का जीवन निरीह और मूक पशु–पक्षियों के साथ–साथ इंसान की भी निर्मम हत्या करने को बाध्य कर देता है। इसी कारण हिंसा, झूठ, चोरी, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, अत्याचार और आतंकवाद पनपता है। उच्च स्तर का जीवन महाइच्छा को पैदा करता है। महाइच्छा को नियंत्रित किये बिना विकास असंभव है। बहुत आरंभ, बहुत परिग्रह दोनों महाइच्छा के परिणाम हैं। तत्वार्थ सूत्र ग्रंथ के अध्याय ६, सूत्र 15 में आचार्य उमास्वामी महाराज ने लिखा है कि– **बह्वारम्भ–परिग्रहत्वं नरकस्यायुषः** बहुत आरंभ और बहुत परिग्रह नरकायु के आश्रव और बंध का कारण है और अल्पारम्भ–परिग्रहत्वं मानुषस्य ६ सूत्र१७६ अर्थात्– कम आरंभ और कम परिग्रह मनुष्य आयु के आश्रव और बंध का कारण है। अतः आरंभ और परिग्रह कम करके न्याय, दया, करुणा से युक्त होकर अजीविका चलाना चाहिए। ऐसा व्यक्ति व्यवहार कुशल, हेरा–फेरी से रहित और मानवीय गुणों से सहित होता है।

सत्ता और पूंजीवाद का केंद्रीय करण हिंसा को बढ़ाता है और अनेक समस्याओं को पैदा करता है। जहाँ सत्ता की बात आती है वहां संपदा का केंद्रीयकरण होता है। यही कारण है कि भगवान महावीर स्वामी ने राज्य सत्ता और धन–संपदा के अधिकारों को छोड़कर आत्मसत्ता और ज्ञान–संपदा की बात पर जोर दिया। हिंसा पर नहीं अहिंसा पर जोर दिया। अहिंसा स्थायी टिक सकती है लेकिन हिंसा नहीं। उद्योग लगाने से हिंसा होती है कत्लखाने जैसे उद्योग नहीं लगाने चाहिए। हिंसक उद्योग आर्थिक गुलाम बनाता है। अन्याय, अत्याचार और शोषण को जन्म देता है। इनसे बचने के लिए अहिंसा और संयम का पालन करना चाहिए। जहाँ अहिंसा और संयम है वहाँ सुःख और शांति है। उत्पादन, वितरण और उपभोग ये तीनों अहिंसक होना चाहिए।

Presently the source of per capita income has increased, but smartness, standard and high thinking have also increased the source of expenditure. Every person wants to increase his standard of living, increase his wealth and also wants rights. Today, instead of fulfilling the basic needs of human subsistence, 'Standard of Living' has started fulfilling the desires of living a higher life. The problem does not arise from the fulfillment of primary needs but from the desire to live a higher standard of living. The higher standard of living compels the ruthless killing of innocent and silent animals and birds as well as human beings. This is why violence, lies, theft, bribery, corruption, atrocities and terrorism flourish. A high standard of living gives rise to great desires. Development is impossible without controlling lust. Too much luxury, too much attachment, both are the results of great desire. In Chapter 6, Sutra 15 of Tattvartha Sutra book, Acharya Umaswami Maharaj has written that - ***"Bahvaarambh- Parigrahatvam Narakasyayush"*** Too much luxury and too many perigrahas are the reason for Aashray and Bandh (attachment) of Narakayu and ***"Alpaarambh - Parigrahatvam Manushasya Gh Sutra 176"*** *i.e.* - less luxury and less perigrahas are the reason for the dependence and bondage of human age. Therefore, one should earn his living by reducing the luxury and endeavour, and be full of justice, mercy and compassion. Such a person is tactful, free from manipulation and has human qualities.

Centralization of power and capitalism increases violence and creates many problems. Where power is concerned there is talk of centralization of wealth. This is the reason why Lord Mahavir Swami left aside the rights of state power and wealth and emphasized on self-sovereignty and wealth of knowledge. Emphasis was placed on non-violence and not violence. Non-violence can last but violence cannot. Setting up industries leads to violence. Industries like slaughter houses should not be set up. Violent industry creates economic slaves. Gives rise to injustice, oppression and exploitation. To avoid these, one should follow non-violence and restraint. Where there is non-violence and restraint, there is happiness and peace. Production, distribution and consumption should be non-violent.

संसार के सभी प्राणियों में मानव एक सर्वाधिक ज्ञानी. समझदार और सामाजिक प्राणी है। मानव हमेशा प्रकृति का उपयोग एवं संरक्षण करता रहा है। इतना ही नहीं बल्कि मानव, मानव का और अन्य प्राणियों का भी शोषण करता रहा है। नगण्य हैं वे मानव जो प्रकृति, प्राणियों और मानव का शोषण नहीं करते हैं। शोषण न करने वालों का आज की इस दुनिया में शोषण किया जा रहा है। उन्हें गलत मार्ग पर चलाने के लिये मजबूर किया जा रहा है। इसी कारण ऊपर से नीचे तक सभी जगह भ्रष्टाचार चल रहा है। इन सब के उनमूलन हेतु समय–समय पर नियम कानून बनाये जाते रहे हैं, और अधिकार भी दिये जाते रहे हैं। नियम कानून और अधिकार मानव द्वारा बनाये जाते हैं, उन्ही के द्वारा पाले जाते हैं, उन्हीं के द्वारा परिवर्तित किये जाते हैं और उन्हीं के द्वारा उल्लंघन किया जाता है। यह प्रक्रिया अनादि काल से चल रही है, और अनन्त काल तक चलती रहेगी, क्योंकि मानव अनेक प्रकार की विचारधारा वाले होते हैं। जैसे एक सामाजिक दूसरे असामाजिक, अथवा एक सभ्य दूसरे असभ्य, अथवा एक विवेकी दूसरे अविवेकी, अथवा एक धार्मिक दूसरे अधार्मिक, अथवा एक हिंसक दूसरे अहिंसक, अथवा एक सरल स्वभावी दूसरी कुटिल स्वभावी, एक स्वार्थी दूसरे परमार्थी एक ज्ञानी दूसरी अज्ञानी अथवा एक उपकारी दूसरे आज्ञाकारी इत्यादि होते हैं। जो असामाजिक, अविवेकी और अधार्मिक होते हैं, वे मानव दुष्ट, हिंसक, विषय–लोलुपी, मिथ्यावादी, चंचल–स्वभावी, लोभी, लालची, विद्रोही, निर्दयी एवं अन्यायी, प्रवृत्ति वाले होते हैं। वे हमेशा नकारात्मक विचारों वाले होते हैं। लेकिन जो सामाजिक, विवेकी, धार्मिक होते हैं वे करुणावान, दयालु, त्यागी, परोपकारी, प्रेमी, पुरुषार्थी, उत्साही, संयमित, न्यायप्रिय आदि मानवीय स्वाभाविक गुणों से सहित होते हैं। वे हमेशा सकारात्मक विचारों वाले होते हैं। धार्मिक स्वभाव वाले मानव ज्ञान, चारित्र और संयम को धन मानते हैं। पिता–पुत्र, पत्नी आदि भी उन्हें चेतना धन के रूप में प्रिय होते हैं। अतः वे उनकी सेवा आदि भी करते हैं। लेकिन जो अधार्मिक होते हैं उन्हें ज्ञान, संयम और पारिवारिक चेतना धन से कोई लेना देना नहीं होता है। उन्हें मात्र खेती मकान आदि धन दौलत रूपी अचेतन धन से मतलब होता है। इसे और विस्तार से इस प्रकार कह सकते है कि–

Among all the creatures in the world, human is the most knowledgeable, intelligent and social creature. Man has always been using and preserving nature. Not only this, humans have been exploiting humans and other living beings as well. Those humans who do not exploit nature, animals and humans are insignificant. Those who do not exploit are being exploited in today's world. They are being forced to follow the wrong path. For this reason corruption is going on everywhere from top to bottom. To eradicate all these, rules and regulations have been made from time to time, and rights have also been given. Rules, laws and rights are made by humans, nurtured by them, changed by them and violated by them. This process has been going on since time immemorial, and will continue till eternity, because humans have many types of ideologies. Like one is social, the other is anti-social, or one is civilized, the other is uncivilized, or one is rational, the other is irrational, or one is religious, the other is irreligious, or one is violent, the other is non-violent, or one is simple-natured, the other is devious, one is selfish, the other is altruistic, the other is knowledgeable, the other is ignorant, or the one is a benefactor the other is obedient etc. Those who are anti-social, unreasonable and irreligious, those people are evil, violent, lustful, false, fickle-natured, greedy, greedy, rebellious, cruel and unjust. They always have negative thoughts. But those who are social, wise, religious, are compassionate, kind, sacrificial, philanthropic, loving, hard-working, enthusiastic, restrained, fair-loving etc. with human natural qualities they always have positive thoughts. People with religious nature consider knowledge, character and restraint as the real wealth. Father, son, wife etc. are also dear to him as the wealth of consciousness. Hence they also serve them etc. But those who are irreligious, to them knowledge, restraint and family consciousness have nothing to do with wealth. They are only concerned with unconscious wealth like farming, houses etc. This can be said in more detail like this that humans are of various natures like :

मानव अनेक प्रवृत्तियों वाले होते हैं जैसे–

ज्ञान प्रवृत्ति–: कुछ मानव ऐसे होते हैं जो ज्ञान को ज्यादा महत्व देते हैं। ऐसे लोग विषय भोगों से अपना उपयोग हटाकर पड़ने–लिखने और तत्त्व की चर्चा करने में अपना समय व्यतीत करते हैं। ज्ञान प्राप्त करके योग्यता हासिल करते हैं। स्वयं नियम कानून कायदे में रहकर दूसरों को भी रखना चाहते हैं। यही लोग सुव्यवस्थित समाज का होना करते हैं। वे ही मानवाधिकारों को प्राप्त करने के सच्चे अधिकारी होते हैं। समयानुसार नियम कानूनों में परिवर्तन लाते हैं, न्याय नीति निर्धारित करते हैं और मानवता की स्थापना करते हैं।

आहारी प्रवृत्ति–: भूख लगना और उसका शमन करना प्रत्येक संसारी प्राणी का स्वभाव है, लेकिन कुछ मानवों की नौ खावे तेरह की भूख बनी रहती हैं अथवा एक गमाएँ नौ समाएँ इस कहावत के स्वभाव वाले होते हैं। ऐसे लोग उत्पादन कार्य में अधिक रूचि रखते हैं। क्योंकि बिना उत्पादन के उन्हें खाने–पीने की वस्तु प्राप्त नहीं होती हैं। यही प्रवृत्ति उन्हें स्वादिष्ट भोजन बनने की कला एवं कृषि उत्पादन की कला की ओर ले जाती है।

साहसी प्रवृत्ति–: कुछ मानव धैर्यवान होते हैं। साहस और शौर्य उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। ऐसे मानव युद्ध क्षेत्र में भी उत्साहित होकर देश, धर्म और समाज की रक्षा हेतु आत्म बलिदान के लिये सदैव तत्पर रहते हैं, साहसिक प्रवृत्ति वाला हमेशा प्रतिनिधित्व करना चाहता हैं। वह शारीरिक, मानसिक और वाचनिक तीनों प्रकार से शक्तिशाली होता हैं। मानव का दूसरा पक्ष कमजोर है। कमजोर पक्ष वाले मानव लोभी, लालची, स्वार्थी, आलसी, असत्यवादी और संकीर्ण विचार वाले होते हैं। ऐसे मानव पशु की कोटि में आते हैं।

कषाय प्रवृत्ति–: कुछ मानव कषाय प्रवृत्ति वाले होते हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक भय जुगुप्सा इत्यादि ये सब कषाय कहलाती हैं। इन कषायों के आधार पर मानव क्रोधी, अभिमानी, लोभी मायावी इत्यादि की कोटि में आ जाते हैं। वे कभी अपना कल्याण और समाज का प्रतिनिधित्व नहीं कर पाते हैं। नीतिकारों ने कहा है कि–

येषां न विद्या तपोन दाने ज्ञानं न पूजा शीले न धर्मो
ते मृत्यु लोके भुवि भार भूता, मनुष्य रूपेण मृगाश्चरंति।।

Knowledge tendency: There are some human beings who give more importance to knowledge. Such people divert their time from materialistic pleasures and spend their time in reading, writing and discussing the subject. By acquiring knowledge they acquire competence. By living within the rules and regulations, they want others as well to live within rules. These are the people who make a well-organized society. They are the only ones who have the true right to enjoy human rights.In time they bring changes in rules and laws, determine policy to impart justice and serve the humanity.

Eating habits: Feeling hungry and satisfying hunger is the nature of all worldly creatures, but some human beings remain always hungry. There are local proverbs like" nau khawe terah ki bhuk" or " ek garmayen nau samayen" which that they are always hungry and still want more food even after taking full food.. Such people are more interested in production work. Because without production they do not get food items. This tendency leads them towards the art of making delicious food and the art of agricultural production.

Courageous Tendency: Some humans are patient. Courage and bravery is their natural tendencies. Such human beings, even in the battlefield, are always enthusiastic and ready to sacrifice themselves for the protection of the country, religion and society; they always want to represent those with adventurous tendencies. He is powerful in all three ways – physical, mental and verbal. The other side of the human being is weak. Human beings with weak side are greedy, covetious , selfish, lazy, untruthful and narrow minded. Such humans come in the category of animals.

Astringent nature: Some humans have astringent tendencies. Anger, pride, illusion, greed, humor, Rati, Aarti, grief, fear, Jugupsa etc. all these are called Kashay. On the basis of these Kashais, humans fall into the category of angry, arrogant, greedy, elusive etc. They are never able to represent their welfare and society. Policymakers have said that :

"***Yeshan na Vidya tapon daane gyanam na puja shiiley na dharmo***

Te mrityu lokay bhuvi bhar bhuuta, manushya rupen mragashchranti"

अर्थात्– जिसने अपने जीवन में न तो दान दिया, न विद्या प्राप्त की न तप किया, न ज्ञान प्राप्त किया, न पूजा की, न शील का पालन किया ऐसे व्यक्ति इस धरती पर भार है और वे मनुष्य के रूप में पशु वत् विचरण कर रहे हैं। ऐसे मनुष्य हिंसक, क्रूर. अन्यायी. अत्याचारी लोभी, मायावी और ईर्ष्यालु आदि प्रवृत्ति वाले हो जाते हैं। ये सब मानवीय अवगुण हैं, ऐसे मानव अपना जन, धन या आयुध बल का भय दिखा कर अधिकार जमाना चाहते हैं। ऐसा करके वे अधिकार प्राप्त कर लेते हैं लेकिन उन्हें सुरक्षित नहीं रख पाते हैं।

वासना प्रवृत्ति–: संसार के सभी प्राणियों में आहार, भय, मैथुन, और परिग्रह ये चार संज्ञाये (प्रवृत्तियाँ) होती है। मैथुन अर्थात् वासना से मानव भी अछूता नहीं है। जैसे पेट की भूख होती है वैसे ही वासना की भी भूख होती है, लेकिन जो मानव ज्ञान और वैराग्य सहित होते हैं वे भोगी न बनाकर योगी बन जाते हैं। वे इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, उनकी प्रवृत्ति आहार में कम होता है और मैथुन आदि में प्रवृत्ति नहीं होती है, लेकिन शेष मानव की प्रवृत्ति वासना–मयी होती है। उसी की पूर्ति के लिये एवं संतान प्राप्ति कर सन्तान परंपरा चलने हेतु वे विवाह संबंध स्थापित करते हैं। लेकिन कुछ मानव ऐसे भी होते हैं, जो अपनी विवाहिता स्त्री में संतुष्ट न होकर पराई स्त्रियों से शारीरिक संबंघ बनाते हैं। वासना की प्रवृत्ति उन्हें अन्धा बना देती है। स्त्रियाँ देह व्यापार करने पर उतारू हो जाती हैं। कामी पुरुष ऐसी स्त्रियों के साथ वेश्यावृत्ति करने लग जाते हैं अथवा छेडखानी एवं बलात्कार करने लग जाते हैं। उनमुक्त वासना की प्रवृत्ति ऐसे मानव को पशु बना देती हैं। मानव अपनी मानवता खो बैठते हैं, ऐसे मानव को कुकर्मी कहते हैं। यह वासना ही रोगों की जननी हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भावभवेत।।

अर्थात् सभी जीव सुखी, और निरोगी रहें, सभी का कल्याण हो कोई भी दुखी न रहे। यह मानवता वादी सिद्धान्त खो जाता है।

सामाजिक प्रवृत्ति–: सामाजिक व्यक्ति न्याय प्रिय, आचरणवान, विवेकवान, और पुरुषार्थ शील होता है।

मानवीय प्रवृत्ति–: मानव के चहुंमुखी विकास, सहिष्णुता, क्षमा, दया, दान, और परोपकार आदि की भावना के प्रकट होने पर मानवीय प्रवृत्ति प्रकट होती है। इसे प्रकट होना ही मानवतावाद कहलाता है।

That is, one who in his life neither gave charity, nor acquired knowledge, nor did penance, nor acquired knowledge, nor worshiped, nor followed modesty, such a person is a burden on this earth they roam around in the form of humans with nature of animals. Such men are violent, cruel. Unjust. Tyrants become greedy, deceitful and jealous. All these are human vices, such humans want to establish their authority by showing fear of their people, wealth or armed force. By doing this they acquire rights but are not able to protect them.

Lustful tendencies: All the creatures in the world have food, fear, sex, and parigraha, these four natures (tendencies). Even human beings are not untouched by sex i.e. lust. Just as there is hunger in the stomach, similarly there is hunger in lust too, but those who have human knowledge and renunciation, they become yogis instead of being indulgent. They conquer the senses, they have less inclination towards food and do not have inclination towards sexual intercourse etc., but the nature & inclination of the other human beings is lustful. To fulfill this need and to continue the tradition of having a child, they establish a marriage relationship. But there are some human beings who, instead of being satisfied with their married woman, have physical relations with other women. The tendency of lust makes them blind. Women become bent on prostitution. Lustful men start prostituting such women or start molesting and raping them. The tendency of unfettered lust turns such a human being into an animal. Humans lose their humanity, such humans are called evildoers. This lust is the mother of diseases.

"Sarve Bhavantu Sukhinah: Sarve Santu Niramayaah:.

Surve Bhadrani Pashyantu Ma Kashchid Dukh Bhavbhavet".

That is, may all living beings be happy and healthy, pray well-being of all and let there be no sad either. This humanistic principle is lost.

Social tendency: A social person is justice-loving, well-behaved, intelligent, and has the spirit of effort.

Human nature: Human nature manifests itself when human beings develop feelings of all-round development, tolerance, forgiveness, mercy, charity and philanthropy etc.

मानवतावाद और आत्मवाद व अध्यात्मवाद का उदय युग के आदि में प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव के काल से हुआ था। उन्होंने षट् कर्म का उपदेश देकर अपने राज्य काल में मानव को मानवतावादी बनाया। बाद में स्वयं राज–पाट को त्यागकर वैराग्य धारण किया और कठोर तपस्या की। तपस्या के समय अध्यात्मवाद को अपनाया और केवल्यज्ञान की प्राप्ति की। केवल्यज्ञान होनेपर आत्मवाद और अध्यात्मवाद का उपदेश दिया। उसी से आत्मा को परमात्मा बनने और मोक्ष प्राप्त करने के सिद्धान्त का प्रचार एवं प्रसार किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक आत्मा स्वतंत्र है। अध्यात्म के मार्ग पर चलने से आत्मा परमात्मा बन जाती है। प्रत्येक आत्मा अनादि काल से ज्ञानावरण आदि आठ कर्मों से जकड़ी हुई है। इसी के कारण दुख भोग रही है। प्रत्येक प्राणी अकेला जन्म लेता है और अकेला मृत्यु को प्राप्त होता है। भोगभूमि के काल में स्त्री और पुरुष का युगल जन्म होता है, और दोनों जीवन पर्यन्त एक साथ रहते हैं, लेकिन कर्म भूमि में अकेला ही जन्मता है, अकेला ही मरता है। इसलिये यहाँ व्यक्तिवाद भी चलता है और वैराग्य पथ पर बढ़नें से एकत्वबाद भी चलता है। व्यक्तिवाद से जीवन ज्यादा नहीं चल सकता। जीवन चलाने के लिए समूह में रहकर समाज वादी भी बनाना होगा। सच्चे संबंधों से समाजवाद चलता है। जब अहम् टकराने लगता है और मानवतावाद समाप्त होने लगता है तब समाज दो भागों में बँट जाता है। भौतिकवाद भोगवाद का जनक है। भौतिकतावादी विकास सभी को प्रभावित करता है, क्योंकि देखने में अच्छा लगता है। भौतिकवाद से ही पूँजीवाद को प्रोत्साहन मिलता है क्योंकि भौतिक सुख–सुविधायें के योग्य भोग सामग्रियाँ बिना पूंजी के उपलब्ध नहीं होती। इस पूँजीवाद से एक नए पूँजीवादी समाज का अभ्युदय हो जाता है।

समाज में पूँजीवाद आ जाने पर अमीर एवं गरीब की भेद रेखा खिंच जाती है। कुछ पूँजीवादी लोग गरीब लोगों का शोषण करने लगते हैं। अधिकार जमाने लगते हैं, और उन्हें हीन भाव से देखने लगते हैं। इसी से मानवतावाद घुटने लग जाता है। लोकतांत्रिक देशों में गरीब लोगों का उपयोग मतदान तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। पूँजीवादी लोगों को देखकर गरीब लोगों को ईर्ष्या नहीं करना चाहिए परंतु ऐसा हो रहा है इसी कारण आन्दोलन होने लगते है। पार्टियाँ बनने लग जाती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार उद्‌भव इन्हीं सब समस्याओं के कारण हुआ।

This manifestation itself is called humanism. Humanism & the rise of antism and spiritualism took place in the beginning of the era during the period of the first Tirthankar Rishabh Dev. He made man a humanitarian during his reign by preaching Shat Karma. Later, he himself renounced the throne and adopted renunciation and performed severe penance. During penance, he adopted spiritualism and attained Kevalyagyan. After attaining Kevalya Gyan, he preached antism and spiritualism. Through him, the theory of the soul becoming God and attaining salvation was propagated and spread. He said that every soul is free. By following the path of spirituality the soul becomes God. Every soul has been bound by the eight karmas since time immemorial. Because of this it is suffering. Every living being is born alone and dies alone. In the Bhogbhoomi period, a man and a woman are born as a couple, and both live together throughout their lives, but in the Karma Bhoomi, one is born alone and dies alone. That is why individualism also prevails here and by moving on the path of renunciation, unity also prevails. Life cannot go on much with individualism. To survive, one will have to become a social animal by living in a group. Society works through true relationships. When egos start clashing and humanism starts ending then the society gets divided into two parts. Materialism is the father of enjoying. Materialistic development affects everyone because it looks good. Capitalism is encouraged by materialism because material comforts are not available without capital. Through this capitalism a new capitalist society emerges.

When capitalism comes into society, the line of distinction between rich and poor gets drawn. Some capitalist people start exploiting poor people. They start gaining authority and start looking at poor with inferiority complex. Due to this, humanism begins to suffocate. In democratic countries, the access of poor people should not be limited to voting. Poor people should not be jealous after seeing capitalists, but this is happening, that is why movements start taking place. Parties start forming. International human rights emerged due to all these problems.

'धर्म निरपेक्षता के साथ जाति और पंथ निरपेक्षता हो'

धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में पंथ निरपेक्षता और जाति निरपेक्षता की कोई बात नहीं हो रही है। चुनाव की वोटिंग के समय जाति की बात पहले की जाती है किस जाति की कितनी वोट है उसी को लेकर उम्मीदवार खड़ा किया जाता है। जातिवाद को लेकर चलने से भी धर्मनिरपेक्षता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है । राजनीति में पंथवाद और जातिवाद को लेकर चलने से नफरत और अस्थिरता का माहौल बनता है। जातिवाद एवं पाखंडवाद को लेकर चलने से संप्रदायवाद उत्पन्न होता है और समस्याएं बढ़ती चली जाती हैं।

आचार्य संहिता के अनुसार एक दूसरे पर छींटाकशी, दोषारोपण, आरोप–प्रत्यारोप नहीं लगा सकते हैं लेकिन आज दोष प्रकाशन की राजनीति चल रही है। अपने देश समाज एवं परिवार के गुप्त रहस्य और बुराइयों को दबाना चाहिए लेकिन पांच साल की सत्ता की सीट पाने के लिए लोग गुप्त रहस्य को उद्घाटित कर रहे हैं एवं एक दूसरे पर दोषारोप कर रहे हैं। दोषारोपण करने से जातिवाद नफरत और हिंसा को बढ़ावा मिलता है। देश की गुप्त नीतियां विदेशी लोगों तक पहुंच जाती है फिर वे उसका पूरा फायदा उठाते हैं। जिससे देश की रक्षा राजनीति, और अर्थनीति आदि संकट में पड़ जाती है। नैतिक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति पर दोषारोपण नहीं करता है यहां तक की दोषी व्यक्ति के दोषों का प्रकाशन भी नहीं करता है।

जैन साधु राजनीति नहीं करते परंतु राजनीति का ज्ञान रखते हैं। वे नीति वान होने से चुनाव की नीति निर्धारण का उपदेश दे सकते हैं। नेता न्याय प्रिय, सदाचारी, अहिंसक, देश एवं राष्ट्र रक्षक हो ऐसी भावना कर सकते हैं। लोकतांत्रिक देशों में चुनाव लड़ने वाली पार्टियां और उनके उम्मीदवार कम होना चाहिए। चुनाव के समय जितने अधिक उम्मीदवार चुनाव मैदान में होते हैं देश में उतनी अधिक अस्थिरता बनती है, अखंडता और एकता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा होता है और ठापटक दलबदल की प्रक्रिया अधिक होती है। इन सब से बचने के लिए एक समान आचार्य संहिता बनना चाहिए और कड़क कानून बनना चाहिए। चुनाव की तारीख निश्चित होने पर आचार्य संहिता तो लागू कर दी जाती है लेकिन चुनाव होते ही उसे हटा दिया जाता है चुनाव जैसी आचार्य संहिता शासकीय कार्य को छोड़कर यदि देश में हमेशा बनी रहे तो हमेशा सुख शांति बनी रहेगी।

Need for Secularism of Cast and Creed With Religious Secularism

There is no talk of secularism in caste and creed in a religious secular nation. During election voting, caste is discussed first and candidates are nominated based on how many votes hie/her caste has. Taking issue with casteism also puts a question mark on secularism. Following sectarianism and casteism in politics creates an atmosphere of hatred and instability. By following casteism and hypocrisy, communalism arises and problems keep increasing.

According to Acharya Samhita, one cannot slander, blame or make counter-allegations against each other, but today the politics of blaming is going on. The hidden secrets and evils of our country, society and family should be suppressed, but to get the seat of power for five years, people are revealing the hidden secrets and blaming each other. Placing blame promotes casteism, hatred and violence. The secret policies of the country reach the foreign people and then they take full advantage of it. Due to which the country's security, politics and economics etc. are in trouble. A moral person does not blame anyone else. It does not even publish the crimes of the guilty person.

Jain Sadhus do not do politics but have knowledge of politics. Since they follow principles of policy, they can give advice on determining election policy. Leaders can feel that they are justice-loving, virtuous, non-violent, protectors of the country and the nation. In democratic countries, there should be fewer parties and their candidates contesting elections. The more candidates are in the fray at the time of elections, the more instability is created in the country, the integrity and unity are questioned and the process of defection is more frequent. To avoid all this, a uniform Acharya Samhita (Code of Conduct) should be made and strict laws should be made. The Acharya Samhita is implemented when the election date is fixed but it is removed as soon as the elections take place. If the Acharya Samhita remains in the country forever except for government work, then there will always be peace and happiness.

समान आचार्य संहिता आजादी के दिन से प्रारंभ होना चाहिए थी यह आलेख पेज नंबर 176 समान नागरिकता संहिता के साथ जोड़ दे।

'जैन धर्म के मूल सिद्धांत' जैन धर्म जिन शब्द से बना है। जयति इति जिनः अर्थात जिसने राग द्वेष काम आदि विकारी भाव और इंद्रियों को जीत जीत कर जिसमें वीतराग सर्वज्ञ और हितोपदेशीपन को प्राप्त कर लिया है उन्हें जिन कहते हैं। जिनो देवता यस्य सः इति जैनः अर्थात जिनके देवता जिनेंद्र भगवान है उन्हें जैन कहते हैं। जिनेंद्र देव को जिन सर्वज्ञ केवली अरिहंत आप्त और परमात्मा आदि नामों से जाना जाता है।

'जैन धर्म के प्राचीन नाम'

आत्म को परमात्मा बनाने के लिए निरंतर श्रम करने से जैन धर्म को श्रमण धर्म कहते हैं। राग रहित होकर आत्मा को परमात्मा बनाने की प्रायोगिक विधि अपनाने से इससे वीतराग वैज्ञानिक धर्म कहते हैं। समस्त परिचय और कषायों की ग्रंथि खोलकर पूर्ण निर्ग्रंथ अवस्था को प्राप्त हो कर साधना करने के कारण इसे निर्ग्रंथ धर्म कहते हैं। अरिहंत परमेष्ठी के द्वारा प्रतिपादित होने के कारण से इसे अर्हत धर्म कहते हैं। जिन देव के द्वारा यह धर्म प्रतिपादित होने से इसे जिन धर्म कहते हैं। केवली भगवान के द्वारा प्रतिपादित होने से इसे केवली धर्म कहते हैं। आत्म ज्ञान और आत्म ध्यान प्रधान होने से इसे आत्म धर्म कहते हैं। इसी प्रकार अन्य और भी नाम है जिन नामों से यह जैन धर्म जाना जाता है ।

'जैन धर्म की प्राचीनता'

जैन धर्म अनादि अनिधन है क्योंकि जब से संसार है तब से हिंसा और अहिंसा है। संसार अनादिकालीन है अतः हिंसा और अहिंसा अनादिकालीन है । हिंसा पाप है । अहिंसा धर्म है । अहिंसा परमो धर्मः यही जैन धर्म का मूल सिद्धांत है इससे सिद्ध होता है कि जैन धर्म अनादिकालीन है । दूसरा कारण यह है कि वस्तु स्वभावो धम्मो अर्थात – वस्तु का जो जैसा स्वभाव अर्थात स्वरूप है वही धर्म है जैसी अग्नि का स्वभाव जालना, जल का स्वभाव शीतलता प्रदान करना, जीव का स्वभाव जानना देखना और सुख दुख का संवेदन करना ऐसा यह स्वभाव प्रत्येक द्रव्य में अनादि काल से है और अनंत काल तक रहेगा । यही जैन धर्म का सिद्धान्त है इससे भी सिद्ध होता है कि जैन धर्म अनादि अनिधन है, शाश्वत है, सनातन है सभी धर्म से अति प्राचीन है।

Uniform Acharya Code should have started from the day of independence. Please read this article along with Uniform Citizenship Code on page number 176.

'Fundamentals of Jainism'

Jainism is derived from the word Jin. Jayati Iti Jinah i.e. the one who has conquered the vices like attachment, hatred, lust etc. and the senses in which he has attained the omniscience of Vitarag(free from all senses) and Hitopadeshi (welfare of all). They are called Jin. Jino deity Yasya Saah Iti Jain: Those whose deity is Jinendra God, they are called Jain. Jinendra Dev is known by the names like Sarvajna, Kevali, Arihant, Apt and Paramatma etc.

'Ancient names of Jainism

Jainism is called Shraman (Work) Dharma (religion) due to continuous labor to transform oneself into God. By adopting the experimental method of making the soul God by becoming free from attachment, this is why it is called scientific Veetarag religion. Due to the practice of attaining complete nirgraha (fearless) state by opening the glands of all the parichays and kashas, it is called Nigrantha Dharma. Because it was propounded by Arihant Parmeshthi, it is called Arhat Dharma. Since this religion was propounded by Jin God, it is called Jin religion. Since it is propounded by Lord Kevali, it is called Kevali Dharma. Since self-knowledge and self-meditation are predominant, it is called self-religion. Similarly, there are other names by which Jainism is known.

Antiquity of Jainism

Jainism is from immeroriable times and eternal because there has been violence and non-violence ever since the world existed. The world is eternal, hence violence and non-violence are eternal. Violence is a sin. Nonviolence is religion. Non-violence is the supreme religion: This is the basic principle of Jainism, this proves that Jainism is ancient and eternal. The second reason is that the nature of the object is Svabhavo Dhammo i.e. the nature of the object is the same as Dharma, just as the nature of fire is to burn, the nature of water is to provide coolness, the nature of living beings is to know, see and feel happiness and sorrow, such is the nature of every substance - this nature have been there since time immemorial and will remain so for eternity. This is the principle of Jainism and this also proves that Jainism is eternal, from time immerial and non destructable, timeless, traditional and is more ancient than all other religions.

'जैन धर्म के प्रतीक चिन्ह'

सफेद, लाल, पीला, नीला और कला रंग वाला अभय मुद्रा, स्वास्तिक और तीन लोक के चित्र से युक्त अहिंसा परमो धर्मः और परस्परोपग्रहो जीवानाम् सूत्र लिखा हुआ पचरंगी ध्वजा। पुरुषाकार तीन लोक का नक्शा। अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पांच परमेष्ठी की मूर्ति, चित्र, आकृति, मन्दिर।

'जैन धर्म की उत्पत्ति'

जैन धर्म के अनुसार वास्तु के स्वभाव का नाम धर्म है। प्रत्येक वस्तु का अपना गुण धर्म और स्वभाव अनादि कालीन है । इस गुणधर्म और स्वभाव की संतति अनंत काल तक आगे भी चलती रहेगी इसलिए जैन धर्म सनातन है और अनादि अनंत कालीन है । इस स्वभाव और गुणधर्म को बताने वाले समय–समय पर होते रहे और आगे भी होते रहेंगे जो इस धर्म का प्रवर्तन करते हैं उन्हें हम संस्थापक नहीं कहते हैं बल्कि प्रवर्तक कहते हैं। अतः जो वस्तु के गुण धर्म को बताने वाले प्रवर्तक होते हैं उन्हें तीर्थंकर कहते हैं । कहा भी है तीर्थं करोति इति तीर्थंकरः अर्थात जो धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करते हैं उन्हें तीर्थंकर कहते हैं। जैन धर्म के अनुसार भारत क्षेत्र में 24 और ऐरावत दो क्षेत्रों में 24 तीर्थंकर होते हैं जबकि विदेह क्षेत्र में हमेशा तीर्थंकर होते रहते हैं।

'जिन, जैन और सिद्धांत धर्म'

जिन्होंने विषय कषाय कर्म और इंद्रियों को जीत कर केवल ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन्हें जिन कहते हैं। जिन में जो श्रेष्ठ होते हैं उन्हें जिनेंद्र कहते हैं । भग यानी ज्ञान और वान यानी सहित अतः जो पूर्ण ज्ञान (केवल ज्ञान) सहित होते हैं उन्हें भगवान कहते हैं । केवल ज्ञानी परमात्मा को केवली कहते हैं। राग द्वेष मोह इत्यादि कर्म रूपी अरि अर्थात शत्रुओं को जीत लिया है जिन्होंने उन्हें अरिहंत कहते हैं। अरिहंत ही वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी और अनंत गुणों से युक्त होने से लोक के सभी राजा महाराजाओं द्वारा पूजित होते हैं इसीलिए अर्हत कहलाते हैं। सर्व लोक में शांति करने में कारण होने से अरिहंत ही शंकर कहलाते हैं। केवल ज्ञानी घ परमात्मा शिव स्वरूप होने से शिव कहलाते हैं । ऐसे भगवान जिनेंद्र के द्वारा कहे गए धर्म को जैन धर्म कहते हैं । जैन धर्म के बताए गए सिद्धांतों पर चलने वाले को जैन कहते हैं । प्रत्येक आत्मा अपने द्रव्य, गुण और पर्याय में परिणमन करती रहती हैं।

'Symbols of Jainism'

White, red, yellow, blue and art colored flag with Abhaya Mudra, Swastika and picture of the three worlds with "Ahimsa Paramo Dharmaah" and "Samparopagraho Jeevanaam Sutra "written on it, map of three worlds in male form, eight Mangal Dravya, Ashta Pratiharya, pictures, figures, idols of five Parmeshtis and temple.

'Origin of Jainism'

According to Jainism, the nature of Vaastu is called Dharma. Every thing has its own quality, religion and nature from time immemorial. The progeny of this quality and nature will continue till eternity, hence Jainism is eternal and timeless. Those who tell about this nature and qualities have been there from time to time and will continue to be there in future too. We do not call those who promote this religion as founders but as promoters, originators. Therefore, those who are the originators of religion and explain the qualities of things are called Tirthankaras. It is also said that "Tirtha Karoti Iti Tirthakar" - that is, those who promote the religion of pilgrimage are called Tirthankar. According to Jainism, there are 24 Tirthankaras in the Bharat region and 24 Tirthankaras in each of the two regions of Airavat, whereas in the Videha region there are always keep happening Tirthankaras.

'Jin' Jain and Siddhant Dharma'

Those who have attained knowledge of the self (Kewal gyan) by conquering sensual activities and senses are called Jinas. Among them, the best ones are called Jinendra. "Bhag "means knowledge of the self and "Van" means including, hence the one who has complete knowledge (self knowledge) is called God. The one acquires complete self knowledge he is a super soul is called Kevali. He has conquered Ari i.e. enemies in the form of karma like attachment, hatred, pleasures of life etc. we call him Arihant. Arihants are known as Arhats because they are selfless, omniscient, well-versed and have infinite qualities and are worshiped by all the kings and emperors of the world. Arihants are called Shankars because they bring peace to all the worlds. Only wise supersouls are in the form of Shiva, they are called Shiva. The religion preached by Lord Jinendra is called Jainism. The one who follows the principles laid down in Jainism is called Jain. Every soul keeps changing into its substance, qualities and synonyms.

'द्रव्य –' द्रव्य का अर्थ जो वस्तु सत्ता से अनन्य भूत होकर सद्भाव रूप में अपने गुण और पर्याय में द्रवित होता है इस द्रव्य कहते हैं । अर्थात द्रव्य हमेशा गुण और पर्याय को प्राप्त होते रहे हैं होते रहेंगे और हो रहे हैं। अथवा जो सत रूप है और उत्पाद व्यय ध्रौव्यपने से सहित है उसे द्रव्य कहते हैं क्योंकि जिस वस्तु का अपना अस्तित्व है वह वस्तु द्रव्य है। जो वस्तु द्रव्य नहीं है उसका अस्तित्व नहीं हो सकता है । द्रव्य गुणों का समुदाय होता है। द्रव्य ना कभी उत्पन्न होते हैं और ना उनका कभी विनाश होता है। द्रव्यों की संख्या ना घटती है ना बढ़ती है । जो द्रव्यों में हर समय, हर अवस्था में अभिन्न रूप से सदा बना रहता है और एक दूसरे द्रव्य में भेद करने वाला होता है उसे गुण कहते हैं। द्रव्य में कभी भी गुण बाहर से नहीं आते हैं। द्रव्य के साथ गुण हमेशा थे, हैं और रहेंगे। द्रव्य के विकार को पर्याय कहते हैं। जैन धर्मानुसार द्रव्य कुल 6 होते हैं। जो इस प्रकार हैं जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल। इन 6 द्रव्यों में एक द्रव्य जीव रूप है क्योंकि जीव चेतना गुण के कारण जीता है सुख दुख का संवेदन करता है इसलिए जीव है। शेष 5 द्रव्य अजीव रूप है क्योंकि उनमें चेतना नहीं पाई जाती है। द्रव्य यथार्थ हैं। प्रत्येक द्रव्य का अपना अस्तित्व है। विश्व की सभी वस्तुएं जीव और अजीव इन दो मूल द्रव्यों से बनी है। इन्हीं से यह लोक बना है। सभी द्रव्य अकृत्रिम और अनादि अनंत है। अर्थात किसी परमात्मा या ईश्वर आदि के द्वारा बनाए हुए नहीं हैं। ये अनादि काल से हैं और अनंत काल तक रहेंगे। यदि कोई कहता है कि एक समय ऐसा था जब कोई द्रव्य नहीं था किसी सर्व शक्तिमान ईश्वर ने इन्हें बनाया है। यदि यह माने कि ईश्वर ने संसार के सभी द्रव्यों को बनाया है तो प्रश्न आता है कि ईश्वर जड़ है या चेतन। यदि चेतन है तो वह जड़ (अजीव मेटल) को नहीं बना सकता है। यदि वह ईश्वर स्वयं जड़ (अजीव) है तो चेतन जीव को नहीं बना सकता है क्योंकि दोनों नितांत भिन्न भिन्न हैं। सभी द्रव्य शश्वत प्रवाह रूप से विद्यमान हैं। सभी द्रव्यों की संतति अनादि काल से प्रवाहमान होकर चली आने से और अनंत काल तक प्रवाहमान होने से सनातन है अतः द्रव्य और संसार के सर्जन (बनाने) का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। इसलिए इस वैज्ञानिक युग में आंख बंद करके विश्वास नहीं करना चाहिए। यदि करते हैं तो अंधविश्वासी कहलाएंगे।

'Dravya -' meaning of the substance which, being independent from the object, is fluid in its qualities and synonyms in a harmonious form, this is called substance. That is, substances have always been acquiring qualities and synonyms, will be happening and are happening. Or that which is in its true form and includes production and expenditure, is called matter because the thing which has its own existence is matter. Anything that is not matter cannot exist. Matter is a collection of qualities. Matter is never created and neither is it destroyed. The number of substances neither increases nor decreases. That which always remains integral to the substances at all times and in every state and which differentiates one substance from another is called quality. Properties of matter never come from outside. Properties have always been, are and will be with matter. Disorder of matter is called synonym. According to Jainism, there are total 6 substances. Which are as follows: Jeeva, Pudgal, Dharma, Adharma, Aakash and Kaal. Among these 6 substances, one substance is the living form because the living being lives due to the quality of consciousness, it senses happiness and sorrow, hence it is a living being. The remaining 5 substances are non-living forms because consciousness is not found in them. Matter is real. Every substance has its own existence. All things in the world are made up of these two basic substances, living and non-living. This world is made up of these. All matter is artificial and eternal. That means they are not created by any super soul or God etc. These have been there since time immemorial and will last forever. If someone says that there was a time when there were no substances, some almighty God created them. If it is believed that God has created all the substances in the world, then the question arises whether God is inanimate or animate. If it is conscious then it cannot create matter (inanimate metal). If that God himself is inanimate (inanimate) then he cannot create animate being because both are completely different. All substances exist in eternal flow. progeny of all matter. Since it has been flowing since time immemorial and has been flowing till eternity, it is eternal, hence no question arises of the creator of matter and the world. Therefore, in this scientific era, one should not believe blindly. If we do, we will be called superstitiou.

'जैन दर्शन में सात तत्व'

जैन धर्मानुसार जीव और अजीब ये मुख्य रूप से दो ही तत्व हैं। इन्हीं दो तत्वों से सात तत्व बने हैं। जब संसारी प्राणी अपनी उदर पूर्ति इंद्रिय संतुष्टि और मानसिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए कोई विचार करता है और सामग्री जुटाने के लिए कार्य करता है तब वह मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और कुटिल क्रियाओं से युक्त होता है एवं पुद्गल कर्म परमाणुओं का आत्मा की ओर आकर्षण करता है यही आकर्षण आश्रव तत्त्व कहलाता है। पुद्गल कर्म परमाणु जब वर्गणा के रूप में निर्मित होकर आत्मा के साथ दूध पानी की तरह एकमेक हो जाते हैं तब उसे बंध तत्त्व कहते हैं। जब संसारी प्राणी पूजन पाठ, मंत्र जाप, भक्ति आराधना, व्रत, समिति, धर्म और आत्म चिंतन में लग जाता है तब उसके कर्म परमाणुओं का आत्मा की ओर आकर्षण अर्थात आना रुक जाता है इसी को संवर तत्त्व कहते हैं। जब संसारी प्राणी तपस्या करता है तब आत्मा से बंधे हुए पुद्गल कर्म परमाणु कुछ अंशों में मुक्त हो जाते हैं उसे ही निर्जरा तत्त्व कहते हैं। जब आत्मा से बधे हुए सभी कर्म पूर्णता अलग हो जाते हैं और आत्मा अपने समस्त जान आदि गुण और शक्ति को प्रकट कर लेती है उसे ही मोक्ष तत्त्व कहते हैं ।इस प्रकार जैन धर्म में जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष ये सात तत्व होते हैं। इन तत्वों में पुण्य और पाप मिला देने पर 9 पदार्थ हो जाते हैं। जैन धर्म में छह द्रव्य, सात तत्त्व, नौ पदार्थ होते हैं इन्हीं पर यथार्थ श्रद्धान करना सम्मेद दर्शन कहलाता है। इन्हीं का ज्ञान करना सम्यक ज्ञान कहलाता है। सिद्धांत और ज्ञान करके भगवान के बताए अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह इन पांच व्रतों का पालन करना सम्यक चारित्र कहलाता है। इन्हीं तीनों की एकता का नाम मोक्ष मार्ग है। इसे ही रत्नत्रय कहते हैं। इन्हीं तीनों की एकता से मोक्ष की प्राप्ति होती हैं संसार में रहने वाले शरीर धारी जीव कर्मों से सहित होते हैं इसलिए इन्हें संसारी जीव कहते हैं, लेकिन जब संसारी जीव रत्नात्रय धारण करके समस्त कर्मों से रहित हो जाती है उसे मुक्त जीव या सिद्ध परमात्मा कहते हैं। मुक्त जीव शुद्ध चौतन्य प्राण से जीते हैं और संसारी प्राणी आयु, श्वासोच्छश्वास, पांच इंद्री एवं तीन बल इन 10 प्राणों से जीते हैं।

'Seven elements in Jain philosophy'

According to Jainism, living creatures and non living creatures are mainly two elements. Seven elements are made from these two elements. When a worldly creature thinks about something and works to gather material to satisfy his hunger, sense satisfaction, desires and mental desires, then he becomes false, incessant, careless. He is full of astringent and devious actions and attracts the Pudgal Karma atoms towards the soul, this attraction is called Ashrava Tattva. When the Pudgal Karma atoms are formed in the form of Vargana and become one with the soul like milk and water, then it is called Bandha Tattva. When a worldly creature engages in worship, chanting mantras, devotional worship, fasting, committee, religion and self-contemplation, then the attraction of his karmic atoms towards the soul stops, this is called Samvara Tattva. When a worldly being performs penance, the Pudgal Karma atoms bound to the soul get freed to some extent, this is called Nirjara Tattva. When all the karmas bound to the soul are completely separated and the soul reveals all its life qualities and power, it is called the principle of salvation. Thus, in Jainism there are seven elements: Jiva, Ajiva, Ashrava, Bandha, Samvara, Nirjara and Moksha. By adding virtue and sin to these elements, nine substances are formed. In Jainism, there are six substances, seven elements, nine substances and paying proper respect to them is called Sammed Darshan. Knowledge of these is called proper knowledge. Following the five vows of non-violence, truth, non-observance, celibacy and non-attachment given by God through principles and knowledge is called right character. The unity of these three is called the path of salvation. This is called Ratnatraya. Salvation is achieved by the unity of these three. The bodily beings living in the world are involved in deeds, that is why they are called worldly beings, but when the worldly beings, after wearing Ratnatraya, one who becomes free from all karma is called a liberated soul or a perfect God. Liberated beings live by pure Chautanya Prana and worldly beings live by these 10 pranas - age, breath, five senses and three forces.

इस प्रकार जैन धर्म में संसारी और मुक्त जीव ये मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं। संसारी जीव भी दो प्रकार के होते हैं। जिन जीवो के सिर्फ एक स्पर्श इंद्री होती है उन जीवों को एक इंद्रिय जीव अथवा स्थावर जीव कहते हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति इस प्रकार एक इंद्रिय जीव पांच प्रकार के होते हैं। दो इंद्रिय से लेकर पंच इंद्रिय तक जीवों को त्रस जीव कहते हैं। इंद्रियां पांच होती हैं।

जैन धर्म अन्य धर्म में भिन्नता के कारण

'1 – आत्मा ही परमात्मा है' जैन धर्म का यह मूल सिद्धांत है अप्पा सो परमप्पा यानी प्रत्येक आत्मा निश्चय नई से परमात्मा है। व्यवहार नय से संसारी हैं, हम सभी परमात्मा बन सकते हैं, परमात्मा एक नहीं अनेक होते हैं इसी सिद्धांत से जैन धर्म सब धर्मों से पृथक है।

'2–अनिश्वर कर्ता वाद –' कुछ धर्मावलंबी कहते हैं कि परमात्मा एक ही होता है उसी की कृपा से सबका भला होता है, वही सृष्टि का करता होता है लेकिन जैन धर्म का सिद्धांत है कि कोई भी आत्मा परमात्मा बन सकती है । परमात्मा सृष्टि की रचना करता नहीं है, सृष्टि प्राकृतिक है। परमात्मा ने न हमें बनाया है ना हमें वह फल देता है। हम स्वयं के कर्ताधर्ता है और स्वयं के कर्मों के फलों के भोक्ता है।

'3– आस्तिकवाद–' जैन धर्म आस्तिकवादी धर्म है, नास्तिक वादी नहीं। मोक्ष प्राप्ति के लिए देव शास्त्र गुरु, सात तत्व, छह द्रव्य और नौ पदार्थों पर श्रद्धा करना जरूरी है। इन पर श्रद्धा करने का नाम ही सम्यक दर्शन है। सम्यक दर्शन मोक्ष मार्ग की प्रथम सीढ़ी है। जैन आस्तिक वादी होकर भी ईश्वर कृतित्व को स्वीकार नहीं करते हैं इसलिए कुछ लोग इसे नास्तिक वादी धर्म कहते हैं जो गलत है। ईश्वर कर्तृत्व को स्वीकार ना करने से कोई नास्तिक वादी नहीं हो जाता है। अरे भाई नास्तिक वादी वह होता है जो अपने अलावा दूसरों के अस्तित्व को स्वीकार ही नहीं करता है। जो सत रूप में है उसे स्वीकार नहीं करता और ना उस पर आस्था नहीं रखता है। जैन धर्म लोक, आलोक, आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग, नरक, संसार और मोक्ष के अस्तित्व को स्वीकार करता है। इन्हीं पर सच्ची श्रद्धा करता है। पुरुषार्थ करके आत्मा परमात्मा बनता है। परमात्मा के द्वारा कही गई प्रत्येक बात पर पूर्ण रूप से सम्यक आस्था रखता है इसलिए जैन धर्म नास्तिक वादी नहीं बल्कि पूर्ण आस्तिकवादी है।

Thus, in Jainism there are mainly two types of worldly and liberated beings. There are two types of worldly creatures. The organisms which have only one sense of touch are called monosensory organisms or immobile organisms. Earth, water, fire, air and vegetation are thus the five types of single sense creatures. The living beings from two senses to five senses are called 'tras' creatures. There are five senses.

Reasons for Jainism's difference from other religions

1. The soul is the Supreme Soul': This is the basic principle of Jainism, "Appa So Paramappa " i.e. every soul is definitely the Supreme Soul. Our behavior is worldly in nature, we all can become God, God is not one but many, on this principle Jainism is different from all other religions.

2. Some religious followers say that there is only one God, by His grace everyone is benefited, He is the one who creates the universe, but the principle of Jainism is that any soul can become God. God does not create the universe, creation is natural. God neither created us nor gives us results. We are our own doers and enjoyers of the fruits of our own actions.

3. Theism: Jainism is a theistic religion, not an atheist. To attain salvation, it is necessary to have faith in Dev Shastra Guru, seven elements, six substances and nine substances. The name of having faith in them is Samyak Darshan. Right philosophy is the first step on the path to salvation. Jains, despite being theists, do not accept the creation of God, hence some people call it an atheistic religion, which is wrong. Not accepting the role of God does not make one an atheist. Hey brother, an atheist is one who does not accept the existence of others besides himself. Neither does he accept what is in its true form nor has faith in it. Jainism accepts world, light, soul, God, heaven, hell, the existence of the world and salvation. Jainism has true faith in them. By making efforts the soul becomes God. It has full faith in everything said by God, hence Jainism is not atheistic but completely theistic.

'4. पुनर्जन्मवाद–' जैन धर्म पुनर्जन्म को स्वीकार करता है । संसारी आत्मा संसार में अपने कर्म के अनुसार मरण करके एक गति से दूसरी गति में जाकर जन्म लेती है । इस प्रकार के पुनर्जन्मवाद को जैन धर्म स्वीकार करता है लेकिन जब संसारी आत्मा समस्त कर्मों को नष्ट करके शरीरातीत परमात्मा बनकर मोक्ष चली जाती है फिर वहां से पुनः संसार में अवतरित नहीं होती है इस अपेक्षा से जैन धर्म पुनर्जन्म को स्वीकार नहीं करता है।

5 निर्वाण वाद –' संसारी आत्मा सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र और सम्यक तप करके समस्त कर्मों से मुक्त होकर परमात्मा बनती है और उसका निर्वाण हो जाता है । निर्वाण अर्थात मोक्ष हो जाने के बाद पुनः संसार में नहीं आती है यही निर्वाणवाद अथवा मुक्तिवाद का सिद्धांत है।

6 भक्तिवाद– जैन धर्म में श्रद्धा सहित अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय और साधु इन पांच परमेष्ठियों की,जिन मंदिर, जिन प्रतिमा, जैन धर्म और जिन आगम की भक्ति, पूजन, बंदना, स्तुति और आराधना करने का विधान है। यह भक्ति निश्चय और व्यवहार दो प्रकार की है। निश्चय भक्ति आत्मज्ञान में ली आचार्य उपाध्याय और साधु परमेष्ठी करते हैं। व्यवहार भक्ति प्रविधि में प्रवृत्ति में स्थित साधु एवं श्रावक दोनों करते हैं। व्यवहार भक्ति ही निश्चय भक्ति के लिए कारण है। निश्चय भक्ति परमात्मा पद की प्राप्ति में कारण है । व्यवहार भक्ति पुण्य की प्राप्ति में कारण है और परंपरा से मोक्ष की प्राप्ति में भी कारण है। अथवा निश्चय भक्ति साक्षात मोक्ष सुख की कारण है और व्यवहार भक्ति परोक्ष रूप से मोक्ष का कारण है। संसार शरीर और भोगों से निवृत्ति और आत्म स्वरूप में प्रवृत्ति का नाम निश्चय भक्ति है। व्यवहार भक्ति से जो पुण्य की प्राप्ति होती है उससे सांसारिक सुख और भोगों की प्राप्ति होती है। व्यवहार भक्ति को धर्म अनुराग कहा।

'7 अहिंसा वाद–' सभी जीव एक समान हैं । सभी जीव निश्चयनय की दृष्टि से भगवान हैं । सभी जीव ज्ञान, दर्शन, चौतन्य स्वभाव वाले हैं। सभी जीव सुख चाहते हैं और दुख से डरते हैं। संसारी जीवो के लिए दुख नहीं पहुंचाने रूप क्रिया को अहिंसा कहते हैं । जीवो को दुख पहुंचाने रूप क्रिया को हिंसा कहते हैं। संसारी जीव कम से कम चार और अधिकतम 10 प्राणों से जीते हैं।

4. Reincarnationism – Jainism accepts rebirth. The worldly soul dies and takes birth from one state to another according to its karma in the world. Jainism accepts this type of reincarnation, but when the worldly soul destroys all the deeds and goes to salvation by becoming an incarnate God and does not incarnate into the world again from there, Jainism does not accept rebirth because of this expectation.

5. Nirvana Vaads: The worldly soul adopting right philosophy, right knowledge, right character and right penance becomes free from all the karmas and becomes God and attains Nirvana. After attaining Nirvana *i.e.* salvation, one does not come back into the world, this is the principle of Nirvanaism or liberationism.

6. Bhaktiism: In Jainism, there is a tradition of devotion, worship, Vandana , praise and worship with devotion of the five divine beings - sidh, acharyas,upadhyayas, sadhus,jain temples, jain idols, Jain religion and Agama with devotion. This devotion is of two types: determination and behavior. Acharya Upadhyaya and Sadhu Parmeshthi do devotional service in self-knowledge. In the practice of Bhakti technique, both the ascetic and the devotee situated in the practice do it. Behavioral devotion is definitely the reason for devotion. Certainly devotion is the reason for attaining the status of God. Behavior and devotion are the reason for attaining virtue and tradition is also the reason for attaining salvation. Or devotion with faith is directly the cause of the happiness of salvation and devotion with behavior is indirectly the cause of salvation. Renunciation from the worldly body and pleasures and devotion to the self is definitely called devotion. The virtue that is achieved through devotion leads to the attainment of worldly pleasures and enjoyments. Behavioral devotion is called religious attachment.

7. Ahimsa Vaad: All living beings are equal. All living beings are God from the point of view of Nishchanaya. All living beings have knowledge, philosophy and conscious nature. All living beings want happiness and are afraid of sadness. The act of not causing harm to worldly creatures is called non-violence. The act of hurting living beings is called violence. Worldly creatures live with a minimum of four and a maximum of 10 pranas.

जीवों के प्राणों का घात करके कष्ट पहुंचाना हिंसा है । स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पांच इंद्रियां भी प्राण हैं इसलिए हाथ पैर तोड़ना और आंख फोड़ना आदि भी हिंसा है। दूसरों के प्रति दुख दर्द और हानि पहुंचाने वाले विचार करना भी भाव हिंसा है। हमें कोई दुख दर्द पहुंच जाए ऐसा व्यवहार किसी को पसंद नहीं आता है इसलिए भगवान महावीर स्वामी ने कहा कि जो व्यवहार तुम्हें स्वयं पसंद नहीं है वह व्यवहार दूसरों के साथ मत करो। अतः सूत्र दिया जियो और जीने दो। अहिंसा परमो धर्मः।

णमोकार मंत्र में पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है जैन धर्म में 5 परमेष्ठी है

'अरिहंत –' जिन्होंने ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय इन चार घातिया कर्मों को नाश कर दिया है वे अरिहंत कहलाते हैं।

'सिद्ध –' राग द्वेष आदि भाव कर्म, ज्ञानावरणादि द्रव्य कर्म और शरीर से रहित शुद्ध आत्म गुणों से युक्त चे तन्मय अवस्था।

'आचार्य –' जो दिगंबर मुनि बनकर अन्य श्रावकों को दीक्षा शिक्षा और साधुओं को प्रायश्चित देते हैं।

'उपाध्याय –' जो दिगंबर मुनि बन कर द्वादशांग वाणी का ज्ञान प्राप्त कर अन्य साधुओं को पढ़ाते हैं, स्वयं पढ़ते हैं और उपदेश देते हैं।

'साधु परमेष्ठी–' जो दिगंबर मुनि बनकर ध्यान ध्यान तप में लीन रहते हैं वे साधु परमेष्ठी कहलाते हैं। यह मंत्र अनादि अनिधन है। इस मंत्र को कभी भी कहीं भी पढ़ सकते हैं। यह मंत्र सभी पापों का नाश करने वाला है। सभी मंगलों में पहला मंगल है। इस मंत्र से सभी विघ्न बाधाएं समाप्त हो जाते हैं। इस मंत्र से 84 लाख मंत्रों की उत्पत्ति हुई है।

Causing suffering by killing living beings is violence. These five senses - touch, taste, smell, eyes and hearing - are also life, hence breaking hands, legs and gouging eyes etc. is also violence. Thinking thoughts that cause pain and harm to others is also emotional violence. No one likes such behavior if any pain or suffering befalls us, hence Lord Mahavir Swami said that do not behave with others which you yourself do not like. Hence the formula given is live and let live. Non Violence is the ultimate religion.

In Namokar Mantra, Pancha Parmeshthi have been saluted. There are 5 Parmeshthi in Jainism.

Arihants: Those who have destroyed the four deadly activities of the world with knowledge, knowledge of darshan, pain and attraction, are called Arihants.

Siddha - the state of concentration of the mind with the qualities of the pure self devoid of attachment, hatred, emotional actions, knowledge, material actions and body.

Acharya who, by becoming a Digambar Muni, imparts initiation education to other devotees and atonement to the sages.'

Upadhyaya - 'Who, by becoming a Digambar Muni, acquires the knowledge of Dwadshang Vani and teaches it to other sages, studies himself, and preaches.

Sadhu Parmeshthi: Those who become Digambara sages and remain engrossed in meditation and penance are called Sadhu Parmeshthi. This mantra is from time immerioal and eternal. This mantra can be recited anytime anywhere. This mantra is destroyer of all sins. This mantra is the first among all mantras . With this mantra all obstacles and hindrances are eliminated. 84 lakh mantras have originated from this mantra.

खण्ड–4

पुरुष, अर्थ और पुरुषार्थ का स्वरूप

SECTION-4

PURUSHA, WEALTH & MONEY AND NATURE OF EFFORT (PUTUSHARTH)

जैन धर्म के मूल सिद्धांत

पुरुष का स्वरूप

जो उत्तम गुण भोग और कर्म करता है उसे पुरुष कहते हैं। अथवा पुरुष वेद कर्म के उदय से जो स्त्रियों के साथ मैथुन संज्ञा को प्राप्त करता है उसे भोगने की अभिलाषा रखता है उसे पुरुष कहते है अथवा जिसमें चेतना पाई जाती है उसे पुरुष कहते हैं अथवा पुरुष गुणकर्म रूप जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप उत्तम कर्म करने की चेष्ठा करता है उसे पुरुष कहते है अथवा जिसमें होना नामकर्म एवं अंगोपांग नामकर्म के उदय से दाढ़ी–मूँछ और लिंगादिक चिह्न युक्त शरीर मिलता है और स्त्री में रमण करने की अभिलाषा रखता है उसे पुरुष कहते हैं।

अर्थ का स्वरूप

'शब्दानां अनेक अर्थाः' एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। अतः सत्ता, संपदा, सत्, द्रव्य, वस्तु, धन, सामान्य, विधि, गणधर, पृथ्वी और प्रयोजन इत्यादि अर्थ शब्द के वाचक हैं। जो ज्ञान के द्वारा जाना गया पदार्थ है उसे निश्चय करने को अर्थ कहते हैं अथवा ध्येय को अर्थ कहते हैं अथवा जो जानता है या निस्पादन करता है उसे अर्थ कहते हैं अथवा जो गुणों और पर्यायों को प्राप्त करते हैं और गुण पर्यायों के द्वारा प्राप्त किया जाता है ऐसे द्रव्य को अर्थ कहते हैं अथवा जिसमें निज और पर छह द्रव्य अवस्थित रहते हैं ऐसे विश्व (पृथ्वी) को अर्थ कहते हैं। भगवान के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत का अर्थ बतलाने के कारण गणधर स्वामी को अर्थ कहते हैं अथवा द्रव्य ही जिसका प्रयोजन है उसे अर्थ कहते हैं।

पुरुषार्थ का स्वरूप

पुरुष और अर्थ की संधि करके पुरुषार्थ शब्द की निष्पत्ति की गई। पुरुष पुरुषार्थ प्रधान है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ होते हैं। इन चारों पुरुषार्थों को करने का अधिकार पुरुष को ही प्राप्त है। स्त्री भोग्या है भोगता नहीं वह पुरुष के द्वारा भोगी जा सकती है लेकिन स्वयं भोग नहीं कर सकती। इसीलिए काम पुरुषार्थ पुरुष ही करता है उस पुरुषार्थ में स्त्री सहभागी है। इसी प्रकार अन्य पुरुषार्थ भी पुरुष मुख्य रूप से करने का अधिकारी है। यद्यपि अर्थ और काम पुरुषार्थ का सभी जीव रूची पूर्वक आश्रय लेते हैं। वह इन्द्रिय सुख का कारण है लेकिन कालान्तर में दुःख का कारण है। अथवा जीवन निर्वाह के लिए प्राणों की रक्षा के लिए आवश्यकता की पूर्ति हेतु जो चेष्ठा की जाती है उसे पुरुषार्थ कहते हैं।

Basic Principles of Jainism

WHO IS A MAN - FORM OF MAN

The one who enjoys and performs good deeds is called a man. Or the man who attains sexual intercourse with women with the rise of Karma and desires to enjoy it is called Purusha Or the one in whom consciousness is found is called Purusha Or the form of Purusha Gunakarma which is the form of Dharma, Artha, Kama and Moksha. Or the one who tries to do good deeds is called a Purusha Or the one who has a body with beard, mustache and sexual parts due to the rise of Naamkarma and Angopanga Naamkarma and desires to have pleasure in a woman is called a Purusha.

WHAT IS REAL WEALTH - FORM OF WEALTH

'Shabdanaan Anek Artha' A word has many meanings. Hence, power, wealth, truth, substance, object, wealth, common, law, Ganadhar, earth and purpose etc. are the signifiers of the word wealth. The thing that is known through knowledge is called artha to determine it or the goal is called artha or the one who knows or performs is called artha or that which obtains qualities and synonyms and qualities are obtained through synonyms, such a substance is called Artha or the world (Earth) in which six substances are present within itself is called Artha.

Ganadhar Swami is called Artha because he explains the meaning of the principle propounded by God Or that whose purpose is substance is called Arha.

NATURE OF EFFORT

The word Purusharth was formed by combining the meanings of Purusha and Artha. Man is embodiment of Effort - Purusharth. Dharma, Artha, Kama and Moksha are the four efforts. Only a man has the right to perform these four efforts. A woman is an object of enjoyment and not an enjoyer; she can be enjoyed by a man but cannot enjoy herself. That is why only the man does the hard work and the woman is a partner in that effort. Similarly, men are primarily entitled to perform other efforts also. Although all living beings willingly take refuge in the efforts of Artha and Kama. It is the cause of sensual happiness but in time it is the cause of sorrow. Or the efforts made to fulfill the needs for survival, to protect life, are called efforts.

भगवती आराधना ग्रंथ, ज्ञानार्णव, पुरुषार्थ सिद्धयुपाय एवं अन्य टीका ग्रंथों में दिगम्बर जैनचार्य लिखते हैं– कि अर्थ और काम पुरुषार्थ तात्कालिक है अल्पकाल में ही उत्पन्न होता है और नष्ट हो जाता हैं। जबकि उसकी प्राप्ति बड़ी कठिनता से होती है इसीलिए वह अशुभ है पापवर्धक है। अनर्थ को पैदा करने वाला है। मोक्ष प्राप्ति में अगला अर्थात् दरवाजे में लंगर या शांकल) के समान है। काम पुरुषार्थ तो अपवित्र शरीर से उत्पन्न होता है और आत्मा को अपवित्र करता है जिसका फल आत्मा को दुर्गति में जाकर भोगना पड़ता है। चारों पुरुषार्थों में केवल मोक्ष पुरुषार्थ ही बाधा रहित त्रिकालिक सुख को देने वाला है प्रयत्न पूर्वक मोह का क्षय करने मोक्ष पुरुषार्थ जाग्रत करना चाहिए। विपरीत भाग्य के चक्र को पुरुषार्थ जगा कर विजय को प्राप्त किया जा सकता है। इस देह में बसे हुए अपने परमात्मा को पहचान कर उसे मुक्त कराने के लिए ही योगी मोक्ष पुरुषार्थ जाग्रत करते हैं। काम पुरुषार्थ में सुख की खोज करना ठीक वैसे है जैसे केले के वृक्ष से आसन बनाने के लिए सारभूत लकड़ी खोजना अथवा प्याज के छिलके में बीज का खोजना। यहाँ चार पुरुषार्थ के संबंध में मैं अपने विचार रख रहा हूँ।

हमें अपने जीवन में पुरुषार्थ शील बनने की कोशिश करनी चाहिए। हमें दुश्मनों की दुश्मनी से खतरा नहीं है। हमें अपनी निष्क्रियता से खतरा है दुश्मन कितने भी आ जाये यदि राजा पहले से तैयार बैठा हो तो एक–एक को बंदी बनाकर के सबको ठीक कर देगा। सेना बोर्डर पर पहले से ऐलर्ट रहे तो कोई भी शत्रु आ जाय तो एक–एक को मार गिरायगी। ऐसे कुछ भी आलसी लोग है इस दुनिया में कि वे कुछ करना ही नहीं चाहते। जैसे उदाहरण के रूप में पांडाल में एक चोर आया और उस पांडाल में दस–बारह आलसी लोग सो रहे थे। वह चोर उनमें से एक की चादर खींच कर ले जा रहा था तो दूसरा आलसी बोला वह चादर खींच कर ले जा रहा है तो तीसरा बोला शांति से सो जाओ, कौन जाए इतनी दूर, तकिया लेने आएगा तब पकड़ लेंगे। ऐसे आलसी लोग है कि वे अपना स्वयं का पानी भी भर के नहीं पी सकते। आज माँ–बाप अपने बेटों को आलसी बना रहे है। क्यों कि मां बाप ने नौकर लगाया, बेटा अपने कपड़े धोता नहीं, अपना ग्लास उठाता नहीं, अपनी थाली उठाकर के धोने के स्थान पर रखता नहीं, अपना सामान व्यवस्थित करता नहीं।

Digambar Jaincharya writes in Bhagwati Aradhana Granth, Gyanarnava Purushartha Siddhayupay and other commentary texts - that artha and kaam purushartha are temporary, they arise within a short period of time and are destroyed. Whereas it is difficult to attain, that is why it is inauspicious and increases sin. It gives birth to bad effort (anarth). It is like a bolt on the door closing the door in search for salvation. The desire for effort arises from an impure body and impures the soul, the result of which the soul has to suffer in misery. Among the four efforts, only salvation (moksh) effort can give triple happiness without any hindrance. Effort should be made to destroy attachment by making efforts. Victory can be achieved by awakening the cycle of adverse luck through efforts. Yogis strive for salvation only to recognize their God and liberate them from the bondage of this body. Searching for happiness in sexual efforts is just like searching for essential wood from a banana tree to make a seat or searching for a seed in the peel of an onion. Here I am expressing my views regarding the four efforts. We should try to be manly in our lives, us.

There is no danger from the enmity of enemies. We are in danger due to our inaction. No matter how many enemies come, if the king is already prepared, he will take care of everyone by capturing all.. If the army is already present on the border, if any enemy comes, they will kill each and every one. There are some lazy people in this world that they don't want to do anything. For example, a thief came to the pandal and there were ten lazy people sleeping in that pandal. The thief was pulling the sheet of one of them and the other lazy person said that he is pulling the sheet and then he said sleep peacefully, who would go this far, we will take it only when he comes to collect the pillow. There are such lazy people that they cannot even take their own water. Today parents are making their sons lazy. Because the parents employed a servant, the son does not wash his clothes, does not pick up his plate, does not pick up his plate and puts it in the washing place, does not arrange his things.

घर में अपने कमरें का झाड़ू लगाता नहीं, अपने कमरे में कोई भी कार्य करता नहीं तो ऐसे बच्चे आलसी बनते हैं और आलसी बच्चे रोगी बनते हैं। फिर अपने जीवन में कुछ कर नहीं पाते हैं। माता पिता को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे बच्चों को आलसी मत बनने दे। सुख सुविधाओं में जीने वाले इकलौता बच्चा प्रायः आलसी बनता है। इकलौता बच्चा रोगी बनता है। इकलौता बच्चा समस्याओं का घर होता है। अगर दो भाई हो तो एक भाई, दूसरे भाई को सम्भाल लेता है। इसलिए बार–बार यह समझाया जा रहा है पुरुषार्थशील बनो। हमारी निष्क्रियता हमारा शत्रु है। पुरूषार्थहीनता आज बच्चों के अन्दर शत्रु बनके बैठी है इसलिए उसे दूर करने के लिए घर में अपने कार्य करने की प्रेरणा माता पिता को देना चाहिए।

"आलसी बनिया अपशगुन की बाट जोवे" ये बुंदेलखण्ड की कहावत है। अब जिसको कुछ करना ही नहीं है उसको धंधा आदि करने के लिए जाने की कही इच्छा ही नहीं होती है। फिर भी वह घर से निकला और सामने से कुत्ता निकल गया तो कहता अपशगुन हो गया अब नहीं जाते। तो माँ कहती है कोई बात नहीं बेटा थोड़ा नाश्ता पानी करके दस मिनट बाद चले जाना अब दस मिनट बाद फिर निकला और आकर कहता है मम्मी–मम्मी एक व्यक्ति मिला था उसकी एक आँख नहीं है क्या करूँ अब फिर अशुभ हो गया ध्यान रखना एक आँख वाले अशुभ नहीं होते आप भले अपनी मिथ्या धारणा के अनुसार अशुभ मान लो यह तो उसके कर्म का उदय है तुम क्या करोगे लेकिन उसे तो वो दिख गया अब आलसी है वो तो कहेगा माँ अशुभ हो गया। वह माँ के पास आया। माँ ने फिर कहा जा बेटा अब दोपहर हो गई अब तो जा, फिर वह जाने लगा सो उसको खाली घड़ा मिल गया और वो कहता, मां खाली घड़ा मिल गया मैं कैसे जाऊँ अब तो नहीं जा सकते। इसलिए कहा गया है कि आलसी बनिया अपशगुन की बाट जोवें। ऐसे आलसी हैं जिसको कुछ करना ही नहीं क्या करूँ ? मेरे पास पैसे ही नहीं है मैं कैसे धंन्धा करूँ ? कैसे अर्थ पुरुषार्थ करूँ ? ये हमारे सामने आज समस्या आ रही है। आज के बेटे से कहो, जाओ बेटा दुकान करो तो कहेगा मैं क्यों करूँ? लाओ पहले बीस लाख रूपया और दुकान शोरूम दो, तब में दुकान करूँगा। परंतु ध्यान रखना कमाने को कोई पैसे की जरूरत नहीं होती मेहनत की जरूरत होती है, पुरूषार्थ जगाने की जरूरत होती, पुरुषार्थ से धन कमाया जाता है और इतना भाग्य बुद्धि, मन, हाथ, पैर, स्वस्थ शरीर मिल गया तो समझो सब कुछ मिल गया। अब चाहिए क्या अब उसके बाद में कहते हो धन्धा नहीं चल रहा तो आपको पुरुषार्थ करना होगा।

At home, he does not sweep his room nor does any work in his room, such children become lazy and lazy children become diseased. Then they are unable to do anything in their life. Parents should take care that they do not allow their children to become lazy. An only child who lives in comforts often becomes lazy. The only child becomes a patient. An only child is a home of problems. If there are two brothers, one brother takes care of the other brother. That's why it is being explained again and again, be effortful. Our inaction is our enemy. Today, lack of effort is sitting like an enemy in the children, therefore, to remove it, parents should inspire them to do their work at home.

"A lazy merchant waits for bad omen" is a saying from Bundelkhand. Now the one who has nothing to do has no desire to go for business etc. Still, when he came out of the house and a dog passed by, he said that it was a bad omen and he would not go now. So mother says no problem son, have some breakfast and water and leave after ten minutes. Now after ten minutes he comes out again and comes and says mummy-mummy, I met a person, he is missing one eye, what should I do, now again it has become inauspicious. Those people with one eye are not inauspicious, even if you consider them inauspicious according to your misconception, this is the rise of his karma, what will you do, but this boy has seen that now he is lazy, he will say mother, it has become inauspicious. He came to mother. Mother again said, go son, it is already afternoon, go now, then he started going and found an empty pitcher and he said, Mother, I have found an empty pitcher, how can I go, I can't go now. That is why it has been said that a lazy merchant waits for bad omen. There are such lazy people who do not want to do anything, what should I do? I don't have any money, how should I do business? How should I make meaningful efforts? This is the problem we are facing today. If you tell today's son, go and do a shop, he will say, why should I do it? First bring twenty lakh rupees and give me a shop and showroom, then I will open the shop. But keep in mind, no money is needed to earn, hard work is needed, there is a need to awaken effort, money is earned through effort and if you get so much luck, intellect, mind, hands, legs, healthy body then understand that you have got everything. What is needed now? Now after that if you say that the business is not doing well then you will have to make efforts.

बेटा कहता है हमारी दुकान नहीं चल रही तो बाप कहता है बेटा ऐसे कैसे नहीं चलेगी ? एक ठेला लाया। बोला अब इसमें रख सामान, फिर जा घर–घर से, फिर देख कैसे नहीं चलती तेरी दुकान चलाने और धन कमानें के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। इसलिए आप अपना सही पुरुषार्थ जगाओ। अगर बेटा सही कमाई कर रहा हो तो उसे उँगली मत करो क्योंकि चलते बैल को अरई (कील) मत लगाओ। अगर अरई (कील) चुभाते है तो बैल बिगड़ जाता है और वह बैल गाड़ी में चलता नहीं वेसे ही यदि बेटा धन कमा रहा हो तो उसे उँगली नहीं करनी चाहिए। पुरुषार्थशील को तुम ज्यादा छेड़–छाड़ करोगे तो वह बिगड़ेगा। लेकिन जो प्रमादी आलसी जो बना हुआ बैठा है उसको तुम जरुर प्रेरणा दो उसका बार बार अंगुली करो।

एक बेटा जो दिन भर बाहर खेलता रहता है उसे मां कहती है दिन भर खेलता रहता है थोड़ी पढ़ाई भी कर ले और जो दिनभर पढ़ाई करता है उससे मां कहती है जा बेटा थोड़ा सा खेल ले, थोड़ी बाहर की हवा खा ले। ऐसा विवेक रखकर ये कार्य किया जाता है और जिसके अंदर ये विवेक होता है वह कहीं भी धन कमा लेता है। उसको कहीं भेजने की जरूरत नहीं है। जिसे पैसा मिल जाए उसे गुरूर हो जाता है और जिसके अन्दर पैसे का अभाव होता है वह पुरुषार्थशील हो जाता है। पैसा अधिक होगा तो अंहकारी होगा और आलसी भी होगा अधिक पैसा भी दुःखदायी होता है। कम पैसा भी दुःखदायी होता है इसलिए बेलेंस बना कर के रखना चाहिए। इसलिए परिग्रह प्रमाण बना कर रखना चाहिए। ज्यादा पैसा होगा तो चोर डाकुओं की नीयत बिगड़ेगी, सरकार भी टेक्स लगायेगी, तुम्हारी नींद बेकार हो जायेगी। अगर पैसा बिल्कुल भी नहीं होगा तो खाने–पीने के लाले पड़ जाएँगे इसलिए संतुलन बना के रखना आवश्यक है संतुलन तभी बनता है जब हमारे सामने धर्म पुरुषार्थ होता है। धर्म पुरुषार्थ के बिना काम पुरुषार्थ में संन्तुलन आता ही नहीं। इसलिए धर्म पुरुषार्थ पहले रखा गया है। जब आप लोग पुरुषार्थ जगा लोगे तब भविष्य सुधर जाएगा। क्योंकि आज का पुरुषार्थ कल का भविष्य होता है और आज का पुरुषार्थ कल भविष्य बना कर के हमारे भविष्य को उज्जवल बना देता है। आज का धर्म पुरुषार्थ हमारे पुराने किये हुए दुष्कर्म को बदल सकता है। अतः अपने भाग्य को बदलना है तो पुरुषार्थ करना ही पड़ेगा।

Son says, our shop is not running, the father says, Son, how can it not run ? He brought a cart. He said, now put the goods in it, then go from door to door, then see how it does not work. You should make efforts to run your shop and earn money. Therefore, awaken your true efforts. If your son is earning well then do not point a finger at him because you should not point a nail at a walking bull. If a nail is pierced then the ox gets angry and the ox does not move the cart. Similarly, if a son is earning money then he should not be bothered. If you tease a man who is hard-working too much, he will deteriorate. But you must give inspiration to the careless and lazy person who is sitting there and teach him again and again.

To a son who keeps playing outside the whole day, the mother tells him that he keeps playing the whole day, he should also study a little, and to the one who studies the whole day, the mother says, Son go play a little, get some outside air. This work is done by having such discretion and the one who has this discretion, he earns money anywhere. There is no need to send him anywhere. The one who gets money becomes proud and the one who lacks money becomes industrious. If you have more money, you will become arrogant and lazy. More money also leads to sorrow. Even less money is painful, hence one should maintain a balance. Therefore, Parigraha Pramaan should be maintained. If you have more money, the intentions of thieves and dacoits will eye it, the government will also impose taxes, you will lose sleep. If there is no money at all then there will be shortage of food and drink, hence it is necessary to maintain balance. Balance is achieved only when we have religious efforts in front of us. Without religious efforts, there is no balance possible in sexual efforts. Therefore, religious efforts have been placed first. When you people awaken your efforts then the future will improve. Because today's effort is tomorrow's future and today's effort makes our future brighter by creating tomorrow's future. Today's religious efforts can change our past misdeeds. Therefore, if you want to change your destiny, you will have to make efforts.

भाग्य से बड़ा पुरुषार्थ

हाँ, बिल्कुल पुरुषार्थ बड़ा है क्योंकि वर्तमान का पुरुषार्थ भविष्य से भी जुड़ा और अतीत से भी जुड़ा है। यदि तुम्हारा धर्म पुरुषार्थ सही होगा तो तुम्हारा भाग्य बदल जायेगा और यदि तुम सही धर्म पुरुषार्थ करोगे तो भविष्य भी उज्जवल हो जाएगा क्योंकि धर्म पुरुषार्थ से पुराने पाप कर्म का क्षय हो जाता है और पुण्य कर्म का संचय हो जाता है। इसलिए भगवान महावीर स्वामी ने कहा था कि वर्तमान को देखो वर्तमान को सुधारो। जिसका वर्तमान अच्छा, उसका भविष्य अच्छा। जिसका वर्तमान अच्छा उसका भाग्य अच्छा है। भाग्य को बदलना है तो धर्म पुरुषार्थ को जगाना होगा। पुरुषार्थ रिकॉर्डिंग है भविष्य कैसट है। वर्तमान में जो बोला जा रहा है वही रिकॉर्ड होगा और भविष्य में वही कैसट में तैयार होकर आयेगा इसलिए वर्तमान अच्छा होगा तो ही भविष्य अच्छा होगा। लोग कहते हैं हमारा भाग्य साथ नहीं दे रहा लेकिन मैं कहता हूँ एक भी मनुष्य ऐसा नहीं जिसका भाग्य साथ नहीं दे रहा हो क्योंकि जब जन्म लिया तो माँ के स्तन में दूध आया, जो भाग्य से आया। उसे माँ मिली लालन–पालन के लिए जो भाग्य से मिली। भाग्य से थाली आ सकती है पर भोजन को खाने के लिए तो पुरुषार्थ करना पड़ेगा। बिना पुरुषार्थ के तुम्हारे अन्दर एक ग्रास भी नहीं जायेगा। अपने भाग्य को जगाने के लिए पुरुषार्थ तो करना ही पड़ेगा।

तुम्हारी बोरी में बीज रखा हुआ है तो फसल कैसे आयेगी। इसलिए इतना पुरुषार्थ तो जगाना होगा कि उस खेत को सुधारना होगा फिर उसमें से घास–फूँस निकालनी होगी। उसके बाद बीज बोना होगा। बीज मात्र से फसल नहीं आ जायेगी। घास–फूंस पुनः निकालनी होगी चारों ओर से बाऊंड्री बनानी होगी। आवश्यकता होने पर सिंचाई करनी होगी। उस खेत की रक्षा करनी होगी। उसके बाद भूसा अलग बीज, अलग करने होंगे और फिर एक–एक दाने शोध–शोध कर के दाने निकालने होंगे। इतना पुरुषार्थ तो करना ही होगा तब जाकर के फसल आती है। अगर तुम उस बीज को जैसे बोरे में भरा है वैसे रहने दोगे तो वह बीज सड़ जायगा। क्योंकि उसका सदुपयोग नहीं किया है इसी प्रकार भाग्य भरोसे बैठे रहने वाले पुरुषार्थ हीनों का भाग्य सड़ रहा है। पुरुषार्थ जगाने वाला जैन धर्म है। अकेले धर्म पुरुषार्थ ही नहीं, अर्थ व काम पुरुषार्थ भी करों।

Effort (Work) is Greater Than Luck

Yes, absolutely the effort is great because the effort of the present is connected to the future as well as the past. If your religious efforts are right then your fate will change and if you do right religious efforts then the future will also become bright because by doing religious efforts old sinful deeds get destroyed and virtuous deeds get accumulated. That's why Lord Mahavir Swami had said that look at the present and improve the present. Whose present is good, his future is good. One whose present is good, his fortune is good. If destiny is to be changed then religious efforts will have to be awakened. Purushartha is recording, future is cassette. Whatever is being said at present will be recorded and in the future the same will come ready on cassette, hence only if the present is good then the future will be good. People say that our luck is not on our side but I say that there is not a single person whose luck is not on our side because when we were born, milk came from our mother's breast, which came due to luck. He got a mother to raise him, which he got by fate. You may get a plate with luck, but you will have to make efforts to eat the food. Without effort, not even a single morsel will go inside you. To awaken your destiny, you will have to make efforts.

If the seeds are kept in your sack then how will the crop come? Therefore, we will have to make so much effort to improve that field and then remove the weeds from it. After that the seeds will have to be sown. Seeds alone will not yield a harvest. Weeds will have to be removed again and a boundary will have to be made all around. Irrigation will have to be done when necessary. That farm will have to be protected. After that, the seeds will have to be separated from the chaff and then each grain will have to be researched and the grains will have to be extracted. One has to make so much effort, only then the harvest comes. If you leave the seed in the sack as it is, it will rot. Because they have not made good use of it, similarly, those who rely on fate are worthless in their efforts, their fortune is rotting. Jainism is the religion that awakens manliness. Not only make efforts for religion, but also make efforts for money and work.

हमारे तीर्थंकरों को चारों पुरुषार्थ करने ही पड़ते है और जिन तीर्थंकरों ने नहीं किया वह दोष है क्योंकि उन्होंने शादी नहीं की और काम पुरुषार्थ नहीं किया, शादी करके मोक्ष मार्ग और ग्रहस्थ मार्ग चलाने के लिए बच्चे पैदा नहीं किये फिर आगे के लिए आहार कौन देगा, कौन धर्म की रक्षा करेगा इसलिए काम पुरुषार्थ तो करना ही पड़ेगा। बिना काम पुरुषार्थ के मोक्ष पुरुषार्थ की ओर मत बढ़ जाना ये तीर्थंकरों के लिए भगवान का आदेश है। अपने भाग्य को जगाने के लिए व बदलने के लिए पुरुषार्थ जरुरी होता है।

यदि पुरुषार्थ को जगाने की बात सीखनी है तो मैना सुदंरी के जीवन के कथानक से सीखो। उनके पिता की सात बेटियाँ थी जिनमें से छः ने पिता के पूछे जाने पर कहा हम आपके भाग्य का खाते हैं और मैना सुंदरी से पूछा तो उसने कहा मैं अपने भाग्य का खाती हूँ। मैं जैसा पुरुषार्थ करती हूँ वैसा मेरा भाग्य बनता है मैं तुम्हारे भाग्य का नहीं खाती मैं अपने भाग्य का खाती हूँ। सब लोग अपने–अपने भाग्य का खाते हैं। पिता जी कहते हैं बेटी मान जाओं कि तुम मेरे भाग्य का खाती हो वो कहती है मैं नहीं मानती हूँ मैं मेरे भाग्य का ही खाती हूँ। उसके पिता जी गुस्से में आकर उसकी शादी एक कोढ़ी से कर देते है। आज की बेटी को ऐसा करेंगे तो वह अपने पिता को जेल में डलवा देगी। आत्म हत्या कर लेगी। पहले देखो क्या धर्म था माँ–बाप के प्रति कितनी श्रद्धा थी लेकिन आज क्या हो रहा है देख लो। कुछ समय पहले दो सगी जैन बहने दूसरी समाज के दो लड़को के साथ भाग गई और ऐसे लड़के के साथ भागी जहाँ रोज को बकरे काटे जा रहे हैं। अदालत में माता पिता आंसू बहाते रहे पर बेटी एक न मानी और शादी कर ली। ये कानून बहुत गलत है बस इस कानून में ऐसा होना चाहिए कि आज 18 वर्ष के बाद जो स्वेच्छा से शादी कर वह माता पिता की स्वीकृति और उसकी जाति का ही होना चाहिए लेकिन जो लड़की स्वेच्छा से शादी करती है तो उसकी आयु कम से कम 25 वर्ष होना चाहिए। बस सिर्फ कानून में इतना ही सुधार बनने चाहिए, तो सबका भविष्य सुधर जायेगा क्योंकि जो उम्र केरियर बनाने की होती है उसी उम्र में चालक छिछोरे लड़के प्यार जाल में फंसा कर उनके केरियर के लिए चोपट कर देते हैं।

Our Tirthankaras have to do all the four efforts and the Tirthankaras who did not do it are at fault because they did not marry and did not do the work, did not marry and give birth to children to follow the path of salvation and the path of life, then who will provide food for them in future? Who will protect the religion, hence the work will have to be done with effort. Do not move towards salvation without making any effort, this is God's order for the pilgrims. Effort is necessary to awaken and change one's destiny.

If you want to learn how to awaken your manliness, then learn from the story of Maina Sundari's life. His father had seven daughters, out of which six, when asked by the father, said, "We get food due to your destiny" but when he asked Maina Sundari, she said, "I get food due to MY destiny." My fate becomes as per the efforts I make. I don't eat due to your luck, I eat due to my luck. Everyone gets food due to their own destiny. Father tells Maina Sundari, accept that you eat due to my fortune. she said ,no, I don't agree, I eat due to my fortune only. Her father got angry and marries her to a leper. If we do this to today's daughter, she will put her father in jail, she will commit suicide. Look at what religion there was earlier, how much respect there was for parents, but look at what is happening today. Some time ago, two real Jain sisters ran away with two boys from another community and ran away with a boy to a place where goats are being slaughtered every day. The parents kept shedding tears in the court but the daughter did not agree and she marries the boy of her choice. This law is very wrong, it should be such in this law that anyone who marries by her choice after 18 years of age should have the approval of the parents and should be of the same caste, but the girl who marries by her choice should be at least 25 years of age Only this much reform should be made in the law, then everyone's future will improve because the age when a person has to make a career, petty boys lure them into the trap of love and sabotage their career.

थोड़ी देर के लिए वह बाहरी वैभव को देखकर और उन लड़को की चिकनी चुपड़ी बातों में आ जाती है फिर उसे बाद में जिन्दगी भर रोना पड़ता है और अन्त में उसके पास आत्म हत्या के अलावा कोई रास्ता नहीं होता। साधु का कर्त्तव्य इन बेटियों को भी बचाने का है। बेटी बचाओ अभियान हमें भी चलाना पड़ेगा। जब बेटियाँ आचरणहीन हो जाती हैं तब इन्हें इतना समझाना पड़ेगा कि तुम केवल मैना सुन्दरी की घटना याद रखो। उनके पिता ने उसकी शादी कोढ़ी से कर दी तो वह कहती है मैं अपने भाग्य को अपने पुरुषार्थ से बदल सकती हूँ और उसने सबसे पहले धर्म पुरुषार्थ किया, उसने सिद्धचक्र का पाठ रचाया और उसने गन्धोदक से सात–सौ कोढ़ियों का और अपने पति का कुष्ट रोग दूर किया।

मैना ने कहा मैं कुछ नहीं जो कुछ है भगवान है मेरे अन्दर कोई अहंकार नहीं सब अपने पुरुषार्थ से कर रही हूँ। जैसा मेरा पुरुषार्थ होगा वैसा मेरा भाग्य जगेगा। उसने अपना भाग्य बदल दिया धर्म पुरुषार्थ के माध्यम से। अर्थ पुरुषार्थ से पैसा कमाया जा सकता है काम पुरुषार्थ के माध्यम से संतान को उत्पन्न किया जाता है और मोक्ष पुरुषार्थ से मुक्ति को पा लिया जाता है। मोक्ष पुरुषार्थ से मुक्ति धन मिलता है, काम पुरुषार्थ से ग्रह लक्ष्मी, और अर्थ पुरुषार्थ से धन लक्ष्मी, धर्म पुरुषार्थ से पुण्य लक्ष्मी प्राप्त होती है और पुण्यरुपी लक्ष्मी से सब कुछ मिलेगा।

''तुम अधूरे नहीं, तुम अभागे नहीं। बात इतनी सी है कि तुम जागे नहीं।'' संत आये हैं तुम भक्ति कर लो, पाप तज लो सभी। अपने भाग्य को जगा लो और भाग्य को जगाने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ेगा। लेकिन लक्ष्यहीन पुरुषार्थ मत करना। लक्ष्य बनाओ प्रातः काल उठ कर के सोचो मैं कौन हूँ कहाँ से आया हूँ, कहाँ जाना है, मेरा लक्ष्य क्या हैं, जो व्यक्ति सुबह से उठकर ये नहीं सोचता उसकी मति तो दुर्मति हो जायेगी। वह पतन की ओर ले जायेगी। इसलिए ऐसा सोचना कि क्या ऐसा पुण्य है कि मैं सम्पन्न घर में उत्पन्न हुआ, जहाँ पर मांस, दारु आदि नहीं खाते, गरीबी नहीं जहाँ पर सम्पन्नता है, जहाँ पर ऐसे सद्गगुरु मिले, ऐसा धर्म मिला, ऐसा देश मिला लेकिन आज तो सुबह उठकर टी.वी. में नाच–गान वाले चित्र देखने में मजा आ रहा है, उससे बचो, रात को सोते हुए भी तुम वही देख रहे हो।

For a while she gets attracted by the external splendour and the soft talks of those boys, then later she has to cry for the rest of her life and in the end she has no other option but to commit suicide. It is the duty of the sages to save these daughters also. We will also have to run Beti Bachao campaign. When daughters become unruly, they will have to be explained that you just remember the incident of Maina Sundari. When her father married her to a leper, she said, 'I can change my destiny with my efforts' and she was the first to make religious efforts, she composed the text of Siddhachakra and she cured seven hundred lepers and her husband's leprosy with Gandhodaka (spiritual water after bathing the idols of Teerathankars).

Maina Sundari said, I am nothing, whatever is there is God, there is no ego in me, I am doing everything with my efforts. My luck will rise as per my efforts. She changed her destiny through dharma purushartha. Meaning, money can be earned through hard work, children are born through hard work and salvation is achieved through hard work. By making efforts for salvation, one gets freedom and wealth, by making efforts for work, one gets wealth & Lakshmi, by making efforts for money, by making efforts for religion, one gets virtuous Lakshmi and from Lakshmi in the form of virtue, one will get everything.

"You are not incomplete, you are not unfortunate. The only thing is that you have not awakened." The saint has come, do devotion, give up all your sins. Awaken your destiny and you will have to make efforts to awaken your destiny. But aimlessly do not make any effort. Make a goal. Wake up in the morning and think about who I am, where I have come from, where I have to go, what is my goal, the person who does not think about this after waking up in the morning, his thoughts will become evil. It will lead to downfall. Therefore, think whether it is a virtue that I was born in a prosperous family, where one does not eat meat, alcohol etc., poverty. is not there,where there is prosperity, where such a good Guru is found, such a religion is found, such a country is found, but today I wake up in the morning But today people watch TV, enjoying watching pictures of dancing and singing. Just avoid them, you are watching the same even while going to sleep at night.

पहले शादियों में नाचने वाली बाहर से बुलायी जाती थी और घर की नारियाँ भोजन बनाती थी लेकिन आज नारियाँ नाच रही है और भोजन बनाने वाले बाहर के आ रहे है। आज टी.वी. चालू करते ही यही देखने को मिलता है। जब से ये चैनल चले है तब से चैन गायब हो गया है, शान्ति चली गई है। पहले आदमी के गले में चैन नहीं होती थी तो चैन नहीं पड़ता था अब घर में टी.वी. नहीं होती तो चैन नहीं पड़ता। टी.वी. को देख–देख कर घर की बेटियाँ भाग रही हैं, वह नौकर से संबंध बना रही हैं, तुम पैसों के पीछे भाग रहे हो और अपने बेटे–बेटियों की तुम्हें कुछ खबर ही नहीं कि वह कहाँ जा रहे हैं। तुम्हारे पास में अपने बेटे से दो मिनट बात करने का समय तक नहीं। अपनी बेटी से कुछ पूछने का समय नहीं। तुम तो सुबह उठे अपना बैग लिया और चल दिए दुकान या फिर सर्विस पर गये आये सो गये। बाप का मुँह ही नहीं देख पा रहा है वह बेटा क्योंकि तुमने पुरुषार्थ जगाया ही नहीं। अपनी संतान के प्रति तुम पुरुषार्थ नहीं जगा पा रहे हो। अपना लक्ष्य बनाओ, लक्ष्यहीन पुरुषार्थ व्यर्थ जाता है, आचरण हीन ज्ञान व्यर्थ जाता है, संतानहीन धन व्यर्थ जाता है। 'लोभी को दान गवांर खाये और बचे सरकारे जाय।' जिसके यहाँ लोभ लालच है, विषय–वासना का लोभ है संतान पैदा करने का लोभ नहीं उसका सारा अर्थ पुरुषार्थ बेकार है। जब तुम मकान बनता हो तो क्या सोचते हैं कि मेरा बेटा इसमें रहेगा। अब बहुत बड़े–बड़े महल खण्डहर पड़े हैं उसमें झाड़ू भी लगाने वाला कोई नहीं है। इसका मतलब कि तुमने पाप का धन कमाया है। जो धन बेटा–बेटी के भोग में नहीं आ रहा वह पूरा का पूरा पाप का धन है। जो सदुपयोग नहीं हो रहा वह पाप का है धन की तीन गति बतायी गई हैं– १. दान २. भोग ३. नाश।

अर्थात प्राप्त धन का या तो दान कर दो या भोग लो अन्यथा उसकी तीसरी गति अपने आप हो जाएगी (नाश)।

Earlier in weddings, the dancers were called from outside and the women of the house used to cook the food, but today the women of the house are dancing and the people who prepare the food are coming from outside. Today just turn on TV and this is what you see as soon as you turn it on. Ever since these channels started working, peace has disappeared. Earlier, if there was no peace in a person's heart, he will be restless. But now if there is no TV in the house, then there is no peace. Seeing this on TV, the daughters of the house are running away, they are having relations with the servant, you are running after money and you have no clue about where your sons and daughters are going. You don't even have time to talk to your son for two minutes. No time to talk to your daughter anything. You wake up in the morning, take your bag and go to the shop or to the service and then go to sleep as soon you return. That son is not able to see his father's face because you have not awakened your efforts. You are not able to awaken your efforts towards your children. Make your goal, effort without an aim goes waste, knowledge without conduct goes waste, wealth without children goes waste. 'Donations to the greedy are wasted and the leftovers go to the government'. The one who has greed, greed for sexual desires and not greed for procreating children, his entire effort is useless. When you build a house, do you think that my son will live in it? Now many big palaces are lying in ruins and there is no one to even sweep them. This means that you have earned money from sin. The wealth which is not being used for the enjoyment of sons and daughters is entirely the wealth of sin. Whatever is not being utilized properly is a sin. Three types of wealth have been described - 1. Donation 2. Enjoyment 3. Destruction.

That is, either donate the money received or enjoy it, otherwise its third phase will be destroyed automatically.

धर्म पुरुषार्थ कब और कैसे ?

सुबह से उठकर सबसे पहले धर्म पुरूषार्थ करना चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम सोकर उठते ही अपना भाग्य देखो अपने दोनों हाथों को जोड़कर धीरे से खोलो जिससे आठों अंगुलियो के नीचे चन्द्रमा बन जायगा। आठों अंगुलियों में तीन–तीन भाग हैं, (8–24) तुम्हारे भाग्य में 24 तीर्थंकर लिखे हैं, आठ अंगुली मानी आठ कर्म, आठों कर्मों से तुम्हारा शरीर बना है, सिद्ध परमेष्ठी जो सिद्धालय में रहते हैं जो चन्द्राकार हो वो आठ गुणों से सहित पन लिखा है। ऐसा बार–बार सोचों कि मैं आठ गुणों से संयुक्त हूँ, मैं सिद्धालय जा सकता हूँ, ऐसा सोच कर के हाथ जोड़ो और ऊपर की ओर समस्त सिद्ध परमेष्ठी को नमस्कार (आवृत करो) मैं भी करता हूँ। फिर एक कायोत्सर्ग करके जहाँ जाना है जाओ, यही तुम्हारा धर्म पुरुषार्थ है और फिर नहाँ धोकर मुठ्ठी में चावल लेकर मंदिर को जाओ। घर से निकलने से पहले अपना सुरक्षा कवच धारण करो।

ऊँ ह्वीं णमों अरिहंताणं। (सिर रक्षा) सिर पर दोनों हाथ फेरे।

ऊँ ह्वीं णमों सिद्धाणं। (मुख रक्षा) मुख पर दोनों हाथ फेरे।

ऊँ ह्वीं णमों आइरियाणं। (तन रक्षा) शरीर पर दोनों हाथ फेरो।

ऊँ ह्वीं णमों उवज्झायाणं। (शत्रु से रक्षा) अंगुली की तलवार बना कर दिखाएँ

ऊँ ह्वीं णमों लोए सव्व साहूणं। चारों ओर सिर के ऊपर घड़ी की सुईयों की दिशा में तर्जनी ऊपर करके घेरा बनाएँ।

ऊँ ह्वीं ऐसो पंच णमोयारों, सव्व पावपणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं हवई मंगलम् (यह पढ़ कर विचार करें कि इस घरे के अंदर भी कोई बाधा न आये। भगवान को ध्यान करते हुए नमन करें आपनी शरण है आप रक्षा करें)

जिस धरती पर मैं बैठा हूँ यह धरती अखण्ड है, उस पर भूकम्प भी आ जाये तो हमारा बाल भी बांका नहीं हो सकता क्योंकि जो भगवान की शरण में गया है उसका कभी बिगाड़ नहीं होता है। बिगाड़ हो जायेगा तो तन का होगा पर आत्मा का बिगाड़ नहीं होगा। ये सोचकर के फिर घर से बाहर कदम निकालना।

When and How to Make Religious Effort ?

The first thing you should do after waking up in the morning is to make religious efforts. For this, first of all, as soon as you wake up, look at your fortune, join both your palms and open them slowly so that a moon will be formed under the eight fingers. There are three parts in each of the eight fingers, (8x3=24) 24 Tirthankaras are written in your destiny, eight fingers mean eight actions, your body is made up of eight actions, the Siddha Parameshthi who lives in Siddhalay, the one who is in the shape of moon, is made up of eight qualities. Including pun (.) is written. Think again and again that I am united with the eight qualities, I can go to Siddhalay, thinking like this, fold your hands and raise your hands upwards and offer namaskar (cover) to all the perfect Gods. Then do a Kayotsarga and go wherever you want, this is your religious effort and then wash, take bath and go to the temple with rice in your fist. Put on your protective gear before leaving the house.

"***Om Hween Namo Arihantanam. (Head protection), move both palms over the hair on the head***

Om Hween Namo Siddhaanam(protecting face) (Rub both palms on the face)

Om Hween Namo Airiyanam. (Body protection) Move both hands around the body.

Om Hween Namo Uvajjhayanam. (Protection from enemy) Make a finger sword and show it.

Om Hween Namo Loe Savva Sahunam. (Make a circle around the head in a clockwise direction with the index finger pointing up).

Om Hween Aiso Panch Namoyaaron, Savva Pavpanasano. Mangalanam Cha Savvesin Padhaam Havai Mangalam (After reading this, think that no obstacle should come inside this house too. Meditate and bow down to God, He is your refuge, He protects you)"

The earth on which I am sitting is unbroken, even if an earthquake occurs on it, not even a hair can be ruined because the one who has taken refuge in God never gets harmed. If any harm happens, it will be to the body but the soul will not be harmed. Thinking this step out of the house

घर से बाहर जाते समय हमेशा देहरी के बाहर दांया पैर बाहर निकालना क्योंकि यह विजय का प्रतीक है, सफलता का प्रतीक है, निरोगता का प्रतीक है, प्रभाव का प्रतीक है, भाग्य को बदलने का प्रतीक है।

धर्म पुरुषार्थ में पूजा दिन में तीन बार की जाती है।

1. प्रातः काल जिनेन्द्र देव की पूजा जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप धूप, फल इन अष्ट द्रव्य से करना प्रातः काल की पूजा है।
2. मध्याह्य काल में दिगम्बर मुनि, आर्यिका आदि को शुद्ध आहार यथा योग्य भक्ति पूजा पूर्वक देना मध्याह्य काल की पूजा है।
3. शाम को जिनवाणी का वाचन करना पंच परमेष्ठी की आरती करना, आत्माका चिंतन मनन करना धर्म ग्रंथो का स्वाध्याय काल की पूजा है।

शुद्ध घी का जलता हुआ दीपक केवल ज्ञान ज्योति का प्रतीक है इसीलिए दीपक जलाकर भगवान की प्रतिमा के सामने तीन वार घुमाने को आरती उतारना कहते है, अतः आरती की परम्परा अनदि कालीन है, आज की नहीं है। अष्ट द्रव्य से जब पूजा करते हैं तब प्रत्येक द्रव्य को तीन बार भगवान के सामने घुमा करके चढ़ाना चाहिए इसी प्रकार पूजन द्रव्य का चढ़ाना अर्घावतरण कहते है। हमारे अनास्था को दूर करे, हमारे अज्ञान को दूर करे, जो हमारे लिए ज्ञान प्रकाश करे उसके लिए हम प्रतीक स्वरुप दीप आदि द्रव्य लेकर भगवान के चरणों में चढ़ाते हैं। इसीलिए त्रिकाल वंदना करना धर्म पुरुषार्थ है।

While going out of the house, always take the right foot outside the threshold first because it is a symbol of victory, a symbol of success, a symbol of health, a symbol of influence, a symbol of changing destiny.

In religious endeavor, worship is done three times a day.

1. Worshiping Jinendra Dev in the morning with these eight substances like water, sandalwood, Akshat, flowers, naivedya, lamp, incense and fruits is morning worship.
2. Giving pure food to Digambar Muni, Aryika etc. during the midday period with appropriate devotional worship is the worship of the midday period.
3. Reading Jinavani in the evening, doing Aarti of Panch Parmeshthi, thinking about the soul, self-study of religious scriptures is the worship of self study time.

A lamp burning with pure ghee is only a symbol of the light of knowledge, that is why lighting a lamp and rotating it three times in front of the idol of God is called performing Aarti, hence the tradition of Aarti is from ancient times, not of today,when worshiping with the eight matters, each matter should be offered to the Lord by rotating it thrice. Similarly, offering the worship matter is called Arghaavataran. For the one who removes our disbelief, removes our ignorance, who illuminates the knowledge for us, we take lamps etc. as a symbol and offer them at the feet of God. That is why worshiping Trikaal is a religious effort.

अर्थ पुरुषार्थ कब और कैसे ?

धर्म पुरुषार्थ के पश्चात् अर्थ पुरुषार्थ करना चाहिए। अर्थ पुरुषार्थ का मतलब न्याय–नीति से पैसा कमाना। पैसा हाथ का मैल माना जाता है। जितनी मेहनत करोगे, जितने हाथ रगड़ोगे, जितना पसीना बहाओगे उतना मैल (पैसा) टपकता जायेगा। पैसा मेहनत करने से मिलता है। किसान कितनी मेहनत करता है, हल चलाता है, बीज बोता, कटाई करता है, फिर घास को अलग करता है तब वह आनन्द मनाता है। संसार में सबसे सरल दो क्रियाएँ है– एक विषय भोग भोग लेना, दूसरा पैसा कमाना क्योंकि विषय तो पशु भी भोगते हैं। सबसे कठिन कार्य विषय भोगों से ऊपर उठकर ब्रह्मचर्य में लीन होना है। पैसा कमाना कोई बड़ा काम नहीं, पैसा सभी यहीं छोड़ कर जाते है, कोई साथ नहीं ले जाता है। पैसा कमाने को लेकर एवं घटना उल्लेखित करना चाहता हूँ। एक माँ और बेटा है। पिता की मृत्यु हो चुकी है। बेटा 20–22 बर्ष का है शादी हो नहीं रही है, धंन्धा पानी चल नहीं रहा है। खाने के लाल पड़े हैं। ऐसी दशा में तो माँ ने कहा जाओ बेटा किसी सेठ के पास जाओ वह सबको पैसे देते हैं तुम्हें भी देंगे। बेटा सेठ के पास गया और कहता है माँ ने भेजा सेठ जी। सेठ जी का हिसाब गड़बड़ हो जाने से दिमाग खराब हो रहा था, तो सेठ जी ने कहा भाग जा यहाँ से सुबह से आ जाते हैं परेशान करने के लिए जवान होकर भी पुरुषार्थ करते नहीं ओर माँगने आ जाते हैं। जिसको पैसा कमाना हो तो वह मरे हुए चूहे को ओर इशारा करते हुए उस युवा से कहता है पुरुषार्थ युवा तो इस से भी पैसे कमा लेगा। ये सब सुनकर उसे बुरा लगा उसे लगा क्या कोई मरे हुए चूहे से भी पैसे कमा लेगा। वह आगे बढ़ा और चूहा उठाते ही उसे दो तीन बिल्ली दिख गईं। सामने से एक दयावान व्यक्ति मंदिर जाता हुआ दिखाई दे रहा था तो उसने कहा देखो सेठ जी ये चूहा मरा हुआ है और वो भूखी बिल्ली है यह किसी न किसी चूहे को पकड़ेगी और ये चूहा मरा हुआ है तो मैं उस बिल्ली को डाल देता हूँ उसका भी पेट भरेगा। आप मेरा समर्थन नहीं करोगे फिर भी मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ मेरे पेट का सवाल है मुझे भी भूख लगी है नहीं तो मुझे चूहा खाना पड़ेगा।

When and How to Make Effort for Wealth?

After making religious efforts, one should make economic efforts. Meaning of effort means earning money through justice and policy. Money is considered a gift. The more hard you work, the more you rub your hands, the more you sweat, the more dirt (money) will keep dripping. Money is earned by working hard. The farmer rejoices when he works so hard, ploughs, sows seeds, harvests and then separates the grass. The two simplest activities in this world are – one is to enjoy pleasures and the other is to earn money because even animals enjoy pleasures. The most difficult task is to rise above sensual pleasures and become absorbed in celibacy. Earning money is not a big task, everyone leaves the money here, no one takes it with them. I want to mention another incident regarding earning money. There is a mother and son. Father has died. The son is 20-22 years old, he is not getting married, his business is not doing well. There is not food to meet the needs of hunger. In such a situation, mother said, son, go to a merchant, he gives money to everyone and will give it to you too. The son went to Seth and said that mother had sent him, Seth ji was losing his mind due to his account being messed up, so Seth ji said, get lost from here, such people come from somewhere in the morning to trouble, despite being young, they do not make efforts and come to ask for money. If someone wants to earn money, he points to the dead rat and tells the young man ,that if he is an industrious young man, he will earn money from this also. The boy felt bad after hearing all this and wondered whether someone would earn money even from a dead rat. He moved ahead and as soon as he picked up the mouse, he saw two or three cats. In front of him he saw a kind person was seen going to the temple, so he said to him,look Seth ji, this rat is dead and that is a hungry cat, it will catch some rat or the other and this rat is dead, so I will put this rat in front of the cat. It will fill her stomach. You will not support me, still I pray to you, it is a question of my stomach, I am also hungry otherwise I will have to eat a rat.

सेठ जी कहते हैं चलो सुबह से मुझे दान पुण्य तो करना ही है तो उसने उसे एक किलो भुने हुए चने दे दिए और 100 ग्राम गुड़ दे दिया। उस बालक ने चूहा बिल्ली के सामने डाल दिया बिल्ली चूहा खा कर भाग गई। अब वह जंगल में गया और एक घड़ा ले लिया घड़े में पानी भर दिया और जंगल के चौराहे में बैठ गया और वहाँ पानी का घड़ा रखा, चने रखे, गुड़ रखा। अब जो भी आता उससे कहता दो लकड़ी डालो और पानी पीओ, गुड़ चना खाओ और आगे बड़ो उसने शाम तक एक किलो चने और गुड़ में लकड़ी के पाँच गठ्ठर इकठ्ठे कर लिये। उसने शाम को बाजार में लकड़ियाँ बेच दीं और दूसरे दिन दो किलो चना और 500 ग्राम गुड़ ले गया उसके बदले उसने एक गाड़ी लकड़ी जमा कर ली और फिर तीसरे दिन फिर ऐसा किया और धीरे–धीरे वह लकड़ी काटने वाली मशीन ले आया और फर्नीचर बनाने लगा। कुछ दिनों में वह बड़ा आदमी बना गया। उसकी शादी हो गई उसकी माँ भी वहाँ आ गई। दो साल बाद वह मरे हुए चूहे को लेकर सेठ जी के पास पहुँचता है और कहता है सेठजी मैंने आपसे कर्ज लिया था तो सेठ जी ने अपना बही खाता खोला, कुछ मिला नहीं। वह कहता है आपने मुझे कर्ज दिया था वह चुकाने आया हूँ। उसने कहा सेठजी याद है जब मैं सुबह–सुबह आया था तो आपने कई लोगों के सामने डाँट'–फटकार लगाई थी और कहा था मरे चूहे से भी आदमी धन कमा सकता है पुरुषार्थ करो। आज उसके बदले में सोने का ये चूहा लेकर आया हूँ तो सेठ जी ने कहा बेटा मुझे ये चूहा नहीं चाहिए मेरी बात तुम्हें दिल में चुभ गई थी तो तुमने पुरुषार्थ किया धन कमाया। इसी के लिए डाँट लगाई थी। इसी तरह ये प्रवचन भी हमारे दिल में चुभने चाहिए।

मर जाऊँ माँगू नहीं अपने तन के काज।
परमारथ के कारणे मुझे आवे न लाज।।

पैसा कमाना जैनियों के लिए तो कोई बड़ी बात है ही नहीं। जैनियों के रग–रग में व्यापार भरा होता है। जैनियों के तो गर्भ से ही व्यापार के संस्कार आ जाते हैं, क्योंकि माँ भी दुकान चला रही है बेटा भी दुकान चला रहा है। व्यापार के संस्कार तो जब बेटा गर्भ में आये तब ही आ जाते हैं।

Seth ji says come on, I have to do some charity this morning, so he gave him one kilo of roasted gram and 100 grams of jaggery. The boy put the mouse in front of the cat and the cat ate the mouse and ran away. Now the boy went to the forest and took a pitcher, filled the pitcher with water and sat in the crossroads of the forest and kept a pitcher of water, gram and jaggery there. Now he told whoever came to him to put two pieces of wood and drink water, eat jaggery and gram and move ahead. By the evening he collected from one kilo of gram and 100 gms of jaggery five bundles of wood. He sold the wood in the market in the evening and on the next day he took two kilos of gram and 500 grams of jaggery in exchange for which he collected wood in a cart and then did it again on the third day and gradually he brought a wood cutting machine and started making furniture. In a few days he became a big man. He got married and his mother also came there to live with him. After two years, he approaches Seth ji with a dead rat and says, Seth ji, I had taken a loan from you. Seth ji opened his ledger, nothing was found. The boy says you gave me a loan, I have come to repay it and said Sethji, remember when I had come early in the morning one day, you had scolded me in front of many people and had said that a man can earn money even from a dead rat if he makes make efforts. Today I have brought this golden rat in exchange for it, then Seth ji said, Son, I do not want this rat. My words pricked your heart, so you made efforts and earned money. I had scolded you for this. Similarly, these sermons should also pierce the heart.

"If I die, I don't ask for the work of my body.

I should not feel ashamed because of altruism". ,

Earning money is not a big deal for Jains. Jains have business in their veins. Jains acquire the values of business right from the womb, because the mother is also running a shop and the son is also running the shop. The values of business are acquired by the child just when when the son is conceived.

इसीलिए जैनी लोग हमेशा पैसे वाले होते हैं क्योंकि उन्होंने व्यापार करना सीखा है और उन्हें संस्कार देने में गुरु की भी भूमिका होती है। गुरु कहते हैं तुम चार बार भोजन करो तो आठ घण्टे पुरुषार्थ करो व्यसनों से मुक्त रहो, अपव्यय मत करो, परोपकार, मधुर व्यवहार और पूजा करो। जीवन में पुण्य करना अनिवार्य है। पैसा जीवन में आवश्यक है पर अनिवार्य नहीं है।

जैसे परीक्षा के पेपर में लिखा होता है पहला प्रश्न अनिवार्य है बाकी सात में कोई पांच प्रश्न हल करना ऐच्छिक है। चार पुरुषार्थों में पहला पुरुषाथ धर्म है। धर्म से सभी पुरुषार्थों की सिद्धि होती है अतः धर्म पुरुषार्थ अनिवार्य है पैसा (धन) साधन है सत्य नहीं। साधन भौतिक सुख सुविधा दे सकता है, सुख नही। बिस्तर दे सकता है पर नींद नहीं दे सकता है।

धन भोजन दे सकता है पर भूख नहीं। पैसा सीढ़ी है, मंजिल नहीं। पैसा ग्रहस्थ जीवन पूर्ण करने की सीढ़ी है, मंजिल नहीं। सीढ़ी पर बैठ जाने से मंजिल नहीं मिलती। सीढ़ी पर बैठ जाने से मार्ग अवरूद्ध हो जाता है इसीलिए उस पैसे को लेकर मत बैठे रहना। अन्त में मंजिल तक जाने के लिए सीढ़ी को छोडना होगा और ऊपर बढ़ना होगा। इसी प्रकार धन–वैभव को छोड़कर के ऊपर यात्रा करनी होगी, मोक्ष पुरुषार्थ करना होगा। धन चश्मा है आँख नहीं। अगर चश्मा लगा लिया पर अंधा है तो चश्मा क्या करेगा जो अंधा होता है वह काला चश्मा लगा लेता है इसी तरह मिथ्या दृष्टि जीव काले चश्मे लगा लेता है अर्थात अन्याय अनीति इत्यादि पाप का सहारा लेता है और सम्यक्दृष्टि जीव पारदर्शी चश्मा लगाता है अर्थात नीति, शुद्ध आचार विचार इत्यादि धर्म का सहारा लेता है अधिक और कम धन समस्या है समाधान नहीं क्योंकि धन आए तो समस्या, नहीं आए तो समस्या। धन विपदा है सुख नहीं। धन चचंल है स्थिर नहीं। भोपाल के रास्ते में किसी जैनेतर व्यक्ति ने मुझसे पूछा कि जैन लोग इतने अमीर कैसे होते है तो मैंने कहा जैन बच्चों की आठ वर्ष की उम्र से ही मदिरा, मांस, मधु, वेश्यागमन, जुआ खेलना, शिकार करना आदि सात व्यसनों का त्याग जीवन पर्यंत के लिए करा देते हैं। अतः पैसो का अपव्यय नहीं होता है और इसलिए जैनी धनी होते हैं।

That is why Jaini people are always rich because they have learned business and the Guru also plays a role in imparting values to them. Guru says that if you eat four times, do hard work for eight hours, be free from addictions, do not waste, do charity, sweet behavior and worship. It is mandatory to do good deeds in life. Money is necessary in life but not mandatory.

As it is written in the examination paper, the first question is mandatory and solving any five questions out of the remaining seven is optional. The first among the four Purusharthis is Purushath Dharma. All efforts are accomplished through religion, hence religious efforts are essential, money is a means, not truth. Resources can provide material comfort, but not happiness, can provide bed but not provide sleep.

Money can provide food but not hunger. Money is a ladder, not a destination. Money is a stepping stone to complete life, not a destination. One cannot reach the destination by sitting on the stairs. Sitting on the stairs blocks the way. That's why don't sit with that money. Finally, to reach the destination, you will have to leave the ladder and move up. Similarly, we will have to leave wealth and glory and travel to the higher world and strive for salvation. Money is eyeglasses not eyes. If you wear spectacles but you are blind then what will the spectacles do? The one who is blind wears black spectacles, similarly a person with false vision wears black spectacles i.e. takes recourse to sins like injustice, bad policy etc. and a person with right vision wears transparent spectacles i.e. morality, Takes the help of religion, pure moral thoughts etc. More and less money is a problem and not a solution because if money comes then there is problem, if it does not come then there is problem. Money is trouble, not happiness. Money is fickle and not stable. On the way to Bhopal, some non-Jain person asked me how Jain people are so rich, then I said that Jain children from the age of eight have to give up the seven vices of alcohol, meat, honey, prostitution, gambling, hunting etc. throughout their life. Hence there is no wastage of money and hence Jainis are rich.

अर्थोपार्जन के साधन

आर्थिक विकास के लिए अर्थसंग्रह हेतु अनेक साधन अपनाए जाते हैं। उन साधनों को घटक या फैक्टर्स कहते हैं। शुम्पीटर, ल्युइस, रोस्टोव, नर्क्से आदि आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने अर्थ संग्रह के अनेक साधन स्वीकार किये है। जैसे–

प्राकृतिक साधनः– प्राकृतिक साधनों का अर्थ प्रकृति प्रदत्त जल, वायु, वनस्पति, खनिज, भूमि, आदि से है। प्राकृतिक साधन जितने अधिक होंगे विकास उतना ही अधिक होगा। प्राकृतिक साधन हमेशा उपलब्ध रहते हैं लेकिन उन साधनों का दोहन कुशलता पूर्वक बड़ी सावधानी से करना चाहिए। यहाँ प्रश्न उठता है कि अर्थसंग्रह और उसके विकास के लिए प्रकृति के साथ क्यों छेड़–छाड़ करनी चाहिए और उसके शोषण का अधिकार देना चाहिए। इसकी समीक्षा भी आवश्यक है इसके लिए बौद्धिक सम्पन्नता की आवश्यकता है–

तकनीकी साधनः- आर्थिक विकास में तकनीकी का महत्वपूर्ण स्थान है। प्राकृतिक साधनों का दोहन, श्रम की कार्य कुशलता, मशीनें व अन्य उपकरणों की उत्पादकता तकनीकी विकास पर आधारित है। तकनीकी के प्रयोग से पदार्थ की मात्रा (क्वांटिटी) एवं किस्म (क्वालिटी) को सुधारा जा सकता है। कम लागत में अधिक उत्पादन किया जा सकता है। रूस, जापान, अमरीका, जर्मनी आदि देशों में तकनीकी के कारण आर्थिक विकास हुआ है लेकिन वहाँ पर्यावरण की समस्या उत्पन्न हुई है।

सामाजिक साधनः- प्रत्येक देश का सामाजिक ढाँचा और वहाँ की मान्यताएँ आर्थिक विकास में अपना योगदान देती है। यदि जाति प्रथा, स्त्री पर्दा प्रथा, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता होगी तो विकास अविरूद्ध होगा। यदि नारियों को पूरी छूट दे कर स्वछंदता दी जाएगी और सत्य, अहिंसा आदि धर्म के प्रति नस्तिकपन होगा तो भी विकास अविरूद्ध होगा। लेकिन धर्म के प्रति आस्था और नारी को अपनी सीमाओं में रहकर कार्य करने की आजादी दी जाएगी तो आर्थिक विकास होगा।

Means of Earning Money

Many means are adopted for economic development. Those resources are called components or factors. Modern economists like Shumpeeter,Lewis,Rostov, Nurksrey etc. have accepted many means of wealth accumulation like :

Natural Resources- Natural resources means sources provided by nature like water provided Air, vegetation, minerals, land etc. The more natural resources there are, the greater will be the development. Natural resources were always available. But those resources should be exploited efficiently and with great care. Here the question arise that why one should exploit nature for the sake of economic accumulation and development and the right to exploit it should be given. Its review is also necessary, it requires intellectual endowment.

Role of technology in Economic Development

There is important role played by Technology in economic development. Exploitation of natural resources, efficiency of labour, productivity of machines and other equipment is based on technological development. The quantity and quality of materials can be improved with the use of technology. More production can be done at less cost. In countries like Russia, Japan, America, Germany etc. there has been economic development due to technology but environmental problems have arisen here.

Social Resources:- Social structure of every country and its beliefs contribute to economic development. If there is caste system, women's purdah system, superstition and conservatism, then development will be counterproductive. Even if women are given full freedom and independence and are not focused towards religion like truth, non-violence etc., development will be hindered. But if there is faith in religion and women are given the freedom to work within their limits, then there will be economic development.

राजनैतिक और प्रशासनिक साधनः– यदि देश में राजनैतिक स्थिरता, शासन का उज्जवल चरित्र और कार्य करने की कुशलता होगी तो आर्थिक विकास होगा। आजकल शासन विनिमय को विकास का साधन मान रही है। लेकिन मेरी दृष्टि में विनिमय एक व्यवस्था है, विकास का साधन है, विनिमय को विकास नहीं कह सकते हैं। विनिमय का अर्थ वस्तुओं का आदान–प्रदान करना या वस्तु का उठा–पटक करना मात्र है। वस्तु के उठा पटक को हम व्यायाम तो कह सकते हैं व्यापार या समृद्धि नहीं कह सकते हैं। समृद्धि और विकास तो उत्पादन से होता है।

धार्मिक साधनः– आर्थिक विकास में धार्मिक साधन एवं भावनाएँ बाधक नहीं हैं बल्कि साधक हैं। धार्मिक क्रिया कलापों में जो धन खर्च किया जाता है और दान का संग्रह किया जाता है वह दुरूपयोग नहीं है बल्कि जैसे किसी देश की सरकार द्वारा गरीब जनता को रोजगार हेतु योजनाएँ चलाई जाती हैं वैसे ही धार्मिक आयोजनों के द्वारा धर्म गुरूओं के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से पूंजीपतियों का रूका हुआ धन दान के माध्यम से चलन में लाया जाता है और गरीबों को रोजगार दिया जाता है। धार्मिक आयोजन धर्म गुरूओं के द्वारा चलाई गई रोजगार की धार्मिक योजनाएँ हैं। जनसंख्या वृद्धि, पूँजी वृद्धि, साहस, व्यवसाय, उद्योग विनिमय इत्यादि आर्थिक विकास के साधन हैं।

अर्थोपार्जन के साधन उत्पादन वितरण और उपभोग सात्विक न्यायपूर्ण होना चाहिए अन्याय पूर्ण नहीं ऐसा तत्वार्थ सूत्र अध्याय ७ सूत्र २५ से ३० तक आचार्य उमा स्वामी महाराज ने अर्थोपार्जन के संबंध में लिखा है उन्होंने लिख कि प्राणियों का वध, बन्ध, छेदन, भेदन, अतिभारारोपण, अन्नपाननिरोध, मिथ्या उपदेश, मिथ्या कूट लेखन, से धनार्जन नहीं करना चाहिए। **रहोभ्याख्यानः–** स्त्री–पुरूष के बीच एकांत में की गई क्रिया को प्रगट करके ब्लैक मेल करके धन कमाना। **न्यासापहारः–** दूसरों की धरोहर को अपहरण करके धन संग्रह करना। **कूटलेख क्रियाः–** झूठे दस्तावेज तैयार करके दूसरों को फँसा कर धन संग्रह करना। **स्तेनप्रयोगः–** चोरी करने की प्रेरणा देकर और चोरी करने का उपाय बताकर धन संग्रह करना। **तदाहृतादानः–** चोर के द्वारा चुराये गये माल को सस्ते में खरीदकर महंगा बेच कर धन कमाना।

Political and Administrative Means: If there is political stability, bright character of governance and efficiency in work, there will be economic development. Nowadays the government is considering exchange (vinimay, lain _ dain, aadan prdaan) a means of development. But in my view, exchange is a system,it is not a means of development, exchange cannot be called development. Exchange simply means exchanging goods or buying and selling goods. We can call exchange (utha patak) exercise but not business or prosperity. Prosperity and development come from production.

Religious Resources: Religious resources and sentiments are not hindrances but helpful in economic development. The money spent and donations collected in religious activities is not misused, but just as the government of any country runs schemes to provide employment to the poor people, in the same way, through religious events, it is used with the blessings and inspiration of religious gurus. The money in hold of the capitalists is brought into circulation through charity and the poor are given employment. Religious programs are religious employment schemes run by religious leaders. Population growth, capital growth, courage, business, industrial exchange etc. are a means of economic development.

Means of earning, production, distribution and consumption should be virtuous and just. There should not be Injustice. This is written in Tattvarth Sutra Chapter 7, from sutra 25 to 30 by Acharya Uma Swami Maharaj regarding earning money. He has written that money should not be earned by killing of animals, bondage, piercing, penetration, overloading, prohibition of food , false teachings, false code writing etc.

Rahobhyakhyan:- Earning money by blackmailing by disclosing the action taken in private between a man and a woman.

Nyasapahar:- Accumulating wealth by kidnapping the heritage of others. Cryptocurrency action:- To collect money by preparing false documents and trapping others.

Stenprayog:- Collecting money by giving inspiration to steal and telling the solution to steal.

Tadahritadaan: - Buying good at cheap price stolen by a thief and selling at higher price.

विरूद्धराज्यातिक्रमः– राजा की आज्ञा के विरूद्ध चलकर आयकर, विक्रयकर, इत्यादि को न देकर धन संग्रह करना। **हीनधिकमानेनमानः**- नाप तोल के उपकरण को छोटा–बड़ा बना कर कम मात्रा में माल देकर और अधिक मात्रा में माल लेकर धन संग्रह करना। **प्रतिरूपक व्यवहारः–** कीमती वस्तु में सस्ती वस्तु मिलाकर अधिक कीमत में बेचकर धनसंग्रह करना। **परविवाहकरणः–** दूसरों के बेटा–बेटियों का विवाह करके दलाली कर धनसंग्रह करना। **परिगृहीतेत्वरिकागमनः**– परिगृहीता विवाहित और **अपरिगृहीतेत्वरिकागमनः–** वेश्या और व्यभिचारिणी स्त्रियों से शारीरिक संबंध स्थापित कर अथवा स्त्रियाँ स्वयं पर पुरूषों से शारीरिक संबंध बनाकर देह व्यापार करके धनसंग्रह करना। **क्षेत्रवास्तु प्रमाणातिक्रमः–** मकान एवं खेत आदि का अतिक्रम करके धनार्जन करना। धनधान्य, हिरण्यसुवर्ण, दासीदास, वस्त्र एवं वर्तन का प्रमाणातिक्रम करके एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में कानून का उल्लंघन करते हुए धनार्जन करना। आनायनः– देश के बाहर से अबैघ रुप से वस्तु को बुला कर धन अर्जन करना। **प्रेष्य प्रयोगः–** मर्यादित क्षेत्र के बाहर अवैध रूप से वस्तु भेज कर धनार्जन करना। **रूपानुपात एवं शब्दानुपातः**- टी0वी0, मोबाईल एवं फिल्मों द्वारा अपने अंग प्रदर्शन करके एवं अश्लील बातों को रिकार्ड कराकर धनार्जन करना। **कन्दर्प–वासना** से भरे अशिष्ट वचन बोलकर, कौत्कुच्य अशिष्ट वचन के साथ शारीरिक कुचेष्टा करके एवं मौखर्य अशिष्ट चुटकुले और व्यंग करके धनार्जन करना। भोग और उपभोग की वस्तुओं को अशुद्ध और नकली बनाकर बेचकर हरे पेड़–पौधों जंगलों को काटकर धनअर्जन करना यह सब अर्थोपार्जन के अनुचित साधन हैं।

इसके अलावा हिंसक एटम बम, अस्त्र–शस्त्र का उत्पादन करके विक्रय करना और उससे धनार्जन करना। आज विकसित देशों का बहुत बड़ा व्यवसाय बन चुका है जो अर्थोपार्जन का अनुचित साधन है। आतंकवाद का प्रशिक्षण देकर अथवा आतंकवादी बनाकर धनार्जन करना यह भी अर्थोपार्जन का अनुचित साधन है। अर्थशास्त्र के शास्त्र शब्द से आज के अर्थ शास्त्रियों ने आ निकाल दिया है इसीलिए शास्त्र अब शस्त्र बन गया है।

Viruddharajyatikram:- Collecting money by going against the orders of the king by not paying income tax, sales tax, etc.

Hinadhikamanenanaman:- Collecting money by making the weighing and weighing equipment smaller and bigger, giving less quantity of goods and taking more quantity of goods.

Replicable behaviour:- Accumulating money by mixing cheap items with expensive items and selling them at a higher price.

Par-Marriage:- Collecting money by brokering marriage of other's sons and daughters.

Parigrihitetavarikagaman, Aparigrahitetvrikagam:- Accumulating money by doing prostitution by establishing physical relations with prostitutes and adulterous women or by having women physical relations with men on their own.

Kshetravastu Pramanatikram:- Earning money by encroaching on houses and fields etc. Earning money by transferring wealth, gold, men & women slaves trade , clothes and behavior from one area to another in violation of the law.

Anayana:- Earning money by illegally importing goods from outside the country. Sendya Prayog:- Earning money by sending goods illegally outside the restricted area.

Rupanupat & Shabdanupat:- Earning money by showing one's body parts and recording obscene things through TV, mobile and films.

Kandarpa - Earning money by speaking obscene words filled with lust, by doing physical mischief with vulgar obscene words and by making vulgar, vulgar jokes and sarcasm. Earning money by selling impure and counterfeit items of enjoyment and consumption, cutting green trees and forests, all these are inappropriate means of earning money.

Apart from this, producing and selling violent arms, atom bombs and weapons and earning money from it. Today, it has become a big business in developed countries which is an unfair means of earning money. Earning money by giving terrorism training or becoming terrorists is also an unfair means of earning money. Today's economists have removed the meaning of the word 'Shastra' of economics, that is why 'Shastra' now means a weapon.

इन शस्त्रों से अर्थोपार्जन किया जा रहा है और शस्त्रोपादन करने लगे हैं। यह उत्पादन सिर्फ हिंसा के लिए है। इसे चलाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। उस प्रशिक्षण में यही सिखाया जाता है कि सामने वाले व्यक्ति को कैसे मारा जाए और उस देश या समाज को कैसे नष्ट किया जाए। अतः शस्त्रोपादन हिंसा, भय, आतंक और अशांति को देने वाला है। इन उपकरणों के माध्यम से एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर अपना अधिकार स्थापित करना चाहता है। ऐसे कारखानें का होना रोजगार तो दे रहा है लेकिन यह रोजगार कई परिवारों के रोने का कारण भी बन रहा है।

यह सत्य है कि विज्ञान ने अनेक खोज की है, नई तकनीकियाँ दी हैं, सत्य को खोजा है, मिथ्या धारणाओं को तोड़ा है, लेकिन भौतिक विज्ञान शास्त्रियों के द्वारा सत्य की खोज पूरी नहीं अधूरी है। नई तकनीकी, सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा और मैत्री से शून्य है। अगर विज्ञान के साथ सत्य, अहिंसा आदि जुड़ जाये तो परमाणु बम और अशस्त्र–शस्त्र की जरूरत ही न पड़े। न दुनिया के देशों को शस्त्र क्रय और शस्त्र विक्रय के लिए निर्माण के लिए अरबों–खरबों रूपये या डॉलर के बजट खर्च करने की जरूरत ही पड़े। इन सभी हिंसक उपकरणों का उत्पादन पूरी दुनिया को आकाश की ऊँचाई तक ले जाकर पुनः धूल में मिला देगा और सारी दुनिया के अर्थ शास्त्र को शून्य कर देगा।

अर्थोपार्जन की साधन शुद्धि न होने के कारण विश्व में नई–नई समस्याएँ उभर कर आ गई हैं। इन समस्याओं का हल सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा और मैत्री भावना है। शक्तिशाली राष्ट्र अपना प्रभुत्व कायम रखने के लिए छोटे या गरीब देश में युद्ध की चिंगारी सुलगा देता है ऐसा करने से उसके अस्त्र–शस्त्र का व्यवसाय होने लग जाता है। जिससे बेचने वाले देश को अर्थ लाभ होता है और खरीदने वाले देश में जन–धन की हानि हो जाती है। इसी प्रकार कुछ देश अफीम, चरस, हीरोइन, ड्रग्स, शराब इत्यादि मादक पदार्थों के उत्पादन को बढ़ा कर अर्थसंग्रह करना चाहते हैं, लोगों को व्यसनी बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। जबकि यह उत्पादन विलासिता, मूर्खता, अज्ञानता, अन्याय, अत्याचार और अशांति की ओर ले जाता है ऐसे उत्पादन की आवश्यकता ही नहीं है। उन पर प्रतिबंध लगाना चाहिए।

Income is being earned from these weapons and weapon production. This production is just for violence. Training is given to run it. In that training, what is taught is how to kill the person in front and how to destroy that country or society. Therefore, the production of weapons is going to give rise to violence, fear, terror and unrest. Through these tools one nation wants to establish its authority over another nation. The existence of such factories is providing employment but this employment is causing weeping of many families.

It is true that science has made many discoveries, given new technologies, discovered the truth, broken misconceptions, but the search for truth by physicists is not complete but incomplete. New technology is void of truth, non-violence, kindness, forgiveness and friendship. If truth, non-violence etc. are combined with science, then there will be no need for nuclear bombs and weapons. Nor should the countries of the world need to spend billions of rupees or budgets of dollars for the purchase and sale of arms. The production of all these violent instruments will take the entire world to the heights of the sky and turn it into dust again and will bring the entire world economy to naught.

Due to lack of pure means of earning money, new problems have emerged in the world. The solution to these problems is truth, non-violence, kindness, forgiveness and friendship. In order to maintain its dominance, a powerful nation ignites a war in a small or poor country. By doing this, its arms and weapons business begins to flourish. Due to which the selling country gets economic benefit and the buying country suffers loss of people and money. Similarly, some countries want to accumulate wealth by increasing the production of intoxicants like opium, hashish, heroin, drugs, liquor etc. and want to increase tgeir selfish interests by making people addicted.The production of these items leads to luxury, stupidity, ignorance, injustice, oppression and unrest, there is no need for such production. They should be banned.

आज कितनी आश्चर्य की बात है कि पहले सरकार मादक पदार्थों का उत्पादन और व्यवसाय करवाती है बाद में उसका सेवन और व्यवसाय करने वाले को पकड़ कर जेल में डालती है। मादक पदार्थों से समस्याएँ पैदा होती हैं। समाजिक और पारिवारिक व्यवस्था बिगड़ती है। अतः इन पर तत्काल प्रतिबंध लगाना चाहिए। यदि प्रतिबंध न लगाया गया और उत्पादन के साधनों को न बदला गया तो ध्यान रखना कि रात में सूर्य का निकलना, वन्ध्या स्त्री की संतान होना, आकाश में फूल खिलना, आकाश में मछलियों का उडना, पुरूष के गर्भ धारण होना संम्भव है लेकिन इन उत्पादनों और अर्थनीतियों से देश में विकास, समाजवाद और सुख–शांति लाना असंम्भव है।

विश्व में भोग–उपभोग के पदार्थ सीमित हैं लेकिन इच्छाएँ असीमित हैं। संसाधन सीमित हैं लालसाएँ असीमित हैं। वर्तमान अर्थ शास्त्री इच्छाओं की वृद्धि को आर्थिक विकास का साधन मानते हैं जो अनुचित है। जो समस्याओं को और बढ़ाने वाला है घटाने वाला नहीं है। यदि संसाधन असीमित होते और पदार्थ अनंत होते हैं तो असीमित लालसाओं और अनंत इच्छाओं को पूर्ण किया जा सकता है और समस्याओं का अंत किया जा सकता है। लेकिन ऐसा नहीं होने से समस्याएँ और जटिल होती जा रही हैं, आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं, उनकी पूर्ति के लिए प्रकृति का शोषण किया जा रहा है, भूमि का उत्खनन, जंगलों का सफाया और कारखानों में वृद्धि की जा रही है जिससे वायु मण्डल का तापमान बढने लगा है। पर्यावरण रक्षक ओजोन गैस की परत में छेद होने लगा है जो एक जटिल समस्या बनकर हमारे सामने खड़ी है। पर्यावरण प्रदूषण एक विकराल रूप लेकर खड़ा है। अतः विज्ञान एक समस्या का समाधान खोजता है तो दस नई समस्या खड़ी कर देता है इन समस्याओं का समाधान भगवान महावीर स्वामी ने इच्छाओं का निरोध, संयमित जीवन और सप्तशील व्रत के रूप में दिया है।

How surprising it is today that first the government gets the drugs produced and traded, then it catches the person consuming and trading them and puts them in jail. Drugs cause problems. Social and family system deteriorates. Therefore these should be banned immediately. If restrictions are not imposed and the means of production are not changed, then keep in mind that it is possible for the sun to rise at night, a barren woman to have a child, flowers to bloom in the sky, fishes to fly in the sky, a man to conceive can be possible but it is impossible to bring development, socialism and peace and happiness in the country through such economic policies.

The objects of enjoyment in the world are limited but the desires are unlimited. Resources are limited, desires are unlimited. Current economists consider the increase of desires as a means of economic development which is inappropriate. Which is going to increase the problems and not reduce them. If resources were unlimited and substances were infinite then unlimited longings and infinite desires could be fulfilled and problems could be eliminated. But due to this not happening, the problems are becoming more complex, the needs are increasing, to fulfill them nature is being exploited, land is being excavated, forests are being destroyed and factories are being increased which is destroying the atmosphere. The temperature has started rising. Holes have started forming in the layer of environmental protection ozone gas, which is posing a complex problem in front of us. Environmental pollution is taking a monstrous form. Therefore, when science finds a solution to one problem, it creates ten new problems. The solution to these problems has been given by Lord Mahavir Swami in the form of control of desires, restrained life and Saptasheel fast

अर्थशास्त्र और सप्तशील व्रत

वर्तमान समय में उत्पन्न समस्याओं का समाधान भगवान महावीर स्वामी के द्वारा ग्रहस्थो के पालनार्थ कथित पांच अणुव्रत और सात शील व्रतों से हो सकता है। भगवान महावीर स्वामी ने कहा कि अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और परिग्रह परिमाण रूप पांच अणुव्रत एवं दिग्व्रत दशों दिशाओं में जीवनपर्यंत आने जाने की एक सीमा निश्चित करनी चाहिए।

देशव्रत :- जीवनपर्यन्त के लिए निश्चित की हुई सीमा को कुछ समय के लिए और कम कर लेना।

अर्नथदण्डव्रत :- निश्प्रयोजन क्रियाओं का त्याग कर देना और निश्प्रयोजन वस्तुओं का संग्रह नहीं करना। इसके पांच भेद हैं पापोपदेश, हिंसादान (तलवार आदि हिंसक उपकरण), अपध्यान (दूसरों का बुरा विचारन), दुःश्रुति (मन को विकृत करने वाले साहित्य और विचारों को सुनना), प्रमादचर्या (निश्प्रयोजन भू–उत्खन्न, निश्प्रयोजन परिभ्रमण आदि करना)।

सामायिक शिक्षाव्रत :- समता और संतोष धारण करना, जितना मिला है उसी में संतोष करना, लोभ–लालच नहीं करना, उत्तेजित नहीं होना, नियंत्रण में रहना, ईर्ष्या और नफरत नहीं करना, क्योंकि जितनी भौतिक सम्पदा बढ़ती है उतना मानसिक तनाव बढ़ता है। भौतिक सम्पदा से और संतोष न होने से अर्थशास्त्र का स्वरूप ही बदल रहा है। उसकी अवधारणा बदल रही है।

प्रोषधोपवास शिक्षाव्रत :- प्रतिदिन दो बार भोजन करना और सप्ताह के अंतिम दिन एक बार भोजन करना अथवा उपवास करना, ऐसा करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है, मानसिक रोग से भी बचा जा सकता है। धार्मिक आस्था और संस्कार भी बने रहते हैं। रात्रिकालीन भोजन का त्याग करना भी रात्रिकालीन उपवास कहलाता है। इसके संबंध में मैंने 'रात्रि भोजन एक वैज्ञानिक दृष्टि' नाम से ग्रंथ की रचना की है। उसका अध्ययन आप जरुर करें। इसी के साथ 'उपवास का वैज्ञानिक महत्व' ग्रंथ की भी रचना की है। उसका भी अध्ययन करना चाहिए। तब ज्ञात होगा की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान क्या होना चाहिए और कर्त्तव्य और अधिकार का ज्ञान स्वतः हो जायेगा।

Economics and Saptasheel Vrat

The problems arising in the present times can be solved by Lord Mahavir Swami's so-called five Anuvrats and seven Sheel Vrats for the welfare of the planets. Lord Mahavir Swami said that a limit should be set in the form of non-violence, truth, non-observance, celibacy and attachment to the five Anuvratas and Digvratas in the ten directions throughout life.

Deshvrat: - To observe the limit fixed for lifetime for some time to reduce it further.

Aranthadandavrata:- To give up purposeless activities andNot collecting useless items. Its five types are sin preaching, Hinsadaan (violent instruments like sword etc.), Apadhyaan (thinking ill of others), Dushruti (listening to literature and thoughts that distort the mind), Pramadcharya (purposeless digging of land, purposeless wandering etc.).

Samayik Shiksha Vrat:- To maintain equanimity and contentment, as much as one gets. The key to this is to be satisfied with what you have, not to be greedy, not to get excited, to be in control, not to be jealous and hateful, because as material wealth increases, so does mental stress. The nature of economics is changing due to lack of satisfaction with material wealth, that concept Is changing.

Prasadhopavas Shikshavrata:- Eating twice a day.Eating once or fasting on the last day of the week helps in maintaining good health and mental illness can also be avoided. Religious beliefs and rituals also persist. Giving up food at night is also called night fasting. In this regard, I have written a book titled 'Night Meal from a Scientific Perspective'. You must study it. Along with this, a book on the scientific importance of fasting has also been written. That should also be studied. Then we will know what should be the solution to physical, mental, intellectual, family, social and economic problems and the knowledge of duties and rights will become automati

भोगोपभोग परिमाण शिक्षाव्रत :- जो वस्तु एक ही बार भोगने में आती है जैसे–भोजन, पानी आदि वह भोग की वस्तु कहलाती है। जो वस्तु बार–बार भोगने में आती है अर्थात उपयोग में आती है उसे उपभोग की वस्तु कहते हैं जैसे मकान, वस्त्र, आभूषण, वाहन आदि। यदि इनका परिमाण कर लिया जाए तो विश्व की साठ प्रतिशत आर्थिक समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाएगा।

अतिथि संविभाग शिक्षाव्रतः- जो भी मेहमान, साधु–संत, त्यागी–व्रती इत्यादि हैं जो अपने पास भोजन पानी इत्यादि नहीं लाते हैं अथवा नहीं रखते हैं उनके भोजन आदि की व्यवस्था अपने एक बार के भोजन के बराबर करके देना अतिथि संविभाग व्रत कहलाता है। ऐसा करने से दुनिया में कोई भूखा–प्यासा नहीं रहेगा। यही सही उपभोगता वादी सिद्धांत है। यही जैन धर्म का अर्थ सिद्धांत है।

अतः अर्थ का उत्पादन श्रम, संयम और सत्य पूर्वक होना चाहिए। जितनी आवश्यकता है उससे अधिक धनार्जन किया जा सकता है, लेकिन आवश्यकता से अधिक धनार्जन होनेपर परोपकार में लगाना चाहिए, व्यसनें में नहीं लगाना चाहिए और छुपाकर बैंक आदि में भी नहीं रखना चाहिए। धन जितना चलन में आयेगा उतना ही देश समाज और परिवार का विकास होगा।

मानवाधिकारों का अर्थ जैन धर्म के सिद्धांतानुसार किया जाए तो आर्थिक असमानता, श्रमिक शोषण, उपभोगतावादी हवश, प्रकृति का शोषण इत्यादि से बचा जा सकता है और मानव मूल्यों के साथ आर्थिक सिद्धांतो पर चला जा सकता है। जिस अर्थशास्त्र में सत्य, अहिंसा, अचौर्य आदि नैतिक मूल्यों के लिए कोई स्थान न हो वह अर्थशास्त्र मिथ्या है, झूठा है, पतन का कारण है। जिस अर्थशास्त्र में निजी स्वार्थ के साथ आत्म संयम, आत्म संतोष, परोपकार की भावना, सत्य और अहिंसा जैसे नैतिक मूल्यों को स्थान है वही वास्तविक अर्थशास्त्र है इसके बिना वह शास्त्र न होकर शस्त्र है, पाखंड है, अमानवीय है। यह निश्चित है कि मानवीय अधिकारों के संरक्षण में अर्थनीति संरक्षण की रीढ़ है। इसीलिए प्रत्येक देश अर्थ से मजबूत बनना चाहता है, पूँजीवादी बनना चाहता है। जो साम्यवादी लोग पूंजीवाद का विरोध करते हैं वे स्वंय पूँजीवादी बनना चाहते हैं। पूँजी के बिना बेरोजगारी बढ़ती है, सामाजिक अधिकारों का हनन होता है, ऐसे देश में अनेक बाधायें आती हैं। पूँजीवादी लोगों से गरीबों को रोजगार मिलता है, लेकिन पूँजीवादी लोगों को उदार हृदय वाला होना चाहिए। अभी तक जितने भी युद्ध हुए है वे सब धन सम्पत्ति और अधिकारों के लिए हुए हैं।

Bhogopabhoga quantity Shikshavrata:- The thing which is enjoyed only once like food, water etc. is called an object of enjoyment (bhog ki vastu) The object that is enjoyed again and again, that is, used, is called a consumption (upbhog ki vastu) item like house, clothes, jewellery, vehicle etc. If these can be quantified, sixty percent of the world's economic problems will automatically be solved.

Atithi (Guest) sanvibhag Shikshavrata:- Any guest, sage-saint, For those who do not bring food or water etc. with them or do not keep it, arranging for their food etc. equal to one's own meal is called Atithi Sanvibhag Vrat. By doing this no one will remain hungry or thirsty in the world. This is the true consumerist principle. This is the meaning principle of Jainism.

Therefore, money should be produced with hard work, restraint and truthfulness. One can earn more money than is required, but if you earn more money than required, it should be invested in charity, not in addictions and should not be kept secretly in the bank etc. The more money comes into circulation, the more the country, society and family will develop.

If human rights are interpreted according to the principles of Jainism then

Economic inequality, labor exploitation, consumerist lust, exploitation of nature etc. can be avoided and economic principles with human values can be followed. The economics principle in which there is no place for moral values like truth, non-violence, non-policy etc. is false, false and is the cause of downfall. The economics which has a place for self-interest along with moral values like self-restraint, self-satisfaction, spirit of charity, truth and non-violence is the real economics principle - without this it is not a policy but a weapon, hypocrisy and inhumane. It is certain that in the protection of human rights, economics is the backbone of protection. That is why every country wants to become economically strong and capitalist. The communists who oppose capitalism want to become capitalists themselves. Without capital, unemployment increases, social rights are violated, many obstacles arise in such a country. The poor get employment from capitalist people, but capitalist people should have a generous heart. All the wars that have taken place till now have been for wealth, property and rights.

गरीबी, बेरोजगारी और आर्थिक विकास

वर्तमान समय में प्रत्येक राष्ट्र में गरीबी, बेरोजगारी मिटाने और आर्थिक विकास करने की आवश्यकता को अति आवश्यक बना दिया है। इसी मुद्दे को लेकर लोकतांत्रिक देशों में चुनाव के समय वोट बटोरे जाते हैं और सत्ता हथियाई जाती है। लेकिन न गरीबी मिट रही है न बेरोजगारी। गरीब और गरीब होता जा रहा है, बेरोजगारी की समस्या ज्यों की त्यों बनी है। इतना अवश्य है कि हर देश में आर्थिक विकास हुआ है लेकिन खर्च में भी वृद्धि हुई है।

आर्थिक विकास के संबंध में अर्थशास्त्रियों ने प्रथक–प्रथक परिभाषाएँ दी हैं। जैसे मीयर एवं बाल्डविन ने कहा– आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में दीर्घ काल तक वृद्धि होती है। साइमन कुजनेट्स ने कहा आर्थिक विकास का अर्थ उस राष्ट्र की जनसंख्या एवं प्रतिव्यक्ति की उत्पादन में निरंतर वृद्धि से लगाना चाहिए। आर्थर ल्युइस के अनुसार आर्थिक विकास का अर्थ अधिक उत्पादन एवं सेवाऐं उपलब्ध कराने से लेना चाहिए। इन सभी परिभाषाओं से सिद्ध होता है कि आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है जिसमें राष्ट्रीय आय और जनसंख्या में वृद्धि अधिक होना चाहिए। संरचनात्मक और संस्थागत कारकों में परिवर्तन के द्वारा आर्थिक व्यवस्था में निरंतर प्रतिव्यक्ति आय बढ़ते रहना चाहिए क्योंकि अल्पविकसित देशों का मुख्य उद्देश्य गरीबी को दूर करना और बेरोजगारी को मिटाने का होता है। प्रतिव्यक्ति आय तभी बढ़ेगी जब बेरोजगारी घटेगी।

दार्शिनिक कुजनेट्स के अनुसार जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास का मुख्य कारण है। प्रोफेसर ट्रिपल का मत भी है कि एक राष्ट्र की वास्तविक संम्पत्ति भूमि, जल, वन, खनिज, पशु और प्रसन्नचित्त स्त्री, पुरूष और बच्चों पर निहित है न कि डॉलर और रूपये पैसे पर। इस संबंध में मैं अपने जीवन की एक घटना बताना चाहता हूँ, कि जब मैं सन् 1993 में रामटेक से अमरकंटक की ओर जा रहा था, तब एक ईंट के भट्टे के पास जाकर बैठ गया। वहाँ एक मजदूर आया उसने नमस्कार किया तब सहज ही मैंने पूछा इतनी मेहनत से तुम्हें क्या मिलता है तब उसने कहा कि एक ईंट बनने का 70 पैसा मिलता है।

Poverty, Unemployment and Economic Growth

In the present times, the need to eradicate poverty, unemployment and for economic development has become urgent in every nation. It is on this issue that in democratic countries, votes are collected during elections and power is grabbed. But neither poverty nor unemployment is disappearing. The poor are becoming poorer, the problem of unemployment remains the same. It is true that there has been economic development in every country but expenses have also increased.

Economists have given different definitions regarding economic development. As Meier and Baldwin said – Economic development is a process by which the real national income of the economy increases over a long period of time. Simon Kuznets said that economic development should be interpreted as the continuous increase in the population and per capita production of that nation. According to Arthur Lewis, economic development should be taken to mean providing more production and services. All these definitions prove that economic development is a process in which the increase in national income and population should be high. The per capita income in the economic system should continue to increase through changes in structural and institutional factors because the main objective of underdeveloped countries is to eliminate poverty and unemployment. Per capita income will increase only when unemployment decreases.

According to the philosopher Kuznets, population growth is the main reason for economic development. Professor Hipple is also of the opinion that the real wealth of a nation lies in land, water, forests, minerals, animals and happy men, women and children and not in dollars and rupees. In this regard, I would like to tell an incident from my life, that when I was going from Ramtek towards Amarkantak in 1993, I went and sat near a brick kiln. A laborer came there, he greeted me, then naturally I asked what do you get for so much hard work, then he said I get(Rs 0.70) 70 paisa for making one brick.

एक दिन में लगभग 6–7 सौ ईंट बना लेता हूँ। उससे 500 रूपये मिल जाते हैं। मैंने पूछा कि तुम्हारे बच्चें कितने हैं तब उसने कहा पांच बेटे हैं। उस की बात सुनकर मैंने पुनः कहा सरकार तो दो संतान की बात करती है। तुमने पांच संतान पैदा की हैं तो उनका भरण–पोषण कैसे कर पाते हो तो उसने कहा सरकार तो मूर्ख बनाती है स्वामी जी। यदि मैं और मेरा एक बेटा होता तो मैं एक दिन में हजार रूपये कमा पाता लेकिन मेरी पत्नी, पांच बेटे और पांच बहू हैं ये सब मिलकर प्रतिदिन छः हजार रूपये का काम करते हैं। अब स्वामी जी आप ही बताए कि पांच संतान से मुझे लाभ हो रहा है या हानि। उस गरीब की बात सुनकर मुझे लगा कि कुजनेट्स के अनुसार जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास का मुख्य कारण है वह सही है। यहाँ मैं एक बात और स्पष्ट करना चाहता हूँ कि लोग दुकान वहाँ खोलते हैं जहाँ आबादी अधिक होती है क्योंकि जहाँ आबादी अधिक होगी वहाँ दुकान से व्यवसाय अधिक होगा।

भारत में जनसंख्या वृद्धि के साथ यदि आर्थिक वृद्धि की ओर देखें तो स्पष्ट होता है कि जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ आर्थिक वृद्धि भी हुई है। आर्थिक वृद्धि हेतु प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन की आय में कुछ बचत जरूर करना चाहिए और व्यर्थ के खर्च से बचना चाहिए। आर्थिक वृद्धि हेतु उत्पादन के साधनों में वृद्धि करना चाहिए। आधुनिक तकनीकि का उचित प्रयोग होना चाहिए। संघटनात्मक प्रबंधन में परिवर्तन लाना चाहिए। सकारात्मक सोच सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक ताल–मेल होना चाहिए। प्राकृतिक संसाधन जैसे खनिज वन संपदा का उपयोग एक निश्चित मात्रा में होना चाहिए क्योंकि देखा गया है कि जहाँ खेती वन एवं खनिज तत्व अधिक मात्रा में पाये जाते है उन देशों में आर्थिक विकास अधिक हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पूँजी का ज्ञान होना चाहिए, खर्च कम करके धन का संचय करना चाहिए। क्योंकि पैसा–पैसे को कमाता है यह कहावत है। अतः स्पष्ट है कि पूँजी होना के लिए उपभोग में कमी और उत्पादन में वृद्धि आवश्यक है।

कोई भी राष्ट्र प्राकृतिक और आर्थिक दृष्टि से कितना भी धनी क्यों न हो लेकिन उसके उपयोग के लिए आवश्यक मानवीय श्रम के अभाव में उसका कोई मूल्य नहीं और आगे उसका विकास संम्भव नहीं है।

I make about 600-700 bricks in a day. So I get about Rs 450-500 per day. I asked how many children he had and he said he had five sons. After listening to him I again said that the government only talks about two children. You have given birth to five children, so how are you able to support them with food ? He said, Swamiji, the government fools you. If I and I had a son, I would have been able to earn a thousand rupees a day with him, but now my wife, five sons and five daughters-in-law, together they work for six thousand rupees a day. Now Swami ji, you tell me whether I am getting benefit or loss from having five children. After listening to that poor man, I felt that according to Kuznets, population growth is the main reason for economic development, he is right. Here I want to clarify one more thing that people open shops where the population is more because where the population is more, there will be more business from the shop.

If we look at economic growth along with population growth in India, it becomes clear that along with population growth, economic growth has also taken place. For economic growth, every person must save some of his daily income and avoid unnecessary expenditure. For economic growth, the means of production should be increased. There should be proper use of modern technology. There should be change in organizational management. There should be positive thinking, social, cultural and political coordination. Natural resources like mineral and forest wealth should be used in a certain quantity because it has been observed that economic development has taken place more in countries where agricultural, forest and mineral elements are found in large quantities. Every person should know about his capital, save money by reducing expenses. Because there is a saying that money earns money. Hence it is clear that to have capital, reduction in consumption and increase in production is necessary.

No matter how rich a nation is from natural and economic point of view, in the absence of human labor required for its utilization, it has no value and its further development is not possible.

जनसंख्या वृद्धि से राष्ट्र में समृद्धि श्रम शक्ति में वृद्धि और बाजार का विस्तार होता है। बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है। लेकिन अत्याधिक जनसंख्या वृद्धि से आवश्यक वस्तुओं की कमी होने लग जाती है और गुणात्मक दृष्टि से मानवों में हानि होने लग जाती है। अतः जनसंख्या वृद्धि में संतुलन आवश्यक है। एक परिवार में एक दम्पत्ति द्वारा चार संतानें की उत्पत्ति होना चाहिए। यदि दो संतान होगी तो बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो जाएगी देश का विकास पूर्णतः अवरूद्ध हो जाएगा। देश आबादी से रहित अर्थात् बंजर हो जाएगा। इसी कारण जैन धर्म में चार संतान की बात कही गई है। एक संतान देश के लिए होना चाहिए, जो नेता, सैनिक, डॉक्टर आदि बनाकर देश की रक्षा कर सकें। दूसरी संतान धर्म के लिए होना चाहिए जो साधु–संत, पंडित, विद्वान बना सके। तीसरी संतान समाज के लिए होना चाहिए जो समाज के उत्थान का कार्य कर सके। चौथी संतान कुल के लिए होना चाहिए जो परिवार की सेवा, देखभाल और रक्षा कर सके। इन चारों संतानों को देशभूषण, धर्मभूषण, समाजभूषण और कुलभूषण के रूप में जानना चाहिए। इसीलिए देश में परिवार नियोजन के साथ में परिवार संयोजन भी चाहिए। देश, समाज और धर्म का संयोजन भी चाहिए। अतः एक अमीर परिवार में चार मध्यम परिवार में दो या तीन गरीब परिवार में एक संतान होने से सभी प्रकार का संयोजन बना जाता है। इस प्रकार से संतान का विभाजन करने पर आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय एवं पारिवारिक विकास के साथ पारीवारिक संतुलन संभंव है।

मानव अर्थशास्त्र की नींव है मानव। मानव होंगे तो खेती, व्यवसाय, उद्योग इत्यादि होगे। वे विकसित होंगे गरीबों को रोजगार दे सकेंगे। इंसान को या किसी देश को इतना धन अर्जन करना चाहिए कि जितना खर्च प्रतिदिन का है उसका चार गुना धन कमाना चाहिए। क्योंकि एक भाग प्रतिदिन की आजीविका चलाने में खर्च होना चाहिए, दूसरा भाग देश, समाज, स्वास्थ और धर्म की रक्षा के लिए खर्च करना चाहिए। तीसरा भाग बच्चों की पढ़ाई–लिखाई, विवाह एवं व्यवसाय में खर्च करने के लिए होना चाहिए। चौथा भाग बुढ़ापे में अपने जीवन–यापन के लिए जमा करके रखना चाहिए। यही आर्थिक संयोजन जैन धर्म की दृष्टि से उचित है। यदि इतना धनार्जन नहीं करते है तो उधार लेना पड़ता है।

Population growth leads to prosperity of the nation, increase in labor force and expansion of the market. Production takes place on a large scale. But due to excessive population growth, there is a shortage of essential commodities and humans start suffering from qualitative point of view. Therefore, balance in population growth is necessary. A couple in a family should produce four children. If there are two children then a big problem will arise and the development of the country will be completely hindered. The country will become devoid of population i.e. barren. For this reason, there is talk of four children in Jainism. There should be a child for the country, who can protect the country by becoming a leader, soldier, doctor etc. The second child should be for religion who can make sages, saints, pundits and scholars. The third child should be for the society who can work for the upliftment of the society. The fourth child should be for the clan who can serve, care and protect the family. These four children should be known as Deshbhushan, Dharmabhushan, Samajbhushan and Kulbhushan. That is why along with family planning, family integration is also needed in the country. A combination of country, society and religion is also required. Therefore, having one child in a rich family, four in a middle family, two or three in a poor family creates all kinds of combinations. By dividing children in this way, family balance along with economic, social, cultural, national and family development is possible.

Human is the foundation of economics policy for humans. If there are people , there will be farming, business, industry etc. They will develop and will be able to provide employment to the poor. A person or a country should earn so much money that it should earn four times the amount of money spent on daily basis. Because one part should be spent on maintaining daily livelihood, the other part should be spent on protecting the country, society, health and religion. The third part should be spent on children's education, marriage and business. The fourth part should be saved for survival in old age. This economic combination is appropriate from the point of view of Jainism. If you don't earn that much money, you will have to borrow.

उधार लेते समय तो अच्छा लगता है पूँजीपति या विकसित देश गरीबों को या गरीब देशों को उधार दे देते हैं। यह उदारीकरण अच्छा लगता है। उदारीकरण की नीति सारी दुनिया में प्राचीनकाल से चल रही है लेकिन ध्यान रखना देने वाले का हाथ सदा ऊपर रहता है और लेने वाले का नीचे रहता है। उदारीकरण के साथ अनेक शर्ते जुड़ी होती हैं। उदारीकरण से एक दिन आर्थिक गुलामी की स्थिति बन जाती है और सारे अधिकार छिन जाते हैं। बौद्धिक क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ने लगता है। उधार लेने वाला कभी–कभी नकारात्मक एवं हीन विचारों से भर जाता है। यह निश्चित है कि सभी मनुष्य बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक, व्यवसायिक, आर्थिक आदि योग्यता और क्षमता से समान नही होते। प्रत्येक व्यक्ति भिन्न–भिन्न योग्यता और क्षमता वाला होता है। साम्यवादी के द्वारा समान अधिकारों की बात एक आदर्श बन सकती है। समानता हमारा आदर्श हो सकता है। मौलिक स्तर पर समानता की बात हो सकती है लेकिन व्यवहारिक दृष्टि से समानता कभी संभंव नहीं है। निश्चय दृष्टि से शक्ति की अपेक्षा सब समान है भगवान महावीर स्वामी ने 'सव्वे सुद्धा हु सुद्धनयः' सभी जीव निश्चय नय से शुद्ध हैं, समान हैं, भगवान हैं लेकिन व्यवहार नय से ऐसा नहीं है। सभी की बुद्धि, गुण, क्रिया, विचार, रूप लावण्य, योग्यता और शक्ति इत्यादि समान नहीं है। इसीलिए कभी गरीबी और अमीरी मिट नहीं सकती। इस दुनिया में अपनी योग्यता और मेहनत से लोग अमीर और गरीब रहेंगे। इतना अवश्य है कि इसे हीनाधिक किया जा सकता है।

गरीबी और अमीरी भी भाग्य और पुरुषार्थ दोनों के समन्वय से आती है। प्रत्येक इंसान मुठ्ठी बांध कर जन्म लेता है। मुठ्ठी में रेखाएं होती हैं। मुठ्ठी बांध कर जन्म लेना हमारे भाग्य को दर्शता है और मुठ्ठी खोलने की मेहनत करना पुरुषार्थ को दर्शता हैं। माँ पुरुषार्थ जगा कर शिशु की मुठ्ठी खोलती है उसे जीवन निर्वाह, कर्त्तव्य और अधिकारों की शिक्षा देती है। वह बालक योग्यता हासिल करता है, पुरुषार्थ जगाता है बुद्धि का विकास करता है और धन को अर्जित करता है। यह जो मेहनत से धन अर्जित करता है वह पुरुषार्थ का फल होता है और जो धन संपदा माता–पिता से वसीयत के रूप में मिलती है वह भाग्य का फल होता है। इसीलिए धन–संपदा और अमीरी–गरीबी न भाग्य का फल है और न पुरुषार्थ का बल्कि दोनों का फल है।

It feels good while borrowing, capitalists or developed countries lend to the poor or to poor countries. This liberalization sounds good. The policy of liberalization has been going on all over the world since ancient times, but keep in mind that the hand of the giver is always on top and that of the taker is always on the bottom. There are many conditions attached to liberalisation. Liberalization one day leads to economic slavery and all rights are snatched away. Intellectual ability begins to be adversely affected. The borrower sometimes gets filled with negative and inferior thoughts. It is certain that all human beings are not equal in terms of intellectual, physical, mental, professional, economic etc. abilities and capabilities. Every person has different abilities and capabilities. The talk of equal rights can become an ideal thought of communism. Equality can be our ideal. There may be talk of equality at the fundamental level but equality is never possible from a practical point of view. From the perspective of determination, all are equal as compared to power.

Lord Mahavir Swami has said :

''Savve Suddha Hu Suddhanaya":

All living beings are definitely pure, equal, God, but their behavior is not like this. Everyone's intelligence, qualities, actions, thoughts, beauty, abilities and strength etc. are not equal. That is why poverty and richness can never disappear. In this world, people will remain rich and poor based on their ability and hard work. It is certain that it can be increased more or less.

Poverty and wealth also come from the combination of both luck and effort. Every human being is born with clenched fists. There are lines on the fist. Being born with clenched fists shows our luck and working hard to open our fists shows our efforts. The mother awakens the manly spirit of the child and teaches him about livelihood, duties and rights. That child acquires qualifications, awakens manliness, develops intelligence and earns wealth. The wealth he earns through hard work is the result of his efforts and the wealth he receives from his parents in the form of a will is the result of luck. That is why wealth and prosperity and poverty are neither the result of luck nor of hard work, but the result of both.

जो भी धनार्जन किया जाता है वह तो पुरुषार्थ का फल है जब द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, बुद्धि इत्यादि निमित्त की अनुकूलता मिलती है तब पुरुषार्थ भी अनुकूल होता चला जाता है इससे धनार्जन होता है अमीरी बढ़ती है, गरीबी घटती है। इष्टोपदेश ग्रंथ में आचार्य पूज्यपादस्वामी ने दूसरे श्लोक में लिखा हैः–

योग्यो–पादान–योगेन, दृशदः स्वर्णतामता।
द्रव्यादिस्वादि सम्पत्तावात्मनेअप्यात्मता मता।।

अर्थात्– जैसे योग्य उपादान और द्रव्य, क्षेत्र, काल आदि के निमित्त मिलने पर स्वर्ण पाषाण से स्वर्ण अलग और पाषाण अलग हो जाता है, वैसे ही उचित निमित्त मिलने पर अपनी उपादान रूप योग्यता के अनुसार आत्मा भी परमात्मा बन जाती है। इससे स्पष्ट है कि योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल आदि के मिलने पर अपनी योग्यता और पुरुषार्थ से आदमी अमीर और गरीब बनता है, अकेले भाग्य से नहीं। पुरुषार्थ से व्यक्ति अपने अधिकारों को प्राप्त करता है मात्र भाग्य से नहीं। गरीबी मिटाने के लिए, अधिकारों को पाने के लिए हमें कार्य कुशलता और कर्त्तव्य को जाग्रत करना चाहिए। भाग्यवादी अवधारणा समाप्त क़र देना चाहिए। पुरुषार्थवादी अवधारणा बना लेना चाहिए।

इंसान के अंदर जो क्रोध, मान, माया, लोभ, भय, इर्ष्या, काम वासना इत्यादि भरे हैं वे बलात्कार, हत्या, अपहरण, आतंकवाद और पागलपन इत्यादि अपराध करने को प्रेरित करते हैं। करूणा, दया, क्षमा, सत्य, अहिंसा, और परोपकार इत्यादि संवेदनशील भावनाओं को उत्पन्न नहीं होने देते। जब तक आंतरिक संवेदनशील भावनायें पैदा नहीं होगी तब तक गरीबी, बेरोजगारी और राष्ट्रीय समस्याएँ नहीं सुलझेंगी। विषय भोगों के प्रति आसक्ति नहीं छूटेगी और समाजवाद स्थापित नहीं होगा। जब व्यक्ति के अंदर आसक्ति का भाव कम होता है तब उसके अंदर यह भाव आता है कि यह संपत्ति मेरी नहीं, समाज की है। इसकी रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य है। इस पर अधिकार जमाने का कोई अधिकार नहीं। ऐसी अवधारणा साम्यवाद, समाजवाद, और अनेकांतवाद स्थापित करती है।

Whatever wealth is earned is the result of hard work. When the material, area, time, feelings, intelligence etc. get favorable, then the hard work also becomes favorable. Due to this, wealth is earned, wealth increases and poverty decreases. In the book Ishtopadesh, Acharya Pujyapadaswami has written in the second verse:-

"Yogyo- Padan- - Yogen, Drishadah: SwarnaTamata.
Dravyadisvadi SampatvatamneApyatmata Mta ". ,

That is, just as due to meeting togather of matter, area, time etc gold gets separated from the stone and the stone gets separated, in the same way, when the suitable material is obtained, the soul also becomes the Supreme Soul as per its capability in the form of material. It is clear from this that a man becomes rich or poor on the basis of his ability and effort when he gets suitable money, area, time etc. and not by luck alone. A person achieves his rights by hard work and not by mere luck. To eradicate poverty and to get rights, we should awaken efficiency and duty. The fatalistic concept should be ended. A manly concept should be developed.

The anger, pride, illusion, greed, fear, jealousy, lust etc. that are filled inside a human being inspire him to commit crimes like rape, murder, kidnapping, terrorism and madness etc. Sensitive emotions like Compassion, kindness, forgiveness, truth, non-violence, and charity etc. are not allowed to arise. Unless internal sensitive feelings are created, poverty, unemployment and national problems will not be solved. Attachment to materialistic pleasures will not go away and socialism will not be established. When the feeling of self attachment in a person reduces then he starts feeling that this property is not mine but belongs to the society. It is my duty to protect it. There is no right to take control over it. Such a concept establishes communism, socialism, and pluralism.

प्रायः सभी लोग जानते हैं जब किसी बच्ची का जन्म होता है तो परिजन कहने लग जाते है कि बेटी पराये घर की संम्पत्ति है। उसे सुनकर उस बच्ची के अंदर यह संस्कार आ जाते है कि यह घर मेरा नहीं है। इस घर की संम्पत्ति पर मेरा अधिकार नहीं है। यह सब माता–पिता और भाई की है। यही संस्कार और भावना उस बच्ची को शादी करके पराये घर जाने के लिए प्रेरित करती है। जहाँ वह पत्नी बनकर समाज में जाती है वहाँ उसे ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ, और सेवाभावी बनाती है। जैसे लड़की के लिए पहले से ही यह धारणा बना दी जाती है कि यह मां–बाप की संम्पत्ति मेरी नहीं, वैसे ही प्रत्येक लड़के को पहले से यह धारणा और सोच पैदा कर दी जाएँ यह संम्पत्ति राष्ट्र की है मेरी नहीं, तो वह अन्याय, अत्याचार, तोड़–फोड़ और चोरी आदि करने का कार्य बंद कर देगा।

अध्यात्मवाद, आत्मवाद, साम्यवाद, समाजवाद, पूँजीवाद भौतिकवाद और अर्थवाद इन सभी में समन्वय स्थापित होनेपर सभी समस्याओं का समाधान हो सकेगा। आत्मानुभूति रूप परिणाम, धार्मिक भावना, हृदय परिर्वतन, और उदार भावना और निज आत्मस्वामित्व के धरातल पर अध्यात्मवाद टिका है जबकि अर्थवाद दूसरों के स्वामित्व, सत्ता, प्रभुता और धन दौलत के धरातल पर टिका है। अर्थवाद में मानवीय संवेदना नहीं जग पाती। वे दूसरों पर अपना अधिकार जमाना चाहते है वैसे भी मनुष्य की प्रवृत्ति दूसरों पर स्वामित्व जमाने की होती है। हर व्यक्ति चाहता है कि दूसरा व्यक्ति मेरे अधीन हो जाए। मैं इस पर अधिकार जमा लूँ। युग के आदि में प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामी के पुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत ने अपने भाई कामदेव बाहुवली से कहा कि तुम मेरी अधीनता स्वीकार कर लो लेकिन बाहुवली ने भाई भरत के अधीनता स्वीकार नहीं की तो, भाई ने भाई के साथ तीन बार युद्ध किया। इसी प्रकार रावण और इंद्र के बीच भी युद्ध हुआ। ऐसे अनेक उदाहरण भरें पड़े है जो स्पष्ट करते है कि धनसंपदा, मानवीय संवेदना को समाप्त करती है। धनसंपदा दूसरों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का कारण और लड़ाई झगड़े का कारण बनाती है। इस धनसंपदा के कारण वर्तमान में हजारों मिलीयन डॉलर की राशि युद्ध लड़ने के लिए व आधुनिक अस्त्र–शस्त्र होना करने के लिए लगाई जा रही है। यदि इसे गरीबों के विकास और अध्यात्म के क्षेत्र में अध्यात्म भावनाओं को पैदा करने के लिए खर्च किया जाता तो यही स्वर्ग उतर आता। गरीबी और अमीरी मनुष्य कृत हैं।

Almost everyone knows that when a girl child is born, the family members start saying that the daughter is the property of someone else's house. After listening to that, the girl develops the feeling that this house is not mine. I do not have any right on the property of this house. This all belongs to parents and brother. It is these values and feelings that motivate the girl to get married and go to someone else's house. Wherever she goes into the society as a wife, it makes her honest, dutiful and service-oriented. Just as a girl is already given the impression that this property belongs to her parents and not mine, similarly if every boy is given the impression and thinking that this property belongs to the nation and not mine, then he will stop injustice to others, will stop atrocities, vandalism and theft etc.

All problems can be solved if coordination is established among spirituality, animism, communism, socialism, capitalism, materialism and economics. Spiritualism rests on the basis of self-realization, results into religious feeling, change of heart, generous spirit and one's own self-ownership, whereas economics rests on the basis of ownership others, power, dominance and wealth of others. Human sensitivity cannot be awakened in economics. They want to establish their authority over others. Anyway, human beings have a tendency to establish authority over others. Every person wants the other person to become subservient to him. I want to take control of him. At the beginning of the era, Pratham Chakravarti Bharat, son of the first Tirthankar Shri Rishabhdev Swami, told his brother Kamadeva Bahuvali to accept his subordination, but Bahuvali did not accept brother Bharat's subordination, so the brothers fought war with his brother thrice. Similarly, there was a war between Ravana and Indra. There are many such examples which make it clear that wealth destroys human sensitivity. Wealth becomes the reason for establishing one's dominance over others and causes fights. Due to this wealth issue , thousands of millions of dollars are currently being invested in fighting wars and developing modern weapons. If it is spent for the development of the poor and spiritual feelings in the field of spirituality, heaven would have descended on this earth. Poverty and richness are man made.

कोई ईश्वर या ब्रह्म, परमात्मा या देवी–देवता कृत नहीं। जो प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं वे देव कृत और भाग्यकृत होती हैं। जो पशु–पक्षी आदि त्रिर्यंच गति अथवा गरीब और अमीर परिवार में किसी आत्मा का जन्म होता है, वह पूर्व भव कृत अपने कर्मों के फल से होता है। उसे हम जरूर भाग्य कृत कह सकते हैं। गरीबी, बीमारी और दुःख दर्द आदि से मुक्ति पाने के लिए उचित भावनाओं और विशेष पुरूषार्थ की आवश्यकता होती है। अतः अध्यात्म शास्त्र, धर्मशास्त्र, न्यायनीतिशास्त्र, मानस शास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थनीति शास्त्र, सिद्धांत शास्त्र और श्रम शास्त्र को अर्थशास्त्र से जोड़ा जाए तब अर्थ संग्रह सुखशांति और समृद्धि का कारण बन सकता है।

सिद्धांत शास्त्र का प्रतिपादन करना, उसकी चर्चा करना सरल है, लेकिन सिद्धांत शास्त्र के अनुसार चलना कठिन है। सिद्धांत शास्त्र के अनुसार चले बिना सुख–शांति, समृद्धि और अधिकारों की प्राप्ति नहीं हो सकती है। मानव अधिकार सिद्धांत शास्त्र के अनुसार चलने के लिए होता है। धार्मिक और अध्यात्मिक व्यक्ति सिद्धांत शास्त्र के अनुसार चलता है। वह राजनीति को अपनाता है तो जनता के बीच आत्मीयता, मधुरता को स्थापित करता है। यदि धर्म और अध्यात्म के बिना राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति प्रतिपादित की जाती है तो वह अनुचित है, विनाश का कारण है, कचरे की टोकरी में डालने लायक है क्योंकि धर्म और अध्यात्म के बिना सत्य का दर्शन नहीं हो सकता। सत्य के बिना संग्रहीत किया गया अर्थ और की गई राजनीति अन्याय को उत्पन्न करती है।

वर्तमान अर्थशास्त्री कहते हैं लोभ, स्वार्थ, स्पर्धा, छल, कपट, आर्थिक विकास में कारण हैं। वर्तमान समय के अर्थशास्त्रियों का सिद्धांत है कि स्वार्थ बढ़ाओ, लोभ जगाओ, स्पर्धा करो और आर्थिक विकास करो। इसके लिए वे लोग उचित साधनों की ओर नहीं देखते। वे हिंसक साधन जैसे कत्लखाने, मुर्गीपालन, मछली पालन और मांस निर्यात जैसे हिंसक साधनों को अपनाकर आर्थिक विकास करने में जरा भी संकोच नहीं करते। यही वजह है कि कृषि और ऋषि प्रधान इस भारत देश में आज मुर्गी, मछली पालन हो रहा है और मांस निर्यात करने हेतु सैकड़ों आधुनिक कत्लखाने खुल गये हैं।

They are not created by God or Brahma, Supreme Soul or Gods and Goddesses. The natural disasters that occur are God caused and due to fate. The birth of a soul in animals, birds, etc., or in a poor or rich family, is the result of one's deeds done in the past. We can definitely call it luck. To get relief from poverty, disease, pain etc., proper emotions and special efforts are required. Therefore, if spirituality, theology, jurisprudence, psychology, sociology, political science, economics, theory and labor science are linked with economics, then accumulation of wealth can become the cause of happiness, peace and prosperity.

Propounding the theory and discussing it is easy, but following the theory is difficult. Happiness, peace, prosperity and rights cannot be achieved without following the principles and scriptures. Human rights principles are meant to be followed according to scriptures. A religious and spiritual person follows the principles of scriptures. If he adopts politics, he establishes intimacy and sweetness among the people. If politics, economics and social policy are propounded without religion and spirituality, then it is inappropriate, it is the cause of destruction, it deserves to be thrown in the wastebasket because without religion and spirituality, truth cannot be seen. Wealth stored and politics conducted without truth produces injustice.

Current economists say that greed, selfishness, competition, deceit and fraud are the reasons for economic development. The principle of present day economists is to increase selfishness, arouse greed, competition and economic development. For this they do not look towards proper means. They do not hesitate at all in pursuing economic development by adopting violent means such as slaughterhouses, poultry farming, fish farming and meat export. This is the reason why India, which is dominated by agriculture and sagest , today rearing of chicken, fish and is taking place and hundreds of modern slaughter houses have opened for meat export

आज एक दिन में हजारों पशु एक कत्लखाने में काटे जाते हैं। ऐसा करने से पशु–पक्षियों और प्रकृति के मूल अधिकार छिन जाते हैं। वर्तमान में अर्थिक विकास की सोच में व्यक्ति अध्यात्मवादी न होकर अर्थवादी हो गया है।

अर्थवादी व्यक्ति संवेदनहीनता की ओर चला जाता है। यही कारण है कि व्यक्ति धन के लिए हत्या करने के लिए भी उतारू हो जाता है, बच्चों का अपहरण करता है और फिरौती में धन लेता है। व्यक्ति तानशाही हो जाता है अधिक धन और अन्याय का धन व्यक्ति को विलासता की ओर ले जाता है। विलासता आदमी को गुलाम बनाती है। जितना–जितना आर्थिक विकास होता है, उसकी रक्षा में व्यक्ति उतना–उतना चिंन्तित और परतंत्र होता चला जाता है। उसकी नींद गायब हो जाती है। तनाव अशांति और ह्रदय गति बढ़ती चली जाती है। वह धन को मरते दम तक नहीं छोडना चाहता। शराबी के समान उसे धन का नशा चढ़ जाता है। लेकिन जैन धर्म का सिंद्धात है कि सामाजिक जीवन जीने वाले ग्रहस्थ को धनार्जन करना बुरा नहीं है। परंतु न्यायनीति पूर्वक आवश्यकता की पूर्ति हेतु धनार्जन जरूर करना चाहिए। इसके लिए अर्थ पुरूषार्थ की बात जैन दर्शन में कही है।

प्रत्येक ग्रहस्थ परिग्रह प्रमाण करें। जितना–जितना परिग्रह प्रमाण होगा उतनी–उतनी पराधीनता कम होगी और स्वाधीनता का विकास उतना–उतना होता चला जाएगा। परिग्रह प्रमाण को इच्छा प्रमाण भी कहते हैं। आवश्यकता की पूर्ति के भाव को इच्छा कहते है। आवश्यकताओं की इच्छा पूर्ति की जा सकती है। लेकिन इच्छा की पूर्ति नहीं की जा सकती क्योंकि इच्छाएँ आकाश के समान अनंत होती हैं। पेट तो रोटी और पानी माँगता है। रोटी और पानी भूख और प्यास मिटाने के लिए आवश्यक है। जिस के बिना जीवन न चले और उस माँग को पूर्ण किया जा सके उसे आवश्यकता कहते हैं। जैन सिद्धांत में इच्छा निरोध को तप कहा है। इच्छा निरोध करने वाला इच्छा परिमाण व्रत लेता है, लेकिन आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, रीति–रिवाज, और परिस्थिति जन्य आवश्यकता अलग–अलग होती है।

Today thousands of animals are slaughtered in a slaughterhouse every day. By doing this the basic rights of animals, birds and nature are taken away. At present, in thinking about economic development, people have become economists rather than spiritualists.

An economics person goes towards insensitivity. This is why a person is also inclined to kill for money, kidnap children and take money in ransom. A person becomes dictatorial. Excess wealth and unjust wealth leads a person towards luxury. Luxury makes man a slave. The more economic development takes place, the more worried and dependent a person becomes regarding its protection. His sleep disappears. There is tension, restlessness and heart rate increases. He does not want to leave his wealth till his death. Like a drunkard, he becomes intoxicated with money. But the principle of Jainism is that it is not bad for a person living a social life to earn money. But one must earn money judiciously to meet the needs. For this, it is said in Jain philosophy to make money by efforts.

Every household should quantify possiveness/ attachment. The less is the attachment/ possessiveness , the less will be the dependence and the more will be the development of independence. Parigraha Pramaan is also called Ichcha Pramaan (self quantification). The feeling of fulfilling a need is called desire. The needs can be fulfilled. But the desire cannot be fulfilled because desires are as infinite as the sky. The stomach asks for bread and water. Bread and water are necessary to satisfy hunger and thirst. The demand without which life cannot continue and which can be fulfilled is called a necessity. In Jain theory, cessation of desires is called tapas. One who resists desires takes a vow to limit his desires, but fulfills his needs. The requirement of substance, area, time, customs, and circumstances vary.

गरीब व्यक्ति पेट की भूख और जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इसीलिए दिन भर मेहनत करता है और शाम को भोजन करके सुख चैन की नींद सोता है। जबकि धनी आदमी आवश्यकताओं के साथ–साथ विलासताओं की इच्छाओं को पूर्ण करता है इसीलिए बीमार पड़ता है और फोम के बेड पर भी लेट कर सुख की नींद नहीं ले पाता है। जैसे–जैसे लोभ बढ़ता है वैसे–वैसे विलासता बढ़ती चली जाती है। इसी प्रकार जैसे–जैसे राग बढ़ता है वैसे–वैसे लोभ बढ़ता है। लोभ की खाई इतनी गहरी होती है कि कभी भरती नहीं। लोभ इंसान को शैतान बना देता है।

कहा जाता है आवश्यकता आविष्कार की जननी है लेकिन ध्यान रखना 'लोभ–लालच असीम इच्छा दानवता की जननी है'। लोभ को कम किये बिना तनाव, अशांति और रोगों से नहीं बचा जा सकता । जिज्ञासा पूर्ति तो की जा सकती है लेकिन इच्छा पूर्ति नहीं। इच्छाओं की पूर्ति की जगह जैनाचार्यों ने इच्छा परिमाण की बात कही है। इच्छा परिमाण धर्म शास्त्र के सिद्धांतो पर चलने से ही होता है। इच्छा परिमाण करने से सादा जीवन उच्च विचार का सिद्धांत आ जाता है। उच्च विचार का अर्थ सदाचार, न्यायनीति, संतोष, ईमानदारी, निष्कपटता, नैतिकता, परोपकार का भाव पैदा होना। शरीर की मांग और आवश्यकताओं को पूर्ण किया जा सकता है। लेकिन मन की इच्छाओं को पूर्ण नहीं किया जा सकता है। उच्च विचारों के बिना धर्म, समाज, जीवन और अर्थ आदि सभी के मूल्यों का ह्रास होता है। धर्म, नैतिकता और इच्छा परिमाण आर्थिक विकास में बाधक नहीं है बल्कि शोषण अन्याय अनीति बेरोजगारी, पूँजीवाद, अवैध उत्खनन इत्यादि को कम करने में साधक है।

जब खादी की पांच सौ रूपये की पोशाक से काम चल सकता है तो फिर पचास हजार की पोशाक और रत्न जड़ित स्वर्ण भूषण पहनने से क्या फायदा है सादा जीवन उच्च विचार की स्थिति में न खो जाने का, या न चोरी हो जाने का, या न छापा पड़ जाने का डर रहता है। इच्छा परिमाण करने से आर्थिक विषमता, पर्यावरण समस्या, उपभोग की समस्या, गरीबी की समस्या, उत्पादन, शोषण इत्यादि की समस्या समाप्त हो जाती है। इच्छा परिमाण से स्वार्थ भावना की जगह परार्थ और परमार्थ की भावना उत्पन्न हो जाती है।

The poor person fulfills his hunger and the necessities of life. That's why he works hard all day long. And after having dinner in the evening, he sleeps peacefully. Whereas a rich man fulfills the desires of luxuries along with the needs, that is why he falls ill and is unable to sleep comfortably even by lying on a foam bed. As greed increases, luxury also increases. Similarly, as attachment increases, so does greed. The abyss of greed is so deep that it can never be filled. Greed turns a person into a devil.

It is said that necessity is the mother of invention but remember that 'greed and limitless desire is the mother of evil'. Without reducing greed, stress, unrest and diseases cannot be avoided. Curiosity can be fulfilled but desire cannot be fulfilled. Instead of fulfillment of desires, Jainacharyas have talked about limiting of desires. Desire can be fulfilled only by following the principles of religious scriptures. Quantifying desires leads to the principle of simple living and high thinking. High thinking means developing a sense of morality, justice, satisfaction, honesty, sincerity, morality and charity. The demands and needs of the body can be fulfilled. But the desires of the mind cannot be fulfilled. Without high thoughts, the values of religion, society, life and economics etc. all decline. Religion, morality and desire are not hindrances in economic development. Rather, it seeks to reduce exploitation, injustice, injustice, unemployment, capitalism, illegal mining etc.

When a khadi dress worth five hundred rupees can do the job, then what is the use of wearing a dress worth fifty thousand and gold jewelery studded with gems. The whole life is not lost in a state of high thoughts, or it will not be stolen, or there is a fear of raid . By quantifying desires, the problems of economic inequality, environmental problems, consumption problems, poverty problems, production, exploitation etc. are eliminated. Due to the quantification of desire, feelings of altruism and helping others arise in place of selfish feelings.

उद्योग को सृष्टि का पुत्र कहा जा रहा है। जितना उद्योग बढ़ेगा उतनी सम्पन्नता बढ़ेगी। उद्योग के लिए आधुनिक यंत्र की आवश्यकता होती है। उद्योग लगाने के लिए जमीन की आवश्कता होती है। वर्तमान में लोग जमीन बेचकर आधुनिक यंत्र की फैक्ट्री लगाकर उद्योग प्रारंभ कर रहे हैं। पहले भूमि पर अधिकार जमाने की बात होती थी लेकिन अब भूमि पर नए उद्योग और अर्थ पर अधिकार जमाने की बात हो रही है। यह उद्योग एक सीमा तक तो ठीक है, राज्य द्वारा संचालित करना ठीक है लेकिन विदेशी प्राईवेट कम्पनीयों को देना मेरी दृष्टि से अनुचित है। इससे पूँजीवादीकरण पुनः स्थापित होगा। जहाँ–जहाँ जिन देशों में उद्योगवाद को स्वतंत्रता मिली है वहाँ–वहाँ संघर्ष युद्ध और पर्यावरण आदि की अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। यह उद्योगवाद आर्थिक गुलामी का स्वरूप होकर कही पुनः उभर कर न आ जाएँ। औद्योगीकरण ओजोन परत को क्षतिग्रस्त कर रहा हैं। प्रकृति के तापमान में वृद्धि कर रहा है। चारों ओर प्रदूषण फैला रहा है। इसी के साथ रेडियो एक्टिव पदार्थ जैसे यूरेनियम से उत्पन्न परमाणु बम एवं मोबाइल इत्यादि से उत्पन्न रेडियेशन एवं रेडियो एक्टिव तरंगों से उत्पन्न रेडियेशन रोग और मौत का कारण बन रहा है। जो कालांन्तर में जैन धर्म में वर्णित प्रलय का रूप लेकर आ सकता है। आर्थिक विकास और हथियारों के अंधाधुंध विकास से अविकसित देश भयभीत हैं। उससे अविकसित देशों का शोषण हो रहा है और अधिकार छिन रहे हैं। भौगोलिक और राजनैतिक अपहरण हुए बिना मानसिक और आर्थिक गुलाम बन रहे हैं। लोकतांत्रिक अविकसित देशों में द्वंद की स्थिति उत्पन्न हो रही है। भले ही आज ग्लोबल इकोनामी की नीति का निर्धारण किया जा रहा हो।

अर्थशास्त्र, अर्थनीति और आर्थिक विकास की बात जैन साधु कर सकते हैं क्योंकि वे समाज और देश से जुड़े होते हैं। उनका चिंतन अनेकांत की दृष्टि से चारों पुरुषाथों और चारों आश्रमों के लिए होता है। वे धार्मिक और अध्यात्मिक होकर सामाजिक भी होते हैं। स्वार्थी न होकर परार्थी और परमार्थी होते हैं। वे लोक के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं।

Industry is being called the son of creation. The more the industry grows, the more prosperity will increase. Industry requires modern machinery. Land is required to set up an industry. At present people are selling land and starting industries by setting up factories with modern equipment. Earlier there was talk of gaining control over land, but now it is not about land but about gaining control over industry and economy. This industry is fine to some extent, it is fine to be run by the state but giving it to foreign private companies is inappropriate, in my view. This will re-establish capitalism. Wherever in the world those countries where industrialism has been given free licence, many problems like conflict, war and environment etc. have arisen. This industrialism should not re-emerge as a form of economic slavery. Industrialization is damaging the ozone layer, is increasing the temperature in environment . Pollution is spreading all around. Along with this, radiation generated from radioactive substances like nuclear bombs made from uranium, radiation caused by mobile phones etc. and radiation generated from radioactive waves are causing diseases and death. Which in time may bring the form of cataclysm described in Jainism. Underdeveloped countries are afraid of economic development and indiscriminate development of weapons. Due to this, underdeveloped countries are being exploited and their rights are being snatched away. They are becoming economic and psychological slaves without geographical and political kidnapping.

A situation of conflict is arising in democratic underdeveloped countries. Even if today the policy of global economy is being decided.

Jain Sadhus can talk about economics policy, economics and development because they are connected to the society and the country. Their thoughts are for the four aspirants and the four ashrams from the perspective of Anekant. Apart from being religious and spiritual, they are also social. Withou being selfish they are altruists and have in mind welfare of all..

जीव (सोल), पुद्गल (मेटल), धर्म (रिलीजन), अधर्म (घर्षणबल), आकाश (स्काई), एवं काल (टाईम) इन छः द्रव्यों के सम्मिलन से लोक का अस्तित्व है। इनका आपस में एक–दूसरे से घनिष्ट संबंध है। इसीलिए जैन दर्शन में जो भी चिंतन और वस्तु तत्व का कथन है वह अनेकांत और स्यादवाद के सिद्धांत से है। अतः व्यवहारिक दृष्टि से सबका हित हो ऐसा चिंतन प्रत्येक साधु के होता है। जैन आचार्यों का चिंतन लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार का होता है। लौकिक चिंतन समाज उत्थान के लिए होता है और जो वैराग्य का कारण होता है। पारलौकिक चिंतन आत्म उत्थान के लिए होता है और जो मोक्ष का कारण होता है। साधु समाज से जुड़े हैं। इसीलिए वे धर्म शास्त्रों के अलावा अर्थशास्त्र, अर्थ नीति की बात करते हैं परंतु अर्थसंग्रह के चक्कर में नहीं पड़ते हैं। प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ स्वामी ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरूषार्थ का एवं कृषि कैसे करना, हथियार कैसे चलाना, पढ़ाई–लिखाई कैसे करना, धन कैसे कमाना इत्यादि उपदेश दिया है। इसे भी धर्म से जोड़ा है यही जैन धर्म की महानता है।

वैज्ञानिकों ने जो आविष्कार किया है वह सत्य की ओर ले जाता है। वह कसौटी पर कसा होता है भौतिकी होता है, आश्चर्य चकित करने वाला होता है। वह वर्तमान समस्याओं को सुलझाने वाला और भौतिक विकास करने वाला होता है। लेकिन वह त्रिकालिक नहीं तत्कालिक होता है। जैनधर्म के प्रवर्तक तीर्थंकर भगवंतों ने एवं आचार्यों ने जो सिद्धांत दिये और अनुभूति की कसौटी पर कस कर जो आत्म अनवेशषण किया वह वास्तविक त्रिकालिक और सुख, शांति को देने वाला है। विज्ञान के द्वारा प्राप्त किये गये सुख के बाद दुःख आता है लेकिन वीतराग विज्ञान रूपी जैन धर्म के सिद्धांतों पर चलने के उपरांत सुख के बाद दुःख के लिए कोई स्थान नहीं है। जैन धर्म के ग्रंथों में जो सिद्धांत प्रतिपादित किये गये उसमें धर्म और मोक्ष पुरूषार्थ का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया। उसी में अर्थ और काम पुरूषार्थ का सिद्धांत भी प्रतिपादित किया गया है।

They accept the existence of people. The world exists due to the combination of six substances – Jiva (soul), Pudgal (metal), Dharma (ether), Adharma (friction force), Akash (sky), and Kaal (time). They have a close relationship with each other. That is why whatever thinking and object element is said in Jain philosophy is from the principle of Anekant and Syadvada. Therefore, from a practical point of view, every saint thinks that it should be for the benefit of all. The thinking of Jain Acharyas is both worldly and transcendental. Worldly thinking is for the upliftment of society which is the cause of renunciation. Transcendental thinking is for self-upliftment and is the cause of salvation. Sadhus are associated with the society. That is why apart from religious scriptures, they talk about economics and economic policy but do not get into the trap of collecting wealth. The first Tirthankara, Lord Adinath Swami, has preached about Dharma, Artha, Kama and Moksha, efforts and how to do agriculture, how to use weapons, how to study, how to earn money etc. This is also linked to religion, this is the greatness of Jainism.

What scientists have invented leads to the truth. It is tested on physics and is astonishing. Scientists are the ones who solve current problems and bring material development. But it is not permanent but immediate. The principles given by the founders of Jainism, the Tirthankar Bhagwants and the Acharyas and the self-exploration done by testing them on the basis of experience, is the real permanent and give happiness and peace. After the happiness achieved through science comes sorrow, but after following the principles of Jainism like Vitraag Vigyan, there is no place for sorrow after happiness. In the principles propounded in the texts of Jainism, the principle of dharma and salvation was propounded. The principle of artha and kama purushartha has also been propounded in it.

इसीलिए धर्म शास्त्र में अर्थ और काम के सूत्र भी प्रतिपादित किये गये लेकिन अर्थशास्त्र में सिर्फ अर्थसंग्रह के सिद्धांत प्रतिपादित किये गये है। आर्थिक विकास के साथ ही पर्यावरण के संरक्षण का ध्यान रखना आवश्यकता है अन्यथा प्रकृति के विरूद्ध कार्य विनाश की ओर जायेगे।

अर्थशास्त्रीयों ने धर्म और मोक्ष के सिद्धांत प्रतिपादित नहीं किये, न ही वे उसे कर सकते हैं क्योंकि जहाँ–जहाँ अर्थसंग्रह ओर आर्थिक विकास की बात है वहाँ–वहाँ वाद–विवाद, परिग्रह, अधिकार की लड़ाई, आरंम्भ और हिंसा आदि है। इसीलिए कहा जाता है कि अर्थ ही अनर्थ का मूल है। धर्म शास्त्रों में कम आरंभ और कम हिंसा की बात सामाजिक जीवन जीने वाले आवृति मानव के लिए कही गई है। धर्म त्रिकालिक उपयोगी है और अर्थ तात्कालिक उपयोगी है। अर्थशास्त्रीयों का दृष्टिकोण एकान्तवादी होता है, एकांगी दृष्टिकोण समस्याएँ पैदा करता है। जबकि जैन धर्म शास्त्रियों का दृष्टिकोण अनेकांत वादी होता है जो समस्या का समाधान देता है। दृष्टि अपनी–अपनी है अपने से नीचे वाले गरीब और दुखी लोगों की ओर देखोगे तो स्वयं सुखी और अमीर नजर आओगे। जब अपने से ऊपर सुखी और अमीर लोगों की ओर देखोगे तो दुःखी ओर गरीबी का अनुभव करोगे। जो अपने आप में संतुष्ट है वही सुखी और अमीर है। जो अपने आप में असंतुष्ट है वही दुखी और गरीब है। यही गरीब और अमीर की परिभाषा है। जैन संत दूरदर्शन की नहीं, दूरदृष्टि की बात करता हैं जबकि वैज्ञानिक दूरदर्शन की बात करता है और अर्थ शास्त्री स्वार्थ एवं तात्कालिक परिस्थिति की बात करता है। यद्यपि स्वार्थ के बिना न कोई सेवा करता है न सहयोग। न अर्थ देता है न शिक्षा। न लालन–पालन करता है। इसीलिए सारी दुनिया ही स्वार्थी है जिसे यह ज्ञान हो जाता है वह स्वार्थ करने के उपरांत कुछ नहीं पाता है और वैराग्य धारण करके परमार्थ के मार्ग में बढ़ जाता है।

That's why in religion principles of Artha and Kama have also been propounded in the scriptures, but in the Arthashastra only the principles of accumulation of wealth have been propounded. Along with economic development, it is necessary to take care of environmental protection, otherwise actions against nature will lead to destruction.

Economists have not propounded the principles of Dharma and Moksha, nor can they do so because wherever there is a question of accumulation of wealth and economic development, there is debate, rivalry, fight for rights, initiation and violence etc. That is why it is said that wealth is the root of disaster. In the religious scriptures, less evil and less violence has been said for the average human being who lives a social life. Dharma is of permanent use and Artha is of immediate use. The approach of economists is solipsistic, one-sided approach creates problems. Whereas the approach of Jain religious scholars is holistic which gives solution to the problem. The vision is our own, if you look at the poor and unhappy people below you, you yourself will appear happy and rich. When you look at the happy and rich people above you, you will feel sad and poor. The one who is satisfied with himself is happy and rich. The one who is dissatisfied with himself is unhappy and poor. This is the definition of poor and rich. Jain saint talks about foresight, not vision, whereas scientist talks about foresight and economist talks about selfishness and immediate situation. Although no one serves or cooperates without selfishness. Gives neither wealth nor education. Neither nurtures. That is why the whole world is selfish. One who gets this knowledge that one does not get anything being selfish; he follows the path of renunciation and moves on the path of altruism - serve all.

मन का स्वरूप और कार्य

मन एक ऐसा अदृश्य अंतरंग अंग है जो हमेशा इच्छाएँ करता है। मन का भोजन हैं तर्क, वितर्क, इच्छा, कर्त्ता, भोक्ता और स्वामीपन। मैंने ऐसा किया मैंने ऐसा भोगा, मैं इसका स्वामी हूँ। बस इसी में मन संतुष्ट रहता है। जब उस मन के अन्दर कर्त्तापन, भोक्तापन और स्वामीपन आदि आ जाता है तब अहंकार पैदा हो जाता है। अहंकार पैदा होने से उसे ईंधन मिल जाता है। मन का कर्त्तापन, भोक्तापन, स्वामीपन और तर्क वितर्क ये दाल–रोटी, सब्जी आदि भोजन के समान ही भोजन हैं और अहंकार उसका ईंधन है। जब ईंधन नहीं मिलता है तो अग्नि बुझ जाती है इसीलिए अहंकार को कम करना चाहिए। अहंकार सबसे ज्यादा मन की उपज है, इन्द्रियाँ अहंकार नहीं करती, अहंकार मन करता है अहंकार को पैदा करने वाला मन है उस मन को मारो। मन को मारने मतलब हत्या करना नहीं बल्कि जीतना है।

ये मन ही तृष्णा पैदा करता है कबीर दास जी ने दोहा लिखा है–

मन मरा, माया मरी, मर–मर गया शरीर।
तो भी तृष्णा न मिटी, कह गये दास कबीर।।

ये तृष्णा बहुत भयंकर है आदमी के लिए, डसती रहती है। जब मन मर जाता है तो तृष्णा भी घट जाती है। जब तृष्णा घटती है और मन मरता है तो आत्मा और शरीर से पृथक अनुभूति करने लगते हैं। शरीर से और बाह्य वस्तुओं से मन का संबंध टूट जाता है। जिस समय हम अपने मन को जीतते हैं तब ये मन रुकता ही नहीं है उसके अन्दर कुछ न कुछ चलता ही रहता है। इसीलिए मन मारने का मतलब मन को जीतकर अच्छे कार्य में लगाना है। मन को कोई बांध नहीं सकता है मात्र परिवर्तित कर सकता है। मन हमेशा बंदर की तरह उछल–कूद करता है। अतः उसे पेड़ पर चढ़ा दो वह एक डाल से दूसरी डाल पर उछल–कूद करेगा। गुणभद्र आचार्य महाराज ने आत्मानुशासन में कहा है कि मन का विषय बदलते रहो। जब हम ध्यान करने बैठते हैं तो मन भागता है तुम देख लेना मन जरुर भागेगा। आपसे कहो सामायिक करने बैठो जाप करने बैठो आपके हाथ में माला होगी णमों अरिहंताणं मुख में होगा और मन घर में होगा। मन दुनिया के विचार उसी समय करेगा या फिर नींद आ जाएगी दो में एक कुछ करता है मन।

Nature and Function of Mun (Mind) - Mun is Not Brain

The mind (mun) is an invisible inner organ which always desires. The food of the mind is logic, debate, desire, doer, enjoyer and ownership. I did this, I experienced this, I am the owner of this. The mind (mun) remains satisfied with just this. When doership, enjoyership and ownership etc. come into that mind, then ego is born. The birth of ego provides fuel to it. The mind's doership, enjoyer, ownership and argumentation are food just like pulses, bread, vegetables etc. and ego is its fuel. When fuel is not available the fire goes out, that is why ego should be reduced. Ego is most likely a product of the mind (mun), the senses do not create ego, it is the mind (mun) that creates ego, kill that mind (mun). To kill (mun) the mind does not mean to kill but to conquer.

It is the mind that creates cravings. Kabir Das ji has written a couplet :

"Mun mara, maya mari, mar mar gaya sharir
Tow bhi trishna na miti, keh gaye das Kabir"
The mind (mun) is dead, Maya is dead, the body is dead.
Even then the thirst is not quenched, said Das Kabir. ,

This craving is very terrible for man, it keeps biting. When the mind dies, the craving also decreases. When cravings decrease and the mind dies, we start feeling separate from the soul and body. The mind's connection with the body and external objects is severed. When we conquer our mind, then this mind does not stop, something or the other keeps going on inside it. That is why to kill the mind means to conquer the mind and use it in good work. No one can bind the mind, only he can change it. The mind is always jumping like a monkey. So put him on a tree and he will jump from one branch to another. Gunbhadra Acharya Maharaj has said in self-discipline that keep changing the subject of mind. When we sit to meditate, the mind runs away, you see, the mind will definitely run away. Tell you, sit to do Samayik, sit to chant, you will have a rosary in your hand, Namo Arihantanam will be in your mouth and your mind will be in the house. The mind will think about the world at the same time or else it will fall asleep. The mind does something either of the two.

यदि घर गृहस्थी के चक्कर नहीं आएँगे मन उछल–कूद नहीं करेगा तो मन मर जाएगा और फिर नींद आ जाएगी। मन में विकल्प जाल पैदा होने का अर्थ ही मन जीवित है। जिस समय विकल्प जाल समाप्त हो गए तो समझना मन मर गया। आप विचार करना ये मन कितना विकल्प जाल पैदा करता है सुबह से शाम तक यही करता है इसके अलावा कुछ करता ही नहीं है तो मन के विकल्प जाल दूर करना जिससे नींद आ जाएगी और जब व्यक्ति पुस्तक या पेपर पढ़ने लगता है तो उसका मन दुनिया की उलझनें से बच जाता है और उसको नींद आ जाती है। यहाँ प्रवचन सुनने के लिए आप बैठे है आप लोगों को नींद बड़ी जल्दी आ जाएगी क्योंकि प्रवचन सुनते–सुनते निर्विकल्पता आ गयी। निर्विकल्पता जहाँ आती है वहाँ या तो नींद आती है या आत्मा में लीनता आती है। यदि उस समय परमात्मा की बात आती है तो कुछ नहीं। जिसको नींद आती है वह तो सो जाता है और जिसको निर्विकल्पता आती है वह आत्मा में सो जाता है। ऐसे व्यक्ति का कल्याण हो जाता हैं। इसीलिए ऐसे ही आप लोग मन को जीतो। जब–जब कोई ध्यान, सामायिक, मंत्र जाप में बैठते हैं तो मन उल्टे–सीधे विचार करता है। तो उस समय आप इतना करना जैसे एक किसान अपने खेत में फसल बोने जाता है तो वह पहले पूरे खेत में हल चलाकर पूरी घास को अलग करता है फिर बीज बोता है। जब बीज बोता है तब बीज के उगने के साथ घास फूँस उग कर आ जाती है तो उस समय खुरपी (घास निकालने के यंत्र) से एक–एक घास को फसल को बचाते हुए उखाड़ लेते हैं और उस घास को पानी से धोकर गाय, भैंस को खिला देते हैं। जिसे उनका भी पेट भर गया और हिंसा का दोष बहुत कम लगता है। उस समय हिंसा की बात न होकर घास को उखाड़ कर परोपकार में लगाने की बात होती है। उसी तरह ध्यान में बैठे व्यक्ति के मन में भी राग, द्वेष, मोह, ईर्ष्या इत्यादि विकल्प जाल की घास पैदा हो जाती है अतः उस समय किसान की तरह मन में उत्पन्न घास की गुड़ाई–निदाई करनी चाहिए। निदाई का अर्थ उसमें से घास निकालने और गुड़ाई का अर्थ आजू–बाजू की मिट्टी को पेड़ पर या फसल पर चढ़ा देना। बस यहीं ध्यान में किया जाता है। ध्यान करने वाला किसान की तरह होता है। ये आत्मा की खेती करता है और आत्मा की खेती करने के लिए जब बैठता है तो बैठा हो ध्यान में विकल्प जाल की खर–पतवार उग आती है उस समय ध्यान करने वाला स्वयं के मन समझाता है तू ऐसा मत कर।

If the mind will not wander about the household issues, the mind will die and then sleep will come. The creation of a web of options in the mind means that the mind is alive. The moment the network of options ended, the mind died of understanding. Just think how much web of choices this mind creates. He does this from morning to evening and apart from this he does nothing else, so remove the trap of choices from the mind which will bring sleep and when a person starts reading a book or paper, his mind gets saved from the complications of the world and he gets sleep. You are sitting here to listen to the sermon. You will fall asleep very quickly because while listening to the sermon, you have become free from choice. Where there is freedom of choice there comes either sleep or there is absorption in the soul. If at that time the question of God comes, it is nothing. The one who feels sleepy goes to sleep and the one who has choicelessness goes to sleep in the soul. Such a person is benefitted.. That's why you people win the mind like this. Whenever we sit for meditation, meditation or chanting mantras, our mind thinks so many things here and there. So at that time all you have to do is like when a farmer goes to sow a crop in his field, he first ploughs the entire field and separates all the grass and then sows the seeds. When one sows the seed, the grass grows along with the growth of the seed, then at that time each and every grass is uprooted with the help of a khurpi (grass removal device) to save the crop and after washing that grass with water, it is fed to the cows and buffaloes. Let's feed. Which also satisfies the cows and they feel very little guilty of violence. At that time, there is no talk of violence but of uprooting the grass and using it for charity. In the same way, in the mind of a person sitting in meditation, the grass of substitute trap like attachment, hatred, attachment, jealousy etc. arise, hence at that time, like a farmer, the grass generated in the mind should be weeded. The meaning of weeding is to remove grass from it and the meaning of hoeing is to raise the surrounding soil on a tree or crop. Only this is done in meditation. A person who meditates is like a farmer. It cultivates the soul and to cultivate the soul, when one sits in meditation, the weeds of the trap of choice grow, at that time the meditator tells himself in his mind, don't do this.

फिर वह ध्यान को लेकर जाएगा परमात्मा की ओर, प्रतिमा की ओर, तीर्थयात्रा की ओर क्योंकि ध्यान में बुरे विचारो को नहीं करना है और मन को जीतना होता है। अपने उपयोग को ध्यान में स्थिर किया जाता है। मन कहीं न कहीं जाएगा, मन रुकता नहीं। मन में कुछ न कुछ विचार आएँगें और वे विचार अच्छे और बुरे दोनों आएँगे। बुरे विचार हमारे लिए संसार की भटकन बढ़ाते हैं और अच्छे विचार हमें मुक्ति की ओर सुख–शांति की ओर ले जाते है। मन में अच्छे विचार लाने के लिए उपाय बताए जाते है कि ध्यान में मन को स्वयं को द्वारा संबोधित किया जाता है। हे मन तू बार–बार खाने की ओर मत जा, तू विषयों की ओर मत जा, तू क्यों बार–बार जा रहा है, हे मन णमोकार मंत्र पढ़ पाँच मिनट की तो बात है। मन को सम्बोधित करिए। रे मन तू वहाँ मत जा। मन की एकाग्रता इच्छाओं का निरोध है। मन की एकाग्रता तप है। इससे कर्म जलते हैं इससे भला होता है। हे आत्मन ऐसा विचार करना है फिर मन को भगवान के आकार की ओर अरिहन्त परमेष्ठी की ओर ले जाओ। णमो सिद्धाणं कहते ही सिद्ध परमेष्ठी की ओर ले जाओ। णमो आयरियाणं कहते ही आचार्य परमेष्ठी, मुनि संघ की ओर ले जाओ। ऐसा बार– बार करने से मन स्थिर हो जाएगा। तब तेतुल मच्छ मन को स्थिर करके जाप किया जाता है। मंत्र जाप उगंली का सहारा लेकर या माला का सहारा लेकर इसीलिए किया जाता है क्योंकि जहाँ हमारा मन भटकने लगे। वहाँ जाप रोककर मन को संबोधित कर उसे स्थिर कर सकें। एक बार गुरु और शिष्य दोनों जा रहे थे। चलते–चलते रास्ते में गुरु जी ने शिष्य से कहा कि तू क्यों नहीं चल पा रहा है। तो शिष्य कहता है मेरे पैर के जूते में कुछ है। उसने जूता उतार कर देखा तो उसमें कंकड़ था। दूसरा शिष्य उसने जूता नहीं पहना था पर उसके पैर में एक छोटा सा काँच का टुकड़ा घुस गया था। जब वो निकाला तब चलते बना। इसका मतलब ये है कि–

यदि तन में थोड़ी सी फाँस है या छोटा सा कंकड़ तो आपकी यात्रा सफल नहीं हो पाती है। मन वहीं– वहीं जाता है। इसी प्रकार ध्यान करने वाले के मन में यदि थोड़ा सा भी विकल्प है तो ध्यान नहीं कर पाता है, इसीलिए आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने समयसार की गाथा 201 में लिखा है–

परमाणुमित्तयं पि हु रागा दीणं तु विज्ज जस्स।
णवि सो जाणदि अप्पा णयं तु सव्वागम धरो वि ।।

Then with meditation one will go towards God, towards the idol, towards pilgrimage because in meditation one should not have bad thoughts and the mind has to be conquered. Its use is stabilized in meditation. The mind will go somewhere, the mind will not stop. Some thoughts will come to the mind and those thoughts will be both good and bad. Thoughts increase the wandering of the world for us and good thoughts take us to freedom, happiness and peace. Ways to bring good thoughts into the mind are suggested that in meditation the mind is addressed by the self. O mind, don't go towards food again and again, don't go towards things, why are you going again and again, O mind, it is just a matter of five minutes to recite the Namokar mantra. Address the mind. Oh mind, don't go there. Concentration of mind is the cessation of desires. Concentration of mind is penance. This burns the karma and does good. O Atman, think like this and then take the mind towards the form of God, towards Arihant Parameshthi. As soon as you say Namo Siddhaanam, take you towards Siddha Parmeshthi. As soon as you say Namo Aayirayanam, take Acharya Parmeshthi to the Muni Sangha. By doing this again and again the mind will become stable. Then after steadying the Tetul Machh mind, Mantra chanting is done.. Mantra chanting is done with the help of fingers or with the help of rosary because if our mind starts wandering, mantra chanting should be stopped, one can address the mind and stabilize it. A Story. Once both the teacher and the disciple were going. While walking, Guru ji asked the disciple why are you not able to walk. So the disciple says, there is something in the shoe of my foot. He took off the shoe and saw that there was a pebble in it. The second disciple was not wearing shoes but a small piece of glass had entered his foot. When he took it out, he started walking. This means that-

If there is a small stone or a small pebble in your body then your journey is not successful. The mind goes there and there. Similarly, if a person meditating has even a little option in his mind then he is not able to meditate, that is why Acharya Kundakunda Swami has written in Samaysaar's Gatha 201 -

"Parmanumittayam pi hu raga dinam tu vijj jass.
Navi so jandi raha appa nayam tu savvagam dharo vi"

जिसके मन में रागादि लेश मात्र भी विद्यमान है तो वह जीव सर्वशास्त्रों का ज्ञाता होने पर भी आत्मा को नहीं जानता, वह पर द्रव्य के वास्तविक स्वरुप को भी नहीं जानता, वह मिथ्या दृष्टि है। मन सबसे ज्यादा पाप करता है इन्द्रियाँ उससे कम पाप करती हैं। मन के कारण ही तो वह तंदुलमच्छ सात वे नरक में गया था। तंदुलमच्छ का नाम तो आपने सुना ही होगा। हमारे जैन दर्शन में बताया है शंभु रमण समुद्र में एक महामच्छ होता है। एक हजार योजन की जिसकी काया होती है। उस मच्छ की काया में चावल के बराबर कान में तंदुलमच्छ रहता है। जब महामच्छ सो जाता है तब तंदुल मच्छ देखता है कि महामच्छ के मुख में मछली आ रही है जा रही है, लेकिन यह महामच्छ कितना मूर्ख है मछलियाँ नहीं खा रहा। मैं होता तो एक भी नहीं छोड़ता। सब खा जाता। मन में ये विकल्प आने से वह सातवें नरक में गया। ये मन भोग नहीं पाता है पंरन्तु वह मन बार–बार वहीं जा रहा है। तो इस मन को रोकना है मन को उर्ध्वगामी बनाना है जैसे नदी को पानी को कोई रोक नहीं पाता है। पानी नदी में बह रहा है और यदि बहते हुए पानी को रोकना है। तो बांध बना देना चाहिए पानी आता गया। भरता गया, पानी रूका क्या, नहीं बल्कि अधोगामी से उर्ध्वगामी बना दिया उस पानी को। वह उर्ध्वगामी बनता–बनता ओवर फ्लो हो जाएगा। बाहर जाएगा, उसको कोई नहीं रोक सकता। बस इसी प्रकार हमें मन को बांधना है तो संकल्प रूपी बांध से बांधा जाता है। इसीलिए सबसे पहले नियम (संकल्प) दिया जाता है पाँच पापों के त्याग का जिसका संकल्प रूपी बांध जितना मजबूत होगा उतना ही ज्यादा गुण और ज्ञान रूपी समुद्र भर जाएगा। जिसका जितना मन कमजोर होगा उसका संकल्प रुपी बांध टूट जाएगा। बांध टूटने पर सब कुछ बहा कर ले जाएगा। यही वजह है कि जब दीक्षा होती है तो पूछते हैं तुम्हारा मन मजबूत है, तो संकल्प मजबूत है। बोलो मन से, वचन से, काय से पाँच पापों का त्याग करता हूँ। उसका संकल्प रूपी बांध मजबूत हो गया। संकल्प रूपी बांध जिसका नहीं टूटा है वही परमात्मा से मिलन करता है। उसका ज्ञान और ध्यान इतना बढ़ जाता है कि भगवान उसके ह्रदय में उतर जाते हैं अथवा ऐसा मानो कि भगवान ही उसके अन्दर प्रगट हो जाते हैं। चातक की तरह संकल्प केवल दिगम्बर मुनियों के पास होता है। जो संयम रूपी बाँध बांध लेता है उसकी चेतना अधोगामी न होकर उर्ध्वगामी होती है। उसकी चेतना ऊपर की और जाती है।

In whose mind even a trace of attachment is present, that person, despite being knowledgeable about all the scriptures, does not know the soul, he does not even know the real nature of matter, that is a false vision. The mind commits the most sins and the senses commit the least sins. It was because of his mind that Tandulmachha had gone to hell. You must have heard the name of Tandulmachh. It is said in our Jain philosophy, In the sea called Shambhu Raman, there is a great crocodile whose body is of a thousand yojanas. In the body of that crocodile , there is a tandulmuchh in its ears equal to the size of rice. When the great crocodile sleeps, the tandulmuchh sees that fish are coming and going from the great crocodile's mouth, but this great crocodile is so foolish that it is not eating the fishes. Had it been me, I would not have spared even one, would have eaten all. With this option in his mind, he went to the seventh hell. This mind is not able to enjoy but that mind is going there again and again. So this mind has to be stopped, the mind has to be made upward, just like no one can stop the water in a river. Water is flowing in the river and if the flowing water has to be stopped. So a dam should be built and water kept coming. It kept filling, the water did not stop, rather it changed the water from downwards to upward. It will overflow as it moves upwards. Will go out, no one can stop it. Just like this, if we have to bind our mind then it is tied with a dam in the form of resolution. That is why the first rule (resolution) is given to renounce five sins, the stronger the dam of resolution, the more will be filled with the ocean of virtues and knowledge. The weaker the mind, the dam of his resolve will break. If the dam breaks, everything will be swept away. This is the reason why when initiation takes place they ask if your mind is strong, then your resolve is strong. Say, I renounce five sins through my mind, words and actions. The dam of his resolve became stronger. Only the one whose dam of resolution is not broken meets God. His knowledge and meditation increases so much that God descends into his heart or it is as if God himself appears within him. Only Digambara monks have resolution like Chaatak. The one who binds the dam of restraint, his consciousness is not downward but upward. His consciousness goes upward.

मन को नियंत्रित करने के कुछ अनुभूत प्रयोग कर के देखना तो मन की चंचलता पर लगाम लग सकती है। जीभ को लौटकर तालु से सटा ले तो विकल्प जाल कम होते हैं।

ठोडी को कंण्ठ पर पांच मिनट तक टिकाकर निराकार परमात्मा को निहारो फिर उसी का ध्यान करो विकल्प आना रूक जाता है। आती–जाती श्वास को देखो। णमोकार मंत्र से श्वास–निश्वास को जोड़ दो। मन स्थिर हो जाएगा।

जिस समय पिता का देहांत हो जाता उस समय बेटे का मुण्डन होता हैं। पगड़ी रस्म करते है। इसीलिए कि तुम्हारा मन चंचल था तुम्हें संभालने वाला अभी तक पिता था। अब तुम्हारे सर पर पगड़ी है अब तुम जिम्मेदार हो गये हो। अब तुम्हें इन्द्रियों का मुण्डन करना होगा, मन का मुण्डन करना होगा। अब तुम्हारे पास जवाबदारी आ गई है। अब तुम्हें अपने पिता की तरह सारा कार्य भार संभालना होगा। इसी प्रकार मुनि भी अपने सिर का मुण्डन करा लेते हैं कि मैं कोई बच्चा नहीं हूँ बचपन में मुनि तो बना जा सकता है लेकिन मुनि बनने के बाद बचपन चल सकता क्योंकि सिर का मुण्डन करवाया जाता है।

पंचवि इंदियमुंडा वच मुडां हत्थपाय मण मुंडा।
तण मुंडेण वि सहिया दस मुंडा वण्णिया समये।।

अर्थात्– पाँच इन्द्रिय संबन्धि 5 मुण्डन, 6वॉ तन मुण्डन, 7वाँ मन मुण्डन, 8वाँ वचन मुण्डन, 9वाँ हाथ पैरों का मुण्डन, 10वाँ सिर का मुण्डन। इस प्रकार आगम में 10 प्रकार का मुण्डन कहा है उसमें सिर का मुण्डन अंत में कहा हैं।

सिर को मुड़ा लेने से, अथवा केशलोंच करने से कोई पण्डित–ज्ञानी साधु संत नहीं हो जाता है। दिगम्बर साधु पांचो इन्द्रियों का मुंडन करते हैं। इन्द्रियों के विषयों से विरक्त हो जाना ही इंद्रियों का मुंडन हैं। अप्रासंगिक प्रलाप रूप वचन का रोकना खण्डन करना वचन मुण्डन है। अप्रशस्त रूप से हाथ पैरों का फेलाना सिकोडना हस्त पाद मुण्डन है। तथा मन को अप्रशस्त चिंतन से रोकना मन मुण्डन है। ऐसे ही शरीर मुण्डन है।

By trying some experiments to control the mind, the restlessness of the mind can be controlled. If the tongue is brought back and close to the palate, the options are reduced.

Rest your chin on your throat for five minutes and imagine to look at the formless God, then meditate on Him and the options will stop coming. Look at the breath coming and going, connect inhalation and exhalation with Namokar mantra, the mind will become stable.

The son is tonsured at the time of his father's death. The turban ritual is performed (this ritual in presence of society by the family is to proclaim that eldest son is now the head of the family and they should accept him as such). Your mind was restless so far and your father was still the one to take care of you. Now you have a turban on your head, now you have become responsible. Now you will have to shave your senses, you will have to shave your mind. Now you have the responsibility. Now you will have to handle all the work like your father. Similarly, sages also get their heads shaved saying that I am not a child. One can become a sage in childhood but after becoming a sage, childhood can not go on because the head is shaved.

"Panchavi Indiyamunda Vach Munda Hathapaya Man Munda. Tan Munden V Sahiya Das Munda Vanniya Samaye".

That is, 5 shavings of the five senses, 6th shaving is of the body, 7th shaving is of the mind, 8th shaving is of speech, 9th shaving is of hands and feet, 10th shaving is of the head. In this way, 10 types of tonsure are mentioned in the Agama, in which the tonsure of the head is mentioned at the end.

By lowering one's head or tonsuring one's hair one does not become a wise man or a saint. Digambara sadhus tonsure all five senses. To become detached from the objects of the senses is the shaving of the senses. Stopping words in the form of irrelevant babble, refuting words is shaving of speech. Unpleasantly spreading the hands and legs and shrinking them is shaving the hands and feet. And to stop the mind from unpleasant thoughts is to shave the mind. This is how the body is shaved.

मनुष्य जन्म को पाकर तत्व दृष्टि बनाकर स्व और पर के लिए पुरुषार्थ शील बनना चाहिए। स्वयं के कल्याण और दूसरों के कल्याण के लिए उद्दमी और कर्तव्यनिष्ठ बनना चाहिए। सात तत्वों में मूल तत्व जीव तत्व है। बाकी सब तत्व जीव तत्व से जुड़े हुए है। आत्मा की ओर दृष्टि करने वाला अपना उपकार अर्थात अपना कल्याण कर सकता है। जो शरीर की ओर जा रहा है वह कभी किसी का उपकार नहीं कर सकता क्योंकि जब शरीर का उपकार करने जाते हैं तब आत्मा का अपकार जाता है और जब आत्मा का उपकार करने जाते हैं तब शरीर का अपकार को जाता है। ये बात इष्टोपदेश में आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने लिखी हैः–

यज्जीवस्योपकाराय, तद्देहस्यापकारकम।
तद्देहस्योपकाराय तज्जीवस्यापकारम।।

जो तपश्चरणादि जीव के संवर निर्जरा रूप उपकार में कारण है, वही देह का अपकारक है। तथा जो विषयादि देह के पोषण आदि रुप उपकार के लिए है वही जीव का अपकारक अर्थात पाप का संचय करता है।

जब आत्मा के कल्याण के लिए व्रत, उपवास करते है तब शरीर दुबला पतला हो जाता है। जब शरीर को पौष्टिक भोजन दिया जाता है तब शरीर की इन्द्रियाँ उत्तेजित होती है, वासना और कषाय से मन में तीव्र भावना पैदा होने से बलात्कार आदि पाप करने पर आदमी उतारु हो जाता है जिससे जीव का अपकार हो जाता है।

जहाँ इच्छाएँ हैं वहाँ तप नहीं है, ये मानव पर्याय शरीर को पुष्ट करने के लिए नहीं आत्मा को पुष्ट करने के लिए है। लेकिन ये अज्ञानी प्राणी शरीर को ही पुष्ट करने में लगे हैं। संत संगति में संतोष आ जाना चाहिए और संत संगति का फल ज्ञान में वृद्धि होना है। उपकार आत्मा का करो और शरीर को पुष्ट, संतुष्ट और श्रृंगारित उतना ही करो जितना करने से शरीर और आत्मा दोनों का हित हो।

शरीर का स्वभाव नाशवान है, कोई भी इसे बचा नहीं सकता है। इसीलिए शरीर के माध्यम से आत्मा का उपकार कर लेना चाहिए अपने उपकार के लिए त्याग, तपस्या, व्रत, नियम, संयम आदि करना चाहिए और पर के उपकार में वैयावृत्ति, दान आदि करना चाहिए। शरीर को सूट–बूट पहन कर अच्छा मस्त मत बनाओं यदि शरीर को मस्त बनाओगे तो शरीर की चमक तो दिखेगी लेकिन आत्मा मलिन हो जायगी। जब–जब शरीर चमकदार बनता है, तब–तब आत्मा मलिन होती है।

After being born as a human being, one should develop the vision of the elements and make efforts for self and others. Entrepreneurship for one's own welfare and the welfare of others and one should be dutiful. The basic element among the seven elements is life element. All other elements are connected to the living element. One who looks towards the soul can do his own good i.e. his own welfare. One who is going towards the body can never do any good to anyone because when he goes to do good to the body, the soul gets harmed and when he goes to do good to the soul, then the body gets harmed. Acharya Pujyapad Swami has written this in Ishtopadesh:-

"Yajjivasyopakaraya, taddehasyapakarakam.
Taddehasyopakaraya tajjivasyapakaram".

The one who is responsible for the benefit of the living being in penance and in a waterless form is the one who is harmful for the body. And the things which are beneficial for the body in the form of nourishment etc., are harmful for the soul i.e. it accumulates sins.

When one fasts for the welfare of the soul, the body becomes thin. When nutritious food is given to the body, the senses of the body get stimulated, due to strong emotions arising in the mind due to lust and bitterness, the person becomes inclined to commit sins like rape etc., which causes harm to the living being.

Where there are desires there is no penance, this human equivalent is not for strengthening the body but for strengthening the soul. But these ignorant beings are engaged in strengthening the body only. There should be satisfaction in the association of saints and the result of association with saints is increase in knowledge. Do a favour to the soul and strengthen, satisfy and beautify the body only as much as it is beneficial for both body and soul.

The nature of the body is perishable, no one can save it. That is why one should do good to the soul through the body. For one's own good, one should do sacrifice, penance, fasting, rules, restraint etc. and to do good to others, one should do charity, give to needy etc. Do not make your body look good by wearing suits and boots. If you make your body look good then the shine of the body will be visible but the soul will become dirty. Whenever the body becomes shiny, then the soul becomes dirty.

जब तुम दर्पण के सामने जाते हो और अपने शरीर को निहारते हो तो राग पैदा होता है राग आग पैदा करता है और आग आत्मा का दहन करती है। इसीलिए कम से कम मंदिर जाते समय तो शरीर को मत चमका कर जाओ।

इस संसार का सार है ''स्व और पर का उपकार''। मनुष्य जन्म इसीलिए मिला है कि स्व और पर के उपकार के लिए सदा उद्यत बने रहे आचार्य उमास्वामी ने एक बात कही है **''परस्परोपग्रहोजीवानाम्''** परस्पर एक–दूसरे पर उपकार करो। जीव–जीव का उपकारी होता है जीव–जीव का कभी शत्रु हो ही नहीं सकता है शत्रु तो राग, द्वेष, मोह, ईर्ष्या है। आत्मा–आत्मा का तो उपकारी होता है। ज्ञान–ज्ञान का उपकारी होता है। जब ज्ञान के साथ राग, द्वेष, मोह मिल जाते हैं तो आत्मा का अपकार होने लगता है। जितने भी संसार में तत्व हैं वे सब उपकारी हैं। संसार में तत्व दृष्टि रखने वाले ज्ञानी कहलाते हैं।

धर्म, अधर्म, आकाश, काल और पुद्गल ये पांच अजीव द्रव्य है, ये उपकार करते है तो फिर हम जीव होकर अपकार क्यों करें अपकार मन करवाता है बार–बार मन राग, द्वेष, मोह पैदा करता है कई इच्छाएँ पैदा करता है। मन को जीतो। मन को जीतना सबसे बड़ा धर्म है। वासना पैदा होती है मन से। उदाहरण के लिए जैसे आपके सामने चार नारियाँ हैं बहन, बेटी, माँ और पत्नी। चारों में से कोई भी परायी नारी नहीं है। अब आपने बेटी को देखा वह अर्द्ध नग्न अवस्था में स्नान कर रही थी तब आपने अपने मन को समझा लिया कि ये मेरी बेटी है। बहन को स्नान करते देखा फिर मन को समझा लिया। माँ को देखा वहाँ मन को समझा लिया और किसी प्रकार का विकार भाव नहीं किया लेकिन पत्नी या परायी नारी को स्नान करते हुए देखा और उसे घूरने लगे उस समय आप अपने मन को समझा नहीं पाए और उसे छेड़ने लगे हो।

इसका मतलब ये है कि जैसे आपने तीन जगह मन को समझा दिया उसी तरह चौथी जगह भी मन को समझा देते तो कल्याण हो जाता ब्रह्मचारी कहलाने लगते हैं। वासना मन और स्पर्श इन्द्रिय की आग है। इस पर विचार ये मन को समझा लो तत्व दृष्टि आ जायेगी और इससे आत्मा की ओर दृष्टि आ जायेगी, बस कल्याण हो जाएगा। अहिंसा धर्म का पालन करना, मन को जीतना, इच्छाओं को जीतना इसका नाम ही तप है। इसको करोगें तो अपना भी उपकार होगा और सामने वाले का भी उपकार होगा।

When you are in front of the mirror you go and look at your body, passion arises, passion creates fire and fire burns the soul. That's why at least while going to the temple, do not shine your body.

The essence of this world is "goodness to self and others".We are born as humans to be ready to serve others as well as self.Acharya Umaswami has said one thing - "Parasparopgrahojivanam", do good to each other. Every living is the benefactor of every other living being, any living being can never be an enemy of other living being, the enemy is attachment, hatred, attachment and jealousy. The soul is the benefactor of the soul. Knowledge is helpful to Knowledge . When attachment, hatred and attachment mix with knowledge, the soul begins to be harmed. All the elements in the world are beneficial. Those who have insight into the world are called wise.

Dharma, Adharma, Aakash, Kaal and Pudgal are the five inanimate substances, they do good, then why should we, being a living being, do harm ? The mind makes us do good again and again. The mind creates attachment, hatred, attachment and creates many desires. Conquer the mind. Conquering the mind is the greatest religion. Lust arises in the mind. For example, there are four women in front of you: sister, daughter, mother and wife. None of the four is a woman from outside. Now you see your daughter taking bath in a semi-nude state, then you convinced your mind that she is your daughter. Saw my sister taking bath and then made up my mind. When you saw your mother, you convinced your mind there and did not have any kind of bad feeling, but when you saw your wife or someone else's woman taking bath and started staring at her, at that time you were not able to convince your mind and started teasing her.

This means that just as you have explained the mind at three places, in the same way, if you have explained the mind at the fourth place also, then welfare would have been achieved and one would be called a celibate. Lust is the fire of the mind and the sense of touch. Think about this, explain it to your mind, you will see the essence and through this you will see the soul, it will be beneficial.Following non violence, to conquer the mind, to conquer the desires is the name of penance. If you do this, you will be benefited and the person in front will also be benefited.

उपकार करना हर जीव का धर्म है। उपकार करने से शांति पैदा होती है। उपकार करने से हमारे अंदर रक्षा, प्रेम, एकता व वात्सल्य की भावना, अपनत्व, सुख–दुःख में सहयोग की भावना पैदा होती है। जिस घर में नगर वासियों के प्रति ऐसा भाव है सभी की एक दूसरे के प्रति वात्सल्य एवं परोपकार की भावना हो तो वह गाँव एक चेतन व तीर्थक्षेत्र है।

जहाँ–जहाँ मुनि के कदम पड़ते हैं वहाँ अज्ञानता का नाश होता है एकता आती है, प्रेम वात्सल्य का भाव बढ़ता है। चलता–फिरता मोक्ष मार्ग देखने को मिल जाता है। इस पंचम काल में मुनि सबसे बड़े उपकारी हैं। उनसे बड़ा उपकारी इस दुनिया में कोई नहीं है। जो स्वयं भूखे रहते है और सोचते है सबको भोजन मिल जाये और नंगे पैर चलते हैं और सोचते हैं सारी धरती हरी–भरी हो जाये। संम्पूर्ण सृष्टि सुख, शान्ति, समृद्धि से रहे ये भावना करते हैं।

चार प्रकार के मानव-:

धर्मशास्त्रों में चार प्रकार के जन बताए गए हैं,

1. **दुर्जन**- जो न तो सुख शान्ति से स्वयं जीते है और न दूसरों को जीने देते है वे दुर्जन कहलाते है।
2. **जन**- जो अपना भरण पोषण कर लेते हैं और अपने परिवार का कर लेते हैं वे जन कहलाते हैं।
3. **सुजन**- जो अपना अपने परिवार का और अपने पड़ोसियों का भरण पोषण कर लेते है वे सुजन कहलाते हैं।
4. **महाजन–** जो अपने पेट की भी चिंता न कर अपने पेट का भी दूसरो को देकर उनका भरण पोषण करके दुख दूर करते हैं वे महाजन कहलाते हैं।

It is the duty of every living being to do good. Doing good creates peace. By doing good, feelings of protection, love, unity and affection, belongingness and cooperation in happiness and sorrow arise in us. The house where there is such feeling towards the city dwellers, where everyone has feelings of affection and charity towards each other, then that village is a conscious and pilgrimage place.

Wherever a sage steps, ignorance is destroyed. Unity comes, the feeling of love and affection increases. The path to salvation can be seen while walking. In this fifth period, the sage is the biggest benefactor. There is no one in this world who is more helpful than him, who remain hungry themselves and think that everyone should get food, they walk barefoot and think that the whole earth should become green and flourish.. They feel that the entire creation should be in happiness, peace and prosperity.

Four types of Humans

Four types of people have been mentioned in the religious scriptures:

1. **Evil-** Those who neither live happily and peacefully nor allow others to live, they are called evil.
2. **Usual People -** Those who support themselves and pay taxes for their families are called people.
3. **Sujan-** Those who feed themselves, their families and their neighbours are called Sujan.
4. **Mahajan -** Those who do not worry about their own stomach and give away their own food to others and feed them and remove their suffering are called Mahajan.

खण्ड – 5

धर्म, संस्कृति, संस्कार और शान्ति

SECTION- 5

RELIGION, CULTURE, SANSKR (RITES, RITUALS) & PEACE

संस्कृति और संस्कार

विश्व की समस्त संस्कृतियों को व्यक्तिवादी, समाजवादी, परिवारवादी और राष्ट्रवादी में विभाजित किया जा सकता है। लोकतांत्रिक देशों में लोग राष्ट्रवादी और समाजवादी की बात करते हैं लेकिन काम व्यक्तिवादी का करते हैं। जैसे–जैसे लोकतांत्रिक देशों में विकास हुआ है वैसे–वैसे परिवार का स्थान पुरुष ने और सत्ता का स्थान महिलाओं ने लेना प्रारंभ कर दिया है।संयुक्त परिवार खंडित होकर एकल परिवार का रूप लेने लगे हैं, क्योंकि छोटा परिवार सुखी परिवार हम दो हमारे दो अथवा हम दो हमारा एक का नाराआकाश में गुंजायमान होने लगा है।

एक बच्चा यूनिट की बात सोचता है और करता है, यूनिटी की बात नहीं करता है। जब दो चार बच्चे एक परिवार में होते हैं तब भी यूनिटी की शिक्षा और संस्कार सहज ही प्राप्त कर लेते हैं। मान–मर्यादा, त्याग और संयम की शिक्षा खेल–खेल में प्राप्त कर लेते हैं जबकि उसे भुलाकर हम सुख–शांति को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। मान–मर्यादा और संयम के बिना अहंकार और टकराहट पैदा होती है। आत्म सम्मान अहंकार में बदल जाता है। जब स्वाभिमान अहंकार में बदल जाता है तब संघर्ष प्रारंभ हो जाता है। पक्ष और प्रतिपक्ष के द्वंद का नाम संसार है। धरती और आकाश रात और दिन, सुख और दुख, अंधकार और प्रकाश, राजा और रंक, स्त्री और पुरुष ये पक्ष और प्रतिपक्ष है एक–दूसरे के विरोधी हैं। यदि ये एकांत आग्रह से एकांतवादी हो जाते है तो संघर्ष होने लगता है विरोध और प्रतिशोध प्रारंभ हो जाता है, लेकिन जब यह अनेकांत ग्राही हो जाते हैं दोनों आदान–प्रदान के भाव से रहने लगते हैं तो वसुधैव कुटुंबकम की स्थिति बन जाती है, संघर्ष समाप्त हो जाते हैं, सभी एक–दूसरे से बंध जाते हैं। स्त्री–पुरुष का बंध जाना ही परिवार है। वही दांपत्य जीवन का असली सुख है।

Culture and Rituals

All the cultures of the world can be divided into individualistic, socialist, familyist and nationalist. In democratic countries, people talk about nationalists and socialists but act as individualists. As development has taken place in democratic countries, men have started taking the place of family and women have started taking the place of power. Joint families are disintegrating and taking the form of nuclear families, because the slogan of small family, happy family; we two our two children or even we two our one, has started resonating in the sky.

A child thinks and acts in terms of units, does not talk about unity. Even when there are two or four children in a family, they easily acquire the education and values of unity. They learn respect, dignity, sacrifice and restraint through games among themselves whereas we cannot achieve happiness and peace by forgetting/ ignoring them. Without respect and restraint, ego and conflict arise. Self respect turns into ego. When self-respect turns into arrogance then conflict begins. The name of the conflict between favour to one and opposition is world. Earth and sky, night and day, happiness and sorrow, darkness and light, king and pauper, man and woman, favouritism & opposition are opposites to each other. If they become solipsists due to their desire for solitude, then conflict begins, opposition and retaliation begin, but when they become accepting of diversity and start living in a spirit of reciprocity, then a situation of Vasudhaiva Kutumbakam (family on earth) is created, conflict ends, everyone becomes tied to each other. Family is the bond between man and woman. That is the real happiness of married life.

दांपत्य जीवन में जब सौम्यता, साम्यता, सौजन्यता आ जाती है तब परिवार चहकने लगता है, घर सुखहाली और प्रसन्नता से भर जाता है। चारित्र और व्यक्तित्व का विकास होने लगता है लेकिन जब वह समाप्त हो जाता है तब सब उजड़ने लगता है। व्यक्तित्व का विकास सर्वप्रथम परिवार से प्रारंभ होता है। व्यक्तित्वशाली परिवार से अच्छी समाज का निर्माण होता है। व्यक्तित्त्व जीवन, समाज एवं परिवार के लिए सहिष्णुता, सामंजस्य सापेक्षता, अनुग्रह, समन्वय, सहअस्तित्व, स्यादवाद, अनेकांत और क्षमादि 10 धर्म का होना जीवन मे जरूरी है।

संसार परिवर्तनशील है। परिवर्तन वस्तु का धर्म हैं। समय के साथ समाज और व्यक्ति में कुछ न कुछ बदलाव आता है। अध्यात्मवाद बदला और भक्तिवाद आया। भक्तिवाद बदला समाजवाद आया। समाजवाद बदला भौतिकवाद आया। अब इस भौतिकवादी युग में आधुनिकता की आड़ और काल दोष के कारण से इस भौतिकवाद से, भोगवाद, व्यक्तिवाद और स्वच्छंदतावाद को प्रोत्साहन मिला है इसी कारण सारी परिस्थितियाँ बदल गई हैं। बदली हुई परिस्थितियों में संयुक्त परिवार एकल परिवार हो गए है। दूरदृष्टि समाप्त हो रही है। वैचारिक संघर्ष प्रारंभ हो गये हैं। सहिष्णुता समाप्त होनेलगी है, और परिवार में अशांति और विघटन प्रारंभ हो गया है। इस परिवर्तन में औद्योगिक क्रांति, यांत्रिक आविष्कार और वैज्ञानिक चमत्कार ने आग में घी का काम किया है। इससे उपयोगितावादी और भोगवादी प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला है।

When there is gentleness, equality and courtesy in married life, then the family starts chirping and the house is filled with prosperity and happiness. Character and personality begin to develop but when it ends everything starts to fall apart. Personality development first starts from the family. A good society is created from a family with personality. For personality, life, society and family, it is necessary to follow 10 religious teachings like tolerance, harmony, relativity, grace, coordination, co-existence, Syadvad, Anekant and Kshamaadi in life.

The world is changing. Change is the religion of things. With time some changes take place in society and individuals. Spiritualism changed and devotionalism came. Devotionism changed replaced by socialism. Socialism was replaced by materialism. Now in this materialistic era, under the guise of modernity and due to the guise of time, this materialism, materialism, individualism and romanticism have got encouragement, hence the whole situation has changed. Under the changed circumstances, joint families have become nuclear families. Vision is coming to an end. Ideological conflicts have started. Tolerance is beginning to end, and unrest and disintegration has begun in the family. Industrial revolution, mechanical inventions and scientific miracles have added fuel to this change. This has encouraged utilitarian and indulgent tendencies.

परिवर्तन और नयापन

जब तक परिवर्तन नही होता तब तक नयापन नहीं आता है। नयापन लाने के लिए परिवर्तन जरुरी है। प्रत्येक पदार्थ परिवर्तनशील है। प्रत्येक पदार्थ में परिवर्तन, उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य सिद्धांत से होता है। पदार्थ में परिवर्तन होते हुए भी नया बनाना, पुराना मिटाना फिर भी सत्ता का ध्रौव्य रुप में बना रहना यह सब अनेकान्त के सिद्धांत से घटित होता है।

परिवर्तन का मूल कारण है दृष्टिकोण एवं मान्यताएँ। व्यक्ति की मान्यताएँ और दृष्टिकोण नए समाज, नये मानव, नये देश, नये विश्व, नये धर्म, दर्शन, जाति और संप्रदाय को जन्म देती हैं। धार्मिक मान्यताएँ हमेशा अपने हित एवं आत्म सिद्धि पर आधारित होती हैं लेकिन जब वे अर्थ एवं स्वार्थ सिद्धि पर आधरित हो जाते हैं तब वे यही सब संघर्ष और युद्ध के कारण बन जाते हैं। अतः उनसे ऊपर उठना जरूरी है, उनसे ऊपर उठने के लिए मिथ्या दर्शन, मिथ्या ज्ञान और मिथ्या आचरण से मुक्त होना जरुरी है। उनसे मुक्त होने से विरोधी तत्व तथा एकान्तवाद समाप्त हो जाता है। सहअस्तित्व, समन्वय, नैतिकता, निरपेक्षता और सापेक्षवाद पनपने लगता है। निरपेक्षता एकान्तवादी दृष्टिकोण है। सापेक्षता अनेकान्तवादी दृष्टि कोण है। जब तक एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों से, परिवार के लोग परिजनों से, एक संप्रदाय के लोग दूसरे संप्रदाय वालों से, एक देश के लोग दूसरे देश के लोगों से, मालिक नौकर से एवं पति अपनी पत्नी से सापेक्ष होकर रहेगे तभी सुख शान्ति और समृद्धि संभव है। अतः सापेक्षता की समीक्षा जरूरी है।

भिन्न–भिन्न गुण धर्म और वस्तु में एकता की खोज समन्वय का सिद्धान्त है। जैसे पुण्य–पाप, सुख–दुख, रात–दिन, चेतना–अचेतना, जीव–अजीव, आत्मा अनात्मा, नित्य–अनित्य, सदृश–विसदृश, भेद–अभेद इत्यादि गुण धर्म परस्पर विरोधी हैं फिर भी उनमें सहअस्तित्व है। पूंजीवाद–साम्यवाद, लोकतंत्र–राजतंत्र, अध्यात्मवाद–भौतिकवाद, इत्यादि के सिद्धांतों में विरोध है फिर भी उनमें अनेकान्त के सिद्धांत को अपनाने से सह अस्तित्व बन जाता है।

Change and Innovation (Newness)

Unless there is change, there is no newness. Change is necessary to bring newness. Every substance is changeable. In every substance, change, production, spending takes place according to Dhrauvya principle. Despite changes in matter, creation of new things, destruction of old things, yet to exist in its polar form, all this happens due to the principle of Anekanta.

The root cause of change is attitudes and beliefs. A person's beliefs and outlook give birth to a new society, new human being, new country, new world, new religion, philosophy, caste and sect. Religious beliefs are always based on self-interest and self-fulfillment, but when they become based on money and selfishness, then they become the cause of conflict and war. Therefore, it is necessary to rise above them, to rise above them it is necessary to be free from false philosophy, false knowledge and false conduct. By becoming free from them the oppositional element, solipsism, ends. Coexistence, coordination, morality, absolutism and relativism begin to flourish. Absolutism is a solipsistic approach. Relativity is a pluralistic point of view. As long as the people of one caste live in relation to the people of another caste, the people of the family to their relatives, the people of one community to the people of another community, the people of one country to the people of another country, the master to the servant and the husband to his wife, then only there will be happiness. Peace and prosperity are possible. Therefore, review of relativity is necessary.

The principle of coordination is the search for unity in different qualities, religion and things. Like virtue-sin, happiness-sorrow, night-day, consciousness-unconsciousness, living-nonliving, soul-nonsoul, eternal-impermanent, similar-dissimilar, different-indifferent etc., qualities and religions are contradictory to each other, yet they co-exist. There are differences in the principles of Capitalism-Communism, Democracy-Monarchy, Spiritualism-Materialism, etc., yet by adopting the principle of Anekant, co-existence becomes possible.

जहाँ मैं की बात आती है वहाँ अहम् आ जाता है। मैं रहूँगा या तुम जहाँ यह बात आ जाती है वहाँ सहअस्तित्व समाप्त हो जाता है। वहाँ एकान्तवाद आ जाता है। जहाँ हम सबकी बात आती है वहाँ अहम् समाप्त हो जाता है और अनेकान्त आ जाता है। जब कोई कहता है मेरा ही धर्म रहेगा अन्य किसी का नहीं तब अन्य धर्म के विनाश का युद्ध प्रारंभ हो जाता है, एकान्तवाद छा जाता है। एकांतवाद से अन्य सिद्धातों का गला घोंट दिया जाता है।

मित्रता को शत्रुता से, अहिंसा को हिंसा से, शान्ति को अशान्ति से, सत्य को असत्य से, करुणा को कठोरता से, सहिष्णुता को असहिष्णुता से बदलने में देर नहीं लगती है। अनेकान्त के आधार पर ही एक वस्तु में अनेक गुणधर्म सिद्ध कर सकते हैं। एक ही पदार्थ में उत्पाद और व्यय सिद्ध कर सकते हैं। अनेकता में एकता, एकता में अनेकता, द्वैते में अद्वैत, अद्वैत में द्वैत के सिद्धान्त को एक ही पदार्थ में सिद्ध कर सकते हैं। अनेकता में एकता या एकता में अनेकता के रूप का नाम सहअस्तित्व और समन्वय है। इसी सिद्धान्त से द्रव्यों में परिवर्तन घटित होता है। द्रव्य के अस्तित्व की सिद्धि होती है और मौलिक अधिकार जीवित रहते हैं।

मानव को व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, सामुदायिक, अध्यात्म आदि अनेक प्रकार का जीवन जीना पड़ता है। कोई व्यक्ति पारिवारिक जीवन को महत्व देता है तो कोई राजनैतिक जीवन को तो कोई आध्यात्मिक जीवन को, तो कोई सामाजिक या भौतिक जीवन को महत्व देता है।

आनुवंशिकता, संवेग, वैराग्य और ज्ञान भाव को महत्व देने वाले व्यक्तिगत जीवन जीते हैं। व्यक्तिगत जीवन को महत्व देने वाले लोग समाजवाद, साम्यवाद, संप्रदायवाद और अनेकान्तवाद को यदि महत्व देते हैं तो वे अपनी कल्पनाओं को साकार कर लेते हैं। समाजवाद का आधार है परावलंबना, संवेदनशीलता, भाषाई विकास, बौद्धिक विकास, कलात्मक विकास, स्वतंत्र चिन्तन का विकास, उदारता का विकास और व्यवहार नय का विकास।

Where there is talk of 'I' there comes ego. Will I stay or will you stay? Where it comes to this, coexistence ends. There comes isolationism. When it comes to all of us, the ego ends and the infinite comes. When someone says that only his religion will remain and no one else's, then the war of destruction of other religions starts and isolationism prevails. Other principles are strangled by solipsism.

It does not take long to replace friendship with enmity, non-violence with violence, peace with unrest, truth with untruth, compassion with harshness, tolerance with intolerance. Only on the basis of Anekant, many properties of an object can be proved. Can prove production and expenditure in the same substance. The principle of unity in diversity, diversity in unity, non-duality in duality, duality in non-duality can be proved in a single substance. The name of the form of unity in diversity or diversity in unity is coexistence and coordination. Changes in substances occur due to this principle. The existence of money is proven and fundamental rights remain alive.

Man has to live many types of life - personal, family, social, political, community, spirituality etc. Some people give importance to family life, some to political life, some to spiritual life, and some to social or material life.

Those who give importance to heredity, emotion, detachment and knowledge live an individual life. The people who give importance to personal life, give importance to social life, samyavad,samprag adhyaksh and anekantvad are able to achieve their goals.The basis of socialism is reflection, sensitivity, linguistic development, intellectual development, artistic development, development of independent ideas.

व्यवहार नय भेद प्रधान दृष्टि को महत्व देता है। निश्चय नय अभेद प्रधान दृष्टि को महत्व देता है। भेद नय की दृष्टि से ही सामाजिक, राजनैतिक और व्यक्तिगत जीवन सुरक्षित रह सकता है। मानव के मूल अधिकार सुरक्षित रह सकते हैं। व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनैतिक और पारिवारिक समन्वय को ध्यान में रख कर ही नियम कानून और व्यवस्था को बनाया जाता है और पालन कराया जाता है। अर्पितानर्पित सिद्धे मुख्य और गौण करके ही समाज, परिवार, देश और व्यक्तिगत जीवन को सुचारू रूप से चलाया जा सकता है। अनेकान्तवादी विचार धारा वाले साम्य, समता और अहिंसक स्वभाव वाले होते हैं। एकान्तवादी विचार धारा वाले लोग उग्र आवेग, उत्तेजनात्मक स्वभाव वाले होते हैं। उग्र स्वभाव वाले हिंसक और अनर्थ करने वाले होते हैं। ऐसे लोगों को दण्डित करके, उपदेश देकर हृदय परिवर्तित करके, अहिंसक और अनेकान्त दृष्टि से संपन्न बनाया जा सकता है। अनेकान्तवादी सिद्धान्त लचकदार, ढुलमुल या अवसरवादी नही है बल्कि समाजवादी, साम्यवादी, लोकतान्त्रिक और अहिंसावादी है। मनुष्य जन्म से ही मानी, स्वार्थी, सुविधा भोगी, चिन्तनशील जिज्ञासु, शाकाहारी और स्वतंत्रता पूर्वक जीवन जीने के स्वभाव वाला है। संस्कारों से समाजिक, साम्यवादी, परोपकारी और त्यागी संयमी और चारित्रवान बनाया जाता है। मानव स्वभावतः जन्म से दुग्धपान करने वाला और शाकाहारी है, माँसाहारी नहीं। गलत संगति कुशिक्षा एवं कुसंस्कारों से मांसाहारी बनता है।

आचार–विचार में भिन्नता भी स्वभावतः जन्म से होती है। अलग–अलग द्रव्य, क्षेत्र, काल, संगति और भाव के अनुसार श्रद्धा, भक्ति, क्रिया, भाषा, धर्म और सोच में अन्तर आ जाता है। न मन की, न विचारों की और न धन की गरीबी होती है।

Behavior gives importance to a new differentiated approach. Certainly, the new perspective gives importance to non-discrimination. Social, political and personal life can remain safe only from the point of view of non discrimination. The basic rights of human beings can be protected. Rules, laws and systems are made and implemented keeping in mind personal, social, political and family coordination. Society, family, country and personal life can be run smoothly only by making the dedicated Siddhas primary and secondary. Those with Anekantvadi ideology are of equality, equanimity and non-violent nature. People with a solipsistic ideology have a violent impulse and an excitable nature. Those with aggressive nature are violent and do mischief. Such people can be made non-violent and prosperous by changing their hearts by punishing them and giving them advice. Anekantavadi principle is not flexible, wavering or opportunistic but is socialist, communist, democratic and non-violent. Man is born obedient, selfish, opportunistic, contemplative, curious, vegetarian and has the nature to live life freely. Through values one is made social, communist, philanthropic, self-sacrificing, restrained and of good character. Humans are naturally milk-drinking and vegetarian by birth, not non-vegetarian. One becomes a non-vegetarian due to wrong association, bad education and bad values.

Difference in conduct and thoughts also occurs naturally by birth. There is a difference in devotion, devotiness, action, language, religion and thinking according to different substance, region, time, company and feeling. There is neither poverty of mind, nor of thoughts, nor of money.

गरीबी या अमीरी में वरदान कौन?

यदि अमीरी में लोगों की मनोवृत्ति बिगड़ती है, लोभ लालच बढ़ता है, आसक्ति बढ़ती है, क्रूरता, विषय भोग बढ़ते हैं और आस्था, उदारता, नैतिकता आचरण घटता है तो अमीरी अभिशाप है। यदि गरीबी में पेट भरने लायक रोटी, तन ढकने लायक कपड़ा और सुरक्षा के लायक मकान की पूर्ति नहीं होती है। यदि गरीबी में हिंसा, झूठ, चोरी, डकैती, नैतिकता, क्रूरता आदि की मनौवृत्ति बढ़ती है तो गरीबी अभिशाप है। यदि गरीबी में नैतिकता, श्रद्धा, भक्ति, उदारता, संतोष न्याय–नीति, कर्तव्य–परायणता और जीवन–यापन की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है तो वह गरीबी भी वरदान है। कुल मिलाकर मानसिक अमीरी ही सही अमीरी है। आर्थिक गरीबी मानसिक अमीरी के सामने कुछ बिगाड़ नहीं करती है ओर कोई समस्या पैदा नहीं करती है। सुख शांति के लिए मूर्च्छा रहित मनोवृत्ति जरूरी है। अमीरी आशक्ति और मूर्च्छा पैदा करती है जो दुख का कारण होती है। समीचीन मनोवृत्ति वाला सत्याग्रही नहीं सत्य ग्राही होता है। व्यसन जीवन में अभिशाप हैं। अमीरी और गरीबी नहीं। व्यसन युक्त अमीर व्यक्ति भी एक दिन गरीब बन जाता है और व्यसन मुक्त गरीब व्यक्ति भी एक दिन अमीर बन जाता है।

अध्यात्म जीवन में उपादेय अर्थात् ग्रहण करने योग्य है। अध्यात्मिक कभी हेय अर्थात् छोड़ने योग्य नहीं हो सकता है, जहाँ अध्यात्म है वहाँ अहिंसा है। जहाँ अध्यात्म है वहाँ वीतरागता है। जहाँ वीतरागता है वहां राग, द्वेष, मोह इत्यादि का अभाव होता है। वीतरागता और अहिंसा एक सिक्के के दो पहलू हैं। व्यक्ति जितना–जितना वीतरागी होता जाता है उतना–उतना अहिंसक होता चला जाता है। अहिंसा की जड़ वीतरागता है हिंसा की जड़ राग, द्वेष और मोह है। राग–द्वेष हिंसा के बीज हैं। जहाँ वीतरागता और अहिंसा है वहाँ अध्यात्म है और वह सुख शांति अमन–चैन का कारण है।

Which is a Blessing - Poverty or Wealth

If people's mentality deteriorates due to wealth, greed increases, attachment increases, cruelty, sensual pleasures increase and faith, generosity and moral conduct decrease, then wealth is a curse. If poverty does not provide enough food to feed, clothes to cover the body and a house to be safe, increases the attitude of violence, lies, theft, robbery, immorality, cruelty etc. then poverty is a curse. If poverty fulfills the needs of morality, faith, devotion, generosity, satisfaction, justice, devotion to duty and survival, then even that poverty is also a boon. Overall, mental richness is the true richness. Financial poverty does not harm anything compared to mental wealth and does not create any problem. An unconscious attitude is necessary for happiness and peace. Richness creates powerlessness and unconsciousness which is the cause of suffering. The one with appropriate attitude is not a Satyagrahi but a person who accepts the truth. Addictions are a curse in life. Even a rich person with addiction becomes poor one day and a poor person without addiction also becomes rich one day.

Spirituality is useful in life, that is, worthy of being accepted. Spirituality can never be despised i.e. worthy of being abandoned, where there is spirituality there is non-violence. Where there is spirituality there is renunciation. Where there is renunciation there is absence of attachment, hatred, attachment etc. Dispassion and non-violence are two sides of a coin. The more a person becomes selfless, the more nonviolent he becomes. The root of non-violence is renunciation; the root of violence is attachment, hatred and attachment. Anger and hatred are the seeds of violence. Where there is renunciation and non-violence there is spirituality and that is the cause of happiness, peace and tranquility.

अहिंसा, अच्छाई और अध्यात्म को आज व्यक्ति जानता है लेकिन उसमें प्रवृत्ति नहीं करता है। आदमी हिंसा बुराई और कषायों को जानता है पर उससे निवृत्ति नहीं करता अर्थात् छोड़ता नहीं। इसका कारण अज्ञान और मूढ़ता है। बुराई करने के पहले अथवा हिंसा करने के पहले हर व्यक्ति जानता है कि मैं यह गलत कार्य कर रहा हूँ परंतु मोह और अज्ञान का पर्दा उसे अंधा बना देता है। इंद्रिय सुख उसे मोहित करता है, मन को ललचाता है। इंद्रियाँ जब बाह्य जगत के मोहक पदार्थों के संपर्क में आती हैं तब मन में राग पैदा होता है। जब इंद्रियाँ अप्रिय पदार्थों के संपर्क में आती हैं तब द्वेष पैदा होता है। यह राग, द्वेष ही सामाजिक व्यवस्था और अर्थ नीतियों में बदलाव लाता है।

जैन मुनि जितना अहिंसा में विश्वास रखते हैं उतना ही यथार्थ में अहिंसा का पालन करते हैं। वे घास–फूस, पेड़ पौधों और चींटी आदि की मन, वचन, काय से हिंसा करना तो दूर उनकी हिंसा करने की सोचते भी नहीं। काम, क्रोध, लोभ, भय, वासना, परिग्रह, घृणा, सांप्रदायिकता, कट्टरता और सत्ता की लोलुपता इत्यादि हिंसा के अनेक कारण है। इन कारणों से बचने पर अनेक प्रकार की हिंसा रुक जाती है। इसे रोकना भी चाहिए। हिंसा का जवाब हिंसा से नहीं दिया जाना चाहिए। हिंसा के बदले हिंसा करना शांति का कारण नहीं है बल्कि अशांति का कारण है।

सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य ये चार व्रत अहिंसा धर्म की रक्षा के कारण हैं। अहिंसा शांति में कारण है इसलिए अहिंसा सब धर्मों में प्रधान है। अहिंसा सुख, शांति, सुरक्षा और स्वतंत्रता में कारण है। अहिंसा का विकास वृक्ष की तरह धीरे–धीरे मानव जीवन में होता है। सर्वप्रथम संकल्प पूर्वक होने वाली हिंसा का त्याग किया जाता है। झाड़ू– पोछा, खेती–बाड़ी इत्यादि क्रियाओं में होने वाली हिंसा को आरंभी हिंसा कहते हैं। शत्रु का प्रतिकार करके अपनी रक्षा के लिए होने वाली हिंसा को विरोधी हिंसा कहते हैं। फैक्ट्री आदि उद्योग में होने वाली हिंसा को उद्योगी हिंसा कहते हैं। इन तीनों हिंसा का प्रारंभ में त्याग न करके मात्र संकल्पी हिंसा का त्याग किया जाता है। घर में रहने वाला इसी हिंसा का सर्वप्रथम त्याग करता है।

Today people know about non-violence, goodness and spirituality but do not have any inclination towards it. Man knows violence, evil and suffering there but does not get rid of them from *i.e*. does not leave them. The reason for this is ignorance and foolishness. Before doing evil or committing violence, every person knows that he is doing this a wrong thing, but the form of attachment and ignorance makes him blind. Sense pleasure fascinates him, tempts the mind. When the senses come in contact with the attractive things of the external world, then attachment is born in the mind. Aversion arises when senses come in contact with unpleasant substances. It is this passion and hatred that brings changes in the social system and economic policies.

The more Jain monks believe in non-violence, the more they practice non-violence in reality. They don't even think of doing violence to weeds, trees, plants, ants etc., leave aside their thoughts, words and body. There are many reasons for violence like lust, anger, greed, fear, lust, care, hatred, communalism, greed for power and power etc. By avoiding these reasons, many types of violence stops. This should be stopped. Violence should not be responded to with violence. Violence in return for violence is not a cause of peace but a cause of unrest.

These four fasts – Satya, Acharya, Aparigraha, Brahmacharya – are for the protection of non-violence religion. Non-violence is the reason for peace, hence non-violence is important in all religions. Non-violence leads to happiness, peace, security and freedom. Non-violence grows slowly in human life like a tree. First of all, violence which is done deliberately is renounced. The violence that occurs in activities like house cleaning, farming, gardening etc. is called initial violence. Violence committed in defense of oneself by retaliating against the enemy is called violence against opponenent. Violence that occurs in industries like factories etc. is called industrial violence. These three violences are not renounced togather in the beginning but only the first one, that is the violence done deliberately is renounced. A householder renounces this violence first.

हजारों वर्षों से साहित्य का लेखन हो रहा है। प्रवचनकारों द्वारा धर्म का व्याख्यान हो रहा है। अनेक साधकों द्वारा व्रत–उपवास और त्याग तपस्या की जा रही है फिर भी समाज और देश में कोई बदलाव नहीं आ रहा है। सभी में एकता, सहिष्णुता और अपनत्व नहीं पनप रहा है आखिर क्यों? इसका कारण है सबकी सोच–समझ, क्रिया–कलाप और उपादान शक्ति भिन्न–भिन्न है और सभी को निमित्त भी भिन्न–भिन्न मिल रहे हैं। अतः बदलाव लाने में सभी कारणों की ओर ध्यान देना होगा।

अनेकान्त और स्यादवाद के सिद्धांत को अपनाना होगा। सामाजिक सुधार की पृष्ठभूमि में अहिंसा और अनेकांत का हमेशा योगदान रहा हैं और रहेगा। व्यक्ति, समाज, देश और सारा विश्व आपराधिक प्रवृत्तियों से पूर्णतः मुक्त नहीं हो सकता है। आपराधिक गतिविधियों को रोकने के लिए जैन आचार्यों ने दंड संहिता बनाई। धर्म नीति और दंड नीति में जमीन आसमान का अंतर है। धर्म दया करना सिखाता है और दंड संहिता कठोरता पूर्वक दंड देना सिखाती है। धर्म के समय कोमलता होती है और दंड संहिता के समय कठोरता होती है। सामाजिक पृष्ठभूमि में अहिंसा धर्म का योगदान रहा है और दंड संहिता का भी योगदान रहा है।

धर्म को मानने वाले व्यक्ति इस दुनिया में बहुत हैं सभी धर्म सत्य, अहिंसा और शांति की बात करते हैं लेकिन समाज में कोई विशेष बदलाव देखने में नहीं मिल रहा है क्योंकि अंतरंग से विचारों में परिवर्तन हुए बिना समाज में परिवर्तन नहीं आ सकता है। समाज में मैत्री भाव, करुणा, दया, अपनत्व, सहिष्णुता एवं संवेदनशीलता परस्पर में सहयोग की भावना लाते हैं तो समाज में परिवर्तन आ जाता है। अहिंसा आत्मा का गुण धर्म और स्वभाव है। हिंसा अधर्म, विवशता एवं विभाव है। हिंसा दूसरों की बाद में होती है लेकिन हिंसा करने वाले हिसंक की पहले ही हो जाती है।

Literature has been written for thousands of years. Religion is being lectured by preachers. Many seekers are fasting and doing penance, yet there is no change in the society and the country. Why is unity, tolerance and affinity not flourishing among all? The reason for this is that everyone's thinking, understanding, actions and material power are different and everyone is also getting different reasons. Therefore, in bringing about change, attention will have to be paid to all the reasons.

The principles of Anekant and Syadvad will have to be adopted. Nonviolence and Anekant have always and will always contribute to the background of social reform. Individual, society, country and the whole world cannot be completely free from criminal tendencies. Jain Acharyas created the penal code to prevent criminal activities. There is a world of difference between religious policy and penal policy. Religion teaches mercy and the penal code teaches harsh punishment. There is softness at the time of religion and harshness at the time of penal code. In the social background, the religion of non-violence has contributed and the penal code has also contributed.

There are many people in this world who believe in religion. All religions talk about truth, non-violence and peace, but no significant change is being seen in the society because change cannot come in the society without change in thoughts from within. If friendship, compassion, kindness, affinity, tolerance and sensitivity bring a feeling of mutual cooperation in the society, then change comes in the society. Non-violence is the quality and nature of the soul. Violence is injustice, compulsion and power. Violence happens to others afterwords but it happens first to the perpetrator of violence.

संसार में विद्यमान शक्तियाँ

संसार में हिंसक और अहिंसक अनेक प्रकार की शक्तियाँ है जैसे जन शक्ति, धन शक्ति, तप शक्ति, ज्ञान शक्ति मंत्र शक्ति, यंत्र शक्ति और विचार शक्ति इत्यादि। व्यक्ति शक्तियों का उपयोग अपने विचार के अनुसार करता है क्योंकि प्रत्येक मानव के अंदर हिंसा और अहिंसा दोनों प्रकार की शक्तियाँ विद्यमान हैं अथवा मानव मस्तिष्क में उत्तेजना, शांति और अशांति दोनों प्रकार के तत्व विद्यमान हैं। हिंसा और अहिंसा का स्रोत बाहर नहीं बल्कि हमारे भीतर है, हमारे विचारों में और ज्ञान में है।

सर्वप्रथम ज्ञान और विचारों के रुप आत्म चेतना में हिंसा या अहिंसा उत्पन्न होती है। विचारों की शक्ति अपार होती है। ज्ञान की शक्ति अनंत होती है। अहिंसक अपनी शक्ति का विकास करता है और हिंसक अपनी शक्ति का विनाश करता है। जैन धर्म की दृष्टि से प्रत्येक द्रव्य में अनंत शक्ति और अनंत गुण विद्यमान हैं। एक अणु परमाणु में भी अनंत शक्ति होती है। हर मानव अपनी शक्ति का प्रयोग करता है, लेकिन इसका प्रयोग कब, कैसे, कहाँ करना चाहिए यह विवेक आवश्यक है। अहिंसक शक्ति ही सुख, शांति, मैत्री, सौहार्द, आत्मीयता, अपनापन और अभय प्रदान करती है। हिंसकशक्ति भय, दुख, आतंक, उत्तेजना, संताप और विवेकहीनता प्रदान करती है। जो जैसी संगति में रहता है उसकी वैसी शक्ति उद्‌घाटित होने लगती है। सारी दुनिया हिंसक और अहिंसक शक्तियों के बीच जी रही है और उपयोग भी कर रही है। अहंकार और लोभ भी ऐसी शक्ति है जिसके कारण आदमी झुकना नहीं चाहता और सब संग्रह करके रखना चाहता है, इसी की वजह से लड़ाई–झगड़े और संघर्ष करने के लिए वह तैयार हो जाता है।

वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में यांत्रिकी शिक्षा ठीक है लेकिन इस शिक्षा के पूर्व आध्यात्मिक, अहिंसक और परोपकार की शिक्षा भी देनी चाहिए तभी देश, समाज और परिवार में शांति और अहिंसा का माहौल बन सकता है। आध्यात्मिक शिक्षा देने से हिंसा पर अपने आप ब्रेक लग सकता है।

Powers Existing in the World

There are many types of violent and non-violent powers in the world like people power, money power, penance power, knowledge power, mantra power, instrument power and thought power etc. A person uses the powers according to his thoughts because both the powers of violence and non-violence are present within every human being or the elements of excitement, peace and unrest are present in the human mind. The source of violence and non-violence is not outside but within us, in our thoughts and knowledge.

First of all, violence or non-violence is born in self-consciousness in the form of knowledge and thoughts. The power of thoughts is immense. The power of knowledge is infinite. The non-violent person develops his power and the violent person destroys his power. From the point of view of Jainism, every substance has infinite power and infinite qualities. Even a single atom has infinite power. Every human being uses his power, but discretion is necessary as to when, how and where it should be used. Only non-violent power provides happiness, peace, friendship, harmony, intimacy, belongingness and fearlessness. Violent power provides fear, sadness, terror, excitement, anguish and irrationality. According to the company one keeps, his power starts getting revealed. The whole world is living and using violent and non-violent forces. Ego and greed are also such forces due to which a man does not want to bow down and wants to hoard everything, due to this he gets ready for fights and conflicts.

In the present education system, mechanical education is fine, but before this education, spiritual, non-violent and charitable education should be given, only then an atmosphere of peace and non-violence can be created in the country, society and family. Giving spiritual education can automatically put a stop to violence.

शक्ति का प्रयोग कब और कहां ?

सारे संसार में शक्तियाँ काम कर रही हैं। अणुबम और परमाणु बम की शक्तियाँ भी बहुत विकसित हो चुकी हैं। देश में सुख–शांति बनाएँ रखने के लिए एवं दुश्मनों के आक्रमण से बचने के लिए इन शक्तियों का प्रयोग किया जाना चाहिए। कब, कहाँ और कैसे किया जाए इसका ज्ञान होना भी जरूरी है अन्यथा वे शक्तियाँ विनाश का कारण बन सकती हैं।

ये सब भौतिक शक्तियाँ हैं। इन शक्तियों से शांति और निर्भयता नहीं आने वाली। ये सब शक्तियाँ भय, हिंसा, अज्ञानता, अशांति और दुख देने वाली है। अहिंसा की शक्ति अनंत है तो हिंसा की शक्ति भी अपार है। हिंसा भय पैदा करती है और अहिंसा अभय प्रदान करती है।

जहाँ अंतरंग की चेतना आत्मा जाग जाती है वहाँ मैत्री, सौहार्द्र, आत्मीयता, प्रेम और अपनत्व इत्यादि गुण जाग जाता है। हिंसा और अहिंसा इन दोनों शक्तियों के बीच वर्तमान में इंसान जी रहा है। इस दुनिया में हिंसा पूर्णता समाप्त नहीं हो सकती है लेकिन हिंसा की शक्ति कम की जा सकती है। अहिंसा की अभिव्यक्ति की जा सकती है, उसका विकास और उद्‌घाटन किया जाता है। अतः हमें अहिंसा की शक्ति का विकास करना चाहिए।

निवृत्ति में हिंसा रुक जाती है। प्रवृत्ति में हिंसा बढ़ जाती है। मन, वचन, काया से जो भी प्रवृत्ति होती है उसे यदि संतुलित किया जाए तो आंशिक रूप में हिंसा रुक जाती है। प्रवृत्ति क्रोध, मान, माया, लोभ एवं हास्य आदि से होती है। संतुलन का अर्थ संयम। जहाँ जितना संयम होता है उतनी अधिक शांति बनी रहती है। परेशानियाँ दूर भाग जाती हैं। सुख–दुख, अनुकूलता और प्रतिकूलता पर आधारित है। जहाँ अनुकूलता है वहाँ सुख शांति है। जहाँ प्रतिकूलता है वहां अशांति है, दुःख है। सुख–शांति का संबंध परिस्थिति और मनःस्थिति से भी जुड़ा होता है। भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजकीय, इत्यादि बाहरी स्थितियाँ और परिस्थितियाँ हैं जो काम, क्रोध, लोभ और मनः स्थितियों को प्रभावित करती हैं।

When and Where to use Power

There are forces working all over the world. The powers of atom bomb and atomic bomb have also developed a lot. These powers should be used to maintain peace and happiness in the country and to avoid attacks by enemies. It is also important to know when, where and how to do it, otherwise those powers can cause destruction.

These are all physical forces. Peace and fearlessness will not come from these powers. All these forces cause fear, violence, ignorance, unrest and suffering. If the power of non-violence is infinite, then the power of violence is also immense. Violence creates fear and non-violence provides fearlessness.

Where the consciousness of the intimate soul awakens, the qualities of friendship, harmony, intimacy, love and affinity etc. awaken. Presently man is living between these two forces, violence and non-violence. Violence cannot be completely eliminated in this world but the power of violence can be reduced. Nonviolence can be expressed, developed and unveiled. Therefore, we should develop the power of non-violence.

Violence stops in disencumberance. Violence increases in propensity. Whatever tendencies are there due to mind, speech and body, if they are balanced then violence stops to some extent. The tendency is caused by anger, pride, illusion, greed and humour etc. Balance means restraint. Where there is more restraint, more peace prevails. Problems run away. Happiness and sorrow are based on favorable and unfavorable conditions. Where there is harmony there is happiness and peace. Where there is adversity there is unrest and sorrow. Happiness and peace are also related to circumstances and mental state. Geographical, economic, social, family, political, etc. are external conditions and circumstances which influence lust, anger, greed and mental states.

दु:ख और अशांति के स्रोत

दु:ख और अशांति के स्रोत को लेकर अलग–अलग लोगों के अलग–अलग मत हैं। जैसे वैज्ञानिकों के अनुसार मानसिक तनाव और शारीरिक रोग। धार्मिक द्रष्टि से अहंकार, ममकार, पाप और मोहकर्म। दार्शनिक दृष्टि से सोच विचार और दृष्टिकोण। समाज शास्त्रियों के अनुसार परिस्थितियाँ दुख और अशांति का कारण है, इसलिए परिस्थितियों को समझो, समझोता करो और सुख–शांति पाओ। आध्यात्मिक दृष्टि से तेरा–मेरा छोड़ो। पर वस्तु से संबंध छोड़कर निजात्म तत्वों से सबंध जोड़ो और सुख–शांति पाओ। मानसिक तनाव और शारीरिक रोगों से मुक्ति पाओ और सुख–शांति पाओ। अपनी सोच सकारात्मक बनाओ, विचारों में निर्मलता लाओ और सुख शांति पाओ। प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाओ और सुख–शांति पाओ। जैन आचार्य कहते हैं कि राग, द्वेष, मोह छोड़ो और सुख–शांति पाओ। क्योंकि मोह एक राजा है ,राग उसका मंत्री है, द्वेष उसका सेनापति है। राग, द्वेष, मोह और घृणा इत्यादि से ग्रसित व्यक्ति अधिकारों की लड़ाई तो लड़ता है लेकिन कर्तव्यहीन होता है।

प्रत्येक आत्मा को मोह रूपी मदिरा का नशा अनंत काल से चढ़ा हुआ है। इस जीव को यह मोह का नशा अहंकार, ममकार आदि पैदा करता है। मोह के मद में व्यक्ति कर्तव्यों को भूल जाता है। मोहित होकर व्यक्ति पर पदार्थों को अपना मान कर संगृहीत करके रख लेता है। संकुचित हो जाता है। जहाँ पदार्थ होते हैं वहाँ मन में तेरा मेरापन पैदा होता है। उससे आत्मा में नए कर्म बंधते हैं। जीवात्मा एक गति से दूसरी गति में जाती है वहाँ उसे शरीर और इंद्रियाँ प्राप्त होती हैं। ये इंद्रियाँ अपने विषयों को ग्रहण करती हैं। विषयों को ग्रहण करते समय राग द्वेष करती हैं और उसी में सुख–दुख का अनुभव करती हैं। पुनः कर्म बांधती हैं पुनः नया शरीर और इंद्रियाँ प्राप्त होती हैं। पुनः विषयों को ग्रहण करती हैं। उसी में राग, द्वेष, मोह करती हैं और इस प्रकार का यह क्रम अनादि काल से चल रहा है।

Sources of Sorrow Mental Distress

Different people have different opinions about the source of suffering and mental distress. Like scientists differ about mental stress and physical diseases. From the religious point of view, ego, pride, sin and attachment are causes, from philosophical thinking and viewpoint & according to social scientists, circumstances are the cause of sorrow and unrest. Hence, understand the circumstances, make compromises and attain happiness and peace. Leave aside yours and mine from spiritual point of view. Leave things of others, connect with personal elements and attain happiness and peace. Get relief from mental stress and physical diseases and attain happiness and peace. Make your thinking positive, bring purity in your thoughts and attain happiness and peace. Make adverse circumstances favourable and attain happiness and peace. Jain Acharya says that give up attachment, hatred and attachment and attain happiness and peace. Because attachment is a king, association is its minister, hatred is its commander. A person suffering from attachment, hatred, attachment and hatred etc. fights for his rights but is duty-less.

Every soul has been intoxicated with the liquor of attachment since eternity. This intoxication of attachment creates ego, pride etc. in this living being. Under the influence of attachment, a person forgets his duties. Being fascinated, the person keeps the things as his own and stores them. Where there are objects, there arises a feeling of belongingness to you in the mind. Due to this, new deeds are tied in the soul. The soul moves from one state to another and there it acquires body and senses. These senses perceive their objects. While accepting the subjects, it experiences attachment and aversion and experiences happiness and sorrow in the same. Once again the karma gets tied up and a new body and senses are obtained again. Accepts the subjects again. In that there is attachment, hatred and attachment and this sequence has been going on since time immemorial.

इससे मुक्ति का उपाय है कि बाह्य जगत से अपना संबंध मिटा कर अंतरगं जगत की यात्रा करना प्रारंभ करें, दिखाई देने वाला जगत सब मुझसे पृथक और अचेतन है। ये पर पदार्थ मेरे हो नहीं सकते। मैं इनका हो ही नहीं सकता। दोनों का स्वभाव पृथक है। मैं चैतन्य ज्ञाता–दृष्टा, सुख–दुख का संवेदन करने वाला एक अखंड पिंड हूँ। समस्त आत्माएँ एक समान हैं। अहंकार और ममकार क्यों करना इसी का नाम वीतरागता है। यह मेरा है ऐसी अभिसंधि का नाम ममकार है। मैं इससे बड़ा हूँ, मैं झुक नहीं सकता इसी का नाम अहंकार है। यह अच्छा है इसी का नाम राग है। यह बुरा है इसी का नाम द्वेष है। अच्छा है तो इसे रख लूं अथवा छू लूं इसी का नाम मोह है। मैं स्वतंत्र हूँ प्रत्येक द्रव्य स्वतंत्र है किसी की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करने का अधिकार मुझे नहीं है यही द्रव्य की स्वतंत्रता है। इस बात का ज्ञान होने पर राग, द्वेष, मोह, अहंकार और ममकार छूट जाता है। मैं पर पदार्थों का सिर्फ ज्ञाता दृष्टा और निमित्त रूप में उपयोग करने वाला हो सकता हूँ। पर पदार्थ मेरी कार्य की सिद्धि में निमित्त हो सकते हैं परंतु वे मेरे नहीं हो सकते हैं, यही सोच विचार अध्यात्म है यही आध्यात्मिक दृष्टि, दुःख, अशांति और पीड़ा से मुक्त करती है, शतपथ पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं दुराचरण से बचाती हैं, सामाजिक व्यवस्था में सहयोगी बनाती है और कर्तव्य निष्ठ बनाती है। इसलिए आज के युग में शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक इत्यादि दृष्टि से अध्यात्म परम आवश्यक है।

The solution to get rid of this is to remove our connection with the external world and start traveling to the inner world, the visible world is separate from me and unconscious. These things cannot be mine. I can't belong to them. The nature of both is different. I am a conscious knower-seer, a monolithic body that senses happiness and sorrow. All souls are equal. Why be egoistic and selfish? This is called vitaragata. This is mine, name of such a convention is Mamakar. I am bigger than this, I cannot bow down, this is called ego. This is good, its name is Raga. This is bad, its name is hatred. If it is good then should I keep it or touch it, this is called attachment. I am free, every matter is free, I have no right to interfere in anyone's freedom, this is the freedom of matter. After knowing this, attachment, hatred, attachment, ego and selfishness go away. But I can only be a knower, observer and user of things as an instrument. But things can be instrumental in the accomplishment of my work but they cannot be mine, this thinking is spirituality, this spiritual vision frees from sorrow, unrest and pain, inspires to walk on the path of truth and saves from misdeeds, makes one cooperative in the social system and makes one dutiful. Therefore, in today's era, spirituality is extremely necessary from the physical, mental, economic, family, social etc. point of view.

शांति में संतों का योगदान

सुख शांति भी भरण–पोषण की तरह प्रत्येक मानव का मौलिक अधिकार है। दूसरों की सुख शान्ति में सहयोगी बनना दुःख–दर्द, आपत्ति–विपत्ति को दूर करना प्रत्येक मानव का कर्तव्य है इसीलिए सामाजिक शांति व व्यवस्था बनाएँ रखने में धर्म और धर्मात्माओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनका योगदान आज भी है और कल भी रहेगा। जब सामाजिक व्यवस्था बिगड़ जाती है तब समाज बिगड़ जाता है। बिगड़ी हुई समाज और सामाजिक व्यवस्था को धर्म के माध्यम से धर्मात्मा सुधार देते हैं। लेकिन कभी–कभी कट्टर सांप्रदायिकता वाले, रंग–भेद वाले और जाति–भेद वाले आपस में एक–दूसरे से भेद–भाव पैदा कर सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक व्यवस्था बिगाड़ देते हैं। ऐसे लोग दूसरे धर्म को नीचा दिखाते हैं और दूसरे धर्म के अनुयायियों को धर्मांतरण कर अपने में मिलाने लग जाते हैं, जिससे हिंसा, आतंक, संघर्ष और विघटन की स्थिति बन जाती है। ऐसे लोग जाति का चोला पहनकर, धन, वैभव, जनसंख्या एवं एकता का बल दिखाकर और धर्म का एकान्तवादी मुखौटा लगाकर विद्वेष और अशांति फैलाते हैं और कहते हैं कि शांति और एकता ला रहे हैं लेकिन ध्यान रखना जब–जब एकांत, सत्यांश और जात्यांश पनपता है तब तब हिंसा और अशांति फैलती है।

संतों के जीवन में हर पल, हर कदम सावधानी होनी चाहिए। बालक जैसी सहजता, सरलता और निर्विकारपन होना चाहिए। मुस्कान में भी वीतरागता चाहिए। उठने, बैठने, बात करने, चलने, फिरने, खाने, पीने आदि क्रियाओं में विवेक और संयमहोना चाहिए। अनेकांत और समन्वय की दृष्टि होना चाहिए न कि एकांतवाद जातिवाद, हटवाद। जहाँ यह सब होते हैं, वहाँ साधुता नहीं टिक पाती है। जहाँ सहजता, सरलता और समता होती है, वहाँ साधुता टिक पाती है।

मोह को जीतने वाला एक दिन मौत को जीत लेता है। समाज में फैली कुरीतियों और नफरत को मिटा देता है। मोह को मारना नहीं बल्कि जीतना होता है। मोह को जीतने वाला ही महान होता है। मोहित व्यक्ति को सिरफिरा व्यक्ति भी कहते हैं।

Contributions of Saints in Peace

Of Happiness and peace, like food, is a fundamental right of every human being. It is the duty of every human being to be helpful in the happiness and peace of others and to remove their sorrow, pain and calamity, that is why religion and religious souls have played an important role in maintaining social peace and order. Their contribution is there today and will be there tomorrow also. When the social system deteriorates, the society deteriorates. Religious people reform the deteriorated society and social system through religion. But sometimes people of staunch communalism, color discrimination and caste discrimination create discrimination among themselves and spoil the social, political and family system. Such people look down on other religions and start converting the followers of other religions to their own, which leads to violence, terror, conflict and disintegration. Such people spread hatred and unrest by wearing the garb of caste, by showing the power of wealth, glory, population and unity and by putting on the isolationist mask of religion and say that they are bringing peace and unity but keep in mind that whenever seclusion, Satyansh (right to violence) and Jatyansh (radix) flourish, then violence and unrest spread.

There should be caution in every moment and every step in the life of saints. There should be child-like spontaneity, simplicity and fearlessness. There should be sincerity even in the smile. There should be discretion and restraint in activities like getting up, sitting, talking, walking, eating, drinking etc. There should be a vision of diversity and coordination and not isolationism, casteism and heterodoxy. Where all these bad things happen, saintliness cannot survive. Where there is spontaneity, simplicity and equality, saintliness can survive there.

One who conquers attachment conquers death one day. Eradicates the evils and hatred spread in the society. Attachment does not have to be killed but conquered. Only the one who conquers attachment is great. A fascinated person is also called a crazy person.

सिर ज्ञान, विवेक और बुद्धि का प्रतीक है और पैर आचरण के प्रतीक हैं, लेकिन मोहित व्यक्ति की बुद्धि और विवेक काम नहीं करती है, इसलिए वह सिरफिरा और आचरण हीन हो जाता है। उसके पैर दुराचरण की ओर बढ़ने लग जाते हैं और वह यहाँ–वहाँ की बातें करने लग जाता है। इसीलिए लोग कहते हैं बिना सिर–पैर की बात मत करो। ऐसी बातें और आचरण करने वाले पूज्य नहीं होते हैं। मोह और अज्ञान के कारण जो ऐसे व्यक्तियों को साधु संत मानकर पूजते हैं, वे एक दिन स्वयं पतित हो जाते हैं। जबकि वीतरागी संतो को पूजने वाला एक दिन स्वयं पूज्य बन जाता है। स्वभाव में रहने वाला एक दिन स्वयंभू बन जाता है। हे ज्ञानियों! मौत से भले मत डरना लेकिन मोह से जरूर डरना। विवेक और बुद्धि से की गई सच्चे गुरु की सच्ची आराधना आराधक को आराध्य बना देती है और एक दिन सच्चे वास्तविक सुख को प्राप्त करा देती है।

प्रतिदिन लाखों लोग बीमार होते हैं, हजारों मरते हैं, परंतु किसी को कोई कष्ट नहीं होता है। कष्ट तो तब होता है जब उसके साथ मेरापन जुड़ा होता है। जहाँ तेरे–मेरे पन का भाव होता है वहाँ मोह भाव होता है। जब इष्ट का वियोग और अनिष्ट का संयोग होने पर भी मोह भाव नहीं होता है, तब सुखानुभूति होती है। जब इष्ट का वियोग और अनिष्ट का संयोग होता है, तब दुःख होता है। जहाँ संयोग है वहां वियोग नियम से है। जहाँ संयोग और वियोग होता है, जहाँ बनाना और मिटना होता है वहाँ राग द्वेष होता है। इस राग द्वेष और मोह से ऊपर उठने के लिए जैन आचार्यों ने कायोत्सर्ग की साधना करने को बतलाया है।

कायोत्सर्गः- जहाँ जन्म है वहाँ मरण है, जो बनता है वह मिटता है, यही वस्तु तत्व है, यही वस्तु का धर्म है, लेकिन इस बनने और मिटने में जो इष्ट अनिष्ट रुप मोह भाव है वही सुख दुःख का कारण है। इस मोह भाव से ऊपर उठने के लिए अभ्यास के तौर पर कायोत्सर्ग का विधान भगवान ने किया है। कायोत्सर्ग अध्यात्म की प्रथम सीढ़ी है, तनाव से मुक्ति का साधन है, मन को एकाग्र करने का सरल उपाय है यह जन्म मरण से छुटकारा पाने का एक तरीका है।

कायोत्सर्ग सब पाप मेटता और मेटता जन्म मरण।
आत्म ध्यान अरु भेद ज्ञान का यही कहा है प्रथम चरण ।।
काया माया जड़ वस्तु है निज चेतन से अलग सदा ।
ऐसा चिंतन करना ज्ञानी कायोत्सर्ग में आप सदा ।।

The head symbolises knowledge, wisdom and intelligence and the feet symbolise conduct, but the wisdom and discretion of the bewitched person does not work, hence he becomes crazy and has bad conduct. His feet start moving towards misconduct and he starts talking about here and there (nonsense). That's why people say don't talk without thinking. Those who talk and behave like this are not worthy of worship. Due to attachment and ignorance, those who worship such people as sages and saints, one day themselves become sinful. Whereas one who worships Veetaraagi saints, one day he himself becomes worshipable (people worship him too). One day one who lives in nature becomes self-sufficient. O learned ones! Don't be afraid of death but definitely be afraid of attachment. True worship of the true Guru done with prudence and intelligence makes the worshipper adorable and one day helps him attain true happiness.

Every day lakhs of people fall ill, thousands die, but no one suffers. Suffering occurs only when there is attachment to it. Where there is a feeling of 'yours and mine', there is a feeling of attachment. When there is no feeling of attachment even after the loss of loved one and bad happening , then there is a feeling of happiness. When there is loss of near dears and bad happening, then there is sorrow. Where there is coincidence, there is separation as a rule. Where there is union and separation, where there is creation and destruction, there is attachment and hatred. To rise above this attachment, hatred and attachment, Jain Acharyas have advised to practice Kayotsarg.

KAYOTSARG: - Where there is birth there is death, whatever is created also disappears, this is the essence of the thing, this is the religion of the thing, but in this creation and destruction, the feeling of attachment, good or bad, is the cause of happiness and sorrow. To rise above this attachment, God has prescribed Kayotsarg as a practice. Kayotsarg is the first step of spirituality, it is a means of getting relief from stress, it is a simple way to concentrate the mind, it is a way to get rid of birth and death.

Kayotsarga removes all sins and eliminates birth and death
This is the first step of self-meditation and discriminate knowledge.
Body and illusion are inanimate objects, always separate from our consciousness (kaya maya jad vastu hai nij chetan se alag sada)
You will always think like this in the Gyani Kayotsarga.

स्वतंत्रता और निराकुलता

स्वाधीनता में निराकुलता है। पराधीनता में आकुलता है। जहां आकुलता है वहाँ दुःख है। जहाँ निराकुलता है वहाँ सुख है। इसीलिए स्वाधीनता सबसे बड़ा सुख है। पराधीनता सबसे बड़ा दुःख है। कहा भी गया है कि–पराधीन सपने सुख नाही। पराधीनता में मानवाधिकार की बात करना व्यर्थ है।

चरित्रहीनता स्वतंत्रता को परतंत्रता में बदल देती है। देशवासियों को विदेशी ताकतों से स्वतंत्र बनाने के लिए एवं निराकुलता पैदा करने के लिए मिलिट्री होती है। देश में शांति बनाएँ रखने के लिए पुलिस होती है। पुलिस आंतरिक शक्ति है और मिलिट्री बाहरी शक्ति है। दोनों सुख, शांति और अहिंसा के लिए होती है। दोनों शक्तियाँ अधिकार दिलाने और कर्तव्य जगाने के लिए होती हैं। प्रत्येक नागरिक के अंदर राष्ट्रीय चेतना जागना चाहिए। उसे जगाने के लिए प्रशिक्षण होना चाहिए। लोकतांत्रिक देश में देश की काविल जनता को होना चाहिए। देश भक्त होने के लिए सद् चारित्र और निष्ठा होना जरुरी है।

यदि देश की हर सिटी को हम स्मार्ट सिटी बनाना चाहते हैं, तो हर नागरिक के अंदर स्मार्ट विचारों को भी पैदा करना होगा। जनता के स्मार्ट बने बिना देश स्मार्ट नहीं बन सकता है। आचार–विचार का अधिकार, कर्तव्य, स्वतंत्रता एवं निराकुलता से घनिष्ठ संबंध है। इसके लिए सत्य, अहिंसा, अनेकांत, स्याद्वाद, सहिष्णुता, नैतिकता और राष्ट्रीयता का प्रशिक्षण जरूरी है। जितना प्रशिक्षण भौतिक संसाधनों का दिया जा रहा है, उतना यदि राष्ट्रीय कर्तव्य चेतना एवं नैतिकता को जगाने का दिया जाता तो आज हमारा देश पूरे विश्व में हर दृष्टि से प्रथम स्थान पर होता। देश में हिंसा, आतंक, मादकता, अनैतिकता और भ्रष्टाचार का बोलबाला नहीं होता, तो आर्थिक विकास भी घोड़े की तरह दौड़ रहा होता। दिगम्बर जैन संत यह कार्य कर रहे है इसीलिए जैन सर्वाधिक अनुशासित, सुखी, संपन्न, शिक्षित, अहिंसक एवं नैतिक है और आबादी का 0.4% होकर सर्वाधिक 25% टैक्स देश की प्रगति के लिए दे रहे है।

Freedom and Nonanxiety

There is freedom in nonanxiety. There is anxiety in dependence. Where there is anxiety there is sorrow. Where there is peace, there is happiness. That is why freedom is the greatest happiness. Dependence is the greatest sorrow. It has also been said that dependent dreams are not happiness. It is meaningless to talk about human rights under subjugation.

Characterlessness transforms freedom into dependence. The military exists to make the countrymen independent from foreign forces and to create peace. Police is there to maintain peace in the country. Police is the internal power and military is the power to protect against foreign troubles.. Both are for happiness, peace and non-violence. Both powers are there to provide rights and to awaken duties. National consciousness should awaken within every citizen. There should be training to awaken him. In a democratic country, there should be competent people of the country. To be a patriot, it is necessary to have good character and loyalty.

If we want to make every city of the country a smart city, then smart thoughts will also have to be inculcated in every citizen. The country cannot become smart without the people becoming smart. Ethics is closely related to rights, duties, freedom and nonanxiety. For this, training in truth, non-violence, diversity, wisdom, tolerance, morality and nationalism is necessary. If as much training was given in terms of material resources as it was given in awakening national duty consciousness and morality, today our country would have been at first place in the entire world in every aspect. If violence, terror, drug addiction, immorality and corruption were not rampant in the country, economic development would also have been running like a horse. Digambar Jain saints are doing this work, that is why Jains are the most disciplined, happy, prosperous, educated, non-violent and moral and even though only 0.4% of the population, they are paying maximum 25% tax for the progress of the country.

लोकतांत्रिक देश में देश का मालिक कौन है ? इस प्रश्न का उत्तर यही दिया जाता है कि हर नागरिक इस देश का मालिक है, इसलिए हर नागरिक को योग्य, नैतिक, आस्तिक और कर्त्तव्य परायण बनाना चाहिए। लोकतांत्रिक देश में नागरिक अधिकार तो चाहते हैं, पर कर्तव्य नहीं करते हैं और योग्यता हासिल नहीं कर रहे हैं इसी कारण सब समस्याओं में सबसे बड़ी एवं जटिल समस्या है कर्तव्य का पालन। यदि इस समस्या का समाधान हो जाए तो देश की सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। समस्या के समाधान हेतु हर मानव के जीवन में अहिंसा का प्रयोग होना चाहिए।

अहिंसक जीवन

मानव जीवन में हर कदम पर हर क्षण अहिंसा का प्रयोग होना चाहिए। बौद्धिक स्तर बढ़ने के साथ नैतिक स्तर बढ़ना चाहिए। अहिंसक संस्कारों का होना चाहिए। अहिंसक चेतना जागृत होना चाहिए। नैतिक और सुसंस्कारों के लिए, स्वास्थ्य लाभ और अर्थ लाभ हेतु अहिंसक वस्तुओं का प्रयोग होना चाहिए। खानपान अहिंसक होना चाहिए। कत्लखाने बंद होने चाहिए। आत्महत्या एवं पर हत्या से बचने के विचार पैदा करने का उपदेश (शिक्षण) होना चाहिए। व्यवसाय अहिंसक होना चाहिए। मन और इंद्रियों पर नियंत्रण होना चाहिए। भोग विलास में संयम होना चाहिए एवं मन की चंचलता कम होना चाहिए। ऐसी शिक्षा, आचार विचार वाले किसी के मौलिक अधिकारों का हनन नहीं करते, सदा कर्तव्य निष्ठ रहते हैं, दूसरों की स्वतंत्रता नहीं छीनते हैं।

आत्म सुख और विश्व शान्ति

दिल में आनंद, आत्म सुख और विश्व शांति के लिए अंतस चेतना का विकास जरूरी है। मन की चंचलता और इंद्रियों का अशुभ व्यापार रोकना जरूरी है। आत्मिक स्तर को छोड़कर शारीरिक स्तर तक सोचने वाला व्यक्ति मन और इंद्रियों को नहीं जीत सकता है। मन की चंचलता और इंद्रियों का जब तक अशुभ व्यापार रहता है, तब तक विश्व में शांति की कल्पना नहीं की जा सकती। संवेग और वैराग्य की भावना अपराध करने से स्वयं को रोकती है, प्रेम दया और करुणा का दिल में संचार करती है, राग–द्वेष, पक्षपात और संग्रहवृत्ति को छोड़ने एवं व्रत, संयम, तप, त्याग रूप नैतिक चारित्र की ओर बढ़ने को प्रेरित करती है।

Who is the owner of the country in a democratic country? The answer to this question is that every citizen is the owner of this country, therefore every citizen one should be made capable, moral, trustworthy and dutiful. In a democratic country, citizens want rights, but do not do their duties and are not acquiring qualifications, that is why the biggest and most complex problem among all the problems is the fulfillment of duties. If this problem is solved then all the problems of the country will be solved. To solve the problem, non-violence should be used in the life of every human being.

Nonviolent Life

Non-violence should be used at every step and every moment in human life. With increase in intellectual level the moral level should increase. There should be non-violent values. Non-violent consciousness should be awakened. For moral and good values, non-violent things should be used for health benefits and economic benefits. Food should be non-violent. Slaughterhouses should be closed. There should be preaching (teaching) to create thoughts of avoiding suicide and murder. Business should be non-violent. There should be control over the mind and senses. There should be restraint in pleasures and the restlessness of the mind should be reduced. Those with such education and moral thoughts do not violate anyone's fundamental rights, always remain dutiful, and do not snatch away the freedom of others.

Self Happiness and World Peace

Development of inner consciousness is necessary for joy in the heart, self-happiness and world peace. It is important to stop the restlessness of the mind and the inauspicious business of the senses. A person who thinks only at the physical level, leaving aside the spiritual level, cannot conquer the mind and senses. As long as there is fickleness of mind and inauspicious business of senses, peace cannot be imagined in the world. The feeling of emotion and dispassion stops oneself from committing crimes, infuses love, kindness and compassion in the heart, inspires to leave attachment-hatred, partiality and accumulation of tendencies and move towards moral character in the form of fasting, restraint, penance and renunciation.

चारित्र की महिमा

चारित्रं खलु धम्मो। चारित्रं एवं जीवनं। चारित्रं एवं धनं। चारित्रं एवं शान्ति कारणं। चारित्रं एवं मोक्ष साधनं।

अर्थात् चारित्र ही निश्चय से धर्म है। चारित्र ही निश्चय से जीवन है। चारित्र ही धन है। चारित्र ही शान्ति का कारण है। चारित्र ही मोक्ष का साधन है।

चरित्रहीनता एव अधर्मम्। चरित्रहीनता एव अशांति कारणम्। चरित्र हीनता एव दारिद्रम्। चरित्र हीनता अधिकार हनन कारणम्।

अर्थात् चरित्रहीनता ही अधर्म है। चरित्रहीनता ही अशांति का कारण है। चरित्रहीनता ही गरीबी है, चरित्रहीनता ही मानवाधिकार के हनन में कारण है। इसीलिए चरित्रवान व्यक्तियों को राजनीति, शासन और प्रशासन में आगे लाना चाहिए। प्रत्येक नागरिक को चरित्रवान बनने का उपदेश देना चाहिए और चारित्रवान बनने के साधन जुटाने चाहिए।

चरित्रवान व्यक्ति को अणुबम की नहीं अणुव्रतों की जरूरत होती है। चरित्रवान व्यक्ति अणुबम पर नहीं अणुव्रतों पर आस्था रखता है। वह भौतिक विकास की अवधारणा से अधिक आध्यात्मिक विकास की अवधारणा वाला होता है।

विकास एक मानवीय गुण है

उन्नति करना मानव का स्वभाव है। उन्नति के लिए प्रत्येक मानव पुरुषार्थ करता है, प्रार्थना करता है, अनेक योजनाएँ बनाता है, संकल्प–विकल्प करता है, प्रतिस्पर्धा करता है, ज्ञान, विज्ञान और आत्म ज्ञान करता है। धन–संग्रह करता है, परिचय और परिवार बढ़ाता है और इस उन्नति अर्थात् विकास की प्रगति की चाहत में न्याय–नीति को भूलकर अनर्थ भी कर बैठता है। इस युग में अर्थ के विकास को उन्नति या प्रगति का कारण माना जा रहा है। इसीलिए अर्थ का विकास ही सर्वोपरि हो गया है।

अर्थ के विकास के लिए अर्थशास्त्र लिखे जा रहे हैं। अर्थशास्त्र पढ़े जा रहे हैं। अर्थ–शास्त्रों में अर्थ के मूल्यों का प्रतिपादन किया जाता है। धर्मशास्त्रों में धर्म, अर्थ और समाज के मूल्यों का और समाज शास्त्रों में समाज के मूल्यों का प्रतिपादन है।

The Greatness of Character

"Chaaritram Khalu Dhammo, chaaritram evam jivnam Chaaritram evam Shanti karnam, chaaritram evam moksh sadhnam"

Meaning : Character is indeed the Dhamma, and character is the life. Character is wealth. Character is thus the cause of peace. Character is thus the means of salvation.

That is, character is certainly religion. Character is certainly life. Character is wealth. Character is the cause of peace. Character is the means of salvation.

"Lack of character is iniquity. Lack of character is the cause of unrest. Lack of character is poverty. Lack of character is the cause of violation of rights."

That is, lack of character is iniquity. Lack of character is the cause of unrest. Characterlessness is poverty, characterlessness is the cause of human rights violations. That is why characterful individuals should be brought forward in politics, governance and administration. Every citizen should be taught to be characterful and should gather the means to become characterful.

A person of character needs vows of householder (anuvrat) not atomic bombs. A person of character believes in vows of a householder, not nuclear bombs. He is a person more of a spiritual development than physical development.

Development is a Human Trait

It is human nature to advance. Every human being strives for advancement, prays, makes many plans, makes resolutions, competes, gains knowledge, science and self-knowledge. He accumulates wealth, increases his acquaintance and family and in the desire for this advancement, that is, the progress of development, he forgets the policy of justice and commits mischief. In this age, the growth of wealth is being considered as the cause of advancement or progress. That is why the development of wealth has become paramount.

Economics is being written for the development of wealth. Economics policy is being studied. Economics represents the values of wealth. The theological scriptures represent the values of religion, wealth and society and the sociological scriptures represent the values of society.

अर्थशास्त्र को पढ़ने वाले अर्थ के मूल्यों को महत्व दे रहे हैं। महत्व देना स्वाभाविक है क्योंकि अर्थ के बिना किसी प्रकार की भौतिक उन्नति या प्रगति संभव नही है। अतः ज्ञान, विज्ञान और इन्सान का उपयोग भी आज अर्थ विकास के लिए किया जा रहा है। लेकिन धर्म शास्त्रों में धर्म, अर्थ, काम, परिवार, समाज आदि सभी के विकास का प्रतिपादन होने से उनका अध्यापन होना चाहिए।

आर्थिक विकास और अनेकान्तवाद

मानव जीवन के अनेक अंग है। इनमें सामाजिक, पारिवारिक, अध्यात्म आदि विकास के अंग को छोड़कर एकांगी मात्र आर्थिक विकास की दृष्टि रखकर धनसंग्रह करने और फिर उसे विषय भोगों में लगाने से हिंसा में वृद्धि होती है। एक मात्र आर्थिक विकास और भोग विलासिता का दृष्टि कोण शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, प्राकृतिक, भावनात्मक और व्यक्तिगत असंतुलन, अशान्ति और समस्याएँ पैदा करता है। इस आर्थिक विकास और भोगाकांक्षा ने गरीबी को घटाने के बजाय बढ़ाया है। पवित्र मानव जीवन को मकडी के जाल में फँसाया है और जीवन को परतंत्र बनाया है इसलिए एकान्त नही अनेकांत चाहिए।

स्वास्थ्य, संतुलन और पर्यावरण के बिगड़ जाने पर अर्थनीति बिगड़ जाती है। आर्थिक समस्या से घिरा हुआ व्यक्ति या देश परतंत्र हो जाता है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता, व्यवसायिक स्वतंत्रता, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक स्वतंत्रता, संवैधानिक स्वतंत्रता, पारिवारिक स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता, भोगोपभोग की स्वतंत्रता एक–दूसरे के सापेक्ष रह कर समन्वय से ही बन सकती है। एक–दूसरे के सापेक्ष रहने का अर्थ है अनेकांत।

परतंत्रता दुखदाई है। स्वतंत्रता कल्याणकारी और सुखदाई है। अनेकांत के बिना आध्यात्मिक और भौतिक जीवन में, अमीर और गरीब में, अर्थ और परमार्थ में, समाज और परिवार में, राजा और प्रजा में, राजनीति और धर्म नीति में समन्वय और सापेक्षता नहीं बन सकती है। जन्म और मरण, चेतना और अचेतना, उत्पाद और व्यय ये एक दूसरे के विरोधी तत्व हैं। उन तत्वों में समन्वय स्थापित करना अनेकांत के सिद्धांत से ही संभव है। समन्वय चाहे व्यक्ति का हो या राष्ट्र का हो, चाहे समाज का हो या आत्मा का हो वह समन्वय अनेकांत के बिना नहीं बन सकता है। एकांतवाद हटागृह पैदा करता है। हटागृह अशांति का कारण होता है। हटागृह सामाजिक जीवन को जीने में बाधक है, हटागृह बाजार में एकाधिकार जमाना चाहता है।

Those who are reading economics give value to wealth. It is natural to give importance because without wealth no material progress or progress is possible. Therefore, knowledge, science and humans are also being used for economic development today. But religious scriptures should be taught because of the development of religion, wealth, work, family, society etc.

Economic Development and Pluralism

There are many aspects of human life. In these, leaving aside the aspects of social, family, spiritual development etc. just collecting money with a single-minded focus on economic development and then using it for materialistic pleasures, violence increases. The vision of only economic development and luxury creates physical, mental, family, social, political, natural, emotional and personal imbalances, unrest and problems. This economic development and aspiration has increased poverty instead of reducing it. Sacred human life has been trapped in the spider's web and life has been made dependent, hence we do not need living separately but we need anekant (pluralism)

When health, balance and environment deteriorate, economic policy deteriorates. A person or country surrounded by economic problems becomes dependent. Personal freedom, professional freedom, economic freedom, social freedom, constitutional freedom, family freedom, religious freedom, freedom of enjoyment can be achieved only by living in relation to each other and through coordination. Being relative to each other means pluralism.

Dependence is painful. Freedom is beneficial and pleasant. Without pluralism Anekant, there cannot be coordination and relativity in spiritual and material life, between rich and poor, in wealth and charity, in society and family, between king and people, in politics and religious policy. Birth and death, consciousness and unconsciousness, production and expenditure, these are elements opposing each other. Establishing coordination among those elements is possible only through the principle of Anekant. Be it coordination of an individual or of a nation, of society or of a soul, that coordination cannot be achieved without Anekant. Isolationism creates isolation (hatagrah). Hataagriha (Isolation, Individualism) is the cause of unrest. Hatagriha is a hindrance in living social life, Hatagriha wants to establish monopoly in the market.

देश और समाज के बीच अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है। इसीलिए हटागृह अशांति पैदा करता है, आर्थिक समस्या पैदा करता है, समाज को विभाजित करता है, संबंधों को बिगाड़ता है और मौलिक अधिकारों को छीनता है जबकि संबंधों के बिना सामाजिक जीवन चल नहीं सकता, व्यवसाय चल नहीं सकता और मौलिक अधिकार रह नहीं सकते हैं।

विकास किसका और कितना

विश्व में शांति लाने के लिए विकास भी एक निश्चित सीमा तक होना चाहिए। जब इच्छाएँ असीमित होती हैं तब विकास भी असीमित करने की सोच पैदा होती है। असीमित विकास की अवधारणा असीमित समस्याओं को पैदा करती है! असीमित इच्छाएँ ही अणु बम और परमाणु बम इत्यादि अस्त्र–शस्त्र की देन है। इन अस्त्र–शस्त्रों से दिख रहा वर्तमान का विकास, भविष्य के लिए विनाश का ही कारण है। धार्मिक अणुव्रतों का धारण, संयम (नैतिकता) का पालन और आध्यात्मिक ग्रंथों का पठन–पाठन, चेतना और अचेतना (भौतिक और आध्यात्मिक) जगत दोनों के उज्जवल भविष्य और विकास का कारण है। इस बात को आज के युवा चाहे माने या न माने परंतु जब विवेक और बुद्धि ठिकाने आएगी तब इसे स्वीकार करना ही पड़ेगा। क्योंकि अति सर्वत्र वर्जयेत्। जहाँ अति है वहाँ इति है। अथवा विनाश काले विपरीत बुद्धि वाली बात चरितार्थ होती है।

भौतिक विकास की सीमा होती है। आध्यात्मिक विकास की कोई सीमा निश्चित नही होती वह असीमित हो सकता है। केवल चर्चा, भाषण, चिंतन, विचार, संगोष्ठी और पेपर बाजी से विश्व में शांति नहीं आएगी। शांति स्थापित करने के लिए इच्छाओं पर नियंत्रण और इंद्रियों पर लगाम जरूरी है। अध्यात्म हमें नियंत्रण देता है, शास्त्र देता है, शांति देता है, अनुभूति देता है, संकल्प शक्ति देता है और नैतिक बना देता है, जबकि विज्ञान हमें शस्त्र देता है, अशांति देता है, इच्छाएँ देता है, और अनैतिक बना देता है।

विज्ञान हमें ईट, मिट्टी गारे के मकान, मोटर गाड़ी और अस्त्र–शस्त्र देता है और अचेतना के विकाश की ही सोच देता है, जबकि अध्यात्म हमें श्रद्धा, विश्वास, ज्ञान, ध्यान, संयम और संकल्प आदि चेतना के विकास की सोच देता है। अब आज के युवक विचार करें कि विश्व में शांति किससे आएगी? उत्तर मिलता हैं आध्यात्मिकता से। आध्यात्मिक शक्ति के बिना अर्थ शक्ति और, राजनीतिक शक्ति दोनों ही दिशा हीन और बेकाबू हो जाती हैं।

Wants to establish its dominance among the country & society. That is why Hatagriha creates unrest, creates economic problems, divides the society, spoils relations and snatches the fundamental rights whereas without relations social life cannot run, business cannot run and fundamental rights cannot exist.

WHOSE DEVELOPMENT & HOW MUCH

To bring peace in the world, development should also happen to a certain extent. When desires are unlimited then the thought of unlimited development also arises. The concept of unlimited growth creates unlimited problems. Unlimited desires are the gift of weapons like atom bomb and atomic bomb etc. The present development seen through these weapons is the cause of destruction for the future. Observance of religious vows, observance of samyama (morality) and reading of spiritual texts are the reason for the bright future and development of both the conscious and unconscious (physical and spiritual) world. Today's youth may believe this or not, but when their wisdom and intelligence come to their senses, they will have to accept it. Because excess is prohibited everywhere. Where there is excess, there is end.

"Vinash kaaley vipreet buddhi"

Meaning that when the time for destruction comes the intellect runs in opposite direction.

There are limits to physical development. There is no definite limit to spiritual development, it can be unlimited. Peace in the world will not be achieved through mere discussion, speech, reflection, ideas, seminars and paper games. To establish peace, it is necessary to control the desires and control the senses. Spirituality gives us control, the scriptures give it. It gives us peace, gives us experience, gives us determination and makes us moral, whereas science gives us weapons, gives us unrest, gives us desires, and makes us immoral.

Science gives us bricks, mud and mortar houses, motor vehicles and weapons and gives us the idea of development of unconsciousness, whereas spirituality gives us the idea of development of consciousness like faith, belief, knowledge, meditation, restraint and determination etc. Now the youth of today should think about what will bring peace in the world? The answer comes from spirituality. Without spiritual power, both economic power and political power become directionless and uncontrolled.

विज्ञान, विवेक और विकास

तकनीकी का विकास हो परंतु विवेक पूर्वक हो। ज्ञान, तकनीकी को विकसित करता है। अध्यात्म विवेक को विकसित करता है। विवेक के बिना बुद्धि का विकाश भी विनाश का कारण होता है। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान के साथ विवेक और सदाचरण के विकास का होना चाहिए तभी वह शिक्षा विश्वशांति का कारण बन सकती है।

चारित्रिक विकास से इस भव और पर भव में सुख, शान्ति और आनंद की अनुभूति मिलती है और सद्‌गति होती है।

विकास प्राकृतिक होना चाहिए। जिस विकास में हिंसा नहीं होती है, प्रकृति का शोषण नहीं होता है, दूसरों को दुःख तकलीफ नहीं होती है, ऐसे विकास को प्राकृतिक विकास कहते हैं। जिस तरह खेती से फल, फूल, अनाज आदि का उत्पादन, दुग्ध उत्पादन, खेती से कपास आता है। कपास से वस्त्र उत्पादन होता है।

पशुओं की हत्या करके मांस का उत्पादन करना प्राकृतिक उत्पादन नहीं है। शेयर बाजार से या वायदा व्यापार से धनार्जन करना प्राकृतिक नहीं है, और न कोई विकास है। ऐसा विकास छल, कपट होने से अनैतिक है, और विनाश का कारण है। वायदा व्यापार होने से होने वाला विकास अनैतिक विकास है वह सम्यक विकास नही।

वायदा व्यापार के परिणाम

वायदा व्यापार से वस्तु का आदान–प्रदान नहीं होता है, बल्कि बातों का जमा खर्च होता है। बातों के जमा खर्च से देश का विकास नहीं होता है। बातों का जमा खर्च केवल दिमाग खाने के अलावा कुछ नहीं है। वायदा व्यापार का नाम ही मायावी दुनियाँ है। इस मायावी दुनियाँ में फंसा व्यक्ति एक न एक दिन तबाह हो जाता है। अनेक परिवार तवाह हो गये है। अनेक व्यक्ति तो आत्म हत्या करके अपना जीवन समाप्त कर चुके हैं।

जब दो वस्तु मिलकर तीसरी वस्तु उत्पन्न करें तब उसको हम विकास कहते हैं। उसका नाम विकास या वृद्धि है। इसलिए उत्पादन को बढ़ाना चाहिए, तभी देश, समाज और संस्कृति का विकास संभव है। वास्तव में उत्पादन का विकास ही सही विकास है।

Science Wisdom and Development

Technology should develop but with discretion. Knowledge develops technology. Spirituality develops wisdom. Development of intelligence without discretion also leads to destruction. The aim of education should be to develop wisdom and good conduct along with knowledge, only then that education can become the cause of world peace.

Character development leads to happiness, peace and joy in this life and the next and leads to salvation.

Development should be natural. The development in which there is no violence, no exploitation of nature and no suffering to others is called natural development. Just as farming produces fruits, flowers, grains etc., milk production, farming produces cotton. Clothes are produced from cotton.

Producing meat by killing animals is not natural production. Earning money from stock market or futures trading is not natural, and neither is there any development. Such development is unethical due to deceit and fraud, and is the cause of destruction. The development resulting from futures trading is unethical development and not proper development.

Results of Future Trading

Futures trading does not involve exchange of goods, but rather give & take of words (trading by talking only). The country does not develop by give&take on words. The accumulated expenditure of words is nothing more than just eating the brain. The very name of futures trading is an illusory world. A person trapped in this illusory world gets destroyed one day or the other. Many families have been ruined. Many people have ended their lives by committing suicide.

When two things come together to produce a third thing then we call it development. Its name is development or growth. Therefore, production should be increased, only then development of the country, society and culture is possible. In fact, growth of production is the true development.

धर्म, विज्ञान और शान्ति

धर्म और विज्ञान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जहाँ धर्म और विज्ञान है, वहाँ सुख, शान्ति, समन्वय, सहिष्णुता, अनुभूति, विकास और विश्वास है। जहाँ धर्म है, वहाँ मूल अधिकार सुरक्षित है क्योंकि धर्म हमें सहिष्णुता, समन्वयता, परोपकारिता,कर्तव्य परायणता, विकास करना और वस्तु की उपयोगिता सिखाता है।

सच्चा धर्म

सच्चा धर्म वही है जो श्रद्धा, भक्ति, विवेक, बुद्धि, विज्ञान, उच्च आचार और विचार पर आधारित है। विज्ञान प्रयोग पर आधारित है। सच्चा धर्म, सच्ची श्रद्वा, ज्ञान और आत्मानुभूति पर आधारित है। जो बैर, विरोध, कट्टरता और नफरत के बीज बोता है, वह सच्चा धर्मात्मा नही हो सकता है। बैर, विरोध, क्रोध और कट्टरता की स्थिति में संघर्ष लड़ाई,झगड़े और युद्ध के बीज पल्लवित होते हैं।

धर्म का उद्देश्य

धर्म का उद्देश्य आत्मा की अनुभूति का,आत्मा के कल्याण का और मोक्ष मार्ग के संचालन करने का होता है। उसी के साथ राजनीति, समाज नीति, देश नीति के अनुसार समन्वयबनाकर देश में शातिं बनाये रखकर देश और परिवार को संचालित करने का होता है। लेकिन राजनीति का उद्देश्य एक मात्र राज्य को संचालित करने का होता है, इसलिए राजनीति से ज्यादा महत्व धर्म का हो जाता है।

मानव जाति में विद्वेष क्यों?

मानव जाति एक है तो धर्म भी एक होना चाहिए, वह है आपस में भाईचारा। लोकतांत्रिक देशों में आचार–संहिता भी एक होनी चाहिए। भक्ति, आराधना, श्रद्धा और मान्यता अलग–अलग हो सकती हैं लेकिन आचार संहिता एक बनाई जा सकती है। यह तभी संभव है, जब अनेकान्त, स्यादवाद्, सत्य, अहिंसा और अपरिग्रहवाद को महत्त्व दिया जाए। एक दूसरे में सम्मान की भावना जगाई जाये। राष्ट्रीयता की शिक्षा दी जाये।

Religion, Science and Peace

Religion and science are two sides of the same coin. Where there is religion and science, there is happiness, peace, coordination, tolerance, realisation, development and faith. Where there is religion, the fundamental rights are protected because religion teaches us tolerance, coordination, altruism, devotion to duty, development and usefulness of things.

True Religion

True religion is that which is based on faith, devotion, prudence, intelligence, science, high conduct and thoughts. Science is based on experiment. True religion is based on true faith, knowledge and self-realisation. One who sows the seeds of hostility, fanaticism and hatred cannot be a true religious person. In a situation of hatred, opposition, anger and fanaticism, the seeds of conflict and war flourish.

Purpose of Religion

The purpose of religion is to realise the soul, for the welfare of the soul and to navigate the path of salvation. Along with this, there is a need to maintain peace in the country and run the country and the family by maintaining coordination as per the politics, social policy and country's policy. But the sole purpose of politics is to run the state, hence religion becomes more important than politics.

Why Hatred in Manking

If mankind is one then religion should also be one, that is brotherhood among ourselves. The code of conduct should also be uniform in democratic countries. Devotion, worship, reverence and belief may be different but one code of conduct can be made. This is possible only when importance is given to Anekant, Syadvad, Truth, Non-violence and Aparigrahaism. A sense of respect should be instilled in each other. Nationalism should be taught.

एकांतवाद और परिग्रहवाद

एकान्तवाद और परिग्रहवाद तो संघर्ष, तनाव और हिंसा को जन्म देता है, लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि सत्य, अहिंसा, अनेकान्त के सिद्धांत की बातें मात्र करने से विकास और शांति नहीं होगी बल्कि उन सिद्धांतों पर चलना भी होगा।

धर्म ग्रंथ और मौलिक अधिकार

योग, अध्यात्म, विज्ञान और कला ये सभी जैन धर्म के मौलिक आधार रहे हैं। अध्यात्म के पास अनुभूति है। विज्ञान के पास प्रयोगों द्वारा सिद्ध करने की प्रयोगशाला है। आध्यात्मिक जगत में अनुभूति ही प्रयोगशाला है। अनुभूति की प्रयोगशाला में ज्ञान, ध्यान, तप, व्रत उपवास आदि अनेक उपकरण हैं। धर्म ग्रथों में जो सत्य, सहयोग, परोपकार और जियो और जीने दो के सिद्धांत की बात कहीं हैं वही मौलिक अधिकार हैं। वही सुख, शांति, विकास और समन्वय का अधिकार है।

ज्ञान का सार

ज्ञान का सार अनुभूति और आचरण है। दर्शन के आधार पर आचार–संहिता का होना होता है। वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर कोई आचार–संहिता नहीं बनाई जा सकती है। योग और अध्यात्म का मुख्य उद्देश्य सत्य, अहिंसा, अनुभूति, सुख और शांति प्राप्त करने का रहा है। अहिंसा सब का आधार भी है और आचार–विचार भी है। अहिंसा का व्यापक रूप अंतस चेतना को जागृत करने का रहा है। अंतस चेतना जागृत होने पर उच्च आचार–विचार, व्रत, संयम और उज्जवल भविष्य का निर्माण होता है। विज्ञान सुविधा के साधन देता है, भौतिकता का विकास करता है लेकिन अन्तस चेतनता को जागृत नहीं कर सकता है। समता और सहनशीलता के दृष्टि कोण को उत्पन्न नहीं कर सकता है। जब तक सुविधावादी और विकासवादी दृष्टि कोण उत्पन्न नहीं होता तब तक पर्यावरण, युद्ध और आतंकवाद आदि की समस्या सुलझ नहीं सकती है। अतिसुविधा और अतिविकास जीवन और लोक तान्त्रिक व्यवस्था में असंतुलन पैदा करता है, पर्यावरण को प्रदूषित करता है इसलिए इतना विकास होने के बाद भी अशान्ति है। पुनः अध्यात्म की ओर बढ़ना पड़ रहा है और शहर से गांव की ओर लौटना पड़ रहा है ।

शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा के अनेक उद्देश्य हैं लेकिन उनमें दो उद्देश्य मुख्य हैं। एक आजीविका का निर्वाह, दूसरा सद्गति की प्राप्ति। आध्यात्मिक शिक्षा दोनों उद्देश्यों की पूर्ति करती है, मानवीय चेतना को बदलती है और सद्गति के साथ–साथ आजीविका आदि की समस्या का समाधान भी करती है।

Isolationism and Alienationism

Isolationism and alienationism give rise to conflict, tension and violence, but keep in mind that merely talking about the principles of truth, non-violence and diversity will not lead to development and peace, but those principles will also have

Religious Scriptures and Fundamental Rights

Yoga, spirituality, science and art have all been the fundamental bases of Jainism. Spirituality has experience. Science has the laboratory to prove through experiments. In the spiritual world, experience is the laboratory. There are many tools in the laboratory of cognition like knowledge, meditation, penance, fasting etc. The principles of truth, cooperation, charity and live&let live mentioned in the religious texts are the fundamental rights. That is the right to happiness, peace, development and coordination.

Essence of Knowledge

The essence of knowledge is perception and behaviour. There is a code of conduct based on philosophy. No code of conduct can be made on the basis of scientific principles. The main objective of yoga and spirituality has been to achieve truth, non-violence, realisation, happiness and peace. Non-violence is the basis of everything and is also a moral idea. The broader form of non-violence has been to awaken the inner consciousness. When the inner consciousness is awakened, high morals, fasting, restraint and a bright future are created. Science provides means of convenience, develops materialism but cannot awaken inner consciousness. Cannot generate vision of equality and tolerance. The problems of environment, war and terrorism etc. cannot be solved until a convenient and evolutionary point of view is developed. Over-convenience and over-development creates imbalance in life and democratic system, pollutes the environment, hence even after so much development there is unrest. We have to move towards spirituality again and return from the city to the village.

Objectives of Education

There are many objectives of education but two objectives are main among them. One is livelihood and the other is attainment of salvation. Spiritual education serves both the purposes, changing human consciousness and solving the problems of salvation as well as livelihood etc.

विज्ञान मानवीय चेतना को नहीं बदल सकता है। अतः विज्ञान सद्गति प्रदान नहीं कर सकता है। आजीविका की समस्या का समाधान कुछ हद तक विज्ञान कर सकता है।

जिस समाज में हिंसा, हत्या, चोरी, डकैती, बलात्कार, लूटपाट, छल कपट, झूठ, कषाय और संग्रहवृत्ति आदि अपराध न हो ऐसी स्वस्थ अहिंसावादी, समतावादी और साम्यवादी समाज के होने का कार्य किया जाना चाहिए, उसीका उपदेश दिया जाना चाहिए और स्वयं को भी वैसा आचरण करके दिखाना चाहिए। हमारे तीर्थंकर भगवंतों और गुरुओं ने जैसा चतुर्थ काल में किया वैसा आज के साधु संत भी कर रहे हैं। अध्यात्म के शिखर पर पहुँचने पर उन्होंने वह सब संभव करके दिखाया है। **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** की भावना उत्पन्न करके संभव कर दिखाया है। मानवीय एकता और मानवीय मूल अधिकारों की रक्षा का मूल आधार सूत्र है अध्यात्म और अहिंसा ।

चेतना जगाने के लाभ

अहिंसक चेतना के जाग जाने पर एक प्राणी दूसरे प्राणी को दुख नहीं पहुँचाना चाहता। जहाँ प्रेम, एकता आत्म नियंत्रण और अपनत्व का जन्म होता है वहाँ हिंसा आदि करने और दुख पहुंचाने का भाव उत्पन्न नहीं होता है। आत्म नियंत्रण का नाम संयम है। आत्म नियंत्रित व्यक्ति संवेदनशील होता है। संवेदनशील मानव अहिंसक होता है।

दुनिया में व्यक्ति हिंसा इसलिए करता है कि उसके अंदर असीम अव्यक्त इच्छाएँ होती हैं। इच्छाओं की पूर्ति जब सहज रूप से नहीं होती तो व्यक्ति हिंसा पर उतारू हो जाता है। अचेतन मस्तिष्क में व्यक्ति के अहंकार, ममकार, मिथ्यात्व और इन्द्रिय सुख भोग भोगने की इच्छा निरंतर बनी रहती है। अहंकार में एक व्यक्ति दूसरों को नीचा दिखाना चाहता है, अपने आप को बड़ा और दूसरों को छोटा समझता है, भेदभाव करता है, अपनी शक्ति बढ़ाना चाहता है और दूसरों पर अधिकार जमाकर अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहता है। ममकार में व्यक्ति यह मेरा है, मैं इसका भोगता हूँ और मैं इसका स्वामी हूँ ऐसे हटाग्रह का भाव उत्पन्न होता है। मिथ्यात्व में व्यक्ति किकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है, वह विपरीत धारणाओं को बना बैठता है और कुछ भी अन्याय अत्याचार आदि करने को तैयार हो जाता है। यही सब मानव के मूल अधिकारों का हनन करने, देश में अशांति और आतंक फैलाने में कारण बन जाता है। ऐसी भावनाओं और क्रियाकलापों को हम अहिंसा और अध्यात्म की शिक्षा से दूर कर सकते हैं। यह शिक्षा आज नहीं तो कल देनी ही होगी।

Science cannot change human consciousness. Therefore science cannot provide salvation. Science can solve the problem of livelihood to some extent.

Work should be done to create a healthy non-violent, egalitarian and socialist society in which there are no crimes like violence, murder, theft, dacoity, rape, looting, deceit, lies, greed and hoarding etc.; the same should be preached and should also be shown by behaving similarly. Just as our Tirthankar Bhagwants and Gurus did in the fourth period, today's sages and saints are also doing the same. After reaching the pinnacle of spirituality, they have made all that possible. This has been made possible by creating the feeling of "Vasudhaiva Kutumbakam". The basic principles of human unity and protection of human fundamental rights are spirituality and non-violence.

Benefits of Awakening Conciousness

When non-violent consciousness is awakened, one living being does not want to hurt another living being. Where love, unity, self-control and belongingness are born, the feeling of violence etc. and causing pain does not arise. The name of self control is restraint. A self-controlled person is sensitive. A sensitive human being is non-violent.

A person commits violence in this world because he has immense latent desires within him. When desires are not fulfilled easily, the person turns to violence. A person's ego, selfishness, falsehood and desire to enjoy sensual pleasures remain constant in his unconscious mind. In ego, a person wants to humiliate others, considers himself big and others small, discriminates, wants to increase his power and wants to establish his empire by dominating others. In Mamkar, a feeling comes that this person is mine, I enjoy it and I am its master. Due to falsehood, a person becomes distracted from his duties, he forms opposite beliefs and becomes ready to do anything unjust, atrocities etc. All this becomes the reason for violating the fundamental rights of human beings and spreading unrest and terror in the country. We can remove such feelings and activities through the teachings of non-violence and spirituality. This education will have to be given if not today or tomorrow.

अशांति, हिंसा और मानवाधिकार

वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व में अशांति और हिंसा का वातावरण इसलिए भी बना हुआ है कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाये शिथिल हो रही हैं। समाज में भय का वातावरण बन रहा है। अनेक समाजों में मांस–मदिरा आदि व्यसन करने की खुल्लम–खुल्ला छूट है। या यूं कहें कि यहाँ रूढ़िवादी परंपरा है। राजनीति में भ्रष्टाचार बढ़–चढ़ कर फैल रहा है। एक पार्टी द्वारा दूसरी पार्टी पर आरोप–प्रत्यारोप का वातावरण बना हुआ है। अर्थव्यवस्था इसलिए गड़बड़ है कि बाजार में प्रतिस्पर्धा और संग्रह वृत्ति बनी हुई है। बड़े लोग बाजार पर एकाधिकार जमा कर बैठे हैं। गरीबी और बेरोजगारी की समस्या जस की तस है। संसार में पदार्थ सीमित है और पदार्थों को भोगने की इच्छाएं आदमी के अंदर असीमित हैं। जब तक ऐसी स्थिति बनी रहेगी तब तक मानवाधिकारों का हनन होता रहेगा। इस समस्या के समाधान में भगवान आदिनाथ स्वामी ने सूत्र प्रतिपादित करते हुआ कहा इच्छा निरोधः तपः अर्थात् इच्छाओं का निरोध करना तप है। अतः जब तक इस इच्छा निरोध रूपी तप को धारण नहीं किया जाएगा तब तक अव्यवस्था को व्यवस्थित नहीं किया जा सकता है।

दूसरा सूत्र भगवान आदिनाथ स्वामी ने दिया है– संयम समस्या समाधानाम् अर्थात् समस्त समस्याओं का समाधान संयम है। संयम धारण करने से बौद्धिक, शारीरिक, आर्थिक, भौतिक और आध्यात्मिक इत्यादि सभी विकास होते हैं। संयम से सारी समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाता है। नफरत, युद्ध, शत्रुता, कलह, संघर्ष, हिंसा, हटाग्रह और अशांति को उत्पन्न करने में क्रोध, लोभ, आवेग, उत्तेजना और अहंकार है। क्रोध, लोभ, आवेग आदि को जीतने के लिए और इंद्रियों को नियंत्रित करने के लिए अंतः स्रावी ग्रंथियों एवं मस्तिष्कीय न्यूरोट्रांस मीटर में परिवर्तन लाना आवश्यक है। ऐसा आधुनिक वैज्ञानिकों का मानना है लेकिन इसमें परिवर्तन आध्यात्मिक भावना से लाया जा सकता है। अध्यात्म योगियों का कहना है कि संवेग, वैराग्य और आत्म भावना अंतस चेतना को नियंत्रित करती है। संवेग, वैराग्य और आत्म भावना का नाम ही अध्यात्म है।

Unrest, Violence and Human Rights

At present, there is an atmosphere of unrest and violence all over the world because the social, political and economic systems are becoming weak. An atmosphere of fear is being created in the society. In many societies, there is open permission to indulge in addiction to meat, liquor etc. Or rather, there is a conservative tradition here. Corruption is spreading rapidly in politics. There is an atmosphere of accusation and counter-accusation by one party against the other party. The economy is in a mess because there is competition and accumulation instinct in the market. Big people have monopolised the market. The problem of poverty and unemployment remains the same. The material things in the world are limited and the desires to enjoy the material things are unlimited within man. As long as this situation continues, human rights will continue to be violated. To solve this problem, Lord Adinath Swami propounded the formula and said: *"Ichcha Nirodh: Tapah"* that is, restraining desires is penance. Therefore, unless this penance in the form of cessation of desires is not practiced, chaos cannot be organized.

The second sutra given by Lord Adinath Swami is: *"Sanyam Prabhu Sampadhanam"* i.e. the solution to all problems is restraint. By exercising self-restraint, all development takes place intellectually, physically, economically, materially and spiritually. With patience all problems are solved automatically. Anger, greed, impulsiveness, excitement and ego are responsible for creating hatred, war, enmity, strife, conflict, violence, arrogance and unrest. To overcome anger, greed, impulsiveness etc. and to control the senses, it is necessary to bring about changes in endocrine glands and brain neurotransmitters. Modern scientists believe so, but change can be brought about through spiritual spirit. Spiritual yogis say that emotion, detachment and sense of self, control the inner consciousness. Spirituality is the name of emotion, dispassion and feeling of self. develop spiritual feelings

आध्यात्मिक भावना पैदा होने पर समन्वय, सामंजस्य, अनेकांत स्याद्वाद, सापेक्षता, दया, करुणा और भाई–चारे की भावना बलवती हो जाती है। ऐसी भावना बाजार में नहीं मिलती बल्कि आध्यात्मिक गुरु की संगति से, प्रभु की भक्ति से और आध्यात्मिक ग्रंथों के पठन–पाठन से उत्पन्न होती है। आध्यात्मिक ग्रंथ का पठन–पाठन करना, गुरुओं की संगति में रहकर सेवा आदि करना धर्म कहलाता है। अतः धर्म व्यर्थ की वस्तु नहीं है बल्कि सुख, शांति और विकास की वस्तु है।

अहिंसा एक शाश्वत, प्राकृतिक, समीचीन, सत्य और वास्तविक धर्म है। जब जब मानव पर मौत के बादल मंडराते हैं तब अहिंसा याद आती है। अहिंसा विधेयात्मक प्रवृत्ति है। हिंसा निषेधात्मक प्रवृत्ति है। जिस दिन अहिंसा धर्म की बात समझ में आती है उस दिन हिंसा से व्यक्ति दूर हटने लग जाता है, मौलिक अधिकरों को समझ कर कर्तव्य करने लगता है।

वर्तमान में कहा जा रहा है कि हिंसा के बिना जीवन नहीं चल सकता है। जीवन में हिंसा अनिवार्य है। यह सोच मानव को मानवता से दानवता की ओर ले जाती है। हिंसात्मक सोच आपत्ति–विपत्ति और समस्याओं के चक्रव्यूह में फँसा देती है। हिंसा मानव को मानवीय मौलिक अधिकारों से भी वंचित करा देती है।

शस्त्र, सैनिक और हिंसा

हिंसा को सारी दुनिया ने स्थान दिया है इसीलिए आज प्रतिदिन हजारों अस्त्र–शस्त्र बन रहे हैं, हजारों लोग सेना में भर्ती हो रहे हैं, हिंसा करने का प्रशिक्षण ले रहे हैं। आज अहिंसा का कोई प्रशिक्षण या प्रयोग नहीं हो रहा है। यदि कोई इसका प्रशिक्षण प्रयोग और उपदेश दे रहा है तो उसकी सुनने वाला और उसका साथ देने वाला हजार में कोई एक होता है। हिंसा के ढोल धमाके के बीच अहिंसा की आवाज क्षीण हो गई है। हिंसा मादक और उनमत्त होकर स्वतंत्र विचरण कर रही है। हिंसा आकर्षण का विषय बन गया है। हिंसा खान–पान का विषय बन गया है। हिंसा का साम्राज्य चारों ओर फैला है। हिंसा का साम्राज्य बहुत बड़ा है। हिंसा की सेना बहुत बड़ी है। हिंसा का गढ़ मिटाना इस युग में असंभव सा हो रहा है।

When the Spiritual feelings generate, the feeling of coordination, harmony, Anekant Syadvad, relativity, kindness, compassion and brotherhood becomes stronger. Such a feeling is not found in the market but arises from the company of a spiritual master, from devotion to the Lord and from reading spiritual texts. Reading spiritual books, doing service in the company of gurus etc. is called religion. Therefore, religion is not a useless thing but a thing of happiness, peace and development.

Non-violence is an eternal, natural, expedient, true and real religion. Whenever clouds of death loom over humans, non-violence is remembered. Non-violence is a predicative tendency. Violence is a negative trend. The day one understands the principle of non-violence, a person starts moving away from violence and starts doing his duties by understanding the fundamental rights.

Currently it is being said that life cannot go on without violence. Violence is inevitable in life. This thinking takes humans from humanity to demonism. Violent thinking traps you in the maze of objections, troubles and problems. Violence also deprives humans of their fundamental human rights.

Arms, Solders and Violence

The whole world has given place to violence, that is why thousands of weapons are being made every day, thousands of people are joining the army and are getting training to commit violence. Today there is no training or use of non-violence. If someone is teaching, using and preaching this, then there is only one in a thousand who listens to him and supports him. The voice of non-violence has become weak amidst the drumbeat of violence. Violence is roaming freely intoxicated and insane. Violence has become a subject of attraction. Violence has become a matter of everyday life. The empire of violence has spread everywhere. The empire of violence is very big. The army of violence is very big. It is becoming impossible to eradicate the stronghold of violence in this era.

भगवान महावीर स्वामी ने हिंसा के गढ़ को तबाह किया, और अहिंसा के साम्राज्य को स्थापित किया था। उन्होंने हिंसा के साम्राज्य को तबाह करने के लिए वाण और बम आदि हथियार नहीं चलाए थे बल्कि ह्रदय को अपनी वाणी से परिवर्तित किया था। अहिंसा ही सुख–शांति, समृद्धि और मूल अधिकारों की रक्षा के लिए अनिवार्य है।

जहाँ पर राजा, प्रजा या सैनिक को देश की रक्षा के लिए हिंसा मजबूरी, विवशता या बाध्यता में करना पड़ती है वहाँ अहिंसा जीवित रह सकती है। जहाँ अहिंसा मजबूरी या बाध्य होकर करना पड़ती है वहाँ हिंसा जीवित रहती है। जहाँ, हिंसा धर्म मानकर की जाती है वहाँ अहिंसा का दीपक नियम से बुझ जाता है और अन्याय, अत्याचार, अशांति का साम्राज्य छा जाता है इसीलिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अहिंसा को जोड़ना चाहिए जिससे बच्चों के मस्तिष्क में अहिंसा की विचार धारा उत्पन्न हो। आचार–विचार और व्यवहार में अहिंसा का पालन हो। वर्तमान में यू.एन.डी. की स्थापना विश्व शान्ति का प्रतीक है।

शिक्षा प्रणाली में यदि अहिंसा की बात होगी तो आध्यात्मिक उच्च कोटि के नैतिक आचरण करने वाले महावीर, राम, कृष्ण, बुद्ध, और शान्तिसागर जैसे महापुरुष उत्पन्न होंगे। जो विश्व में शांति, एकता और अखंडता स्थापित करें। जिस शिक्षा प्रणाली में वैराग्य, सत्य, अहिंसा, न्यायनीति, शुद्धखान–पान और अपने भाव पर नियंत्रण करने की शिक्षा को स्थान नहीं है, बल्कि युद्ध, लोभ, लालच, हिंसा, मांस, मछली, अंडे और शराब आदि सेवन की शिक्षा को स्थान है, वह शिक्षा सदोष है। ऐसी शिक्षा से विश्व शांति की आशा करना घी से अग्नि को बुझाने जैसा है। अर्थात् जैसे अग्नि में घी डालने से वह बुझती नहीं बल्कि और अधिक प्रचंड होती चली जाती है वैसे ही हिंसक शिक्षा प्रणाली से विश्व में अशांति और बढ़ती चली जाती हैं। हिंसा के अनेक कारण और अनेक प्रकार है जैसे–

व्यक्तिगत हिंसाः- व्यक्तिगत जीवन में हिंसा का मूल कारण है मोह, अज्ञान, उत्तेजना, आवेश, लोभ, लालच और विषय भोगों की चाहत।

सामाजिक हिंसाः- सामाजिक जीवन में हिंसा का कारण अन्याय, अनीति से अर्थ उपार्जन करना, धन का विषय भोगों में विलासता पूर्ण खर्च करना , अपनी जाति और धर्म को उच्च मानना, दूसरे लोगों के धर्म और जाति को हीन मानना सामाजिक हिंसा कहलाती है।

Lord Mahavir Swami destroyed the stronghold of violence, and established the empire of non-violence. To destroy the empire of violence, he did not use weapons like arrows and bombs but transformed hearts with his words. Non-violence is essential for happiness, peace, prosperity and protection of fundamental rights.

Where a king, subject or soldier has to resort to violence out of compulsion, helplessness or compulsion to protect the country, non-violence can survive. Where non-violence is done out of compulsion or helplessness, violence remains alive. Where violence is practiced as a religion, the lamp of non-violence gets extinguished as a rule and the reign of injustice, oppression and unrest prevails. That is why non-violence should be included in the present education system so that the thought process of non-violence is generated in the minds of children. Non-violence should be followed in conduct, thoughts and behavior. At present establishment of UNO is a symbol of world peace.

If there is talk of non-violence in the education system, then great men like Mahavir, Ram, Krishna, Buddha, and Shantisagar will be born who have high moral conduct. Who will establish peace, unity and integrity in the world. In the education system in which there is no place for the education of renunciation, truth, non-violence, justice, pure eating & drinking and controlling one's emotions, but there is place for the education of war, greed, greed, violence, consumption of meat, fish, eggs and alcohol etc.,that education is wrong. Expecting world peace from such education is like extinguishing fire with ghee (clarified butter). That is, just as adding ghee to a fire does not extinguish it but instead becomes more intense, similarly violent education system increases the unrest in the world. There are many causes and types of violence such as

Personal Violence:- The root cause of violence in personal life is attachment, ignorance, excitement, passion, greed, greed and desire for sensual pleasures.

Social Violence:- Causes of violence in social life are injustice, earning money through injustice, lavish spending of money on pleasures, considering one's own caste and religion as superior, considering other people's religion and caste as inferior, is called social violence.

पारिवारिक हिंसाः– इसका मूल कारण है स्वामित्व, कर्तृत्व और भोगतृत्व। परिवार के लोग अपना–अपना स्वामित्व जमाना चाहते हैं, अपने–अपने कर्तृत्व की बात करते हैं, वे एक–दूसरे से कहते हैं कि मैंने किया मैंने किया इसी में तू तू, मैं–मैं हो जाती है। यही पारिवारिक हिंसा कहलाती है।

राष्ट्रीय हिंसाः- इसका कारण प्रकृति का दोहन करना, असंतुलित कानून व्यवस्था का होना, द्रव्य क्षेत्र और काल का विपरीत होना इत्यादि राष्ट्रीय हिंसा है। संशय, अतिकल्पना, निषेधात्मकविचार और मन की अस्थिरता ये सभी मानसिक समस्याएँ हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ, घृणा, ईष्या, निंदा, चुगली इत्यादि भावनात्मक समस्याएँ हैं। इन समस्याओं से मुक्ति पाने हेतु खान–पान, संगति एवं अंतरंग ग्रंथियों में उत्पन्न होने वाले रासायनिक पदार्थों में परिवर्तन आवश्यक हैं। भौतिक विज्ञान मात्र से समस्याओं का समाधान नहीं किया जा सकता है और न अध्यात्म मात्र से समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। किसी भी कार्य की निष्पत्ति के लिए विचार, ज्ञान, विवेक और क्रियात्मक प्रवृत्ति, मेहनत जरुरी है। अध्यात्म हमें विवेक, विचार, ढृढ़ता और चेतना शक्ति देता है। इसके लिए मानसिक, वाचनिक और भावनात्मक चेतना शक्ति व साहस को जुटाना पड़ता है। विज्ञान हमें क्रियाशीलता, प्रवृत्ति, श्रम और अचेतन शक्ति देता है। इसके लिए हमें पौदगलिक उपकरणों का एवं शारीरिक शक्ति का उपयोग करना पडता है।

एक ओर आर्थिक, शारीरिक, वाचनिक आदि अचेतनात्मक भौतिक विकास चलता है, तो दूसरी ओर चेतन आत्मा से उत्पन्न हुए भावनात्मक विचार विवेक बुद्धि के विकास का क्रम चलता है। अतः अंतरंग विकास के लिए अध्यात्म और बहिरंग विकास के लिए विज्ञान जरूरी है। अतः मानवाधिकारों की रक्षा के लिए धर्म और विज्ञान जरुरी है। अतः उनका विकास और परिवर्तन की ओर दृष्टि का समन्वय अनेकान्त की दृष्टि से संभव है।

Family violence:- Its root cause is ownership, responsibility and enjoyment

Family members want to establish their own ownership, talk about their own actions, they say to each other that I did this, I did that, in this you and I become I &I. This is called family violence.

National violence:- Its cause is exploitation of nature, unbalanced law and order, the contradiction of matter, space and time etc. are national violence. Doubt, overimagining, negative thoughts and instability of mind are all mental problems. Anger, pride, illusion, greed, hatred, jealousy, condemnation, backbiting etc. are emotional problems. To get relief from these problems, changes in diet, company and chemical substances produced in the intimate glands are necessary. Problems cannot be solved by physics alone, nor can problems be solved by spirituality alone. For the accomplishment of any work, thought, knowledge, prudence, action attitude and hard work are necessary. Spirituality gives us wisdom, thought, determination and conscious power. For this, mental, verbal and emotional consciousness, power and courage have to be mustered. Science gives us activity, instinct, labor and unconscious power. For this we have to use mechanical equipment and physical strength.

On the one hand, unconscious material development like economic, physical, verbal etc. goes on, while on the other hand, the process of development of emotional thoughts and conscience arising from the conscious soul goes on. Therefore, spirituality is necessary for inner development and science is necessary for external development. Therefore, religion and science are necessary to protect human rights. Therefore, coordination of their vision towards development and change is possible from Anekant's point of view.

धर्म, जाति और पंथ निरपेक्षता

धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में पंथ निरपेक्षता और जाति निरपेक्षता की कोई बात नहीं हो रही है। चुनाव की वोटिंग के समय जाति की बात पहले की जाती है। किस जाति के कितने वोट हैं उसी को लेकर उम्मीदवार खड़ा किया जाता है। जातिवाद को लेकर चलने से भी धर्मनिरपेक्षता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। राजनीति में पंथवाद और जातिवाद को लेकर चलने से अस्थिरता का माहौल बनता है। जातिवाद एवं पाखंडवाद को लेकर चलने से सांप्रदायिकवाद उत्पन्न होता है और समस्याएं बढ़ती चली जाती हैं। ऐसी स्थिति में मौलिक अधिकारों की रक्षा की समस्या भी उभर कर आ जाती है।

आचार–संहिता के अनुसार एक–दूसरे पर छींटाकशी, दोषारोपण, आरोप–प्रत्यारोप नहीं लगाया जा सकता लेकिन आज दोष प्रकाशन और नीचे गिराने की राजनीति चल रही है। अपने देश, समाज एवं परिवार के गुप्त रहस्य और बुराइयों को ठीक करने के लिए समझाना और दबाना चाहिए। लेकिन 5 साल सत्ता की सीट पाने के लिए लोग गुप्त रहस्य को उद्घाटित कर रहे हैं एवं एक–दूसरे के ऊपर दोषारोपण कर रहे हैं। दोषारोपण करने से, जातिवाद फैलाने से और बदनाम करने से हिंसा को बढ़ावा मिलता है। ऐसी स्थिति में देश की गुप्त नीतियों का विदेशी लोग पूरा फायदा उठाते हैं। जिससे देश की रक्षा मानवाधिकार और अर्थनीति आदि संकट में पड़ जाती हैं।

नैतिक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति पर दोषारोपण नहीं करता है दोषी व्यक्ति के दोषों का प्रकाशन भी नहीं करता है। जैन साधु राजनीति नहीं करते परंतु राजनीति का ज्ञान रखते हैं। साधू चारित्रवान, विवेकवान, नैतिक और नीतिवान होने से चुनाव की नीति निर्धारण का उपदेश दे सकते हैं। नेता न्याय प्रिय, सदाचारी, अहिंसक एवं राष्ट्र रक्षक हो ऐसी भावना करते हैं। लोकतांत्रिक देशों में चुनाव लड़ने वाली पार्टियां और उनके उम्मीदवार कम होना चाहिए। चुनाव के समय जितने अधिक उम्मीदवार चुनाव में होते हैं उतनी अशान्ति और अस्थिरता बनती है। अखंडता और एकता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा होता है। उठापटक दलबदल की प्रक्रिया अधिक होती है।

Religion, Caste and Creed Secularism

There is no talk of creed secularism and caste neutrality in a secular nation. Caste is discussed first during election voting. Candidates are nominated based on how many votes a caste has. Taking issue with casteism also puts a question mark on secularism. Following sectarianism and casteism in politics creates an atmosphere of instability. By following casteism and hypocrisy, communalism arises and the problems keep increasing. In such a situation the problem of protection of fundamental rights also arises.

According to the code of conduct, one cannot slander, blame or counter-accusate each other, but today the politics of blaming and pulling people down is going on. To correct the hidden secrets and evils of our country, society and family, we should explain and suppress them. But to get the seat of power for 5 years, people are revealing secrets and blaming each other. Blaming, spreading casteism and defaming promote violence. In such a situation, foreigners take full advantage of the country's secret policies. Due to which the country's security, human rights and economics etc. are in danger.

A moral person does not blame any other person and does not even publish the faults of the guilty person. Jain Sadhu do not indulge in politics, but have knowledge of politics. Sadhus, being of good character, wise, moral and ethical, can give advice on determining election policy. Leaders should feel that they are justice-loving, virtuous, non-violent and protectors of the nation. In democratic countries, there should be fewer parties and their candidates contesting elections. At the time of elections, the more candidates there are, the more unrest and instability is created. A question mark arises on integrity and unity. The process of defection is more frequent.

सुख और विकास

सुख, शान्ति, आनंद, सुविधा और विकास की चाहत मनुष्य का स्वभाव है। उसकी पूर्ति के लिए प्रत्येक मानव प्रार्थना करता है, संकल्प लेता है, पुरुषार्थ और क्रिया कलाप करता है। लेकिन कुछ मूढ़, अज्ञानी, हटग्राही, मोह से मूर्छित लोग आचरणहीनता पर उतर आते हैं। ऐसे लोग नाम लेते हैं राम का और काम करते हैं रावण का। ध्यान करते हैं भगवान महावीर का और काम करते हैं मारीचि का। ऐसे लोगों को सुख–सुविधा प्रदान करने वाले धन का जीवन से भी अधिक मूल्य होता है। वे अर्थ के लिए अनर्थ कर बैठते हैं। उनके दिल में विचार आता है कि अर्थ के बिना जीवन व्यर्थ है। अतः वे धर्मशास्त्र को नहीं अर्थशास्त्र को पढ़ते हैं। समाज शास्त्र को नहीं काम शास्त्र को पढ़ते हैं।

समाजशास्त्र में सामाजिक मूल्यों का प्रतिपादन है। धर्मशास्त्र में धर्म के मूल्यों का प्रतिपादन है। न्याय शास्त्र में न्याय नीति के मूल्यों का प्रतिपादन है। इन शास्त्रों को न पढ़ने से वे समाज से, उचित न्याय–नीति और सच्चे धर्म से अनभिज्ञ रह जाते हैं। उनकी मानवाधिकार, समाज सुधार और धार्मिक आचार विचार के प्रति अच्छी अवधारणा नहीं बन पाती हैं। वे जीव और जीवन को महत्त्व न देकर सत्ता और संपदा को महत्व देते हैं। सत्ता और संपदा, युद्ध और अशांति का कारण होती है। वे लोग इंद्रिय सुख और इंद्रिय चेतना के स्तर तक पहुँच पाते हैं, मानसिक और अतिंद्रिय आत्मिक चेतना के स्तर तक नहीं पहुँच पाते हैं। वे सामाजिक चेतना को भी न समझ पाते हैं और न जागृत कर पाते हैं। इंद्रिय चेतना से मोहित व्यक्ति मात्र पौद्‌गलिक शरीर और संपदा को ही देख पाते हैं। ऐसी स्थिति में वे समाज को नहीं बदल पाते हैं। मानवाधिकार, समाजवाद, साम्यवाद और अध्यात्मवाद को स्थापित नहीं कर पाते हैं। वे आकांक्षा, स्पर्धा, संघर्ष, क्रूरता, मूर्छा, प्रतिरोध, प्रतिशोध, ममकार और अहंकार की भावना से भर जाते हैं। उनकी दया, करुणा, प्रेम, सत्य, अहिंसा कर्तव्य और पुरुषार्थ रूपी चेतना मर जाती है।

शक की दवा – दुनिया में शक यानि संदेह की कोई चिकित्सा या दवा नहीं है। उसका इलाज व्यक्ति को स्वयं करना पड़ता है क्योंकि इस रोग की उत्पत्ति का कारण व्यक्ति स्वयं होता है और उसमें मुख्य कारण व्यक्ति का अपना नजरिया होता है, उसकी अपनी विचारधारा होती है, उस नजरिये को

Hapiness and Development

It is human nature to desire happiness, peace, joy, convenience and development. To fulfill it, every human being prays, takes resolutions, makes efforts and does activities. But some foolish, ignorant, detached, unconscious people indulge in bad conduct. Such people take the name of Ram and work for Ravana, mediate on Lord Mahavir and work on Marichi. The money that provides comfort and convenience to such people has more value than life itself. They do mischief for the sake of money. The thought comes in their heart that life without wealth is meaningless. So they not study economics but study how to make money. They study Kam (sex) Shastra not Sociology.

Social values are presented in sociology. The values of religion are presented in theology. In jurisprudence, the values of justice policy are propounded. By not reading these scriptures, they remain ignorant of society, proper justice, policy and true religion. They do not develop good concepts towards human rights, social reform and religious ethics. They do not give importance to life and creatures but give importance to power and wealth. Power and wealth are the cause of war and unrest. Those people are able to reach the level of sensual pleasure and sensual consciousness, but are unable to reach the level of mental and extrasensory spiritual consciousness. They are neither able to understand nor awaken social consciousness. People fascinated by sense consciousness are able to see only physical body and wealth. In such a situation they are not able to change the society. Are not able to establish human rights, socialism, community welfare and spirituality. They are filled with feelings of ambition, competition, struggle, cruelty, foolishness, resistance, revenge, pride and ego. Their consciousness of kindness, compassion, love, truth, non-violence, duty and effort dies.

Medicine for Doubt: There is no medicine or medicine for doubt in the world. The person has to treat it himself because the reason for the origin of this disease is the person himself and the main reason for this is the person's own attitude, he has his own ideology.

और विचार धारा को जब तक नही बदला जाता है तब तक उसका इलाज नही हो पाता है। उसे बदलना काफी मुश्किल होता है लेकिन असंभव नहीं है। उसे अध्यात्म गुरु के प्रवचन से, अध्यात्म शास्त्र के पठन–पाठन से एवं जिसके प्रति शक है, उसके साथ बैठकर उसकी चर्चा कर के उस शक रूपी बीमारी को दूर किया जा सकता है। आज कल लोग शक तो करते हैं परंतु शक को दूर नहीं करते इसीलिए वैमनस्यता और अराजकता बढ़ती जा रही है। कर्तव्यनिष्ठा कम और अधिकारों की भूख बढ़ती जा रही है।

सुख, शांति और अध्यात्म

पारस्परिक संबंध जब अनुकूल होते हैं तब सुख–शांति मिलती है। जब पारस्परिक संबंध प्रतिकूल होते हैं तव दुःख और अशांति मिलती है इसलिए पारस्परिक संबंध मधुर बनाएँ रखना चाहिए।

आंतरिक संबंध इच्छाओं पर आधारित होते हैं। यदि इच्छा पूर्ति हो जाती है तो संबंध मधुर बन जाते हैं और सुख–शांति मिल जाती हैं। जब इच्छा पूर्ति नहीं होती है तब क्रोध, मान, ईर्ष्या आदि सर चढ़कर बोलने लगती हैं, परिणाम स्वरूप अशांति और दुःख मिलता है। इसीलिए इच्छाओं का निरोध करना चाहिए।

इच्छाओं का निरोध करना ही वास्तविक तप है। इच्छाओं का निरोध करना आध्यात्मिक तप है। यह आध्यात्मिक तप, अंतरंग और बहिरंग सुख–शांति में कारण होने से उपादेय है।

आध्यात्मिक दृष्टि से देखे तो सुख–दुःख और शांति–अशान्ति में कारण स्वामित्व, कर्तृत्व और भोगतृत्व बुद्धि है। जब व्यक्ति सोचता है कि मैं इस वस्तु या पदार्थ का स्वामी हूँ इसे दूसरे ने लिया क्यों ? इस स्वामित्व बुद्धि के कारण दुःख, अशांति, कलह और लड़ाई झगड़े प्रारंभ हो जाते हैं। जब आदमी सोचता है कि मैंने इतना श्रम करके फला वस्तु को बनाया है और इसने मिटा क्यों दिया ? मेरे बने बनाये कार्य को इसने बिगाड़ क्यों दिया ? इस प्रकार की कर्तृत्व बुद्धि के कारण दुःख, अशांति और कलह पैदा हो जाती है। जब व्यक्ति सोचता है कि मैं इस पदार्थ का भोगता हूँ परन्तु दूसरे ने इसे भोगा क्यों? इसका सेवन क्यों किया? मैं इसका भोक्ता था इस भोगतृत्व बुद्धि के कारण दुःख और अशांति उत्पन्न हो जाती है।

Unless that attitude, the thought process is changed, it cannot be cured. It is very difficult to change it but not impossible. The disease of doubt can be cured by the discourse of a spiritual guru, by reading the spiritual scriptures and by sitting and discussing with the person about whom one has doubts. Nowadays people doubt but do not remove their doubts, that is why animosity and anarchy are increasing. Conscientiousness is decreasing and hunger for rights is increasing.

Happiness, Peace and Spirituality

When interpersonal relationships are favorable then there is happiness and peace. When mutual relations are unfavourable then there is sadness and unrest, hence mutual relations should be maintained sweetly.

Internal relationships are based on desires. If the wish is fulfilled then relationships become sweet and happiness and peace are achieved. When desires are not fulfilled, anger, pride, jealousy etc. start rising, resulting in unrest and sorrow. That is why desires should be controlled.

Restraining desires is the real penance. Restraining desires is spiritual penance. It is beneficial due to spiritual penance and inner and outer happiness and peace.

If seen from a spiritual point of view, the reason for happiness-sorrow and peace-disturbance is the intellect of ownership, action and enjoyment. When a person thinks that he is the owner of this object or substance, why did someone else take it? Due to this possessive intellect, sorrow, unrest, discord and fights start. When a man thinks that he has created such and such a thing by working so hard and why did someone destroy it? Why did he spoil my finished work? Due to this type of doer's mind, sorrow, unrest and discord arise. When a person thinks that he enjoys this substance but why does someone else enjoy it? Why did you consume it? I was the enjoyer of it. Due to this indulgent intellect, sorrow and unrest arise.

लेकिन जब पर पदार्थों के प्रति होने वाली इस स्वामित्व, कर्तृत्व और भोगतृत्व बुद्धि को छोड़ देते हैं और मैं ही अपनी आत्मा का कर्ता हूँ, भोक्ता हूँ और स्वामी हूँ इस प्रकार बुद्धि और विवेक जाग जाता है तब व्यक्ति सुख और शांति महसूस करने लगता है। यही समीचीन श्रद्धा अर्थात् सम्यक् दर्शन है। सम्यक् दर्शन होने पर ज्ञान भी सम्यक् ज्ञान हो जाता है। श्रद्धा और ज्ञान सम्यक् हो जाने पर क्रिया भी सम्यक् होने लगती है जिसे सम्यक चारित्र कहते हैं। यही तीनों मिलकर प्रतिकूल मनः स्थिति और परिस्थिति को अनुकूल बना देते हैं। यही तीनों किसी प्रकार से मानवाधिकारों को ही क्या प्राणिमात्र के अधिकारों का हनन नहीं होने देते। इस प्रकार वास्तविक सुख शांति इत्यादि में यही रत्नत्रय और अध्यात्मिक दृष्टि उपादेय है।

जिसका मन स्वयं अशांत हो वह दूसरों के मन को शांत नहीं कर सकता है। जो दीपक स्वयं बुझा हो वह दूसरे दीपक को नहीं जला सकता है। जो स्वयं कटोरा लेकर भीख मांग रहा हो वह दूसरों को दान नहीं दे सकता है। जो बम और तलवार लेकर भय दिखाते हुए दूसरों की हत्या कर रहा है वह किसी को अभय दान और शांति प्रदान नही कर सकता है।

जब भूल से भी पैर के नीचे चींटी आकर मर जाती है तब एक आस्थावान अध्यात्म प्रेमी की आत्मा काँप उठती है लेकिन नास्तिक आतंकवादी लोग पूरी ट्रेन को बम से उड़ा देते हैं और जब वेगुनाह गाय, बकरी, मानव आदि की हत्या कर देते है। तब भी उनकी चेतना नहीं जागती है। दया, करुणा, प्रेम और मानवीयता की भावना पैदा नहीं होती है। जिसके अंदर ऐसी भावना नहीं जागी उसने मानव जीवन का मूल्य नहीं समझा, उसने मानवीय, मौलिक अधिकारों को नहीं समझा। जिसने मौलिक अधिकार और मानव मूल्यों को नहीं समझा उसके सामने शांति की वार्ता करना भैंस के आगे बीन बजाना है। मुर्दे को गीत सुनाना है। अंधे के सामने सोलह श्रृंगार करके स्वर्ग की परी की सुन्दरता को दिखाने जैसा है, जो व्यर्थ है ।

जो जीवों को बचाते हैं वे सम्मान के पात्र हैं। जो जीवों को बचा नहीं पा रहे हैं लेकिन बचाने की सोचते हैं वे भी आदर के पात्र हैं। उनसे शांति की वार्ता करना सार्थक हो सकती है लेकिन जो बचाने की सोचते ही नहीं, जिन्होंने हिंसा को ही धर्म मान रखा है, हिंसा को ही शांति का माध्यम बना रखा है ऐसे लोगों के कोई नियम कानून नहीं होते हैं, मान मर्यादा नहीं होती है, उनकी कोई आचार संहिता नहीं होती है। उनके अंदर कोई मानवता नहीं होती है। उनके लिए मानवाधिकारों का कोई मूल्य नहीं होता है।

But when we leave this view of ownership, doership and enjoyment and realise I am the doer, enjoyer and master of my soul, in this way the intellect and conscience awaken and then the person starts feeling happiness and peace. This is appropriate faith i.e. right philosophy. When there is proper darshan, knowledge also becomes proper knowledge. When faith and knowledge become right, actions also start becoming right, which is called right character. These three together make adverse mental state and situation favorable. These three do not allow not only human rights but also the rights of living beings to be violated. In this way, this Ratnatraya and spiritual vision are beneficial in real happiness and peace etc.

One whose mind is disturbed cannot calm the minds of others. A lamp which has extinguished itself cannot light another lamp. One who is begging with a bowl himself cannot give charity to others. The one who is killing others by showing fear with bombs and swords cannot provide fearlessness and peace to anyone.

When even by mistake an ant comes under his feet and dies, the soul of a devout spiritual lover trembles, but atheist terrorists blow up the entire train and when they kill innocent cows, goats, humans etc. even then their consciousness does not awaken. Feelings of kindness, compassion, love and humanity do not arise. The one who does not awaken such a feeling has not understood the value of human life, has not understood human and fundamental rights. Negotiating peace in front of someone who has not understood fundamental rights and human values is like blowing a trumpet in front of a buffalo, singing songs to the dead. It is like showing the beauty of a heavenly angel to a blind man by applying sixteen adornments, which are in vain.

Those who save living beings deserve respect. Those who are not able to save living beings but think of saving them also deserve respect. It may be meaningful to talk about peace with them, but those who do not even think of saving, who have considered violence as their religion, make violence the only means of peace, such people have no rules and regulations, no dignity, no code of conduct. There is no humanity in them. Human rights have no value for them.

पहले युद्ध होते थे तो उनकी आचार संहिता होती थी, वे रात में युद्ध नहीं करते थे, निस्शस्त्र और स्त्री पर वार नहीं करते थे लेकिन जो इन मान मर्यादाओं को खो चुके है, आचार संहिता दफन कर चुके हैं ऐसे लोगों पर प्रतिबंध लगना चाहिए, उन्हें प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए, उनकी मदद नहीं करना चाहिए तभी शांति आ सकती है ।.

अहिंसक चेतना जाग जाने पर प्रत्येक जीव के सम्मान की बात पैदा हो जाती है। जहाँ अहिंसक चेतना जागृत हो जाती है वहाँ पर्यावरण सुरक्षित रहता है, प्रकृति का दोहन कम होने लगता है, व्यर्थ के कार्यों से व्यक्ति बच जाता है, आचार संहिता का पालन होने लगता है, मौलिक अधिकारों का पालन होने लगता है। मस्तिष्क स्वास्थ और संतुलित बना रहता है ।

प्रकृति से आचार और विचार का संबंध बहुत पुराना है। जो आदमी प्रकृ ति के जितने नजदीक होगा उसका दिमाग उतना ही तेज होगा, शरीर स्वस्थ और मजबूत होगा। बच्चे प्रकृति की गोद में रहते हैं, उसी में स्वस्थ और मस्त रहते हैं। आज इंसानों का जीवन प्राकृतिक न रहकर कृत्रिम हो गया है। भौतिक जीवन बढ़ता जा रहा है। चेतनामय जीव के प्रति रुचि घट रही है, आचार संहिता मिट रही है और बीमारी बढ़ रही है।

मानव मस्तिष्क में अरबों–खरबों न्यूरास पाए जाते हैं। शांति और अशांति पैदा करने वाले न्यूरॉन्स हमारे मस्तिष्क में भरे पड़े हैं। जो जैसे चाहे वैसे न्यूरॉन्स को बदल सकते हैं। हिंसक उत्तेजक न्यूरॉन्स को गुरु वाणी से स्वस्थ कर सकते हैं। शिक्षा और गुणों से बच्चों के अंदर गुणात्मक परिवर्तन ला सकते है। संघर्ष अच्छे और बुरे दोनों कार्यों के लिए होता है। वैचारिक संघर्ष अंदर चलता है वही पहले अंदर अशान्ति पैदा करता है फिर बाहर अशान्ति पैदा करता है।

मंत्रों के वैज्ञानिक तथ्य

जिसका क्षय न हो उसे अक्षर कहते हैं। अक्षर अक्षर मिलकर शब्द बनते हैं। शब्दों की उत्पत्ति जीवो के कंठ से होती है। संक्षिप्त शब्द रचना से सहित, अनंत अर्थ और चिन्ह से युक्त जो बीज पद होता है उसे मंत्र कहते हैं।

Earlier, when there used to be wars, they had a code of conduct, they did not fight at night, did not attack unarmed persons and women, but those people who have lost these values and have buried the code of conduct, such people should be banned. We should not encourage them, we should not help them, only then can peace come.

When non-violent consciousness is awakened, the issue of respect for every living being arises. Where non-violent consciousness is awakened, the environment remains safe, exploitation of nature reduces, people are saved from useless activities, code of conduct starts being followed, fundamental rights start being followed. The brain remains healthy and balanced.

The connection of conduct and thought with nature is very old. The closer a person is to nature, the sharper his mind will be and his body will be healthy and strong. Children live in the lap of nature, remain healthy and happy in it. Today human life has become artificial rather than natural. Material life is increasing. Interest towards sentient beings is decreasing, code of conduct is disappearing and diseases are increasing.

Billions of neurons are found in the human brain. Our brains are filled with neurons that produce peace and unrest. Anybody can change the neurons as per their wish. Violent excitatory neurons can be healed by Guru Vani. Education and qualities can bring qualitative change in children. Struggle is for both good and bad deeds. The ideological conflict that goes on inside first creates unrest within and then creates unrest outside.

Scientific Facts of Mantras

That which does not decay is called a letter (letters of alphabet like a,b, c etc.) Letters come together to form words. Words originate from the throats of living beings. From concise wording seed word with infinite meanings and symbols is called a mantra.

अथवा जिसके द्वारा आत्मा को जानने शुद्ध करने और उसकी शक्ति को उद्घाटित करने के लिए भगवान के मुख से निकले हुए जिन बीज पद हैं उनका गुप्त रूप से मनन चिंतन और उच्चारण किये जाने वाले बीज पदों को मंत्र कहते हैं। जैसे ओं, ह्रीं, श्रीं, क्लीं, ऐम् इत्यादि। ये ऐसे मंत्र हैं जिन्हे जपने से पॉजिटिव एनर्जी को देने वाले बायो फोटॉन की उत्पत्ति होती है। ये बायो फोटॉन व्यक्ति को हिंसा झूठ चोरी आदि पाप रूप गलत कार्य करने से रोकते हैं । यदि गलत कार्य करने का विचार मन में आता है तो ये पॉजिटिव एनर्जी वाले बायो फोटॉन मन को रोकते हैं, इसलिए लोग कहते हैं कि अभी मेरे अंदर की आत्मा इस कार्य को करने के लिए मना कर रही है। यदि पाप रूप गलत कार्य कर लेता है तो इन्हीं फोटान की वजह से पश्चाताप भी होता है। 'मंत्रों की वैज्ञानिकता' इन मंत्रों के प्रभाव को आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि मानव का शरीर ऊतकों (Tissue) से बना है। ऊतक कोशिकाओं से बनते हैं। कोशिकाएं अणुओं से बनती हैं। अणु परमाणुओं से बनते हैं। परमाणु इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन से बनते हैं। दुनिया के सभी पुद्गल शरीर इन्ही इलेक्ट्रॉन प्रोटॉन और न्यूट्रॉन से मिलकर बनते हैं। दुनिया के सभी पदार्थ भी इन्हीं इलेक्ट्रॉन प्रोटॉन और न्यूट्रॉन से बने हैं। यही पुद्गल की अंतिम इकाई वैज्ञानिकों ने स्वीकार की है। मानव शरीर में जो ब्लड है उसकी अंतिम इकाई भी इलेक्ट्रॉन प्रोटॉन और न्यूट्रॉन है। ब्लड में कैल्शियम, आयरन, कार्बन आदि लगभग 16 महत्वपूर्ण खनिज तत्व है। इस में जो आयरन है उसमें 26 इलेक्ट्रॉन 26 प्रोटॉन और 30 न्यूट्रॉन हैं। इसी प्रकार सभी पौद्गलिक तत्वों में जो इलेक्ट्रॉन प्रोटॉन न्यूट्रॉन पाए जाते हैं उन्हीं की संख्या के आधार पर कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन आदि तत्वों का निर्माण होता है। इनमें जो इलेक्ट्रॉन होते हैं उनकी गति के कारण ही विद्युत का प्रवाह होता है। विद्युत के प्रवाह से चारों ओर विद्युत चुंबकीय क्षेत्र (इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड) उत्पन्न होता है। हमारे शरीर में जो इलेक्ट्रॉन पाए जाते हैं उन्हीं से शरीर में विद्युत चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न होता है जिसे औरा कहते हैं। 'रूसी वैज्ञानिक डेविडोविच सेमियॉन किरिलियान' ने सर्वप्रथम इस इलेक्ट्रोमैग्नेटिक बॉडी की फोटो खींचने का हाई फ्रिकवेंसी वाला कैमरा बनाया और फोटोग्राफी करके इस को सिद्ध भी किया।

Or by which the seed words which come from the mouth of God to know, purify the soul and reveal its power, are secretly meditated upon and chanted, these seed words are called mantras. Like Om, Hreem Shreem Kleem, Aiim etc. These are such mantras, chanting which generates bio photons that provide positive energy. These bio photons prevent a person from committing wrong acts like violence, lying, theft etc. If the thought of doing wrong work comes to mind, then these positive energy bio photons stop the mind, hence people say that right now the soul inside me is refusing to do this work. If the sinful act is committed, it is because of these photons that one repents. 'Scientificity of Mantras' - to understand the effect of these mantras from the perspective of modern science, it is important to know that the human body is made of tissues. Tissues are made of cells. Cells are made of molecules. Molecules are made of atoms. Atoms are made of electrons, protons and neutrons. All the solid bodies in the world are made up of these electrons, protons and neutrons. All the substances in the world are also made of these electrons, protons and neutrons. This is the last unit of Pudgal accepted by scientists. The last unit of blood in the human body is electron, proton and neutron. There are about 16 important mineral elements like calcium, iron, carbon etc. in blood. The iron in it has 26 electrons, 26 protons and 30 neutrons. Similarly, elements like calcium, magnesium, iron etc. are formed on the basis of the number of electrons, protons and neutrons found in all the plant elements. The flow of electricity occurs due to the movement of the electrons present in them. The flow of electricity produces an electro-magnetic field all around. The electrons found in our body generate an electromagnetic field in the body which is called aura. 'Russian scientist Davidovich Semiyan Kirilian' first made & used a high frequency camera to photograph this electromagnetic body and proved its existence.

वैज्ञानिकों ने यह भी सिद्ध किया कि मानव की काया के चारों ओर एक इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड होता है। इसे सामान्य तौर पर आभामंडल कहते हैं। अंग्रेजी में इसे औरा भी कहते हैं। इसी से संबंधि वैज्ञानिक डॉ. कॉन्सटेन्टिन एवं डा. कारोटकॉव ने कई वर्षों के अनुसंधान के उपरांत (Gas discharge visualization) जी.डी. वी.तकनीक विकसित करके बताया कि हमारे विचार भी हमारे शरीर के इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड को प्रभावित करते हैं। अर्थात जिस प्रकार के हमारे विचार होते हैं उसी प्रकार का इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड का निर्माण होता है। ऊँ, ह्रीं एवं णमोकार मंत्र आदि कोई भी मंत्र इस इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड को प्रभावित करता है या यूं कहें कि हमारे भावों के अनुसार ही इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड का निर्माण होता है। इसी के कारण जीवन गतिशील होता है और ह्रदय निरंतर धड़कता रहता है। जब कोई व्यक्ति दया, अहिंसा, करुणा, प्रेम, भक्ति और समर्पण आदि धार्मिक भावो से भरा होते हैं तब इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड का रंग गुलाबी होता है। जब व्यक्ति क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषाय भाव से भरा होता है तब मैग्नेटिक फील्ड (आभामंडल) का रंग खून की तरह लाल होता है। जब व्यक्ति हत्या मारपीट और मांस भक्षण की भावना से भरा होता है तब इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड का रंग काला होता है। इससे सिद्ध है कि हमारे भाव के अनुसार इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड का रंग बदल जाता है। इस इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड के द्वारा शारीरिक रोगों का पता भी लगाया जा सकता है। मानव संरचना में जैविक विद्युतीय प्रणाली नजर आती है। इसी कारण डॉक्टर अलग–अलग अंगों में इसे प्रवाहित करके रोग का पता लगाते हैं और इलाज भी करते हैं। आंखें की जाँच और उपचार में इलेक्ट्रो रेटीनो ग्राफी। ह्रदय के उपचार में इलेक्ट्रो कॉर्डियो ग्राम की रिपोर्ट के आधार पर उपचार किया जाता है। णमोकार मंत्र या ओम मंत्र या अन्य कोई मंत्र निरंतर जपने से इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड मजबूत बनता है। जिससे शरीर के अंगों में विद्युत का प्रवाह सुचारू रूप से होता है। विद्युत प्रवाह सही होने से शरीर स्वस्थ रहता है और उतनी ही अधिक शरीर में ऊर्जा का संचरित होती है। और कोशिकाओं में स्थित डीएनए में संकुचन, विस्तारण (फैलाव) और स्पंदन होता है।

Scientists also proved that there is an electromagnetic field around the human body. This is generally called aura. In English it is also called Aura. Scientists related to this, Dr. Constantin and Dr. Karotkov, after many years of research (Gas Discharge Visualisation) by GDV developed the technique and explained that our thoughts also affect the electromagnetic field of our body. That is, the type of electromagnetic field is created as per our thoughts. Any mantra like Om, Hreem and Namokar mantra etc. affect this electro-magnetic field or we can say that the electro-magnetic field is created according to our emotions. Due to this, life is dynamic and the heart keeps beating continuously. When a person is filled with religious feelings like kindness, non-violence, compassion, love, devotion and dedication etc. then the color of the electromagnetic field is pink. When a person is filled with astringent feelings like anger, pride, illusion, greed etc. then the color of the magnetic field (aura) is red like blood. When a person is filled with the feeling of murder, violence and flesh eating, then the color of the electromagnetic field is black. This proves that the color of the electromagnetic field changes according to our emotions. Physical diseases can also be detected through this electromagnetic field. Biological electrical system is visible in human structure. For this reason, doctors detect and treat diseases by circulating it in different organs. Electro Retinography in Eye Examination and the treatment of heart is done on the basis of Electro Cardio Gram report. Continuous chanting of Namokar Mantra or Om Mantra or any other mantra strengthens the electro magnetic field. Due to which electricity flows smoothly in the body parts. Correct electric flow keeps the body healthy and more energy is transmitted in the body and contraction in the DNA located in cells, Contraction and expansion of nerves in DNA and pulsation occur.

इस स्पंदन की क्रिया से अनेक बायों फोटान उत्पन्न होने लगती हैं। इन बायो फोटान से मस्तिष्क द्वारा सूचनाएँ प्रसारित होती है। मस्तिष्क द्वारा प्रसारित सूचनाएं बायोफोटॉन में संग्रहीत होती है। उन्हीं से किसी कार्य करने के लिए उत्साह और उमंग पैदा होता है। बायो फोटॉन सूर्य के प्रकाश से भी आते हैं। जब शरीर और सूर्य के बायो फोटॉन आपस में मिलते हैं तब चारों ओर के वातावरण में शरीर के फोटॉन फैल जाते हैं और वे एक दूसरों को प्रभावित करते हैं। यहां णमोकार मंत्र, ओम मंत्र इत्यादि मंत्रों का प्रसंग चल रहा है इन मंत्रों के द्वारा भी डीएनए में परिवर्तन और फोटॉनों में वृद्धि करके एक दूसरे को प्रभावित किया जा सकता है और चारों ओर के वातावरण को परिवर्तित किया जा सकता है। अतः प्रतिदिन मंत्र जाप जरूर करना चाहिए। 'किशोरावस्था में क्यों हो रही ज्यादातर आत्म हत्याएं' एनजीओ द्वारा किए गए एक सर्वे के अनुसार दुनिया भर में 15 से 20 वर्ष की उम्र वाले लड़के लड़कियां आत्म हत्या कर हैं। उसका कारण यह सामाने आया कि इस उम्र की लड़कियों और लड़कों के दिमाग ठीक ढंग से मैच्योर्ड नही होते हैं। वे किसी प्रकार की घटना विशेष से भावनात्मक तौर से अपने आप को सम्हाल नहीं पाते हैं। जिसकी वजह से वे डिप्रेशन में चले जाते हैं। इस उम्र में कुछ लड़के लड़कियों को एक दूसरे के साथ जीने की ऐसी आदत पड़ जाती है कि वे एक दूसरे के बिना मानसिक तौर पर अलग होने की सोच से हम बाहर ही नहीं निकल पाते हैं। दूर होते ही उनके विचारों में नकारात्मकता आ जाती है सकारात्मक स्थिति में आ ही नही पाते हैं। ऐसी स्थिति में दिमागी न्यूरो लॉजिकल में बदलाव हो जाता है और कुछ लोग इमोशनल डैमेज के शिकार हो जाते हैं जिससे वे खुदकुशी की सोचने लगते हैं। ऐसे डिप्रेशन और खुदकुशी करने वाले लोगों को अध्यात्मिक जीवन जीने वालों की संगति में रहना चाहिए और णमोकार मंत्र इत्यादि मंत्रों का, भक्तामर आदि भक्ति पाठ का उच्चारण करना चाहिए।

'समान आचार संहिता आजादी के दिन से प्रारंभ होना चाहिए थी' सबसे बड़े इस लोकतांत्रिक भारत देश में जो वर्तमान समय में भारतीय संविधान चल रहा है वह आजादी के बाद सन 1950 से लागू किया गया था।

Due to the action of these vibrations many photons start being produced. Information is transmitted through these bio photons through the brain. Information transmitted by the brain is stored in biophotons. It is from them that enthusiasm and excitement arise to do any work. Bio photons also come from sunlight. When the bio photons of the body and the Sun meet each other, the photons of the body spread in the surrounding environment and they influence each other. Here the context of mantras like Namokar Mantra, Om Mantra etc. is going on. Through these mantras also one can influence each other by changing the DNA and increasing the photons and the surrounding environment can be changed. Therefore, one must chant the mantra daily. 'Why are most of the suicides happening in adolescence?' According to a survey conducted by an NGO, boys and girls between the age of 15 to 20 are committing suicide all over the world. The reason for this was that the brains of girls and boys of this age are not properly matured. They are unable to handle themselves emotionally from any particular incident. Due to which they go into depression. At this age, some boys and girls get so used to living with each other that they are unable to come out of the thought of being mentally separated from each other. As soon as they separate, their thoughts become negative and they are unable to come back to a positive state. In such a situation, there is a neurological change in the brain and some people become victims of emotional damage due to which they start thinking of suicide. Such people suffering from depression and committing suicide should stay in the company of people living a spiritual life and should chant mantras like Namokar Mantra, Bhaktamar etc. devotional texts.

'The uniform code of conduct should have started from the day of independence. The Indian Constitution which is currently in force in the largest democratic country, India, was implemented after independence in 1950.

जब आजादी मिली थी उस समय ही समान आचार संहिता लागू की जानी चाहिए थी लेकिन किन्ही कारणों बस लागू नहीं की जा सकी। इसलिए अनुच्छेद 44 में समान आचार संहिता की जिक्र की गई है लेकिन आजादी के 60 साल बीत जाने के बाद भी वोट की राजनीति और किसी कट्टरवादी पार्टी और समाज विशेष की वजह से वह लागू नहीं की जा सकी, लेकिन देश में बढ़ते सामाजिक, धार्मिक, जातीय और राजनीतिक असंतुलन को देखते हुए एवं कट्टरपंथियों के बढ़ते हुए प्रभाव को देखते हुए समान आचार संहिता को शीघ्र– अतिशीघ्र लागू की जानी चाहिए, तभी देश में आतंकवाद, नफरतवाद, नक्सलवाद, जातिवाद, पंथवाद और भेदभाव इत्यादि को मिटाया जा सकता है। हमारे देश का संविधान किसी परमात्मा का बनाया हुआ नहीं है बल्कि परमात्मा पर आस्था रखकर उन्हीं के मार्ग पर चलने वाले सामाजिक व्यक्तियों द्वारा समाज के हित में बनाया गया है इसलिए राष्ट्र और समाज हित को देखते हुए इसमें सुधार और परिवर्तन संभव है। इसलिए सुधार किया जाना चाहिए।

क्रिया को सुधारने से प्रतिक्रिया सुधर जाती है। प्रवृत्ति को सुधारने से परिणाम सुधर जाता है। बिंब को सुधारने से प्रति बिंब सुधर जाता है। नागरिकों को सुधारने पर नगर सुधर जाता है। देश की बागडोर थामने वालों को सुधारने से देश सुधर जाता है। देश की बागडोर किसके हाथ में देना यह मुख्य है। यदि दायित्व किसी अच्छी व्यक्ति के हाथ में सौंपा जाएगा तो परिणाम अच्छा ही निकलेगा इसलिए लोकतांत्रिक देश में उचित उम्मीदवार को चुनना चाहिए। देश के दायित्व को समझने वाले व्यक्ति में योग्यता होना चाहिए। उसकी एक आचार संहिता होना चाहिए। जो देश को संभालने का उम्मीदवार है उसे नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण पहले देना चाहिए। धर्म की बागडोर संभालने वाले साधु को प्रशिक्षण पहले दिया जाता है तभी उसे आचार्य बनाया जाता है। आचार्य संहिता का पालन करने वाला ही आचार्य होता है। प्रत्येक नेता आचार्य संहिता का पालन करने वाला होना चाहिए क्योंकि प्रत्येक नेता या मंत्री एक आचार्य की तरह होता है, अतः उसे जितेंद्रिय, संयमी, अनुशासित, नैतिक, सुशील, और नीतियों का जानकार होना चाहिए।

At the time of independence itself, a uniform code of conduct should have been implemented but due to some reasons it could not be implemented. Therefore, uniform code of conduct has been mentioned in Article 44, but even after 60 years of independence, it could not be implemented not due to vote politics or due to any fundamentalist party and society . But due to the growing social, religious, ethnic and political imbalance and the increasing influence of fundamentalists, a uniform code of conduct should be implemented as soon as possible, only then terrorism, hatred, Naxalism, casteism, sectarianism and discrimination etc. can be eradicated in the country. The Constitution of our country is not made by any God but has been made in the interest of the society by the social persons who had faith in God and follow His path, therefore, keeping in view the interest of the nation and the society, it is possible to improve and change it. Therefore improvements should be made.

Correcting the action improves the reaction. Improving the trend improves the outcome. By improving the image the image itself is improved. The city improves when the citizens improve. The country improves by improving those who hold the reins of the country. It is important as to whom to hand over the reins of the country. If the responsibility is handed over to a good person then the result will be good, hence in a democratic country a suitable candidate should be chosen. A person who understands the responsibilities of the country, should have competence. He should have a code of conduct. The one who is a candidate to take over the country should first be given training in moral values. The monk who takes charge of the religion is first given training and only then he is made an Acharya. Only the one who follows the Acharya Samhita is an Acharya. Every leader should be a follower of Acharya Samhita because every leader or minister is like an Acharya, hence he should be intelligent, restrained, disciplined, moral, well-mannered, and knowledgeable about policies.

देश की बागडोर यदि चरित्रहीन भ्रष्ट लोगों के हाथ में होगी तो घोटाला भ्रष्टाचार अन्याय और अत्याचार ही होगा, देश का उत्थान ना होकर पतन होगा इसलिए देश के शासक को जितेंद्रिय, अहिंसक, त्यागी, संयम, परोपकारी और सदाचारी होना चाहिए। सांप्रदायिक होना बुरा नहीं होता है लेकिन सांप्रदायिक का उन्माद बुरा होता है। धन संग्रह करना बुरा नहीं होता है लेकिन धन संग्रह का अहंकार बुरा होता है। देश में चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की योग्यता का पहले निर्धारण होना चाहिए उसके बाद प्रशिक्षण होना चाहिए। लोकतंत्र क्या है? लोकतांत्रिक सिद्धांत क्या है ? जनता के क्या कर्तव्य है? देश के राजा और प्रजा के क्या अधिकार और क्या कर्तव्य है इस का ज्ञान प्रत्येक नेता को होना चाहिए और प्रत्येक नागरिक को होना चाहिए। प्रशिक्षण के अभाव में नागरिक और नेता दोनों को अपने दायित्व का ज्ञान नहीं हो पा रहा है इसी कारण अन्याय ,अत्याचार भ्रष्टाचार, जातिवाद और आतंकवाद फैल रहा है।

आपसी संघर्ष से समाज परिवार और देश में अशान्ति फैलती है। संघर्ष मानव को हिंसक बनाता है। संघर्ष जीवन की मजबूरी है। संघर्ष दुष्ट प्रवृत्ति है। संघर्ष सामाजिक परस्परता को तहस नहस कर देता है। संघर्ष 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' के सूत्र का दमन कर देता है। प्रत्येक व्यक्ति समाज का घटक होता है। संघर्ष समाज के घटक का गला घोट देता है इसीलिए सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक और राजनैतिक संघर्ष अभिशाप है।

परस्परता और परस्परोपग्रहो के सूत्र से बंधा समाज अपना अस्तित्व, भविष्य में बचा कर रख सकता है एवं विश्व में फैली अशान्ति के वातावरण को शान्तिमय बना सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति को संघर्ष अपने आप के पाप कर्मों से और अपनी दुष्प्रवृत्ति से करना चाहिए। क्योंकि स्वयं की दुष्प्रवृत्तियों और दुष्कर्मों से संघर्ष करना वरदान हैं और आपस में एक–दूसरे से संघर्ष करना अभिशाप है।

If the reins of the country are in the hands of characterless corrupt people. then there will be scam in the government, there will be corruption, injustice and oppression, the country will not rise but will decline, hence the ruler of the country should be Jitendra, non-violent, ascetic, restrained, philanthropic and virtuous. Being communal is not bad but communal frenzy is bad. Accumulating wealth is not bad but arrogance in accumulating wealth is bad. The eligibility of the candidates contesting elections in the country should be determined first and then training should be done. What is democracy? What is democratic principle? What are the duties of the public? Every leader and every citizen should know what are the rights and duties of the king and the people of the country. Due to lack of training, both citizens and leaders are not aware of their responsibilities, due to which injustice, atrocities, corruption, casteism and terrorism are spreading.

Mutual conflict creates unrest in the society, family and country. Conflict makes humans violent. Struggle is a compulsion of life. Conflict is an evil tendency. Conflict destroys social interaction. Struggle suppresses the formula of 'Parasparopgraho Jeevanaam'. Every person is a component of society. Conflict strangles the constituents of the society, hence social, family, religious and political conflict is a curse.

A society bound by the thread of reciprocity and mutual prejudices can preserve its existence in the future and can make the atmosphere of unrest spread in the world peaceful.

Every person should fight against his own sinful deeds and his evil tendencies. Because fighting with one's own evil tendencies and misdeeds is a blessing and fighting with each other is a curse.

व्यक्ति और समाज

जैसा व्यक्ति होता है वैसी समाज बनती है। जैसी समाज होती है वैसा व्यक्ति बनता है। अनेकान्त की दृष्टि से देखें तो व्यक्ति और समाज दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है। दोनों में सच्चाई है। दोनों एक–दूसरे के सापेक्ष होकर रहते हैं। जहाँ सापेक्षता है वहाँ अहिंसा है, विश्व शान्ति है, मानवता है, मानवता का मूल्य है, मानवीय अधिकारों की सुरक्षा है, परिवार में प्रेम अपनत्व और आनंद है और समाज में अमन चैन है।

व्यक्ति अच्छा होगा तो समाज अच्छी होगी। समाज अच्छी होगी तो आने वाला हर बच्चा और व्यक्ति अच्छा होगा। जब दोनों अच्छे होगें तो चारों ओर का वातावरण खुशनुमा शान्त और सुन्दर होगा।

अच्छाई का कारण अहिंसक विचार धारा है, अनेकांत दृष्टि है और स्याद्वादमय कथन पद्धति है। बुराई में कारण हिंसक विचारधारा, हटग्राहिता, तानाशाही, रूढ़िवादिता, मूढ़ता और एकान्तवाद है।

हिंसक और अहिंसक विचार धारा हमारे अंदर से उत्पन्न होने वाली भावनाओं से बहती है। वह भावना धार्मिक सिद्धांतों के सुनने–सुनाने, पढ़ने–पढ़ाने से उत्पन्न होती है।

जिस समाज में धर्म के नाम पर पशुओं की बली, मांस भक्षण, हिंसक व्यवसाय को महत्व दिया जाता है और अन्याय अनीति से धनार्जन कों महत्व दिया जाता है उस समाज या धर्म के अनुयायी लोगों से विश्व शान्ति की मानवाधिकार की बात सोचना या करना मात्र छलावा है। मूर्खता है, व्यर्थ है दिवा स्वप्न है।

अच्छाई और नियंत्रण

बुराई से बचने के लिए अच्छाई लाने के लिए, अच्छा बनने के लिए मन और इंद्रियों पर नियंत्रण जरूरी है। मन और इंद्रियों के नियंत्रण को संयम कहते हैं। जो सम्यग ज्ञान और वैराग्य पूर्वक संयम धारण करता है वह तीन लोक का नाथ बन कर तीनों लोकों पर राज्य करता है। जो वैराग्य, विवेक, बुद्धि और समतापूर्वक संयम धारण करता है वह अपने राज्य पर राज करता है उस राजा के राज्य में जो लोग अपने मन को और इन्द्रियों को स्वयं नियंत्रित कर लेते हैं वे धन और पद–प्रतिष्ठा पाते है। जो नियंत्रित नहीं कर पाते उन पर सशक्त नियम कानून और दंड संहिता लगाकर उन्हें नियंत्रित किया जाता है। यदि ऐसा नहीं करते तो अपराध बढ़ते चले जाते हैं।

Individual and Society

As is the individual, so is the society. As is the society, so is the individual. If seen from Anekant's point of view, individual and society are two sides of the same coin. There is truth in both. Both live in relation to each other. Where there is relativity, there is non-violence, world peace, humanity, value of humanity, protection of human rights, love, affection and happiness in the family and peace in the society.

If the person is good then the society will be good. If the society is good then every child and person brought up will be good. When both are good then the environment all around will be pleasant, peaceful and beautiful.

The reason for goodness is non-violent ideology, diverse vision and method of words & speech. The causes of evil are violent ideology, isolationism, dictatorship, conservatism, stupidity and isolationism.

Violent and non-violent thoughts flow from the emotions that arise from within us. Good feelings arise from listening, narrating, reading and teaching religious principles.

In a society where animal sacrifice, meat eating, violent occupations are given importance in the name of religion and importance is given to earning money through injustice and bad policy, thinking or talking about human rights for world peace to the followers of that society or religion is just an illusion. It's foolishness, it's useless, it's a daydream.

Goodness and Control

To avoid evil, to bring good, to become good, it is necessary to control the mind and senses. Control of mind and senses is called restraint. One who has right knowledge and self-restraint becomes the Lord of the three worlds and rules over the three worlds. The one who has renunciation, prudence, intelligence and equanimity rules his kingdom. In the kingdom of that king, those who control their mind and senses themselves get wealth and position and prestige. Those who are not able to control are controlled by imposing strong rules, laws and penal codes. If this is not done then crimes keep increasing.

योग्यता और विकास

लोकतांत्रिक प्रणाली में हर व्यक्ति अपने हर कार्य के लिए स्वतंत्र है। हर व्यक्ति अपनी योग्यता का विकास कर सकता है। योग्यता के विकास होने पर गुणों का विकास होता है। गुणों के विकास होने से अच्छाई का विकास होता है। अच्छाई के विकास होने से सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत विकास होता है। जो योग्यता का विकास कर लेता है वह रोड छाप आदमी भी अरबपति बन जाता है। जो योग्यता हासिल नहीं कर पाता वह अरबपति का बेटा होकर भी रोटी के लिए तरस जाता है, राजा का राज कुमार होकर भी राज्य और रानी को खो देता है। वह कर्तव्य अधिकार और पुरुषार्थ को कुछ समझता ही नहीं।

व्यक्तिगत विकास की कोई सीमा नहीं होती है जो हिंसक प्रणाली का सहारा लेता है, वह व्यक्तिगत विकास तो कर लेता है लेकिन पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विकास व शांति प्राप्त नहीं कर पाता है। जहाँ अहिंसा होती है वहाँ दया, करुणा, समता, साम्य और परोपकार की भावना आती है। जहां अनेक दृष्टि कोण से अनेक भावनाएं पैदा होती हैं वहाँ आपसी सामंजस्य बना रहता है, वहां अनेकांतवादऔर सापेक्षवाद का सिद्धांत प्रकट हो जाता है। अहिंसा और अनेकांतवाद ही समाजवाद और साम्यवाद लाता है। सामाजिक आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं को दूर करता है। सत्य अहिंसा स्यादवाद और अनेकान्तवाद सब में विश्वास पैदा करता है, संतुलन, सहअस्तित्व मौलिक अधिकार और नियंत्रण बनाएँ रखता है इसीलिए यही विश्व शांति में कारण है।

सह अस्तित्व और शान्ति

विश्व में सभी प्राणियों को इस पृथ्वी पर एक साथ रहना है, एक साथ जीना है, एक दूसरे पर आधारित होकर जीवन यापन करना है इसलिए सहअस्तित्व जरूरी है। सहअस्तित्व, अहिंसा और अनेकांत से उत्पन्न होता है। अहिंसा और अनेकांत से अवरोध और विरोध दोनों समाप्त हो जाते हैं। अवरोध से आर्थिक विकास रुकता है। विरोध से सामाजिक विकास रुकता है।

Qualifications, Knowledge and Development

In a democratic system, every person is free to do any work. Every person can develop his abilities. When abilities develop, qualities develop. Development of qualities leads to development of goodness. Development of goodness leads to social, economic and personal development. The one who develops his skills, even a street person becomes a billionaire. The one who is unable to attain merit, despite being the son of a billionaire, yearns for bread; the one who is the son of a king, despite being a prince, loses the kingdom and the queen. He does not understand anything about duty, rights and effort.

There is no limit to personal development. One who resorts to violent system achieves personal development but is unable to achieve family, social, national and international development and peace. Where there is non-violence there comes a feeling of kindness, compassion, equality, equity and charity. Where many emotions arise from many viewpoints, there is mutual harmony, there the principle of anekantvad and relativism becomes manifest. Only non-violence and pluralism brings socialism and communism. Removes socio-economic and family problems. Truth, non-violence, Syadvad and Anekantvad create confidence in everyone, maintain balance, coexistence, fundamental rights and control, hence this is the reason for world peace.

Coexistence and Peace

All the living beings in the world have to live together on this earth, have to live together, have to survive based on each other, hence coexistence is necessary. It arises from co-existence, non-violence and diversity. Through non-violence and pluralism , both obstacles and opposition are eliminated. Barriers halt economic growth. Social development stops due to opposition.

अनादि काल से प्राकृतिक और भौगोलिक विरोध तो कभी हुआ ही नहीं काल्पनिक (मानसिक), राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक विरोध ज्यादा है क्योंकि सारी दुनिया में अनेक मान्यताएँ, धारणाएँ और कल्पनााएँ चल रही हैं। यही विकास में रोड़ा बन जाती हैं। आज का व्यक्ति यही चश्मा लगाकर घूम रहा है। इस चश्मा को हटाना होगा तभी सच्चाई और अच्छाई सामने आ सकती है। एकांत की दीवार हट सकती है और मिथ्या धारणा टूट सकती है। इसी के लिए मानवाधिकार पनपा है।

मिथ्या धारणा और धार्मिक हटग्राहिता सहअस्तित्व को बनने नहीं देती है। यह मनुष्य से मनुष्य को मिलने नहीं देती। यह जातियता, सांप्रदायिकता, शत्रुता, नफरत, ईष्या को जन्म देती है। इसी ने वसुधा को टुकड़े–टुकड़े में बाँटा है। इसी ने अलगाववाद पैदा किया है, इसी ने जटिल समस्याएँ पैदा की हैं, इसके जन्म होने पर अशान्ति फैली है, मानवीय अधिकारों का दफन हुआ है इसके रहते शान्ति की कल्पना नहीं की जा सकती है। सत्य, अहिंसा और अनेकांत मैत्री को जन्म देता है। जहाँ मैत्री है वहाँ सुख है, शान्ति है, आनंद है।

पदार्थ और परमार्थवादी दृष्टि

परमार्थवादी नहीं परमार्थवादी दृष्टिकोण अपनाएं। मनुष्य में बड़े बनने की और अहंकार की जन्मजात प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति या महत्वाकांक्षा के कारण वह पदार्थवादी दृष्टि अपनाता है। पदार्थ सुख–सुविधा देते हैं। पदार्थ से व्यक्ति अपने आप को बड़ा मानता है। जिसके पास जितने अधिक सुख–सुविधाओं के पदार्थ होते हैं वह उतना बड़ा माना जाता है। यही मान्यता व्यक्तियों को पदार्थवादी बनाती है। पदार्थवादी मान्यता संग्रहवृत्ति की ओर ले जाती है। संग्रह–वृत्ति प्रकृति का शोषण कराती है, हिंसक बनाती है, स्वार्थी और संकुचित बनाती है। यही प्रवृत्ति युद्ध के लिए प्रेरित करती है। यही प्रवृत्ति अहिंसक और विस्तारवादी मनोवृत्ति को समाप्त कर देती है। अहिंसा और अनेकांत की प्रवृत्ति परमार्थवादी एवं विस्तारवादी बनाती है और जन–जन के ह्रदय में विशालता और मानवता लाती है।

Since time immemorial, there has never been any natural or geographical conflict; there is more imaginary (mental), political, social and religious conflict because many beliefs, concepts and imaginations are going on all over the world. This becomes a hindrance in development. Today's person is roaming around wearing such glasses. This glasses have to be removed only then can truth and goodness come to the fore. The wall of isolation can be removed and misconceptions can be broken. For this human rights have flourished.

Misconceptions and religious prejudices do not allow coexistence. It does not allow meeting togather of man to man. It gives rise to casteism, communalism, enmity, hatred and jealousy. This is what has divided Vasudha (Earth) into pieces. This has given rise to separatism, this has created complex problems, due to its birth unrest has spread, human rights have been buried, peace cannot be imagined without this. Truth gives birth to non-violence and infinite friendship. Where there is friendship there is happiness, peace and joy.

Substance and Altruistic Vision

Adopt an altruistic and not an altruistic approach. Man has an innate tendency to become big and arrogant. Because of this tendency or ambition he adopts a materialistic view. Materials provide comfort and convenience. A person considers himself greater than matter. The more comforts and luxuries a person has, the greater he is considered. This belief makes people materialistic. Materialistic beliefs lead to hoarding. The instinct of accumulation exploits nature, makes it violent, selfish and narrow-minded. This tendency inspires war. This tendency eliminates non-violent and expansionist attitudes. The tendency of non-violence and equality makes one altruistic and expansionist and brings breadth and humanity in the hearts of people.

विचार, शान्ति और भावना

विचारों का कभी अंत नहीं होता है। विचारों की यात्रा अनादि काल से प्रवाहमान है और अनंत काल तक प्रवाहमान रहेगी। विचारों में अनंत शक्ति होती है। विचारों के साथ प्रतिबंध नहीं होता है। विचार अनेक प्रकार के होते हैं। विचार कहीं स्वर्ग, नरक अथवा आकाश से नहीं आते हैं। विचार हमेशा ज्ञान से प्रकट होते हैं। विचारों में कभी छुआछूत का दोष नहीं लगता है। विरोधी विचारों में सहिष्णुता लाना आवश्यक है। विचार हमेशा नये धर्म, दर्शन और साहित्य को जन्म देते हैं। विचारों में उदारता लाने वाले का उद्धार हो जाता है। विचारों का बार–बार जन्म होता रहता है। बहुमत और बहुत आवाज में लोगों के विचार दब जाते हैं। विचार मस्तिष्क की देन है। विचार मस्तिष्क की खुराक हैं। सत्य अहिंसा और अनेकांत से विचार पल्लवित हो कर विशाल रूप धारण कर लेते हैं। दुनिया बदलती है पर्याय बदलती है, विचार बदलते हैं, जीवन बदलता है लेकिन जीव वही रहता है। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः अर्थात् द्रव्य के आश्रय से गुण रहते है, गुणों के आश्रय से गुण नहीं रहते हैं। यदि गुणों के आश्रय से गुण रहने लग जायेगें तो गुण द्रव्य हो जायेगा और गुणों में मिलावट हो जायेगी। एक गुण दूसरे गुण के अधिकारों को छीन लेंगें। जिससे द्रव्य की व्यवस्था बिगड़ जायेगी।

द्रव्य वही रहता है द्रव्य में गुण वही रहते हैं, द्रव्य को देखने और विचारने का द्रष्टिकोण बदल जाता है। उचित विचार ही, आत्म दृष्टि, तत्त्व ज्ञान सद्भावना और आचरण में परिर्वतन लाते हैं। वही विचार धारा सम्यक् दृष्टि, सम्यक् ज्ञानी, एवं सम्यक् चारित्री बनाकर मोक्षमार्ग में लगाती है। वही विचारधारा मानवीय मूल्यों को, मानवाधिकारों को जन्म देती है और कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रेरित करती है। इसलिए खुद को बदलने के लिए भावना और आचर–विचार को बदलने की जरुरत हैं। इसी युक्ति से चलने पर मुक्ति मिल जाएगी। मानवता पल जायेगी, मानवाधिकारों की रक्षा हो जायेगी एवं सद्भावनाएँ पैदा हो जायेगी।

Thoughts, Peace and Feelings

Ideas never end. The journey of ideas has been flowing since time immemorial and will continue to flow till eternity. Thoughts have infinite power. There are no restrictions with ideas. There are many types of thoughts. Thoughts do not come from heaven, hell or sky. Thoughts always emerge from knowledge. Thoughts are never accused of untouchability. It is necessary to bring tolerance towards opposing views. Ideas always give birth to new religions, philosophies and literature. The one who brings generosity in thoughts gets salvation. Thoughts continue to be born again and again. People's views get suppressed by majority and too many voices. Thoughts are the gift of the brain. Thoughts are food for the brain. Thoughts of truth, non-violence and diversity flourish and take a huge form. The world changes, meaning changes, thoughts change, life changes but the soul remains the same. *"Dravashray nirguna Guna:"* means qualities remain with the support of matter, qualities do not remain with the support of qualities. If qualities start living under the shelter of qualities then the qualities will become matter and the qualities will get mixed. One quality will take away the rights of another quality. Due to which the financial system will get disturbed.

The substance remains the same, the properties of the substance remain the same, the perspective of seeing and thinking about the substance changes. Only proper thoughts, introspection, philosophical knowledge bring about goodwill and change in conduct. The same stream of thought leads to the path of salvation by creating right vision, right knowledge and right character. The same ideology gives birth to human values, human rights and inspires to perform duties. Therefore, to change oneself, there is a need to change feelings and conduct. By following this strategy you will get salvation. Humanity will flourish, human rights will be protected and goodwill will be generated.

पारिवारिक शांति और भावना

मात्र सोचने विचारने का नाम भावना नहीं है बल्कि अंतरंग से उठने वाली ऐसी तरंग जो ज्ञान तंतुओं को और शरीर की कोशिकाओं को इस प्रकार से संस्कारित कर दे कि मस्तिष्क में जो असंख्य न्यूरोट्रांसमीटर हैं उनमें विचारों की स्थाई छाप पड़ जाय। भावनाओं से दूसरों के हृदय को परिवर्तित करना सबसे बड़ी साधन है। वस्तु तत्व के वास्तविक स्वरूप का चिंतन करते करते अनुभव के स्तर पर उसका साक्षात्कार करना सम्यक् भावना है। बुरी प्रवृतियों अर्थात् आदतों को परिष्कृत करने के लिए, जिसको जो अधिकार मिले हैं उनका उपयोग करने के लिए और अच्छी प्रवृत्तियों के संयोजन के लिए भावना का प्रयोग करना चाहिए।

भावना योग के प्रयोग की विधि

भावनाओं के प्रयोग करने की एक विधि होती है। उस विधि के अनुसार यदि प्रयोग किया जाता है तो नियम से प्रभाव पड़ता है। जैसे सर्वप्रथम अपने शरीर को तनाव रहित करके श्वास पर अपने मन को केंद्रित करना चाहिए। धीरे–धीरे श्वास को लेना और छोड़ना चाहिए। उसके बाद जिस व्यक्ति को परिवर्तित करना है अथवा जो कार्य संपन्न करना है उसे स्मरण में लाना चाहिए। बार–बार अपने कार्य का चिंतन करते हुए मन को एकाग्र करें। एक सफेद प्रकाश अपनी बंद आँखों में प्रकाशित करें। अपनी भावना को सामने वाले उस व्यक्ति से जोड़ें जिसे परिवर्तित करना है। पुनः विचार करें कि उसकी नकारात्मक ऊर्जा समाप्त हो रही है। उसके अंदर हमारे प्रति सद्भावना उत्पन्न हो रही है। सामने वाले के अंदर शत्रुता का भाव समाप्त हो। सकारात्मक ऊर्जा उसके चारों ओर उत्पन्न हो। मेरे हित में वह विचार करें। उसे अपनी बुरी आदतों से ग्लानी हो।

अनुप्रेक्षा अर्थात् भावना का प्रयोग और मन की एकाग्रता। मन की एकाग्रता ध्यान के अभ्यास पर आधारित है। यह 'ध्यानाभ्यास' निश्चल निराकुल, शांत भाव से शांत एरिया में जागरूक होकर रीड और गर्दन आदि सीधी करके करना चाहिए।

अनुप्रेक्षा का प्रयोग करते समय कुछ क्षण के लिए कष्ट संभव है लेकिन उस कष्ट में शांत भाव रखना चाहिए और उसे सहन करना चाहिए।

Family Peace and Feelings, Emotions

Emotions are not just about thinking, but such a wave arising from within, which conditions the fibers of knowledge and the cells of the body in such a way that the innumerable neurotransmitters in the brain leave a permanent impression of thoughts. The greatest means is to change the hearts of others through emotions. Contemplating the true nature of the object and experiencing it at the level of experience is the right feeling. Emotions should be used to refine bad tendencies *i.e.* habits, to use the rights one has received and to combine good tendencies.

Methods of Using Yoga for Feelings, Emotions (Bhavna)

There is a method to use emotions. If it is used according to that method then this rule has an effect. Like, first of all you should make your body stress-free and concentrate your mind on breathing. Inhaling and exhaling should be done slowly. After that, the person who has to be changed or the work to be accomplished, it should be brought to mind. Concentrate your mind by thinking about your work again and again. Shine a white light into your closed eyes. Connect your feelings to the person in front of you (or in your thought) who needs to be changed. Consider again that his negative energy is being eliminated. Goodwill towards us is arising inside him. The feeling of hostility in that person should end. May positive energy be generated around him. Think in my best interest & he feels guilty about his bad habits.

Anupreksha means use of emotions and concentration of mind. Concentration of mind is based on the practice of meditation. This 'meditation practice' should be done in a calm and quiet area with awareness, keeping erect spine and neck etc.

While using Anupreksha, pain is possible for some moments, but one should remain calm in that pain and tolerate it.

जो जितना कष्ट सहन करता है वह उतने ही उन्नति के शिखर पर पहुँचता है। कष्ट सफलता की कसौटी है। वह मार्ग पर बने रहने का अवसर प्रदान करता है। आचार्य उमा स्वामी महाराज ने तत्वार्थ सूत्र के नौवें अध्याय के आठवें सूत्र में लिखा है– मार्गात्त्यवन –निर्जरार्थं परिषोढव्याः परिषहाः अर्थात् मोक्ष मार्ग में बने रहने के लिए और कर्मों की निर्जरा (क्षय) करने के लिए उपसर्ग और परिषह अर्थात् कष्ट परेशानी और दुख दर्द को सहन करना।

भावना योग में ध्यान रखना कि– अलग–अलग सदस्यों की रुचि, रहन–सहन, खान–पान इत्यादि अलग–अलग होते हैं। अनुप्रेक्षा अर्थात् भावना अलग–अलग प्रकार के जीवन स्तर को सामंजस्यपूर्ण सहिष्णु एवं अनुकूल बनाती है। इससे भावना अनुप्रेक्षा प्रयोग विधि में सर्वप्रथम दो मिनट तक ओंकार ध्वनि रुप महाप्राण करना चाहिए। पांच मिनिट तक महामंत्र का जाप करना चाहिए। तीन मिनट तक गहरी श्वास लेने और छोड़ने का कार्य यह सोचकर करना चाहिए कि प्राण वायु मेरे अंदर आ रही है और प्रदूषित वायु बाहर जा रही हैं। इसी के साथ मैं स्वस्थ हो रहा हूँ। प्रतिकूलता, अनुकूलता में बदल रही है। विरोधी परास्त हो रहे हैं।

मैं मानवीय संबंधों में विश्वास रखता हूँ। मैं ईश्वर पर विश्वास रखता हूँ। मैं अपने भाग्य और पुरुषार्थ पर विश्वास रखता हूँ। मैं प्रत्येक प्राणी के मूल अधिकारों पर विश्वास रखता हूँ। मैं भावनाओं पर विश्वास रखता हूँ। मैं सामने वाले व्यक्तियों पर विश्वास करता हूँ। मैं सबके हित में सोचता हूँ। विरोधी भी मेरे मित्र हैं। मैं समन्वय चाहता हूँ। मैं संघर्ष नहीं शांति चाहता हूँ। क्योंकि हे! आत्मन जिसे तू मारना चाहता है वह भी तू ही है। जिसे तू नीचा दिखाना चाहता है वह भी तू ही है। जिसे तू दुःख देना चाहता है वह तू ही है। जिसे तू दास बनाना चाहता है वह तू ही है। जिसे तू दवाना चाहता है वह तू ही है। जिस मूल अधिकारों का हनन करना चाहता है वह तू है। हे! आत्मन तू मर नहीं सकता। तू जल नहीं सकता। तू अजर अमर अविनाशी है। तेरा कोई कुछ बिगाड़ नहीं कर सकता। पूरा ब्रह्मांड एक–दूसरे से जुड़ा हुआ है। हर एक आत्मा एक समान है। इस प्रकार की भावना लगभग पाँच मिनट तक करना। अंत में पुनः ओंकार ध्वनि करना चाहिए। यही भावना पारिवारिक सामाजिक और विश्व शांति दिलाने में कारण बन सकती है।

The more suffering one endures, the more one reaches the pinnacle of progress. Suffering is the criterion of success. He provides an opportunity to stay on track. Acharya Uma Swami Maharaj has written in the eighth sutra of the ninth chapter of Tattvartha Sutra: *"Margaattyavan - Nirjarartham Parishodhavyaah Parishaha"* means to remain on the path of salvation and for nirjara (destruction) of karmas bear prefix (upsarg) and Parishah *i.e*. to bear suffering, trouble and pain.

In Bhavana Yoga, keep in mind that different members have different interests, lifestyle, eating habits etc. Anupreksha *i.e*. emotion makes different types of living standards harmonious, tolerant and favourable. With this, in the method of using Bhavana Anupreksha, one should first inhale the Omkar sound for two minutes. Mahamantra should be chanted for five minutes. Deep breathing and exhaling should be done for three minutes thinking that vital air is coming inside me and polluted air is going out. With this I am getting healthy. Adversity is turning into favourability. Opponents are being defeated.

I believe in human relationships. I believe in God. I believe in my luck and efforts. I believe in the basic rights of every living being. I believe in emotions. I trust the people in front of me. I think in everyone's interest. Opponents are also my friends. I want coordination. I want peace not conflict. Because hey! The Atman whom you want to kill is also you. The one you want to humiliate is also you. The one you want to hurt is you. The one you want to enslave is you. The one you want to cure is you. It is you who wants to violate the fundamental rights. Hey! Atman you cannot die. You cannot burn. You are immortal and indestructible. No one can do any harm to you. The entire universe is interconnected. Every soul is equal. Do this type of feeling for about five minutes. At the end Omkar sound should be made again. This feeling can lead to family, social and world peace

अनुप्रेक्षा और शान्ति

संसार और शरीर के स्वभाव का अनुचिन्तन करना अनुप्रेक्षा कहलाती है। अनुप्रेक्षा करने से अहंकार और ममकार टूट जाता है। पर पदार्थ और भोगों के प्रति मूर्छा छूट जाती है। दूसरे के अधिकारों के शोषण करने का भाव दूर हो जाता है। किसी वस्तु के प्रति चित्त की बार बार प्रवृत्ति होने को भावना कहते हैं। पर वस्तु के प्रति मोह वश चित्त के अति लगाव होने को मूर्छा कहते हैं। मूर्छा भाव में ही व्यक्ति दूसरों के अधिकारों का शोषण और हनन करता है। लेकिन वस्तु तत्व के स्वभाव को चित्त में लाकर बार–बार चिंतन करना अनुप्रेक्षा या भावना कहलाती है। जिसका बार–बार चिंतन किया जाता है उससे मन प्रभावित होता है और जीवन में वैसे संस्कार पड़ने लग जाते हैं। व्यक्ति अहितकर कार्य छोड़कर हितकर कार्य करने लग जाता है इसीलिए यह अनुप्रेक्षा पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है।

चेतन मस्तिष्क में उठने वाले विचार आत्मा के ज्ञान गुण की कर्मोदय जन्य पर्याय है। जब मन में उठने वाला कोई विचार मस्तिष्क में जाता है और धारणामति ज्ञान बनाकर अवचेतना मस्तिष्क में उतर जाता है एवं वह विचार शरीर के द्वारा कार्य में परिलक्षित होने लगता है तब वह उस प्राणी का उस पर्याय का स्वभाव बन जाता है। जब अच्छे विचारों से अच्छे कार्य परिलक्षित होने लगते हैं तब व्यक्ति का अच्छा स्वभाव बन जाता है लेकिन जब बुरे विचार कार्य में परिलक्षित होने लगते हैं तब व्यक्ति का बुरा स्वभाव बन जाता है। जब अनुप्रेक्षा योग एवं संकल्प से उस भावना को मस्तिष्क में स्थाई बना दिया जाता है तब वही विचार अवचेतन मस्तिष्क में पहुँच जाता है, उसे ही ब्रेनवाश अथवा मस्तिष्कीय परिवर्तन कहते हैं। इस प्रकार अनुप्रेक्षा से ब्रेन वाशिंग की जाती है अर्थात् पुराने विचारों को हटाकर नए विचारों को स्थापित किया जाता है।

शरीर भिन्न है, आत्मा भिन्न है, आत्मा अनंत गुण और शक्ति की धारी है, अखंड है, अविनाशी है, मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, मैं ज्ञाता दृष्टा चैतन्य आत्मा हूँ, मैं किसी का कर्ता धर्ता नहीं हूँ, कषाय मेरा स्वभाव नहीं है, कोई मेरा दुश्मन नहीं है, जीव जीव का उपकारी है, सभी जीव मेरे मित्र हैं, मैं स्वभाव से सिद्ध स्वरूपी परमात्मा हूँ लेकिन कर्मों के सहयोग से विभाव रुप परिणाम न करने से संसारी बना हूँ।

Perspective and Peace (Anupreksha)
Perspective and Peace

Contemplating the nature of the world and the body is called Anupreksha. By doing Anupreksha, ego and pride are destroyed. One loses consciousness of things and pleasures. The feeling of exploiting the rights of others goes away. The repeated inclination of the mind towards an object is called emotion. But excessive attachment of the mind towards an object due to attachment is called unconsciousness. It is only in unconsciousness that a person exploits and violates the rights of others. But repeatedly thinking about the nature of the object in mind is called Anupreksha or Bhavana (feelings). Whatever is contemplated again and again, it affects the mind and such habits start forming in life. A person leaves harmful work and starts doing beneficial work, that is why this anupreksha is completely psychological.

The thoughts arising in the conscious mind are the Karmodaya-born synonym of the knowledge quality of the soul. When a thought arising in the mind goes into the brain and after forming conceptual knowledge, it enters the subconscious mind and that thought starts getting reflected in actions through the body, then it becomes the nature of that creature. When good thoughts start getting reflected in good actions, then a person's good nature is formed, but when bad thoughts start getting reflected in actions, then a person's bad nature is formed. When that feeling is made permanent in the brain through Anupreksha Yoga and resolution, then the same thought reaches the subconscious mind, this is called brainwashing or brain change. In this way, brain washing is done through Anupreksha, that is, old ideas are removed and new ideas are installed.

The body is different, the soul is different, the soul is the bearer of infinite qualities and power, it is unbroken, indestructible, I am not a body, I am a soul, I am a knower, a seer, a conscious soul, I am not the doer of anyone, bitterness is not my nature, no one is my enemy, every living being is helpful to every living being, all living beings are my friends, I by nature am a perfect form of God, but due to not producing potential results with the help of my actions, I have become worldly.

जब कोई मेरा दुश्मन नहीं है तो मैं दूसरों से बदले की भावना क्यों रखूँ। दूसरों के अधिकारों को क्यों छीनू, दूसरों की हत्या क्यों करूँ, दूसरों की चोरी क्यों करूँ इत्यादि प्रकार के विचार, सुझाव, शिक्षा और बार–बार अनुप्रेक्षा की जाती है तब व्यक्ति के अपने स्वभाव में परिवर्तन आता है और वह बुरी आदत को बदल कर अपने स्वभाव में आ जाता है इस प्रकार की अनुप्रेक्षा रुप चिंतन से जो भावनात्मक तरंगें पैदा होती हैं वे पुराने कुसंस्कारों को उखाड़ कर फेंक देती हैं और नए संस्कारों का सृजन करती हैं। ऐसी भावनाओं से वैज्ञानिकों के अनुसार हमारे शरीर की कोशिकाएँ, ज्ञान तंतु अर्थात् न्यूरॉन्स ट्रांसमीटर एवं ऊतक में उत्पन्न होने वाले उद्वेग शांत हो जाते हैं जो हृदय में परिवर्तन लाते हैं। यह परिवर्तन जब स्थाई हो जाता है तब व्यक्ति आध्यात्मिक हो जाता है। वह ज्ञान और चारित्र की ओर कदम बढ़ा कर मोक्ष मार्गी बन जाता है जिसे वैराग्य कहते हैं। ऐसा व्यक्ति सहिष्णुतावादी, सापेक्षतावादी, समन्वयवादी, सहअस्तित्ववादी, अनाग्रहवादी, कर्तव्यनिष्ठ, मैत्री, प्रमोद, करुणा, धर्मानुरागी एवं समतावादी बन जाता है। पारिवारिक, सामाजिक समस्या, अशांति, कलह, शोषण और हिंसा आदि से ऊपर उठ जाता है इसलिए वह किसी के अधिकारों का हनन नही करता वह किसी की सत्ता को आघात नहीं पहुँचाता वह अपने कर्तव्यों से पीछे नहीं हटता। अनुप्रेक्षा पारिवारिक, राजनैतिक और सामाजिक शांति का कारण बन जाती है।

भावनात्मक तरंगें इलेक्ट्रोमेगनेटिक फील्ड पैदा करती हैं जिससे हमारे शरीर की कोशिकाओं में न्यूरोट्रान्स मीटर प्रवाहित होते हैं जो ऊतकों से उत्पन्न होने वाले उद्वेग को शान्त करता है और पुराने कार्यों की श्रृंखला एवं संस्कारों को तोड़कर नये संस्कारों एवं नई ऊर्जा को संचारित करता है।

भावना का अर्थ मात्र सोच विचार नहीं है बल्कि अपने ज्ञान तंतुओं और कोशिकाओं को अपने बस में करके न्यूरोनास (न्यूरो ट्रांसमीटर) द्वारा मस्तिष्क तक पहुँचाना और अपने संकल्प में दृढ रहना भी होता है। जब कोई व्यक्ति भावना भाते भाते अपनी कोशिकाओं को पूर्णता आदी (हेवीचुअल) सुसंस्कारित सुव्यवस्थित कर लेता है वह अपनी भावनाओं के द्वारा दूसरों को भी प्रभावित कर सकता है। भावनाओं से दूसरों के उद्वेग को शांत एवं हृदय को परिवर्तित कर सकता है।

When no one is my enemy then why should I have feelings of revenge from others. When thoughts, suggestions, education and repeated reminders like why should I take away the rights of others, why should I kill others, why should I steal from others, if such feelings arise then there is a change in the person's own nature and he changes his bad habits. It becomes natural in nature to think that the emotional waves generated by this kind of reflection uproot the old bad habits and create new ones. According to scientists, due to such emotions, the impulses generated in the cells, knowledge fibers i.e. neurons, transmitters and tissues of our body calm down which brings about changes in the heart. When this change becomes permanent then the person becomes spiritual. By taking steps towards knowledge and character, he treads the path to salvation, which is called renunciation. Such a person becomes tolerant, relativist, syncretic, co-existent, non-aggressive, dutiful, friendly, cheerful, compassionate, religious and egalitarian. He rises above family, social problems, unrest, discord, exploitation and violence etc. Therefore, he does not violate anyone's rights, does not attack anyone's authority, and does not step back from his duties. Anupreksha becomes the cause of family, political and social peace.

Emotional waves create electromagnetic fields due to which neurotransmitters flow in the cells of our body, which calms the excitement arising from the tissues and breaks the chain of old actions and rituals and transmits new rituals and new energy.

Emotion does not only mean thinking but also means controlling one's knowledge fibers and cells and sending them to the brain through neurons (neurotransmitters) and remaining firm in one's resolve. When a person gets his cells habitually addicted to emotions.becomes a well-cultured person, he can organ things well and can influence others through his emotions. Emotions can calm the anger of others and change the heart.

जैन आचार्य ने बारह भावना (द्वादश अनुप्रेक्षा) वैराग्य भावना, आत्म भावना, मेरी भावना, मैत्री भावना, क्षमा भावना, प्रेम भावना सम्यक्त्व भावना समाधि मरण भावना एवं सत्य अहिंसा आदि व्रतों की 5–5 भावनाएं कही है। इन भावनाओं को भाने से सहिष्णुता, सामंजस्य, सापेक्षता, समन्वय, सह अस्तित्व, अनाग्रह, प्रेम, सेवा, दया, करुणा प्रगट हो जाती है।

अनेकता में एकता

मनुष्य अनेक है। मनुष्य में गुण अनेक है। उनमें सोच विचार की धारा भी अनेक है। उस अनेकता में एकता को जोड़ने का काम समन्वय करता है। समन्वय ही सामंजस्य पूर्ण स्थिति को निमित करता है। समन्वय ही अनेकता निरपेक्षता और स्वतंत्रता का द्योतक है। समन्वय के बिना परिवार, समाज और देश में पग–पग पर टकराहट होती है। उसके बिना नियम, कानून विधि–विधान के लिए टकराहट होती है। वह टकराहट अशांति और दुख का कारण होती है। इसलिए समन्वय बनाएँ, अनेकांत अपनाएँ, प्रेक्षा ध्यान करें और सुख शान्ति पायें।

Jain Acharya has said 5-5 feelings of fast like twelve feelings (Dwadash Anupreksha) Vairagya feeling, Self feeling, My feeling, Friendship feeling, Forgiveness feeling, Love feeling, Samyaktva feeling Samadhi, Death feeling and Satya non-violence etc. By enjoying these feelings, tolerance, harmony, relativity, coordination, co-existence, non-aggression, love, service, kindness and compassion are manifested.

Unity in Diversity

There are many human beings. There are many qualities in a human being. There are many streams of thinking among them. Coordination is the work of adding unity to that diversity. Only coordination leads to a harmonious situation. Coordination is the sign of diversity, absolutism and independence. Without coordination, there is conflict at every step in the family, society and country. Without that, there is conflict for rules and regulations. That conflict is the cause of unrest and sorrow. Therefore create coordination, adopt Anekanta, do Preksha meditation and attain happiness and peace.

अनेकांत और अहिंसा

अनेकांत धर्म है क्योंकि प्रत्येक वस्तु अनेक धर्मात्मक होती है। अनेक धर्मात्मक वस्तु के स्वभाव को अनेकान्त कहते हैं। वस्तु के स्वभाव को धर्म कहते हैं। 'वत्थु सहावो धम्मो' प्रत्येक वस्तु में सामान्य और विशेष दोनों प्रकार के गुण पाये जाते हैं। सामान्य गुण सामन्जस्य स्थापित करते हैं। विशेष गुण अन्य वस्तु से अपना अलग अस्तित्व बना कर रखते हैं एवं अपनी अलग पहचान कराते हैं। इसी कारण एक ही वस्तु किसी अपेक्षा से सादृश अर्थात् समान है और किसी अपेक्षा से विसदृश अर्थात् असमान है। यही सापेक्षता अनेकता में एकता और एकता में अनेकता स्थापित करती है। यह अनेकांत का सिद्धान्त विवादों को घटाता और सुलझाता है।

अनेकता में एकता लाये बिना लोकतान्त्रिक व्यवस्था को सुचारू रूप से नही चलाया जा सकता। अनेकता में एकता बनाये रखने का सिद्धांत ही लोकतंत्र का मूल सिद्धांत है यानि मौलिक अधिकार है। असमानता में समानता लाने की व्यवस्था का उद्देश्य लोक तान्त्रिक व्यवस्था का होता है। जिस पदार्थ में अनेक उपयोगी गुण धर्म होते हैं, वह पदार्थ अधिक मूल्यवान होता है। 'रोटी कपडा और मकान ये मानव के है तीन निशान।' यह आदमी की मौलिकता को समाप्त कर देता है। अनेकान्त के सिद्धात पर चलने से समान आचार संहिता, अनेक धर्म और समाज को विकसित किया जा सकता है।

वस्तु में अनेक धर्म स्वीकार करना ही तो अनेकान्त है। उन अनेक धर्मों में किसे स्वीकार करना, किसे विकसित करना ये हमारे पुरुषार्थ और विवेक पर आधारित है। वस्तु किसी अपेक्षा से समान है, किसी अपेक्षा से असमान है। असमानता का हटाग्राही विकास अखंडता को खंडित कर देता है। समानता का विकास एकता को पुष्ट कर देता है, समस्याओं और विवादों को सुलझा देता है। प्रत्येक प्राणी के अधिकारों को संरक्षित कर देता है। इसीलिए अनेकान्त को अहिंसा धर्म और वस्तु व्यवस्था की रीढ़ कहा है।

अहिंसा पौद्गलिक नहीं जैविक है। अहिंसा जीव के ज्ञान गुण से उत्पन्न एक भावनात्मक वृत्ति है। कोमलता, उदारता, परोपकारिता, दया, करुणा, प्रेम, सेवा, अपनत्व, समतामयी भावना एवं तदरूप क्रिया जीवों के अहिंसा धर्म का प्रतिफल है।

Pluralism (Anekant) and Non-Violence

Anekant (Pluralism) is religion because every thing has many religious aspects. The nature of many religious things is called Anekanta. The nature of a thing is called religion. 'Vatthu Sahavo Dhammo" - both general and special qualities are found in every object. Common qualities establish harmony. Special qualities maintain their separate existence from other objects and give them a distinct identity. For this reason, the same thing is similar *i.e.* equal to some expectation and dissimilar to some expectation *i.e.* unequal. This relativity establishes unity in diversity and diversity in unity. This principle of Anekant reduces and resolves disputes.

Without bringing unity in diversity, the democratic system cannot be run smoothly. The principle of maintaining unity in diversity is the basic principle of democracy *i.e.* it is a fundamental right. The objective of the democratic system is to bring equality in inequality. The substance which has many useful properties is more valuable.
"Roti Kapada aur makaan ye manav ke hain teen nishan "

'Food, clothing and shelter are the three signs of a human being.' It destroys the originality of man. By following the principle of Anekant, a common code of conduct, various religions and societies can be developed.

Accepting many religions in a thing is anekant. Which one to accept and which one to develop among those many religions (aspects) is based on our efforts and discretion. The object is similar to some expectation, dissimilar to some expectation. The regressive growth of inequality shatters integrity. Development of equality strengthens unity and resolves problems and disputes. Protects the rights of every living being. That is why Anekant has been called the backbone of non-violence, religion and economic system.

Non-violence is biological, not scientific. Ahimsa is an emotional instinct arising from the knowledge quality of the living being. The result of Non Violence as religion is Tenderness, generosity, altruism, kindness, compassion, love, service, affinity, equanimity and corresponding actions of living beings.

आचार–विचार जीव की भावना पर आधारित है। अहिंसक आचार–विचार ही जैन धर्म में मान्य हैं। अहिंसा अनेक प्रकार की है उसका पालन मन, वचन, काय इन तीनों से करना होता है। काय अहिंसा का अर्थ आचरण की अहिंसा।

आचरण में आई अहिंसक प्रवृत्ति ही जैनाचार संहिता है। हमारे देश की ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की आचार–संहिता अहिंसक होनी चाहिए। आचरण और प्राणों का मुख्य आधार है शरीर। किसी भी प्राणी को शारीरिक कष्ट नहीं देना कायिक अहिंसा कहलाती है। अतः किसी भी प्राणी को संताप दुःख, क्लेश नहीं पहुँचाना चाहिए। कायिक हिंसा नहीं करना ही द्रव्य अहिंसा कहलाती है। अहिंसा के लिए ही मौलिक अधिकार है और मौलिक अधिकारों के लिए अहिंसा है।

कायिक हिंसा चार प्रकार की होती है। संकल्पी हिंसा, विरोधी हिंसा, आरंभी हिंसा, उद्योगी हिंसा। यदि तीन हिंसा से नहीं बच सकते तो भी संकल्पी हिंसा का त्याग किया जा सकता है। चारों प्रकार की हिंसा त्याग करने की अपेक्षा से अहिंसा भी चार प्रकार की हो जाती है।

वाचनिक अहिंसा :- वचन से किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना वाचनिक अहिंसा है। किसी जीव के संबंध में कहना कि मैं तुम्हारी हत्या कर दूँगा यही वाचनिक हिंसा है। अर्थात् हिंसक शब्दों का उच्चारण करना वाचनिक हिंसा कहलाती है। अहिंसक व्यक्ति ऐसे हिंसक शब्दों का प्रयोग नहीं करता।

मानसिक अहिंसा :- मन से किसी को कष्ट दुःख देने अथवा मारने का विचार करना मानसिक हिंसा है। किसी को कष्ट दुख न हो ऐसे विचार करना मानसिक अहिंसा है। मानसिक अहिंसा में क्रिया रूप अहिंसा का अभाव रहता है परंतु विचारों में हमेशा अहिंसा चलती रहती है इसे भाव अहिंसा भी कहते हैं। इस भाव अहिंसा से जीव सद्गति को प्राप्त कर लेता है, अपनी आत्मा की सुरक्षा कर लेता है। द्रव्य अहिंसा से दूसरों की सुरक्षा होती है। भाव अहिंसा से अपनी आत्मा की सुरक्षा होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी इष्ट वस्तु को प्राप्त करना चाहता है। जब उसे वस्तु आसानी से नहीं मिलती है तो वह साम दाम, दंड, भेद अपनाकर प्राप्त करना चाहता है। ऐसी स्थिति में वह हिंसा करने पर भी उतारू हो जाता है।

Ethics is based on the feelings of the living being. Only non-violent conduct and thoughts are acceptable in Jainism. There are many types of non-violence, it has to be followed through mind, speech and body. Physical non-violence means non-violence of conduct.

The non-violent attitude in conduct is the Jain code of conduct. The code of conduct not only of our country but of the entire world should be non-violent. The body is the main basis of conduct and life. Not causing physical pain to any living being is called physical non-violence. Therefore, one should not cause pain, sorrow or suffering to any living being. Not doing physical violence is called physical non-violence. For non-violence there is fundamental right and for fundamental rights there is non-violence.

There are four types of physical violence. Premeditated violence, protest violence, initial violence, industrial violence. Even if other three violence cannot be avoided, premeditated violence can still be renounced. By renouncing of all four types of violence, non-violence itself also becomes four types :

Verbal non-violence:- Not causing any kind of pain through words is verbal non-violence. Saying in relation to any living being that I will kill you is verbal violence. That is, uttering violent words is called verbal violence. A non-violent person does not use such violent words.

Mental non-violence:- Thinking of hurting or killing someone in your mind is mental violence. Thinking that no one should suffer or suffer pain is mental non-violence. In mental non-violence, there is absence of non-violence in the form of action, but non-violence always continues in thoughts, it is also called emotional non-violence. Through this feeling of non-violence the living being attains salvation and protects his soul. Non-violence protects others. Our soul is protected through non-violence. Every person wants to achieve his desired object. When he does not get the thing easily, he tries to get it by any means adopting tact's like by trying to make the other person understand, by offering a price price, by giving punishment or by using intelligence. In such a situation he even becomes inclined to commit violence.

इसीलिए युग के आदि में भगवान आदिनाथ स्वामी ने कहा है। अहिंसा धर्म के पालन हेतु और अपनी आत्मा की रक्षा हेतु पर वस्तु के ग्रहण करने की भावना नहीं करना चाहिए और पर वस्तु का संग्रह भी नहीं करना चाहिए। जहाँ परिग्रह है वहाँ हिंसा है। जहाँ झूठ, चोरी या कुशील सेवन है वहाँ हिंसा है। हिंसा के वातावरण में प्रेम, करुणा, दया, सामंजस्य, सहयोग, सहिष्णुता इत्यादि का पलायन हो जाता है। हिंसा हो या अहिंसा दोनों की बात व्यक्तिगत, पारिवारिक ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय है। हिंसा में भय है। अहिंसा में अभय है। पूर्ण सत्य और पूर्ण अहिंसा इस युग में पालना कठिन है पर असंभव नहीं है।

अहिंसा और अनेकांत की पद्धति से वैचारिक संघर्ष का निराकरण होता है। समन्वय, सहिष्णुता, अनुग्रह, परानामुखता, सहिष्णुता प्रकट होती है। इस प्रकार के गुण प्रकट होने पर व्यापक दृष्टिकोण का होना संभव है। व्यापक दृष्टिकोण को धारण करने वाला अनेकांत के सिद्धांत को स्वीकार करने वाला होता है। अनेकांत के सिद्धांत को स्वीकार करने वाला कभी हिंसक नहीं होता है और दूसरों के दृष्टिकोण का भी आदर करता है, दूसरों के प्रति सहिष्णु होता है। अनेकांत दृष्टि वाला विश्व के कण–कण की शक्ति को स्वीकार करता है, वाणी में नम्रता और समन्वय वाला होता है। इसलिए अहिंसा से पारिवारिक शांति प्रकट होती है। मानसिक और वाचनिक अहिंसा की उत्पत्ति होने पर कायिक अहिंसा स्वयं प्रकट हो जाती है।

That's why the beginning of the era. Lord Adinath Swami has said, to follow the religion of non-violence and to protect one's soul, one should not have the desire to acquire things and should not hoard things either. Where there is prejudice there is violence. Where there is lying, theft or evil consumption there is violence. In an environment of violence, love, compassion, kindness, harmony, cooperation, tolerance etc. disappear. Whether it is violence or non-violence, it is not only a personal and familial matter but national and international. There is fear in violence. There is fearlessness in non-violence. Complete truth and complete non-violence are difficult to follow in this era but not impossible.

Ideological conflict is resolved through the method of non-violence and anekant. Coordination, tolerance, grace, kindness and tolerance are manifested. When these types of qualities are manifested, it is possible to have a broad perspective. One who has a broad perspective is one who accepts the principle of Anekanta. One who accepts the principle of Anekanta is never violent and also respects the point of view of others and is tolerant towards others. One who has diverse vision accepts the power of every particle of the world and is humble and coordinated in speech. Therefore, family peace is manifested through non-violence. When mental and verbal non-violence arises, physical non-violence manifests itself.

हिंसादि पाप हत्या व परिणाम

अहिंसा का परिणाम विकास और शान्ति है। हिंसा का परिणाम अशांति और विनाश है। अपरिग्रह का परिणाम क्लेश, दुख, अशान्ति से मुक्ति और परिग्रह का परिणाम दुःख, अशांति है। परिग्रह के संग्रह से आर्थिक और सामाजिक समीकरण बिगड़ता है। परिग्रह सब पापों का बाप है। परिग्रह को छोड़ना हिंसा, झूठ, चोरी और कुशील रुप पाप से भी अधिक कठिन है। परिग्रह जोड़ना आसान है लेकिन छोड़ना कठिन है। इसीलिए कहावत भी है चमड़ी चली जाए पर दमड़ी न जाए। ''परिग्रह इंसान को मूर्छित कर देता है।'' परिग्रह इंसान को मोहित कर देता है। परिग्रह इंसान को हिंसक बना देता है। परिग्रह इंसान को शैतान बना देता है। परिग्रह इंसान को लोभी, लालची, छली, कपटी एवं मायाचारी बना देता है। परिग्रह इंसान को हृदय और मानसिक रोगी बना देता है। परिग्रह संग्रह की प्रवृत्ति इंसान को व्यसनी बना देती है जबकि अपरिग्रह व्रत मूर्च्छा को दूर करता है। इच्छा निरोध रुप परिमाण का नाम अपरिग्रह है। मूर्च्छा के अभाव का नाम अपरिग्रह है।

हिंसा और विज्ञान

वैज्ञानिकों का मानना है कि पाप में प्रवृत्ति होने में, राग–द्वेष, ईर्ष्या इत्यादि कषाय करने में और व्रत लेने की इच्छा न होने में टेस्टोस्टेरोना नाम का योन हार्मोन्स कारण है। जिस व्यक्ति के शरीर में इस हार्मोन्स की अधिकता होती है उसकी हिंसा आदि पाप में प्रवृत्ति अधिक होती है। भाव हिंसा आध्यात्मिक दृष्टि से छोड़ने योग्य है और द्रव्य हिंसा सामाजिक दृष्टि से छोड़ने योग्य है। झूठ बोलना पाप है, अधर्म है। सत्य बोलना धर्म है, व्रत है, संयम है। निरपेक्ष और सापेक्ष दोनों सत्य की समन्विति वास्तविक सत्य है। सत्य और असत्य, झूठ और सच अनादिकालीन है। सत्य की विजय होती है लेकिन आज तो असत्य का बोलवाला है। इसका कारण है भौतिकवादी सोच, अर्थ दृष्टि और एकान्त दृष्टि।

हिंसा से बचने के उपाय

सभी प्रकार की हिंसा से मुक्त होकर अहिंसक होने के लिए अनेकान्त और स्यादवाद के सिद्धान्त का सहारा लेना अनिवार्य है। इसी के माध्यम से समाज, व्यक्ति और राष्ट्र में परिवर्तन संभव है। मानवाधिकार और कर्तव्यों का पुष्टिकरण संभव है।

Violence, Sin, Murder and Their Consequences

The result of non-violence is development and peace. The result of violence is unrest and destruction. The result of Aparigraha is freedom from distress, sorrow and unrest and the result of Parigraha is sorrow and unrest. Accumulation of property spoils the economic and social equation. Parigraha is the father of all sins. It is more difficult to give up attachment than violence, lies, theft and vicious sins. It is easy to add attachment but difficult to leave. That is why there is a saying that the skin may go away but the body may not go away. "Parigrah makes a person unconscious." Attachment fascinates a person. Attachment makes a person violent. Attachment turns a person into a devil. Attachment makes a person greedy, greedy, deceitful, deceitful and deceitful.

Parigrah gives man heart problems and mentally ill. The tendency to collect parigraha makes a person addicted, whereas fasting without parigraha removes unconsciousness. The name of the measure of desire restraint is Aparigraha. The absence of unconsciousness is called Aparigraha.

Violence and Science

Scientists believe that a sex hormone called testosterone is the reason for the tendency to commit sins, to have strong feelings of attachment, hatred, jealousy etc. and to not have the desire to observe fasts. A person who has excess of these hormones in his body has more tendency to commit sins like violence etc. Emotional violence is worth giving up from a spiritual point of view and physical violence is worth giving up from a social point of view. Lying is a sin, it is unrighteous. Speaking the truth is religion, fasting, restraint. The combination of both absolute and relative truth is real truth. Truth and untruth, lie and truth are eternal. Truth triumphs but today lies prevail. The reason for this is materialistic thinking, economic vision and isolated vision.

Ways to Avoid Violence

To become free from all types of violence and become non-violent, it is necessary to take support of the principles of Anekanta and Syadvad. Through this, change is possible in society, individual and nation. Ratification of human rights and duties is possible.

सामाजिक व्यवस्था को बदलने के लिए राज्य सत्ता, सामाजिक सत्ता, दार्शनिक सत्ता और आर्थिक सत्ता का सहारा लेना पड़ता है। सभी सत्ताओं में परिवर्तन लाने के लिए विषय कषायों और अशुभ भावों पर नियन्त्रण जरूरी है। संशय, अतिकल्पना, निषेधात्मक विचार और मन वचन काय की अस्थिरता ये सभी मानसिक समस्याएँ हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ, घृणा, ईर्ष्या, निंदा, चुगली इत्यादि भावनात्मक समस्याएँ हैं। इन समस्याओं से मुक्ति पाने हेतु खान–पान, संगति एवं अंतरंग में उत्पन्न होने वाले रासायनिक पदार्थों में परिवर्तन आवश्यक है।

मात्र भौतिक विज्ञान से समस्याओं का समाधान नहीं किया जा सकता है और न अध्यात्म मात्र से समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। किसी भी कार्य की निष्पत्ति के लिए विचार, ज्ञान, विवेक और सही दिशा में क्रियात्मक प्रवृत्ति और आवश्यक निमित्त (सामग्री) जरुरी है।

अध्यात्म हमें विवेक, विचार, ज्ञान और चेतना शक्ति देता है। इसके लिए मानसिक, वाचनिक और भावनात्मक चेतना शक्ति व साहस को जुटाना पड़ता है। विज्ञान हमें क्रियाशीलता, श्रम और अचेतना शक्ति देता है। इसके लिए हमें पौद्‌गलिक उपकरणों का एवं शारीरिक शक्ति का उपयोग करना पड़ता है।

यदि एक ओर आर्थिक और शारीरिक अचेतनात्मक भौतिक विकास का क्रम चलता है तो दूसरी ओर चेतना आत्मा से उत्पन्न हुए भावनात्मक विचार, विवेक और बुद्धि के विकास का क्रम चलता है। अतः अंतरंग विकास के लिए अध्यात्म और बहिरंग विकास के लिए विज्ञान जरूरी है। अतः दोनों में विकास और परिवर्तन समन्वय स्यादवाद और अनेकान्त की दृष्टि से संभव है।

आत्म हत्या के कारण

गृहणी अर्थात् पत्नियाँ गृह लक्ष्मी मानी जाती हैं लेकिन ये गृह लक्ष्मी आज आत्महत्या कर रही है। यद्यपि आत्महत्या तो पहले भी करती थी लेकिन वर्तमान समय जैसी नहीं।

एन.सी.आर.बी. अर्थात् राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो ने जब से आत्महत्याओं के आंकड़े जुटाना शुरू किये हैं तब से पता चला है कि प्रतिवर्ष भारत देश में कम से कम 20,000 से ज्यादा ग्रहणियाँ आत्महत्या कर लेती हैं। अब सवाल यह है कि इतनी अधिक मात्रा में गृह लक्ष्मी अपनी जान क्यों गवा रही हैं? क्यों खुदकुशी (आत्महत्या) कर रही है? इसकी खोजबीन करने से पता चला है कि अधिकारों का हनन, शोषण के साथ पारिवारिक, आर्थिक, मानसिक और सामाजिक समस्याएँ मुख्य कारण है।

To change the social system, one has to take the help of state power, social power, philosophical power and economic power. To bring about change in all the entities, it is necessary to control the sensual desires and inauspicious feelings. Doubt, over-imagining, negative thoughts and instability of mind and body are all mental problems. Anger, pride, illusion, greed, hatred, jealousy, condemnation, backbiting etc. are emotional problems. To get rid of these problems, changes in food habits, company and chemical substances produced in inner body are necessary.

Problems cannot be solved by physics alone, nor can problems be solved by spirituality alone. For the accomplishment of any work, thought, knowledge, discretion and action tendency in the right direction and necessary instruments (materials) are necessary.

Spirituality gives us wisdom, thought, knowledge and consciousness. For this, mental, verbal and emotional consciousness, power and courage have to be mustered. Science gives us activity, labor and unconscious power. For this we have to use industrial equipment and physical strength.

If on one hand there is a sequence of economic and physical unconscious material development, then on the other hand there is a sequence of development of emotional thoughts, conscience and intelligence arising from the conscious soul. Therefore, spirituality is necessary for inner development and science is necessary for external development. Therefore, development and change in both is possible from the point of view of coordination, Syadvad and Anekant.

Reasons for Suicide

Housewives *i.e.* wives are considered to be Griha Lakshmi (goddess of house) but this Griha Lakshmi is committing suicide today. Although suicide used to be done earlier too but not like the present time.

NCRB ,that is, ever since the National Crime Records Bureau started collecting data on suicides, it has come to light that at least 20,000 women commit suicide every year in India. Now the question is why is Griha Lakshmi losing her life in such large numbers? Why is she committing suicide? After investigating this, it has been found that the main reasons are violation of rights, exploitation along with family, economic, mental and social problem

पहले बेटियों को स्कूल की शिक्षा तो दी जाती थी लेकिन घर गृहस्थी संभालने की शिक्षा भी बचपन से ही दी जाती थी। इसलिए बेटी जब बहू बनती थी तो वह पारिवारिक समस्याओं का समाधान कर पूरी जिम्मेदारी संभाल लेती थी। लेकिन वर्तमान में बेटियाँ हॉस्टल में रहती हैं बना बनाया भोजन होटल और हॉस्टल में करती हैं। जब वह बेटी बहू बन जाती है तो उसे भोजन बनाना, परिवार की जिम्मेदारियाँ संभालना बोझ लगने लगता है। यदि ससुराल के लोग कुछ कहते हैं तो बंदिशे लगने लगती है। कुछ दिन बाद उन्हें अपनी ससुराल भी जेल लगने लगती है। यदि ससुराल की आर्थिक स्थिति कमजोर हो तब ससुराल वाले अपनी की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में उसे सहयोगी बनाना चाहते हैं तब वह नारी उत्पीड़न, शारीरिक और मानसिक शोषण महसूस करने लगती हैं। ऐसी स्थिति में वह खुदकुशी करने की सोचने लगती हैं।

जब बेटी 25–26 वर्ष तक स्वतंत्र रहती है। जब चाहे, जहाँ चाहे स्वतंत्र घूमती है। अपने घर में माता–पिता से, ऑफिस में अधिकारियों से और बाहर दोस्त यारों से बहुत प्रेम और सम्मान पाती है लेकिन जब वही 28–30 वर्ष की बेटी दूसरे घर की बहू बन जाती है तब वह बंधन महसूस करती है। उसे प्रेम और सम्मान में कमी दिखने लगती है। घर के लोग झाडू पोछा लगाने, बर्तन व वस्त्र साफ करने और भोजन आदि बनाने के कार्य की बात करते हैं तव उसे ऐसा महसूस होता है कि मुझे नौकरानी समझ रखा है। उसे लगता है मेरी स्वतंत्रता छिन गई है। अब मैं बंधुआ मजदूर की तरह हो गई हूँ। यदि उसके ससुराल पक्ष के लोग तेज स्वभाव, झगड़ालू और शंकालु किस्म के हो तो वे अपनी बहू के साथ एडजेस्टमेंट नहीं कर पाते उसे उचित सलाह नहीं दे पाते ऐसी स्थिति में वह आत्महत्या या तलाक की सोच लेती है।

Earlier, daughters were given school education but they were also taught to manage the household right from childhood. Therefore, when the daughter became the daughter-in-law (after marriage), she used to solve the family problems and take full responsibility. But at present the daughters stay in hostels and eat cooked food in hotels and hostels. When the daughter becomes the daughter-in-law, she starts finding it a burden to prepare food and handle the responsibilities of the family. If the in-laws say something then restrictions start being imposed. After a few days, her in-laws' house also starts to seem like a jail. If the financial condition of the in-laws is weak, then the in-laws to improve their own financial condition. want to make her an ally in making the family stronger, then she starts feeling harassed, physically & mentally exploited. In such a situation, she starts thinking of committing suicide.

When the daughter remains independent till 25-26 years. She roams freely whenever and wherever she wants. She gets a lot of love and respect from her parents at home, from officials at office and from friends outside, but when the same 28-30 year old daughter becomes the daughter-in-law of another house, then she feels bound. She starts feeling lack of love and respect. When the people in the house of the in laws talk about sweeping, mopping, cleaning utensils and clothes, and cooking food etc., she feels as if they have considered her a maid. She feels that her freedom has been taken away.She feels, now I have become like a bonded labourer. If her in-laws are quick-tempered, quarrelsome and suspicious, then they are unable to make adjustments with their daughter-in-law and are unable to give her proper advice. In such a situation, she thinks of suicide or divorce.

कभी–कभी ससुराल पक्ष के कुछ लोग बहु को शारीरिक, मानसिक प्रताड़ना देते हैं लेकिन वह सुशील बहू बदनामी एवं अधिक प्रताड़ना के डर से किसी को कुछ कह नहीं पाती है, यदि वह अपने मायके वालों से शिकायत करती भी है तो मायके वाले उसे सहने का और उसी परिवार में जीवन निर्वाह करने का दबाव बनाते हैं। ऐसी ग्रहणी पूर्णता हताश हो कर आत्महत्या कर लेती है। जो ग्रहणी आर्थिक रूप से तंग रहती है, घर गृहथी चलाने में पराश्रित और परेशान रहती है, उसका वैवाहिक जीवन नर्क में बदल जाता है जब वह अपने आपको सम्मान और सुरक्षा से रहित महसूस करने लगती हैं तब वे आत्महत्या कर लेती हैं। ऑक्सफैम की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय गृह कार्य में लगी महिलाओं के द्वारा जो कार्य किया जाता है उसका कोई मूल्यांकन नहीं होता। यदि मूल्यांकन किया जाए तो हर वर्ष कम से कम 19 लाख करोड़ रुपए के बराबर उनका श्रम होता है लेकिन इसका मूल्यांकन नहीं किया जा रहा है। महिलाओं को अपना मूल्य बढ़ाने के लिए अपने भीतर छुपी प्रतिभा को पहचानना होगा और यह तभी होगा जब उन्हें अपने मौलिक मानवाधिकार दिये जाये, कर्तव्य निष्ठ होने के लिए प्रेरित किया जाए और अपनी शील संयम की मर्यादाओं में रहने की शिक्षा दी जाय।

Sometimes some people from the in-laws torture the daughter-in-law physically and mentally, but that polite daughter-in-law is not able to say anything to anyone due to the fear of defamation and more harassment. Even if she complains to her parents, her parents will not tolerate her. And create pressure to live in the same family. Such a person gets frustrated and commits suicide. The married woman who remains financially stressed, dependent and troubled in running the household, her married life turns into hell, when she starts feeling devoid of respect and security, then she commits suicide. According to Oxfam report, there is no evaluation of the work done by Indian women engaged in housework. If evaluated, their labor is worth at least Rs 19 lakh crore every year but it is not being evaluated. To increase their value, women will have to recognize the talent hidden within them and this will happen only when they are given their fundamental human rights, motivated to be dutiful and taught to live within the limits of their modesty.

युवा शक्ति अधिकार और कर्तव्य

बच्चों और बूढ़ों के बीच युवा सेतु का काम करते हैं। वे दोनों से जुड़े होते हैं। युवा शीतल छाँव, हिम्मत और रोशनी देते हैं। युवा हमेशा शत्रुओं को ईट का जवाव पत्थर से देते हैं। युवा नई मशीन की तरह होते हैं युवा देश और समाज के चौकीदार होते हैं। पूरा विश्व युवाओं के इर्द–गिर्द घूमता है। युवा हौसला बढ़ाने का काम करते हैं। युवा अधिकारों के लिए लड़ते हैं। युवा अधिकार दिलाते हैं। युवा पुरुषार्थ जगाते हैं युवाओं के कारण ये धरा शोभा पाती है। युवाओं के कारण यह धरती गुनगुनाती है। युवा के कारण यह दुनिया मस्तानी है। युवा चिड़िया के पंखों की तरह होते हैं। जो सफलता की ऊँची उड़ान भरने का साहस दिलाते है। युवा अपना जीवन देश और परिवार के लिए न्यौछावर कर देते हैं। युवा हर कार्य पूरा कर देते हैं। युवा अपने देश के फलदार वृक्ष होते हैं। युवा इतिहास रचने वाले शिल्पकार होते हैं। युवा हर इंसान की फरमाईस पूरी कर देते हैं। युवा शक्तिहीन में शक्ति भर देते हैं। निराश के दिल में आशा की ज्योति जगा देते है। युवा मुर्दे मे भी जान भर देते हैं। युवा फर्ज निभा देते है। युवा अपने माँ–बाप के कर्ज को चुका देते हैं। युवा देश में रोशनी जगमगा देते हैं। युवाओं में ऐसी शक्ति होती है कि हार को भी जीत में बदल देते हैं, इसीलिए युवाओं को विशेष जिम्मेदारी देनी चाहिए। युवाओं को आगे आना चाहिए। समय पर सोना और उठना, व्यसन रहित जीवन जीना, देश, समाज और परिवार की रक्षा सेवा में हमेशा आगे आना चाहिए। जब देश, समाज एवं धर्म की बागडोर युवाओं के हाथों में होती है तब वे युवा हो जाते हैं जब देश समाज और धर्म वृद्धों के हाथ में हो तो ये देश समाज और धर्म वृद्ध हो जाते हैं। अधिकार चाहने वाले युवाओं को कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

संस्कारित बच्चे

जो माता–पिता या अभिभावक अपनी संतान को उचित संस्कार देते हैं। उचित लालन–पालन करते हैं। सद्‌गुणों से लबालब भर देते हैं वे अपने गुणों से पहचाने जाते हैं। उनका यश दुनिया में फैलता है।

Youth Power Rights and Duties

Youth work as a bridge between children and old people. They are connected to both. Youth provide cool shade, courage and light. The youth always respond to their enemies with stones. Youth are like new machines, youth are the watchmen of the country and society. The whole world revolves around youth. The youth work to boost morale. Youth fight for rights. Youth give rights. Youth awaken efforts and this earth becomes beautiful because of youth. This earth hums because of the youth. This world is fun because of youth. The young are like the wings of a bird. Which gives courage to fly high to success. The youth sacrifice their lives for the country and family. Youth complete every task. Youth are the fruit trees of their country. Youth are craftsmen who create history. Youth fulfill every person's request. Youth fill the powerless with power. It awakens the light of hope in the hearts of the disappointed. Youth fills even the dead with life. The youth fulfill their duty. The youth repay the debts of their parents. Youth shine light in the country. Youth have such power that they can convert even defeat into victory, that is why youth should be given special responsibility. The youth should come forward. One should always sleep and wake up on time, live an addiction-free life, and always come forward to serve the country, society and family. When the reins of the country, society and religion are in the hands of the youth, then they become young. When the country, society and religion are in the hands of the elderly, then the country, society and religion become old. Youth who want rights should follow the duty.

Cultured Children

Parents or guardians who impart proper values to their children, provide proper upbringing, those children are filled to the brim with virtues and are recognized by their qualities, their fame spreads throughout the world.

संस्कारित बच्चे अपनी कमियों को स्वीकार करते है। उसे दूर करने का प्रयास करते हैं। पढ़ाई–लिखाई एवं अन्य गतिविधियों में बढ़–चढ़कर भाग लेते समय उन्हें घबराहट नहीं होती है। वे जल्दी उत्तेजित नहीं होते, दूसरों की भावनाओं को जल्दी पहचान लेते हैं। अपनी भावनाओं पर काबू पा लेते हैं। संयमित ढंग से जीवन व्यतीत करते हैं। दूसरों के प्रति संवेदनशील रहते हैं। वे अपनी और दूसरों की परेशानियों को समझते हैं। वे मदद करने में हमेशा तत्पर रहते हैं। अनजान स्थान में परेशानी महसूस नहीं करते है। स्पष्ट दृष्टिकोण वाले होते हैं। सही निर्णय लेने में और सच्ची बात कहने में पीछे नहीं हटते हैं। रिश्तो को सुरक्षित रखते हैं। शालीनता और मिलन सारिता वाले होते हैं। दूसरों के साथ जल्दी घुल मिल जाते हैं। व्यवहार कुशल होते हैं। हंसमुख स्वभाव वाले होते हैं। चिड़चिड़ापन और जिद्दीपन से दूर रहते हैं। आत्मनिर्भर रहते हैं। घर के अंदर एवं बाहर के काम आसानी से कर लेते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों को समझ कर जल्दी काबू पा लेते हैं वे निराशावादी नहीं आशावादी होते हैं। विकट संकट में भी धैर्य रखकर संकट दूर कर लेते हैं। जीवन के उतार–चढ़ाव का सामना आसानी से कर लेते हैं। स्पष्ट वक्ता, परिपक्वता, आत्मविश्वास, निडरता, प्रसन्नता और मिलन सारिता से युक्त होते हैं। संस्कारित बच्चे पारिवारिक शांति में अहम भूमिका निभाते है। संस्कारित बच्चे ही युवा होकर भूलभूत मानवाधिकारों को, प्रकृति और पर्यावरण को सुरक्षित रखते हैं। मोक्ष और स्वर्ग की कामना करते है। नरक और पशु गति के दुख से डरते है। न्याय नीति पर चलते हैं। संस्कारित बच्चों से ही परिवार, देश और संपूर्ण विश्व का भविष्य जुड़ा है।

Cultured children accept their shortcomings and try to remove those. They do not feel nervous while participating enthusiastically in studies and other activities. They do not get excited easily and recognize the emotions of others quickly. Control your emotions, live life in a restrained manner, remain sensitive towards others. They understand their own and others' problems. They are always ready to help. Do not feel troubled in unknown places. Have clear vision. Do not step back in taking right decisions and speaking the truth. Keep relationships safe. They are polite and friendly. Get along with others quickly. Behaviour is efficient. Are of cheerful nature. Stay away from irritability and stubbornness. Remain self-reliant. Can do work inside and outside the house easily. They understand adverse situations and overcome them quickly; they are optimists, not pessimists. Even in dire situations, they overcome the crisis by remaining patient. Can easily face the ups and downs of life. They are clear speakers, full of maturity, confidence, fearlessness, happiness and sociability. Cultured children play an important role in family peace. Only cultured children, growing young, protect the forgotten human rights, nature and environment. They wish for salvation and heaven. Afraid of hell and the pain of rebirth as animal. They follow the policy of justice. The future of the family, the country and the entire world is linked to cultured children.

परिवार की उपादेयता

दाम्पत्य जीवन एवं पैतृक संबंधों से वृद्धि को प्राप्त हुए लोगों के एक स्थाई समूह का नाम परिवार है। आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक एवं शारीरिक विकास, होना, देखभाल एवं संरक्षण की जिम्मेदारियाँ परिवार की होती है। वंश परंपरा, विवाह, संस्कृति, संस्कार एवं अधिकारों का निर्वहन पूरी निष्ठा और जिम्मेदारी से परिवार को करना पड़ता है। इन जिम्मेदारियों को निभाते समय अनेक समस्याएं पैदा होती हैं जिससे संघर्ष और अशांति पैदा हो जाती है। स्नेह, सहयोग, विश्वास और परस्परता के सूत्र से बंधे हुए व्यक्तियों के समुदाय का नाम परिवार है। पति–पत्नि, माता–पिता, बेटा–बेटी, दादा–दादी, पोता–पोती आदि चारों ओर से घिरे हुए समूह का नाम परिवार है।

परिवार से समाज का निर्माण और विस्तार होता है। समाज का स्थायित्व परिवार की गतिशीलता पर टिका हुआ है। यदि परिवार गतिशील रहेगा तो समाज गतिशील बनी रहेगी। जब माता–पिता, पति–पत्नि और बच्चों के बीच कड़वाहट आ जाती है, तालमेल समाप्त हो जाता है तब प्रगति रूक जाती है और परिवार में अशांति पैदा हो जाती है।

स्वतंत्र लोकतंत्र के पूर्व परंपरागत परिवार स्थिर थे। व्यवसाय निश्चित थे। अधिकांश नारियाँ घर में रहती थीं। नारियों के लिए घर के बाहर आश्रय स्थल नहीं थे, घर के बाहर नौकरी पेशे का काम नहीं था, घर में रह कर काम करती थी लेकिन जब से स्वतंत्र भारत में स्त्रियाँ नौकरी पेशे का काम घर से बाहर करने लगी हैं तब से बच्चों का विकास रूक सा गया है, पति–पत्नी के बीच संदेह और झगड़े बढ़ गए हैं, वैवाहिक संबंध शिथिल होने लगे हैं, विश्वसनीयता और गोपनीयता समाप्त होने लगी है, अशांति बढ़ने लगी है, नैतिकता घटने लगी है, परिजनों के बीच ईर्ष्या, द्वेष, नफरत और व्यक्तिवाद बढ़ने लगा है एवं संबंधों में दरार पड़ने लगी है।

जब–जब संबंधों में दरार आती है तब–तब परिवार में अशांति और विघटन की स्थिति के साथ तनाव, मारपीट और पृथक्करण की स्थिति निर्मित हो जाती है। व्यक्तिवाद पैदा हो जाता है। व्यक्तिवाद विकास में बाधक है जबकि अपनत्व, बन्धुत्व, सामंजस्य, परोपकार, उदात्त भावनाएँ एवं समाजवाद पारिवारिक शांति और प्रगति में साधक हैं।

Utility of Family

Family is the name of a permanent group of people who have grown through marital life and ancestral relations. The responsibilities of economic, social, family, political and physical development, existence, care and protection rest with the family. The family has to carry out lineage, marriage, culture, rituals and rights with full devotion and responsibility. While fulfilling these responsibilities, many problems arise which lead to conflict and unrest. The name of a community of individuals bound by the thread of affection, cooperation, trust and reciprocity is family. The name of the group surrounded by husband-wife, parents, son-daughter, grandparents, grandchildren etc. is family.

Society is created and expanded through the family. The stability of society depends on the dynamics of the family. If the family remains dynamic then the society will remain dynamic. When there is bitterness and coordination between parents, husband-wife and children finishes, then progress stops and unrest occurs in the family.

Before independent democracy, traditional families were stable. The occupations were certain. Most of the women remained at home. There were no shelters for women outside the home, there were no jobs outside the home, they used to work at home, but ever since women in independent India have started doing jobs outside the home, the development of children has come to almost a standstill, suspicions and fights between husband & wife have increased, marital relations have begun to weaken, credibility and privacy have begun to end, unrest has started to increase, morality has started to decline, jealousy, malice, hatred among family members and individualism has started increasing and cracks in relationships have started.

Whenever there is a rift in relationships, a situation of tension, fighting and separation is created along with physical violence and disintegration in the family. Individualism is born. individualism in development is a hindrance whereas affinity, brotherhood, harmony, charity, noble feelings and socialism are the seekers of family peace and progress.

विवाह संबंध अंगीकार करने के उपरांत लैंगिक संबंध से उत्पन्न हुई संतान से खून का संबंध होता है। दाम्पत्य जीवन भी संतान उत्पत्ति के उपरांत माता–पिता में बदल जाता है। संतान उत्पत्ति के बाद जो वंश परंपरा पूरी निष्ठा, सहयोग, परस्परता और जिम्मेदारी से चलती है उसका नाम भी परिवार है। परिवार के प्रत्येक सदस्य का चेतन और अचेतन वस्तु पर अधिकार होता है। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विकास में परिवार का हर सदस्य सहयोगी बनता है। हर व्यक्ति परिवार की इकाई है। हर परिवार समाज की इकाई है। हर समाज राष्ट्र की इकाई है इसलिए हर व्यक्ति परिवार को प्रभावित करता है, हर परिवार समाज को प्रभावित करता है, हर समाज राष्ट्र को प्रभावित करता है। देश और समाज दोनों परिवार को प्रभावित करता है।

परिवार का मुख्य कार्य लैंगिक संबंध को नियंत्रित करना , कुल परंपरा को जीवित रखना, समाज में निरंतरता बनाए रखना, संतान का लालन पालन, भरण पोषण करते हुए संस्कार और संस्कृति के मूल्यों को अवगत कराना, कार्य कौशल प्रदान कराना, परिवार के सदस्यों की भावनाओं का ध्यान रखना, आवश्यकताओं को पूरा करना, परंपरागत उत्तराधिकार देना, आर्थिक और सामाजिक प्रबंधन करना और मधुर संबंध बनाए रखनाइत्यादि का होता है। यह कर्तव्य समझकर करना धर्म है और यदि उसे नहीं करते तो अधर्म है। यही सामाजिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि का अध्यात्म है यही पारिवारिक आचार संहिता है।

अहिंसा और शांति

अहिंसा का पालन मन, वचन और काय तीनों से होना चाहिए। मानसिक अहिंसा को भावनात्मक, वैचारिक अथवा बौद्धिक अहिंसा भी कहते हैं। जब मन, वचन और भावना में अहिंसा होती है तब वह काय से क्रिया रुप में भी प्रकट होने लगती है। अनेक प्रकार की अहिंसा ही अनेकांत मूलक होती है। वस्तु में अनेक गुण धर्म स्वाभाविक रूप से अस्तित्व में बने रहते हैं। वे गुण विरोधी और अविरोधी गुण के रुप में दोनों एक साथ रहते हैं। उनका सह अस्तित्व बना रहना ही अनेकांत है। वही सत्य का दर्शन कराता है। सह अस्तित्व समन्वय के सिद्धांत को स्वीकार करता है।

After accepting the marriage relationship, there is a blood relation with the child born from the sexual union. Husband - Wife relationship also turns into that of parents after the birth of a child. After the birth of a child, the lineage that continues with complete loyalty, cooperation, reciprocity and responsibility is also called family. Every member of the family has rights over animate and inanimate objects. Every member of the family becomes a partner in social, economic and political development. Every person is a family unit. Every family is a unit of society. Every society is the unit of the nation, therefore every person influences the family, every family influences the society, every society influences the nation. Both country and society affect the family.

The main functions of the family are to control gender relations, to keep the family tradition alive, to maintain continuity in the society, to nurture children, to impart values of culture and them, to provide work skills, to nurture the feelings of family members, taking care of the family, fulfilling the needs, providing traditional inheritance, economic and social management and maintaining cordial relations etc. Doing this considering it as duty is like religious duty and if you do not do it then it is unrighteous. This is the spirituality of social and family background, this is the family code of conduct.

Non-Violence and Peace

Non-violence should be followed in mind, speech and body. Mental nonviolence is also called emotional, ideological or intellectual nonviolence. When there is non-violence in mind, words and feelings, then it starts manifesting itself in action as well. Many types of non-violence are the source of anekant . Many qualities and religions naturally come into existence in an object. Those qualities co-exist both in the form of opposing and non-opposing qualities. Their continued co-existence is anekant. That alone makes one see the truth. Co-existence accepts the principle of coordination.

अनेकांतवाद समन्वय का सार्वभौमिक सिद्धांत है। उसे ढुलमुल या अवसरवादी अज्ञानी ही कह सकता है, ज्ञानी नहीं। अहिंसा और समन्वय के सिद्धांत से सहिष्णुता का विकास होता है। दूसरों के दृष्टिकोण और विचारों के प्रतिसहिष्णु और सम्मान का भाव आने पर हिंसा छूट जाती है और अहिंसा जीवन में उतर जाती हैं। अधिकारों की लड़ाई समाप्त हो जाती है। मौलिक अधिकारों की बात प्रकट होने लगती है।

किसी कार्य या वस्तु के लेन–देन में आग्रह करना उचित है लेकिन हटाग्रह करना अनुचित है क्योंकि संघर्ष का मूल कारण है हटाग्रह। हटाग्रह की स्थिति में संघर्ष होने लगता है और हिंसा अंकुरित हो जाती है। ऐसी स्थिति में अपने मत के प्रति प्रेम अर्थात् राग और दूसरों के प्रति नफरत पैदा हो जाती है। दूसरों के प्रति द्वेष पैदा होने पर एकांत दृष्टि उत्पन्न हो जाती है जिससे तिरस्कार पैदा होता है। हटाग्रह से दया करूणा, प्रेम और सहिष्णुता समाप्त हो जाती है। संघर्ष के साथ हिंसा पैदा हो जाती है।

अनेकांत सब को लेकर चलता है। अनेकांत की दृष्टि से देखने पर और स्याद्वाद के सिद्धांत अनुसार कथन करने पर शाश्वत सत्य की उपलब्धि होती है। उससे आग्रह, संघर्ष और हिंसा की चिंगारियां समाप्त हो जाती हैं। आत्मा में शांति प्रकट हो जाती है। सापेक्ष सत्य का उद्भव हो जाता है। मानव को अनेकांत रूप और व्यापक दृष्टिकोण का दर्शन होजाता है। मानव का ज्ञान सीमित है जबकि पदार्थ और उनके गुण असीमित हैं। विश्व में जो पदार्थ हैं उनमें अनंत गुण और पर्याय हैं। उन्हें सापेक्ष रूप से अनेकांत और स्याद्वाद के दृष्टिकोण से ही जाना, समझा और कथन किया जा सकता है, मूल अधिकारों को सुरक्षित रखा जा सकता है।

एक समय में संसारी प्राणी के द्वारा किसी एक पदार्थ के अनंत गुणों में एक गुण को ही जाना जा सकता है। एक समय में एक गुण का ही कथन किया जा सकता है ऐसी स्थिति में अन्य गुणधर्म समाप्त नहीं होते बल्कि चुप (सायलेंट) रहते हैं। अनेक धर्मों में से किसी एक धर्म का कथन करने वाला सिद्धांत सत्य को प्रकट करता है।

Anekantvad is the universal principle of coordination. Only an ignorant person can call it wavering or an opportunist, not a knowledgeable one. The principles of non-violence and coordination develop tolerance. When we become tolerant and respectful of the views and opinions of others, violence is abandoned and non-violence is adopted in life. The fight for rights ends. The issue of fundamental rights begins to emerge.

It is appropriate to insist to negotiate for any work or object but it is inappropriate to insist on refusal because the root cause of conflict is stubbornness. In a situation of stubbornness, conflict begins and violence sprouts. In such a situation, love for one's opinion and hatred towards others arise. When hatred arises towards others, a lonely view arises which leads to contempt. Stubbornness ends kindness, compassion, love and tolerance. With conflict comes violence.

Anekant carries everyone togather. Looking at Anekantvad from this perspective and by speaking according to the principles of Syadvad, eternal truth is attained. It eliminates the sparks of urge, conflict and violence. Peace appears in the soul. Relative truth emerges. Man gets to see diverse forms and a broad perspective. Human knowledge is limited while substances and their properties are unlimited. The substances in the world have infinite qualities and variations. They can be known, understood and stated relatively only from the perspective of Anekant and Syadvada, fundamental rights can be protected.

At a time only one quality among the infinite qualities of a substance can be known by a worldly being. Only one quality can be mentioned at a time, in such a situation other qualities do not end but remain silent. The doctrine expressed by any one religion among many religions reveals the truth.

अपने दृष्टिकोण के अलावा अन्य दृष्टिकोण को स्वीकार करना स्यादवाद है। स्याद शब्द का अर्थ है वस्तु का सही अर्थ ग्रहण करना और सभी दृष्टि कोणों को स्वीकार करना। प्रत्येक वस्तु अनेक गुणधर्म और पर्याय वाली होती है। वस्तु के जिस धर्म का कथन किया जाता है स्याद्वाद उसे वर्तमान के अस्तित्व रूप में स्वीकार करता है। दृष्टि जब तक विचार रूप होती है तब तक अनेकांत रूप होती है। अनेकांत दृष्टि से सृष्टि के सभी पदार्थों को जाना जा सकता है और स्यादवाद दृष्टि से कहा जा सकता है। ऐसी दृष्टि सत्य अहिंसा अचौर्य और परोपकार रूप होती है। वह संघर्ष और हिंसा को विराम देती है।

व्रत और विश्व शांति

भगवान महावीर स्वामी ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच व्रतों से आत्म शांति और विश्व शांति का उपाय बतलाया है। इन पांच व्रतों का महत्व जितना धार्मिक क्षेत्र में है उतना ही सामाजिक, पारिवारिक और राजनीतिक क्षेत्र में भी है। इन व्रतों से जितनी आत्म शांति मिलती है उतनी ही विश्व में शांति फैलती है। व्रत नियंत्रण का काम करते हैं। अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार और आतंकवाद आदि की प्रवृत्ति पर ये व्रत लगाम लगाते हैं।

सत्य और शान्ति

सत्य के बिना शांति नहीं आ सकती है। सत्य ईश्वर है सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं। वह सदा विजय को प्राप्त होता है। सत्य का अन्वेषण और प्रवर्तन किया जा सकता है उत्पादन नहीं। भगवान महावीर स्वामी आदि अनेक तीर्थंकर सत्य के अन्वेषक हुए हैं उत्पादक नहीं। सत्य का तपस्या के माध्यम से साक्षात्कार किया जा सकता है। वाणी से सत्य का आंशिक प्रतिपादन किया जा सकता है समग्र का नहीं। सत्य की ज्ञानानुभूति निजात्मा के लिए होती है और उसका प्रतिपादन दूसरों के लिए होता है।

आत्म ज्ञान से सत्य का प्रत्यक्षीकरण होता है। सत्य का प्रत्यक्षीकरण होनेपर आत्मा परमात्मा बन जाती है। आत्मा के अपने अनंत मौलिक गुण एवं अधिकार प्रकट हो जाते हैं, आंतरिक अशांति समाप्त हो जाती है। शब्द का प्रतिपादन करने पर विश्व में फैली बाहरी अशांति समाप्त हो जाती है। सत्य का विकास आध्यात्मिक विकास को उपादेय बना देता है। सामाजिक पृष्ठभूमि में सत्य, अहिंसा आदि व्रत सुख शांति में कारण हैं। झूठ बोलना पाप है, अधर्म है। सत्य बोलना धर्म है, व्रत है, संयम है। निरपेक्ष और सापेक्ष दोनों सत्य की समन्विति ही वास्तविक सत्य है। सत्य और असत्य, झूठ और सच अनादिकालीन है।

Accepting viewpoints other than one's own is Syadism. The word Syad means to understand the true meaning of the thing and to accept all the viewpoints. Every thing has many properties and synonyms. The religion of the object about which it is stated, Syadvad accepts it as existing. As long as vision is in the form of thought, it is in infinite form. All the things of the universe can be known from Anekant point of view and can be said from Syadvad point of view. Such a vision is the form of truth, non-violence, decency and charity. It puts an end to conflict and violence.

Fasting and World Peace

Lord Mahavir Swami has explained the solution to self-peace and world peace through these five vows of non-violence, truth, non-stealing, celibacy and non-possessiveness. The importance of these five virtues is as much in the religious field as it is in the social, family and political fields. The more peace one gets from following these virtues, the more peace is spread in the world. They work for control. These virtues curb the tendencies of injustice, oppression, corruption and terrorism etc.

Truth and Peace

There can be no peace without truth. Truth is God; Truth may be troubled but not defeated. Truth always achieves victory. Truth can be discovered and enforced, not produced. Many pilgrims like Lord Mahavir Swami etc. have been discoverers of truth and not producer. Truth can be realized through penance. Through speech, partial truth can be expressed, not the whole truth. The knowledge of truth is for the individual and its presentation is for others.

Truth is revealed through self-knowledge. Upon realization of the truth the soul becomes God. The soul's own infinite fundamental qualities and rights become manifest, internal disturbance ends. By reciting the word, the external disturbance in the world ends. The development of truth makes spiritual development worthwhile. In the social background, virtues of truth, non-violence etc. are the reason for happiness and peace. Lying is a sin, it is unrighteous. Speaking the truth is religion, virtue, restraint. The real truth is the coordination of both absolute and relative truth. Truth and untruth, lie and truth are eternal.

पारिवारिक संघर्ष के कारण

पारिवारिक संघर्ष, कलह, अशांति और हिंसा के अनेक कारण हैं जैसे वैवाहिक संबंध के बाद परिवर्तित संस्कृति, संस्कार, धर्म, समाज, लैंगिक संबंध, आर्थिक समस्या, कुंठा, उपेक्षा, अपमान, अभिमान, प्रताड़न, अव्यवस्था, सामाजिक पारिवारिक और धार्मिक बंधन, स्वामित्व, प्रभुत्व, अपरिपक्वता, अवसाद, व्यक्तित्व विकार, व्यसन, पारिवारिक दायित्व, शारीरिक–मानसिक वेदना, सोच और कार्य शैली में अंतर, अज्ञानता, संदेह, रुग्णता, निजीकरण, स्वार्थ, संसाधनों की कमी, दुर्व्यवहार, वर्चस्व की लड़ाई, अनैतिक संबंध, आत्म सम्मान को चोट, दूसरों से घनिष्ठ संबंध पारिवारिक संबंधों में कमी, एक दूसरे से तुलना, दृष्टिकोण एवं अभिरुचि में अंतर, सहनशीलता का अभाव, जीवन शैली और स्तर में अंतर, व्यक्तिगत कार्य में हस्तक्षेप, हट ग्राहिता, यौन संबंध, परिवार के लालन–पालन, भरण–पोषण की जवाबदारियाँ, आत्म नियंत्रण की कमी, भौतिकवाद, स्नेह और धैर्य की कमी, संदेह, प्रतिशोध की ज्वाला, सौहार्द में कमी, संकीर्ण विचारधारा, ज्ञान विवेक और अनुभव की कमी, बंधुत्व एवं परोपकार की भावना का अभाव, स्वच्छंद वृत्ति, आलस्य, बदले की भावना आनुवांशिकता, असमंजस, असहयोग, निरादर, प्रतिस्पर्धा, हटवादिता, मानसिक अस्थिरता एवं कार्यभार की अधिकता इत्यादि ये ऐसे कारण हैं जो पारिवारिक संघर्ष, अशांति, कलह विघटन और हिंसा में कारण हैं। पहले संघटित परिवार थे। बुजुर्ग अपने बेटों, बहुओं, नाती, पोतों का बराबर ध्यान रखते थे। यदि किसी के लिए एक वस्तु खरीदी जाती थी तो परिवार के सभी सदस्यों के लिए खरीदी जाती थी। किंतु आज जब से यह व्यवस्था खतम होने लगे जिसका बुरा परिणाम यह हुआ कि परिवारों में आपसी खीचतान होने लगी।

पारस्परिक सौहार्द्र का अभाव भी संघटित परिवारों के विघटन की प्रमुख भूमिका में रहा है। संघटित परिवार में बहु, बेटी, बेटा सभी अपने आप को सुरक्षित महसूस करते है किंतु एकल परिवार में असुक्षित महसूस करते है। आये दिन बलात्कार, लूटपाट और हत्या की घटनाएँ देखने सुनने और पढ़ने में आ जाती है।

Reasons of Family Conflict

There are many reasons for family conflict, discord, unrest and violence such as changed culture, rituals, religion, society, sexual relations, economic problems, stress, neglect, insult, pride, harassment, chaos, social, family and religious bonds after marital relationship, ownership, dominance, immaturity, depression, personality disorders, addiction, family obligations, physical-mental pain, difference in thinking and working style, ignorance, doubt, morbidity, privatization, selfishness, lack of resources, abuse, fight for dominance, immoral relationships. , injury to self-esteem, close relations with others, loss of family relations, comparison with each other, difference in outlook and interest, lack of tolerance, difference in life style and level, interference in personal work, acceptance of others, sexual relations, family responsibilities of parenting, maintenance, lack of self-control, materialism, lack of affection and patience, suspicion, flame of vengeance, lack of harmony, narrow mindedness, knowledge, discretion and

lack of experience, lack of feeling of brotherhood and charity, free spirit, laziness, vindictiveness, heredity, confusion, non-cooperation, disrespect, competition, aloofness, mental instability and excessive workload etc. are the reasons which lead to family conflict, unrest & discord. Earlier there were united families. The elders took equal care of their sons, daughters-in-law, grandchildren. If an item was bought for someone, it was bought for all the members of the family. But today, since this system has started ending, the bad result has been that mutual conflicts have started taking place among the families.

Lack of mutual harmony has also played a major role in the disintegration of joint families. In a joint family, daughter-in-law, daughter and son all feel safe but in a nuclear family they feel insecure. Every day we see and hear incidents of rape, robbery and murder.

प्रौद्योगिक वैज्ञानिक विकास, यांत्रिक अविष्कार और अनेक संसाधनों ने व्यक्ति के खान–पान, रहन–सहन, सोच–विचार आदि जीवन जीने की शैली में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है, इसी कारण मानव उपयोगितावादी और उपभोगवादी प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख हो गया है, सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुख मोड़ रहा है। मौलिक अधिकारों और सत्य अहिंसा आदि धर्म से संबंध छोड़ कर हिंसा, झूठ, चोरी आदि अधर्म से संबंध जोड़ रहा है।

काम काजी महिलाएँ

वर्तमान समय में काम काजी महिलाओं की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। जहाँ एक और ऑफिस में जिम्मेदारी निभाना पड़ती है वहीं दूसरी ओर पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी निभाना पड़ती है, जिससे अतिरिक्त भार महिलाओं के ऊपर पड़ता है। यह कार्य भी बहुत बड़ा कार्य है। गृहकार्य के महत्व को कम नही आंका जाना चाहिये। अतिरिक्त भार के दबाव की स्थिति में तनाव अशांति, संघर्ष एवं संतान के प्रति दुर्व्यवहार प्रारंभ हो जाता है। मूल अधिकारों की ओर से ध्यान भंग हो जाता है। संतान जिद्दी, हिंसक और संस्कारहीन होने लगती है। महिलाऐं अस्वस्थ होने लगती हैं। परिवार में प्रेम अपनत्व सामंजस्य और स्थायित्व समाप्त होने लग जाता है। जिस परिवार में प्रेम, अपनत्व, सामंजस्य और स्थायित्व नहीं होता उस समाज में भी प्रेम, शान्ति और सुख का अभाव देखा जाता है।

पारिवारिक व्यवस्था एक सामाजिक व्यवस्था की तरह होती है। परिवार समाज की इकाई होता है। पारिवारिक समस्याओं का निदान समाज को करना होता है। सामाजिक समस्याओं का निदान परिवार को करना होता है क्योंकि उनमें एक दूसरे सें घनिष्ठ संबंध होता है। घर का मुखिया पिता–होता है। समाज का मुखिया (अध्यक्ष) किसी परिवार का पिता होता है। इन दोनों को सुसंस्कारित, निरव्यसनी, परोपकारी और उदारवादी होना चाहिए। घर का और समाज का मुखिया परमात्मा का रूप होता है। उनके मुख से परमेश्वर बोलता है। उनके मुख से स्वार्थ नहीं परमार्थ बोलता है वे अंतर्मुखी होकर समस्याओं का सामना और समाधान करते हैं। मूल अधिकारों को प्राप्त कर संस्करण और संवर्धन करते है। यदि समस्याओं का समाधान नहीं होता तो अशांति संघर्ष और हिंसा होने लग जाती है। प्रेम, मैत्री, सौहार्द, शांति और विकास समाप्त हो जाता है। जब उनके अंदर एकांतवादी दृष्टि, स्वार्थवादी दृष्टि, भोगवादी दृष्टि और संग्रहवादी दृष्टि आ जाती है तब परिवार और समाज तहस–नहस हो जाता है।

Technological scientific development, mechanical inventions and many resources have brought about a radical change in a person's lifestyle, eating habits, lifestyle, thinking etc., due to which humans have become oriented towards utilitarian and consumerist tendencies, turning away from family responsibilities. Leaving aside the connection with religion like fundamental rights and truth, non-violence etc., he is getting associated with unrighteousness like violence, lies, theft etc.

Working Women

At present the number of working women is continuously increasing. While on one hand one has to fulfill responsibilities in the office, on the other hand one also has to fulfill family responsibilities, due to which additional burden falls on women. This work is also a big task. The importance of work at home should not be underestimated. Because of pressure of additional workload, tension, unrest, conflict and misbehavior towards children starts. Attention gets distracted from fundamental rights. Children start becoming stubborn, violent and cultureless. Women start becoming unwell. Love, affinity, harmony and stability in the family begins to end. In a family where there is no love, affection, harmony and stability; lack of love, peace and happiness is also seen in those families & society.

Family system is like a social system. Family is the unit of society. Society has to solve family problems. Social problems have to be solved by the family because they have a close relationship with each other. The head of the house is the father. The head (president) of the society is the father of a family. Both of them should be well-cultured, non-addictive, charitable and liberal. The head of the house and society are the form of God. God speaks through their mouth. Altruism does not speak from their mouth; they face and solve problems by being introverted. After obtaining the original rights, they do editions and enhancements. If problems are not resolved then unrest, conflict and violence begin to occur. Love, friendship, harmony, peace and development come to an end. When a solipsistic vision, selfish vision, materialistic vision and collectivist vision develop in them, then the family and the society get destroyed.

परिवारिक दृष्टिकोण

परिवार में रहने वाले व्यक्ति अनेक दृष्टि कोण वाले होते हैं। जैसे सामाजिक दृष्टि, राष्ट्र दृष्टि, विकार दृष्टि, सम्यक् दृष्टि, मिथ्या दृष्टि, भोग दृष्टि, बहिरदृष्टि, अंतरंग दृष्टि और आत्म दृष्टि। जिसके मन में जैसा विचार चलता है उसकी वैसे दृष्टि हो जाती है, उसका वैसा ही रहन–सहन, खान–पान हो जाता है। जिसका जैसा खान–पान हो जाता है उसका वैसा खानदान हो जाता है। अच्छे खानदान, परिवार और अच्छे जीवन के लिए सत्य अहिंसा, सौहार्द्र, प्रेम और परोपकार जरूरी है। संयुक्त परिवार से सौहार्द्र प्रेम, अपनत्व बढ़ता है।

संयुक्त परिवार में यदि बुजुर्गों के साथ रहने वाले युवाओं को यदि नीति निर्धारण व्यवस्था का दायित्व सौंप दिया जाता है तो एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता, प्रेम और अपनत्व बना रहता है। उसके बने रहने से मानवाधिकार सुरक्षित बने रहते हैं। व्यक्तिवादी मनोवृति एवं स्वार्थ दृष्टि परिवार में सौहार्द्र, सुख, शान्ति, प्रेम और अपनत्व में कमी लाती है, स्वच्छंद वृत्ति बढ़ाती है, व्यवसाय एवं संसाधनों में कमी लाती है और दूरियां बढ़ा देती है। सामाजिक एवं अनेकांत दृष्टि से परिवार में सामंजस्य, अपनत्व, बंधुत्व बढ़ता है एवं सभी प्रकार का विकास होने लग जाता है। पारिवारिक उत्तर दायित्व समझने वाला व्यक्ति ही सफलता के सोपान पर चढ़ सकता है। एकांत दृष्टि वाला तनाव और अनाग्रह से ग्रसित होता है। जिससे प्रतिशोध की ज्वाला जलती है।

प्रतिशोध की ज्वाला परिवार की सुख शांति को भस्म कर देती है। अनाग्रह, संदेह और एकांतदृष्टि संकीर्ण विचारधारा को जन्म देती है। संकीर्णता एवं संदेह आत्मीयता के विशाल मंच को तहस–नहस कर देता है। परिवार के सुख–दुःख में भागीदार नहीं बनने देता है। अपेक्षा स्वार्थ भावना को उत्पन्न करती है। सहृदयता की कमी ही सेवा, दया, मूल अधिकार और कर्तव्यनिष्ठा को समाप्त कर देती है। अतः सौहार्द, सहृदयता, शांति, सामंजस्य, अपनत्व, बन्धुत्व, प्रेम, वात्सल्य एवं सह अस्तित्व के लिए एकांतवादी दृष्टिकोण छोड़कर अनेकांतवादी एवं अध्यात्मवादी दृष्टिकोण लाना आवश्यक है। पारिवारिक सुख–शांति के यही मुख्य घटक हैं। ये घटक एक दूसरे के प्रति त्याग और बलिदान की भावना उत्पन्न करते हैं। अहंकार का विसर्जन करते हैं। आत्म नियंत्रण धैर्य, विश्वास उत्पन्न करते हैं अंतर्द्वंद, शल्य और चिंता को दूर करते हैं।

Family Perspective

People living in a family have many viewpoints. Such as social vision, national vision, disorder vision, right vision, false vision, enjoyment vision, external vision, inner vision and self vision. As per the thoughts in one's mind, one's vision becomes the same, one's lifestyle and food habits become the same. Whatever one's food habits are, his family will be like that. Truth, non-violence, harmony, love and charity are necessary for a good family and good life. Joint family increases harmony, love and affection.

In a joint family, if the responsibility of policy making system is handed over to the youth living with the elders, then tolerance, love and affinity towards each other remains. Due to its existence, human rights remain safe. Individualistic attitude and selfishness reduces harmony, happiness, peace, love and belonging in the family, increases independent nature, reduces business and resources and increases distance amongst family members. Adopting anekant and social norms harmony, affinity and brotherhood increases in the family and all kinds of development starts taking place. Only a person who understands his family responsibilities can climb the ladder of success. The one with individualistic vision suffers from stress and anger. Due to which the flame of vengeance gets lighted.

The flame of vengeance consumes the happiness and peace of the family. Indifference, doubt and isolated viewpoint give rise to narrow ideology. Narrow-mindedness and doubt destroy the huge platform of intimacy. Does not allow one to participate in the happiness and sorrow of the family. Expectation gives rise to selfishness. Lack of kindness destroys service, kindness, basic rights and devotion to duty. Therefore, for harmony, cordiality, peace, harmony, affinity, brotherhood, love, affection and co-existence, it is necessary to leave the solipsistic approach and adopt a pluralistic and spiritualistic approach. These are the main components of family happiness and peace. These components are dependent on each other create a feeling of renunciation and sacrifice. Discard the ego. Self-control develops patience, confidence and removes conflict, anger and anxiety.

दृढ़ विश्वास ही दृढ़ मानसिकता की द्योतक है, स्वस्थ भावना को उत्पन्न करता है, परिवार के सदस्यों के महत्त्व को बढ़ाता है, उपेक्षित व्यवहार, संदेह और दोषारोपण को दूर करता है।

असमानता, शोषण, बंधन इत्यादि अशान्ति के कारण हैं। शान्ति और विकास के लिए पारिवारिक सामजंस्य, समतावादी दृष्टि कोण एवं क्षमा जरूरी हैं। पारिवारिक शान्ति के लिए साध्य–साधन, कार्य–कारण, निमित्त–उपादान और भाग्य–पुरुषार्थ को जानना आवश्यक है। पर्यावरण एवं मौसम का संतुलन बनाये रखना, बोधि को प्राप्त कर आत्मा को परमात्मा बनाना मानव के लिए साध्य है। आर्थिक, मानसिक, शारीरिक, संतुलन बनाये रखना साध्य है लेकिन इंसान साध्य को भूलकर साधनों को जुटाने में लगा हुआ है इसीलिए इंसान दुःखी परेशान और अशांत हैं ।

समाज की धुरी परिवार है। यदि परिवार रूपी धुरी हिल जाती है तो पूरी समाज हिल जाती हैं। समाज का स्थायित्व परिवार की गतिशीलता पर टिका है। परिवार निरंतर गतिशील बना रहता है तो समाज का स्थायित्व बना रहता है। परिवार की गतिशीलता समाज को अक्षुण्ण बनाए रखती है। परंपरागत परिवार पूर्व काल में स्थिर थे एवं समाज का पुरुष वर्ग गतिशील था। नारी घर में ही रहती थी, उसका आश्रय स्थल घर था, बाहर उसको शरण नहीं थी इसीलिए नारी और परिवार दोनों नियंत्रण में थे। स्त्री और पुरुष के बीच में प्रेम, अपनत्व, उज्जवल चरित्र, नैतिकता और विश्वास था। घर में सुख, शांति और अहिंसा का वातावरण बना था। व्यक्ति उदारवादी था, व्यक्तिवादी नहीं था।लेकिन जब से कामकाजी महिलाएँ घर छोड़कर अकेली रोजगार के लिए जाने लगी है, तब से तनाव, मारपीट, तलाक, विघटन आदि अनेक समस्याएँ पैदा हो गई हैं।

पारिवारिक और सामाजिक नियंत्रण तो न के बराबर बचा है। नारी और पुरुष में समानता, स्वेच्छिक प्रवृत्ति बढ़ गई है, और वे एक दूसरे का खुलकर विरोध करने लगे हैं। यही संघर्ष और अशांति का कारण है।

जब दाम्पत्य जीवन में यौन संबंध, बच्चों के लालन–पालन, एवं परिवार के सदस्यों के प्रति कर्तव्य निष्ठा रहती है तब व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है। लेकिन जब ऐसा नहीं होता है और एक दूसरे का निरादर भाव होने लगता है तब संघर्ष अशांति और विनाश प्रारंभ हो जाता है। जब पति–पत्नी एक दूसरे पर अपना अधिकार जताने लगते हैं तब संबंध अभिशाप बन जाता है। दोनों के स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है। अलग तरीके का व्यवहार होने लगता है। आर्थिक, मानसिक, शारीरिक और सामाजिक स्थिति बिगड़ने लगती है।

Strong faith is indicative of a strong mentality, generates healthy emotions, increases the importance of family members, removes neglectful behaviour, doubt and blame.

Inequality, exploitation, bondage etc. are the causes of unrest. Family harmony, egalitarian viewpoint and forgiveness are necessary for peace and development. For family peace, it is necessary to know the end-means, cause-effect, cause-ingredient and destiny-effort. Maintaining the balance of environment and weather, attaining Bodhi (religious values) and making the soul divine is achievable for humans. Maintaining economic, mental, physical balance is an aim, but man is busy in gathering resources, forgetting the end, that is why man is sad, troubled and disturbed.

The pivot of society is family. If the axis of the family shakes, the entire society shakes. The stability of society depends on the dynamics of the family. If the family remains continuously dynamic then the stability of the society remains. Family dynamics keep society intact. Traditional families were stable in earlier times and the male section of the society was dynamic. The woman lived at home, her place of refuge was the home, she had no shelter outside, that is why both the woman and the family were under control. There was love, affection, bright character, morality and trust between man and woman. There was an atmosphere of happiness, peace and non-violence in the house. The man was a liberal, not an individualist. But ever since working women have started leaving home and going alone for employment, many problems like tension, fighting, divorce, disintegration etc. have arisen.

There is little or nill family and social control left. Equality and self tendencies have increased between men and women, and they have started openly opposing each other. This is the cause of conflict and unrest.

When there is sexual relations in married life, upbringing of children, and devotion to duty towards family members, then personality emerges. But when this does not happen and there is disrespect for each other, then conflict, unrest and destruction begins. When husband and wife start asserting their authority over each other then the relationship becomes a curse. There is a change in the nature of both. Different behavior starts happening. The economic, mental, physical and social condition starts deteriorating.

मारपीट और शिक्षा

बड़ा आश्चर्य है कि जिन परिवार में सदस्यों के बीच सर्वाधिक प्रेम, वात्सल्य, अपनत्व, सहयोग और खून का संबंध होता है। उन्हीं परिवारों में तनाव, संघर्ष, हिंसा इत्यादि देखी जाती हैं। प्यार करने वाले सदस्य एक दूसरे को मारते पीटते भी हैं। छोटे बच्चों को परिवार के बड़े सदस्यों द्वारा पीटना भी नैतिकता के रूप में स्वीकार किया जा रहा है, क्योंकि शारीरिक दंड के माध्यम से उन्हें यह एहसास कराया जाता है। कि बेटा तुमने यह गलत कार्य किया है, तुम्हें इस बुरे कार्य से बचना है और आगे भी ऐसा गलत कार्य नहीं करना, लेकिन कभी–कभी यह बच्चों को मनोवैज्ञानिक रूप से विकृत बना देता है। शारीरिक दंड उतना ही दिया जाना चाहिए जितने में वह बालक अपराध का एहसास कर सके और आगे अपराध न करने की शिक्षा ले सके।

एक ओर जहाँ शारीरिक दंड से शिक्षा पाकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास करता है, मानसिक रूप से मजबूत और स्वस्थ होता है, मानवीय मूल्य, अधिकार और कर्तव्य के महत्व को समझाने लगते हैं। दंड से व्यक्ति हिंसा और अहिंसा के मूल्य को समझते हुए उसका अनुभव भी करता है। यह शारीरिक दंड प्रक्रिया अहिंसा को सिखाने का सशक्त माध्यम है इसीलिए जेल, पुलिस थाना एवं स्कूल आदि में शारीरिक दंड दिया जाता है, तो दूसरी ओर बदले की भावना से भर कर और अधिक हिंसक हो जाता है, मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाता है और समस्या से मुक्त होने के स्थान पर समस्याओं से और अधिक घिर जाता है और मानवीय मूल्यों, कर्तव्यों और अधिकारों का हनन करने लगते हैं।

स्त्रियों की आत्म निर्भरता और शांति

जिस परिवार की महिलाएँ प्रबंधन, व्यवसाय एवं आवश्यक वस्तुओं के लिए आत्म निर्भर रहती हैं, अपनी बुद्धि और चतुराई से काम करती हैं, सुरक्षित स्वतंत्र जीवन–यापन करने की क्षमता रखती हैं उस परिवार के पुरुष अपने घर की उन महिलाओं से खुश रहते हैं। ऐसे व्यक्ति नारियों को शारीरिक, मानसिक और वाचनिक यातना नही देते हैं। जिन परिवारों की महिलाएँ पति पर निर्भर रहती है, शक्तिहीन और भयभीत रहती हैं वे अपने आप को असहाय अनुभव करती हैं। अथवा जिनके पति शक्ति हीन वृद्धिहीन और अर्थहीन होते है, उनके दाम्पत्य जीवन के बीच में असंतुष्टी, असंतुलन और असहमति बनी रहती है जिससे हिंसा और अशांति बढ़ जाती है।

Spanking and Studies, Education

It is a big surprise that tensions, conflict, violence etc. is found in those families who have maximum love, affection, affinity, cooperation and blood relations among their members. Members in love even hit each other. Beating of small children by elder members of the family is also being accepted as moral, because they are made to realize this through physical punishment. That son, you have done this wrong thing, you have to avoid this bad thing and do not do such wrong thing in future also, but sometimes it makes children psychologically distorted. Physical punishment should be given only to the extent that the child realises his mistake and learns not to commit that in the future.

On one hand, by getting education suffering physical punishment, a person develops his personality, becomes mentally strong and healthy, and starts understanding the importance of human values, rights and duties. Through punishment, a person understands the value of violence and non-violence and also experiences it. This process of physical punishment is a powerful medium to teach non-violence, that is why physical punishment is given in jail, police station and school etc. On the other hand, being filled with the feeling of revenge, one becomes more violent, becomes mentally unhealthy and Instead of being free from problems, they become more surrounded by problems and start violating human values, duties and rights.

Self Reliance of Women and Peace

The men of a family whose women are self-reliant for management, business and essential things, work with their intelligence and cleverness, and have the ability to lead a safe and independent life are happy with those women of their house. Such people do not torture women physically, mentally and verbally. Those families whose women depend on their husbands, are powerless and afraid, they feel helpless. Or those whose husbands are powerless, growthless and meaningless, there remains dissatisfaction, imbalance and disagreement in their married life, which increases violence and unrest.

परिवार अथवा समाज के व्यक्तियों द्वारा जब किसी प्रकार की गति विधियों पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है अथवा अपने नियंत्रण में रखा जाता है तब तनाव, अशांति और झगड़े प्रारंभ हो जाते हैं।

परिवार के सदस्यों को पराधीन रखने से, भय पैदा करने से, अपमानित करने से, बदनाम करने से, धमकी देने से, आर्थिक, मानसिक अथवा शारीरिक क्षति पहुंचाने से सुख–सुविधाओं के संसाधन छीन लेने से एवं आत्म सम्मान में चोट पहुंचने से तनाव, अशांति और झगड़े प्रारंभ हो जाते हैं।

प्रायः यह देखा गया कि घर के बाहर दूसरे बच्चों के साथ मारपीट की अपेक्षा घर के बच्चों के बीच मारपीट अधिक होती है। बच्चों की चाहत और अभिभावक की चाहत में अंतर होता है, दोनों के दृष्टिकोण, रुचि, सोच–विचार, ज्ञान, अनुभव एवं उम्र में अंतर होता है अथवा पति पत्नी की चाहत में, विपरीत लिंग के प्रति दृष्टिकोण में, रूचि में एवं उद्देश्य में भिन्नता पाई जाती है इस कारण परिवार में संघर्ष और हिंसा देखी जाती है।

परिवार में उस समय हिंसा और संघर्ष और अधिक बढ़ जाता है जब घर के बाहर रहने वाले व्यक्तियों से जुड़ाव अधिक हो जाता है क्योंकि परिवार के सदस्यों के बीच का प्रेम घट जाता है और बाहरी लोगों से प्रेम बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में ईष्या और नफरत पैदा हो जाती है। जो अशांति का कारण बन जाती है।

पारिवारिक जीवन में जन्म–मरण की क्रियाएँ, दान पूजा आदि धार्मिक क्रियाए एवं सामाजिक परंपराओं का निर्वहन करना परिवार में अशांति संघर्ष और हिंसा कारण बन जाता हैं।

परिवार का प्रत्येक सदस्य चाहता है कि उन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एवं सुख–सुविधाओं के लिए पर्याप्त भोजन, पानी, कपड़ा, आवास एवं पर्यटन आदि के लिए आने जाने के संसाधनों की पर्याप्त सुविधा मिले लेकिन जब नहीं मिलती तव तनाव और हिंसा होने लग जाती है।

जब बड़े लोग छोटे लोगों को अपने नियंत्रण में रखने की कोशिश करने लग जाते हैं तब तनाव और अशांति की स्थिति बन जाती है।

पुरुष हमेशा अपने से उम्र एवं कद में छोटी नारी से शादी करता है। क्योंकि ऐसा करने से पुरुष प्रधानता का सिद्धांत सुचारू रूप से चलता रहता है। वह सिद्धांत पुरुष के लिए अधिक शक्तिशाली प्रभावपूर्ण और अधिक बुद्धिमान सिद्ध कर देता है।

When any kind of movement is restricted or controlled by members of the family or society, then tension, unrest and fights begin.

Stress due to keeping the family members dependent, creating fear, insulting, defaming, threatening, causing financial, mental or physical harm, taking away resources of comforts and luxuries and injury to self-esteem, lead to unrestand fights begin.

It is often seen that there is more fighting between children at home than fighting with other children outside the home. There is a difference between the wishes of the children and the wishes of the parents, there is a difference in the viewpoint, interest, thinking, knowledge, experience and age of both or in the wishes of the husband and wife, in the attitude towards the opposite sex, in their interests and objectives. Differences are found due to which conflict and violence are seen in the family.

Violence and conflict in the family increases when there is more involvement with people living outside the home because the love between family members decreases and the love for outsiders increases. In such a situation jealousy and hatred arise. Which becomes the cause of unrest.

In family life, rituals of birth and death, religious activities like charity, worship etc. and carrying out social traditions become the cause of unrest, conflict and violence in the family.

Every member of the family wants that they should get adequate facilities like food, water, clothes, accommodation and travel resources for tourism etc. to fulfill their needs and for the comforts, but when they do not get it then tension and violence starts happening.

When elders start trying to keep the youngers under their control, then a situation of tension and unrest is created.

A man always marries a woman younger in age and height than him. Because by doing this the principle of male dominance continues smoothly. This principle proves a man to be more powerful, effective and more intelligent.

पारिवारिक हिंसा और अशांति इस कर्मभूमि में अनादि काल से है और अनंत काल तक रहेगी। इस में कमोवेसी हो सकती है। जो पारिवारिक हिंसा और अशांति से गुजरता है वह यदि अध्यात्म की शरण में चला जाता है तो वैराग्य धारण कर लेता है और घर गृहस्थी परिवार को छोड़कर आत्म साधना हेतु साधु बन जाता है। पारिवारिक हिंसा और अशांति से गुजरने वाला यदि भौतिकता की शरण में चला जाता है तो अवसाद, तनाव, और डिप्रेशन में चला जाता है।

इस कलिकाल में सुख सुविधा के भौतिक सभी साधन होने पर भी पारिवारिक हिंसा और अशांति चरम सीमा पर पहुँच रही है। संपूर्ण विश्व में यह समस्या प्रत्येक परिवार की अभिन्न अंग बन रही है। यह समस्या मानव जीवन के जो जन्म–जात मूल अधिकार हैं उन्हें भी छीन रही है।`मूल अधिकार के अभाव में विश्व के सारे अधिकार व्यर्थ हो जाते हैं।

जीवन जीने के मूल अधिकार को लेकर भगवान आदिनाथ स्वामी ने अनेक सूत्र दिए, उनमें अहिंसा परमो धर्मः अर्थात् अहिंसा परम धर्म है। जियो और जीने दो अर्थात् हम स्वयं जियें और दूसरों को जीने दें। ये दो सूत्र तीर्थंकर भगवान ने जनता को उपदेश के रूप में मूल अधिकारों के साथ जीने के लिए दिये। लेकिन जो मानसिक विकृति और आनुवांशिक रोगों से ग्रसित होते हैं वे न चैन से जीते हैं, न दूसरों को जीने देते हैं। वे प्रताड़ना देकर अशान्ति फैलाते हैं। प्रताड़ना दे कर हिंसा करने और अशांति फैलाने वाले व्यक्ति में जैविक भिन्नता, व्यक्तिगत भिन्नता और अनुभव की कमी देखी गई है। परिवार का जब एक व्यक्ति दूसरे परिवार के व्यक्ति के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित कर लेता है और उसकी बातों में आने लगता है अपने परिवार के सदस्यों की बात नहीं मानता है तब परिवार में अशांति और हिंसा की वृद्धि होने लगती है। हिंसा करने और अशांति फैलाने वाला व्यक्ति आत्म नियंत्रण, आत्म विश्वास, ज्ञान और विवेक की कमी से ग्रसित होता है।

दाम्पत्य जीवन और अशांति

प्रायः देखा गया कि लगभग एक वर्ष के उपरांत पति पत्नी के बीच गाली–गलौच शाब्दिक प्रहार से, अपमानित करने से, आपस में बातचीत न करने से, संदेह करने से, एक दूसरे की भावनाओं को ठेस पहुंचाने से, एक दूसरे की इच्छाओं की पूर्ति न करने से, आपसी संबंध न रख कर अपने से, विपरीत लिंग वालों से संबंध स्थापित करने से, अथवा मद्यपान आदि नशीले पदार्थों के सेवन से वे एक दूसरे पर आक्रामक हो जाते हैं, लड़ने–झगड़ने लगते हैं और फिर वे पृथक–पृथक रहने की सोचने लगते हैं।

Family violence and unrest have existed in this Karmabhoomi since time immemorial and will remain so till eternity. There may be more or less at times. If one who suffers family violence and unrest; takes refuge in spirituality, he attains renunciation and leaves his home and family and becomes a saint for self-cultivation. If a person suffering family violence and unrest takes refuge in materialism, he suffers depression, stress and anxiety.

In this period of the universe Kalikaal, despite having all the material means of comfort, family violence and unrest is reaching its peak. This problem is becoming an integral part of every family all over the world. This problem is also snatching away the basic birth rights of human life. In the absence of fundamental rights, all the rights of the world become useless.

Lord Adinath Swami gave many sutras (principles) regarding the basic right to live life, among them "Ahimsa Parmo Dharma": That is, non-violence is the ultimate religion." Live and let live"- means we ourselves live and let others live. Lord Tirthankar gave these two sutras as a sermon to the public to live with their fundamental rights. But those who suffer from mental disorders and genetic diseases neither live peacefully nor allow others to live. They spread unrest by harassing. Biological differences, individual differences and lack of experience have been seen in the person who indulges in violence and spread unrest through torture. When one person in a family establishes close relationship with a person from another family, and starts following his words and does not listen to his own family members, then unrest and violence starts increasing in the family. A person who commits violence and creates unrest suffers from lack of self-control, self-confidence, knowledge and conscience.

Married Life and Turmoil

It is often seen that after about a year, verbal abuse between husband and wife, insulting, not talking to each other, doubting, hurting each other's feelings, and not fulfilling each other's wishes starts. By not doing so, by not maintaining mutual relations, by establishing relationships with people of the opposite sex, or by consuming intoxicants like alcohol, they become aggressive towards each other, start fighting and then they start thinking about living separately.

जो व्यक्ति आत्म–नियंत्रण और आत्मविश्वास की कमी से ग्रसित होता है वह हिंसा और तनाव से युक्त पाया जाता है। अवसाद, अपरिपक्वता दूषित मानसिकता वाला व्यक्ति हिंसक, अशांत और दुर्व्यवहार करने वाला होता है। टेस्टोस्टोरोना रूपी नाम के रसायन के बढ़ जाने से व्यक्ति हिंसक, अशांत और अपराधी होता है।

हिंसा से पीड़ित व्यक्ति को अहिंसा की उचित शिक्षा दी जाए तो वह शिक्षा ग्रहण कर लेता है और हिंसा नहीं करता। जबकि प्रताड़ना देने वाला व्यक्ति कुछ शिक्षा ग्रहण नहीं करता। शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से ग्रसित स्त्रियाँ प्रताड़ना देने वाले व्यक्ति से अपने संबंध तोड़ने की सोचती है।

समाज और परिवार में उप संस्कृतियों के कारण से हिंसा तनाव इत्यादि पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। योग्यता, आयु, लिंग, आर्थिक समस्या, असमानता, संसाधन, सामाजिक बंधन, उत्तरदायित्व एवं व्यक्तित्व विकार इत्यादि कुछ ऐसे कारण हैं जिससे घरेलू हिंसा और तनाव बढ़ जाता है।

कुछ शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि विवाह के पश्चात पुरुष द्वारा अपना अधिकार जमाने, प्रभाव दिखाने, गलत व्यवहार और अपशब्द के प्रयोग से लगभग 80 प्रतिशत नारियाँ भावनात्मक प्रताड़न का अनुभव करती हैं। लगभग 75 प्रतिशत स्त्रियाँ बंधन का अनुभव करती हैं। 70 प्रतिशत स्त्रियाँ ईष्या और संदेह का शिकार बनती हैं। 50 प्रतिशत स्त्रियों को शारीरिक प्रताड़ना सहन करनी पड़ती है। 30 प्रतिशत स्त्रियों को तलाक के लिए मजबूर होना पडता है ।

कुछ महिलाओं का मानना है कि पुरुष प्रधान व्यवस्था पारिवारिक हिंसा और अशांति का कारण है। जहाँ स्त्री और पुरुष दोनों के बीच समान अधिकार और व्यवस्था की जिम्मेदारी होती है वहाँ हिंसा और अशांति कम देखी जाती है। उनका मानना है कि पुरुष प्रधान व्यवस्था में अधिकांश पुरुष अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए शारीरिक मानसिक क्षति पहुँचाने का मार्ग अपनाते हैं।

माता–पिता के द्वारा बच्चों के लिए शारीरिक, मानसिक प्रताड़ना से उत्पन्न हुई हिंसा का अनुभव एवं माता–पिता के बीच हुई हिंसक घटनाओं का अनुभव व्यस्क होने पर अर्थात् दाम्पत्य जीवन में अपना लिया जाता है। इस प्रकार पीढ़ीगत हिंसा का संचरण होता रहता है।

A person who lacks self-control and self-confidence is found to be prone to violence and stress. A person with a mentality of depression, immaturity and tainted mentality is violent, disturbed and abusive. Due to increase in the chemical called testosterone, a person becomes violent, disturbed and criminal.

If a person suffering from violence is given proper education on non-violence, he absorbs the education and does not commit violence. Whereas the person who tortures does not receive any education. Women suffering from physical, mental, social and economic problems think of breaking their relations with the person who is harassing them.

Due to subculture in society and family this violence, tension etc. is being passed on from generation to generation. Qualifications, age, gender, economic problems, inequality, resources, social bonds, responsibilities and personality disorders etc. are some of the reasons due to which domestic violence and tension increases. Some researchers have concluded that after marriage, about 80 percent of women experience emotional abuse due to man's dominance, influence, misbehaviour and abuse. About 75 percent of women experience bondage. 70 percent of women become victims of jealousy and suspicion. 50 percent women have to endure physical torture. 30 percent of women are forced to divorce.

Some women believe that the patriarchal system is the cause of family violence and unrest. Where both men and women have equal rights and responsibility for the system, there is less violence and unrest. They believe that in the male-dominated system, most of the men adopt the path of causing physical and mental harm to maintain their dominance.

The experience of violence resulting from physical and mental torture of children by their parents and the experience of violent incidents between parents is embedded when these children become adults i.e. they also adopt to violence in their married life also. In this way intergenerational violence continues to be transmitted.

जैन धर्म के अनुसार क्रोध, मान, माया, लोभ, ईर्ष्या, शोक, भय, ग्लानि और वेद इत्यादि कषायें हिंसा और अशांति का कारण है। खंडित व्यक्तित्व, हीन मानसिकता, निषेधात्मक वृतियां एवं मद्यपान ही आज व्याधि अवसाद और आत्महत्या आदि के मामलों में वृद्धि करके समस्याएं पैदा कर रहे हैं।

नौकरी पेसे के कारण पति–पत्नी अलग–अलग रहते हैं जिससे उनके दाम्पत्य जीवन के संबंध में कमी आ जाती है जो अशांति और हिंसा का कारण बनती है,

जो महिलाएँ पारिवारिक अशांति और हिंसा के वातावरण से गुजरती हैं उनमें से कुछ नारियाँ साहस जुटाकर अपने प्रयत्न से विकास करती हैं, स्वयं के संरक्षण को सुनिश्चित कर लेती हैं, और अशांति पर विजय प्राप्त कर लेती हैं।

कुछ स्त्रियाँ अपने आप को असहाय, दीन–हीन महसूस करती हैं अपने आप को संवेदनहीनता की स्थिति से गुजरती हुई स्वयं को ही दोषी मान लेती हैं और कालांतर में समझौता कर समाजीकरण करके जीवन निर्वाह करती रहती हैं।

कुछ स्त्रियाँ भय, अवसाद और तनाव में आकर आत्महत्या कर लेती हैं अथवा कुछ स्त्रियाँ न्यायालय का सहारा लेकर कोर्ट कचहरी करने लग जाती है।

According to Jainism, anger, pride, illusion, greed, jealousy, grief, fear, guilt and the etc. are the causes of violence and unrest. Fragmented personality, inferior mentality, restrictive attitudes and alcoholism are creating problems today by increasing the cases of illness, depression and suicide etc.

Due to service & salary , husband and wife live separately which reduces their marital relationship which causes unrest and violence,

Among the women who go through an environment of family unrest and violence, some women gather courage and develop with their own efforts, ensure their own protection, and overcome the disturbance.

Some women feel helpless, destitute, go through a state of insensitivity, consider themselves guilty and eventually compromise and continue living their lives through social system..

Some women commit suicide due to fear, depression and stress or some women resort to court cases.

पारिवारिक हिंसा और अशांति के कारण

सामाजिक और पारिवारिक हिंसा और अशांति को रोकने के लिए पुलिस, न्यायालय, समाज कल्याण, चिकित्सा, सामाजिक संस्था एवं परामर्श सुधार केन्द्र होते हैं उन केंद्रों का सहारा लिया जा सकता है। प्रायः देखा जाता है कि योग्यता, रुचि, जिम्मेदारी, दायित्व, आयु और लिंग भेद के कारण हिंसा, तनाव और अशांति पैदा होती है। जिस समाज में बलि एवं मान प्राप्ति के लिए हिंसात्मक विकृति संस्कृतियाँ चली आ रही है परिवारों में हिंसा और अशांति अधिकांश देखी जाती है। अतः सामाजिक हिंसा और संस्कृतियों से बचना चाहिए।

पारिवारिक हिंसा अशांति और तनाव की स्थिति अव्यवस्था के कारण भी बनती है। जो सामान जहाँ जैसा जिस प्रकार रखना चाहिए वैसा नहीं रखने पर हिंसा, अशांति और तनाव का वातावरण निर्मित हो जाता है। परिवार के सदस्यों में अलग–अलग प्रकार का व्यक्तित्व पाया जाता है इस व्यक्तित्व की भिन्नता के कारण न समझने से हिंसा और अशांति का वातावरण बन जाता है। जिनके पास संसाधन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, वे उनका प्रयोग खुलेआम प्रभुत्व स्थापित करने लग जाते हैं जो हिंसा और अशांति का कारण बन जाता है। पारिवारिक हिंसा को बच्चे अभिभावकों के दुर्व्यवहार से सीखते हैं। जब दुर्व्यवहार के कारण छोटे और बड़ों में मेल–मिलाप नहीं बन पाता है एवं संसाधनों की कमी हो जाती है तब तनाव की स्थिति बन जाती है।

सामाजिक राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक और वैचारिक सिद्धांत और संस्कारों की शिक्षा अपनी संतान को अन्य प्राणियों से मनुष्य में ज्यादा दी जाती है।

सभी प्राणियों में नर का मादा के प्रति आक्रामक व्यवहार पाया जाता है। इस आक्रामक व्यवहार से नर हमेशा मादा को अपने नियंत्रण में रखना चाहता है जब नहीं रख पाते हैं या जब मादा नर के नियंत्रण में रहने को तैयार नहीं होती है तब हिंसा और अशांति उत्पन्न होती है।

Reasons of Domestic Violence and Unrest

To prevent social and family violence and unrest, there are police, courts, social welfare, medical, social institutions and counselling reform centres, the help of those can be taken. It is often seen that differences in ability, interest, responsibility, liability, age and gender lead to violence, tension and unrest. In the societies where violent and distorted cultures are prevalent for the sake of sacrifice and respect, violence and unrest are mostly seen in families. Therefore, we should avoid such social violence and cultures.

Family violence also creates a situation of unrest and tension due to chaos. If things are not kept where they should be, an environment of violence, unrest and tension is created. Different types of personalities are found among the family members. Failure to understand the difference in personality creates an environment of violence and unrest. Those who have resources in abundance, start using them openly to establish dominance which becomes the cause of violence and unrest. Children learn family violence from the abuse of their parents. When due to misbehaviour there is no harmony between elders and children and there is a shortage of resources, then a situation of tension is created.

Social, political, economic, religious and ideological principles and values are imparted to their children more in humans than in other living beings.

Aggressive behavior of males towards females is found in all animals. Due to this aggressive behavior, the male always wants to keep the female under his control, when he is unable to do so or when the female is not ready to remain under the control of the male, then violence and unrest occurs.

जब सामाजिक संगठन किसी के निजी क्रिया कलापों सुख सुविधाओं के संसाधनों एवं इंद्रिय विषय भोगों में हस्तक्षेप करने लगते हैं तब वह नियंत्रण हिंसा और अशांति का कारण बन जाता है।

संसार के सभी प्राणियों की ओर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है, कि मनुष्य हो या पशु–पक्षी इन सभी प्राणियों में सारी व्यवस्थाएँ पुरुष प्रधान देखने को मिलती हैं। जैसे जंगल में शेर, वानरों में लंगूर, बकरियों में बकरा इत्यादि सभी अपने समूह को अपने अंडर में रखना चाहते हैं और अनुशासन बना कर चलाते हुए भी देखे जाते हैं। इसी कारण मानव समाज में भी पैतृक अथवा पति की सत्ता का सिद्धांत लोक में देखा जाता है। इसे रोका नहीं जा सकता है परंतु इसमें सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है।

पुरुष प्रधान सत्ता के सिद्धांत के कारण ही वृद्धावस्था में अशक्त पुरुषों के प्रति स्त्रियों के द्वारा शारीरिक, मानसिक, भौतिक एवं व्यक्तिगत दुर्व्यवहार देखा जाता है।

पर्याप्त खानपान एवं वस्त्र दवा आदि की देखभाल और व्यवस्था नहीं करने से शारीरिक दुर्व्यवहार देखा जाता है।

परिवार से अलग होनेकी धमकी देना, गाली गलौज करना घर से निकाल देने की धमकी देना इत्यादि मानसिक और वाचनिक दुर्व्यवहार है।

यदि बुजुर्ग लोग समाज और परिवार की मुख्यधारा से हटकर वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम धारण कर लेते हैं तो दुर्व्यवहार की समस्त घटनाएँ हिंसा और अशांति समाप्त हो जाती हैं। वृद्धों के प्रति होने वाले दुर्व्यवहार पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि उन युवा व्यक्तियों में अनुभव और ज्ञान की कमी है अतः युवाओं को ज्ञान विनय और सेवा प्राप्त कराना चाहिए। मनोविज्ञान के अनुसार बच्चों, युवाओं और युवतियों में अनुभव की कमी अवज्ञा, अज्ञान, मानसिक बीमारियाँ और नशे की आदत ही वृद्धों के प्रति दुव्यवहार का कारण बनती है। जैसे धन कमाने के समय देखा जाता है कि लागत कम और लाभ ज्यादा हो तो धनात्मक असर दिखाई देता है। इसी प्रकार यदि वृद्धों के साथ रहने पर लाभ अधिक दिखाई दे, तो दुर्व्यवहार नहीं रहेगा।

When social organisations start interfering in someone's personal activities, comforts, resources and sensual pleasures, then this control becomes the cause of violence and unrest.

If we look at all the living beings in the world, it becomes clear that whether it is humans, animals or birds, all the systems seen in all these creatures are male dominated. Like lion in the forest, langur among monkeys, goat among goats etc. all want to keep their group under their control and are also seen maintaining discipline. For this reason, the principle of paternal or husband's authority is seen in the human society also. It cannot be stopped but harmony can be established in it.

Due to the principle of patriarchy, physical, mental, material and personal abuse is seen by women towards disabled men in old age.

Physical abuse is seen due to lack of care and arrangements for adequate food, clothing, medicine etc.

Threatening to be separated from the family, abusing, threatening to throw out of the house, etc. are mental and verbal abuse.

If elderly people move away from the mainstream of society and family and adopt Vanaprastha and Sanyas Ashram (going to jungles leaving family & society voluntarily), then all incidents of misbehaviour, violence and unrest will end. Looking at the misbehaviour towards the elderly, it is known that those young people lack experience and knowledge, hence the youth should be imparted knowledge, humility and service. According to psychology, lack of experience, disobedience, ignorance, mental illnesses and drunkenness among children, youth and girls cause misbehaviour towards the elderly. For example, while earning money, it is seen that if the cost is less and the profit is more, then the positive effect is seen. Similarly, if the benefits of living with the elderly are seen to be greater, then there will be no abuse.

पारिवारिक हिंसा रोकने के उपाय

पारिवारिक हिंसा और अशान्ति को रोकने के लिए दाम्पत्य जीवन के पूर्व से ही आपसी तालमेल, मधुर वाणी, विश्वास, समानता और सम्मान को महत्त्व देना चाहिए।

शादी के उपरांत स्पष्टवादिता, व्यवहार कुशलता, आपसी तालमेल एवं एक दूसरे की भावनाओं पर ध्यान देना चाहिए।

समाज में जो हिंसा और मारपीट अनुचित दंड को आदर्श मानते हैं ऐसी धारणाओं को मिटाना चाहिए लेकिन उचित दंड एवं न्याय व्यवस्था होना चाहिए।

मद्यपान आदि नशीले और मांस आदि तामसिक पदार्थों के सेवन पर प्रतिबंध लगना चाहिए। इसके लिए नशा मुक्ति केंद्रों, शाकाहारी भोजन एवम् शिविरों का सहयोग लेना चाहिए।

विश्वासप्रद समझदार लोगों को परिवार के असंतुष्ट लोगों से ऐसी अलग–अलग बातचीत करना चाहिए जो वे अपने मन की बात छुपाये बिना सब कुछ उजागर कर दे। फिर दोनों की बात सुनकर दोनों के बीच उत्पन्न हुए संदेह एवं कमियों को दूर करने की उचित सलाह दें। आपसी विश्वास में आई कमी को दूर करें। अवसाद, चिंता और अकेलेपन को दूर करें।

हिंसा तनाव और अशांति के कारण जो बेरोजगारी, गरीबी, असमानता, अपर्याप्त संसाधन, रोग, बीमारी, खानपान की कमी एवं शिक्षा का अभाव है उसे दूर करना चाहिए।

Ways to Stop Family Violence

To prevent family violence and unrest, importance should be given to mutual coordination, sweet speech, trust, equality and respect even before married life.

After marriage, attention should be paid to candor, tact, mutual coordination and each other's feelings.

In the society, which considers violence and assault as the norm and unfair punishment as ideal such concepts should be eradicated,but there should be appropriate punishment and justice system.

There should be a ban on consumption of intoxicants like alcohol and meat etc. For this, cooperation should be taken from drug de-addiction centres, help should be taken from camps for vegetarian food.

Trustworthy and sensible people of the society should have such separate conversations with the disgruntled family members so that they can reveal everything without hiding their feelings. Then after listening to both of them, give appropriate advice to remove the doubts and shortcomings that have arisen between them. Remove the lack of mutual trust. Eliminate depression, anxiety and loneliness.

Unemployment, poverty, inequality, inadequate resources, disease, illness, lack of food and lack of education etc. should be removed which are the cause of violence, tension and unrest.

सुख शांति में कानून और चिकित्सा

जो साहित्य, दूरसंचार (फोन), फिल्में, रेडियो, टेलीविजन इत्यादि जो साधन कुछ समय पूर्व तक सुख–शांति और आनंद के थे वे साधन अब दुख, अशांति, अपराध और समस्या के कारण बनते जा रहे हैं। पहले भी व्यक्तिगत और सामाजिक भिन्नताएँ थी वे समाज और परिवार तक सीमित थी, लेकिन अब घर और समाज के बाहर सार्वजनिक स्थानें में परिलक्षित होने लगी है। असमान जनसंख्या वृद्धि, संसाधन, शहरीकरण, सांस्कृतिक संघर्षो ने अपेक्षाओं और कुंठाओं के साथ–साथ सामाजिक अवमूल्यन को जन्म दे दिया है जिससे अपराध और अपराधी में वृद्धि हो रही है। मानवीय अधिकारों में कमी हो रही है। जिसका निदान समाजसेवी संस्थान, पुलिस, वकील, दार्शनिक और साधु संत ढूंढ रहे हैं। अनेक प्रकार के कानून बनाए जा रहे हैं। अनेक प्रकार का मूल्यांकन किया जा रहा है। मूल्यांकन में जहां अपराध कर्ता के शारीरिक, मानसिक, वाचनिक, भौतिक और सामाजिक स्तर का मूल्यांकन किया जा रहा है वहीं पारिवारिक और सामाजिक संरचना, सहयोग, संसाधन इत्यादि की ओर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। अपराधी व्यक्ति को सुधारने हेतु चिकित्सा की जा रही है। उस चिकित्सा में यह सिखाया जाता है कि अहिंसात्मक, अनुशासनात्मक और मधुर व्यवहार कैसे किया जाए, जिससे अपराधी का अपराध छूट जाए। परिवार में सुख–शांति और आनंद का माहौल निर्मित हो जाए। क्रोध, उत्तेजना, नकारात्मक विचार और उकसाने वाली स्थिति से कैसे बचा जाए। यह शिक्षण और प्रशिक्षण ही चिकित्सा के रूप में कारगर सिद्ध हो रहा है। जेल में रहने वाले अपराधियों को भी नैतिक तर्क, नैतिक कार्य, नैतिक ज्ञान और नैतिक व्यवहार सिखाया जा रहा है। इस शिक्षण और प्रशिक्षण का उद्देश्य अपराधी के अंदर उच्च स्तरीय नैतिकता को विकसित करने का है।

पारिवारिक और सामाजिक हिंसा करने और अशांति फैलाने वाले अपराधी को अपराध से मुक्त करने के लिए शारीरिक मानसिक और वाचनिक दंड भी दिया जाता है। ऐसा दंड देकर यह अनुभव कराया जाता है, कि इस प्रकार की हिंसा और उग्रता से जब तुम्हें इतनी पीड़ा होती है तो सामने वाले को कितनी पीड़ा होती होगी, यह आप स्वयं निरीक्षण और अनुभव करें।

Law and Medicine in Peace and Happiness

Literature, telecommunication (phone), films, radio, television etc., which till some time ago were the means of happiness, peace and joy, are now becoming the causes of sorrow, unrest, crime and problems. Earlier too, individual and social differences were limited to society and family, but now they have started getting reflected in the home and public places outside the society. Uneven population growth, resources, urbanisation, cultural conflicts have given rise to expectations and frustrations as well as social devaluation leading to increase in crime and criminality. Human rights are decreasing. The solution for which is being sought by social organizations, police, lawyers, philosophers and saints. Many types of laws are being made. Many types of evaluations are being done. In the evaluation, while the physical, mental, verbal, material and social level of the criminal is being evaluated, the focus is being focused on the family and social structure, support, resources etc. The criminal person is being treated for his reformation. In that therapy, it is taught how to behave non-violently, with discipline and sweetly, so that the criminal can be absolved of his crime. An atmosphere of happiness, peace and joy should be created in the family. How to avoid anger, excitement, negative thoughts and provoking situations. This teaching and training is proving to be as effective as therapy. Criminals living in jail are also being taught moral reasoning, moral action, moral knowledge and moral behaviour. The purpose of this education and training is to develop a high level of morality in the criminal.

Physical, mental and verbal punishment is also given to absolve the culprit who commits family and social violence and creates unrest from his crime. By giving such punishment, you are made to feel that when you suffer so much due to such violence and aggression, you yourself observe and experience how much pain the other person must be suffering.

उस अनुभव और आत्म निरीक्षण से वह शिक्षा लेकर हिंसा और अपराध के कारणों को स्वयं स्वीकार कर लेता है अपने आप को उत्तरदाई मान लेता है और आगे इस प्रकार का व्यवहार न करने का संकल्प ले लेता है। वह दूसरों के प्रति संवेदन और सहानुभूति को विकसित कर लेता है। वह अपने और दूसरों के अधिकारों को समझने लगता है।

सामूहिक चिकित्सा

जब कोई व्यक्ति अच्छा कार्य करता है तो उसे सामूहिक रूप से सम्मानित किया जाता है उसकी प्रशंसा की जाती है। उसके विचारों का आदान–प्रदान किया जाता है। जिसे देखकर अपराधी भी यह सोचता है कि मुझे भी इसी प्रकार सम्मानित किया जाएगा और मेरी प्रशंसा हो, अतः वह अपने अंदर सद्‌गुणों को विकसित करने लग जाता है। यही कारण है कि अच्छे कार्य करने वालों को सामूहिक रूप से सम्मानित करके पुरस्कृत किया जाता है। यह कार्य चिकित्सा के रूप में कारगर सिद्ध हो रहा है।

इस चिकित्सा पद्धति में अपराधी और पीड़ित दोनों का उपचार किया जाता है। पीढ़ीगत, वफादारी, हिंसा, संरचना, सीमा और योजनाओं का ज्ञान कराया जाता है। व्यसनी असहाय उपेक्षित व्यक्तियों पर यह चिकित्सा अधिक कारगर सिद्ध होती है। भोजन वस्त्र इत्यादि आवश्यक वस्तु की पूर्ति कर देने से हिंसा और अशांति का अनुपात कम हो जाता है। सामुदायिक सेवा के अंतर्गत सहायता, प्रशिक्षण, चिकित्सा, सेवा इत्यादि क्रिया कलापों को लिया जाना चाहिए। पारिवारिक हिंसा और अशांति से बचने के लिए विश्वास जगाना चाहिए। सेवा के भाव जागृत करना चाहिए। भौतिक साधनें के साथ भावनात्मक स्तर बढ़ाना चाहिए।

गरीबी में नशे की आदत व्यक्ति को सामाजिक हीनता की ओर ले जाती है, भौतिक संसाधनें में कमी लाती है और मानसिक रोगी बनाती हैं। प्रेम देकर और प्रेम भाव जागृत कर परिवार को शांतिपूर्ण ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है। चिकित्सा हमेशा सहानुभूति पूर्वक करना चाहिए। सामाजिक विघटन, सामाजिक असमानता, ऊँच–नीच का भेद–भाव आक्रामक व्यवहार, हताशा और भ्रम आदि सामाजिक बीमारी का रूप ले रहा है। आक्रामकता दूर होने पर हिंसा कम होती है।

With that experience and self-observation, he learns and accepts the causes of violence and crime, considers himself responsible and resolves not to behave like this in future. He develops sensitivity and empathy towards others. He starts understanding his rights and those of others.

Group Therapy

When a person does good work, he is collectively honoured and praised. His ideas are exchanged. Seeing this, the criminal also thinks that he will also be honoured and praised in the same way, hence he starts developing virtues within himself. This is why those who do good work are collectively honoured and rewarded. This work is proving to be effective as a therapy.

In this medical system, both the culprit and the victim are treated. Knowledge of generation, loyalty, violence, structure, boundaries and plans is imparted. This treatment proves to be more effective on addicted, helpless and neglected persons. By providing essential commodities like food, clothing etc. the proportion of violence and unrest reduces. Activities like help, training, treatment, service etc. should be taken under community service. To avoid family violence and unrest, trust must be built. The feeling of service should be awakened. Emotional level should be increased along with material means.

In poverty, drug addiction leads a person to social inferiority, reduces material resources and makes him mentally ill. By giving love and awakening the feeling of love, the family can be controlled peacefully. Treatment should always be done with compassion. Social disintegration, social inequality, discrimination, aggressive behaviour, frustration and confusion etc. are taking the form of social diseases. When aggression goes away, violence reduces.

व्यक्ति जितना हताश होता है वह उतना ही आक्रामक हो जाता है। आक्रामकता, तनाव, क्रोध और हिंसा को जन्म देती है। हिंसा हो जाने पर व्यक्ति खेद करने लगता है।किसी के द्वारा कुछ कह देने पर पुनः उत्तेजित हो जाता है और आक्रामक हो कर पुनः हिंसा करने लगता है। जैसे बॉक्सर लोग करते हैं। व्यक्ति के विचार के अनुसार हिंसा होती है जैसे पत्नि से पति ने भोजन लाने को कहा और वह कुछ लेट हो गई तो उत्तेजित होकर मारपीट एवं हिंसा पर उतारू हो जाता है। वह सोचता है कि मुझे नजर अंदाज किया गया है, मेरी बात को ढंग से नहीं लिया गया है इसलिए वह क्रोधित होकर वाणी से मारने की धमकी देने लगता है और काय से हिंसक प्रतिक्रिया करने लगता है। इसलिए आध्यात्मिक विचारोंको उत्पन्न करके उत्तेजना, क्रोध, हिंसा और अशांति पर लगाम लगाई जा सकती है।

हिंसा और अशांति से बचने के लिए अपने आवश्यक कार्य में सदा संलग्न रहना चाहिए। शिक्षा के द्वारा जन–जन में अंतरंग चेतना को जागृत करना चाहिए। वह शिक्षा साधु–संतों, पंडितों, विद्वानों समाचार पत्रों मोबाइल टीवी आदि चैनलों के माध्यम से दी जा सकती है।

The more frustrated a person is, the more aggressive he becomes. Aggression gives rise to tension, anger and violence. When violence occurs, a person starts feeling regretful. When someone says something, he gets agitated again and becomes aggressive and starts committing violence again. Like boxer guys do. Violence happens according to the thoughts of the person, like when the husband asks the wife to bring food and she gets late, then he gets agitated and starts fighting and becomes violent. He thinks that he has been ignored, that his words have not been taken properly, so he gets angry and starts threatening to kill verbally and starts reacting violently through body. Therefore, by cultivating spiritual thoughts, excitement, anger, violence and unrest can be controlled.

To avoid violence and unrest, one should always remain engaged in one's important work. The inner consciousness of people should be awakened through education. That education can be given through channels like sages, saints, pundits, scholars, newspapers, mobile TV etc.

जैन धर्म में पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण में जीव–जंतुओ और वनस्पतियों की विजातियां जल, वायु, मिट्टी, पत्थर, नदी, समुद्र, पर्वत एवं सौरमंडल की ऊर्जा आदि को सम्मिलित किया जाता है। मनुष्यों का पर्यावरण से घनिष्ठ संबंध है। मनुष्यों ने संपूर्ण प्रकृति का असीम दोहन किया है। प्राकृतिक संसाधनें पर अपना एकाधिकार जमा कर रखा है, परिणाम स्वरूप पर्यावरण के अस्तित्व पर ही खतरा मंडराने लगा है।

वास्तव में मनुष्य पर्यावरण के संरक्षण के लिए चिंतित नहीं है लेकिन जब तक पर्यावरण संरक्षण के लिए चिंतित नहीं होगा तब तक जीवन निश्चिन्त नहीं होगा। भूमंडलीय पर्यावरण प्रदूषण की समस्या औद्योगिकीकरण के कारण उत्पन्न हुई है।

मुनष्य हमेशा भोग विलास का जीवन जीना चाहता है और उसकी पूर्ति के लिये वह पर्यावरण के घटकों जैसे वन्य जीव जंतु, वनस्पतियों एवं नदी, समुद्र आदि के संरक्षण में सदा उपेक्षित रहा है। लेकिन ध्यान रखा कि हमारी धरती सदैव से ही प्रकृति पर आश्रित रही है। यदि प्रकृति ही हमारे साथ नही रही तो धरती (पृथ्वी) का अस्तित्व ही नही रहेगा। इसलिये हमे प्राकृतिक स्त्रोतों यथा वन, झील, नदी, पर्वतों और वन्य जीवों, की रक्षा करनी होगी। इनके संरक्षण के लिये हमे अत्यधिक प्रयास करने होगें। यदि इनका अस्तित्व नहीं रहेगा तो मानव का भी अस्तिस्व नहीं बच सकता है। प्रकृति से छेड़छाड़ हमारे जीवन से मौत के साथ खेलने के समान है।

सम्पूर्ण राष्ट्र को सम्पति हमारी धरोहर है। हम सभी इसके संरक्षक है। यह भावना प्रत्येक नागरिक में पैदा करना आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण हेतु हुए विश्व सम्मेलन

मनुष्यकृत औद्योगिक विकास के कारण पर्यावरण के संरक्षण की बड़ी समस्या पैदा हुई है इसलिये सभी देशों ने मिलकर इस समस्या को सुलझाने के लिये वार्ता प्रारंभ कर दी है।

सन् 2010 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने जीव जंतुओं के विलुप्त होती जातियों के संरक्षण हेतु अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता वर्ष के रूप में मनाया।

Environment Protection in Jainism

The environment includes species of animals and plants, water, air, soil, stones, rivers, seas, mountains and energy of the solar system etc. Humans have a close relationship with the environment. Humans have exploited the entire nature infinitely. They have monopolised natural resources, as a result the very existence of the environment is in danger.

In reality, man is not concerned about the protection of the environment, but unless he is concerned about the protection of the environment, life will not be carefree. The problem of global environmental pollution has arisen due to industrialization.

Man always wants to live a life of luxury and to fulfill it, he has always neglected the conservation of environmental components like wild animals, plants, rivers, seas etc. But keep in mind that our earth has always been dependent on nature. If nature is not with us then the earth will cease to exist. Therefore, we have to protect natural resources like forests, lakes, rivers, mountains and wild animals. We will have to make tremendous efforts to conserve them. If they cease to exist then human existence also cannot survive. Tampering with nature is like playing with death in our lives.

The wealth of the entire nation is our heritage. We are all its guardians. It is necessary to create this feeling in every citizen.

World Conference on Environment Protection

Due to man-made industrial development, a big problem of environmental protection has arisen, hence all the countries have started talks together to solve this problem.

In 2010, the United Nations celebrated the International Year of Biodiversity for the conservation of endangered species of animals.

डेनमार्क के कोपेनहेगन नामक शहर में दिसंबर 2009 में विश्व के 199 देशों ने मिलकर अनियमित जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर गहन चितंन, मनन एवं मंथन किया।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने भूमंडलीय तपन (ग्लोबल वार्मिंग) को नियन्त्रित करने के लिए कार्बन क्रेडिट योजना प्रारंभ की।

जापान के क्योटो में वर्ल्ड अर्थ समिट नाम से एक आयोजन किया गया जिसमें क्योटो प्रोटोकाल नाम से एक प्रस्ताव पारित किया गया, उसमें यह तय किया गया कि विश्व की कौन सी औद्योगिक इकाई आधुनिक तकनीकी के द्वारा ग्रीन हाऊस गैस एवं कार्बन के उत्सर्जन को कम कर सकती है या कम कर रही है। इन सभी आयोजनों से स्पष्ट होता है कि पर्यावरण एवं जैव संरक्षण के लिये अंतराष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता आयी है, इन समस्याओं के लिये जिम्मेदार कोई व्यक्ति न होकर संपूर्ण मानव समाज है। इनका समाधान भी संपूर्ण मानव समाज को करना होगा क्योंकि ये समस्यायें सिर्फ मानव ने उत्पन्न की है और किसी ने नहीं।

जैन धर्म में पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांत

जैन धर्म में जीव–जंतु, हवा, पानी, मिट्टी और वनस्पति आदि पर्यावरण संरक्षण के संबंध में आचार्यों ने अनेक सिद्धांत सूत्र प्रतिपादित किये है। जैन धर्म हमेशा तर्क संगत अनुभव की कसौटी पर कसे हुये वैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करता रहा है। जैन धर्म कभी अंधविश्वास और लोक मूढ़ताओं को लेकर नहीं चला। जैन धर्म हमेशा मानव समाज और प्रत्येक प्राणी के सुख शांति हेतु परस्परो ग्रहो जीवानाम, अहिंसा परमो धर्मः, वस्तु स्वभावो धम्मो, जियो और जीने दो के सिद्धांत को प्रतिपादित करता रहा है और इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर सभी को अपना अपना अधिकार दो, किसी के अधिकारों और प्राणों को मत छीनो, भगवान या भाग्य भरोसे मत बैठो, अपना कर्म करो और फल पाओ के सिद्धांतों का प्रतिपादन करता रहा है, इसलिये जैन धर्म एक विशुद्ध वैज्ञानिक धर्म है। इसी कारण जैन धर्म का दूसरा नाम वीतराग विज्ञान भी है। जैन धर्म में प्रतिपादित सिद्धांत सर्वकालिक, सार्वभौमिक सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के रूप में इस प्रकार स्वयं सिद्ध है।

In December 2009, in the city of Copenhagen, Denmark, 199 countries of the world came together to deeply think, meditate and brainstorm on the issue of irregular climate change.

The United Nations started a carbon credit scheme to control global warming.

An event named World Earth Summit was organized in Kyoto, Japan, in which a resolution named Kyoto Protocol was passed, in which it was decided which industrial units of the world would be able to reduce greenhouse gas and carbon emissions through modern technology,can, or are reducing. It is clear from all these events that awareness has come at the international level for environment and bio-conservation, it is not any individual but the entire human society that is responsible for these problems. These problems will have to be solved by the entire human society because these problems have been created only by humans and no one else.

Principles of Environment Protection in Jainism

In Jainism, Acharyas have propounded many principles regarding environmental protection of animals, air, water, soil and vegetation etc. Jainism has always been propounding scientific principles tested on the basis of logical experience. Jainism never followed superstition and folk foolishness. Jainism has always been propounding the principles of:

"Samprato Graho Jeevanaam",
"Ahimsa Paramo Dharmah",
"Vastu Swabhavo Dhammo",
"Live and Let Live"

for the happiness and peace of human society and every living being and on the basis of these principles, give everyone his own rights, do not take away anyone's rights and life. It has been propounding the principles of do not snatch away rights and life, do not rely on God or fate, do your work and get results, hence Jainism is a purely scientific religion. For this reason, another name of Jainism is Vitarag Vigyan. The principles propounded in Jainism are self-evident as eternal, universal, for the welfare of all, and for the happiness of all.

1. अहिंसा का सिद्धांत :- जैन धर्म के मूल सिद्धांतों में अहिंसा को केन्द्र में रखा गया है अर्थात् अहिंसा जैन धर्म की धुरी है उसी पर संपूर्ण धर्म चक्र चलता है। अहिंसा धर्म आकाश के समान अनंत है जो प्राणी मात्र को स्वीकार है और इसी से विश्व शांति संभव है।

जैन धर्म में द्रव्य और भाव अहिंसा के रूप में अहिंसा को दो प्रकार से स्वीकार किया गया है। द्रव्य अहिंसा को व्यवहार अहिंसा भी कहा गया है, किसी प्राणी को मन, वचन, काय से कष्ट नहीं पहुँचाना, प्रकृति के किसी भी तत्व का घात नहीं करना, व्यवहार या द्रव्य अहिंसा है। इस सिद्धांत से प्रत्येक जीव एक –दूसरे से जुड़ता चला जाता है और एक अच्छी समाज का निर्माण होता चला जाता है। अपने चित्त में किसी के प्रति राग द्वेष, अहित और विनाश आदि विकार भावना नहीं होना भाव अहिंसा है जब मनुष्य के चित्त की प्रदूषित प्रवृत्तियां अर्थात् मानसिक प्रदूषण का परिहार हो जाता है तब जीव–जंतु और पर्यावरण का संरक्षण स्वतरू हो जाता है। इस प्रकार जैन धर्म के अहिंसा सिद्धांत के द्वारा सभी मानसिक कुप्रवृत्तियों और कायिक कुकर्मों को रोककर पर्यावरण और जीव संरक्षण किया जा सकता है। यह सिद्धांत भगवान महावीर स्वामी आदि तीर्थंकरो ने दिया। उन्होंने बतलाया कि प्राणी रक्षा हमारा कर्त्तव्य है, धर्म है, सुख शांति का मार्ग है। दया और परोपकार करने से ही प्राणी रक्षा संभव है। इसी सिद्धांत से एक सुसंस्कारित समाज भी स्थापित हो जाती है।

जैन धर्मानुसार पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति ये पांचों भी जीव है इन्हें स्थावर या एकेन्द्रिय जीव की संज्ञा दी गई है। शेष दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय एवं पंचेन्द्रिय जीवों को त्रस जीव की संज्ञा दी गई है। ये सभी जीव पर्यावरण के घटक है। तथा मानव समाज के संरक्षण और संबंध में सहयोगी है।

जिन जीवों में मात्र एक स्पर्शन इन्द्रिय पाई जाती है वे एकेन्द्रिय जीव कहलाते है, वे स्पर्शन इन्द्रिय से ही भोजन पानी अवशोषित कर जीवित रहते है। जिन में स्पर्शन एवं रसना (जीभ) इन्द्रिय पाई जाती है वे दो इन्द्रिय जीव कहलाते हैं। इसी प्रकार जिन में स्पर्शन रसना, एवं घ्राण इन्द्रिय पाई जाय वे तीन इन्द्रिय जीव है। जिन में तीन के बाद चौथी चक्षु (आँख) इन्द्रिय पाई जाय वे चार इन्द्रिय जीव हैं एवं जिन में चार इन्द्रिय के बाद पांचवी कर्ण इन्द्रिय भी पाई जाय वे पंचेन्द्रिय जीव हैं।

1. Principle of Non-Violence

Non-violence is one of the basic principles of Jainism. It is kept in the center *i.e*. non-violence is the axis of Jainism and the entire religious cycle runs on it. The religion of nonviolence is as infinite as the sky, which is acceptable to all living beings and through this world peace is possible.

In Jainism, non-violence has been accepted in two ways: material and emotional non-violence. Material non-violence has also been called behavioural non-violence, not causing pain to any living being through thought, word or body, not killing any element of nature, is behavioural or material non-violence. With this principle, every living being gets connected to each other and a good society is formed. Not having in one's mind feelings of attachment, hatred, harm or destruction etc. towards anyone is the feeling of non-violence. When the polluted tendencies of the human mind *i.e*. mental pollution are avoided then the protection of living beings and the environment becomes automatic. Thus, through the non-violence principle of Jainism, environment and living beings can be conserved by stopping all mental tendencies and physical misdeeds. This principle was given by Lord Mahavir Swami and other Tirthankaras. He told that protecting animals is our duty, our religion, the path to happiness and peace. Protection of animals is possible only through kindness and charity. By this principle a well-cultured society is also established.

According to Jainism, earth, water, fire, air, vegetation, all these five are living beings and they have been termed as stable or unicentric living beings. The remaining two-sense, three-sense, four-sense and five-sense creatures have been termed as 'Trasa creatures'. All these organisms are components of the environment. And are helpful in the protection and relationship of human society.

The organisms which have only one sense of touch are called unisensory organisms; they survive by absorbing food and water through the sense of touch only. Those which have the sense of touch and taste (tongue) are called two sense creatures. Similarly, those in which touch, taste and smell are found are three sense creatures. The four sense creatures have *i.e* sight & seeing (eye) sense besides touch,taste & smell. Those in whom all the five senses *i.e*. touch,taste,smell, eye and hearing (ears) are five-sensory creatures.

संपूर्ण पर्यावरण मंडल में 84 लाख योनियों एवं 199½ लाख कुल कोटी होते है। जीवों की उत्पत्ति के स्थान को योनि कहते है। अथवा माता के पक्ष को योनि कहते है। पिता के पक्ष को कुल कहते हैं। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो अलग–अलग जैनेटिक कोडिंग को कुल कहते हैं। मानवीय क्रियाकलापों के कारण उनके कुल एवं जाति स्थान नष्ट हो जाता है। उनके नष्ट होनेसे हमारे चारों ओर का पर्यावरण नष्ट हो जता है। अथवा विकृति उत्पन्न हो जाती है। इसीलिए मानव को ऐसे क्रिया कलाप नहीं करना चाहिए जिससे जीवों की कुल एवं जातियाँ नष्ट हो।

जैन धर्मानुसार प्रत्येक जीव की स्वतंत्र सत्ता है, स्वतंत्र अस्तित्व है, परस्पर में एक जीव दूसरे जीव का उपकारी है, प्रत्येक जीव अपने स्वयं का कर्ता धर्ता है। जीव को किसी भगवान ने नहीं बनाया है बल्कि उसका अस्तित्व स्वयं की शक्ति से स्वाभाविक है। लेकिन मोह, तृष्णा और इन्द्रिय सुख के कारण यह जीव दूसरे जीव के ऊपर अपकार भी करता है उन्हें घात पहुँचाता है। मानव को छोड़ कर देखे तो स्वभाव से प्रत्येक जीव पर्यावरण का संरक्षक है क्योंकि वे सभी प्राकृतिक जीवन जीते हैं।

२. अनर्थ दंड त्याग व्रत– अनर्थ दंड का अर्थ है निष्प्रयोजन कार्य को करना। इस व्रत के माध्यम से घर में रहने वाले श्रावकों के लिये यह संदेश दिया गया है कि जीवनोपयोगी भोग और उपभोग की वस्तुओं का उतना ही संग्रह एवं उपयोग करें जितने की आवश्यक है अनवश्यक वस्तुओं से बचे। यदि अनावश्यक संसाधन का उपयोग करते है तो पाप का अर्जन होता है।

प्राकृतिक संसाधनों का उतना ही दोहन करे जितना कि पुनरूत्पादन हो सके अतः इस व्रत से प्राकृतिक साधनों का सीमित दोहन होने से पर्यावरण की रक्षा सहज ही हो जाती है और इस व्रत से समाज का विकास होता है और सुख शांति से जीवन निर्वाह होता है।

There are 84 lakh (8.4 million) species and 199½ lakh total kotis in the entire environment. The place of origin of living beings is called vagina. Or the mother's side is called vagina. Father's side is called clan. If seen from a modern perspective, different genetic coding is called a family. Due to human activities their clan and caste places are destroyed. Their destruction destroys the environment around us. Or distortion occurs. That is why humans should not do such activities which destroy the families and species of living beings.

According to Jainism, every living being has an independent living, an independent existence, one living being is helpful to another living being, each living being is its own doer. The living being was not created by any God but its existence is natural due to its own power. But due to attachment, craving and sensual pleasures, this living being also does harm to other living beings and kills them. Except humans, every living being by nature is a protector of the environment because they all live a natural life.

2. Anartha Danda Tyaga Vrat ANARTHDANDA TYAG VRAT - Anartha Dan means doing useless work. Through this virtue, a message has been given to the devotees living at home that they should collect and use only as much of the things useful for life and consumption as are necessary and avoid unnecessary things. If unnecessary resources are used then sin is committed.

Natural resources should be exploited only to the extent that they can be reproduced, hence by this virtue, the environment gets protected easily due to limited exploitation of natural resources and by this virtue, the society gets developed and life is lived in peace and happiness.

अनर्थ दंड में प्रमाद चर्या अर्थात व्यर्थ में पानी बहाना, लाइट, पंखा आदि चलाना, बिजली जलाना, पृथ्वी का खनन करना वृक्ष आदि उखाड़ना, अनवश्यक मोबाईल, टी.वी., मोटर गाड़ी आदि चलाने रूप क्रियाओं को लिया गया है। इस अनर्थ दंड में हिंसा के उपकरण के आदान प्रदान का भी निषेध किया गया है इसे हिंसोपकरण दान कहा है अर्थात हिंसा के उपकरण तलवार, बदूंक, तोप, बम आदि हिंसक उपकरणों को देने लेने और बेचने के कार्य को लिया गया है उपरोक्त सभी क्रियाओं के त्याग करने को अनर्थदंड व्रत कहा है। इनके निषेध हो जाने पर स्वतः ही पर्यावरण की रक्षा हो जाती है और अहिंसक र्निभीक समाज और राष्ट्र का निर्माण हो जाता है और विश्व में हो रही अशांति को भी विराम लग जाता है।

परिग्रह प्रमाण व्रत का सिद्धांत- असीम इच्छाओं को सीमित करना और बाह्य वस्तुओं का आवश्यकतानुसार प्रमाण बन लेना परिग्रह प्रमाण व्रत कहलाता है। इस व्रत से अतिभोगवादी प्रवृत्ति सीमित हो जाती है। देश–विदेश में फैल रही ईर्ष्या, द्वेष, नफरत भी कम हो जाती है। प्रकृति का दोहन भी कम होने लगता है प्रकृति के अति दोहन से पर्यावरण के संरक्षण पर जो खतरा मंडरा रहा है वह परिग्रह प्रमाण व्रत से दूर हो जाता है। अति भोगवादी प्रवृत्ति एवं संग्रह वृत्ति समाज में वैमनस्यता पैदा करती है। वैमनस्यता पैदा होने से आपसी लड़ाई झगड़े और खून खराबे वाली घटनायें होती है। उससे निपटने के लिए शासन और प्रशासन की आवश्यकता होती है इसलिये जैन धर्म के इस परिग्रह परिमाण व्रत के सिद्धांत से समाज में सुख, शांति, समृद्धि व आपसी सामंजस्य बन रहता है, इस परिग्रह परिमाण व्रत को चुनाव आयोग ने स्वीकार किया और चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशी को धन खर्च करने का एक निश्चित प्रमाण दिया, जिससे लाखों करोड़ों रूपयों की फिजूल खर्ची रूक गयी है इसी प्रकार वाहन, भवन और अन्य वस्तुओं की सीमा भी सरकार को निर्धारित करना चाहिए तभी सामाजिक और पर्यावरण संतुलन बनाया जा सकता है।

In the penalty of disaster, the actions like careless behaviour i.e. wasting water, turning on lights, fans etc., lighting electricity, mining the earth, uprooting trees etc., driving unnecessarily, mobile, TV, motor vehicle etc. are taken. In this punishment, exchange of instruments of violence has also been prohibited. This is called 'Hinsopkaran Daan' *i.e.* the act of giving and selling of instruments of violence like sword, gun, cannon, bomb etc. has been included in the list of all the above mentioned activities. Renunciation is called Anarthadanda Vrat. When these are banned, the environment is automatically protected and a non-violent, fearless society and nation is created and the unrest in the world also comes to an end.

PRINCIPLES OF PARIGRAH PRAMAN VRAT – Limiting unlimited desires and becoming proof of external things as per need is called Parigrah Praman Vrat. This Vitue limits the indulgent tendencies. The jealousy, malice and hatred spreading in the country and abroad also reduces. The exploitation of nature also starts to reduce. The threat that is looming over the conservation of the environment due to over-exploitation of nature is removed by observing the vrat of Parigraha Pramana. Excessive indulgent tendencies and collecting instincts create disharmony in the society. Due to animosity, mutual fights and bloodshed occur. To deal with it, there is a need for governance and administration, hence the principle of this Parigraha Vamanta Vrat of Jainism creates happiness, peace, prosperity and mutual harmony in the society, this Parigraha Vamanta Vrat was accepted by the Election Commission and those contesting the elections. The candidate was given a definite proof of spending the money, which has stopped the wasteful expenditure of lakhs of crores of rupees. Similarly, the government should also set limits on vehicles, buildings and other items, only then social and environmental balance can be created.

खर कर्म निषेध सिद्धांत- जैन धर्म में हुये प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ देव ने सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए तीन वर्णों की स्थापना की और आजीविका चलाने हेतु असि, मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या इन षट कर्मों के करने की शिक्षा दी, लेकिन खर कर्म अर्थात हिंसक व्यवसाय का निषेध किया। हिंसक व्यवसाय में जैसे मछली पालन, मुर्गीपालन कत्लखाने, मांस निर्यात, चर्म व्यवसाय, शराब जहर, कोयला बारूद, कीट नशक एवं पर्यावरण को नष्ट करने वाले उद्योग जिनसे वायु, जल और वनस्पति प्रदूषित होते है ऐसे कारखानें का निषेध किया है। इस खर कर्म के निषेध से समाज में हिंसक और क्रूर प्रवृत्ति रूक जाती है और पर्यावरण की रक्षा होती है।

रात्रि भोजन निषेध सिद्धांत- जैन धर्मानुसार दिन में भोजन एवं दैनिक क्रिया कलाप करने का विधान है, इस सिद्धांतानुसार स्वास्थ्य, पर्यावरण और अहिंसा धर्म का संरक्षण होता है कोई भी मानव २४ घंटे काम नहीं कर सकता मानव के लिये २४ घंटे में ८ घंटे सोने के लिए और ४ घंटे अपने दैनिक क्रिया कलाप के लिए जरूरी है। यदि प्रत्येक कार्य दिन में किया जाता है तो विद्युत ऊर्जा से बचा जा सकता है, विद्युत ऊर्जा से होने वाली हिंसा और रात्रि में होने वाले अपराधों से भी बचा जा सकता है। रात्रि भोज निषेध के सिद्धांत से परिवार में एक–दूसरे से विचारो का आदान–प्रदान और प्रेम वात्सल्य करने का समय मिल जाता है, जिससे अच्छे परिवार और अच्छे समाज का निर्माण होता है। जैव और पर्यावरण संरक्षण स्वतः हो जाता है।

जल गालन सिद्धांत- जल प्रदूषण की बढ़ती हुई खतरनाक स्थिति से सभी जीव जन्तुओं पर खतरा मंडरा रहा है। इन सब से बचने के लिए जैन धर्म का सिद्धांत है। पानी छानकर प्रयोग में लाना, नाले में नहीं बहाना, छानने के बाद छन्ने के ऊपर बचें हुए छनित जीवों को उसी स्थान तक पहुँचाना जहाँ से जल लाया गया है। यदि दूसरे स्थान पर उन छनित जीवाणुओं को ले जाकर डालते है तो वे मर जाते हैं। क्योंकि प्रत्येक जल की रासायनिक गुणवत्ता अलग–अलग होती हैं। अतः सिद्ध है कि जल प्रदूषण और व्यर्थ में बहाये जा रहे जल को बचाने का सिद्धान्त जैन दर्शन का आज के युग में महत्वपूर्ण है।

PRINCIPLE OF PROHIBITION OF HARMFUL KARMA – Lord, the first Tirthankar in Jainism Rishabh Dev established three varnas to maintain social order and taught to perform the six tasks of Asi, Masi, Agriculture, Craft, Commerce and Vidya for earning livelihood, but prohibited Khar Karma *i.e.* violent occupation. In violent business like fish farming, poultry slaughter house, meat export, leather business, liquor poison, coal.

Industries like gunpowder, pesticides and environment destroying industries which pollute air, water and vegetation have been banned. By prohibiting this evil action, violent and cruel tendencies in the society are stopped and the environment is protected.

PRINCIPLE OF PROHIBITION OF EATING AFTER SUNSET - According to Jainism, there is a rule to have food and daily activities during the day, according to this principle, health, environment and non-violence religion are protected. No human can work for 24 hours. For humans, it is necessary to sleep for 8 hours every 24 hours. Another 4 hours are required for daily activities. If every work is done during the day then electrical energy can be avoided, violence caused by electrical energy and crimes occurring at night can also be avoided. The principle of prohibiting dinner provides time to the family to exchange thoughts and love each other, which leads to the creation of a good family and a good society. Biological and environmental protection happens automatically.

Water Melting (GAALAN) Theory – Due to the increasing dangerous situation of water pollution, all living beings are in danger. There is a principle of Jainism to avoid all this. To use the water after filtering it, not to pour it into the drain, after filtering, to transport the filtered organisms remaining on top of the filter to the same place from where the water has been brought. If those filtered bacteria are taken to another place and put there, they die. Because the chemical quality of each water is different. Hence, it is proved that the principle of Jain philosophy of saving water pollution and wasted water is important in today's era.

इसी प्रकार नदियों और सरोवरो में कॉस्टिक सोडा–साबुन आदि लगाकर वस्त्र धोने और स्नान करने का निषेध है। इस सिद्धान्त से भी नदियों की पवित्रता बनी रहती है। जो भविष्य के लिए सुखद है।

दिगम्बर साधु और प्रकृति संरक्षण- दिगम्बर जैन मुनि पूर्णतः प्राकृतिक जीवन जीते है। इसके पीछे आत्म साधन और प्राणी संयम के सिद्धांत छुपे हुए है। इस प्रकृति में जीने वाले सूक्ष्म और स्थूल जीवों की रक्षा हेतु मुनिराज मयूर पंख की पिछिका और शुद्ध पानी रखने हेतु अपने साथ एक कमंडल रखते है।

जैन मुनि उस स्थान पर मलमूत्र भी नहीं करते जहाँ हरी घास, कीचड़, काई और चींटी आदि जीव जन्तु हो। कमण्डलों में पानी उबला हुआ रखते है और नदी तालाबों का पानी बिना छना और बिना उबला उपयोग में नहीं लाते। वे दिगम्बर मुनि ऐसा इसलिए करते है कि वस्त्र धोने में जल, साबुन आदि खर्च होता है। वस्त्र बनने में कपास आदि की खेती करना पड़ती है। उन सब में हिंसा आरंभ होता है और पर्यावरण पर इसका असर जरूर पड़ता है। इसका दूसरा कारण यह भी है कि बिना दिगम्बरत्व के कभी किसी भी आदमी को मोक्ष नहीं मिलता। वैदिक संस्कृति के अनुसार समस्त जीव ब्रह्मा के अंश है। यहाँ हम तर्क करें कि एक वट वृक्ष के अंश को तोड़कर लगाया जाये तो वह वट वृक्ष जैसा ही होता है। इसी प्रकार हम ब्रह्मा के अंश है तो ब्रह्मा हमारे जैसा ही होगा। जब बालक जन्म लेता है तो सहज, सरल, निश्छल, निष्कपट, वासना रहित, नग्न दिगम्बर, मोह माया से रहित होता है। इसका मतलब ब्रह्मा भी मोहमाया, छल–कपट आदि से रहित दिगम्बर ही होगा। जब बालक बड़ा होता है तो सामाजिक व्यवस्थाओं और विकारों को ढ़कने हेतु वह वस्त्र धारण करता है। लेकिन जब मरण हो जाता है तब लोग पुराने चादर वस्त्र न डाल कर नया वस्त्र कफन के रूप में डालते हैं और उसे अर्थी पर बांधकर मरघट ले जाते है। वहाँ उसका कफन थोड़ा हटा दिया जाता है और सारे बंधन खोल दिये जाते है। यह सब जैन धर्म के दिगम्बरत्व से मुक्ति रूपी सिद्धांत का प्रतीक है। दाह संस्कार के पूर्व यह क्रिया इस बात की प्रतीक है कि मैंने तुम्हें बंधन मुक्त कर दिया, वस्त्र हटा दिये जैसा तुझे ब्रह्मा ने भेजा था वैसा ही तुझे बन दिया।

Similarly, there is a prohibition on washing clothes and bathing in rivers and lakes using caustic soda, soap etc. This principle also maintains the purity of the rivers. Which is pleasant for the future.

DIGAMBER MONKS & NATURE CONSERVATION - Digambara Jain monks live a completely natural life. Behind this are hidden the principles of self-restraint and living being restraint. For protection of micro and macro organisms living in this nature Muniraj keep a kamandal for pure water and with a feather of peacock feather.

Jain monks do not even excrete urine in those places where there are green grass, mud, moss and animals like ants etc. Water is kept boiled in kamandalas and water from river ponds is not used without filtering and boiling. Those Digambara sages do this because water, soap etc. are spent in washing clothes. To make clothes, cotton etc. has to be cultivated. Violence starts in all of them and it definitely has an impact on the environment. Another reason for this is that without Digambara (living without wearing clothes), no person ever attains salvation. According to Vedic culture, all living beings are parts of Brahma. Here let us argue that if a part of a banyan tree is broken and planted then it will be similar to the banyan tree itself. Similarly, if we are part of Brahma then Brahma will be like us. When a child is born, he is simple, innocent, innocent, lust-free, naked and free from attachment and illusion. This means that Brahma will also be a Digambara free from illusion, deceit etc. When the child grows up, he wears clothes to cover up the social rules and disorders. But when death occurs, people do not wear old bedsheets and instead wear new clothes as a shroud and tie it on the bier and take it to the funeral pyre. There his shroud is removed a little and all the bonds are untied. All this symbolizes the principle of freedom from Digambaraism of Jainism. This action before cremation symbolizes that I have freed you from bondage, removed your clothes and made you exactly as Brahma had sent you.

अब तुझे मुक्ति मिल जायेगी। अब तू उस ब्रह्मा के अंश में समा जायेगा। यही नये कफन डालने का और उतारने का उद्देश्य है अन्यथा किसी पुराने कपड़े को डालकर उसे ले जा सकते थे। नये दो हजार रूपये के कफन की व्यर्थ में क्या जरूरत थी। यदि आज भारत देश में प्रतिदिन चालीस हजार लोग मरते है और एक कफन 2000 का आता है तो एक दिन में आठ करोड़ रूपये के कफन व्यर्थ में जाते है।

लेकिन इसे व्यर्थ का नहीं मानते। अतः इस सिद्धांत के पीछे दिगम्बरत्व से ही मुक्ति मिलती है, यह सिद्ध होता है। इसी प्रकार इस्लाम एवं इसाई धर्म में भी जनाजा उठने के पूर्व स्नान कराकर नये वस्त्र पहनाकर नया कफन डाला जाता है। इन सब के पीछे वही दिगम्बरत्व से मोक्ष का सिद्धांत छुपा हुआ है। इसी के साथ इस्लाम में देखा जाता है कि वे लुंगी की गांठ नहीं लगाते हैं। गाँठ नहीं लगाना निर्ग्रंथपने का प्रतीक है अर्थात् वे निर्ग्रंथ रहना चाहते हैं। जैन दर्शन में दिगम्बर को निर्ग्रंथ कहते है। निर्ग्रंथ अवस्था से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। कफन डालकर हटाने के इस सिद्धांत पर भगवान आदिनाथ, महावीर स्वामी आदि तीर्थंकरों ने कहा कि मुर्दे के वस्त्र उतारने से मोक्ष नहीं मिलेगा बल्कि जिंदा में ही शरीर को मुर्दा मान लिया जाये और अंदर बैठी आत्मा की आराधना की जाये तो आत्मा ही परमात्मा बन जाती है। शव के ऊपर कफन रूपी वस्त्र डालकर हटाने से शिवपद की प्राप्ति नहीं हो सकती है क्योंकि अंदर बैठा शिव तो पहले ही निकल जाता है। इसलिये जैन धर्म का दिगम्बरत्व रूपी सिद्धांत अहिंसा की रक्षा और मुक्ति का कारण है। इसी के साथ पर्यावरण संरक्षण, समाज में संवेग, वैराग्य, समानता, एकता और अपनत्व का सिद्धांत भी प्रतिफलित होता है।

जैन मुनि पांच समितियों का भी पालन करते हैं। ये समितियाँ आत्म साधना में कारण तो है ही इसी के साथ पर्यावरण सुधार में सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाये में भी कारण है।

1. भाषा समितिः इस समिति में हित मित प्रिय वचन बोलना होता है जब व्यक्ति कम बोलता है, धीरे बोलता है, मीठा बोलता है और हितकारी बोलता है तो सभी को अच्छा लगता है। देश, समाज और परिवार में शांति का वातावरण बनता है। प्रेम वात्सल्य और सेवा की भावना पैदा होती है। इससे ध्वनि प्रदूषण उत्पन्न नहीं होता और सामाजिक वातावरण भी नहीं बिगड़ता इसलिए भाषा समिति सर्वजन हिताय सर्व जन सुखाय और प्रकृति का संरक्षण प्रकटाय वाला सिद्धांत है।

Now you will get freedom. Now you will merge into a part of that Brahma. This is the purpose of putting on and taking off the new shroud, otherwise one could have put on an old cloth and taken it away. What was the need for a new shroud worth two thousand rupees? If today forty thousand people die every day in India and a shroud costs Rs 2000, then in a day shrouds worth eight crore rupees go waste. But it's not in vain Therefore, this theory proves that salvation is achieved only through Digambaraism. Similarly, in Islam and Christianity also, before the funeral procession, a bath is taken, new clothes are worn and a new shroud is put on. Behind all this lies the same principle of salvation from Digambaratva. Along with this, it is seen in Islam that they do not tie the knot of the lungi. Not tying a knot is a symbol of being free from marriage, that is, they want to remain free from marriage. In Jain philosophy, Digambara is called Nigranth. Salvation is attained only from the state of Nigrantha. On this principle of removing the shroud after putting on it, Tirthankaras like Lord Adinath, Mahavir Swami etc. said that one will not get salvation by taking off the clothes of the dead person, but if the body is considered dead while it is still alive and the soul sitting inside is worshipped, then the soul itself becomes God. . By putting a shroud like cloth on the dead body and removing it, one cannot attain the status of Shiva because the Shiva sitting inside has already gone out. Therefore, the principle of Digambara in Jainism is the reason for the protection and liberation of non-violence. Along with this, the principle of environmental protection, passion in society, detachment, equality, unity and belongingness also results.

Jain monks also follow five committees. These committees are not only important for self-cultivation, but they are also important for environmental improvement, for the welfare of all people and for the welfare of all people.

1. Language Committee: In this committee, one has to speak pleasant words keeping the interest in mind. When a person speaks less, speaks slowly, speaks sweetly and speaks beneficially, then everyone likes it. An atmosphere of peace is created in the country, society and family. A feeling of love, affection and service is created. It does not cause noise pollution and does not spoil the social environment, hence the principle of Bhasha Samiti is the welfare of all people, the happiness of all people and the protection of nature.

2. ऐषणा समितिः इस समिति में बताया जाता है कि भोजन कब, क्यों, कितना, कैसे और कहाँ करना। यदि इन पाँच बातों का ध्यान रखा जाये तो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य कभी बिगड़ नहीं सकता। वर्तमान में पर्यावरण की तरह स्वास्थ्य की भी एक विकराल समस्या बनी हुई है। आज के लोग यूरिन, स्टूल और ब्लड टेस्ट पैथालॉजी लैब में कराते है लेकिन दिनभर क्या खाते है इस पर ध्यान नहीं देते है। यदि भोजन का लेव में टेस्ट करा लिया जाये और डाइट पर ध्यान दिया जाये तो पैथालॉजी लैब में व्यक्ति को कोई टेस्ट कराने की जरूरत ही न पड़े और न बड़े–बड़े वैद्यों, अस्पतालों और दवाई की फैक्ट्रीयों की जरुरत पड़ेगी। जब लोग स्वस्थ रहेगें तो अच्छी समाज होगी। धन–धान्य की वृद्धि होगी देश में समृद्धि होगी। अतः ऐषणा समिति के पालन से देश में समृद्धि होगी। पर्यावरण संरक्षण, समृद्ध देश और अच्छी समाज होगी।

3. ईर्या समितिः इसका अर्थ है दिन में सूर्य प्रकाश की उपस्थिति होनेपर यातायात के नियम के अनुसार आगे पीछे का ध्यान रखते हुये अपनी दृष्टि लगभग चार हाथ दूर रखकर जीव–जन्तुओं को बचाकर चलना ईर्या समिति कहलाती है। यदि हम दिन में आवागमन करते है और रात में एक स्थान पर रहते है तो लूट–पाट एवं एक्सीडेन्ट आदि की दुर्घटनाएँ कम होगी और विद्युत ऊर्जा पेट्रोल, डीजल आदि की बचत होगी, वायुमंडलीय ओजोन परत को हानि नहीं पहुँचेगी। गाड़ियों से उठने वाले धुओं से प्रदूषण नहीं फैलेगा। आर्थिक हानि कम होगी, व्यक्तियों को पर्याप्त समय, आराम और परिवार में प्रेम वात्सल्य और अपनत्व के लिए मिलेगा। व्यक्ति स्वस्थ और शांत रहेगा। भाग दौड़ कम होनेसे तनाव कम होगा इत्यादि अनेक समस्याओं का समाधान इस ईर्या समीति के पालन से सहज हो जाता है।

4. प्रतिष्ठापन समितिः इसका अर्थ है कि मलमूत्र आदि वहाँ विसर्जित किया जाये जहाँ आबादी न हो, हरी घास, काई, कीचड़ आदि न हो। जहाँ मल विसर्जित किया जाये वह स्थान गूढ़ अर्थात् ढ़का हुआ हो वहाँ आमने सामने कोई आदमी न दिखता हो। मल विसर्जित के बाद वह मिट्टी–राख आदि से अच्छादित कर दिया हो। इस सिद्धांत से स्वच्छता अभियान चलाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती क्योंकि स्वच्छता सहज ही बनी रहेगी। प्रदूषण नहीं फैलता बीमारी फैलाने वाले कीटाणु उत्पन्न नहीं होंगे। सभ्यता, संयम और संस्कार सहज ही पलते रहते है।

2. Aishna Committee: In this committee it is told when, why, how much, how and where to eat food. If these five things are kept in mind, physical and mental health can never deteriorate. At present like environment, health also remains a serious problem. Today's people get urine, stool and blood tests done in pathology labs but do not pay attention to what they ear throughout the day. If the food is tested for levels and attention is paid to the diet, then there will be no need for a person to get any test done in the pathology lab, nor will there be any need for big doctors, hospitals and medicine factories. When people remain healthy there will be a good society. There will be an increase in wealth and prosperity in the country. Therefore, following Aishna Samiti will bring prosperity in the country. There will be environmental protection, prosperous country and good society.

3. EIRYA Committee: It means that in the presence of sunlight during the day, as per the rules of traffic, keeping one's eyes at a distance of about four hands while keeping an eye on the front and back, walking to save the living animals is called EIRYA Committee. If we travel during the day and stay at one place at night, then the incidents of robbery, accidents etc. will reduce and electrical energy, petrol, diesel etc. will be saved and the atmospheric ozone layer will not be harmed. The smoke coming from vehicles will not cause pollution. Economic loss will be less, people will get enough time for rest and love, affection and affection in the family. The person will remain healthy and calm. There will be less running around, there will be less stress etc. The solution to many problems becomes easy by following this Iriya Samiti.

4. Establishment Committee: This means that excreta etc. should be immersed only where there is no population, green grass, moss, mud etc. The place where excreta is discharged should be hidden, that is, no person should be seen face to face. After immersing the feces, it should be flushed with ashes or earth etc. With this principle, there is no need to carry out cleanliness campaigns because cleanliness will be maintained easily. Pollution does not spread and disease causing insects will not be produced. Civilization confluence and traditions continue to flourish naturally.

5. आदान निक्षेपण समितिः दिगम्बर जैन जब मुनि कोई भी वस्तु उठाते है और रखते है तब वे उस जमीन का प्रकाश में अवलोकन करते है तदुपरान्त उस स्थान को साफ करते है फिर वस्तु रखते है। जब कोई वस्तु उठाते है तब उस वस्तु को पहले देखते है फिर मयूर पिच्छी से साफ करते है। साफ करने को परिमार्जन कहते है। फिर उसे उठाते है। इसी क्रिया को आदान निक्षेपण क्रिया कहते है। इस समिति का पालन करने से जीव जन्तुओं की हिंसा नहीं होती। जहाँ पहले से काई, फफूँद नमी आदि होती है उस स्थान पर वस्तु न रखने से वायरस, फंगस आदि उस पदार्थ पर नहीं पड़ते, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य लाभ और देश स्वच्छ बना रहता है।

इन सभी समितियों के पालन से देश, समाज, परिवार और जीवन स्वस्थ, मस्त और शांत बना रहता है। प्रकृति और पुरूष के बीच संबंध अच्छा बनो रहता है। चारों ओर का परिमण्डल भू मण्डल, वायु मण्डल आदि सभी प्राणियों के अनुकूल बना रहता है अतरू हम कह सकते है कि जैन धर्म की इन पाँच समितियों के पालन करने पर किसी और समिति, मंत्री मण्डल संगठन आदि की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। देश में अनेक समितियाँ बनाई जा रही है। क्योंकि जैन धर्म की इन पाँच समितियों का पालन नहीं किया जा रहा है।

जैन धर्म में चौरासी लाख योनियाँ और एक सौ साढ़े निन्यान्वें लाख कुल कोटि कहे गये है। वर्तमान के वनस्पति शास्त्रियों ने पौने दो मिलियन वनस्पतियों के प्रजातियों की पहचान की है।

जानवरों और पक्षियों की 47677 प्रजातियाँ ही खोज पायी है, उनमें भी 1929 प्रजातियों के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है।

वनस्पतियों की एक चौथाई उपजातियों पर भी खतरा मंडरा रहा है और वे विलुप्त होनेकी कगार पर है।

5. Input Deposit Committee: When Digambar Jain sage picks up any object and keeps it, then he observes the ground in the light and then cleans that place and then keeps the object. When we pick up an object, we first look at it and then clean it with peacock feathers. Cleaning is called refinement. Then he picks it up. This process is called input-deposition process. By following this committee there is no violence towards animals. By not keeping an item in a place where there is already moss, fungus, moisture etc., virus, fungus etc. do not fall on that item, environmental protection, health benefits and the country remains clean.

By following all these committees, the country, society, family and life remains healthy, happy and peaceful. The relationship between nature and man remains good. The surrounding environment remains favourable for all living beings like earth sphere, air sphere etc. hence we can say that Jain religion, after following these five committees, there will be no need for any other committee, Council of Ministers etc... There will be no need for organization etc. Many committees are being formed in the country because these five committees of Jainism are not being followed.

As per Jainism, there are eighty-four lakh (8.4 million) yonis and one hundred and ninety-nine(19.9 million) lakh total kotis. Present day botanists have identified over two million plant species.

Only 47677 species of animals and birds have been discovered, out of which the existence of 1929 species is under threat.

A quarter of the plant subspecies are also under threat and are on the verge of extinctio

सप्त व्यसन त्याग का सिद्धांत

ऐसी बुरी लत (आदत) जो हानिकारक होकर भी न छूटे उसे व्यसन कहते है। व्यसन एक मानसिक रोग है। व्यसन इंसान को वासना में फंसाता है बुरी आदत के लिए प्रेरित करता है। जब तक वह उस शराब, जुआदि व्यसन रूप कार्य को नहीं कर लेता तब तक उसके मन में विक्षिप्ता बनी रहती है। बैचेनी महसूस होती है व्यसन से उसकी शारीरिक कोशिकायें और दिमाग परिवर्तित हो जाता है। उसकी ग्रंथियों से रसायन और हार्मोन्स अलग प्रकार के श्रवित होते है। वही उसके मस्तिष्क में तनाव उत्पन्न करते है। वह तनाव एक मानसिक बीमारी पैदा करती है। उस बीमारी को लूडोमेनिया कहते है। इस बीमारी का रोगी जब तक इस व्यसन की पूर्ति नहीं कर लेता तब तक मानसिक तनाव कम नहीं होता। वह अपने व्यसन की पूर्ति के लिए जिंदगी को भी दाव पर लगा देता है, घर की वस्तुओं को दांव पर लगाना उसे सामान्य बात लगती है। वह बार–बार नियम लेता है कि ये ऐसा नहीं करूँगा और कुछ समय बाद ही उस नियम को तोड़ देता है। उन व्यसनों से सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, मानसिक और शारीरिक आदि अनेक हानियाँ ही हाथ लगती है। व्यसन से पारिवारिक सामाजिक राजनैतिक सारी व्यवस्थायें चौपट हो जाती है। ऐसे व्यसन जैनाचार्यो ने सात प्रकार के कहे है। जो इस प्रकार है–

१. जुआ खेलना

२. मांस, अण्डा, मछली (नॉनवेज) का सेवन करना

३. मद्य पान (नशीले पदार्थों) का सेवन

४. वेश्या वृत्ति करना (बाजरू औरतों से शारीरिक संबंध बनना)

५. पर स्त्री सेवन (शारीरिक संबंध बनना)

६. चोरी करना

७. शिकार खेलना

(सप्त व्यसन के परिणाम नाम से मैने एक कृति लिखी है इसमें विशद कथन किया है अतः विशेष कथन उसमें देखें)

Principle of Giving Up Seven Addictions

A bad habit (habit) which is harmful and cannot be given up is called addiction. Addiction is a mental disease. Addiction traps a person in lust and inspires bad habits. Until he gives up his addiction to alcohol and gambling, his mind remains disturbed. One feels restlessness and his physical cells and brain get changed due to addiction. Different types of chemicals and hormones are released from its glands. That creates tension in his mind.That stress creates mental illness. That disease is called Ludomania. Unless the patient of this disease cures his addiction, his mental stress does not reduce. He even puts his life at stake to satisfy his addiction; putting household items at stake seems normal to him. He repeatedly makes a rule that he will not do this and after some time breaks that rule. Those addictions cause many losses social, economic, family, mental and physical etc. Due to addiction, all the family, social and political systems get ruined. Jainacharyas have said there are seven types of such addictions, which are like this-

1. to gamble
2. Consuming meat, eggs, fish (non-veg)
3. Consumption of alcohol (drugs)
4. Prostitute (having physical relations with women who have sex for money)
5. Sexual intercourse with a woman other than your wife.
6. to steal
7. Hunting game

(I have written a work named 'Sapta Addyak Ke Pariyyaat' in which I have made detailed statements, hence see the special statement in that book).

सफलता प्राप्ति के उपाय

हम यहाँ मानवाधिकार कर्तव्य एवं जैन धर्म की व्याख्या का उपसंहार कर रहे हैं। हमने समझा कि आदिनाथ भगवान से लेकर अभी तक मानवाधिकार दिये जाते रहे है और आगे भी दिये जाते रहेगें। कुछ लोग कर्तव्यनिष्ठ होकर कार्य करते, रहे है और कुछ लोग कर्तव्य हीन होकर जीवन काट रहे हैं। हम अहिंसा धर्म की बात करते रहे है परंतु कई वार हम उसे सुचारु रुप से चलाने में असफल भी हुए हैं। वर्तमान में उन्हें सफल बनाने में अत्यधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। अतः उन्हे कैसे सफल बनाए ये कुछ उपाय सुझाये जा रहे हैं क्योंकि दुनिया में ऐसा कोई इंसान नहीं जो भगवान बनने से पूर्व कभी न कभी असफल न हुआ हो। असफलता जीवन का एक हिस्सा है। असफलता का कड़वा घूँट पीये बिना सफलता का अमृतपान नहीं किया जा सकता है। बड़े–बड़े योगियों ने भी असफलता का घूँट पिया है। इसलिये असफल हुये बिना सफलता की कल्पना करना एक छलावा है। असफल होने के बाद सफल होने के लिये अपनाये जाने वाले सूत्र इस प्रकार हैं–

1. **अपने आप पर नियंत्रण रखें**- असफल होने पर नेगेटिव विचार आते हैं और नेगेटिव वातावरण चारों ओर बनता है। उन विपरीत परिस्थितियों में अपने आप पर नियंत्रण रखने पर नियम से सफलता मिलती है।
2. **खुद की शक्ति और आत्म विश्वास को पहचानें**- प्रत्येक आत्मा में असीम शक्ति, असीम संभावनायें छुपी होती है उनको उद्घाटित करने के लिये आत्म विश्वास और खुद की पहचान जरूरी है।
3. **चारों ओर के वातावरण में बदलाव लायें –** जैनाचार्यों के अनुसार द्रव्य, क्षेत्र और काल भावों का प्रभाव प्रत्येक जीव आत्मा पर पड़ता है। उसी के अनुसार हमारे कर्म भी कर्म यानी भाग्य भी साथ देता है। इसलिये सकारात्मक उत्साही विचार और पुरूषार्थशील बने रहना चाहिए।
4. **खुद की कमियों को खोजें–** असफलता के लिये दूसरों को दोष न देकर अपनी कमियों को खोजें। इसके लिये एकान्त में बैठ कर स्वयं ही असफलता के कारणों की समीक्षा करें। जितनी अच्छी समीक्षा स्वयं के द्वारा की जा सकती है उतनी अच्छी अन्य के द्वारा नहीं की जा सकती है। अपनी समीक्षा करने से अपने कार्य में सफलता अवश्य मिलती है।

Ways to Achieve Success

Here we are concluding the interpretation of human rights, duties and Jainism. We understood that human rights have been given since Lord Adinath till now and will continue to be given in future too. Some people are working dutifully and some people are living their life without duty. We have been talking about the religion of non-violence but many times we have failed to run it smoothly. At present they are facing a lot of difficulties in making them successful. Therefore, some measures are being suggested to make them successful because there is no person in the world who has not failed at some time or the other before becoming God. Failure is a part of life. One cannot drink the nectar of success without drinking the bitter sip of failure. Even great yogis have suffered failure. Therefore imagining success without failure is an illusion. The formulas to be followed to succeed after failure are as follows-

1. **SELF CONTROL –** Failure brings negative thoughts and creates a negative environment all around. Controlling oneself in those adverse circumstances leads to success.
2. **RECOGNISE YOUR OWN POWER & SELF CONFIDENCE** - There is immense power and limitless possibilities hidden in every soul. Self-confidence and trusting yourself are necessary to reveal them.
3. **CCHANGE SURROUNDING ENVIORNMENT -** According to Jainacharyas, matter, area and time aspects affect every living soul. According to that, our actions are also supported by karma *i.e*. destiny. Therefore one should have positive, enthusiastic thoughts and remain diligent.
4. **SEARCH YOUR OWN SHORTCOMINGS -** Find your own shortcomings instead of blaming others for failure. For this, sit alone and review the reasons for failure yourself. A good review cannot be done by others as much as it can be done by yourself. Reviewing yourself definitely brings success in your work.

5. **पिछली असफलता को पुराने जूतों की तरह फेंके**- अकसर लोग पुरानी असफल बातों के बारे में ही सोचते रहते हैं और माथे पर उन्हें बांध कर रखते हैं इसी वजह से आदमी का माथा भारी हो जाता है।
6. **नैतिक बने रहे अनैतिकता न अपनाये**- असफलता को सफलता में बदलने के लिये अनैतिक न बने, क्योंकि नैतिक व्यक्ति चारित्रवान होता है। चारित्रवान एकाग्र चित्त वाला होता है और शक्ति को छुपाये बिन कड़ी मेहनत करने वाला होता है।
7. **सद्चारित्री बने, व्यसन से दूर रहें** – संघर्ष करने वाले कुछ लोग चारित्र को अनुपयोगी मानते हैं। लेकिन यह उनकी मिथ्या धारणा है उन्होंने चारित्र का अर्थ नहीं समझा वे त्याग तपस्या को ही चारित्र समझते है जबकि यहाँ पर चारित्र का अर्थ ईमानदारी से अपना कार्य करना, सप्त व्यसन अर्थात शराब वेश्यागमन, लड़की से छेड़छाड़, मांस–मछली आदि) अभक्ष्य सेवन, चोरी, हिंसा, आगजनी आदि कार्य का त्याग करना क्योंकि यह आचरण हीनता कहलाती है और इनसे बचना चारित्र कहलाता है। इसलिये सद्चारित्र सफलता का महान सिद्धान्त है। आज तक जितने भी लोग अपने विशेष कार्य में सफल हुए है वे सब चारित्रवान ही रहे हैं।
8. **जुझारू और विवेकी बने**- जुझारू बनने वाला इंसान असफलता को भी सफलता में बदल देता है इसीलिये जुझारूपन सफलता की कुंजी है। विवेकी इंसान ही जुझारू बनता है जुझारू का अर्थ है सूझबूझ और लगन से कार्य करना, कभी हिम्मत नहीं हारना।
9. **दृढ़ इच्छा शक्ति बनाये रखें**- उत्साहहीन और इच्छाहीन नहीं होना चाहिए क्योंकि इच्छाहीन व्यक्ति निरूत्साहित होता है। निरूत्साही सफलता की सीढ़ी नहीं चढ़ सकता। जहाँ आगे बढ़ने की, ज्ञान प्राप्त करने की, योग्यता हासिल करने की और संघर्ष करने की इच्छा शक्ति होती है वहाँ सफलता आकर चरण चूमती है।

5. **DISCARD OLD FAILURES LIKE OLD SHOES -** Often people keep thinking about past failures and keep them tied on their forehead, due to which a person's head becomes heavy.

6. **REMAIN MORAL & DO NOT BE IMMORAL –** Do not become immoral to convert failure into success, because a moral person has good character. He is a person of good character, has a focused mind and works hard without hiding his strength.

7. **REMAIN GOOD , AVOID ADDICTIONS -** Some people who struggle consider their character useless. But this is their misconception, they did not understand the meaning of character, they consider renunciation and penance as character whereas here character means doing one's work honestly, seven addictions *i.e.* alcohol, prostitution, molestation of girls, consumption of non-food items, meat-fish etc are addictions. Refraining from acts like theft, violence, arson etc. because these conducts are called inferiority and avoiding them is called character. Therefore good character is a great principle of success. Till date, all the people who have been successful in their special work have been of good character.

8. **BE COMBATIVE & WISE -** A person who becomes combative converts even failure into success, that is why combativeness is the key to success. Only a wise person becomes a fighter. Fighting means working with wisdom and dedication. Never lose courage.

9. **MAINTAIN STRONG WILL POWER –** One should not be unenthusiastic and wishless because a wishless person is discouraged. A discouraged person cannot climb the ladder of success. Where there is willpower to move forward, acquire knowledge, acquire qualifications and struggle, success comes and kisses its feet.

10. **सच्ची लगन लगायें रखें** – लगन जीवन में उमंग भर देती है, आशा की नयी किरण जगा देती है, सामान्य को भी विशेष बना देती है और सफलता को उपहार स्वरूप प्रदान करती है। मीरा को लगन लगी तो उसने कृष्ण को पा लिया था, महावीर को लगन लगी तो मोक्ष को पा लिया, गाँधी को लगन लगी तो देश को आजाद करा दिया।
11. आज के बच्चे धन को ही सफलता की कुंजी मानते है। उनकी सोच है कि पैसा होगा तो अच्छी कोचिंग, अच्छा स्कूल और अच्छे दोस्त मिलेंगे ऐसी धारणा मिथ्या धारणा कहलाती है। धन के ढेर पर खड़े होने से सफलता नहीं मिलती। धन मद पैदा करता है। धन सुविधाभोगी, विषयभोगी और आलसी बनाता है और धन के ढेर से प्रारंभ हुई सीढ़ियाँ वासना की कीचड़ पर जाकर खत्म होती है।
12. सफलता प्राप्ति का रामबाण नुक्सा है जुनून। जहाँ जुनून होता है वहाँ लगन शीलता, सकारात्मक, आशावादी सोच, खुद पर विश्वास, खुद की क्षमता का मूल्यांकन, खुद की पसन्द का कार्य, प्रत्येक क्षण का उपयोग और चुनौती का सामना व्यक्ति करता है। जुनून वाले व्यक्ति पर असफलता का भूत सवार नहीं होता। वह पीछे मुड़कर नहीं देखता असफलता से कुछ सीखता है और तब तक मेहनत करता है जब तक सफलता नहीं मिल जाती। यही मानवाधिकारों को सफल बनाने का सूत्र है।

10. **HAVE TRUE DEDICATION -** Dedication fills life with enthusiasm, awakens a new ray of hope, makes even the ordinary special and gives success as a gift. Meera was determined, she achieved Krishna, Mahavir was determined, he achieved salvation, Gandhi was determined, he liberated the country.

11. Today's children consider money as the key to success. Their thinking is that if you have money, you will get good coaching, good school and good friends, such a belief is called a false belief. Success does not come by standing on a pile of money. Money creates pride. Money makes one comfortable, sensual and lazy and the stairs that start with a pile of money end in the mud of lust.

12. The panacea for achieving success is passion. Where there is passion, there is perseverance, positive, optimistic thinking, self-confidence, evaluation of one's abilities, work of one's own choice, utilization of every moment and facing challenges. A person with passion is not haunted by the ghost of failure. He does not look back, learns something from failure and works hard until he achieves success. This is the formula to achieve success.

मानवाधिकार, कर्तव्य और जैन धर्म

नाम से लिखे गये इस ग्रन्थ से ग्रन्थ की विषय वस्तु स्वयं प्रकाशित हो जाती है कि इसमें क्या है फिर भी मानवाधिकार जन्म सिद्ध अधिकार है इसकी शुरुआत अन्तिम कुलकर नाभिराय (मनु) और उनके पुत्र आदिनाथ स्वामी ने की थी। जो सतयुग से आज कलयुग तक प्रवाहमान होकर चला आ रहा है। इनअधिकारों की अवधाराणाए समय–समय पर बदलती रही है। मानवाधिकारों की बातें तब से प्रारम्भ हुई जबसे कर्म भूमि की शुरुआत हुई। कर्मभूमि में मेहनत करके उदरपूर्ति और जीवन–यापन किया जाता है। जीवन यापन के लिए कुछ कर्तव्य है उन्हे योग्य मानकर अधिकार दिये जाते है। ज्ञानी, गुणी और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति इस समाज को अनुशासित और शान्ति प्रिय बनाने के साथ–साथ सुख, समृद्धि, शान्ति के लिए नियम कानून बनाते है। नियम कानून उस समाज या देश का संविधान कहलाता है जब वह संविधान सभी के लिए हितकारी हो जाता है तो वह लोक धर्म कहलाता है। कर्मभूमि मे चार पुरूषार्थों की सिद्धि की जाती है। सर्वश्रेष्ठ पुरूषार्थ मोक्ष पुरूषार्थ होता है।

मोक्ष पुरूषार्थ की सिद्धि के लिए धर्म पुरूषार्थ आवश्यक है। धर्म पुरूषार्थ सम्यग् श्रद्धा, ज्ञान और सदाचरण से प्रारम्भ होता है। इन तीनों के पालन हेतु सत्य, अहिंसा, अनेकान्त, स्याद्वाद अध्यात्म और अपरिग्रह के सिद्धान्तों को अपनाना ही पड़ता है। इन्ही सिद्धान्तों से पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय सुख, शान्ति मिलती है। परिवार और देश के विकास के लिए अर्थ और काम पुरूषार्थ करना अनिवार्य होता है। काम पुरूषार्थ के लिए स्त्री और पुरुष के बीच आपसी सामन्जस्य और संस्कारों की जरुरत होती है। जो नियम, कानून और कर्तव्य का पालन करता है वह देश की भाषा में सच्चा नागरिक और धर्म की भाषा में सच्चा श्रावक कहलाता है।

Human Rights, Duties and Jainism

The title of this book itself reveals the subject matter of the book, what is there in it, yet human rights are birth rights, it was started by the last Kulkar Nabhiraya (Manu) and his son Adinath Swami. Which has been flowing from Satyayug till today Kalyug. The concepts of these rights have been changing from time to time. Talks about human rights started ever since the beginning of Karma Bhoomi. One's livelihood and extinguish hunger is achieved by working hard in the workplace. There are some duties for living and those who are considered worthy are given rights. Knowledgeable, virtuous and dutiful people make this society disciplined and peace-loving as well as make rules and regulations for happiness, prosperity and peace. The rules and regulations are called the constitution of that society or country. When that constitution becomes beneficial for everyone then it is called folk religion. Four efforts are accomplished in the field of work. The best effort is the effort for salvation.

To achieve salvation, religious efforts are necessary. Religious efforts begin with proper faith, knowledge and good conduct. To follow these three, one has to adopt the principles of truth, non-violence, Anekant, Syadvad spirituality and aparigraha. These principles provide family, social and national happiness and peace. For the development of family and country, it is essential to make efforts for money and work. For sexual endeavor, mutual harmony and values are required between man and woman. One who follows rules, laws and duties lives a happy life.